

प्रकाशक—

भीमन्त घेठ शिवाशराम सहनीपन्त्र,

अन-साहित्योद्धारक-फंड-कार्यालय

वाराणसी ( वारा )



मुद्रक—

टी एम् पाटील

भेजक

सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस, वाराणसी.

THE  
**SATKHANDĀGAMA**

OF  
PUSPADANTA AND BHŪTABALI  
WITH  
THE COMMENTARY DHAVALĀ OF VĪRASENA

VOL VII  
**KSUDRAKA-BANDHA**

*Edited*  
*with introduction translation indexes and notes*  
BY  
Dr HIRALAL JAIN M. A LL. B D Litt.  
C. P. Educational Service, Morris College Nagpur

ASSISTED BY  
Pandit Balchandra Siddhanta Shastri  
*with the cooperation of*  
Pandit DEVAKINANDAN ★ Dr. A. N. UPADHYE  
Siddhanta Shastri M. A. D. LITT

*Published by*  
Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,  
Jaina Chhitya Uddhāraka Fund Kāryālaya,  
AMRAOTI (Berar).

1945

Price rupees ten only

*Published by—*

Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,  
Jama Sāhitya Uddhāraka Fund Karyālaya,  
AMRAOTI ( Berar )



*Printed by—*

T M P til, *Manager*

Saraswati Printing Press

AMRAOTI ( Berar ),

# विषय-सूची

	पृष्ठ	२	पृष्ठ
प्रारूपण १	१	मूल, अनुवाद और टिप्पण सुप्रकथन	
प्रस्तावना Introduction	i-ii	वचन-संस्कृत-प्ररूपणा ..	१
१ क्या पदच्छायागम जीवह्याणन्त्री सुप्ररूपणाके सूत्र ९३ में 'सन्त' पद अपेक्षित नहीं है ?	१	१ एक जीवन्त्री अपेक्षा स्वामित्व	२५
२ मूत्रविषीन्त्री ताडपत्नीय प्रति योगे जीवह्याणन्त्री सुप्ररू पणाके सूत्र ९३ में 'सञ्जद' पाठ है।	३	२ " " " फल ....	११४
३ विषय-परिषय	४	३ " " " अन्तर	१८७
४ सुप्रकथनन्त्री विषय सूची	५	४ माना जीवोन्त्री " भगविषय	२३७
५ छादित	१७	५ अण्यप्रमाणानुगम ....	२४४
		६ क्षेत्रानुगम ..	२९०
		७ स्वज्ञानानुगम ....	३६३
		८ नाना जीवोन्त्री अपेक्षा फलानुगम	४६२
		९ " " " अन्तरानुगम	४७८
		१० मागाभागानुगम ..	४९३
		११ अत्यवह्वानुगम ....	५२०
		महापण्डक ..	५७५

## परिशिष्ट

	पृष्ठ
१ सुप्रकथन-सूत्रगत ....	१
२ अक्षरगण गाथा-सूची ...	५
३ न्यायोक्तियाँ ..	५१
४ प्रसोक्तस्य ....	५२
५ परिभाषित शब्दसूची ..	५३

11

12

13

14

15

## माकू कथन



इससे पूर्व प्रकाशित पुस्तकमें पदसङ्गमकका प्रथम खण्ड जीवस्वान ( जीवज्ञान ) समाप्त हो चुका है । उसे प्रकाशित हुए लगभग डेढ़ वर्ष हुआ है । अब प्रस्तुत पुस्तकमें पदसङ्गमकका दूसरा खण्ड क्षुद्रकम्प ( सुरास ) पूर्व पद्यनि अनुस्तर अनुवादादि सहित प्रकाशित किया जाता है । इस खण्डके ग्याह मुख्य तथा प्रास्ताविक व शूलिक इस प्रकार कुछ तेह अधिकांशमें क्रमशः ४३, ९१, २१९, १५१, २३, १०१, १२४, ९७४, ५५, ६८ ८८, २०९ और ७९ योग १५८९ सूत्र पाए जाते हैं । इन अनुयोगोंका नियम प्रायः यही है जो जीवस्वान खण्डमें भी था चुका है । विशेषतः यह है कि यहाँ मार्गास्वानोंके भीतर गुणस्वानोंकी अपेक्षा रसकर प्ररूपण किया गया है जैसा कि नियम परिचयसे प्रकट होगा । यही कारण है कि इस खण्डमें उनसे तुम्हारातरक टिप्पण देने व विशेषतः सिद्धिनेकी आवश्यकता प्रतीत नहीं हुई ।

इसी समयमें हमारी स्वीकृत संशोधन प्रणालीकी कठोर फीशानर बनकर आ उपस्थित हुआ । पाठकोंके हात है कि हमने अख्यत साधनानिसे उपलब्ध प्रनियोंके पाठकी रक्षा की है । उपलब्ध पाठों या तो मायाकी दृष्टिसे केवल वे ही संशोधन किये गये हैं जिनके नियम हम प्रथम पुस्तकमें प्रस्तावनामें प्रकट कर चुके हैं । या यदि कहीं कुछ पाठ जोड़ना आवश्यक प्रतीत हुआ तो वह पाठ कोष्ठमें रखा गया है या उसकी समावना पाद टिप्पणमें बतलाई गई है । जीवस्वानकी सप्ररूपणके सूत्र ९३ में इसी प्रकारका एक प्रसंग उपस्थित हुआ था जहाँ अर्ध, शैली, टीका, सिद्धात्तरम्परा आदि समस्त उपलब्ध प्रमाणोंपर विचार कर कुम्भोटमें 'सद' पद हट जानेकी समावना प्रकट की गई थी और अनुवाद उस पदके प्ररूपण करके ही बतया गया था । इस पर पाठकोंके जा शक उत्पन्न हुई उसका समाधान भी पुस्तक ३ की प्रस्तावनामें कर दिया गया था । किन्तु अभी अभी उस प्रकार फिर बड़ा विवाद उपस्थित हो गया । बहुतसे परिचितोंने यह आशय किया कि उक्त सूत्रमें 'सद' पद प्ररूपण करनेसे दिग्म्बर मान्यताके आपात पहुंचता है और उसकी समावना सम्प्रदायके क्षति पहुंचनेकी दृष्टिसे ही सम्पादकने प्रकट की है । इन आशयोंसे बचनेके लिये उस समयके मेरे एक सहकमी सम्पादक पं हीराकाशने तो प्रकट ही कर दिया कि वह पाठ-संशोधन उनकी सम्मतिसे नहीं हुआ । इससे सहयोगी पं कृष्णचन्द्रकी क्षत्री उस सम्पन्धमें अभी तक मौन ही रहे । इस परिस्थितिमें मेरे व जीवस्वानकी शक्रीसे पुन प्रेरणा की कि वे सूत्रिकीकी क्षीनों काङ्क्ष प्रनियोंमें उक्त

सूत्रस्य पाठ देखनेसे ही हुआ करें। इसके फलस्वरूप जो तात्पर्यहीन प्रतियोगों में सूत्र पाठ 'सपत्' फलसे युक्त पाया गया और तौसी प्रतियोगों में वह तात्पर्य ही उपरम्य नहीं है। इस स्थिति के कारणके लिये हम प ज्योत्सनाश्री शालीके बहुत उपरान्त हैं। इस तुम्हारायक अन्वयमसे हमारी पाठ संशोधन प्रयासोंमें प्रामाणिकता सिद्ध हो गई।

हमें यह प्रकृत करते हुए अवगत हुआ होता है कि इस लक्ष्यके प्रकृतियोग होनेसे कुछ ही मध्य पूर्व इस फलके दृष्टी तथा इस प्रकृतियोग योजनमें बड़े मारी सहायक अवसरवर्ती निष्कर्षों कीमत् सिद्ध। फलस्वरूप ही स्वर्गास हो गया। उन्होंने इस संस्थाका जो उपरम्य किया है उसका उल्लेख उनके चित्र सङ्ग्रह प्रथम पुस्तकमें ही किया जा चुका है। सिद्धांतोंमें इस प्रकृतियोग का उल्लेख था और इस सिद्धांतमें पूर्णतः प्रकृतियोग देखने की उन्हें प्रकृत अभिव्यक्ति थी। सिद्धांतके विधानसे यह संकलन नहीं हो सके। हम उनमें विचार पाली तथा सुपुत्र व अन्य कुटुम्बियोंसे समवेतना प्रकृत करते हुए उनमें व्यक्तियोंके स्वर्गमें शान्ति मित्रोंके प्रार्थी हैं।

मत्त सुधार् १९७७ में मेरा लक्ष्यम् अन्वयमसे कामपुत्रका हुआ गया। तपानि प्रकृतियोग अतिरिक्त व सुपुत्रके स्वयंसे अवसरवर्तीमें ही रहना उचित प्रतीत हुआ। इस स्थान निष्कर्षकी कठिनाई तथा अनेक अवस्थितियों उपस्थित होनेपर भी जो यह कार्य प्रकृतियोग बना हुआ है इसमें हमारे पाठसेही उद्गातना, अतिरिक्त सेठकी व अन्य अभिव्यक्तियोंकी सुदृष्टि व पूर्व सम्पत् सहायकोंके उपकरणके अतिरिक्त पं. वात्सल्यकी शालीकर समुचित सुदृष्टि व सहायकी प्रेसके लिये कर औचित्य टी. एम. पाठिकका उल्लेख सहायनीय है। मैं सहाय विधान आशाती हूँ। इसी उद्द्योगके कारण जागे भी संशोधन प्रकृतियोग कार्य विभिन्न चरणों में आया करी जा सके है।

मार्गिक केन्द्र वात्सल्य }  
१-७-७७

हीरादास

प्रस्तावना







One point which is very important for its bearing on our principles of text constitution needs mention here. In the text of the 93rd Sūtra of Saiparāṅga of Jivattihana ( Volume I page 332 ) we had felt that the word Sanjāda which was necessary there, had probably been omitted by a scribal mistake. Therefore this fact was noted in a foot note and the word was adopted in the translation because otherwise the discussion there would be unintelligible. But this was objected to by some critics and the justification for it was supplied by us in the introduction to volume III ( page 28 ). Recently however there was again a storm of criticism on the point because it was suspected that the addition of the word Sanjāda in the Sūtra goes contrary to the Digambara faith and supports the Śvetāmbara view of the possibility of women salvation ( Strī mukti ). The previous collation of the palm leaf manuscript the results of which were tabulated in the Appendix to volume III had also not brought out the word Sanjāda in the Sūtra. But because I was certain that the text was incomplete and inconsistent without that word, I arranged for a closer scrutiny of the Moodbidri ms. as a result of which the two palm leaf mss. which have preserved the text of the Sūtra yielded the required reading while in the third manuscript the leaf itself containing the text of the Sūtra is missing. This discovery together with the results of the previous collation as noted in the introduction to volume III ( page 51 ) has proved beyond doubt the alidity of our system of text-constitution. I am very thankful to Pandit Loknath Shastri of Moodbidri for the great pains he took in scrutinizing the palm leaf manuscripts and bringing to light the true and correct reading of that Sūtra.

---

ब्या पदखंडागम बीषट्टाणकी सत्ररूपणाके सूत्र १३ में  
 'संपत्' पद अपेक्षित नहीं है !

पदखंडागम बीषट्टाण सध्वरूपणाके सूत्र १३ का जो पाठ उपलब्ध प्रतियोंमें पाया गया था उसमें सप्त पद नहीं था। किन्तु उसका संपादन करते समय संपादकोंके यह प्रतीत हुआ कि वहाँ 'सप्त' पद होना अक्षय्य चाहिये और इसीछिये उन्हें पुस्तकमें सूचित किया है कि "अत्र 'सप्त' इति पाठशेषा प्रतिमाति।" तथा हिन्दी अनुवादमें सप्त पद प्रहण भी किया है। इस पर कुछ पाठकोंने शक्य भी उत्पन्न की थी, जिसका समाधान पुस्तक ३ की प्रस्तावनाके पृष्ठ २८ पर किया गया है। इस समाधानमें प्यान देने योग्य बातें ये हैं कि एक तो उक्त मूत्रकी बन्धा टीकामें जो शक्य-समाधान किया गया है वह मनुष्पनीके चौदहों गुणस्वान प्रहण करके ही किया गया है। दूसरे, सध्वरूपणाके आश्रयपात्रमें भी बन्धाकरने सामान्य मनुष्पनी व पर्याय मनुष्पनीके अलग अलग चौदहों गुणस्वान प्ररूपित किये हैं। तीसरे द्रव्यप्रमाणादि प्ररूपणाओंमें भी सर्वत्र मनुष्पनीके चौदहों गुणस्वान कहे गये हैं। और चौथे गोमटसार बीषकरणमें भी मनुष्पनीके चौदहों गुणस्वानोंकी ही परम्परा पाई जाती है, पाँच गुणस्वानोंकी नहीं। इन प्रमाणोंपरसे स्पष्ट है कि यदि उक्त सूत्रमें सप्त पद प्रहण न किया जाय तो शास्त्रमें एक बड़ी भारी विचमता उत्पन्न होती है। अतएव पदखंडागमके संपादनमें जो वहाँ संपत् पदकी सूचना करके मायास्तर किया गया वह सर्वथा ठीक और आवश्यक था।

किन्तु मनुष्पनीने कहीं भी केवल पाँच गुणस्वानोंका उल्लेख न पाकर कुछ भोग इसी सूत्रके शिष्योंके केवल पाँच गुणस्वानोंकी योग्यताका मूलाधार बनाना चाहते हैं। परन्तु इसके छिये उन्हें उपर्युक्त बात बलपूर्वक ठीक समाधान करना आवश्यक है जो वे अभी तक नहीं कर सके। एक बहुत यह दिया जाता है कि प्रस्तुत सूत्रमें मनुष्पनीका अथ द्रव्य की स्वीकार करना चाहिये और द्रव्यप्रमाणानिमें वहाँ मनुष्पनीके चौदहों गुणस्वान बन्धाये गये हैं वहाँ मात्र की धर्म लेना चाहिये। किन्तु ऐसा करनेपर शास्त्रमें यह विचमता उत्पन्न होगी कि उक्त प्रकरणमें त्रिन जीवोंके गुणस्वान बन्धाये, उनका द्रव्यप्रमाण नहीं बन्धाया गया, और त्रिनत्र द्रव्यप्रमाण बन्धाया है उनके सब गुणस्वानोंका सत्त्व ही प्रतिपादित नहीं किया, तथा पचकाकरने वह शक्य-समाधान अप्रहण करासे किया, एव आश्रयपात्रमें भी निरुत्तर रूपसे लिखा। पर पचकाकरने स्वयं अल्प यह स्पष्ट कर दिया है कि त्रिन जीवोंके जो गुणस्वान प्रतिपादित किये गये हैं, उन्हीं जीवोंने उसी प्रकार द्रव्यप्रमाणदि बन्धाये गये हैं। उदाहरणार्थ, सध्वरूपणाके ही सूत्र २३ में जो त्रिदोषोंके पाँच गुणस्वान कहे गये हैं वहाँ पचकाकर शक्य



इन सूत्रोंक सङ्गाथमें स्वयं पुण्यन्तकृत सम्प्रकरणार्थमें ही मनुष्यनीके सयन गुणस्थान व तीनों सम्पत्त्वोरु सङ्गाथ स्वीकार किया गया है ।

इन सब प्रमाणों व युक्तियोंसे स्पष्ट है कि सम्प्रकरणार्थ सूत्र ९३ में सयन पदकप्र ग्रहण करना अनिवार्य है । यदि उसका प्रमाण नहीं किया जाय तो शास्त्रमें कहीं विषमता और विराध उत्पन्न हो जाता है । इस परिस्थितिमें यदि उसी सूत्रमें आधारपर कियोंके भेदक पाँच ही गुणस्थानोंकी मान्यता स्थिर की जाती है तो कहना पड़ेगा कि यह मान्यता एक स्थिति और श्रुति पाठमें आधारसे होनेके कारण भ्रान्त और अशुद्ध है ।

### मूडविद्वाकी ताडपत्रीय प्रतिषेधमें जीवहृत्वाणकी मत्प्रकरणार्थक सूत्र ९३ में 'सजद' पाठ है ।

ऊपर कथनाया जा चुका है कि निम्न प्रकार उपबन्ध प्रतिषेधमें उक्त सूत्रमें अन्तर्गत 'सजद' पाठ न होने पर भी सम्पादकोंने उसे ग्रहण करना आत्मपत्र सङ्गाथ और उसपर उचिततर विचार करनेपर भी उमर बिना अर्पनी सगति केपता असम्मान अनुभव किया । किन्तु कुत्र विद्वान् इस कल्पनापर बेहद क्रुद्ध हो रहे हैं और छात्रों व श्रवणोंमें नाना प्रकारके आशेष कर रहे हैं । प्रथम मागने एक सहयोगी सम्पादक पट्टसंहिताकी शास्त्रोंने तो प्रकट भी कर दिया है कि उस पाठके रखनेमें उनकी कोई विम्वेत्नी नहीं है । दूसरे सहयोगी पट्टसंहिताकी शास्त्रोंने उसके सम्प्रथमें कुछ भी न कहकर मौन धारण कर लिया है । इस कारण समाख्येयोंमें प्रकट सम्पादकोंके ही अपने श्रोवका एक मात्र उक्त्य बना रहा है । इस परिस्थितिसे देखकर प्रथम सम्पादकोंके मूडविद्वाकी ताडपत्रीय प्रतिषेधमें उस सूत्रमें पुन साक्षरान्तिसे मिश्रण करनेका प्रयत्न किया । पुस्तक ३ के 'प्राक् कथन' व 'भित्त-परिषय' के पङ्क्तसे पाठकोंको सुविदित हो ही चुका है कि मूडविद्वामें भरतसिद्धान्तकी एक ही नहीं तीन ताडपत्रीय प्रतिषेध हैं पद्यपि इनमेंसे दोमें ताडपत्र पूरे पूरे न होनेसे वे श्रुति हैं । इन तीनों प्रतिषेधोंका साक्षरानीसे अखोजन करके शीघ्र पट्टसंहिताकी शास्त्रों अपने भा २४ प ४५ के पत्र द्वारा सूचित करते हैं कि—

“ जीवहृत्वाण भाग १ पृष्ठ न ३३२ में सूत्र ताडपत्रीय मूडप्रतिषेधमें इस प्रकार है—

सर्वत्र शेषगुणस्थावभित्तपाठोक्तार्थमाह— सम्प्रामिच्छादिति मम ब्रह्मसम्भारद्वि संसदासजद संसद्वाचो विषयमा पञ्चविधानो ।

टीका की है जो मुद्रित पुस्तकमें है। चरित्रकी दो ताडपत्रीय प्रतिबोधें सूत्र इसी प्रकार 'सूत्र' पदसे पुछ है। तीसरी प्रतिबोधें ताडपत्र ही नहीं है। पहले संशोधन-मुद्रणिका करके मेरने समय भी लिखन मेरा बा। परन्तु रहा कैसा, सो माइन नहीं पड्य, सो जानियेगा।"

ताडपत्रीय प्रतिबोधें इस मित्रानपरस पाठक समझ सहेगे कि पदसङ्गमनस पाठ संशोधन त्रिती सावधानी और विम्वनने साथ किया गया है। तीसरे मागकी प्रस्तावनामें हम लिख ही चुके थे कि उस मागमें हमने जिन १९ पाठोंकी कल्पना की थी उनमेंसे १२ पाठ जैसेके जैसे ताडपत्रीय प्रतिबोधें पाये गये और दोय पाठ उनमें न पाये जाने पर भी टीका और अर्पणी दृष्टिसे उनका क्या महान किया जाना अनिवार्य है। अब उक्त सूत्रमें भी 'सूत्र' पाठ मित्र जानेसे मर्मस पाठकोंके संतोष होगा और समाशेषन विचार कर देहेगे कि उनका बाधेपारि क्या तक स्यापसगत थे। त्रिकके पत्र प्रतिबोधें हो उन्हे उक्त सूत्रमें सूत्र पाठ सम्मिलित करके अपनी प्रति सुझ कर देना चाहिये।

## विषय-परिचय

पूर्व प्रकाशित छह पुस्तकमें पदसङ्गमनस प्रथम सूत्र 'बीकृतान' प्रकट हो चुका है। प्रस्तुत पुस्तकमें दूसरा सूत्र 'सुरावप' पूरा समानिय है। इस सूत्रक विषय उसके नामसे ही सूचित हो जाय है कि इसमें सुत्र अर्थात् सञ्चितकपसे वष अर्थात् कामकालक प्रतिपादन किया गया है। पाठकोंके इस बृहत्त्वय प्रथम ज्ञानस विम्वन केकर स्वमाका यह प्रश्न उत्पन्न हो सक्त है कि इसे सुत्र न सञ्चित विम्वन क्यों कहा। किन्तु सञ्चित और विस्तृत आधेन्द्रिक सङ्गर् हैं। भूतकति आचार्यने प्रस्तुत सूत्रमें कथक अनुयोगस म्याहयान केरक १५८० सूत्रोंमें किया है जब कि उन्होंने ककविम्वनस विस्तारसे म्याहयान छठमें बंड म्याहयानमें तीस हजार संवरचना रूपसे किया। इन्हीं दानों सङ्गोकी परस्पर विस्तार न-सङ्गोकी अनेकासे छठा सूत्र 'म्याहय' कहाजाया और प्रस्तुत सूत्र सुरावप या सुत्रकाल्य।

सुरावपकी उत्पत्ति प्रथम पुस्तककी प्रस्तावनाके पृ ७२ पर दिखार्थ जा चुकी है और उसके विषय न अविम्वरोंक निर्वेस उसी प्रस्तावनाके पृष्ठ ६५ पर कर दिया गया है। उसके अनुसार बारहमें सुत्रक दृष्टिकारके चतुर्थ मेर पूर्वगतस जो दूसरा पूर्व आत्मावधीय वा उक्तरी इर्णन आदि बीरह कल्पनेमेंसे पंचम कल्प 'अपनसर्षी' के इति आदि बीतीस

पाहुओंमेंसे छठ पाहुए घनघन के बन्ध, कन्तनीम, कम्भक और कम्भविजान नामक चार अधिकारोंमेंसे 'बन्धक' अधिकारसे इस खडकी उत्पत्ति हुई है।

कर्मबन्धके कर्ता हैं जीव जिनकी प्ररूपणा जीवद्वाराण खण्डमें सत् सख्या आदि आठ अनुयोग द्वाराके भीतर मिथ्यात्वादि बौद्ध गुणत्वानों द्वारा व गति आदि बौद्ध मार्गणाओंमें की जा चुकी है। प्रस्तुत खण्डमें उन्हीं जीवोंकी प्ररूपणा स्वामित्वात् ग्यारह अनुयागों द्वारा गुणत्वान विशेषणसे छेडकर मार्गणात्वामोंमें की गई है। यही इन दोनों खण्डोंमें विषय प्रतिपादनकी विशेषता है। इस खण्डके ग्यारह अनुयोग द्वाराके नामनिर्देश स्वामित्वानुगमके दूसे सूत्रमें किया गया है जिनके नाम हैं— (१) एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्व (२) एक जीवकी अपेक्षा काल (३) एक जीवकी अपेक्षा अन्तर (४) नाना जीवोंकी अपेक्षा भग विषय (५) श्रम्यप्रमाणानुगम (६) क्षेत्रानुगम (७) स्वर्गानुगम (८) नाना जीवोंकी अपेक्षा काल (९) नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर (१०) मागामागानुगम और (११) अन्य बह्वानुगम। इनसे पूर्व प्रास्ताविक रूपसे ईष्यकोंमें सखकी भी प्ररूपणा की गई है और अन्तमें ग्यारहो अनुयोगद्वाराकी कृत्तिका रूपसे 'महाद्वक' दिया गया है। इस प्रकार पचासि सूरदाबन्धके प्रधान ग्यारह ही अधिकार माने गये हैं, किन्तु पचासिका उसके भीतर तेरह अधिकारोंमें सूत्र रचना पाई जाती है जिनके विषयकर परिचय इस प्रकार है—

### बन्धक-सखप्ररूपणा

इस प्रस्तावना रूप प्ररूपणोंमें केवल २१ सूत्र हैं जिनमें बौद्ध मार्गणाओंके भीतर कौन जीव कर्म बन्ध करते हैं और कौन नहीं करते यह कृतज्ञाया गया है। सब मार्गणाओंकर मभितार्थ यह निकलता है कि जहा तक योग अर्थात् मन बचन कामकी क्रिया विषयान्त है वहां तक सब जीव बन्धक हैं, केवल अयोगी मनुष्य और सिद्ध बन्धक हैं।

### १ एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्व

इस अधिकारमें ११ सूत्र हैं जिनमें कतज्ञाया गया है कि मार्गणाओं सखन्धी गुण व पर्याय जीवके कौनसे भागोंसे प्ररूपे होते हैं। इसमें सिद्धगति व कृतज्ञायाया श्रम्यकम्भ आदि गुण, केवलज्ञान, केवलदर्शन व अन्वेषण तो क्षायिक कम्भिते उत्पन्न होते हैं। एकेन्द्रिय आदि पार्थो जातिर्ष, मन बचन कल्पयोग, मति, कुल, अक्षयि और मनःपर्यय ज्ञान, परिहारकृति सयम, बह्य, आचक्षु व अक्षयि दर्शन, सम्प्रमिमप्यात्व और संकित्व ये श्रवणेशम कम्भिसय हैं। अपरतत्वेद अकारण, सूत्रसम्पत्तय व पचासयान सयम, ये औपशमिक तथा क्षायिक कम्भिते मन्त्र होते हैं। सम्मायिक व श्रेयोवस्वायम सयम और सम्पदर्शन औपशमिक, क्षायिक व



आवेषात्मिक छत्रोंसे प्राप्त होते हैं। तथा मन्त्रक अवस्थक एवं छासाइनसम्पन्न, ये परिणामिक मात्र हैं। शेष गति आदि समस्त मार्गगतगत जीवार्थक अपने अपने कर्मोंके व विशेषक कर्मोंके उदयसे उत्पन्न होते हैं। सूत्र ११ की टीकामें ब्रह्मात्मके एक शब्दके आकारसे जो नामवर्त्मसे प्रकृतियोंके उदयस्थानोंका वर्णन किया है वह उपासी है।

### २ एक जीवकी अपेक्षा कांड

इस अनुयोगद्वारे २१६ सूत्र है जिनमें प्रवेश गति आदि माग्यामें जीवकी अपेक्षा और उदयक वानस्पतिकी निरूपण किया गया है। जीवस्थानमें जो वस्तुकी प्रकृत्या की गई है वह गुणस्थानकी अपेक्षा है, किन्तु यहा गुणस्थानका विचार छात्रक मार्गगात्री ही अपेक्षा कलक बन गया है यही इन दोनों विशेषण है।

### ३ एक जीवकी अपेक्षा अन्तर

इस अनुयोगद्वारेके १५१ सूत्रोंमें यह प्रतिपादन किया गया है कि एक जीवका गति आदि मार्गगात्रीके प्रवेश अवन्तर भेदसे अपेक्षा और उदयक अन्तरकलक वर्णात् विहरकलक कितने समयका होता है।

### ४ नाना जीवोंकी अपेक्षा मंगनिचय

इस अनुयोगद्वारेके केवल २१ सूत्र हैं। मंग वर्णात् प्रवेश और निचय वर्णात् विचरणा। अन्तरक प्रकृत अचिरमें यह निरूपण किया गया है कि मिस मिस माग्यात्रोंमें जीव नियमसे रहते हैं या नहीं रहते हैं और कमी नहीं भी रहते। जैसे मरु, तिर्यक, मनुष्य और देव इन चारों गतिमें जीव छैट नियमसे रहते ही है किन्तु मनुष्य अपर्याप्त कमी होते भी हैं और कमी नहीं भी होते। उही प्रकार इन्द्रिय कय योग आदि माग्यात्रोंमें भी जीव छैट रहते ही हैं केवल वैदिकिक मिस आहार व आहारमिस कययोगोंमें सूक्ष्मात्मक छपममें तथा उपशम, साक्षात्क व सम्बन्धित्यादिक सम्पन्नमें, कमी जीव रहते हैं और कमी नहीं भी रहते। इस प्रकार उक्त आठ मार्गगात्र छान्तर हैं और शेष समस्त मार्गगात्र निरन्तर हैं ( देखो गो जी. गाथा १४२ )।

### ५ द्रव्यप्रमाणानुसंग

इस अनुयोगद्वारेके १७१ सूत्रोंमें मिस मिस मार्गगात्रोंके मीतर जीवोंका उत्पाद, अवस्थाक व अन्तक रूपसे अक्षरिणी उदयिनी आदि कलकप्रमाणोंसे अपेक्षा व अनुपातक रूपसे एक मोहन, केनी, प्रकर व जीवके पतयेक्य मार्गगात्र व गुणित कलक रूपसे प्रमाण कलकया

## पदसंज्ञागमकी प्रस्तावना

गया है। पूर्व निर्देशानुसार जीवत्वानके इत्यनमाण व इस अधिकारके प्ररूपणमें विशेषता के इतनी ही है कि यहाँ गुणत्वानकी अपेक्षा नहीं रखी गई।

### ६ क्षेत्रानुगम

इस अनुयोगद्वारमें १२४ सूत्रोंमें चौदह मार्गानुसार सामान्यकोरु, अघोषकोरु, ऊर्ध्वकोरु, तिर्यगकोरु व मनुष्यकोरु, इन पाँचों कोरुके आश्रयसे स्वत्वानस्वत्वान, निरुत्तरस्वत्वान, स समुद्रगत और उपपादकी अपेक्षा वर्तमान निवासकी प्ररूपणा की गई है। पूर्वके समान यहाँ गुणत्वानकी अपेक्षा नहीं रखी गई।

### ७ स्पर्शनानुगम

इस अनुयोगद्वारमें २७४ सूत्रोंमें गुणत्वानरूपको छेदकर केवल चौदह मार्गानुसार सामान्यादि पाँचों कोरुकी अपेक्षा स्वत्वान, समुद्रगत व उपपाद पदोंसे वर्तमान वर्तमान कससम्बन्धी नियमकी प्ररूपणा की गई है।

### ८ नाना जीवोंकी अपेक्षा कालानुगम

इस अनुयोगद्वारमें ५१ सूत्रोंमें चौदह मार्गानुसार नाना जीवोंकी अपेक्षा अर्थात् अनन्त, अनादि सान्त, सादि अनन्त व सादि-सान्त कालमेंदोनों को छेद कर जीवोंकी कसप्ररूपणा की गई है।

### ९ नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरानुगम

इस अनुयोगद्वारमें ६८ सूत्रोंमें चौदह मार्गानुसार नाना जीवोंकी अपेक्षा कसके अद्य-व व उत्कृष्ट अन्तरकालकी प्ररूपणा की गई है।

### १० भागाभागानुगम

इस अनुयोगद्वारमें ८८ सूत्रोंमें चौदह मार्गानुसारके अनुसार सर्व जीवोंकी अपेक्षा कसके भागाभागाकी प्ररूपणा की गई है। यहाँ भागसे अभिप्राय अल्पभागे भाग, असंख्यात्मके व और संख्यात्मके भागसे; तथा अद्यभागे अभिप्राय अनन्त बहुभाग, असंख्यात्मक बहुभाग व संख्यात्मक बहुभागसे है। उदाहरण स्वरूप 'नारकी जीव सब जीवोंकी अपेक्षा कितने भागप्रमाण है ?'। प्रश्नके उत्तरमें उन्हें सब जीवोंके अन्तर्में भागप्रमाण बताया गया है।

## ११ अल्पबहुत्वानुगम

इस अनुयोगशास्त्रमें २०५ सूत्रोंमें चौदह मार्गशास्त्रोंके आश्रयसे जीवसमासोंका वृत्तानुगम प्रमाणप्रस्तुत किया गया है। इस प्रकरणमें एक यह बात स्पष्ट होने योग्य है कि सूत्रशास्त्रमें वनस्पतिविषय जीवोंसे निगोद जीवोंका प्रमाण विशेष अधिक बतलाया है जिसका अभिप्राय बतलाकरने यह प्रकट किया है कि जो एकद्विप जीव निगोद जीवोंसे प्रतिष्ठित हैं उनका वनस्पतिविषय जीवोंके मीठ प्रयोग नहीं किया गया। यहां उल्लेखकरके यह सूत्रोंपर कि उक्त जीवोंकी वनस्पति संज्ञा क्यों नहीं रखी गई, बतलाकरने उक्त दिये हैं कि "यह प्रमाण गौतमसे करो, हमने तो यहां उनका अभिप्राय कह दिया।" (पृ ५४१)।

इस प्रकार अभिप्रायोंके पथान् एक अभिप्राय कृत्रिमरूप महाद्वयकक है जिसके ७९ सूत्रोंमें मार्गशास्त्र विभागासे छोड़कर गर्भोपस्थितिक मनुष्य पर्यन्तसे केवल निगोद जीवों तकके जीवसमासोंका अल्पबहुत्व प्रमाणित किया गया है और उक्तके साथ सुदृक्कककक ककक सम्मान होता है।

## विषय सूची

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
	<b>बन्धक सन्धप्रकरण</b>				
१	घषकाकारका मंगलाचरण	१	२	ग्यारह अनुयोगद्वारोंका क्रम	२१
२	बन्धकोंका निर्देश	"	३	गतिमागणानुसार मंगमादिक	२८
३	गतिमार्गानुसार बन्धक और बन्धकोंकी प्रकरण	७	४	तिर्य्य, मनुष्य व देवगतिमें स्वामित्वप्रकरण	३१
४	बन्धकारोंका निर्देश	९	५	मारकियोंके पाँच उद्य स्थानोंका निरूपण	३२
५	इन्द्रियमार्गानुसार बन्धक बन्धकोंका प्रकरण	१५	६	तिर्य्यामें मी उद्यस्थानोंका निरूपण	३५
६	कायमार्गानुसार बन्धक प्रकरण	१६	७	उद्यस्थानमंगोंकी सख्या दिकके सामनेका उपाय	४४
७	योगमार्गानुसार बन्धक प्रकरण	१७	८	मनुष्योंमें ग्यारह उद्य स्थानोंका निरूपण	५२
८	वेदमार्गानुसार बन्धक प्रकरण	१८	९	द्वयोंमें पाँच उद्यस्थानोंका निरूपण	५८
९	क्यायमागणानुसार बन्धक प्रकरण	१९	१०	इन्द्रियमार्गानुसार स्वामित्वप्रकरण	६१
१०	ज्ञान व संयम मार्गानुसार बन्धक प्रकरण	२०	११	इन्द्रिय दाम्पका निरूपण	"
११	दर्शन व छेदमा मार्गानुसार बन्धक प्रकरण	२१	१२	एकेन्द्रिय भावमें क्षायोपशमि कत्व प्रकट करते हुए घाति भघाति कर्मोंका प्रकरण	,
१२	मध्य व सम्यक्त्व मार्गानुसार बन्धक प्रकरण	२२	१३	द्वैन्द्रियादि भावोंमें क्षायोपशमिकता	६४
१३	संज्ञिमागणानुसार बन्धक प्रकरण	२३	१४	एकेन्द्रियादि भावोंमें औद्ययिके भावकी भाशका व उलका समाधान	६७
१४	आहारमार्गानुसार बन्धक प्रकरण	२४	१५	अमिन्द्रियत्वमें क्षायिक भाव वतळात हुए इन्द्रियविभाशमें आनादिके विभाशकी भाशका व उलका समाधान	६८
	<b>स्वामित्वानुगम</b>				
१	बन्धकोंकी प्रकरणमें ग्यारह अनुयोगद्वारोंका निर्देश	२५			

क्रम सं	विषय	पृष्ठ सं	क्रम सं	विषय	पृष्ठ सं
१६	कायमागणानुसार स्वामित्व प्रकल्पना	७०	८	पृथिवीकापिकादिक जीवोंकी काष्ठप्रकल्पना	१४३
१७	योगमार्गानुसार स्वामित्व प्रकल्पनामें तीनों पाणोंके छद्मत्रय व उनमें क्षयापशामिक मापका निरूपण	७४	९	सूक्ष्म वनस्पतिकारिकोंसे सूक्ष्म निगोदजीवोंकी पूषण प्रकल्पना	१४७
१८	पद्ममागणानुसार स्वामित्व प्रकल्पना	७८	१०	वसुधाधिकोंकी काष्ठप्रकल्पना	१४९
१९	स्त्रीषेद क्या स्त्रीषेद शून्य कर्म जडित परिष्कार है वा नाम कर्मोद्भवजनित शरीरविशेष ? इस शकाका समाधान	७९	११	मन्वोपेगी व वधमयागी जीवोंकी काष्ठप्रकल्पना	१५१
२०	क्यापमार्गानुसार स्वामित्व	८२	१२	कायबावी जीवोंकी काष्ठ प्रकल्पना	१५२
२१	बालमार्गानुसार स्वामित्व	८४	१३	स्त्रीषेदी जीवोंकी काष्ठप्रकल्पना	१५३
२२	संयममार्गानुसार स्वामित्व	९१	१४	पुष्पशेदी "	१५७
२३	वर्तमानमार्गानुसार स्वामित्व प्रकल्पनामें वर्तमानमापकी आशका और वसुधा समाधान	९३	१५	नपुंसकशेदी "	१५८
२४	छद्ममागणानुसार स्वामित्व	१४	१६	मृगगतशेदी "	१५९
२५	मध्यमागणानुसार स्वामित्व	१९	१७	कोष्ठादि क्याप पुष्ट जीवोंकी काष्ठप्रकल्पना	१६०
२६	अम्यक्त्वमार्गानुसार स्वामित्व प्रकल्पना	१७	१८	मति भुत भयानी जीवोंकी काष्ठप्रकल्पना	१६१
२७	संशिमार्गानुसार स्वामित्व	१११	१९	विभिन्नजातियोंका काष्ठ	१६३
२८	भाहारमार्गानुसार स्वामित्व	११२	२०	मति भुतज्ञानियोंका काष्ठ	१६४
पद्म जीवकी अपर्या कान्मनुगम			२१	मम-व्यवपदात्री और कंबल ज्ञानी जीवोंकी काष्ठप्रकल्पना	१६५
१	पतिमागणानुसार नारिकेलोंकी काष्ठप्रकल्पना	११४	२२	परिष्कारशुद्धिसंयत व संयता संयत जीवोंकी काष्ठप्रकल्पना	१६६
२	तिषेधोंकी काष्ठप्रकल्पना	१११	२३	सामाधिक-छेदोपस्थापना शुद्धिसंयत और सूक्ष्मसाम्य पापिकशुद्धिसंयतोंका काष्ठ	१६८
३	मनुष्योंकी काष्ठप्रकल्पना	१२५	२४	पयावपातविहारशुद्धिसंयतोंकी काष्ठप्रकल्पना	१६९
४	वृक्षोंकी काष्ठप्रकल्पना	१२७	२५	असयतोंकी काष्ठप्रकल्पना	१७१
५	इन्द्रियमागणानुसार पद्म इन्द्रिय जीवोंकी काष्ठप्रकल्पना	१३५	२६	पद्मवर्षानी जीवोंका काष्ठ	१७२
६	पिकपेन्द्रियोंकी काष्ठप्रकल्पना	१४१	२७	अक्षयुक्तानी व अयपि वर्तनियोंकी काष्ठप्रकल्पना	१७३
७	पंचेन्द्रियोंकी काष्ठप्रकल्पना	१४२	२८	केपलवर्षानी जीवोंका काष्ठ	१७४

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ सं.	क्रम सं.	विषय	पृष्ठ सं.
२९	कृष्णादिक तीज छेद्यावाळोंकी काळप्रकरण	१७४	१०	स्त्री पुरुषवेदियोंका अन्तर	२१३
३०	पीठादिक तीज छेद्यावाळोंकी काळप्रकरण	१७५	११	नपुंसकवेदियोंका "	२१४
३१	मध्यसिद्धिक जीवोंकी काळ-प्रकरण	१७६	१२	अपगतवेदियोंका "	२१५
३२	अमध्यसिद्धिक जीवोंकी काळप्रकरण	१७७	१३	कोषादिक कपाय युक्त जीवोंका अन्तर	२१६
३३	सम्पन्नद्वि जीवोंकी काळ-प्रकरण	१७८	१४	अकपायी जीवोंका अन्तर	२१७
३४	सम्पन्निस्यद्वि जीवोंकी काळप्रकरण	१८१	१५	मतिशुद्ध मज्जानी जीवोंका अन्तर	२१७
३५	सासाधनसम्पन्नद्वि जीवोंकी काळप्रकरण	१८२	१६	विमंगमज्जानी जीवोंका अन्तर	२१८
३६	मिथ्याद्वि जीवोंकी काळ-प्रकरण	१८३	१७	मतिजानी भादि चार सम्पन्नियोंका अन्तर	२१९
३७	संधी जीवोंकी काळप्रकरण	१८४	१८	केवलशानियोंका अन्तर	२२१
३८	असंधी जीवोंकी काळप्रकरण	१८५	१९	सयत जीवोंका "	२२५
३९	आहारक "	१८५	२०	असयत "	२२६
४०	अमाहारक	१८५	२१	अधुपर्वानी "	२२६
	एक जीवकी अपेक्षा अन्तरानुगम		२२	अधुपर्वानी व अक्षयि वर्णियोंका अन्तर	२२७
१	गतिमार्गानुसार नापकियोंका अन्तर	१८७	२३	केवलवर्षीयोंका अन्तर	२२८
२	तिर्षक व मनुष्योंका अन्तर	१८८	२४	कृष्णादिक तीज छेद्या युक्त जीवोंका अन्तर	"
३	देवोंका अन्तर	१९०	२५	पीठादिक तीज छेद्या युक्त जीवोंकी अन्तरप्रकरण	२२९
४	एकेन्द्रिय जीवोंका अन्तर	१९८	२६	मध्य व अमध्य जीवोंका अन्तर	२३०
५	श्रीन्द्रियादिक जीवोंका अन्तर	२०१	२७	सम्पन्नद्वि और सम्पन्निस्यद्वि जीवोंका अन्तर	२३१
६	पृथिवीकायिकादिक जीवोंका अन्तर	२०२	२८	सासाधनसम्पन्नद्वियोंकी अन्तरप्रकरण	२३२
७	ब्रह्मकायिक जीवोंका अन्तर	२०४	२९	मिथ्याद्वियोंकी अन्तरप्रकरण	२३४
८	पांच मनोयोगी व पांच अक्षययोगी जीवोंका अन्तर	२०५	३०	संधी जीवोंकी अन्तरप्रकरण	"
९	काययोगियोंकी अन्तरप्रकरण	२०६	३१	असंधी "	२३५
			३२	आहारक-अमाहारक जीवोंकी अन्तरप्रकरण	२३६
				नाना जीवोंकी अपेक्षा मगविषयानुगम	
			१	गतिमार्गानुसार अस्ति-नास्ति भगोंका निरूपण	२३७

क्रम सं	विषय	पृष्ठ सं	क्रम सं	विषय	पृष्ठ सं
२	इन्द्रिय व कायमार्याणामे अस्ति नास्ति भगाका निरूपण	२३९	१४	श्रीमित्र्यादिक जीर्णोका प्रमाण	२३९
३	धोय वद व कयाय मार्गणामे अस्ति नास्ति मंगोका निरूपण	२४	१५	पृथिवीकायिकादिक रयावर जीर्णोका प्रमाण	२४०
४	ज्ञान व समय मार्गणामे अस्ति नास्ति मंगोका निरूपण	२४१	१६	वसुधादिक जीर्णोका प्रमाण	२४३
५	वर्शन केत्या व मध्य मार्गणामे अस्ति नास्ति मंगोका निरूपण	२४२	१७	मनोयोगी व वयनयोगी जीर्णोका प्रमाण	"
६	सम्यक्त्व सखी व जाहार मार्गणामे अस्ति-नास्ति मंगोका निरूपण	२४३	१८	काययोगी जीर्णोका प्रमाण	२४८
<b>द्रव्यप्रमाणानुगम</b>			१९	स्त्री पुण्यवर्षी	२८१
१	गतिमार्याणानुसार द्रव्य काळ व सेवकी भपेक्षा नारकी जीर्णोका प्रमाण	२४४	२०	मनुंवरूपवर्षी " "	२८२
२	द्रव्य काळ व सेवकी भपेक्षा तिर्यक जीर्णोका प्रमाण	२५	२१	अपगतवेदी " "	२८३
३	मनुष्य व मनुष्य अर्थात्पुंका प्रमाण	२५४	२२	करोघादिकपापी " "	२८४
४	मनुष्य अर्थात् और मनुष्य विषयोका प्रमाण	२५७	२३	अकपापी	२८५
५	सामान्य देवोका प्रमाण	२५९	२४	मति भुत अज्ञानी " "	"
६	अवलवासी देवोका प्रमाण	२६१	२५	विर्मगजानी " "	२९६
७	बाबज्यन्तर " "	२६९	२६	मति भुत व अविपिजानी जीर्णोका प्रमाण	
८	व्योतिपी	२६३	२७	मनापर्यय व केवळजानी जीर्णोका प्रमाण	२८७
९	सौधर्म ईशानकल्पवासी देवोका प्रमाण	२६४	२८	संपत जीर्णोका प्रमाण	२८८
१०	समाह्वारादि हातार सहकार कल्पवासी देवोका प्रमाण	२६५	२९	असंयत	२८९
११	आमतादि अपराहित विमान वासी देवोका प्रमाण	२६६	३०	वहृवर्षीनी जीर्णोका प्रमाण	२९०
१२	सर्वादिद्वि विमानवासी देवोका प्रमाण	२६७	३१	अवलवर्षीनी और अविधि वर्षीनी जीर्णोका प्रमाण	२९१
१३	पकेन्द्रिय जीर्णोका प्रमाण	"	३२	केवळवर्षीनी जीर्णोका प्रमाण	२९२
			३३	कृष्णादिक वार केत्यावाले जीर्णोका प्रमाण	
			३४	पद्म व शुक्ल केत्यावाले जीर्णोका प्रमाण	२९३
			३५	मध्यसिद्धिक जीर्णोका प्रमाण	२९४
			३६	अमध्यसिद्धिक " "	२९५
			३७	अम्यगधि और सम्यगिष्णा द्वि जीर्णोका प्रमाण	२९६
			३८	मिष्णाद्वि जीर्णोका प्रमाण	२९७

क्रम नं	विषय	पृष्ठ न	क्रम नं	विषय	पृष्ठ न
३९	सह्यी और असह्यी जीवोंका प्रमाण	२९७	१५	पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंकी क्षेत्र प्ररूपणा	३२८
४	आहारक व अनाहारक जीवोंका प्रमाण	२९८	१६	पृथिवीकायिकादिक व सूक्ष्म पृथिवीकायिकादिक जीवोंकी क्षेत्रप्ररूपणा	३२९
<b>ध्वानुगम</b>			१७	बाहर पृथिवीकायिकादिक भाठ बगौंकी क्षेत्रप्ररूपणा	३३०
१	स्वस्थान समुद्रपात व उप पावके मद् और उनके सस्रज	२९९	१८	भाठ पृथिवियोंका अगप्रतर-प्रमाण	३३१
२	मारकियोंकी क्षेत्रप्ररूपणा और उनके मारणास्तिक क्षेत्रके निकालनेका विधान	३०१	१९	पर्याप्त बाहर पृथिवीकायि कादिकोंकी क्षेत्रप्ररूपणा	३३४
३	उपपावक्षत्रके निकालनेका विधान	३०३	२०	बाहर वायुकायिक व उनके अपर्याप्तोंकी क्षेत्रप्ररूपणा	३३५
४	पांच प्रकारके तिर्यचोंकी क्षेत्रप्ररूपणा	३०५	२१	बाहर वायुकायिक पर्याप्तोंकी क्षेत्रप्ररूपणा	३३६
५	मनुष्य मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यभियोंकी क्षेत्रप्ररूपणा	३०८	२२	अनस्यतिकायिक व निगोद् जीवोंकी क्षेत्रप्ररूपणा	३३७
६	मनुष्य अपर्याप्तोंका क्षेत्र	३११	२३	बाहर अनस्यतिकायिक व बाहर निगोद् जीवोंकी क्षेत्र प्ररूपणा	३३८
७	मारणास्तिक क्षेत्रके निकाल नेका विधान	३१२	२४	असक्षयिक जीवोंका क्षेत्र	३३९
८	सामान्य देवोंका क्षेत्रप्रमाण	३१३	२५	पाँचों मनोयोगी और पाँचों अचनयोगियोंकी क्षेत्रप्ररूपणा	३४०
९	मचनवासी भादि सर्वाथ सिद्धि पर्यंत देवोंका क्षेत्र	३१६	२६	कापयोगी और मीनारिक मिश्रकाययोगियोंका क्षेत्र	३४१
१०	मचनवासी भादि देवोंका धारीतोलखेप	३१९	२७	मीनारिककाययोगियोंका क्षेत्र	३४२
११	सामान्य एकेन्द्रिय व सूक्ष्म एकेन्द्रिय तथा उनके पर्याप्त अपर्याप्तोंकी क्षेत्रप्ररूपणा	३२०	२८	वैक्रीपिककाययोगियोंका क्षेत्र	३४३
१२	बाहर एकेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्तोंकी क्षेत्रप्ररूपणा	३२२	२९	वैक्रीपिकमिश्रकाययोगियोंकी क्षेत्रप्ररूपणा	३४४
१३	द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय और बहु रिन्द्रिय जीवोंकी क्षेत्रप्ररूपणा	३२४	३०	आहारकाययोगियोंका क्षेत्र	३४५
१४	पंचेन्द्रिय व पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी क्षेत्रप्ररूपणा	३२६	३१	आहारमिश्रकाययोगियोंकी क्षेत्रप्ररूपणा	३४६



क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं	क्रम न	विषय	पृष्ठ नं
३२	कार्मिककाययोपियोका क्षेत्र	३४६	५०	सम्पत्तिमिष्याहृदि जीर्णोकी क्षेत्रमरूपया	३६३
३३	स्त्रीवेदी और पुरुषवेदियोकी क्षेत्रमरूपया	३४७	५१	मिष्याहृदि जीर्णोका क्षेत्र	३६४
३४	नपुंसकवेदी और भयगत वेदियोकी क्षेत्रमरूपया	३४८	५२	सखी जीर्णोकी क्षेत्रमरूपया	,
३५	श्रीचादि चारों कवाम युक्त जीर्णोकी क्षेत्रमरूपया	३५०	५३	भमकी " "	३६५
३६	मति-सुत मर्यानी जीर्णोकी क्षेत्रमरूपया	"	५४	माहारक	,
३७	विमगम्यानी और मन्त्रपर्यय मर्यानी जीर्णोकी क्षेत्रमरूपया	३५१	५५	मनाहारक	३६६
३८	मति-सुत और भवविद्यानी जीर्णोकी क्षेत्रमरूपया	३५२		स्पर्शनानुगम	
३९	केवळमर्यानी जीर्णोका क्षेत्र		१	सामान्य मात कियोकी स्पर्शन मरूपया	३६७
४०	संपत जीर्णोकी क्षेत्रमरूपया	३५४	२	शास्त्र समाप्त तिर्यग्भोक्तकी मान्यताका स्वरूप	३७१
४१	मसंपत " "	३५५	३	द्वितीयादि पुधिवियोके मात कियोकी स्पर्शनमरूपया	३७३
४२	कष्टदृष्टीनी जीर्णोका क्षेत्र		४	सामान्य तिर्यग्भोकी स्पर्शन मरूपया	३७४
४३	अचष्टदृष्टीनी जीर्णोकी क्षेत्र मरूपया	३५६	५	शाय चार प्रकारके तिर्यग्भोकी स्पर्शनमरूपया	३७६
४४	भवविद्योनी व केवळदृष्टीनी जीर्णोकी क्षेत्रमरूपया	३५७	६	मनुष्य मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यमियोकी स्पर्शनमरूपया	३७९
४५	दृष्ट्यादिक पाँच क्षेत्रवावाळे जीर्णोकी क्षेत्रमरूपया	"	७	मनुष्य मपर्याप्तोकी स्पर्शन मरूपया	३८२
४६	दृष्ट्यादिसंस्थावाळे जीर्णोकी क्षेत्रमरूपया	३५९	८	सामान्य देवाका स्पर्शन	"
४७	मध्य व अमध्य जीर्णोकी क्षेत्रमरूपया	३६	९	मन्त्रनिक देवोकी स्पर्शन मरूपया	३८५
४८	सम्पत्ति और शापिक सम्पत्ति जीर्णोका क्षेत्र	३६१	१०	सौधर्म और ईशान कस्यवासी देवोकी स्पर्शनमरूपया	३८८
४९	वेदकसम्पत्ति अथवा सम्पत्ति और साक्षात् सम्पत्ति जीर्णोकी क्षेत्रमरूपया	३६२	११	सन्तुष्ट्यकारि साक्षात् कस्य वासी देवोकी स्पर्शनमरूपया	३८९
			१२	जातवादि चार कस्यवासी देवोकी स्पर्शनमरूपया	३९०
			१३	कस्यातीत देवोका स्पर्शन	३९१

क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं	क्रम नं	विषय	पृष्ठ नं
१४	एकेन्द्रिय जीवोंका स्पर्शन	३९२	३१	मति-श्रुत ब्रह्मानी जीवोंकी स्पर्शनप्ररूपणा	४२५
१५	द्विकेन्द्रिय जीवोंका स्पर्शन	३९४	३२	विभगब्रह्मानी जीवोंकी स्पर्शन प्ररूपणा	४२६
१६	पञ्चेन्द्रिय जीवोंका स्पर्शन	३९६	३३	मति श्रुत और भवधिब्रह्मानी जीवोंकी स्पर्शनप्ररूपणा	४२८
१७	पृथिवी-वायु-आकाशिक जीवोंकी स्पर्शनप्ररूपणा	४००	३४	मनापर्ययब्रह्मानी जीवोंकी स्पर्शन प्ररूपणा	४३०
१८	तेजस्कायिक जीव कहा पाये जाते हैं इसपर मतभेद	४०१	३५	केवलब्रह्मानी जीवोंकी स्पर्शन प्ररूपणा	४३१
१९	ब्रह्मकायिक जीवोंकी स्पर्शन प्ररूपणा	४११	३६	संपत पद्याप्यातबिहारशुद्धि संपत सामायिक-छेदोपस्था पनाशुद्धिसंपत और सूक्ष्म साम्परायिकसंपत जीवोंकी स्पर्शनप्ररूपणा	"
२०	पाँच मनोयोगी और पाँच ब्रह्मनयोगी जीवोंकी स्पर्शन प्ररूपणा		३७	संपतासंपत जीवोंका स्पर्शन	४३२
२१	काययोगी और औदारिक मिश्रकाययोगी जीवोंकी स्पर्शनप्ररूपणा	४१३	३८	मसद्यत जीवोंका स्पर्शन	४३४
२२	औदारिककाययोगी जीवोंकी स्पर्शनप्ररूपणा	४१४	३९	सहस्रदर्शनी जीवोंका स्पर्शन	,
२३	वैद्विधिककाययोगी जीवोंकी स्पर्शनप्ररूपणा	४१५	४०	मध्यशुद्धानी "	४३७
२४	वैद्विधिकमिश्रकाययोगी जीवोंकी स्पर्शनप्ररूपणा	४१७	४१	मध्यधिदर्शनी औरकेवलदर्शनी जीवोंकी स्पर्शनप्ररूपणा	४३८
२५	माहारकाययोगी जीवोंकी स्पर्शनप्ररूपणा	४१८	४२	कृष्णादिक चार छेदस्यापाछे जीवोंकी स्पर्शनप्ररूपणा	,
२६	माहारमिश्रकाययोगी जीवोंकी स्पर्शनप्ररूपणा	४१९	४३	पद्मसेद्यापाछे जीवोंकी स्पर्शनप्ररूपणा	४४१
२७	कार्मजकाययोगी जीवोंकी स्पर्शनप्ररूपणा	,	४४	शुद्धसेद्यापाछे जीवोंकी स्पर्शन	४४२
२८	क्षीयित्री और पुरुषयेत्री जीवोंकी स्पर्शनप्ररूपणा	४२०	४५	मध्य और ममध्य "	४४४
२९	मनुसकवत्री और भगवतवेत्री जीवोंकी स्पर्शनप्ररूपणा	४२३	४६	सम्यग्दृष्टि "	४४५
३०	श्लोधादि चार कलापवाले जीवोंकी स्पर्शनप्ररूपणा	४२५	४७	सायिकसम्यग्दृष्टि "	४४९
			४८	वेदकसम्यग्दृष्टि , "	४५१
			४९	उपशमसम्यग्दृष्टि , "	४५३
			५०	मासाब्रह्मसम्यग्दृष्टि , "	४५५

क्रम सं	विषय	पृष्ठ सं	क्रम सं	विषय	पृष्ठ सं
५१	सम्पत्तिमध्याहृदि जीवोक्ता स्पर्शन	४५७	३	वेद्योक्ती मन्तरप्रकरण	४८१
५२	मिध्याहृदि " "	४५८	४	इन्द्रिय मार्गजामे मन्तरप्रकरण	४८२
५३	संज्ञी " "	"	५	काय " "	४८३
५४	मसंज्ञी " "	४६१	६	बोग " "	४८४
५५	माहारक व भ्रताहारक जीवोक्ती स्पर्शप्रकरण	"	७	वेद " "	४८५
नाना जीवोक्ती अपेक्षा कासानुगम					
१	घाटकी जीवोक्ती काष्ठप्रकरण	४६२	८	काय और ज्ञान मार्गजामे मन्तरप्रकरण	४८७
२	तिर्यक और मनुष्योंकी काष्ठ प्रकरण	४६३	९	संयम मार्गजामे मन्तरप्रकरण	४८८
३	वेद्योक्ती काष्ठप्रकरण	४६४	१०	दर्शन " "	४८९
४	एकेन्द्रिवादि पाँच प्रकारके जीवोक्ती काष्ठप्रकरण	४६५	११	छेदपा और मूष्य मार्गजामे मन्तरप्रकरण	४९०
५	बसकाय और स्वावरकाय जीवोक्ती काष्ठप्रकरण	४६७	१२	सम्पत्त्व मार्गजामे मन्तरप्रकरण	४९१
६	योगमार्गजामे काष्ठप्रकरण	४६८	१३	संज्ञी " "	४९३
७	वेदमार्गजामे " "	४७१	१४	माहार " "	४९४
८	काय और ज्ञान मार्गजामे काष्ठप्रकरण	४७२	भागभागानुगम		
९	संयम मार्गजामे काष्ठप्रकरण	४७३	१	मरकगतिमे भागामागप्रकरण	४९५
१०	दर्शन व छेदपा मार्गजामे काष्ठप्रकरण	४७४	२	तिर्यक गतिमे	४९६
११	मूष्य और सम्पत्त्व मार्गजामे काष्ठप्रकरण	४७५	३	मनुष्य " "	४९७
१२	संज्ञी और माहार मार्गजामे काष्ठप्रकरण	४७६	४	वेद " "	४९८
नाना जीवोक्ती अपेक्षा जन्तुसानुगम			५	एकेन्द्रिय और बाहर एके न्द्रिय जीवोमे मायामागप्रकरण	४९९
१	गतिमार्गजामे घाटकी जीवोक्ती मन्तरप्रकरण	४७८	६	सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोमे	५
२	तिर्यक व मनुष्योंकी मन्तर प्रकरण	४८	७	जीन्द्रिवाधिक " "	५ १
			८	काय मार्गजामे " "	५ २
			९	सूक्ष्म वनस्पतिकाधिकोसे सूक्ष्म विषोद् जीवोक्ती पृथक्प्रकरण	५०४
			१०	बोग मार्गजामे मायामागप्रकरण	५०७
			११	वेद	५ ९
			१२	काय " "	५१
			१३	काय " "	४११
			१४	संयम " "	५१२

क्रम न	विषय	पृष्ठ सं	क्रम न	विषय	पृष्ठ सं
१५	वर्षान मार्गणामे मात्वामागप्रकरण	५१३	११	वेदमार्गणामे अन्व्य प्रकारसे	
१६	छेदया	५१४		अल्पबहुत्व	५५५
१७	मध्य " "	५१५	१२	कपाय मार्गणामे अल्पबहुत्व	५५८
१८	सम्पत्त्व , ,	५१६	१३	ज्ञान " "	५५९
१९	सही	५१७	१४	सयम " "	५६१
२०	आहार " "	५१८	१५	" अन्व्य प्रकारसे	
				अल्पबहुत्वप्रकरण	५६३
	<b>अल्पबहुत्वानुगम</b>		१६	अतिवसाधि स्थानोमे अल्प	
१	गति मार्गणामे अल्पबहुत्वप्रकरण	५२०		बहुत्वप्रकरण	५६३
२	इन्द्रिय " "	५२४	१७	वर्षान मार्गणामे अल्पबहुत्व	५६८
३	इन्द्रियमार्गणामे प्रकारान्तरसे		१८	छेदया	५६९
	अल्पबहुत्वप्रकरण	५२६	१९	मध्य " "	५७१
४	कायमार्गणामे अल्पबहुत्वप्रकरण	५३०	२०	सम्पत्त्व , ,	" "
५	" अन्व्य प्रकारसे "	५३२	२१	" " अन्व्य प्रकारसे	
६	" , एक और अन्व्य प्रकारसे			अल्पबहुत्व	५७२
	अल्पबहुत्वप्रकरण	३३	२२	सही मार्गणामे अल्पबहुत्व	५७३
७	बनस्पतिकारिणोसे विगोह		२३	आहार " "	५७४
	जीर्णोकी पृथक्त्वप्रकरण	५३९	२४	महाबन्धक और बसके	
८	काय मार्गणामे अतुल्य प्रकारसे			कहनेका प्रयोग	५७५
	अल्पबहुत्वप्रकरण	५४२	२५	मार्गणा निरपेक्ष अल्पबहुत्व	
९	योग मार्गणामे अल्पबहुत्वप्रकरण	५५०		प्रकरण	५७६
१०	वेद , ,	५५४			

## शुद्धिपत्र

( पुस्तक ७ )

पृष्ठ	वंकि	अनुय	सुय
९	३४	माधि'	माधि
"	१३	क्योकि बगने	क्योकि अन्व्य और कन्के
४३	३	कपे	कपे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४८	०१	ने. ११	न १२
७३	२	मबति	मवति
८२	२	भासद्वार्ण	भासद्वार्ण
१२०	१५	उद्धर्तनामलसे	अपमूर्तनामलसे
१७२	५	माबसिद्धिया	मबसिद्धिया
२१४	७	)प)	(प)
३२५	९	अप्पगो	अप्पेगो
३२६	८	सात्यामज केबडिद्येसे	सात्यामज उबबादेव केबडिद्येसे
"	२३	स्वामानसे कितन	स्वामान और उपपात्से कितने
३३४	७	असंशेउग्रगणे	असंशेउग्रगुणे
३३६	५	केबडिद्येसे सम्भसामे ?	केबडिद्येसे ? सम्भसोगे
३५७	३	समुद्रपाद्गवा	समुद्रपाद्गवा
४	७	पुडबिकारय बाडकारय सुडुमतेडकारय सुडुम बाडकारय	पुडबिकारय-भाडकारय-तडकारय बाडकारय-सुडुमपुडबिकारय-सुडुम- भाडकारय-सुडुमतेडकारय-सुडुम- बाडकारया
"	१	शुबिबीकयविक, कापुकायिक सूक्ष्म तेडस्वयविक	शुबिबीकयविक, अप्पयविक, तेडस्वयविक, कापुकायिक, सूक्ष्म शुबिबीकयविक, सूक्ष्म अप्पयविक सूक्ष्म तेडस्वयविक
४१०	९	अडुबाइसमागा	अडुअबबाइसमागा
"	२३	आठ बटे चौदह भाग	आठ व नौ बटे चौदह भाग
५०३	१५	मिष्ठित	अगहन
५४	२९	आधेसे आगतक	आधेसे आवागत
५७३	७	x x x	मिच्छाहर्षी अर्जतगुणा ॥ २०० ५ सुगम ।
"	२०	x x x	सिद्धोसे मिष्पाहृष्टि अतस्तगुने है ॥२ ॥ एक मात्र सुगम है ।

इ ५०३-५७४ पर मूल सफा १०, २०१, २०२, २०३, २०४ और २०५ के अन्तर क्रम २०३ व २ २०३ २ ४, २ ५ और २०६ होता जाहिये ।

बुद्धाबन्धो





सिरि भगवत-पुष्पवत मूदयलि-पणीवो

## छक्खंडागमो

सिरि-धीरसेणाइरिय धिरइय षषळा-टीका-समण्णिदो

तस्स भिवियखंडो

### खुद्दावंधो

पधग-सतपरूचना

जयत परसेषणाहो ज्ञेण महाकम्मपयडिपाहुडसेतो ।

पुदिसिरेणुद्धरिओ समप्पिमो पुष्पयतस्स ॥

जे ते वंधगा णाम तेसिमिमो णिहेसो ॥ १ ॥

‘जे ते वंधगा णाम’ इति वयं वंधगाप पुष्पयसिद्धय सूचति । पुष्पं कम्मि पसिद्धे वधगे सूचेति । महाकम्मपयडिपाहुडम्मि । ए अहं— महाकम्मपयडिपाहुडस्स कदि-वेदणादिगेषु बहुवीसअधियोगद्वारेषु छद्दस्स वंधगाणि अधियागद्वारस्स वंधो वधगो

जिन्होमि महाकर्मप्रकृतिप्राप्तकपी शीलका अपने बुद्धिकपी धिरसे उदार किया और पुष्पमृतावापको समर्पित किया एसे परसेनाचार्य जयवन्त हार्ये ।

ओ वे वधक वीथ हैं उनका यहां निर्देश किया जाता है ॥ १ ॥

शुका— ओ वे वंधक हैं एसा यह वधन वंधकोंकी पूर्वमें प्रसिद्धिको सूचित करता है । अतएव पूर्वतः किस प्रथमें प्रसिद्ध वंधकोंकी यह सूचना है ?

समाधान— यह सूचना महाकर्मप्रकृतिप्राप्तमें प्रसिद्ध वंधकोंकी है । यह इस प्रकार है— महाकर्मप्रकृतिप्राप्तके कृति येवसा भादि वीवीस अनुयोगद्वारोंमें छठवे



बंधगिन्त्रं बंधविहायमिदि अचारि अभियारा । तेसु बंधोचि विदिओ अभियारो, सो एदेन धयणेन सधिदा । अ ते महाकर्मपयडिपाहुडग्नि बंधगा गिरिह्वा तेसिमिमा गिरेमो चि कुर्त्तं होदि ।

बंधया धाम जीरा अर । कुर्त्तं ? अजीवस्स मिच्छत्तादिपण्यएहि अचस्स बंधगत्ताणुबन्धीरो । ते अ जीरा जीरह्वाये चोदसगुणह्वाणविसिह्वा चोदसमभाणह्वाणसु संतादिअह्वाहि अणियोगदारदि मग्गिदा । सपदि तेसि जीबाणं संतादिणा अबगदायं पुणरवि परूणे खीरमाण पुणरुचदाओ हुक्कदि चि ? हुक्कदि पुणरुचदाओ अदि तेसि जीराण एदि अर गुणह्वाणेहि विसेसिवाणं चोदससु मग्गणह्वाणेसु सेहि' सेव अह्वाहि अभियामदारदि मग्गया खीरेदे । पररि एत्थ चोदसगुणह्वाणविसेसणमवणिय चोदससु मग्गणह्वाणसु एक्कएरेदि अभियोगदारदि पुम्मुत्तजीबाणं परूजया खीरेदे । तेव पुणरुच दोसा न हुक्कदि चि ।

जीरह्वाणमि क्कपण्यशादा अर एत्थ परुरिअजमाणो अरयो सेण णय्यदि, तेम

अनुभागद्वारा बन्धनक बंध बंधक बंधनीय भीर बंधविधान, ये चार अधिकार हैं । उनमें आ बन्धक नामका दूसरा अधिकार है वही यहाँ बन्धक बन्धन द्वारा सुचित किया गया है । बहमबा तात्पर्य यह कि आ के महाकर्मपरतिमाहृतमें बन्धक क्ककर निर्दिष्ट किये गए हैं उर्हीजा यहाँ निर्देश है ।

बन्धक जीव ही जान है क्योंकि मिथ्यात्व सादिक बन्धके चारकोंसे रहित अजीवक बन्धकभावकी उपपत्ति नहीं पवती ।

उत्तर—उन ही बन्धक जीवाचर जीवरथात एतद्धमें चौरह गुणरथामोंकी विशयता सादिन चौरह मार्गजाओमें उर्ही माठ अनुयोगा द्वारा बन्धकन किया गया है । अब एतम् आदि प्रकरणामों द्वारा जाने हुए बन्धी जीवाका फिर प्रकरण किये जानस ता पुनरक्ति हार उत्तर्य हाता है ?

समाधान—पुनरक्ति हार मान्य हाता यदि उन जीवोंका उर्ही गुणरथामोंकी विशयता सादिन चौरह मार्गजाओमें उर्ही माठ अनुयोगा द्वारा बन्धकन किया जाता । बिन्नु बन्धी ता चौरह गुणरथामोंकी विशयताका एक्कर चौरह मार्गजाओमें ग्यारह अनुयोगावारीसे पूणक जीवोंकी प्रकरण की जा रही है । मता यहाँ पुनरक्ति दोष नहीं मान्य हाता ।

उत्तर—जीवरथात एतद्धमें आ प्रकरण की गर है उर्हीत यहाँ प्रकथित किये

एदीए परूषणाए ष किंचि फल पेच्छामो ? ण, मग्गमङ्गणेसु चोदसगुणङ्गाणार्णं ससादि परूषणादो मग्गमङ्गामविसेसिदवीनपरूषणाए एगचाणुबलंमादो । अदि तथो एयत्तमित्थि तो अन्नग्गम्मदे, ष अ एयत्तं पेच्छामो । एदेण कमेण छिददन्नादिअणियोगदाराणि पेच्छं वीनङ्गाण कयमिदि आणावणं वा अन्नयाण परूषणा आगदा । तन्हा अन्नयाण परूषणा पापपत्तमिदि ।

नामब्रह्मया ठवणब्रह्मया दम्भब्रह्मया भावब्रह्मया वेदि चउम्बिहा ब्रह्मया । तस्य नामब्रह्मया नाम 'ब्रह्मया' इदि सरो वीनाजीवादिअङ्गमंगेसु पयङ्गंतो । एसो नामपिक्खेवो दम्भद्वियणयमवलंबिय छिदो । छिदो ? यामस्स सामणो पउत्तिदसणादो, दिङ्गाभंतरसमए गङ्गदम्भसु सकेयगाहणाणुववत्तीदो । कङ्क-पोत्त-लेप्पकम्मादिसु सम्भाषासम्भाषमेएण अे ठविदा ब्रह्मया चि ते ठवणब्रह्मया नाम । एमो पिक्खेवो दम्भद्वियणयमवलंबिय छिदो । छिदो ? 'सो एसो' चि एयत्तमङ्गवसाएण विणा छुवणाए अणुववत्तीदो । अे ते दम्भब्रह्मया

आनेबाळे अर्थका ज्ञान हो जाता है अतः इस प्ररूपणाका हमें तो किंचित् भी फल दिखारि नहीं देता ?

समाधान—देखा नहीं है क्योंकि मार्गणास्थानोंमें बौद्ध गुणस्थानोंकी सत्, संख्या आदिकरूप प्ररूपणासे मार्गजाविशोधित जीवप्ररूपणाका एकत्व नहीं पाया जाता । यदि उसस एकत्व होता तो बीसा हमें ज्ञान हो जाता । किन्तु हमें उनका एकत्व दिखारि नहीं देता ?

अथवा इस क्रमसे स्थित द्रव्यादि अनुयोगद्वारोंको छेकर जीवस्थान खण्डकी रचना की गई है यह अतछानेके लिये ब्रह्मकोंकी प्ररूपणा प्रस्तुत है । अतएव ब्रह्मकोंकी प्ररूपणा न्यायप्राप्त है ।

ब्रह्मक चार प्रकारके हैं— नामब्रह्मक स्थापनाब्रह्मक द्रव्यब्रह्मक भीर माव ब्रह्मक । उनमें नामब्रह्मक तो ब्रह्मक यह शब्द ही है जो जीव अजीव आदि आठ भगोंमें प्रयुक्त होता है । (इस आठ भगोंके लिये वेत्तो जीवस्थान भाग १ पृ १९) । यह नामनिलेप द्रव्यार्थिक तपका अन्नदम्भन करके स्थित है क्योंकि नामकी सामान्यमें प्रवृत्ति देवी जाती है बूकि दिखारि बनेके अनन्तर समयमें ही तद रूप पदार्थोंमें संकेत ग्रहण करना नहीं बनता ।

काष्ठकर्म पोटकर्म स्रव्यकर्म आदिमें सद्भाव व असद्भाबके भेदसे जिनकी ये ब्रह्मक हैं वेही स्थापना की गई हो ये स्थापनाब्रह्मक हैं । यह निलेप भी द्रव्यार्थिक तपके अन्नदम्भनसे स्थित है क्योंकि, यह यही है एमे एकत्वका निश्चय किये बिना स्थापनानिलेप बन नहीं सकता ।

धाम ते दुविहा आगम-सोभागममेण । बधयपाहुडआणण अणुबन्धुपा आगमदम्बबंधया  
 नाम । कथमागमेष विष्णुस्फुटस्स धीवद्व्यस्स आगमववपसो ? ण एस दोसो, आगमा-  
 भावे' वि आगमसंसकारसद्वियस्स पुत्र्य लङ्गागमववपसस्म धीवद्व्यस्स आगमववपसु-  
 बसंसा । एदेवेव भद्दससकारधीवद्व्यस्स वि गहणं कायर्णं, तस्य वि आममववपसुबसमा ।  
 सोभागमासो द्व्यबंधया विविहा, आणुअसरीर मविय-तद्व्यदिरिचबंधयमेदेण । आणुग  
 सरीर मवियद्व्यबंधया सुगमा । तद्व्यदिरिचद्व्यबंधया दुविहा— कम्मबंधया धोक्कम्मबंधया  
 वेदि । तस्य वे धोक्कम्मबंधया त विविहा— सच्चित्तजोक्कम्मद्व्यबंधया अधिचजोक्कम्मद्व्य  
 बंधया मिस्सयोक्कम्मद्व्यबंधया वेदि । तस्य सच्चित्तजोक्कम्मद्व्यबंधया अहा इत्थीयं  
 बंधया, वस्त्यायं बंधया इत्थेवमादि । अधिचजोक्कम्मद्व्यबंधया अहा कट्ठाण बंधया,  
 सुप्प्यायं बंधया कट्ठयायं बंधया, इत्थेवमादि । मिस्सजोक्कम्मद्व्यबंधया अहा साहरणायं'  
 इत्थीयं बंधया इत्थेवमादि ।

जो द्रव्यबन्धक हैं वे आगम और सोभागमके मेहसे हो प्रकारके हैं । बन्धक  
 प्राप्तके आगमकार किन्तु ( विवक्षित समय पर ) उसमें उपयोग न करनेवाले आगम  
 द्रव्यबन्धक हैं ।

संज्ञा—जो आगमके उपयोगसे रहित है उस जीव द्रव्यको आगम कैसे  
 कहा जा सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि आगमके अभाव होने पर भी  
 आधमके संस्कार सहित एवं पूर्वजन्ममें आगम संज्ञाको प्राप्त जीव द्रव्यको आधम  
 कहा जाया जाता है । इसी प्रकार जिस जीवका आगम संस्कार अद हो गया है उसका  
 भी ग्रहण कर लेना चाहिये क्योंकि उसके भी आगम संज्ञा पाई जाती है ।

हायककारीर, मध्य और तद्रूपतिरिक्तके मेहसे सोभागमद्रव्यबन्धक तीन  
 प्रकारके हैं । तद्रूपतिरिक्त द्रव्यबन्धक दो प्रकारके हैं— कर्मबन्धक और माकर्मबन्धक ।  
 उनमें जो माकर्मबन्धक हैं वे तीन प्रकारके हैं— सच्चित्तजोक्कम्मद्रव्यबन्धक सच्चित्तजोक्कर्म-  
 द्रव्यबन्धक और मित्रजोक्कर्मद्रव्यबन्धक । उनमें सच्चित्तजोक्कर्मद्रव्यबन्धक जैसे— हाथी  
 बांधनेवाले घोड़े बांधनेवाले इत्यादि । सच्चित्तजोक्कर्मद्रव्यबन्धक जैसे— ऊकड़ी बांधने  
 वाले लूपा बांधनेवाले कट ( बटार ) बांधनेवाले इत्यादि । मित्रजोक्कर्मद्रव्यबन्धक  
 जैसे— आधरथी सहित हाथियोंके बांधनेवाले इत्यादि ।

१ तद्वि आधमयमे इति पाठ ।

२ तद्वि निरवण यत्ती निरवण इति पाठ ।

३ बधयन्तोः शास्त्रपाठ इति पाठ ।

जे कर्मबन्धया ते दुविहा— श्रियाबन्धयया सांपराध्यबन्धया चेदि । तत्प जे श्रियाबन्धयया ते दुविहा— छद्ममत्या केवळिणो चेदि । जे छद्ममत्या ते दुविहा— उवसत कसाया खीणकसाया चेदि । जे सांपराध्यबन्धया ते दुविहा— सुद्ममसांपराद्या बादरसांपराद्या चेदि । जे सुद्ममसांपराद्या बन्धया ते दुविहा— असपराद्यादिया बादरसांपराद्यादिया चेदि । जे बादरसांपराद्या ते तिबिहा— असंपराद्यादिया सुद्ममसांपराद्यादिया अणादि बादरसांपराद्या चेदि । तत्प जे अणादिबादरसांपराद्या ते तिबिहा— उवसामया खबया अकखबयाजुबसामया चेदि । तत्प जे उवसामया ते दुविहा— अपुम्बकरणउवसामया अभियष्टिकरमउवसामया चेदि । जे खबया ते दुविहा— अपुम्बकरणखबया अभियष्टिकरणखबया चेदि । तत्प जे अकखमयअजुबसामया ते दुविहा— अणादिअपन्अवसिदबभा य मणादिसपन्अवसिदबभा चेदि । तत्प जे मावबन्धया ते दुविहा— आगम-जोआगम मात्रबन्धयमेदेण । तत्प जे बधपाहुबजाणया उवजुत्ता आगममावबन्धया गाम । जोआगममावबन्धया महा कोह-माण-माया-लोह-येम्माई अप्पणाई करेता ।

एदेसु बधगोसु कम्मबन्धयि एत्य अधियारो । एदेसि बन्धयाम् विदेसे कीरमाणे चोदसमगगणहणाणि आधारभूदाणि ह्येति । काणि ताणि मगगणहणाणि चि धुत्ते

जो कर्मके बन्धक ह्ये ते दो प्रकारके ह्ये— र्हापयब बन्ध और साम्परायिक-बन्धक । उनमें जो र्हापयबन्धक ह्ये ये दो प्रकारके ह्ये— उघरय और केवली । जो उघरय ह्ये ये दो प्रकारके ह्ये— उपशामकयाय और क्षीणकयाय । जो साम्परायिकबन्धक ह्ये ये दो प्रकारके ह्ये— सूत्रमसाम्परायिक और बादरसाम्परायिक ।

जो सूत्रमसाम्परायिक बन्धक ह्ये ये दो प्रकारके ह्ये— असाम्परायादिक और बादरसाम्परायादिक । जो बादरसाम्परायिक ह्ये ये तीन प्रकारके ह्ये— असाम्परायादिक, सूत्रमसाम्परायादिक और अनादिबादरसाम्परायिक । उनमें जो अनादिबादरसाम्परायिक ह्ये ये तीन प्रकारके ह्ये— उपशामक क्षयक और अक्षयकानुपशामक । उनमें जो उपशामक ह्ये ये दो प्रकारके ह्ये— अपूर्णकरण उपशामक और अनिष्टितकरण उपशामक । जो क्षयक ह्ये ये दो प्रकारके ह्ये— अपूर्णकरण क्षयक और अनिष्टितकरण क्षयक । उनमें जो अक्षयकानुपशामक ह्ये ये दो प्रकारके ह्ये— अनादि अपययसित बन्धक और अनादि सपययसित बन्धक ।

उनमें जो मावबन्धक ह्ये ये मागम और नोभायमेके मेदसे दो प्रकारके ह्ये । उनमें बन्धमावृत्तके आलकार और इसमें उपयोग रखनयाल आगममावबन्धक ह्ये । नोभायम मावबन्धक ऊँस श्लेष मान माया सोम य मेमका आगमसान् करमेपासे ।

इन सब बन्धकोंमें कमबन्धकोंका ही यहाँ अधिवार ह्ये । इन्हीं बन्धकोंका निर्देश करकेपर चौदह मार्गधारणान् आचारमूल ह्ये । ये मागव्याख्यात बीजस ह्ये । देसा पूते

उच्यते मन्त्रि—

गृहं हिंदि ए का ए जोगे वेदे कसा ए णाणे सजमे दसणे लेस्ता ए  
भवि ए सम्मत्त सणि आहार ए वेदि ॥ २ ॥

गम्यते इति गतिः । एदी ए गिरुषी ए गाम णपर-खेड-कम्बडादीय पि गदित्तं  
वसन्त्रदे ! व, हृदिबलेन गदिगामकम्मस्मिप्पाइयपन्नायम्मि गदिसइपपुचीदे । गदि  
कम्मोदयामावा सिद्धिगदी अगदी । अथवा, मवाद् मवसंक्रंतिर्गतिः, असक्रंतिः  
मिद्धिगति । स्वविषयनिरतानीन्द्रियाणि, स्वार्थनिरतानीन्द्रियाणीत्यर्थः । अथवा, इन्द्र  
मात्मा, इन्द्रस्य सिद्धिमिन्द्रियम् । आत्मप्रवृत्त्युपचितपुद्गलपिंडः क्वाय, पृष्ठीकामादि  
नामकर्मजनितपरिणामा वा कार्य-कारणोपचारेण क्वायः, पीयन्ते अस्मिन् जूतिषा इति  
प्युत्पत्तेषा क्वायः । आत्मप्रवृत्तेर्संकोचविक्रोचो योगः, मनावाकक्षयात्पटंमवलन जीव

जाने पर भाचार्य जगन्नाथ सूत्र कहते हैं—

मति, इन्द्रिय, क्वाय, योग, वेद, क्वाय, ज्ञान, संयम, दर्शन, लेखना, मन्त्र,  
सम्पत्त्व, संदी और आहारक, ये षोडश मार्गवास्थान हैं ॥ २ ॥

जहाँको गमन किया जाय वह गति है ।

शंका—गतिकी इस प्रकार निश्चिन्ता करनेसे तो मान नगर खेडा कर्बट आदि  
स्थानोंको भी मनि मानलेका प्रसंग आता है ?

समाधान—जहाँ जाता क्योंकि हृदिके बलसे गतिनामकर्म द्वारा जो पर्याय  
निष्पन्न की गई है उसीमें गति शब्दका प्रयोग किया जाता है । गतिनामकर्मके उद्देश्यके  
प्रमाणके कारण सिद्धिगति भगति कहलाती है । अथवा एक मन्त्रसे दूसरे मन्त्रमें  
संक्रान्तिका नाम गति है और सिद्धिगति मलेकान्तिरूप है ।

जो अपने अपने विषयमें एत हों वे इन्द्रियाँ हैं अर्थात् अपने अपने विषयरूप  
पदार्थोंमें रमण करनेवाली इन्द्रियाँ कहलाती हैं । अथवा इन्द्र मात्माको कहते हैं और  
इन्द्रके सिगाका नाम इन्द्रिय है । आत्माकी प्रवृत्ति द्वारा उपचित किये गये पुद्गलपिंडको  
क्वाय कहते हैं । अथवा पृष्ठीकामादि आदि नामकर्मोंके द्वारा उत्पन्न परिणामको कार्यमें  
कारणके उपचारसे क्वाय कहा है । अथवा जिसमें जीवोंका संलय किया जाय देसी  
प्युत्पत्तिसे क्वाय बना है । आत्माकी प्रवृत्तिसे उत्पन्न संकोच विक्रोचका नाम योग है  
अर्थात् मन बचन और क्वायके अक्षयभनसे जीवयवेष्टाओंमें परिस्यन्त होनेको योग कहते

१ गतिः नामनि इति वाक्य ।

२ भाष्यी निश्चयति इति वाक्य ।

३ गतिः अक्षयभनसंलय- इति वाक्य ।

प्रदेशपरिस्पन्दो योग इति यावत् । आत्मप्रवृत्तेर्मयुनसंमोहोत्पादो वेदः । सुख-दुःखपदु-  
सस्य कर्मक्षेत्रं कृपन्तीति कृपायाः । मृतार्थप्रकाशकं ज्ञानं तत्त्वार्थोपलभकं वा । व्रत-  
समितिकृपाय-इतिन्द्रियाणां रक्षण-पालन-निग्रह-त्याग-क्षयाः संयम', सम्यक् यमो वा  
संयमः । प्रकाशवृत्तिर्दर्शनम् । आत्मप्रवृत्तिसंश्लेषकरी श्रेण्या, अथवा लिम्पतीति  
श्रेण्या । निर्न्वाणपुरस्कृतो मभ्याः, तद्विपरीतोऽमभ्याः । तत्त्वार्थभदानं सम्यग्दर्शनम्,  
अथवा तत्त्ववृत्ति' सम्यक्त्वम्, अथवा प्रथम-संवेगानुकम्पास्तिक्याभिम्यक्तिलक्षण  
सम्यक्त्वम् । शिक्षाक्रियोपदेशालापप्राही' संज्ञी, तद्विपरीतः असंज्ञी । शरीरप्रायोग्य  
पुत्रसर्पिडग्रहणमाहारः, तद्विपरीतमनाहारः । एदेसु जीवा मगिचञ्चति इति एदेसि  
मगणागो इति सज्या ।

## गदियाणुवादेण गिरयगदीए णेरइया वंधा ॥ ३ ॥

हैं । आत्माकी प्रवृत्तिसे मयुनरूप सम्मोहकी उत्पत्तिक नाम वेद है । सुख दुखकपी  
लुख फसल उत्पन्न करनेवाले कर्मकपी क्षेत्रम् जो कर्षण करते हैं वे कृपाय हैं । जो  
पर्याय वस्तुका प्रकाशक है अथवा जो तत्त्वार्थके प्राप्त करनेवाला है वह ज्ञान है ।  
व्रतरक्षण समितिपालन कृपायनिग्रह, इन्द्रत्याग और इन्द्रियव्ययका नाम संयम है  
अथवा सम्यक् रूपसे आत्मनियन्त्रणको संयम कहते हैं । प्रकाशरूपवृत्तिक नाम दर्शन है ।  
आत्मा और प्रवृत्ति ( कर्म ) का संश्लेषण अर्थात् संयोग करनेवाली श्रेण्या कहलाती है ।  
अथवा जो ( कर्मसे आत्माका ) छेप करती है वह श्रेण्या है । जिस जीवने निर्वाणको  
पुरस्कृत किया है अर्थात् अपने समुल रखा है वह मभ्य है और उससे विपरीत अर्थात्  
निर्वाणको पुरस्कृत नहीं करनेवाला जीव असम्य है । तत्त्वार्थके ध्यानका नाम सम्य  
प्रथम है । अथवा तत्त्वोंमें ठबि होना ही सम्यक्त्व है । अथवा प्रथम संवेग अनुकम्पा  
और आस्तिक्यकी अभिम्यक्ति ही जिसका लक्षण है वही सम्यक्त्व है । शिक्षा किया  
उपदेश और आलापको ग्रहण कर सकनेवाला जीव संज्ञी है, उससे विपरीत अर्थात्  
शिक्षा क्रियाविको ग्रहण नहीं कर सकनेवाला जीव असंज्ञी है । शरीर बनानेके योग्य  
पुत्रसर्पिडको ग्रहण करना ही आहार है, उससे विपरीत अर्थात् शरीर बनानेके योग्य  
पुत्रसर्पिडको ग्रहण नहीं करना अनाहार है ।

एन्ही पूर्वोक्त बौद्ध रथावोंमें जीवोंकी मार्गणा अर्थात् खोजकी जाती है इसी  
छिये इनका नाम मार्गणा है ।

गतिमार्गणाके अनुसार नरकगतिमें नारकी जीव बभक हैं ॥ ३ ॥

वधया चि वुर्च होदि । इन्द्रो ? दोर्णं वि पदत्वमेककारये विप्यचीदो ।

तिरिक्त्वा वंधा ॥ ४ ॥

इन्द्रो ? मिच्छत्वासंज्ञम-कृमाय ओगार्थं बंधकारणार्थं तत्पुबलंमादो । एतच्च तिरिक्त्वावधीय इति किञ्च वुच ? न एत दोसो, अत्यावचीए तदुबलंमादा ।

देवा वधा ॥ ५ ॥

सुगममेव ।

मनुसा वधा वि अत्यि, अवधा वि अत्यि ॥ ६ ॥

मिच्छत्वासंज्ञम-कृमाय-ओगार्थं बंधकारणार्थं सन्धेसिमओमिन्दि जमावा अओमिभो अवधया । सेता सन्धे मनुसा बंधया, मिच्छत्वादिबंधकारणसंज्ञुत्वादो ।

सिद्धा अवंधा ॥ ७ ॥

यहां सूत्रोक्त वन्ध शब्दसे बन्धकक्या ही अभिप्राय है, क्योंकि बन्ध और बन्धक इन दोनों पर्यायी एक ही कारकमें विप्यति है । अर्थात् ये दोनों ही शब्द वन्ध शब्दसे कर्ता कारकके अर्थमें क्रमशः अथ वा अनुसृ प्रत्यय लगाकर बने हैं ।

तिर्यक् बन्धक हैं ॥ ४ ॥

क्योंकि इनमें बन्धके कर्त्तृभूत मिच्छात्व असंयम कृपाय और योग पाये आते हैं ।

संज्ञा—यहां सूत्रमें तिरिक्त्वावधीय अर्थात् तिर्यक् भक्तिमें ऐसा पर क्यों नहीं कहा ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं क्योंकि तिर्यक् भक्तिवा अर्थ यहाँ अर्थापत्ति न्यायसे आ ही जाता है ।

देव बन्धक हैं ॥ ५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मनुष्य बन्धक भी हैं, अवन्धक भी हैं ॥ ६ ॥

कर्मबन्धके कर्त्तृभूत मिच्छात्व असंयम कृपाय और योग इन सबका अयोग्य कबलों शुभस्वात्ममें समाप्त होमेसे अयोगी जिन अवन्धक हैं । देव सब मनुष्य बन्धक हैं, क्योंकि मिच्छात्वादि बन्धके कर्त्तृभूतसे संयुक्त पाये आते हैं ।

सिद्ध अवन्धक हैं ॥ ७ ॥

कुद्रो ? बंधकारणवदिरिचमोक्त्वकारणेहि संयुक्तचादो । क्वाणि पुण बंधकारणाणि,  
बध-बंधकारणावगमेण विणा मोक्त्वकारणावगमाभावा । युक्त च—

जे बधय भावा मोक्त्वय भावि जे दु वक्तये ।

जे भावि बधमोक्त्वे अनरत्य ते वि विणेया ॥ १ ॥

तदा बधकारणाणि वचन्वापि ? मिच्छत्तासंबन्धम-कृताय-जोगा बधकारणाणि ।  
सम्भरसण-संबन्धमाकृतायाजोगा माक्त्वकारणाणि । युक्त च—

मिच्छत्तविरदी वि य कृतायजोगा य आसवा ह्येति ।

दसण-विरमण-जिग्गह-गिरोहया संवय ह्येति ॥ २ ॥

जदि चत्तारि येन मिच्छत्तादीणि बधकारणाणि ह्येति तो—

ओदहा बधय उवसम-वप-मिस्सया य मोक्त्वय ।

मावो दु परिणामिओ कणोमयवग्गियो होदि ॥ ३ ॥

क्योंकि सिद्ध बन्धकारणोंसे व्यतिरिक्त मोक्षके कारणोंसे संयुक्त पाय जाते हैं ।

शुद्धा—ये बन्धके कारण कौनसे हैं क्योंकि बन्धके कारण जाने बिना मोक्षके  
कारणोंका ज्ञान नहीं हो सकता । कहा भी है—

जो बन्धके उत्पन्न करनेवाले भाव हैं और जो मोक्षको उत्पन्न करनेवाले भाव्या  
त्मिक भाव हैं तथा जो बन्ध और मोक्ष दोनोंको नहीं उत्पन्न करनेवाले भाव हैं ये सब  
भाव ज्ञानम योग्य हैं ॥ १ ॥

अतएव बन्धके कारण बतझाना चाहिये ।

समाधान—मिष्यात्य असंपन्न कषाय और योग ये चार बन्धके कारण हैं ।  
और सम्पन्नर्शन संपन्न अकषाय और अयोग ये चार मोक्षके कारण हैं । कहा भी है—

मिष्यात्य अविदति कषाय और योग ये कर्मोंके आश्रय अर्थात् भागमनकार  
हैं । तथा सम्पन्नर्शन विषयविरक्ति, कषायनिग्रह और मत-अशम-कषायका निरोध  
ये संबन्ध अर्थात् कर्मोंके निरोधक हैं ॥ २ ॥

शुद्धा—यदि ये ही मिष्यात्वादि चार बन्धके कारण हैं तो—

औद्ययिक भाव बंध करनेवाले हैं औपशमिक ज्ञायिक और ज्ञायोपशमिक भाव  
मोक्षके कारण हैं तथा पारिणामिक भाव बन्ध और मोक्ष दोनोंके कारणसे रहित  
हैं ॥ ३ ॥



यदीय सुखगाहाय सह विरोधो होदि चि पुचे न होदि, ओदइया मधपरा चि पुच न सम्भेसिमोदइयाय मावाण गहण, गदि-आदिआदीबं चि ओदइयामावार्ण बंध-कारणचप्पसंगा । देवगदीउदपण चि अग्नेो चि पयडीयो बन्धमाभियाओ वीसंति, तासि देवगदिउदमो किण्ण करेणं होदि चि पुचे न होदि, देवगदिउदयामावेण तासि चियमेव बंधामावाणुबलंमाओ । 'अस्स अप्पय-वदिरेगेहि' नियमेण अस्सुप्पय वदिरेगा उवत्तंमंति तं तस्स क्खन्वमियरं च करण' इदि जायाओ मिच्छत्तादीणि चैव बंधकारणाणि ।

तस्य मिच्छत्त-गुणुंमयवेद विरयाठ विरयगद्द-एइदिय-धीइदिय-तीइदिय-चतुइदिय-ओदि हुंससत्तय अंसपचसेवहुसरिरसपडव-फिरयगइयाओग्माणुपुष्पी-आदाव-वावर-सुहुम अपत्तच-साहारवाणं सोलसवणं पयडीयां बंधस्स मिच्छत्तुदमो करणं, सुहुदयण्णय-वदिरेगेहि सोसपयडीवधस्स अप्पय वदिरेगाणुबलमाओ । विइयाइया-पयत्तापयत्त-धीयगिडी-

इस सुखगायाके साथ विरोध उत्पन्न होता है ।

समाधान—विरोध नहीं उत्पन्न होता है, क्योंकि भौतिक मात्र बन्धक कारण है देहा कहनेपर सभी भौतिक भावोंका प्रहण नहीं समझना चाहिये क्योंकि देहा माननेपर यदि आदि प्राणिकमैसम्बन्धी भौतिक भावोंके भी बन्धके कारण होनेका प्रसंग न्या जायगा ।

दुंका—देवपतिके उदयके साथ भी तो कितनी ही प्रकृतियोंका बन्ध होना देखा जाता है फिर इनका कारण देवपतिका उदय क्यों नहीं होता ?

समाधान—इसका कारण देवपतिका उदय नहीं होता क्योंकि देवपतिके उदयक अज्ञानमें नियमसंज्ञके बन्धनका समाव नहीं पाया जाता । " जिसके अन्वय और व्यतिरेकके साथ नियमसंज्ञके अन्वय और व्यतिरेक पाये जायें वह उसका कार्य और नृसुख कारण होता है " ( अर्थात् जब एकके सत्ताबमें नृसुखका सत्ताय और उसके समापमें नृसुख भी समाव पाया जाये सभी जगमें कार्य कारणमात्र संभव हो सकता है अन्यथा नहीं । ) इस व्यापसं निष्पत्त्य आदिक ही बन्धक कारण है ।

इस कारणमें निष्पत्त्य, मनुंसकबद बरकायु, नरकपति एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय व चतुइन्द्रिय आदि हुंससंस्याम अंसप्रातसुपाटिका शरीरसंज्ञनन नरकपति प्रायाग्यासुपूर्वी आताप रथावर, सुस्म अपर्याप्त और साधारण इन सोकह प्रकृतियोंके बन्धका निष्पत्त्यादय कारण है क्योंकि निष्पत्त्यादयके अन्वय और व्यतिरेकके साथ इन सोकह प्रकृतियोंके बन्धका अन्वय और व्यतिरेक पाया जाता है ।

विप्रानिद्रा प्रवसाप्रवसा स्तपानपृथि अजन्तानुबन्धी श्लेष मान माया और

अर्थात्पुर्बधिक्रोम माण-माया-लोमा-इत्येवेद-तिरिक्खाठ-तिरिक्खगदी-णगोह-सादि  
 सु च्च-बामणसरिरसंठाण-वच्चपारायण-भारायण अद्भ्यारायण-खीलियसरिरसपडम तिरि  
 क्खगदीपाओग्माणुपुब्बी ठओत्र-अप्पसत्थविहायगदि-दुमग-दुस्सर अणावेअ-पीचागोदाम  
 बंधस्त अणताणुर्बधिक्रकस्त उदयो कारण । इदो ? तदुदयअणय-वदिरेगेहिमेदासि  
 पयडीभं बंधस्त अणय-वदिरेगाण उबलंमादो । अपच्चकस्त्राणावरणीयकोम-माण माया-  
 लोम-मणुस्ताठ मणुस्तगदी-ओरासियसरिर अगोवण-वच्चरिसहसपडम-मणुस्मगदीपाओ-  
 ग्माणुपुब्बीण बंधस्त अपच्चकस्त्राणावरणषदुक्कस्त उदयो कारण, तेण विणा पदासि  
 बंधाणुबलंमा । पच्चकस्त्राणावरणीयकोम-माण-माया लोमाण बंधस्त पदासि चेव उदयो  
 कारण, सोदएण विणा पदासि बंधाणुबलमा । असादावेदणीय अरदि-सोग-अधिर-असुह  
 अजसकिधीर्बं बंधस्त पमादो कारण, पमादेण विणा पदासि बंधाणुबलमा । को पमादो  
 णाम ? अदुसबलभ-ववओकसामाणं तिब्बोदओ । अदुह्ण बंधकारणामं मन्वे कएय

सोम स्त्रीवेद तिरिचयायु तिरिचगति न्यप्रोष स्याति कुप्पक और बामन शरीर-  
 संस्थान वज्रनाराच माराच, अर्धनाराच और कीकित्त शरीरसहनन, तिरिचगति  
 प्रायोग्यानुपूर्वी उद्योत अमशस्तनिहायोगति दुर्मग, दुस्वर अमादेय और मीच  
 गोत्र, इन पथीम प्रकृतियोंके बन्धका अमस्तानुबन्धीयतुक्कका उदय कारण है, क्योंकि  
 उन्हींके उदयके अन्वय और व्यतिरेकके साथ इन प्रकृतियोंका मी अन्वय और अतिरेक  
 पाया जाता है ।

अप्रत्याख्यानावरणीय क्रोध माम माया और सोम मनुष्यायु मनुष्यगति,  
 औदारिक शरीर औदारिक शरीरसंगोपांग बज्रभयमसहनन और मनुष्यगतिप्रापो  
 ग्यानुपूर्वी इन द्वा प्रकृतियोंके बन्धका अप्रत्याख्यानावरणचतुक्कका उदय कारण है  
 क्योंकि उन्हींके विना इन प्रकृतियोंका बन्ध नहीं पाया जाता ।

प्रत्याख्यानावरणणीय क्रोध माम माया और सोम इन चार प्रकृतियोंके बन्धका  
 कारण इन्हींका उदय है क्योंकि अपने उदयके विना इनका बन्ध नहीं पाया जाता ।

असातापेदनीय अरति शोक, अदियर मणुम और अयथाकीर्ति इन छह प्रकृ-  
 तियोंके बन्धका कारण प्रमाद है क्योंकि प्रमादके विना इन प्रकृतियोंका बन्ध नहीं  
 पाया जाता ।

शुक्रा—प्रमाद किसे कहते हैं ?

सुमाधान—चार संयुक्त कथाय और सब लोकयाय, इन तेरहके तीस उदयका  
 नाम प्रमाद है ।

शुक्रा—पूर्वोक्त चार बन्धके कारणोंमें प्रमादका कहां अस्तमाव होता है ?

पमादस्तत्प्रमाणो ! कसायसु, कसायबदिरिचपमादाशुबलमादो । देवातबन्धस्य वि  
 कसामो चैव करणं, पमाददुःकसायस्य उदयामात्रेण अप्यमचो होतुम् मदकसातदप्य  
 परिषदस्य देवातअर्धभविजासुबलमा । मिहा-पयसाप्य पि बंधस्य कसातदभो चैव करणं,  
 अपुष्कलजहाए पदमसत्तममाए' संकलमात्रं तप्याजोगतिम्बोदए एदासि बंधुबलमादो ।  
 देवय-बंधिदिपजादि-नेठभिय माहार-तेजा-कम्मइयसरि र समथरससरिर्गठान-वेठभिय  
 आहारसरिर्भयो-ग-बन्ध-गोए रम-प्रास-देवगद्गप्राजोगाशुपुष्पी-भगुरुमलहुय-उपपाद-पर  
 पाद-उस्तास-पसरविहायगदि-स-बावर-यत्रच-पचपसरि-भिर-सुह-सुमम सुस्तर अदेक  
 भिमिय-किरपयार्गं पि बंधस्य कसातदभो चैव करणं, अपुष्कलजहाए उसत्तमाम  
 परिमसमए मंदपरकसातदप्य सह बंधुबलमादो । इस्स-रदि मय-दुगुंठार्य बंधस्य  
 अथापवत्तापुष्कलजगिबंधकसातदभो करणं, तस्येव एदासि बंधुबलमादो । चहु  
 सभल्य-पुरिसवेदां बंधस्य बादरकसाओ करणं, सुहुमकसाए एदासि बंधुबलमा ।

समाधान—कथापोंमें प्रमादका अन्तर्भाव होता है क्योंकि कथापोंसे पूष्य  
 प्रमाद पाया नहीं जाता ।

देवायुके बन्धका भी कथाप ही कारण है क्योंकि प्रमादके हेतुमूठ कथापके  
 उदयके अभावसे अग्रमत्त होकर मन्द कथापके उदयरूपसे परिणत हुए जीवके देवायुके  
 बन्धका विनाश पाया जाता है । मिहा और प्रकला इन दो महतियोंके भी बन्धका  
 कारण कथापोदय ही है क्योंकि अपूर्वकरजकाकक प्रथम सप्तम भागमें संभवजन  
 कथापोंके उस काकके योग्य तीव्रोदय होये पर इन महतियोंका बन्ध पाया जाता है । देव  
 गति, पंचेन्द्रिय आदि वैदिकिक माहारक तैजस और कर्मज शरीर समस्तदुःखसंस्थान,  
 वैदिकिकदारीतयोगीग माहारकशरीरतयोगीग बर्ष रथ एस स्पर्श देवगतिमायेत्या  
 पुर्वा भगुरुमलहु, उपपात परमात बन्धकास प्रमास्तविहायागति जस बाहर पर्याप्त  
 प्रत्येकशरीर स्थिर शुभ शुभम सुस्तर भायेय निर्माण और तीव्रकर, इन तीस प्रठ  
 तियोंके भी बन्धका कथापोदय ही कारण है क्योंकि अपूर्वकरजकाकके सात भागोंमेंसे  
 प्रथम छह भागोंके अन्तिम सप्तममें मन्तर कथापोदयके साथ इनका बन्ध पाया जाता है ।  
 हास्य एति मय और दुगुंठार्य इन चारके बन्धका मध्यप्रवृत्त और अपूर्वकरण  
 सम्बन्धी कथापोदय कारण है क्योंकि उन्हीं दोनों परिजामोंके काकसम्बन्धी कथापो  
 दयमें ही इन महतियोंका बन्ध पाया जाता है ।

चार संभवजन कथाप और पुष्यवेद इन पांच महतियोंके बन्धका बाहर कथाप  
 कारण है क्योंकि सूत्रमकपाव गुणस्थानमें इनका बन्ध नहीं पाया जाता । पांच ज्ञाना

पक्षणाणावरणीय-चन्द्रदसबावरणीय-अस्रगिचि-उष्वागोद-यन्त्रतराद्याण सामण्यो कसा  
उदओ करण, कसायामावे एदासि बघाशुबलमा । सादावेदपीयबंधस्त ओगो चैव  
कारण, मिच्छत्तासज्जम-कसायाणममावे वि जागभेककेम चैवेदस्त बघुबलमादा, उदमोबे  
उदशुबलमादो । न च एदाहिंतो बदिरिचामो अण्णाओ बंधपयडीओ अतिथ भेप  
सासिमण्णं पन्चर्यतरं होन्त्र ।

अस्रजमो वि पन्चओ पदिदो, सो काय पयडीर्ण बघस्त कारणमिदि ? न,  
स्रजमबादिकम्भोदयस्तेव अस्रजमरभेसादो । अस्रजमो अदि कसाएसु चैव पदि तो  
पुन उदुनदेसो किमई कीरदे ? अ एस दांमो, बवहारणयं पदुच च उदुबदेसादो । एसा  
प-अबद्धियणयमस्तिळय पन्चपपरुषया फदा । उष्यङ्कियणए पुण अवलपिज्जमाणे बंध  
करणमेग चैव, चतुपन्चयसमूहादा बंधकन्नुप्यपीए । उन्हा एदे बघपन्चया । एदेसि

वरणीय चार दर्शनावरणीय, पशाकीर्ति उषागोत्र और पांच अन्तराय, इन सोखइ  
प्रकृतियोंका सामान्य कयायोद्य कारण है क्योंकि, कयायोंके अभावमें इन प्रकृतियोंका  
बन्ध नहीं पाया जाता । सादावेदपीयके बन्धका योग ही कारण है क्योंकि मिथ्यात्व  
असपम और कयाय इनका अभाव होनेपर भी एकमात्र योगके साथ ही इस प्रकृतिका  
बन्ध पाया जाता है और योगके अभावमें इस प्रकृतिक बन्ध नहीं पाया जाता ।

इनके अतिरिक्त और अन्य कोइ पन्च योग्य प्रकृतियां नहीं है जिससे कि इनका  
कोई अन्य कारण हो ।

शुक्रा—असपम भी बन्धका कारण कहा गया है सो यह किन प्रकृतियोंके  
बन्धका कारण होता है ?

सुमाधान—यह शुक्रा ठीक नहीं क्योंकि असपमके घातक कयायरूप चारित्र  
मोहनीय कर्मके उद्भवका ही नाम असपम है ।

शुक्रा—यदि असपम कयायोंमें ही अन्तर्भूत होता है तो फिर उसका पूरक उप  
देश किसाक्षिये किया जाता है ?

सुमाधान—यह कोइ दाग नहीं क्योंकि व्यवहारमयकी अपेक्षासे उसका पूरक  
उपदेश किया गया है । बन्धकारणोंकी यह प्रकृपणा पर्यायार्थिकनयना आशय करके की  
गयी है । पर प्रत्यार्थिकनयका अपसम्बन्ध करनेपर ता बन्धका कारण केवल एक ही है  
क्योंकि कारणवस्तुत्कके समूहसे ही बन्धरूप कार्य उत्पन्न होता है ।

इस कारण ये ही बंधके कारण हैं । इनके प्रतिपत्ती सम्यकन्योत्पत्ति द्वासासपम,

परिचरणा सम्मानुप्यची-देससत्रम-संज्ञम अपनासुमिभिमजापज-दसपमोहकखरन  
 चरिचमोहवसामसुवसंतकपाय-चरिचमोहकखरन-शीवकपाय-सजोगिकेवसीपरिणामा मो-  
 कपपञ्चपा, एदेहितो समर्प पदि असंखेजगुजसेहीए कम्मभिन्नवत्तंभादो । व  
 पुण परिणामियमावा बीर मग्गामग्गादओ, य ते वप माकखाय कररगं, तेहितो  
 तदपुवठमा ।

एदस्स कम्मस्स खएण सिद्धान्नेसो गुणो समुत्पणो चि ज्ञाणावपहमेदाओ  
 गाहाओ एतथ परुधिञ्चंति—

त्स-गुण-पग्गए वे जस्सएण य ण ज्ञापे जीवो ।  
 तस्स क्खएण सो णिय ज्ञादि सम्म तय पुगन ॥ ४ ॥  
 दग्ग-गुण-पग्गए वे जस्सुदएण य ण परत्तरे जीवो ।  
 तस्स क्खएण सो णिय परत्तदि सम्म तयं पुगत्तं ॥ ५ ॥  
 जस्सोदएण जीवो सुह व दुक्ख व दुभिहमएदए ।  
 तस्सोदएक्खएण दु ज्ञापदि अपत्तणनसुहो ॥ ६ ॥  
 मिच्छ-जज्ञापत्तमेहि जस्सोएण परिणमए ।  
 जीवो तस्सेन ज्ञया चरिज्जदि गुणे क्खए ॥ ७ ॥

संयम क्खन्तानुसन्धिबिसंपोञ्जन दर्शयमाहसपज चारिचमोहोपगमन उपघास्तकषाय  
 चारिचमाहसपज हीवकपाय और सयोगिनेबडी व परिजाम मोक्षके कारणमूत हैं  
 क्योंकि इन्होंने ज्ञात प्रतिसमय संसर्प्यात गुणभेदीरूपसे कर्मोंकी विज्ञेय पायी जाती  
 है । किन्तु जीव मज्ज अमज्ज मारि ओ पारिचामिक माव है वे बन्ध और मोक्ष बानीमेंसे  
 किसीके भी कारण नहीं हैं क्योंकि उनके ज्ञात बन्ध या मोक्षकी प्राप्ति नहीं होती ।

इस कर्मके क्षयसे सिद्धोंके यह गुण उत्पन्न हुआ है इस बात का ज्ञान करामके  
 लिये वे गाधार्ये यहाँ प्रकृति की जाती है—

जिस कामावर्णीय कर्मके उद्भवसे जीव जिन द्रव्य गुण और पर्याय इन  
 तीनोंको नहीं जानता उसी कामावर्णीय कर्मके क्षयसे वही जीव उन सभी तीनोंको  
 एक साथ जानने लगता है ॥ ४ ॥

जिस दर्शनावर्णीय कर्मके उद्भवसे जीव जिन द्रव्य गुण और पर्याय इन  
 तीनोंको नहीं देखता है वही दर्शनावर्णीय कर्मके क्षयसे वही जीव उन सभी तीनोंको  
 एक साथ देखने लगता है ॥ ५ ॥

जिस वेदनीय कर्मके उद्भवसे जीव सुख और दुःख इस दो प्रकारकी मयक्याक  
 अनुभव करता है वही कर्मके क्षयसे मारमध्य मत्तसुख उत्पन्न होता है ॥ ६ ॥

जिस मोहपीय कर्मके उद्भवसे जीव मिच्छात्व कपाय और संसर्पम कपसं  
 परिचमन करता है उसी मोहपीयके क्षयसे इनके विपरीत गुणोंको प्राप्ति करता है ॥ ७ ॥

अस्तोदण जीवो अणुसमय मरदि जीवदि वराजो ।  
तरसोदयमखरण दु मम-मरणविवग्निनो होइ ॥ ८ ॥

अंगोबग-सुरीरिदिय-मणुस्सासजोगणिप्यची ।

अस्तोदण सिद्धो तज्जामखरण असुरीरो ॥ ९ ॥

उच्छुष्य उच्छ तद् उच्छणीच णीजुष्य णीष्य णीष्य च ।

अस्तोदण भावो णीजुष्यविवग्निदो तस्स ॥ १० ॥

विरियोवभोग-भागे दागे अमे अदुदयदो विग्ब ।

पचविहलसिजुषो तवमम्मखया इवे सिद्धो ॥ ११ ॥

अयमगलभूदान किमस्साप्य प्पाण-दंसणमयाण ।

तेष्णकस्सेहराण णमो सिया सम्भसिदानं ॥ १२ ॥

इन्द्रियाणुवादेण एइन्द्रिया घधा वीइन्द्रिया घधा तीइन्द्रिया वंधा

चदुरिन्द्रिया वधा ॥ ८ ॥

कृदो ? एदेसु मिच्छपासंभम-कस्राय भोगाणमण्णाय मोक्ष्ण बदिरैगामावा ।

जिस आयु कर्मके उदयसे बेचारा जीव प्रतिसमय मरता भीर जीता है उसी कर्मके उदयसयसे बह जीव अगम भीर मरणस रहित हो जाता है ॥ ८ ॥

जिस नाम कर्मके उदयसे भगोपांग शरीर, इन्द्रिय मज और उच्छ्वासके योग्य निष्पत्ति होती है उसी नाम कर्मके क्षयसे सिद्ध अशरीरी हाते है ॥ ९ ॥

जिस गोत्र कर्मके उदयसे जीव उच्छोच्छ उच्छ उच्छनीच नीचोच्छ नीच या नीचनीच भावको प्राप्त होता है उधा गोत्र कर्मके क्षयसे यह जीव नीच और ऊंच भावसे मुक्त होता है ॥ १० ॥

जिस अन्तराय कर्मके उदयसे जीवके धीम उपभोग भाग ज्ञान और धाममें विष्ण उत्पन्न होता है उसी कर्मके क्षयसे सिद्ध पचपिच अन्धियसे समुक्त होते है ॥ ११ ॥

जो अगमों संगसभूत है विमल है ज्ञान दर्शनमय है और वैशेष्यके शस्त्ररूप है एसे समस्त सिद्धोंको मेरा नमस्कार हो ॥ १२ ॥

इन्द्रियमार्गाणाके अनुमार एकेन्द्रिय जीव बन्धक है, द्वीन्द्रिय बन्धक है, त्रीन्द्रिय बन्धक है और चतुरिन्द्रिय बन्धक है ॥ ८ ॥

क्योंकि एक जीवोंमें (कर्मबन्धके कारणसूत) मिथ्यात्व असंयम कयाप और योग इनके अन्वयको छोड़कर व्यतिरेकका अभाव है अर्थात् उन जीवोंमें बन्धके कारणका अभाव ही पाया जाता है अतद्भाव नहीं ।

पंचिदिया वंधा वि अत्थि, अवधा वि अत्थि ॥ ९ ॥

इदो ! मिच्छाहृष्टिपुद्गुडि ब्रान सजोगिकेवसिचि वंधा चैन, उत्थ वधकारण-  
मिच्छादीपुवसमायो । अजोगिकेवसि अंधा' पन, मिच्छावादिबंधकारणाण सन्धेसि  
ममावा । तेव पंचिदिया वंधा वि अत्थि, अवधा वि अत्थि चि मपिर्द । सजोगि-  
अजोगिकेवसिबंध केवसजाव-ईसणेहि दिदुसेसपमेयाण करणवावारभिराहियाणं कर्ण पंचि  
दियचं ? न एस दोसो, पंचिदियवामकम्मोदय पडुण्ण तेसि उत्थवएसादो ।

अणिदिया अंधधा ॥ १० ॥

इदो ! सिद्धेसु भिरंजनसु सयसबंधामत्तादो, विरामपसु वंधकारणामावा ।

कायाणुवादेण पुढवीकाइया वधा आउकाइया वधा तेउकाइया  
बंधा वाउकाइया वधा वणफ्फदिकाइया वधा ॥ ११ ॥

पंचेन्द्रिय जीव बन्धक मी हैं, अवन्धक मी हैं ॥ ९ ॥

क्योंकि मिष्याहृष्टि गुणस्वावसे केकर सपोपिकेवसी तकसे जीव तो बन्धक ही  
हैं, क्योंकि इनमें बन्धक कारणभूत मिष्यात्वावि पावे जाते हैं । किन्तु अजोगिकेवसी  
अबन्धक ही हैं क्योंकि तन्में मिष्यात्व भावि समो बन्धके कारणको समाव है ।  
इसीलिये पंचेन्द्रिय जीव बन्धक मी हैं अबन्धक मी हैं ऐसा कहा गया है ।

वृत्त—दिग्दर्शने केवलज्ञान और केवलदर्शकसे समस्त प्रमेय अर्थात् ज्ञेय एव  
पोंको वक्त किया है और जो कारण अर्थात् इन्द्रियोंके व्यापारसे रहित हैं, ऐसे सयोगी  
और अयोगी केवलज्ञानोंको पंचेन्द्रिय कैसे कह सकते हैं ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं क्योंकि तन्में पंचेन्द्रिय नामकर्मका उद्यम  
विद्यमान है अतः उत्तरी अयस्तासे उन्हें पंचेन्द्रिय कहा गया है ।

अनिन्द्रिय जीव अवन्धक हैं ॥ १० ॥

क्याकि भिरंजन सिद्धोम समस्त बन्धका समाव है कृत्कि विरामप अर्थात्  
विचिचार जीवोंमें बन्धका कोई कारण नहीं रहता ।

अयमार्गानुसार पृथिवीकायिक जीव बन्धक हैं, अफ्फायिक बन्धक हैं, तत्र  
स्वययिक बन्धक हैं, वायुकायिक बन्धक हैं और वनस्पतिकायिक बन्धक हैं ॥ ११ ॥

१ अत्थि तथा इति पठ्य ।

२ अत्थी -वन्धक इति पठ्य ।

सुगममेद ।

तसकाइया वधा वि अत्यि, अवंधा वि अत्यि ॥ १२ ॥

इदो ! मिच्छाइकिप्पइडि वाव सजोगिकेवलि वि तसकाइएसु वधकारणुवलमा,  
अजोगिकेवलिभिइ उदधुबलंमादो ।

अकाइया अवधा ॥ १३ ॥

सुगममेद ।

जोगाणुवादेण मणजोगि-वचिजोगि कायजोगिणो वधा ॥ १४ ॥

एरं पि सुगमं ।

अजोगी अवधा ॥ १५ ॥

जोगो पाम किं ? मण-वयम-काययोगगलालंभयेण जीवपदेसाणं परिष्करो । अदि  
एवं तो परिय अजोगिणो, सरीरयस्स जीवदग्गस्स अकिरियचिरोहादो' । ण एस होसो,

यह सूत्र सुगम है ।

त्रसकायिक जीव वधक मी हैं, अवन्धक मी हैं ॥ १२ ॥

क्योंकि, मिष्पाइदि शुणस्थामसे डेकर सयोगिकेवली तकके त्रसकायिक जीवोंमें  
वन्धके कारणभूत मिष्पात्वादि पाये जाते हैं, किन्तु अयोगिकेवलीमें ये वन्धके कारण  
नहीं पाये जाते ।

अकायिक जीव अवन्धक हैं ॥ १३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

योगमार्गिणानुसार मनयोगी, वचनयोगी और काययोगी वधक हैं ॥ १४ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

अजोगी जीव अवधक हैं ॥ १५ ॥

शुद्धा—योग किसे कहते हैं ?

समाधान—मन वचन और काय सम्बन्धी पुद्गलोंके आसम्बन्धसे जो जीवपदेशोंका  
परिस्पन्धन होता है यही योग है ।

शुद्धा—यदि देसा है तो शरीरी जीव अजोगी हो ही नहीं सकते क्योंकि शरीर  
गत जीव दग्गको अक्रिय माननेमें विरोध जाता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं क्योंकि भातों कर्मोंके हीन हो जानेपर जो



अङ्गुलमेसु खीमेसु वा उङ्गुलमजुवसविषया किरिया सा जीवस्त साहाविषया, कम्मो इयम विषया पठचत्तादो । सङ्घिददेसमसङ्घिय छदिचा वा जीवदम्बस्त साधयवदि परिप्फलो अन्नोपो<sup>१</sup> नाम, तस्स कम्मवत्तयत्तादो । तेव सक्किरिया वि सिद्धा अन्नविषो, जीवपदेसम्ममद्विदअसपदेसार्थं व तन्वचय-परियत्तमकिरियामात्तादो । तदो ते अब्बा वि<sup>२</sup> मफिदा ।

वेदानुवादेण इत्थिवेदा वधा, पुरिसवेदा वधा, णवुंसयवेदा वधा ॥ १६ ॥

सुयममेदं ।

अवगदवेदा वधा वि अत्थि, अबधा वि अत्थि ॥ १७ ॥

सकसायन्नोगेसु अकसायन्नोगेसु च अपसयवेदपुत्रलमा ।

अन्नमन्नोपकम्भी क्रिया होती है वह जीवका स्वामाविक गुण है क्योंकि वह कर्मोदयक विषया प्रवृत्त होती है । त्वास्थित मन्त्राको न छोड़ते हुए अपधा छोड़कर जो जीवदम्बका अपने अवयवों द्वारा परित्यक्त होता है वह अयोय है क्योंकि वह कर्मसपक्षे कल्प्य होता है । अतः सक्रिय होते हुए भी शरीरी जीव अयोयी स्थित होते हैं, क्योंकि इनके जीवमवेशोंके तत्सपमान अन्नमवेशोंके अरुण वस्तुतः और परिवर्तन रूप क्रियात्मक समाप्त है । इसीलिये अयोपिप्योको अवन्मक कहा है ।

वेदमार्गानुसार खीवेदी जीव वन्मक हैं, पुरुषवेदी वन्मक हैं और नपुंसकवेदी वन्मक हैं ॥ १६ ॥

यह एक सुगम है ।

अपगतवेदी वन्मक भी हैं, अवन्मक भी हैं ॥ १७ ॥

क्योंकि कपाय व योग सहित तथा कपाय व योग रहित जीवोंमें अपगत वेदत्व पाया जाता है ।

विशेषार्थ—जीवोंके अन्वेषमापक्षे छेकर तत्त्वमें तत्त्वके गुणस्थान यद्यपि अपगत वेदियोंके हैं तो भी इनमें कपाय व योगका अन्नाय होनेसे कर्मवन्म होता ही है और इस प्रकार इन गुणस्थानोंके जीव अपगतवेदी हेतियर भी वन्मक हैं । जीवदम्बे गुणस्थानमें वधाका अन्तित्त कारण योग भी नहीं रहता और इस कारण इस गुणस्थानके अपगतवेदी जीव अवन्मक हैं ।

१ इत्थि परिप्फो वीतो इत्थि नाम ।

२ कम्भी वि सिद्धा इत्थि नाम ।

३ इत्थि उपो वि अपधो वि इत्थि पाठः ।



एवस्त सुचारमस्त चारमं पुष्ये व परुजेदम् ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणी सुदअण्णाणी विभगणाणी आभिणि  
घोहियणाणी सुदणाणी ओधिणाणी मणपञ्जवणाणी वधा ॥ २२ ॥  
सुगममेदं ।

केवलणाणी वंधा वि अत्थि, अयंधा वि अत्थि ॥ २३ ॥

सिद्धा अवधा ॥ २४ ॥

एत्थ अंधा देवेसि एवकारे क्खिणा क्खे ? ( व, ) सुचारमावो च व  
वदुवत्तदीदो । धेसं सुगम ।

सजमाणुवादेण असजदा वधा, संजदासंजदा वंधा ॥ २५ ॥

सजदा वधा वि अत्थि, अवधा वि अत्थि ॥ २६ ॥

एदाणि दा वि सुचाभि सुगमाणि ।

इस सूत्रक पूषद् एवे आनेका कारण पूर्वमे क्खे मनुसार मरुपित करमा  
चाहिथे ।

ज्ञानमार्गानुमार मत्पज्ञानी, भुतपज्ञानी, विभगज्ञानी, आमिनिषोधिकज्ञानी,  
भुत्तज्ञानी, अवधिज्ञानी और मन'पर्ययज्ञानी वचक हैं ॥ २२ ॥

एह सूत्र सुगम है ।

केवलज्ञानी वचक भी हैं, अवचरु भी हैं ॥ २३ ॥

सिद्ध अवचरु हैं ॥ २४ ॥

अंश—एहां अवचरु ही हैं देसा मन्थ विरुत्पत्ता मिपेचात्मक एव' परत्ता  
अप्योग क्यो नही क्खिणा ?

समाधान—वहाँ क्खिणा क्योकि सूत्रकी पूषद् एवनामावसे ही वही अर्थ  
आल क्खिणा जाता है ।

शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

संपममार्गानुमार अर्धपत वचक हैं और संपतासंपत वचक हैं ॥ २५ ॥

सपत वचक भी हैं, अर्धवचक भी हैं ॥ २६ ॥

ये दोभों सूत्र सुगम हैं ।

णेव सजदा णेव असजदा णेव सजदासंजदा अबंधा ॥ २७ ॥

बिसयस्य बुविहासंभमरूपेण पशुपीप अमावा असजदा न हीति सिद्धा । संजदा वि न हीति, पशुचिपुरस्सर तन्निरोहामावा । तदो भोमयसभोगो वि । सेस सुगमं ।

दसणाणुवादेण चक्खुदसणी अचक्खुदसणी ओधिदंसणी  
बधा' ॥ २८ ॥

केवलदसणी बधा वि अत्थि, अबंधा वि अत्थि ॥ २९ ॥

सिद्धा अबंधा ॥ ३० ॥

सम्भवेदं सुगमं ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिया णील्लेस्सिया काउलेस्सिया तेउ  
लेस्सिया पम्मलेस्सिया सुक्कलेस्सिया बधा ॥ ३१ ॥

सुगममेदं ।

न सयत न असंयत न संयतासयत, ऐसे सिद्ध भी अबंधक हैं ॥ २७ ॥

बिषयोंमें दो प्रकारके असंयम सर्पात् इन्द्रियासंयम और प्राणिबध रूपके प्रवृत्ति न होनेके कारण सिद्ध असंयत नहीं हैं । और सिद्ध संयत भी नहीं हैं क्योंकि प्रवृत्तिपूर्वक उनमें बिषयनिरोधका अभाव है । तदनुसार संयम और असंयम इन दोनोंके संयोगसे उत्पन्न संयमासंयमका भी सिद्धोंके अभाव है ।

दोप सूत्रार्थ सुगम है ।

दर्शनमार्गानुसार चक्षुदर्शनी अचक्षुदर्शनी और अवधिदर्शनी बन्धक हैं ॥ २८ ॥

केवलदर्शनी बंधक भी हैं, अबन्धक भी हैं ॥ २९ ॥

सिद्ध अबन्धक हैं ॥ ३० ॥

ये सब सूत्र सुगम हैं ।

छेष्ट्यामार्गानुसार कृष्णछेष्ट्यावासे, नीलछेष्ट्यावासे, कापोल्लेष्ट्यावासे, तेजो  
छेष्ट्यावासे, पद्मछेष्ट्यावासे और शुद्धलेष्ट्यावासे बन्धक हैं ॥ ३१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अलेस्तिया अवंधा ॥ ३२ ॥

सिद्धा अवंधा वि एत्वं पुत्रमिदं सो कियं करो ? न, अलेस्तिपुत्रु वंधार्थपो-  
मयमंगाभावेन सिद्धाशुप्यचीरो । सेसं सुगमं ।

भवियाणुवादेण अमवसिद्धिया वधा, भवसिद्धिया वधा वि  
अत्यि अवंधा वि अत्यि ॥ ३३ ॥

णेव भवसिद्धिया णेव अमवसिद्धिया अवंधा ॥ ३४ ॥

सम्भेदं सुगमं ।

सम्मत्ताणुवादेण मिच्छादिट्ठी वधा, सासणसम्मादिट्ठी वधा,  
सम्मामिच्छादिट्ठी वंधा ॥ ३५ ॥

इदो ? सयसासवसुवचादो ।

सम्मादिट्ठी वधा वि अत्यि, अवंधा वि अत्यि ॥ ३६ ॥

सेस्यारहित जीव अवन्धक हैं ॥ ३७ ॥

श्लोक— सिद्ध अवन्धक हैं ऐसा पृथक् निर्देश क्यों नहीं किया ?

समाधान— नहीं किया क्योंकि सेस्यारहित जीवोंमें अवन्धक और अवन्धक  
ऐसे दो भिन्न न होनेसे कोई सम्बन्ध उत्पन्न नहीं होता । अर्थात् अवन्धक अवन्ध-  
क हैं इतना कहनेमात्रसे ही स्पष्ट हो जाता है कि सेस्यारहित अयोगी जिन में  
अवन्धक हैं और सिद्ध में अवन्धक हैं ।

शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

सम्भार्यमाणुसार अमव्यसिद्धिक जीव वन्धक हैं, मव्यसिद्धिक जीव वन्धक  
भी हैं और अवन्धक भी हैं ॥ ३८ ॥

न मव्यसिद्धिक न अमव्यसिद्धिक ऐसे सिद्ध जीव अवन्धक हैं ॥ ३९ ॥

वह सब सूत्रार्थ सुगम है ।

सम्भार्यमाणुसार मिप्याद्यदि वन्धक हैं, सासावतसम्पद्यदि वन्धक  
हैं और सम्भार्यमाणुसार मिप्याद्यदि वन्धक हैं ॥ ४० ॥

क्योंकि उक्त जीव समस्त कर्माकारणोंसे संयुक्त होते हैं ।

सम्पद्यदि वन्धक भी हैं, अवन्धक भी हैं ॥ ४१ ॥

कृदो ! सासवाणासभेसु सम्मद्सञ्चलंमा ।

सिद्धा अवधा ॥ ३७ ॥

सुगममेदं ।

सण्णियाणुवादेण सण्णी वधा, असण्णी वंधा ॥ ३८ ॥

णेव सण्णी णेव असण्णी वंधा वि अत्थि, अवधा वि अत्थि  
॥ ३९ ॥

विभट्टपोद्दियखओवसमादो केवलभाणी णो सण्णिणो; तस्य इदियोवहुंमपसेपाणु  
प्यण्यशोपुवर्तमादो णो असण्णिणो । तदो ते वधा वि अवधा वि, वंधावंधाकरणजोगा  
भोमानसुवर्तमा ।

सिद्धा अवधा ॥ ४० ॥

सुगममेदं ।

क्योंकि चौपिसे तेरहवें गुणस्थान तकके भाकरव सहित और चौदहवें गुणस्थान  
वर्ती भाकरव रहित, ऐसे दोनों प्रकारके जीवोंमें सम्पगर्भम पाया जाता है ।

सिद्ध अवन्धक हैं ॥ ३७ ॥

यह सब सुगम है ।

संज्ञीमार्गिणानुसार संज्ञी बन्धक हैं, असंज्ञी बन्धक हैं ॥ ३८ ॥

न संज्ञी न असंज्ञी ऐसे केवलज्ञानी जिन बन्धक भी हैं, अवन्धक भी हैं ॥ ३९ ॥

जिबका मोहमिद्वय सयोपशम नष्ट हो गया है ऐसे केवलज्ञानी संज्ञी नहीं हैं । और  
भूक्ति जबमें इन्द्रियात्मन्वमके बलसे अनुत्पन्न अर्थात् अतीन्द्रिय ज्ञान पाया जाता है इसलिये  
केवलज्ञानी असंज्ञी भी नहीं हैं । अतः न संज्ञी न असंज्ञी बन्धक भी हैं और अवन्धक भी  
हैं क्योंकि जबमें सयोगि अवस्थामें बन्धका कारण योग पाया जाता है और अयोगि  
अवस्थामें अवन्धका कारण अयोग पाया जाता है ।

सिद्ध अवन्धक हैं ॥ ४० ॥

यह सब सुगम है ।

आहाराणुवादेण आहारा बंधा ॥ ४१ ॥

अणाहारा यथा वि अत्यि, अयथा वि अत्यि ॥ ४२ ॥

सिद्धा अवंधा ॥ ४३ ॥

सुगममेदं ।

एसो बंधगसंताहिपारो पुष्पमेव किमिह पुरुविदो ? 'सति धर्मिणि धर्माधिन्त्यन्त'  
इति न्यायात् बंधयात्ममत्त्वित्ते सिद्धे सति पच्छ तेसि विसिसपरूपाणा शुद्धे । तन्ना  
सतपरूपाण पुष्पमेव कादम्बमिदि । एवमत्यित्तेण सिद्धार्त्तं बंधयागमेवकारसममिपोगारोहि  
विसिसपरूपाणहृत्पुचरमयो अवरूप्यो ।

एवं बंधगसंतपरूपा समता ।

आहारमार्गेषामुसार आहारक जीव बन्धक हैं ॥ ४१ ॥

बनाहारक जीव बंधक भी हैं, अबन्धक भी हैं ॥ ४२ ॥

सिद्ध अबन्धक हैं ॥ ४३ ॥

ये बंध सुगम हैं ।

संज्ञा—यह बन्धकसत्त्वाधिकार पूर्वमें ही क्यों प्रकृति किया गया है ?

समाधान— धर्मोंके अज्ञातमें ही धर्मोंका विस्तार किया जाता है इस  
न्यायके अनुसार बंधकोंका अस्तित्व सिद्ध हो जाने पर पश्चात् उनकी विशेष प्रक  
रणा करना योग्य है । इसलिये बन्धकोंकी सत्परूपया पहले ही करना चाहिये ।  
इस प्रकार अस्तित्वसे सिद्ध हुए बन्धकोंके न्याय्य अनुयोगी द्वारा विशेष प्रकृतिपार्थ  
क्यमेंकी अन्वयजना हुई है ।

इस प्रकार बन्धकसत्परूपया समाप्त हुई ।

## सामिप्ताणुगमो

एदेसिं वधयाण परूवणट्टुदाए तत्थ इमाणि एक्कारस अणि  
योगदाराणि णादव्वाणि भवति ॥ १ ॥

अणद्वेसु' वधपसु वधमदेसिं वधयाणमिदि पच्चक्खणिरेसो उव्वज्जदे ! ण,  
एस दासो, वधवसिपपुद्धीए पच्चक्खउत्तमवक्खित्तप पच्चक्खणिदेसुव्वचीदो । सत्ताणि  
योगदारं पुच्चमपरूविय तेण सह धारमअणियोगदारेहि वधगालं किष्ण परूवणा कीरदे !  
ण, वधगचण असिद्धाण वसिद्धिपम्भणाए वधगपरूवणत्ताणुव्वचीदो । वेसिमेक्कारस  
अणियोगदाराण्य णामभिरेसट्टुसुचगमुच भणदि—

एगजीवेण सामित्त, एगजीवेण कालो, एगजीवेण अतर,  
णाणाजीवेहि भगविचओ, दव्वपरूवणाणुगमो, खेत्ताणुगमो, फोसणाणु-  
गमो, णाणाजीवेहि कालो, णाणाजीवेहि अतर, भागाभागाणुगमो,  
अप्पावहुगाणुगमो चेदि ॥ २ ॥

इन वधकोके प्ररूपणाय ये ग्यारह अनुपागदार ज्ञातव्ये हैं ॥ १ ॥

श्लोक—वधकोके उपरिचय म हानपर मी 'इन वधकोका' इत प्रकार  
प्रापस निर्वैश केसे उपयुक्त ठहरता है ।

समाधान—यह कार्य होय नहीं क्योंकि वधवपिययक बुद्धिसे प्रयत्नकी  
अपेक्षा करके प्रापस निर्वैशकी उपपत्ति बन जाती है ।

धारा—तन् अनुपागदारका पहल ही प्रकृति म करके उसके साथ बारह  
अनुपागदारोंस वधकोकी प्ररूपणा क्यों नहीं की जाती ।

ममाधान—नहीं क्योंकि वधवमापम अस्मिन् जीवोंके वधव सिद्ध करने  
वाली प्ररूपणाक जिन् वधवप्ररूपणा मात्र बना अनुपयुक्त ठहरता है ।

इन ग्यारह अनुपागदारोंके सामनिर्वैशक त्रिय भाषाय अगला गृह बहुत है—

एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्त, एक जीवकी अपेक्षा अतर, एक जीवकी अपेक्षा  
अन्तर, नाना जीवोंकी अपेक्षा भगविचय, द्रव्यप्रमपनानुगम, धराणुगम, स्पन्दनानु-  
गम, नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर, भागामागानुगम और  
अन्वबहुत्वं ॥ २ ॥



अंतिस्त्रे वसदो सङ्घुष्यपरयो । इदिसरो एवेसि बंधगाय परूबभाए एधियाभि  
 नेव अगियोमहराभि होंति न वङ्गिमाभि चि अनहारजङ्ग कदा । एगजीवेण सामिच  
 पुष्पमेव किमङ्ग पुष्पदे ? अ, उवरिस्त्रसध्वर्पाणित्रोगहारगं कारणचन सामिचाभि-  
 योमहरतस्स भवङ्गाभादो । कुदो ? चोरसममगाङ्गाभं मोदइयादिपचसु मावेसु अ भाषो  
 कस्स ममावङ्गागस्स सामिभो निमित्तं होदि न हादि चि सामिचाणित्रोगहार परूवेदि,  
 पुजो तेण भावेण उवसक्खियमगगजाए बंधपसु सेसाभित्रोगहारपवुष्पीदो । सेसाभि-  
 मोनहारेसु कासो नेव किमङ्ग पुष्पं परूविन्वदि ? अ, कालपरूबभाए विजा अंतर  
 परूबभापुबनपीदो । पुजो अंतरमव वचणं, एगजीवसंधविजो अण्णस्स अगिभोम  
 हरत्तामावा । बाणाजीवसंधविपसु सेसाभित्रोगहारेसु पढमं पाणाजीवेदि मंगविन्वजा  
 किमङ्ग पुष्पदे ? अ, एदस्स मगगाङ्गापवाहस्स विधेसो अपादिमपन्ववसिदो, एदस्स

सूत्रके अन्तमें आया हुआ न अथ सन्तुष्टयार्थक है, और इन शब्दोंकी  
 प्रकृत्यामें इत्थमेवा ही अनुयोगद्वार है इत्थे अधिक नहीं ऐसा निश्चय करानेके लिये  
 इति शब्दका प्रयोग किया गया है ।

शुद्ध—एक जीवकी अपेक्षा कामित्यका कथन सबसे पूर्वमें ही क्यों किया  
 जाता है ?

समाधान—क्योंकि यह स्वामित्वसम्बन्धी अनुयोगद्वार आगेके समस्त  
 अनुयोगद्वारोंके कारण रूपसे अवस्थित है । इसका कारण यह है कि बौद्ध मार्गका  
 क्याम जीविकादि पांच भावोंमेंसे किस भाव रूप है किस मार्गस्थापनाका  
 स्वामी निमित्त होता है या नहीं होता यह सब स्वामित्वानुयोगद्वार प्रकृतित करता  
 है, और फिर उसी भावसे उपकथित मार्गस्थापित शब्दोंमें शेष अनुयोगद्वारोंकी  
 प्रकृति होती है ।

शुद्ध—शेष अनुयोगद्वारोंमें काछ ही पहले क्यों प्रकृतित किया जाता है ?

समाधान—क्योंकि, काछकी प्रकृत्याके बिना अन्तःप्रकृत्याकी व्यवधि  
 नहीं बैठती ।

काछप्रकृत्याके पश्चात् अन्तर ही कहा जाता चाहिये क्योंकि एक जीवसे  
 सम्बन्ध रखनेवाला अन्व कोई अनुयोगद्वार है ही नहीं ।

शुद्ध—जाना जीव सम्बन्धी शेष अनुयोगद्वारोंमें पहले नामा जीवोंकी अपेक्षा  
 संप्रतिषेय ही क्यों कहा जाता है ?

समाधान—क्योंकि इस मार्गस्थापनाके प्रवाहक विरोध (येव) अजादि-अन्वत्

सादिसपन्धवसिदो चि सामण्णेअ अणगदे सेसाणिओगहारारणं पदणसंमवादो । इअ पमाणे अणवगदे' खेचादिअणियोगहारारणमणिगमोवाओ अत्थि चि दम्भाणिओगहारस्स पुअणिवेसो' कदो । अणुमाणपासपरुअणए विआ अदीद-अणुमाणफासपरुअणफोसणाणि ओगदाराणिगमोवाओ अत्थि चि खेचाणिओगहारस्स पुअं विवेसो' कदो । मग्गणाअ मच्छिदखेचे अणगदे वेसिं दम्भसंखाए अ अणगदाय पच्छा तीदकालफासपरुअणा णाया गदेचि विवेसिदा । मग्गणकाले अणवगदे वेसिमतरादिपरुअणा अ पइदि चि पुअं फासणिओगहारं परुविदं । फासजाणि अंतरमिदि कडु अंतरं सदअतरे परुविदं । पुरदो पुअणमाणअण्णाअणुअस्स साइणो इदि कडु मागामागो परुविदो । एदेसिं पच्छा अण्णा-अणुगाणुगमो परुविदो, सन्नाणिओगहारैसु पडिअणुचादो ।

णाणावीवेहि काल मंगविअयणं खे विवेसो ? अ, णाणावीवेहि मंगविअयस्स

है इसका सावि-साप्त है ऐसा सामान्यरूपसे जान लेनेपर ही शेष अनुयोगद्वारोंका बखतार संभव हो सकता है। द्रव्यप्रमाणके जाने बिना सत्तादि अनुयोप्यद्वारोंके जान लेना बयाय नहीं इसलिये द्रव्यानुयोगद्वारका उनसे पहले स्थापन किया गया है। फिर उनमें भी वर्तमान स्पर्शन प्ररूपणाके बिना अतीत और वर्तमान स्पर्शनके प्ररूपक स्पर्शी नानुयोगद्वारके जानलेका बयाय नहीं, इसलिये क्षेत्रानुयोगद्वारका पहले निवेश किया। मार्गजासम्बन्धी मियासक्षेत्रको जान लेने पर और उनके द्रव्यप्रमाणका भी जान हो जाने पर पश्चात् अतीतकालसम्बन्धी स्पर्शनप्ररूपणा म्यायागत है इसलिये स्पर्शन प्ररूपणा रखी गई। मार्गजासम्बन्धी कालका अब तक जान न हो आप तब तक उनकी अन्तरप्ररूपणा नहीं बनती अतः उससे पूर्व कालानुयोगद्वारका प्ररूपण किया। कालसे ही उत्पन्न अन्तर है ऐसा जानकर कालके अन्तर अन्तरानुयोगद्वार प्ररूपित किया। भाग कहे जानेवाले अल्पबहुत्वका साधन होनेसे पहले भागाभाग प्ररूपित किया। और इन सबके पश्चात् अल्पबहुत्वानुगम प्ररूपित किया क्योंकि यह पूर्ववर्ती सभी अनुयोगद्वारोंसे सम्बन्ध है।

सूत्र—नामा जीबोंकी अपेक्षा काळ और नामा जीबोंकी अपेक्षा मंगदिअय इन दोनोंमें क्या भेद है ?

समाधान—नहीं, नामा जीबोंकी अपेक्षा मंगविअय नामक अनुयोगद्वार मार्गजा

१ प्रति अणवपणि अ अणगदे इति पाठ ।

२ अती विवेसो इति पाठ ।

मम्मथार्थं विच्छेदाविच्छेदरिषत्परुवयस्त मग्नान्कालंतेहि सह एयचविरोहादो ।

एयजीवेण सामित्त ॥ ३ ॥

बहा उरेसो त्वा जिरेसो चि वायाञ्जुसरण्डमगभीवेण सामित्तं मविस्सामो  
इदि बुचं ।

गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरुओ णाम कध भवदि ? ॥४॥

एदं पुष्पासुरं किञ्चिद्वचनं ? नयसमूहमिद्वचनं । यदि एकस्यै चैव जपो  
होन्म तो संदेहो चि न उच्यतेऽत्र । किन्तु जप्या बहुधा अरिष । तेन संदेहो समुप्यजदे  
कस्त जपस्त विसपमस्तिरूप द्विदयेरुओ एतव पविग्नाहिदो चि । अपानमभिप्याओ  
एतव उच्यदे । त बहा—

क पि नर ददुग य पात्रजनसमागम करेमाणं ।

भोगमण्ण मण्ण जेरओ एस पुरिसो चि ॥ १ ॥

मौके विच्छेद भीर मविच्छेदके अस्तित्वका प्रकपक है अता इसका मार्गवाओंके  
काय भीर अन्तर बतलावे बाके अनुयोगदार्थके साथ एकत्र भावनेमें विरोध जाता है ।

एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्वकी प्रकपमा की जाती है ॥ ३ ॥

ऐसा उद्देश ऐसा निर्दिष्ट इस न्यायके अनुसरणार्थ एक जीवकी अपेक्षा  
स्वामित्वका बर्नन करते हैं ऐसा मरुतुत सूत्रमें कहा गया है ।

गतिमार्गानुसार नरकमतिमें नारकी जीव किस प्रकार होता है ? ॥ ४ ॥

संज्ञ—यह प्रश्नार्थक सूत्र किस आधारसे रचा गया है ?

समाधान—यह प्रश्नार्थक सूत्र नवसमूहके आधारसे रचा गया है । यदि  
एक ही नव होता तो कोई सन्देह भी उत्पन्न न होता । किन्तु नय मनेक है इसलिये  
सन्देह उत्पन्न होता है कि किस नयके विषयका आश्रय लेकर विपत मारकी  
जीवका वहाँ प्रकप किया गया है । यहाँपर ज्योंका अभिप्राय बतलाते हैं । यह  
इस प्रकार है—

किसी अनुप्यको पायी सोगोंका समागम करते हुए देखकर वेगम जयसे कहा  
जाता है कि यह पुत्र्य मारकी है ॥ १ ॥

( अब यह अनुप्य प्राणिवध करनेका विचार कर सामग्रीका संग्रह करता है तब  
यह संग्रह जयसे मारकी कहा जाता है । )

'बध्नास्त दु वपण जइया कोदब-कडगपहपो ।  
 ममइ मए मग्गन्नां तइया सो होइ गेरइओ ॥ २ ॥  
 उउउमुदस्स दु वपण जइया इर ठाइवण ठाणम्मिं ।  
 आइणदि मए पावो तइया सो होइ गेरइओ ॥ ३ ॥  
 सइणमस्स दु वपण जइया पाणेहि मोइदो जत् ।  
 तइया सो गेरइयो सिंसाकम्मेण सउत्तो ॥ ४ ॥  
 वपण तु समभिरूउ पाययन्मास्स बवगो जइया ।  
 तइया सो गेरइओ पाययन्मेण सउत्तो ॥ ५ ॥  
 पिरयगाइ सपत्तो जइया अणुइवइ पायय हुन्स ।  
 तइया सो गेरइओ एवभूदो पओ मणदि ॥ ६ ॥

एद सम्बन्धयविसयं पेरइयसमूह बुद्धीए क्कज्ज गेरइओ गाम कर्षं होदि वि पुच्छा कइया ।

अथवा गाम-वृषण-दम्ब मावमेएण गेरइया चठम्मिहा होति । गामगेरइयो गाम गेरइयसरो । सा एसा वि बुद्धीए अप्पिदस्स अनप्पिदेण एयत्तं क्कज्ज

प्यबहार नयका वचन इस प्रकार है— जब कोई मनुष्य हाथमें धनुष और बाण छिपे मुर्गाकी खोजमें मटकता फिरता है तब वह मारकी कहलाता है ॥ २ ॥

उउउमुद नयका वचन इस प्रकार है— जब भाखेटस्थानपर बैठकर पापी मुर्गापर आघात करता है तब वह मारकी कहलाता है ॥ ३ ॥

हाय नयका वचन इस प्रकार है— जब जन्तु प्राणोंसे विमुक्त कर दिया जाय तभी वह आघात करनेवाला सिंसाकर्मसे संयुक्त मनुष्य मारकी कहा जाय ॥ ४ ॥

समभिरूउ नयका वचन इस प्रकार है— जब मनुष्य मारक कर्मका बन्धक होकर मारक कर्मसे संयुक्त हो जाय तभी वह मारकी कहा जाय ॥ ५ ॥

जब वही मनुष्य मारक गतिको पहुंचकर मारकेके दुःख अनुभव करने लगता है तभी वह मारकी है ऐसा एवभूत नय कहता है ॥ ६ ॥

इस समस्त नयाके विषयमूल मारकीसमूहका विचार करके ही मारकी जीव किस प्रकार होता है यह प्रश्न किया गया है ।

अथवा नाम स्थापना प्रथम और भावके भेदसे मारकी चार प्रकारके होते हैं । नाम-मारकी मारकी घण्टकी ही कहते हैं । 'यह यही है' ऐसा बुद्धिसं विवक्षित मारकीका अविषक्षित बन्धुके साथ

१ अणु शब्द सम्यक्त्वमभिधेयौ गामा रक्कित्ता प्रतिमाति ।

२ अणु बुद्धीए अप्पिदस्स मग्गो बुद्धीए अप्पिदस्स अनप्पिदेण इति पाठः ।

सम्भावासम्भाषसकृतेषु त्विदं त्ववधेयैरज्ञो । नेरुयपाहुडभाषज्ञो अशुवशुचो आगम  
दृष्ययेरज्ञो । अथागमदम्बनेरज्ञो तिविहो आशुगसरीर मविय-तृष्यदिरिचमेएष ।  
आशुगसरीर मवियं गर्हं । तृष्यदिरिचजोआगमदृष्यनेरज्ञो नाम इविहो कम्म-जोक्कम्म-  
मेएष । कम्मनेरज्ञो पाम विरयगदिसहगदकम्मदम्बसमूहो । पास-पंजर-अंतादीभिं  
जोक्कम्मदम्बापि नेरुयपाहुडभाषज्ञो नाम । नेरुयपाहुडभाषज्ञो  
त्ववधुचो आगमभावनेरज्ञो पाम । विरयगदिणामाए उदएण विरयमावसुषययो  
योआगमभावनेरज्ञो नाम । एदं नेरुयसमूहं पुदीए फळण नेरज्ञो नाम कर्षं होदि  
सि पुञ्जा कदा ।

अथवा नेरज्ञो पाम किमोदरएण भावेण, किमुनसमिएण, किं सएण, किं  
सुआवसमिएण, किं पारिणामिएण भावेण होदि सि पुदीए फळण नेरज्ञो नाम  
कर्षं होदि सि पुञं ।

एदस्स संदिहस्स भिराकरणह उचरसुतं मज्झि—

गिरयगदिणामाए उदएण ॥ ५ ॥

एकत्र करके सद्भाव और असद्भाव स्वरूपसे स्थापित स्थापना नारकी कहलाता  
है । नारकीसम्बन्धी प्रकृतका माननेपाका किन्तु इसमें अनुपपुक्त जीव आगम  
द्रव्य नारकी है । बाह्यक शरीर मध्य और तृष्यदिरिचके भेदसे अनागम द्रव्य  
नारकी तीस प्रकारका है । बाह्यकशरीर और मध्य तो मया । कर्म और लोकर्मके भेदसे  
तृष्यदिरिच मोमागम द्रव्य नारकी दो प्रकारका है । नरकगतिके साध माये  
हए कर्मद्रव्यसमूहको कर्मनारकी कहते हैं । पाश पंजर, पंज आदि लोकर्मद्रव्य जो  
नारक भावकी उत्पत्तिमें कारणभूत होते हैं नारक द्रव्य नारकी हैं । नारकियों सम्बन्धी  
प्रकृतका आमकार और इसमें उपयाग रचनिबाधा जीव आगम भाव नारकी है । नरक  
गति मामप्रकृतिके बह्यसे नरकावस्थाको प्राप्त हुआ जीव मोमागम भाव नारकी है ।  
इस नारकीसमूहका विचार करके नारकी जीव किस प्रकार होता है यह मझ किया  
गया है ।

अथवा क्या नारकी धीरमिक भावसे होता है क्या धीरशमिक भावसे  
क्या क्षायिक भावसे क्या क्षयापशमिक भावसे क्या परिधामिक भावसे होता है ?  
देखा बुझिसे विचार कर नारकी जीव किस प्रकार होता है ? यह पूछा गया है ।

इस सम्येहको दूर करनेके लिये आचार्य मगधा सूत्र कहते हैं—

नरकमपि मामप्रकृतिके उदयसे जीव नारकी होता है ॥ ५ ॥

एवंभूदणयविसएण' षोआगमभावणिकखेभेण निरयगदिपामाए उदएण नेरइओ  
गाम भवदि ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खो णाम कधं भवदि ? ॥ ६ ॥

एत्थ वि णए भिक्खेये ओदइयादिपंचविहभावे च अस्सिदूण पुब्बं च संदेह  
सुप्पची परूवेदम्भा ।

तिरिक्खगदिणामाए उदएण ॥ ७ ॥

तिरिक्खगदिणामकम्मोदएणुप्पणपञ्जायपरिणदम्मि जीवे तिरिक्खामिहाणवव  
हार-यक्खयाप्पमुबलंमादो ।

मणुसगदीए मणुसो णाम कधं भवदि ? ॥ ८ ॥

एत्थ वि पुब्बं च णय-णिकखेवादीहि सदेहुप्पची परूवेदम्भा ।

मणुसगदिणामाए उदएण ॥ ९ ॥

इदो ? मणुसगदिणामकम्मोदयअभिदपञ्जायपरिणयभीषम्मि मणुस्साहिहाणवव

पञ्चसूतनपके विषयसे मोआगमभावणिकेपसे एव मरकगति नामप्रकृतिके उदयसे  
जीव नारकी होता है ।

तिर्य्यगतिमें जीव तिर्य्य कित् प्रकृर होता है ? ॥ ६ ॥

यहां भी मय भिक्षेप और औरयिकति पांच प्रकारके भावोंके भावयसे  
पूर्वोक्तानुसार संदेहकी उत्पत्तिका प्ररूपण करना चाहिये ।

तिर्य्यगति नामप्रकृतिक उदयसे जीव तिर्य्य होता है ॥ ७ ॥

क्योंकि तिर्य्यगति नामकर्मके उदयसे च एव हुई पर्यायमें परिणत जीवके  
तिर्य्य अज्ञाका व्यवहार और ज्ञान पाया जाता है ।

मनुष्यगतिमें जीव मनुष्य कैसे होता है ? ॥ ८ ॥

यहां भी पूर्वानुसार मय भिक्षेपादिसे संदेहकी उत्पत्तिका प्ररूपण करना  
चाहिये ।

मनुष्यगति नामप्रकृतिके उदयसे जीव मनुष्य होता है ॥ ९ ॥

क्योंकि मनुष्यगति नामकर्मके उदयसे उत्पन्न हुई पर्यायमें परिणत जीवके

१ इतिहु एवएववविसएण ओदइएण इति पाठः ।

२ आ वमओ- महस्सादिपाण इति पाठः ।

इर-पृषयाणमुत्तमा ।

देवगदीए देवो णाम कथं भवदि ? ॥ १० ॥

मुगममेदं ।

देवगदिणामाए उदएण ॥ ११ ॥

इति ? देवगदिणामकम्मोदयत्तगिद्वभणिमादिपत्तयपरिणदवीवम्मि देवादिहाण-  
ववहार-पृषयाणमुत्तमा । गिरय तिरिक्ख-मणुस-द्वगदीओ अदि केवताओ उदय  
मामच्छति तो गिरयगदिउदयण भेरओ, तिरिक्खगदिउदयण तिरिक्खो, मणुस्मगदि  
उदयण मणुस्सो, देवगदिउदयण देवो चि बोधु सुत्तं । किं तु अण्णाओ चि पयवीओ  
एतए उदयमागच्छति, एहि विभा गिरय-तिरिक्ख मणुस्म देवगदिणामाणमुदयाणुत्तं  
माओ । ए अहा—

अहपाणं पच उदयहाणानि होति एककवीस-पचवीस सत्तावीस-अट्ठावीस-  
एगूणतीसं ति । २१ । २५ । २७ । २८ । २९ । एतए इगवीसपयडिउदयहाणं बुद्धपदं ।  
ए अहा— गिरयगदि-अपिदिपजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-अण्ण गच-रस फास गिरयमदि

मनुष्य संज्ञाका व्यवहार और ज्ञान पाया जाता है ।

देवगतिमें जीव देव कैसे होता है ? ॥ १० ॥

यह सब सुगम है ।

देवगति नामप्रकृतिके उदयसे जीव देव होता है ॥ ११ ॥

क्योंकि, देवगति नामकर्मक उदयसे उत्पन्न हुई अतिमादिक पक्षाणोंमें परिणत  
जीवके देव संज्ञाका व्यवहार और ज्ञान पाया जाता है ।

उक्त—यदि मरक तिर्यच मनुष्य और देव ये गतियां केवल अपनी एक  
एक प्रकृतिरूपसे उदयमें आती हों तो मरकगतिके उदयसे मारक्यी तिर्यचगतिके  
उदयसे तिर्यच मनुष्यगतिके उदयसे मनुष्य और देवगतिके उदयसे देव जाता है  
येसा कहना उचित है । किन्तु अन्य भी तो प्रकृतियां बहुत उदयमें आती हैं जिनके  
जिना मरक तिर्यच मनुष्य और देवगति पामकर्मोंका उदय पाया ही नहीं जाता ?  
यह इस प्रकार है—

मारक्यी जीवोंके पांच उदयस्थान हैं—

इवीस पचीस सत्तारस अट्ठारस और अनतीस प्रकृतियों सम्बन्धी २१ । २५  
२७ । २८ । २९ । इनमें इवीस प्रकृतियोंके उदयस्थानको कहते हैं । यह इस प्रकार है—

मारकगति' पंचेन्द्रियजाति' कैवल्य' और काम्य शरीर' बर्ष' गन्ध' रस'

पात्रोग्गाणुपुष्पि अगुरुअलहुअ-त्तस-बादर पञ्च विरायिर-सुमासुम दुमग अनादेअ-अअस-  
गिधि-भिभिभाणि चि एचियाओ पयडीओ भेषूण इगिवीसाए ठाण होदि । एत्थ भगो  
एक्को वेव १ । एदमुदपद्मान कस्स होदि ? विग्गहगदीए षट्ठमाभस्स णेरूपस्स ।  
त केवचिर क्कत्तं होदि ? अहप्पेण एगसमओ, उक्कस्सेण भे समया ।

तन्थ इम पञ्चवीसाए इत्थं । एदामो वेव पयडीओ । णवति आणुपुष्पीमवणे  
एण वेउभियसरीर-हुंइसंठाण-वेउभियसरीरअंगोवग-उबघाद-पचेयसरीराणि पुम्भुचपयडीसु  
पक्खिचे पञ्चवीसण्हं ठाणं होदि । त कस्स ? सरीरंगहिदजेरूपस्स । तं केवचिर

एतरीं नरकगतिमायोग्यानुपूर्वी अगुरुअलहुअ अस्स' बादर' पर्याप्त' स्थिर'  
और अस्थिर' शुभ' और अशुभ' पुर्मग', अमावेप' अयशकीर्ति' और निर्माण',  
इन प्रकृतियोंको लेकर इन्हीं प्रकृतियों सम्बन्धी पहला स्थान होता है। यहाँ मंग  
एक ही हुआ ( १ )।

शंका—यह इन्हीं प्रकृतियोंवाला उद्यस्थान किसके होता है ?

समाधान—यिप्रहणतिमें बर्तमान नारकी जीवने यह इन्हीं प्रकृतियोंवाला  
उद्यस्थान होता है।

शंका—यह उद्यस्थान कितने काळ तक रहता है ?

समाधान—यह उद्यस्थान कमसे कम एक समय और अधिकसे अधिक दो  
समय तक रहता है।

उन नारकियोंका पचीस प्रकृतियोंवाला उद्यस्थान यह है—इन्हीं उपर्युक्त  
इन्हीं प्रकृतियोंमेंसे नरकगतिभानुपूर्वीको छोड़कर वैदिकिकशरीर हुंइसंस्थान  
वैदिकिकशरीराङ्गोपाङ्ग उपपात और प्रत्येकशरीर इन पांच प्रकृतियोंको मिला देनेसे  
पचीस प्रकृतियोंवाला उद्यस्थान हो जाता है।

शंका—यह पचीस प्रकृतियोंवाला उद्यस्थान किसके होता है ?

समाधान—यिस नारकी जीवने शरीर ग्रहण कर लिया है उसके यह पचीस  
प्रकृतियोंवाला उद्यस्थान होता है।

शंका—यह उद्यस्थान कितन काळ तक रहता है ?

१ नामपुरोदपद्मान ग-आरंभ व तन्निदग्ग्याण । नुमपदेअज्जनाणं उग्गैवक निग्गे वाउ ॥  
पो व ५८८

२ निग्गहपयठारे लीपयिसे लीपय्यठे । थ्या वियय्यठे थ्येण पर्याये वत्ता ॥ एक्कं व दो व  
विधि व उपवा अणुसुहसं शिव वि । इधियवादानो वरीमत्त व उदपपको इ ॥ पो व ५८९-५९०



कर्म होदि ? सरिरीर्यदिदपदमसमयमादि कर्तृक आब सरिरीरपञ्चपीए अगिस्तेविद  
चरिमसमजो चि, अंतोसुदुचमिदि वुचं होदि । मगा वि पुम्बिस्समगिज सह दोष्णि । २ ।।

परपादमपसरबिहापमादि च पुम्बिस्सपञ्चपीसपयडीसु पक्खित्त च सत्तावीस  
पयडीसपुदयद्वानं होदि । तं कम्मि हादि ? सरिरीरपञ्चपीगिम्बिचिपदमसमयमादि कर्तृक  
आब भाणापापपञ्चचिमिस्तेविदचरिमसमजो चि पदमिह क्खते होदि । त केवधिरे ?  
अहण्णुक्कस्सेज अंतोसुदुचं । एत्थ मंगसमासो विम्भि । ३ ।।

पुम्बिस्ससत्तावीसपयडीसु उस्सासे पक्खित्ते अट्ठावीसपयडीसपुदयद्वानं होदि ।  
तं कम्मि होदि ? भाणापापपञ्चपीए पञ्चचयदपदमसमयमादि कर्तृक आब भासा-  
पञ्चपीए अगिस्तेविदचरिमसमजो चि पदमिह क्खते होदि । तं केवधिरे ? अहण्णुक्क-

समाधान—छटीर ग्रहण करबके प्रथम समयको भादि केकर छटीरपर्याप्ति  
अपूर्व रहनेके अन्तिम समय पर्यंत अर्थात् अन्तर्मुहूर्तकाळ तक यह उदयस्थान रहता है।  
पूर्वोक्त एक भंगके साध अब दो भंग हो गये ( २ )।

पूर्वोक्त पञ्चीस प्रकृतिपौमे परघात तथा अपरास्तविहायोगति मिला देनेसे  
सत्तारिस प्रकृतिपौबाळा उदयस्थान हो जाता है।

शंका—यह सत्तारिस प्रकृतिपौबाळा उदयस्थान किस काळमें होता है ?

समाधान—छटीरपर्याप्ति पूर्व होजानेके प्रथम समयको भादि केकर  
आनापपर्याप्ति अपूर्व रहनेके अन्तिम समय पर्यंत इतने काळ तक यह सत्तारिस  
प्रकृतिपौबाळा उदयस्थान होता है।

शंका—यह काळ कितने प्रमाण होता है ?

समाधान—अध्वपतः और उत्कर्षतः अन्तर्मुहूर्तमात्र ।

यहां तकके सब भंगोंका जोड़ हुमा तीन ( ३ )।

पूर्वोक्त सत्तारिस प्रकृतिपौमे उच्छ्वासको मिला देनेसे अट्ठारिस प्रकृतिपौबाळा  
उदयस्थान हो जाता है।

शंका—यह अट्ठारिस प्रकृतिपौबाळा उदयस्थान किस काळमें होता है ?

समाधान—आनापपर्याप्तिके पूर्व होजानेके प्रथम समयको भादि केकर  
आनापपर्याप्ति अपूर्व रहनेके अन्तिम समय तकके काळमें होता है ?

शंका—यह काळ कितने प्रमाण है ?

समाधान—अध्वपतः और उत्कर्षतः अन्तर्मुहूर्तमात्र ।

स्वेयं अंतोमुद्रुत्त । एत्य मंगसमासो चचारि [४] ।

पुष्पिल्लअङ्गावीसपयडीसु दुस्सरे पक्खिचे एगूणवीसपयडीणद्वयद्वान् होदि ।  
 व कम्भि ? मासापञ्चवीए पञ्चपयदस्स पढमसमयमादिं क्कदुय आण अप्पप्पनो  
 आठअङ्गिदीए चरिमसमओ चि एदम्भि अङ्गाणे होदि । तं केवविं ? अहप्पेय  
 दसवस्ससहस्साणि अंतोमुद्रुत्तानि, उक्कस्सेण अंतोमुद्रुत्तणवेचीससागरोपमानि । एत्य  
 मंगसमासो पंच [५] ।

तिरिक्खगदीए एक्कवीस-चडुवीस-यचवीस-छब्बीस सचावीस-अङ्गावीस-एगूण  
 चीस-तीस-एक्कचीस चि णव उदयद्वानाणि । २१ । २४ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९  
 ३० । ३१ । सपदि सामप्पेण एरुंदियाण एक्कवीस चठवीस पचवीस-छब्बीस-सचावीस  
 चि पंच उदयद्वानाणि । आदावुज्जोषाणमज्जुदएण एरुंदियस्स सचावीसद्वानेण विणा  
 चचारि उदयद्वानाणि । आदावुज्जोषाण उदएण सदिदएरुंदियस्स पञ्चवीसद्वानेण विणा

यहां तकके सब मंगोंका जोड़ हुआ चार (४) ।

पूर्वोक्त अङ्गारस प्रकृतियोंमें दुस्सरको मिळा देनेसे उनतीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान हो जाता है ।

संज्ञा—बह उनतीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान किस कासमें होता है ?

समाधान—भाषापर्यायि पूर्ण करसेमेवाकके प्रथम समयको लेकर अपनी अपनी  
 भाषुस्थितिके अन्तिम समय पर्यन्त इतने कासमें बह उनतीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान  
 होता है ।

संज्ञा—यह कितने कास प्रमाण है ?

समाधान—अधम्यतः अन्तर्मुहृत कम द्वा इत्वार पर्य और अन्तर्मुहृत  
 कम तेतीस सागरोपमप्रमाण होता है ।

यहां तक सब मंगोंका पाण हुआ पांच (५) ।

तिरिक्खगतिमें इक्कीस बीबीस पचीस छब्बीस सत्तारस अङ्गारस उनतीस  
 तीस और इक्कीस ये मी उदयस्थान हात हैं । २१, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१ ।  
 सब सामान्यतः एक त्रिभुज तीनोंके इक्कीस चौबीस पचीस छब्बीस और सत्तारस य पांच  
 उदयस्थान हैं । आताप और उद्योत इन दो प्रकृतियोंके उदयक बिना एकेन्द्रिय तीणके  
 सत्तारस प्रकृतियोंवाले स्थानमें रहित होय चार उदयस्थान हात हैं । आताप और उद्योतके  
 उदय रहित एकेन्द्रिय तीणके पचीस प्रकृतियोंवाले स्थानमें रहित होय चार उदयस्थान



गहिदसरीरपदमसमयप्पुद्धि जाव सरीरपञ्चचीए अणिल्लेविद्वरिमसमजो चि एद्विह  
द्वाने । केवचिरं ? अहण्णुक्कस्सेण अतामुद्धुत्तं । एत्थ अजसगिचीए उदप्पण अह्म मगा ।  
असकिचीए उदएण एक्को चेव । कुदो ? असकिचीए सह सुद्धुम अपञ्चत्त-साहारणाम  
उदयामावा । तेण सव्वमंगसमासा मव [९] ।

पुणो अपञ्चत्तमवणिय मसत्तनीसपयडीसु परपादे पक्खिये पचवीसपयडीण  
सुदयद्वानं होदि । एत्थ मंगा अजसकिचीउदएण चत्तारि । कुदो ? अपञ्चत्तउदयस्म  
अमावादा । अजसकिचित्तउदएण एक्को चेव । तेण मगममाभा पच [५] । स क्विह ?  
सरीरपञ्चत्तयदपदमसमयमादि क्वदूज जाव आणापाणपञ्चचीए अणिल्लेविद्वरिम  
समजो चि एद्विह द्वाने । न केवचिरं ? अहण्णुक्कस्सेण अतोमुद्धुत्तं ।

समाधान—शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयम मकर शरीरपयाप्ति अपूर्ण  
रहनेके अन्तिम समय तकके कालमें यह उदयस्थान होता है ।

शंका—इस उदयस्थानका काल कितने प्रमाण है ?

समाधान—अध्याय भीर उरुयस धम्ममुद्धतप्रमाण ।

यहां भयशर्कातिके उदयसहित ( बादर-सूक्ष्म पयाप्त मपयाप्त भीर मत्येक  
साधारणके विकारसे ) भाठ मग होते हैं । यहाकार्तिके उदयसहित एक ही मंग है  
क्योंकि यशर्कातिके साथ सूक्ष्म भययाप्त भीर साधारण इन प्रकृतियोंका उदय नहीं  
होता । इस प्रकार सब मंगोंका याग मा हुआ ( ९ ) ।

पूर्वोक्त उदयस्थानकी प्रकृतियोंमें अपयाप्तको छाड़कर दाप भीपीस प्रकृतियोंमें  
पटघातको मिखा इमे पर पच्छीस प्रकृतियोंबाळा उदयस्थान हा जाता है । यहापर  
मग भयशर्कातिके उदयके साथ ( बादर-सूक्ष्म भीर मत्येक साधारणके विकारसे ) बार  
होत है क्योंकि, यहापर अपयाप्तका उदय नहीं होता । यशर्कातिके उदयसहित  
पूर्ववत् मंग एक ही होता है । इससे यहाँ मंगोंका याग हुआ पांच ( ५ ) ।

शंका—यह पच्छीस प्रकृतियोंबाळा उदयस्थान किस कालमें होता है ?

समाधान—शरीरपर्याप्ति पूर्व होनेके प्रथम समयको भादि सेकर मानमाण  
पर्याप्ति अपूर्ण रहनेके अन्तिम समय तकके कालमें यह उदयस्थान जाता है ।

शंका—यह उदयस्थान कितने काल तक रहता है ।

समाधान—अध्याय भीर उरुयस धम्ममुद्धतप्रमाण इय उदयस्थानहा काल ह ।

उस्तेष आत्मापामपञ्चरीष पञ्चयदस्स पुत्रिस्तपञ्चरीषपयडीसु उस्सत्ते पक्खिसे छन्वीसपयडीसमुदयङ्गारं होदि । तं कस्म ? आत्मापामपञ्चरीष पञ्चयदस्स । केवधिरे ? अहम्भेज अंतोसुद्रुच, उरुस्समेण अंतोसुद्रुचनवावीसवस्स-सहस्साधि । एत्थ मगा पुब्बं व पंनेष होंति । ५ ।

आदापुञ्जोपुदयसहिदपरंदिपस्म बुच्चदे- एकक्रीस चतुसीसपयडिउदयङ्गापारं पुब्बं व पक्खिया क्खम्भा । अवरि दोण्ह पि उदयङ्गापाम असक्खिपि अजस क्खिउदयष दोष्णि दोष्णि चैव मगा होंति । क्खदो ? आदापुञ्जोपुदय मावीर्यं सुद्धम अपञ्च साहारणसरीराय उदयामावा । पुणो एदे पुब्बुत्तएकक्रीस चतुसीसपयडिउदयङ्गापाम मंगेसु सुद्धा पि अरण्हम्भा । पुणो सरीरपञ्चरीष पञ्चयदस्स परपारे आदापुञ्जोवापामेककूर्दरं च पुत्रिस्तपञ्चरीसपयडीसु पक्खिसे पञ्चरीम

उसी मानप्राप्तपर्याप्तिसे पूर्वं हुए जीवके पूर्वोक्त पञ्चीस प्रकृतियोंमें उच्छ्वास मिमा देनेपर छन्वीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता है ।

सुंका- वह छन्वीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान किसके होता है ?

समाधान-मानप्राप्तपर्याप्तिसं पूर्वं हुए एकेन्द्रिय जीवके यह छन्वीस प्रकृतियों वाला उदयस्थान होता है ।

सुंका-यह उदयस्थान कितन काळ तक रहता है ?

समाधान-अधम्यता अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षता अन्तर्मुहूर्तसं होन वारिस हजार वर्षं तक यह उदयस्थान रहता है ।

यहां मंग पूर्ववत् पांच ही होत हैं ( ५ ) ।

अब माताप और उद्योत नामकर्म प्रकृतियोंके साथ होनेवाले एकेन्द्रियके उदय स्थानोंके कहते हैं- हममें इन्वीस और बीबीस प्रकृतियोंवाले उदयस्थानोंकी पूर्ववत् प्रकृषणा करना चाहिये । विरोधता केवच इतनी है कि उक्त दोनों उदयस्थानोंके पक्षकीर्ति और अक्षकीर्ति प्रकृतियोंके उदय सहित केवल दो दो ही मंग होते हैं क्योंकि, किन जीवोंके माताप और उद्योतका उदय होनेवाला है उनके सूक्ष्म अपर्याप्त और साधारण शरीर इन प्रकृतियोंका उदय नहीं होता । किन्तु प दो दो मंग पूर्वोक्त एककीस व बीबीस प्रकृतिसम्बन्धी उदयस्थानोंमें पाये जाते हैं अतः उन्हें भिन्नाक देना चाहिये ।

पुनः शरीरपर्याप्तिसं पर्याप्त हुए जीवके परचात तथा माताप और उद्योत इन दोनोंमेंसे कोई एक इस प्रकार दो प्रकृतियोंको पूर्वोक्त बीबीस प्रकृतियोंमें मिमा देनेसे

पयद्विद्वान्मुत्सविष्य छम्बीसपयद्विद्वान्मुत्सपञ्जदि । एद् कस्स ? सरीरपञ्जरीए पञ्च  
 यदस्स । केवधिर ? जहण्णुक्कस्सेम अवोमुदुत्त । एत्थ मंगा सचारि इत्थि । एद्  
 सचारि मंगे पद्महम्बीसमंगेसु पक्खित्ते णव मगा होति । तस्सेव आणापाणपञ्जरीए  
 पञ्चयदस्स छम्बीसपयदीसु उस्सासे पक्खित्ते सचारीसपयदीण उदयद्वान् होदि ।  
 एत्थ मगा सचारि चेव । सम्भेइदियाण सञ्चमगसमासो वचीस [ ३९ ] ।

पचीस प्रकृतिपौवाळे उदयस्थानका उत्सवमकर छम्बीस प्रकृतिपौवाळा उदयस्थान उत्तर  
 होता है ।

दृक्का—यह छम्बीस प्रकृतिपौवाळा उदयस्थान किसके होता है ?

समाधान—शरीरपयाचित्से पूज हुण एकेन्द्रिय जीवके होता है ।

द्वंका—इस छम्बीस प्रकृतिपौवाळे उदयस्थानका समय कितना है ?

समाधान—अमन्य और उरुपतः अन्तर्मुह्य ।

पदा ( पञ्चकीर्ति मपञ्चकीर्ति तथा माताप उद्योतके विकल्पसे ) मंग चार हैं । इन  
 चार मंगोंको पूर्वोक्त छम्बीस मंगोंवाळ उदयस्थानसम्बन्धी पाँच मंगोंमें मिखा देनेसे  
 नौ मंग हो जाते हैं ।

आमप्राणपयाचित्से पूज हुण उसी एकन्द्रिय जीवके उक्त छम्बीस प्रकृतिपौमें  
 उच्छ्वासाका मिखादेनेपर सचारीस प्रकृतिपौवाळा उदयस्थान हो जाता है । पदा ( पञ्च  
 कीर्ति मपञ्चकीर्ति और माताप-उद्योतके विकल्पसे ) मंग चार हैं ।

समस्त एकेन्द्रियोंके सब उदयस्थानसम्बन्धी विकल्पोंका पाग हाता है  
 वचीस ( ३९ ) ।

माताप-उद्योत सहित २१ प्र स्थान— ५

" " २४ — ९

" " २५ " — ५

" " २६ " — ५

माताप उद्योत सहित ११ " — २

२४ " — २

" " २३ — ४

२७ — ४

३२

ये पूर्वोक्त मंगोंमें आ चुके हैं  
 इसलिये इन्हें नहीं गाना ।

विशुधार्थ—गोमटसार कमकाइकी ५८८ भादि गायामोंमें आ उदयस्थान  
 वतछाप गय हैं उनमें २१ और २४ प्रकृतिसम्बन्धी उदयस्थानोंमें माताप-उद्योत प्रकृतिपौके  
 उदयका कही उल्लेख वा संकेत नहीं किया गया । विग्रहगतियों व अपर्याप्त अवस्थामें इन

विगतिरिदियाम सामप्यन एकवीस छम्बीस अष्टासीम एञ्जलीम-सीम-एकवीस वि  
 छ उदयद्वाणाभि । २१ । २६ । २८ । २९ । ३ । ३१ । उज्जोबुदयविरहिद्विगतिरिदियस्त  
 पच बुदयद्वाणाभि ह्येति, एकवीससुदयद्वाणाभावा । उज्जोबुदयसमुच्चविगतिरिदियस्त वि  
 पंचेबुदयद्वाणाभि, परमाहुञ्जोष-अपसत्त्वविहायमदीनमकक्रमप्यवेसेन अष्टासीसद्वाणा  
 सुप्यचीदो ।

उज्जोबुदयविरहिद्वेहदियस्त ताव उच्यते- तस्य इम इगिनीसाए ह्यप्य, तिरिक्त  
 गदि-वेहदियसादि-तेजा-कम्मइयसरिर-बन्ध-गंध-रस फस-तिरिक्तगदिपात्रोम्गाणुपुम्भि  
 जगुरुअसहुअ-रस बादर पञ्चचापञ्चचागामेकद्वर पिराविर-सुमासुम-दुमग अजादेञ्ज  
 जस-अजसकिचीनमकद्वर विमिगनामं च, यदासिमेकवीसपपदीगमेकं टापं । त कस्त ?

प्रकृतियोंका उदय भी संभव नहीं प्रतीत होता । धबलाकारमे स्वयं पृष्ठ ३८ पर इव दोनों  
 प्रकृतियोंके साथ अपर्याप्त प्रकृतिके उदयका समाप्त बतलाया है । मतएव वहाँ पर ऐसा  
 भयं केमा चाहिये कि जिन एकेन्द्रिय जीवोंके जागे बचकर शरीरपर्याप्त पूर्व हो जान  
 पर जाताय या उद्योत प्रकृतिका उदय होनेका है उनके सूत्रम अपर्याप्त और  
 साधारण प्रकृतियोंका उदय नहीं होगा मतएव तत्सम्बन्धी भग मी उनके नहीं होंगे ।  
 केवल यशोवर्ति और अयशोवर्तिके विकल्पसे दो वा ही भग होंगे ।

विकल्पेन्द्रिय जीवोंके सामान्यता इकीस छम्बीस अष्टारस उच्यते सीस और  
 इकीस प्रकृतियोंके सम्बन्धसे छह उदयस्थान हैं । २१ । २६ । २८ । २९ । ३ । ३१ उद्योतके  
 उदयसे रहित विकल्पेन्द्रिय जीवके पांच उदयस्थान होते हैं क्योंकि उसके इकीस प्रक  
 तियोंका उदयस्थान नहीं होता । उद्योतके उदय सहित विकल्पेन्द्रियके भी पांच ही  
 उदयस्थान होते हैं क्योंकि उसके परमाण उद्योत और अयशस्तविहायोपति इन तीव्र  
 प्रकृतियोंका एक साथ प्रवेश होनेके कारण अष्टारस प्रकृतियोंका उदयस्थानकी उपपत्ति  
 नहीं बनती ।

अथ पद्वह उद्योतान्धसे रहित द्वीन्द्रिय जीवके उदयस्थान कहत हैं । उनमें यह  
 इकीस प्रकृतियोंका उदयस्थान है— तिर्य्यगति' द्वीन्द्रियजाति तेजस' और कामज  
 शरीर' कर्ष गंध' रस स्वर्ग' तिर्य्यगतिमापोण्यामुपूर्वी धगुरुकमु' जस' 'बाहर'  
 यथाप्त और अपर्याप्तमेंसे कोई एक' स्थिर' अस्थिर' हुम' अहुम' दुर्मय'  
 अजादेव' यशोवर्ति और अयशोवर्तिमेंसे कोई एक और निर्माण' इन इकीस प्रकृति-  
 योंका एक उदयस्थान होता है ।

संज्ञा—यह इकीस प्रकृतियोंका उदयस्थान किस जीवके होता है ?

वेईदियस्स विग्गह्गदीए वहुमाणस्स । उ केवचिरं ? महण्णेण एगसममो, उक्कस्सेण वे समय। असगिचिउदएण एकको मंगो । कुदो ? अपज्जचोदएण सह नसकिचीए उदयामत्वा । अजसगिचिउदएण वे मंगा । कुदो ? पज्जचापज्जचापमुद एहि सह अजसगिचिउदयस्स संममुवलमा । एत्थ सम्ममंगसमासो तिष्मि [ १ ] ।

एदासु एककवीसपयडीसु भाणुपुम्भिमवणत्थ गहिदसरीरपढमसमए ओरालिय सरीर-हुंडसठण-ओरालियसरीरअंगोवग असपत्तसेवहुसघटण-उवपाद-पचेयसरीरेसु पक्खि चेतु छम्पीसाए द्दामं होदि । एत्थ मंगसमामो तिष्मि [ १ ] । सरीरपज्जचीए पज्जचयदस्स पुम्बुत्तपयडीसु अपज्जत्तमवणिय परधादअप्पसत्वविहायगवीसु पक्खिचासु अद्वाधीसाए द्दामं होदि । एत्थ असकिचिउदएण एकको मंगो, अजसकिचि उदएण पि एकको चेव । कुदो ? पडिक्कत्तपयडीणममावादो । एत्थ सम्ममंगा दो चेव [ २ ] ।

आत्मापानपज्जचीए पज्जचयदस्स पुम्बुत्तपयडीसु उस्मासे पक्खिचे एगुम

समाधान—यह उदयस्थान वस जीवके होता है जो शीघ्रिय है और विप्रह गतिमें वर्तमान है ।

प्रश्न—यह उदयस्थान कितने काल तक रहता है ?

समाधान—कमसे कम एक समय और अधिकसे अधिक दो समय ।

पराधीर्तिके उदयके साथ एक ही मंग होता है क्योंकि अपर्याप्तोदयके साथ पराधीर्तिक उदय नहीं होता । अपराधीर्तिके उदय सहित दो मंग होते हैं क्योंकि पर्याप्त और अपर्याप्तके उदयके साथ अपराधीर्तिका उदय होना संभव है । इस प्रकार यहाँ सब मंगोंका योग हुआ तीन ( १ ) ।

इस इकीस प्रकृतियोंमेंसे आनुपूर्वीको छोड़कर शरीरग्रहण करनेके प्रथम समयमें औदारिकशरीर, हुंडसंस्थान औदारिकशरीरअंगोपांग अस्मिन्तण्णप्राप्तिकासंज्ञनम उपपात और प्रत्येकशरीर इन छह प्रकृतियोंको मित्रा देनेसे छम्पीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान हो जाता है । यहाँ मंगोंका योग (पूर्वोक्तानुसार ही ) होता है तीन ( १ ) ।

शरीरपर्याप्ति पूर्ण करनेकेबाड़े शीघ्रिय जीवके पूर्वोक्त छम्पीस प्रकृतियोंमेंसे अपर्याप्तको निकालकर परपात और अपरास्तविहायोमति मित्रा देनेसे अद्वाहीस प्रकृतियों वाला उदयस्थान हो जाता है । यहाँ पराधीर्तिक उदय सहित एक ही मंग है । और अजसगिचिउदयके उदय सहित भी एक ही मंग है, क्योंकि यहाँ भी प्रतिपत्ती प्रकृतियोंका समाव है । यहाँ सब मंग हैं केवल दो ( २ ) ।

आत्मप्राचपर्याप्ति पूर्व करनेकेबाड़े शीघ्रिय जीवके पूर्वोक्त अद्वाहीस प्रकृतियोंमें



तीसाए ह्यामं भवति । एतच्च वि मंगा दो चैव [२] । मासापञ्चमीए पञ्चमयदस्स पुञ्चमपयदीसु इस्सर पक्खिचे तीसाए ह्यामं होदि । एतच्च मंगा दो चैव [२] ।

सपदि उच्चावृद्धयसंशुचतर्द्धयिस्स मग्गमाणे एककवीस-उच्चीसाओ न्ना पुम्भं कुचाओ तथा वचम्भं । पुणो उच्चीसाए उवरी परभादुज्जोव अप्पसत्तयविहायगरीसु पक्खिचासु एणुणतीसाए ह्यामं होदि । असक्खित्ठदएण एकको मंगो, अबसक्खित्ठ उदएण एकको । एतच्च मंगसमासो दाब्धि [२] । पुणा एदेसु दोसु पडमेगूजचीसमंगेसु पक्खिचेसु चत्तारि मगा होति । आनापामपञ्चमीए पञ्चमयदस्स उत्सासे पक्खिचे चीमाए ह्यामं होदि । एतच्च वि मंगा दो चैव । एदेसु पडमतीसमंगेसु पक्खिचेसु चत्तारि मगा होति । मासापञ्चमीए पञ्चमयदस्स इस्सरे पक्खिचे एककतीसाए ह्यामं होदि । एतच्च मंगा दाब्धि । सम्भमंगसमासो अङ्गरस । तिण्हं विगमिदियाण मंग-

उत्सर्गनास मिळा वेधेचे वनतीस प्रकृतियोंवाळा उद्भवस्थान हो जाता है । यहाँ भी मंग वा ही है (२) ।

भाग्यपर्याप्तिको पूर्ण करकेमेवाळ ड्रीन्द्रिय जीवके पूर्वोक्त उमतीस प्रकृतियोंमें दुस्वर मिळा वनेसे तीस प्रकृतियोंवाळा उद्भवस्थान हो जाता है । यहाँ भी मंग वा ही है (२) ।

अब उद्योतके उद्भव सहित ड्रीन्द्रिय जीवके उद्भवस्थान कब्रं जाते हैं— इनके इक्कीस भीर उच्चीस प्रकृतियोंवाळे उद्भवस्थान तो जैसे ऊपर कह भाये है उसी प्रकार कहना चाहिये । फिर उच्चीसके ऊपर परभात उद्योत भीर अमरास्तविहायोगति इन तीसको मिळा वनपर वनतीस प्रकृतियोंवाळा उद्भवस्थान हो जाता है । यद्यचीर्तिके उद्भव सहित एक मंग हाता है मंग अयशाचीर्तिके उद्भव सहित एक । इस प्रकार यहाँ मंगोका योग हुआ वा (२) । फिर इन वा मंगामें पूर्वोक्त उमतीस प्रकृतियोंवाळे उद्भवस्थान सम्बन्धी वा मंगोको मिळा वेधेसे मंग हो जात है चार (४) ।

आनापामपय्याप्ति पूर्ण करकेमेवाळ ड्रीन्द्रिय जीवके पूर्वोक्त उमतीस प्रकृतियोंमें उत्सर्गनास भीर मिळा वनपर तीस प्रकृतियोंवाळा उद्भवस्थान हो जाता है । यहाँ भी मंग वा ही है (२) । इनमें प्रथम तीस प्रकृतियोंवाळ उद्भवस्थान सम्बन्धी वा मंग मिळा वनस चार मंग हा जात है (४) ।

भाग्यपर्याप्तिको पूर्ण करकेमेवाळे ड्रीन्द्रिय जीवके पूर्वोक्त तीस प्रकृतियोंमें दुस्वर मिळा वनमे इक्कीस प्रकृतियोंवाळा उद्भवस्थान हो जाता है । यहाँ मंग हाते है वा (२) ।

सब विवरणोंका वाग हुआ मठाए (१८) ।

समामभिरुच्छामो वि अद्धारससु तिगुभिदेसु चउप्यणमगा हौति ॥५४॥ एत्थ सामिचादि वियप्पा वेरइयाम व षचन्ना । णवरि बेरुंदियादीण तीस एककचीसाम कन्नो अहप्पेण भंतोसुहुच उक्कस्सेण बहाकमेण धारस वस्तामि, एगुणमप्परदिदियामि, छम्मासा भंतोसुहुत्तणा ।

पश्चिदियतिरिक्खस्स सामप्पेण एककचीस छम्बीस अद्धारस-गुणतीस-तीस-एक चीमेसि छउदयद्वाप्पाणि । २१।२६।२८।२९।३०।३१। बुन्जोपुदयविरिद्व पश्चिदियतिरिक्खस्स पञ्च उदयद्वाप्पाणि हौति । कुदो ? तत्वेककचीसाए उदयामाणा । बुन्जोपुदयसंशुचपश्चिदियतिरिक्खस्स नि पचेवुदयद्वाप्पाणि हौति । कुदो ? तत्पद्दुबी

### उद्योत रहित उद्योत सहित

२१ प्रकृतियोंवाले स्थानमग	३	३	} ये छह मंग पूर्वके ही समान होनेसे नहीं जोड़े गये ।
२६ " "	३	३	
२८ " "	२	×	
२९ " "	२	+	२
३० " "	२	+	२
३१	×		२
<hr/>			
	१२	+	३ = १८

अब हमें त्रिभ्रिय त्रिभ्रिय और चतुरिभ्रिय इन तीनों विकलभ्रिय जीवोंके उदयस्थानोंके मंगोंका योग चाहिये । मनपय अद्धारइको तलसे गुणा कर देनेपर भीजन मग हो जाते हैं (५४) । यहाँ स्वामिन्य आदिके विकल्प जैसे नारकी जीवोंकी प्रकरणमें पहले कह जाये है उसी प्रकार यहाँ भी कहना चाहिये । विद्योपता केपछ इतनी है कि त्रिभ्रियादि जीवोंके तीस और इकतीस प्रकृतियोंवाले उदयस्थानोंका काळ कमसे कम अन्तर्मुहूर्त और अधिकस अधिक अन्तर्मुहूर्त कम कमशा पारह वर्ष उमआस राशि दिक्क और छह मास होता है । अर्थात् तीस और इकतीस प्रकृतियोंवाले उदयस्थानोंका अल्पय काळ तो तीनों विकलभ्रिय जीवोंके अन्तर्मुहूर्त ही होता है किन्तु उरुप नाम त्रिभ्रियोंके अन्तर्मुहूर्त कम बारह वर्ष त्रिभ्रियोंके अन्तर्मुहूर्त कम उमआस राशिदिन और चतुरिभ्रिय जीवोंके अन्तर्मुहूर्त कम छह मास होता है ।

पंचेभ्रिय तिर्यक्के सामान्यता इकीस छम्बीस अद्धारस जनतीस तीस और इकतीस प्रकृतियोंवाले छह उदयस्थान होत हैं । २१।२६।२८।२९।३०।३१। उद्योतोदयसे रहित पंचेभ्रिय तिर्यक्के पांच उदयस्थान होते हैं क्योंकि उसके इकतीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान नहीं होता । उद्योतोदय सहित पंचेभ्रिय तिर्यक्के भी पांच

सुदयङ्गामाभावाद् । पुन्त्रोऽप्यविरुद्धिर्दार्पिदियतिरिक्तस्त मध्यमां सरय इदमेक  
 विसाय द्वायं होदि- तिरिक्तगदि-पंविदियत्वादि-तेजा-कम्मइपसरीर-वप्य गण-रस फ  
 तिरिक्तगदिपाशोभयापुपुष्वी-अगुरुमल्लुग-सस-बाहर पन्त्रचापन्त्रचानमककरं मि  
 धिरं सुमासुमं सुमम-सुमगाजमेककरं आदेज्ज-अभादेज्जापमककरं असक्ति-अज  
 क्किचीमकेककरं मिमिजपामं च एदासिमेककीसपयडीपमेकं च द्वायं । म  
 पन्त्रचतदप्य अह भंगा, अपन्त्रचतदप्य एकको । कुदो ? सुमग-आदेज्ज-असक्ति  
 सह एदस्सुइयाभावा । सम्भमंगसमासो च १९ । सरीरे गहिदे आउपुभियमर्वा  
 ओरासियसरीरे सम्भं सठाभारं एककरं ओरासियसरीरेअंगोवंग छ्पं संपन्नपाजम  
 उवपाद-पत्तेयसरीरेमिदि एदेसु कम्मोसु पक्खिचेसु छ्पनीसाए इणं होदि ।  
 पन्त्रचतदप्य अहसीत्वा वे सदा भगा होति । अपन्त्रचतदप्य एको चेर । कु  
 सुहेहि सह अपन्नचत्स उदयामावा । एत्थ सम्भमंगसमासो एकारसुगतिसदमेचो १८  
 एत्थ भगविसयविच्छेद्यसमुप्यायवहुमेदाओ गाहाओ वत्तभाओ । त अहा—

ही उदयस्थान होते हैं क्योंकि उसके अग्रांस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान नहीं होता  
 जब उद्योतोदय रहित पंचेन्द्रिय तिर्यञ्जके उदयस्थान कहते हैं । हममें इस  
 प्रकृतियोंवाला उदयस्थान इस प्रकार है— तिर्यञ्जगति' पंचेन्द्रियजाति' तैजसः'  
 कामेच्छरीर' कर्म रीच एत स्पर्श' तिर्यञ्जगतिमापाग्यानुपूर्वी' मगुक्कपु  
 वस' बाहर' पर्याप्त और अपर्याप्तमेंसे कोई एक ' स्थिर' और अस्थिर' इ  
 और अगुम' सुमग और दुर्मगमेंसे कोई एक' भावेय और अभादेयमेंसे कोई ए  
 पशाकीर्ति और अपशाकीर्तिमेंसे कोई एक' और निर्माय' इन इन्हीं प्रकृतियों  
 एक ही स्थान होता है । यहाँ पर्याप्तके उदय सहित (सुमग दुर्मग भावच बन  
 और पशाकीर्ति अपशाकीर्तिके विकल्पोंसे) मात्र भंग होता है । अपर्याप्तके उदय स  
 केवल एक ही भंग ही क्योंकि सुमग भावेय और अपशाकीर्ति प्रकृतियोंके साथ अपर्याप्त  
 उदय नहीं होता । इस सब भंगोंका योग मी है (१९) ।

शरीर प्रवृत्त करकेमेपर मानुपूर्विको छोड़ औरारिकशरीर छह संस्थानों  
 कोई एक संस्थान औरारिकशरीरवांगपांग छह सधमोंमेंसे कोई एक संवहन उपा  
 और मल्पकशरीर, इन छह कर्मोंको मिला देनेपर छ्पनीस प्रकृतियोंवाला उदय  
 होता है । यहाँ पर्याप्तोदय सहित (सुमग दुर्मग भावेय बनहिय पशाकीर्ति-अपवाच  
 छह संस्थान और छह संवहन इनके विकल्पोंसे २x२x२x२x२=८८) दो सौ भा  
 भंग होते हैं । अपर्याप्तोदय सहित एक ही भंग है क्योंकि उक्त वैकल्पिक प्रकृतियों  
 सुम प्रकृतियोंके साथ अपर्याप्तका उदय नहीं होता । यहाँ सब भंगोंका योग म  
 कम तीसरी अर्थात् दोली बवासी होता है (२०) ।

यहाँ भंगोंके विवरणमें निम्न उदय कथनेके क्रिये वे गाथायें कहे हैं ।  
 हैं । जैसे—

सखा त्व पत्तारो परियाण णट्ट तह समुदिद्ध<sup>१</sup> ।  
 एते पञ्च नियणा द्वाणसमुत्तिकत्तणा मेया ॥ ७ ॥

सन्धे वि पुप्फमगा उच्चरिममोसु एक्कमेरुकेसु ।  
 मेत्थंति चि य कमसो गुणिते उण्यग्गदे संखा<sup>२</sup> ॥ ८ ॥

पडम पयडिपमाण कमेण गिबिस्सविय उच्चरिमाण च ।  
 पिड पडि एक्केके गिबिस्सेते होदि पापारो ॥ ९ ॥

गिबिस्सनु विदियमेव पडम तस्सुवरि विदियमेक्केत्तक ।  
 पिड पडि गिबिस्सेते एव सेसा वि कायप्पा<sup>३</sup> ॥ १० ॥

पडमक्खो अणगओ आण्णिते सरमेत्ति विदियक्खो ।  
 दाण्णि वि गण्णत आण्णिते सरमेदि तण्णियक्खो<sup>४</sup> ॥ ११ ॥

संपन्ना प्रस्ताव परिचरत मद्य भीर समुदिष्ट इम पांच विद्वान्को रूपामोका मनुत्कर्तम अर्थात् विवरण करमेबाळे जामना चाहिये ॥ ७ ॥

समी पूर्वपत्ती मंग उत्तरपत्ती प्रत्येक भग में मिलते हैं, मतएव उन मंगोंको क्रमशः गुणित करमेपर सब भगोंकी संख्या उत्पद्य होती है ॥ ८ ॥

पहले प्रकृतिप्रमाणको क्रमसे रत्नकर अर्थात् उसकी एक एक प्रकृति अलग अलग रखकर एक एकके ऊपर उपरिम प्रकृतिपोंके पिंडप्रमाणको रखनेपर प्रस्ताव होता है ॥ ९ ॥

दूसरे प्रकृतिपिंडका अितमा प्रमाण है उतने बार प्रथम पिंडको रखकर उसके ऊपर द्वितीय पिंडको एक एक करके रखना चाहिये। (इस निस्तपक योगकी प्रथम समस्त भीर भगसे प्रकृतिपिंडको द्वितीय समग्र ताप्रमाण इस मये प्रथम निस्तपका रखकर जोड़ना चाहिये।) भाग भी दोष प्रकृतिपिंडोंको इसी क्रमपासे रखना चाहिये ॥ १० ॥

प्रथम अक्ष अर्थात् प्रकृतिविशेष जब अस्त तक पहुँचकर पुनः आदि स्थानपर आता है तब दूसरा प्रकृतिस्थान भी संक्रमण कर जाता है अर्थात् भगनी प्रकृतिपर पहुँच जाता है। भीर जब य दोनों स्थान अस्तको पहुँचकर आदिका प्राप्त हो आते हैं तब तृतीय अक्षका भी संक्रमण होता है ॥ ११ ॥

१ प्रतिपु तल्लुत्ति इति पाठ ।

२ पा ओ १५

४ पी ओ १८

१ पी ओ ११

५ पी ओ ४

सगमागेण विद्महे सेसं वमिस्सणु पमिस्सणे<sup>१</sup> रूप ।

वमिस्सज्जते सुजे एव सम्पन्न कयम्म ॥ १२ ॥

सउपरिदूण<sup>१</sup> रूप उक्कीयो सगुणिसु सगमाणे ।

अरणेउभोपकिट्ठय कुज्जा पउमत्तिय जायं ॥ ११ ॥

व्रित्तनेवां उद्यस्याम जानना मयीए हो उचीं स्थानसंख्याको पिंडमानसे विमल करे । जो छाप रह लसं मलस्थान समझे । पुनः छम्पमें एक भंक मिसाकर वृत्तरे पिंड मानका माय वैवे धीर होयको मलस्थान समझे । जहां माग वैनेसे कुछ न बचे वहां मशिम मलस्थान समझे धीर फिर छम्पमें एक भंक न मिसावे । इस प्रकार समस्त पिंडों द्वारा विभाजनक्रिया करनेसे उद्दिष्ट स्थाव निःकल माता है ॥ ११ ॥

एक भंकको स्थापित करके मागेके पिंडका जो प्रमाण हो उससे गुणा करे धीर छम्पमल मर्नकिटका घटा दे । एसा प्रथम पिंडक भंत तक करता जावे । इस प्रकार उद्दिष्ट निःकल माता है ॥ ११ ॥

विशेषार्थ—पूर्वोक्त सात गाथाओंमें यह बतलाया गया है कि जब भजेक पिंडोंके अस्तर्गत विशेष पर्वोंके विकल्पोंसे मिथ मिथ मंग बनते हैं तब उन सब मंगोंकी संख्या किस प्रकार निकाली जाय उस सत्याप्रमाण सब मंगोंको क्रमसे जाननेके लिये किस किस प्रकार विस्तार किया जा सकता है उस विस्तारसे किस प्रकार मंगोंमें परिवर्तन होते हैं किसी स्थानविशेषकी क्रमसंख्यामात्रके उद्देशसे उस स्थानवर्ती विशेषोंको कैसे जाना जा सकता है वा विंगोंके नामोद्देशसे उसकी क्रमसंख्या किस प्रकार जानी जा सकती है । गाथा नं ७ में इन्हीं प्रक्रियाओंके पांच नामोंका उद्देश है । भर्षोंके प्रमाणको संख्या उस सत्याप्रमाण मंग प्राप्त करनेकी प्रक्रियाको प्रसार उत्तरोत्तर एक एक विकल्पके नामपरिवर्तनको परिवर्तन क्रमिक संख्याके उद्देशसे विकल्पके विशेषोंको जाननेके प्रकारका मष्ट धीर विकल्प विशेषके नामोद्देशसे उसकी क्रमिक संख्याकी जाननेके प्रकारको समुद्दिष्ट कहा है ।

गाथा नं ८ में मंगोंकी समूह संख्या निहालनका प्रकार बतलाया गया है जिसका उपयोग प्रवृत्तमें पंचभिन्नवर्त आर्षोंके सुमग जुमंग जावेय मषाद्यय पषाद्यीर्ति मययाकीर्ति छह संख्याम धीर छह संज्ञकम इनक विकल्पों द्वारा उत्पन्न उद्यस्यानोंकी मंगसंख्या निकालनेमें किया जा सकता है । इसके सिधे प्रक्रिया यह है कि प्रकृत पिंडप्रमाणोंकी संख्याओंका क्रमशः एकदर परदर गुणा कर दो जिससे २×२×२×२×२=२८८ हो सी जहासी विकल्प जा जात है ।

१ मंगि वमिस्सणे इति पाठ ।

२ धी मी ४१

३ मंगि उक्कीरूण इति पाठ ।

४ धी मी ४२

गाथा नं ९ और १० में पतछाह गईं जो मिश्र मिश्र प्रकारकी प्रस्तावप्रक्रियाका स्वीकरण मक्षपरिवर्तनकी प्रक्रियासे होता है जो निम्न प्रकार है—

गाथा नं ११ में जो मक्षपरिवर्तनका क्रम बतखाया गया है वह द्वितीय प्रस्तावकी अपेक्षा ( गाथा नं १० के अनुसार ) सम्मम है । प्रथम प्रस्तावकी अपेक्षा मक्षपरिवर्तनकी निरूपक गाथा यहाँ नहीं दी गई । यह गाथा गाम्मटस्वार ( जी का ) के प्रमाव प्रकरणमें इस प्रकार पायी जाती है—

तद्विपनखो भतगवो भादिगवे संकमेदि विद्वियनखो ।

बोणिषि वि गतूपतं भादिगवे संकमेदि पढमबलो ॥ ११ ॥

अर्थात् गृहीत मक्ष जब भासापत्रमसे अपने मस्त तक जाकर व फिरसे छोटकर एक साथ अपने प्रथम स्थानको प्राप्त हो जाता है तब द्वितीय मक्ष बढकर दूसरे स्थानको प्राप्त होता है । इस प्रकार दोनों ही मक्ष मस्तको प्राप्त होकर व फिरसे छोटकर श्रव अपने अपने प्रथम स्थानको प्राप्त होते हैं तब प्रथमाक्ष प्रथम स्थानको छोड़कर द्वितीय स्थानपर पहुँच जाता है ।

इसके अनुसार प्रकृतमें भासापत्रोंका क्रम निम्न प्रकार होगा—

१	सुमग	भादेय	यशकीर्ति	समवतुरक्ष,	यज्ञपुत्रम
२	"	"	"	"	यज्ञनाराच
३	"	"	"	"	नाराच
४	"	"	"	"	अर्धनाराच
५	"	"	"	"	कीर्ति
६	"	"	"	"	असमाता
७	"	"	"	न्यमोष	यज्ञपुत्रम
८	"	"	"	"	यज्ञनाराच
९	"	"	"	"	नाराच
१०	"	"	"	"	अर्धनाराच

इस प्रकार जैसे समवतुरक्ष सहित ६ भग बने हैं वैसे ही न्यमोष सहित ६ भग बनेंगे और फिर श्रव धार संख्याओंके भी क्रमशा छह छह भग होंगे जिसका योग होगा ३६ । फिर व ही ३६ भग अपराधीतिक साथ होंगे । फिर अनादेयके यशकीतिक साथ ३६ और अपराधीतिक साथ ३६ भग होकर ७२ योग होंगे । पश्चात् सुमगके लेकर ३६ आर्य यशकीर्ति सहित ३६ आदेय अपराधीति सहित, ३६ अनार्य यशकीर्ति सहित और ३६ अनार्य अपराधीति सहित पर १४४ भग होंगे । इस प्रकार इन सबका योग



गाथा सं १३ में विकल्पके नामोल्लेख परसे उसकी क्रमिक संख्या जाननेकी विधि बतलाई गयी है। उदाहरणार्थ— हम जानना चाहते हैं कि पुर्मग, भन्नादेय, अयशाकीर्ति न्यम्रोधपरिमंडलसंस्थान और कीलकशरीरसंहनन बीनसे नम्बरके संगमें आवेंगे। यहाँ १ मरुको रजकर इसे मन्त्रिम पिंडमान ३ से गुणा किया और छम्पमेंसे भसंकित १ घटा दिया, क्योंकि कीलकशरीर पाँचवां संहनन है। घटानेसे जो ५ बचे उन्हें बगसे पिंडमान ३ से गुणा किया जिससे छम्प आये ३०। इसमेंसे घटाये ४ क्योंकि, न्यम्रोध परिमंडल ६ संस्थानोंमेंसे दूसरा ही है। शेष बचे २६ को उससे पूर्ववर्ती पिंडमान दोसे गुणा किया और घटाया कुछ नहीं क्योंकि पिंडमान दोमेंसे द्वितीय प्रकृति को ही ग्रहण किया है अतः भसंकित कुछ नहीं है। इस प्रकार छम्प १२ को पुनः २ से गुणा किया फिर भी कुछ नहीं घटाया क्योंकि यहाँ भी दोमेंसे दूसरी ही प्रकृति ग्रहण की है। अतएव छम्प हुए १०४ जिसे पुनः प्रथम पिंडमान २ से गुणा किया और यहाँ भी कुछ नहीं घटाया क्योंकि यहाँ भी दूसरी प्रकृति ग्रहण की है। अतएव उक्त विकल्पकी क्रमिक संख्या १०४×२=२०८ वीं हुई।

इस प्रकार जहाँ भी भनक पिंडान्तर्गत विशेषोंके विकल्पसे अथक संग बनते हैं वहाँ उनकी संख्यादि बात की जा सकती है। नीचे दो यंत्र दिये जाते हैं जिनसे किसी भी संगसंख्याके आकापका व किसी भी आकापसे उसकी संगसंख्याका ज्ञान पाँचों भसोंके कोट्टकोंमें दिये हुए संकोंके जोड़नेसे प्राप्त किया जा सकता है—

प्रथम प्रस्तार ( गाथा २० ) की अपेक्षा भगोंके जाननेका यंत्र

सुमग १	पुर्मग २				
भावेय ०	भन्नादेय २				
यशाकीर्ति ०	अयशाकीर्ति ४				
समचतु ०	न्यम्रोध ८	स्वाति १९	कुप्यक. २४	वामन ३२	दुप्यक. ४०
वज्रहृयम ०	वज्रमापक. ४८	माराच ९९	अर्धमापक १४४	कीसित १९२	भसमाति २४०



द्वितीय प्रसारकी मपक्षा ( गाथा नं ११ के अनुसार ) आद्यापमेदोंका क्रम निम्न प्रकार होगा—

१	सुमग	माद्येय	पशकीर्ति	समचतुरस्र,	बज्ररूपम
२	दुर्मग		"	"	
३	सुमग	मनाद्येय	"	"	
४	दुर्मग	"	"	"	"
५	सुमग	माद्येय	मपशकीर्ति		
६	दुर्मग		"	"	"
७	सुमग	मनाद्येय	"	"	"
८	दुर्मग	"	"	"	"
९	सुमग	माद्येय	पशकीर्ति	म्यप्रोष	
१०	दुर्मग				

इस प्रकार जैसे वहाँ माद्येय सहित २, मनाद्येय सहित २, फिर मपशकीर्ति माद्येय सहित २ और मपशकीर्ति मनाद्येय सहित २ ऐसे ८ मंग पने हैं जैसे ही म्यप्रोष पशकीर्ति-माद्येय सहित २ म्यप्रोष-पशकीर्ति मनाद्येय सहित २, म्यप्रोष मपशकीर्ति माद्येय सहित २ और म्यप्रोष-मपशकीर्ति मनाद्येय सहित २ ऐसे ८ मंग बनेंगे और फिर शेष बार संस्थाओंके भी क्रमशः आठ आठ मंग होकर छहों संस्थाओंके ४८ मंग होंगे। जिस प्रकार ये ४८ मंग प्रथम सहजम सहित हुए हैं वही प्रकार शेष पाँच सहजनोंके भी क्रमशः मक्तासीस मक्तासीस मंग होकर सब मंगोंका पाग ४८×५=२४० हो जायगा।

गाथा नं ११ में क्रमिक संख्यापरत विवक्षित मंग आत्मकी विधि बतलाई है। उदाहरणार्थ— हमें यह जानना है कि उक्त २८ मंगोंमेंसे १४वाँ मंग कीमता होगा। अब हम १४वाँ को सबसे पहले प्रथम विहमान २ से माहित करना चाहिये जिससे छम्प ७१ जाय और शेष बचा १। अतएव प्रथम स्थानमें सुमग है। फिर छम्पमें १ मिलाकर दूसरे विहमान २ का भाग देनेसे छम्प जाय ३१ और शेष बचा १। इससे जाना गया कि दूसरे स्थानमें माद्येय है। फिर छम्पमें १ मिलाकर तीसरे विहमान २ का भाग देनेसे छम्प जाय १८ और शेष रहा १। इससे जाना कि तीसरे स्थानमें पशकीर्ति है। फिर छम्पमें एक मिलाकर चौथे विहमान २ का भाग देनेसे छम्प जाये ३ और शेष बचा १। इससे जाना कि चौथे स्थानमें समचतुरस्रसंस्थान है। फिर छम्पमें १ मिलाकर पाँचवें विहमान २ का भाग न जाकर शेष बच ४ से अन्तिम विहकी चौथी बहति मपनापचसंस्थान समप्रता चाहिये। अतएव १४वाँ मंग सुमग माद्येय पशकीर्ति समचतुरस्रसंस्थान व अर्धनापचसंस्थान प्रकृतियोंका होगा।

उज्ज्वलुदयमञ्जुचर्पिदिद्यतिरिक्खस्स एक्कवीस-छम्बीसुदयङ्काप्पाइ पुम्म व वच  
 म्वाइ । पुणो सरीरपञ्चचीए पञ्चचयदस्स परपादुज्जोषेसु पसत्थापसत्त्वाण विहाय  
 गदीपमेक्कदरे च पविहेसु एगुण्णतीसाए ङ्काण होदि । भगा पंच सदा छावचरा [५७६] ।  
 पुणो एदेसु पढमेगुण्णतीसाए भगेसु पक्खिचेसु सम्भमगपमाणं एक्कारस सदाणि  
 वावप्पाणि होदि [११५२] । आणापाणपञ्चचीए पञ्चचयदस्स उस्सासे पक्खिचे  
 तीसाए ङ्काण होदि । एत्थ पंच सदा छावचरि भगा [५७६] । पुणो एदेसु पढम  
 तीसाए भगेसु छुदेसु सचारम सयइमङ्कीसाइ तीसाए सम्भमगा होति [१७२८] ।  
 मासापञ्चचीए पञ्चचयदस्स सुस्सर-दुस्सराणमेक्कदरे छुदे एक्कवीसाए ङ्काण होदि ।  
 भगा एकारस सदाणि वावप्पाणि [११५२] । पक्खिद्यतिरिक्खान्ण सम्भमगसमाओ

उद्योतोदयके सहित पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चके इक्कीस और छम्बीस प्रकृतियोंवाले  
 उदयस्थान पूर्वोक्त प्रकृतरसे ही कहना चाहिये । पुनः शरीरपर्याप्ति पूर्ण करछनेवाले  
 पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चके एक छम्बीस प्रकृतियोंमें परपात उद्योत और प्रशस्त भ्रमशस्त  
 विहायोपनियोंमेंसे कोई एक इस प्रकार तीन प्रकृतियाँ मिखादेनेसे उमतीस प्रकृतियों  
 वाला उदयस्थान हो जाता है । यहाँ (सुभग-दुर्भग भावेय-भनावेय पशुकीर्ति-भयशुकीर्ति  
 छह सख्याम छह संहनन और प्रशस्त भ्रमशस्त विहायोगति इनके विकस्यसे )  
 भंग पांच सौ छवत्तर होते हैं (५७६) । पुनः इन भगोंको पूर्वोक्त उनतीस प्रकृतियोंवाले  
 उदयस्थान सम्भन्धी भगोंमें मिखादेनेसे उमतीस प्रकृतियोंवाले उदयस्थानोंके सब  
 भगोंका योग ( ५७६+७६= ) ११५२ ग्यारह सौ बावन हो जाता है ।

मानप्राणपर्याप्ति पूर्ण करछनेवाले पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चके पूर्वोक्त उनतीस प्रकृतियोंमें  
 उदयस्थान मिखादेनेपर तीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता है । यहाँ भंग (पूर्वोक्त प्रकृतरसे)  
 पांच सौ छवत्तर हैं (५७६) । पुनः इन भगोंमें पूर्वोक्त तीस प्रकृतियोंवाले उदयस्थान  
 सम्भन्धी ११५२ भंग मिखादेनेपर तीस प्रकृतियोंवाले उदयस्थान सम्भन्धी सब भगोंका  
 योग (११५२+५७६=) १७२८ सत्तरह सौ मूर्दास होता है ।

मानपर्याप्तिको पूर्ण करछनेवाले पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चके पूर्वोक्त तीस प्रकृतियोंमें  
 सुस्वर और दुस्वर इनमेंसे कोई एक मिखादेनेपर इकतीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान  
 हो जाता है । यहाँ भंग (सुभग-दुर्भग भावेय-भनावेय पशुकीर्ति-भयशुकीर्ति छह  
 सख्याम छह संहनन प्रशस्त भ्रमशस्त विहायोगति और सुस्वर-दुस्वरके विकस्यसे )  
 ग्यारह सौ बावन होते हैं ( ११२ ) ।

पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चके समस्त भगोंका योग बार हजार नौ सौ छह होता

सरीरपञ्चमीए पञ्चचयदस्स अपञ्चचमवगिय परघादो दाण्हं विहायमदीज-  
मक्कदरे भ पक्खिय भट्ठावीसाए क्वाण हादि । मगा पण सदा छात्रचरा होंति । ५७१ ।  
आयापालपञ्चमीए पञ्चचयदस्स उस्सामे पक्खिये ष्णुपवीसाए क्वाण होदि । मगा  
ठपिया षण्ण ५७६ । मासापञ्चमीए पञ्चचयदस्स सुस्सर-दुस्सरेसु एकक्कदरे पक्खिय  
वीसाए क्वाण हादि । मगा एकक्करम सदायि बावण्णाहियाणि । ११५२ ।

द्वितीय प्रस्तार ( गाथा २१ ) की अपेक्षा भर्गोके खाननेका यत्र

प्रश्नरूपम १	व्यवसायाद्य २	माराद्य ३	अर्थमायाद्य ४	कीर्तित ५	वस्तुप्रति ६
समस्त ०	व्यग्रोद्य १	स्वाति ११	कुप्यद्य १८	बामन २४	दुग्धद्य ३०
प्राचीर्ति ०	अप्राचीर्ति ३१				
आद्येय ०	अनाद्येय ७२				
सुमग ०	दुर्मग १४४				

सरीरपर्याप्तिको पूर्व करग्रमेवाके पञ्चमिय तिर्यञ्चके पूर्वोक्त छपीस प्रहृतिपौ-  
वाडे उद्यस्थाममस अपर्याप्तको भिक्खुकर भ पग्गात भौर हा विहायोगतिपौमेसे  
कार्य एक इन हा प्रहृतिवाके भिक्खा द्वापर भट्ठारिस प्रहृतिवावासा उद्यस्थान हो जाता  
है । यहाँ मंग ( सुमग दुर्मग आद्येय अनाद्येय प्राचीर्ति अप्राचीर्ति छह सस्वाम छह  
संहनन तथा प्रशस्त अग्रशस्त विहायागति इय भिक्खुवाके भेदसे ) पाँच सौ छपत्तर  
होते हैं ( ५७१ ) ।

मानप्रापपर्याप्तिको पूर्व करग्रमेवाके पञ्चमिय तिर्यञ्चके पूर्वोक्त भट्ठारिस  
प्रहृतिपौमे उद्यस्थाम भिक्खुकर उमतीस प्रहृतिवावासा उद्यस्थान हा जाता है । यहाँ  
मंग उठन ही अर्थात् पाँच सौ छपत्तर ही है ( ५७१ ) ।

मासापर्याप्तिको पूर्व करग्रमेवाके पञ्चमिय तिर्यञ्चके पूर्वोक्त उनतीस प्रहृतिपौमे  
सुस्सर धीन दुस्सरमेसे कार एक भिक्खुवासे तीस प्रहृतिपौवासा उद्यस्थाम होता है ।  
यहाँ ( सुमग-दुर्मग आद्येय-अनाद्येय प्राचीर्ति अप्राचीर्ति छह सस्वाम छह संहनन,  
प्रशस्त-अग्रशस्त विहायागति भौर सुस्सर-दुस्सर इनके भिक्खुवासे ) मंग ग्याह्य सौ बाबन  
हो जात है ( ११५२ ) ।

उज्ज्वलदयमशुचपिदिपतिरिक्त्वा एक्कवीस छम्बीसुदयद्वानाद् पुञ्च व वत्  
 ष्वाद् । पुणो सरीरपञ्चवीए पञ्चचयदस्स परघाहुज्जोवेसु पसत्थापसत्थाम विहाय  
 गदीणमेक्कदरे च पक्खिसेसु एगुणतीसाए द्वाण होदि । मगा पच सदा छावचरा [५७६] ।  
 पुणो एदेसु पढमेगुणतीसाए मोगसु पक्खिचसु सम्भमगपमाणं एक्कवारस सदानि  
 बावण्याणि होदि [११५२] । आणापाणपञ्चवीए पञ्चचयदस्स उस्तासे पक्खिच  
 तीसाए द्वाण होदि । एत्थ पंच सदा छावचरि मगा [५७६] । पुणो एदेसु पढम  
 तीसाए मोगसु छुद्वेसु सचारस सपाद्मद्वीसाई तीसाए सम्भमगा होति [१७२८] ।  
 मासापञ्चवीए पञ्चचयदस्स सुस्सर-दुस्सरणमेक्कदरे छुद्वे एक्कवीसाए द्वाण होदि ।  
 मगा एक्कारस सदानि बावण्याणि [११५२] । पंखिदिपतिरिक्त्वा सम्भमंगसमासो

उद्योतोदयके सहित पञ्चद्विप तिर्यञ्चक इतीस बीर छम्बीस प्रकृतियोंवासे  
 उदयस्थान पूर्वोक्त प्रकारसे ही कहना चाहिये । पुनः शरीरपर्याप्ति पूर्व करछेनेवासे  
 पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चके उक्त छम्बीस प्रकृतियोंमें परघात उद्योत और प्रशस्त-अप्रशस्त  
 विहायोगतियोंमेंसे कोई एक इस प्रकार तीन प्रकृतिपा मिश्रावेनेसे उततीस प्रकृतियों  
 बाधा उदयस्थान हो जाता है । यहाँ (सुमग दुर्भग भावेय मनादेय यथाकीर्ति-अपघ  
 कीर्ति छह संस्थान छह सहनन और प्रशस्त अप्रशस्त विहायोगति इनके विकल्पसे )  
 मग पांच सौ छपत्तर होते हैं (५७६) । पुनः इन भगोंको पूर्वोक्त उततीस प्रकृतियोंवासे  
 उदयस्थान सम्बन्धी भगोंमें मिश्रावेनेसे उततीस प्रकृतियोंवासे उदयस्थानोंके सब  
 भगोंका योग (५७६+७६=) ११-२ ग्यारह सौ बावन हो जाता है ।

आनप्राणपर्याप्ति पूर्व करछेनेवासे पञ्चद्विप तिर्यञ्चके पूर्वोक्त उततीस प्रकृतियोंमें  
 उदयस्थान मिश्रावेनेपर तीस प्रकृतियोंबाधा उदयस्थान होता है । यहाँ भग (पूर्वोक्त प्रकारसे)  
 पांच सौ छपत्तर हैं (५७६) । पुनः इन भगोंमें पूर्वोक्त तीस प्रकृतियोंवासे उदयस्थान  
 सम्बन्धी ११५२ भग मिश्रावेनेपर तीस प्रकृतियोंवासे उदयस्थान सम्बन्धी सब भगोंका  
 योग (११५२+५७६=) १७२८ छत्तरह सौ मझारंस होता है ।

मायापर्याप्तिको पूर्व करछेनेवासे पञ्चद्विप तिर्यञ्चके पूर्वोक्त तीन प्रकृतियोंमें  
 सुस्वर और दुस्वर इनमेंसे कोई एक मिश्रावेनेपर इकतीस प्रकृतियोंबाधा उदयस्थान  
 हो जाता है । यहाँ भग (सुमग दुर्भग भावेय मनादेय यथाकीर्ति-अपघकीर्ति छह  
 संस्थान छह सहनन प्रशस्त अप्रशस्त विहायोगति और सुस्वर दुस्वरके विकल्पसे )  
 ग्यारह सौ बावन होते हैं ( ११५२ ) ।

पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चके समस्त भगोंका योग चार हजार नौ सौ छह होता

चत्वारि सहस्रांश्च यत्र सपार्श्वं छन्देन होइ । ४९०६ ॥ तिरिकुटात्त सन्धमंगसमाप्तो पत्र  
सहस्राणि ब्रह्मणामि । ४९९२ ॥ पंचिन्द्रियतिरिक्तुरूपद्वयाणाम् सामिच्च कालो यं पुत्रं  
यं वचम्बो । यत्रि तीसकृतीसात्र कालो ब्रह्मणेन अंतोब्रह्मचक्रस्मरण अंतोब्रह्मणामि  
तिथि पठिदोवमामि ।

मनुस्मार्थं सामान्य एककारसुदयद्वानामि बीम-एकवीस पञ्चवीस-सम्बीस-  
सप्तवीस ब्रह्मवीस-एगुणतीस-तीस-एकवीस-जक-ब्रह्म होति । २० । २१ । २५ । २६ ।  
२७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । ९ । ८ । सामान्यमनुस्मा तिससमनुस्मा तिससतिसेम  
मनुस्मा चि तिसिहा मनुस्मा । सामान्यमनुस्माय मन्थमात्रे तत्र इमं एककवीसाए  
द्वय— मनुस्सगदि-पंचिन्द्रियजादि-वेदा-कर्मइयमरीर बन्ध गंध-रस-कास मनुस्सगदि

हे ( ५९ ३ ) ।

	उद्योत दहित	उद्योत सहित
२१ मङ्कतिपौबाळे उद्ययस्थान	९	९
२३ " " "	२७	२८
२८ " " "	५७	X
२९ " " "	५७ + ५७	
३ " " "	२२५२ + ७७	
३१ " " "	X	२१ २
२३ २ + २३ ४ = ५९ ६		

पंचेन्द्रिय तिसबाळे उद्ययस्थानोंके स्वामित्व और कासना कथन पूर्वानुसार  
अर्थात् तैसा पाठकोंके उद्ययस्थानोंकी प्रकृपणमें कर माये हैं उही प्रकार करना  
बाहिये । यहां विशेषता इतमी है कि तीस और एकवीस मङ्कतिपौबाळे उद्ययस्थानोंका  
अल्प काळ अन्तर्मुहूर्त और उक्त काळ अन्तर्मुहूर्त कम तीस पस्वोपम है ।

मनुष्योंके सामान्यतः बीस एकवीस पञ्चवीस छप्पीस सत्तारिस ब्रह्मरिस उजतीस  
तीस एकवीस भी और बाळ मङ्कतिपौबाळे म्यारह स्थान होते हैं । २ । २१ । २५ । २६  
२७ । २८ । २९ । ३ । ३१ । ९ । ८ ।

मनुष्य तीन प्रकारके हैं— सामान्य मनुष्य विशेष मनुष्य और विशेष विशेष  
मनुष्य । सामान्य मनुष्योंके कथनमें यह प्रथम एकवीस मङ्कतिपौबाळा उद्ययस्थान है—  
मनुष्यगति' पंचेन्द्रिय जाति' शीतल' और धर्म' शरीर बर्ण' गंध' रस स्वर्ण'  
मनुष्यगतिमाथोप्यानुपूर्वी' मनुष्यकमुक बस' बाहर पर्याप्त और अपर्याप्तमैसे

पाओग्गापुपुम्भि मगुठगलहुग-रुम-बादर पञ्चघापञ्चघाणमेक्कदर थिराथिरं सुमासुम सुमग-सुमगाणमेक्कदर आदेज्ज-अपादज्जाणमेक्कदरं जसक्किं अजसक्किं पीप्पमेक्कदरं थिमिण्णाम च एदासिं पयवीणमेक्कसुण्यद्वानु । पञ्चत्तठदएण भइ मगा, अपजत्त-उदएण एक्को, वेसिं समासो णव । ९ । गहिदसररीस्स मजुस्सापुपुम्भिमदमेक्कम ओरालियसररी-ससठ्ठामामेक्कदरं ओरालियसररीअंगोवग छप्प संभज्जाणमेक्कदर उवपाद पचेयसररी च वेसुण पक्खिंसे छम्बीसाए इवमं होदि । मगा एक्कारयणविसदमेचा [ २८९ ] । सररीपञ्चत्तीए पञ्चत्तयदस्स अपज्जत्तमवणिय परपाद पसत्थापसत्तविहाय गदीप्पमेक्कदर च वेसुण पक्खिंसे अट्ठावीसाए इवमं होदि । मगा चउवीसणसदमेचा [ ५७६ ] । आपापापज्जधीए पज्जत्तयदस्स उस्सासं वेसुण पक्खिंसे एगुणवीसाए इवमं होदि ।

कोई एक स्थिर" अस्थिर" शुभ" अशुभ" सुमग और दुर्मगमेंसे कोई एक आदेय और अनादेयमेंसे कोई एक पशकीर्ति और अपशकीर्तिमेंसे कोई एक और निर्माण" इन प्रकृतियोंका एक उदयस्थान होता है। यहाँ पर्याप्तोदय सहित (सुमग दुर्मग आदेय अनादेय और पशकीर्ति अपशकीर्तिके विश्वस्योसे) भाठ भंग होते हैं। अपर्याप्तोदय सहित एक ही भंग है (क्योंकि सुमग आदेय और पशकीर्तिके साथ अपर्याप्तका उदय नहीं होता)। पर्याप्त और अपर्याप्तके भंगोंका योग हुआ भी (८+१=९)।

शरीर प्रद्वानु कदमेबाळे मनुष्यके पूर्वोक्त इन्हीं प्रकृतियोंमेंसे आनुपूर्वीको छोड़कर भौतिकशरीर छह संस्थानोंमेंसे कोई एक भौतिकशरीरोंमेंसे छह संहननोंमेंसे कोई एक, उपघात और प्रत्येकशरीर इस प्रकार छह प्रकृतियों मिळावेनेपर छम्बीस प्रकृतियोंबाळा उदयस्थान हो जाता है। यहाँ भंग (पर्याप्तक उदय सहित सुमग दुर्मग आदेय अनादेय पशकीर्ति अपशकीर्ति छह संस्थान और छह संहननके विश्वस्योसे २×२×२×२×२=२८८ और अपर्याप्तोदय सहित भंग १ इस प्रकार) दो सी गवासीं होते हैं (२८९)।

शरीरपर्याप्ति पूर्ण कदमेबाळे मनुष्यके पूर्वोक्त छम्बीस प्रकृतियोंमेंसे अपर्याप्तको छोड़कर उपघात तथा प्रदास्त और अपप्रदास्त विहायगणितियोंमेंसे कोई एक, देखी दो प्रकृतियोंको मिळावेनेसे अगुणस प्रकृतियोंबाळा उदयस्थान होता है। यहाँ भंग (सुमग दुर्मग आदेय अनादेय पशकीर्ति-अपशकीर्ति छह संस्थान छह संहनन और प्रदास्त-अप्रदास्त विहायगणित, इनके विश्वस्योसे २×२×२×२×२=) ७६ पाँच सी उपत्तर या भौवीस कम छह सी होते हैं।

मानमावापयाप्ति पूर्ण कदमेबाळे मनुष्यके पूर्वोक्त अगुणस प्रकृतियोंमें उच्छ्वासको केकर मिळावेनेसे अनगीस प्रकृतियोंबाळा उदयस्थान होता है। यहाँ भंग

चत्वारि सहस्राणि यव सयाश्छन्देषु होइ । ४९ ६ । तिरिकुखान सध्वमंगसमासो पच सहस्राणि अङ्गुष्ठाणि । ४९९२ । पंचिन्द्रियतिरिक्तसुदयङ्गाणां सामिच कसो च पुत्रं च यचन्वो । नचरि तीसेककलीतानं काखे नहन्नेज अंतोसुदुचसुचकस्मेण अंतोसुदुष्ठाणि तिष्णि पल्लिदोवमाणि ।

मनुस्सार्गं सामण्येय एककारसुदयङ्गाणि बीस-एकबीस-पचबीस-छप्पीस सचाबीस अङ्गुबीस-एगूबतीस-तीस-एकचीम यव अङ्गु होति । २० । २१ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । ९ । ८ । सामण्यमनुस्सा विससमनुस्सा विससविसस मनुस्सा पि तिबिहा मनुस्सा । सामण्यमनुस्सार्गं मण्यमाये उत्थ इम एककबीसाए ङ्गाण— मनुस्सगदि पंचिन्द्रियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-बण्ण-ईव-रस फास मनुस्सगदि

हे ( ४९ १ ) ।

	अघात रहित	अघात सहित
२१ प्रकृतियोंवाले उद्यमस्थान	९	९ । पूर्व अंगोंके ही समाप्त होनेसे
२१ " " "	२८९	२८९ । इन्हें नहीं जोड़ा गया ।
२८ " " "	५७१	X
२९ " " "	५७१ + ५७१	
३० " " "	११५२ + १७१	
३१	X	११ २
२१ ९ + २१ ४ = ४९०६		

पंचेन्द्रिय तिर्यक्वाके उद्यमस्थानोंके स्वामित्व और काखवा कचन पूर्वानुसार अघात कैसा आरकियोंके उद्यमस्थानोंकी प्रकृतियोंके कर माये हैं उसी प्रकार करजा आदिये । यहाँ विशेषता इतनी है कि तीस और एकतीस प्रकृतियोंवाले उद्यमस्थानोंका अण्य काक अन्तर्मुहूर्त और उद्गृह काक अन्तर्मुहूर्त कम तीन पर्योपम है ।

मनुष्योंके सामान्यता बीस इक्कीस पचीस छप्पीस सचाईस अङ्गुईस बलतीस तीस इक्कीस नौ और आठ प्रकृतियोंवाले ग्यारह स्थान होते हैं । १ । २१ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३१ । ९ । ८ ।

मनुष्य तीन प्रकारके हैं— सामान्य मनुष्य विशेष मनुष्य और विशेष विशेष मनुष्य । सामान्य मनुष्योंके कचनमें यह प्रथम इक्कीस प्रकृतियोंवाला उद्यमस्थान है— मनुष्यगति' पंचेन्द्रिय जाति' तैजस' और काम्य' शरीर बर्ण' रंग्य रस स्वर्ण' मनुष्यगतिप्राप्तोभ्यानुपूर्वी' जगुम्मसुख' अक्ष' बाह्वर' पर्याज और अयपर्याप्तमेंसे

सुस्तरे पक्खिणे एगुणवीसाए द्वाण होदि । मगो एक्को [ १ ] । सन्धमंगसमासो चत्तारि' [ ४ ] ।

विसेसविसेसमणुस्साण पणुवीस मोत्तुण ढस उदयद्वाणाणि होति । २० । २१ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । ९ । ८ । मणुस्सगदि पक्खियिजादि तेञ्जा-क्कम्मइयसरि-वण्ण गघ-रस फास-अगुठअलहुअ-त्तस-बादर-पन्जत्त-भिराभिर सुमासुम-सुमग-आदेञ्ज-असक्खिणि णिमिणयामाणि एदासिं वीसण्हं पयडीण पदरलोक्कपूरणगद् सजोगिकेवलिस्स उदओ होदि । मगो एक्को [ १ ] । अदि तित्ययरो तो तित्ययरोदएण एक्कवीसाए द्वाण होदि । मगो एक्को । क्काड गदस्स एदाओ च्च पयडीओ । णवरि आराडिपसरि-समचठरसठाम । तित्ययरुदपभिरिहियाण छप्प संठाणाणमेक्कदर् ओरा डियसरि-अगोर्ग-बन्धरिसइसबडप-उत्तमाद् पचेयसरि च पेत्तुण छम्मीसाए वा सत्त

सुस्तर निष्ठावेमेपर अनर्तास प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता है । यहाँ मंग एक है (१) । इस प्रकार विशेष मनुष्यके चारों उदयस्थानों सम्बन्धी सप्त मंगोंका याग चार हुआ (४) ।

विशेष विशेष मनुष्योंके पूर्वोक्त ग्यारह उदयस्थानोंमेंसे पचीस प्रकृतियोंवाले एक उदयस्थानको छोड़कर दोष दश उदयस्थान होते हैं । २० । २१ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । ९ । ८ । मनुष्यगति' पक्खियिजाति' 'तठस' और 'कामपयशरीर' 'बर्ण गंध' रस, स्पर्श' अगुठअणु' 'त्रस' 'बादर' 'पर्याप्त' 'स्थिर' 'अस्थिर' 'सुम' 'असुम' 'सुमग' 'आवेय' 'पशकीति' और 'मिर्माण' इन बीस नामकमें प्रकृतियोंका उदय प्रसर और लोकपूरण समुदात करनेवाले सयोगिकेवलीके होता है । यहाँ मंग एक है (१) ।

यदि वह सयोगिकेवली तीर्थकर हो तो पूर्वोक्त बीस प्रकृतियोंके अतिरिक्त तीर्थकर प्रकृतिके उदय सहित एकीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता है । मंग एक (१) ।

कपाट समुदात करनेवाले विशेषविशेष मनुष्यके भी ये ही प्रकृतियाँ उदयमें आती हैं विशेषता केबल यह है कि उनके औदारिकशरीर और समचतुरासंस्थान होता है । तीर्थकर प्रकृतिके उदयसे रहित जीवोंके छह सस्थानोंमेंसे कोर एक औदारिक शरीरानुपोपांग बड्ढपमसात्तसइत्तम उपमात् और प्रत्यकशरीर, इन प्रकृतियोंके ग्रहण करनेमेंसे छम्मीस या चत्तारिस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान हो जाता है । यहाँ मंग छम्मीस प्रकृतियोंवाले उदयस्थानमें छहों संस्थाओंके विकल्पसे छह होंगे और



मंगल सप्तम्या चैव | ५७१ | । मासापञ्चमीय पञ्चम्यदस्त सुस्वरद्वयस्वरत्वेककदरे  
पक्षित्ते चीसाय द्वायं होदि । मंगो अद्द्वलीध्वजवरमसदमेवा | ११५२ | ।

संपदि आहारसरीरोद्दृश्लार्ण विमेषमप्रुस्माद्य मन्ममाद्य सति पञ्चमीस-सचाबीस-  
अद्द्वलीस-पगुणतीस चि अचारि उदयद्वाद्याणि । २५ । २७ । २८ । २९ । मनुस्समदि  
पक्षिदियवादि आहार-सत्रा-कम्मइपसरीर-समचउरससद्यज आहारसरीर-मगोबंग-वन्ध-गो-  
रस-काम अगुरुअलङ्क प्र उवपाद-उस-बादर प-अच-पचैयसरीर विराभिर-सुमामुम सुमम-  
आदन्म जमक्षिचि मिमिजगामाणि एदांसि पञ्चमीसपपञ्चमीमेककमुदयद्वाण । मंगो  
एकद्वे | १ | । सरीरपञ्चमीय पञ्चम्यदस्त परपाद-पसतबनिहापगदीसु पक्षित्तासु  
सचाबीसाय द्वायं होदि । मंगो एकद्वे | १ | । आणापापप-अचमीय पञ्चम्यदस्त उस्साधे  
संछुद्धे अद्द्वलीसाय द्वायं होदि । मंगो एकद्वे | १ | । मासापञ्चमीय पञ्चम्यदस्त

पूर्वोक्त प्रकार पांच सी छयसर ही हैं ( ५७१ ) ।

मासापर्याप्ति पूर्व करधमेवाक मनुष्यके पूर्वोक्त उबतीस प्रकृतियोंमें सुस्वर और  
दुस्वरमें करी एक मित्राक्षेभपर तीस प्रकृतियोंवाला उदयस्थान होता है । यहाँ मंग  
( पूर्वोक्त विकल्पके अतिरिक्त सुस्वर दुस्वरके विकल्पसे २x२x२x२x२x२x२= ) ११५२  
ध्याएँ ही जानन या मङ्गलासीस कम बारह सी है ।

अब आहारकशरीरके उदयवाक विशेष मनुष्यके उदयस्थान कहते हैं । उनके  
पर्याप्त सप्तारिस अद्द्वीस और उमतीस प्रकृतियोंवाक बार उदयस्थान होते हैं ।  
१- २७ । २८ । २९ । मनुष्यगति' पंचाश्रिये जाति आहारके' तैजस' और काम'क  
शरीर ममबभुपकसंस्थान' आहारकशरीरतंगोपांग' बर्ण' गघ रस स्वर्ण'  
अगुस्सपुक्क' उपपात' बस' बाद्' पर्याप्त' मत्पेकशरीर' रियर' अस्थिर'  
शुभ' अशुभ' सुमम' मायेप' पञ्चमीति' और निमाज' इन पञ्चस प्रकृतियोंका  
एक उदयस्थान होता है । यहाँ मंग एक ही है ( १ ) ।

शरीरपर्याप्ति पूर्व करधमेवाक विशय मनुष्यके पूर्वोक्त पर्याप्त प्रकृतियोंमें  
परपात और प्रशस्तविहायांगति मित्राक्षेभे सप्तारिस प्रकृतियावाका उदयस्थान हो  
जाता है । यहाँ मंग एक है ( १ ) ।

मानवात्मपर्याप्ति पूर्व करधमेवाक विशय मनुष्यके पूर्वोक्त सप्तारिस प्रकृतियोंमें  
उदयवाक मित्राक्षेभे अद्द्वीस प्रकृतियोंवाका उदयस्थान होता है । यहाँ मंग एक है ( १ ) ।

मासापर्याप्ति पूर्व करधमेवाक विशेष मनुष्यके पूर्वोक्त अद्द्वीस प्रकृतियोंमें

एकधीसपयदीणं णामणिदेसो धीरद- मणुस्सगदि'-पचिदियजादि भोराणिय-  
 तजा-कम्मइयसरीर समचउरससरीरसठाण भोराणियसरीरमगोवंग-भन्जरिसहसपढण-बण्ण  
 गध-रम फस अणुठअलहुअ उअघाद-परघाद उस्साम-पसस्यविहायगदि-उअ-भादर-पज्जच  
 पचयसरीर पिराधिर सुहासुह सुमग-सुस्सर आदेज्ज असकिचि-पिमिण-तिन्धपराणि चि  
 एदाओ एअकधीसपयदीआ उदेति तित्यपरस्स । एदस्स काळा अहण्णेण वासपुअच ।  
 इदो ? तित्यपरोदइन्त्तसजोगिविणपिहारकाठस्स मअज्जइण्णस्स भि वासपुअचादो हेइदो  
 अणुअत्तमा । उअकम्मोअ अंतोसुदुअअमहिअगन्नादिअह्वअस्सेणूणा पुअअदेदी । सेसाण  
 द्वाणाण काळा जापिदण वअअो ।

अजोगिमपअत्तस्स मण्णमाणे— मणुस्सगदि-पचिदियजादि-उअ-भादर-पज्जच  
 सुमग आदेज्ज अअकिचि तित्यपरमिदि एदाओ अ । मंगो एअओ [१] । तित्यपर  
 विरहिदाओ अह्व । मगो एअओ [१] । मणुस्साण मअअमंगममाओ वधीअणसचावीस

उअ तीर्थकर' उअयमं अानयाही इअतीस अहृतिपोंका नामनिदेस करत ई—  
 मनुअ्यगति' पअअियजाति भौअरिअ' तीअस' भौर कामण घारीर', समअणुरअ  
 संअ्याम' आअरिअघारीराणोपांग अज्जअअमनाअअअहनम' अणं, मअ' एअ'  
 अण' अणुरकअणु' अअघात' परअ्यात' अअअ्यास' अअस्तयिहापोगति अस'  
 भादर' अयांत अत्यकाटीर' हियर अस्थिर अुअ अणुअ' सुमग सुअर'  
 भाअय' अराकीरि' निमाण भौर तीर्थकर' ये इअतीस अहृतिपों तीर्थकर उअयमं  
 आती ई । इस उअयअ्यानका अअअयकाम अणुअयअय हे अयोकि तीर्थकर अहृतिक  
 उअयअ्या अयागि अिनअ विहारकाल कमअ कम अानपर मी अणुअयअयम मीअ नहीं  
 पाया जाता । इस उअयअ्यानका अहृअ काम अगतअुअरुअंअ अधिक अर्यम अेकर आउ  
 अरं हीन एअ अयअ्यादि ई । अणु अयअ्यामोंका कास अानकर कहमा पाहिअे ।

अअ अयागि अणुअयअये उअयअ्यान कहत ई— मनुअ्यगति' पअअियजाति  
 अस वादर अयांत सुमग' आदेअ अराकीरि' भौर तीर्थकर ए अअ अहृतिपों  
 ही अयागिअयमोंका उअय आती ई । यहाँ अंग एअ ई (१) । इअही भी अहृतिपोंअस  
 तीर्थकर अहृतिस अहित अोनपर आउ अहृतिपोंपासा उअयअ्याम आता ई । यहाँ भी  
 अंग एअ ई (१) ।

मनुअ्योंक उअयअ्यामों अंधधी अमअन अंगोंका अाग अणीस कम अअारंअ रही

१ अणु अणुरकअणु अहृति एअ ।

२ अं अं अय १ ५ १ ५

३ अअअयन अ का अरिअ्याम अेअ अरि अिअेअ । अअअय अ अ अरसा अंग अ अिअेअेअ  
 ए. अ. ५५६

वीसाए वा द्वाभ्य होदि । भगा दोष्ह पि छ एकको । ६ । १ । तिर्ययरुदएभ वा  
अशुदएभ वा ददभदस्स परभाई पमत्पापसत्यविहायमदीगमेककदर च पशूष पक्खिसे  
अङ्गुनीसाए वा एगुगतीसाए वा ठायं होदि । अवरि तिर्ययराण पसत्यविहायगदी  
एकका च उप्पज्जदि । मंगा अङ्गुनीसाए वारस, एगुगतीसाए एकको । १२ । १ ।  
आजापापपन्नघीए पन्नघयदस्स उस्सास पक्खिसे वीसाए एगुगतीसाए वा ठायं  
होदि । भगा एगुगतीसाए वारस, वीसाए एकका । १२ । १ । मासापन्नघाए पन्नघ  
यदस्स सुस्सर-दुस्सरेसु एककदरम्मि पक्खि वीसाए एककतीसाए वा द्वाभ्य होदि ।  
मंगा वीसाए चठीस [२४] । एककतीसाए एकको, तिर्ययराण दुस्सर जप्पमत्त्व-  
विहायगदीयं उदयामावा [१] ।

सचाईस प्रकृतिपौबाळे उदयस्थानम केवळ एक हागा । १ । १ ।

तीर्थेकर प्रकृतिके उदयसे रहित पूर्वोक्त छम्बीस प्रकृतियोंमें परघात और प्रघात  
च अमघास्त विहायोगतिमेंसे कोई एक ककर मिखावनेसे अङ्गुस प्रकृतिपौबाळा तथा  
तीर्थेकर प्रकृतिक उदय सहित सचाईस प्रकृतियोंमें उक्त दो प्रकृतिपौ मिखावनेसे उमतीस  
प्रकृतिपौबाळा संबन्धमुत्पातगत केवळीका उदयस्थान होता है । विशेषता यह है कि  
तीर्थेकरके केवळ एक प्रघास्तविहायोगति ही उदयमें आती है । इस प्रकार अङ्गुस  
प्रकृतिपौबाळे उदयस्थानके ( छह संस्थान और प्रघास्त अमघास्त विहायोगतिके  
बिहस्योंसे ) बाह्य मंग होते हैं और उमतीस प्रकृतिपौबाळे उदयस्थानका बिहस्य  
रहित केवळ एक ही मंग है । ( १२ । १ । )

पूर्वोक्त विशेष-विशेष मनुष्यके आत्मप्राप्त्यर्थात्ति पूर्व करछनेपर उक्त अङ्गुस  
और उमतीस प्रकृतियोंमें उक्त्वास्त मिखावनेपर क्रमशः उमतीस व तीस प्रकृतियों  
बाळा उदयस्थान होता है । इसके मंग पूर्वोक्तानुसार उमतीस प्रकृतिपौबाळे उदयस्थानके  
बाह्य और तीस प्रकृतिपौबाळे उदयस्थानका केवळ एक है । ( १२ । १ । )

उसी विशेष विशेष मनुष्यके मायापर्वात्ति पूर्व करछनेपर पूर्वोक्त उमतीस व  
तीस प्रकृतियोंमें सुस्वर और दुस्वरमेंसे कोई एक मिखावनेसे क्रमशः तीस और इकतीस  
प्रकृतिपौबाळा उदयस्थान हाता है । तीस प्रकृतिपौबाळे उदयस्थानके मंग ( छह संस्थान  
प्रघास्त-अमघास्त विहायोगति और सुस्वर दुस्वरके बिहस्योंसे ) चौबीस होते हैं ( २४ ) ।  
तथा इकतीस प्रकृतिपौबाळे उदयस्थानका अथ केवळ मात्र एक होता है ( १ ) क्योंकि,  
तीर्थेकरके सुस्वर और अमघास्त विहायोगति ( तथा प्रथम संस्थानको छेड़ दोष पाँच  
संस्थानों ) का उदय नहीं होता ।

सघावीसाए ह्राण होदि । मगो एको [१] । आभापाणपञ्चघीए पञ्चघयदस्स उस्सासो पविट्ठो । साधं अह्वावीसाए ह्राण । मगो एको [१] । भासापञ्चघीए पञ्चघयदस्स सुस्सरे पविट्ठे एगुणवीसाए ह्राण होदि । मगो एको [१] । घ केरचिर ? भासापञ्च घीए पञ्चघयदस्स पटमसमपप्पहुट्ठि आव आउअचरिमसमभो चि । तस्स पमाण जहण्येण अतोमुहुत्तपदसवस्सहस्साभि, उक्कस्सेण अतोमुहुत्तभवेचीससागरोपमाभि । एत्थ सम्भ भगसमासो पंच [५] । चतुग्दिभगसमासो सचसहस्सछस्सदसचरिपमाण होदि [७९७०] ।

तद्वा गिरयगदि-तिरिक्खगदि-मणुस्सगदि-देवगदीणमुदपणेव केरुओ तिरिक्खो

प्रकारतविहायोगति इन बोको मिच्छादमेपर सत्तारिस प्रकृतियोंवाला उच्यस्थान होता है । मंग एक है ( १ ) ।

भागप्राणपर्याप्ति पूर्ण करकेमेघाले देवके पूर्वोक्त सत्तारिस प्रकृतियोंमें उच्यस्थान और प्रविष्ट हो जाता है । उस समय भट्टारिस प्रकृतियोंवाला उच्यस्थान होता है । मंग एक है ( १ ) ।

भापापर्याप्ति पूरा करकेमेघाले देवके पूर्वोक्त भट्टारिस प्रकृतियोंमें सुस्सरके प्रविष्ट हो जानपर उमतीस प्रकृतियोंवाला उच्यस्थान होता है । मंग एक है ( १ ) ।

दुंका—इस उच्यस्थान प्रकृतियोंवाले उच्यस्थानका काल कितना है ?

समाधान—भापापर्याप्ति पूर्ण करकेमेघाले देवके प्रथम समयसे लेकर भायुका अन्तिम समय माने तक इस उच्यस्थानका काल है । उस कालका प्रमाण कमसे कम अन्तर्मुहूर्तस हीन वरा हजार पंच भार अधिकस अधिक अन्तर्मुहूर्त कम तेतीस सागरायमप्रमाण है ।

देवोंके पाँचों उच्यस्थानोंके समस्त भगोंका पाच पांच हुआ ( ५ ) ।

बादों गतियोंके उच्यस्थानोंके भगोंका योग हुआ सात हजार छह सौ सत्तर ( ७९७० ) ।

गति	उच्यस्थान	मंग
मरक	५	५
तिरिक्ख	९	३२+१४+४९=९५
मनुष्य	११	२९१८
देव	५	५
		७९७०

इस प्रकार पूर्ण एक एक गतिके साथ अनेक कमप्रकृतियोंका उच्य पाया जाता है अतएव कबत कबतगतिक उच्यम मारकी जाना है नियोगतिक उच्यम

सदमेघो [ २६६८ ] ।

देवगदीए एककवीम-बंधपीस सचाबीम अह्वाबीस-एगुगतीसउदयह्वाणाभि ह्योति ।  
 २१ । २५ । २७ । २८ । २९ । सग्य इमं एककवीमाए उदयह्वाण देवगदि-पधिदियजादि  
 वेजा-कम्मइपमरीर-बण-गघ-रस फाम देवगदिपाआग्गाणुपुष्पी अगुरुमालहुअ-तस-बादर-  
 प-अच पिराधिर-मुमासुम सुमग आदेअअ अमकिचि-भिमिगमिदि एदासिं पयडीण एकक  
 ह्वाणं । मगा एकक [ १ ] । सरीर गहिदे आणुपुम्भिमवधदूण बेउम्भियसरीर-समपउ  
 रममंटाण-बेउम्भियमरीरअगोबंध-उरपाद-पचयसरीरेसु पविह्नुसु पणुबीसाए ह्वाणं होदि ।  
 मगा एको [ १ ] । सरीरपञ्चपीए पञ्चवयदसस परपाद पसत्पविहायगदीसु पकिउचासु

अर्थान् उर्थास सा अकसठ हाता ई ( १११८ ) ।

	सामान्य	विशेष	वि	वि
१-२ प्रकृतिपौषान् उदयस्थान	x	x	१	
२-२१ " "	९	x	१	
३-२५ " "	x	१	x	
४-२९ " "	२८९	x	+ १	
५-३७ " "	x	१	+ १	
६-२८ " "	५७१	+ १	+ १२	
७-३९ " "	५७१	+ १	+ १+१२	
८-३० " "	११५२	x	+ १+२४	
९-३१ " "	x	x	१	
१०-९ " "	x	x	१	
११-८ " "	x	x	१	
२१ २ + ४ + १२ = ३७				

इयगतिमें ह्योति पथीस सत्तारंस अह्वांस भीर उरतीस प्रकृतिपौषामे पांष  
 उदयस्थान हात ई । उरमें इतीस प्रकृतिपौषामा उदयस्थान इस प्रकार है - इयगति  
 पथेगिअपजाति मैत्रम' भीर अयंथ' शरीर अर्थे मेष' रस अर्या' इयगतिप्रापो  
 ग्यानुपूर्वी अगुदमपुद' अग' बादर' पयान्त' कियट' मरियट' शुभ' अशुभ'  
 सुपग' भादय' पयार्वाति भीर निमान' इन इतीस प्रकृतिपौषा एक उदयस्थान  
 हाता है । भंग एक ई ( १ ) ।

शरीर प्रह्व कालमय इयगतिमें आनुपूर्वीका छाहकर य किचिकिअशरीर सम  
 अनुपपगंध्यात वैकिचिअररीगार्गाग उग्यात भीर अयंथशरीर इन पांष प्रकृतिपौषा  
 शिवाअरार पथीस प्रकृतिपौषामा उदयस्थान हाता है । भंग एक ई ( १ ) ।

शरीरपथीस अर्थे अरसनपास इयक पुरोक्त पथीस प्रकृतिपौषामे परपात भीर

ण, यदि ते सिद्धस्य कारणं तो सञ्चे जीवा सिद्धा होज्ज, तेषिं सम्बन्धिषु संभवो-  
वर्तमा । तन्ना खइयाए लब्धीए सिद्धो होदि चि वेचचं ।

इन्द्रियाणुवादेण एहदिओ वीहदिओ तीहदिओ चउरिंदिओ  
पर्चिंदिओ णाम कधं भवदि ? ॥ १४ ॥

एत्थ पामादिनिवृत्तवे णेगमादिणए ओइयादिमात्रे च भस्मिदूण पुत्रं च  
इन्द्रियस्म चालना कायणा ।

खओवसमियाए लब्धीए ॥ १५ ॥

इहस्स णिगमिदियं । इदो जीवा, तस्स णिग आणानर्यं सूचय अं तमिदियमिदि  
वुत्त होदि । कधमेइन्द्रियत्त खओवसमिय ? उचचे—परिसिदियावरणस्स सम्बन्धादिफरयाण  
संतोवसमेण देसधादिफरयाणमुदएण चक्खु-सोद-पाण-जिर्म्मिदियावरणायं देसधादिफर  
याणमुदयक्खएण तेषिं चेत सतोवसमेण तेषिं सम्बन्धादिफरयाणमुदएण ओ उप्पणो  
जीवपरिणामो सो खओवसमिओ वुचचे । इदो ? पुब्बुत्ताण फरयाण खओवसमेदि

समाधान—नहीं क्योंकि यदि सत्य प्रमेयत्व भादि सिद्धत्वके कारण हैं तब तो  
समी जीव सिद्ध हो जावेगे क्योंकि उनका अस्तित्व तो समी जीवोंमें पाया जाता है ।  
इसलिये शायिक उम्भिते निश्च हाता है ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

इन्द्रियमार्गानुसार एकन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय च पञ्चेन्द्रिय  
जीव कैसे होता है ? ॥ १४ ॥

पहापर नामादि तिस्रोपो नैगमादि नयो और मौवायिकादि भाषोंका भावय  
केकर पूर्वानुसार इन्द्रियकी आलना करना चाहिये ।

आयोपशमिक उम्भिते जीव सिद्ध होता है ॥ १५ ॥

इन्द्रके सिद्धको इन्द्रिय कहते हैं । तात्पर्य यह कि इन्द्र जीव है और उसका  
जो सिद्ध अर्थात् शायिक वा सूचक है वह है इन्द्रिय ।

श्रुका—एकन्द्रियत्व शायोपशमिक किस प्रकार हाता है ?

समाधान—कहते हैं । स्वयंन्द्रियावरण कर्मके सर्वघाती स्वर्धकोंके सत्त्वो  
पशमस उर्धकोंके दशाघाती स्वर्धकोंके उद्वससे, चक्षु, श्रोत्र प्राण और जिह्वा इन्द्रियावरण  
कर्मके दशाघाती स्वर्धकोंके उद्वसससे उर्ध्वी कर्मके सत्त्वोपशमसे तथा सर्वघाती  
स्वर्धकोंके उद्वसस आ जीवपरिणाम उत्पन्न होता है उसे शयोपशम कहते हैं क्योंकि  
वह भाव पूर्वोक्त स्वर्धकोंके सय और उपशम भाषोंसे ही उत्पन्न हाता है । इन्ही जीव

मनुष्यस्तो देवो होदि चि न चडदे ? विसमो उच्यन्तासो । कुदो ? विरयगदिआदिचदुगदि उदयार्थं च सेसकम्मोदयार्थं तत्थ अबिद्यामात्वापुबलमादो । विससे' पयडीए उप्पण्णपढम- समयप्पडुडि भाव अरिमसमओ चि वियमेण उदओ होदुम अप्पिदगई मो, चूच अण्णात्थ उदयामावणियमो दिस्सइ तिस्से उदएण केरइओ तिरिक्खो मनुस्सो देवो चि विदेसो कीरेदे अण्णाहा मज्जमहुत्थादो ।

सिद्धिगदीए सिद्धो णाम कध भवदि ? ॥ १२ ॥

एत्थ वि पुब्बं च णय भिक्खेओ अस्सिदुव चालया कायन्वा उदयादिपचमाने वा ।

स्वइयाए लखीए ॥ १३ ॥

कम्मत्थ विम्मूलखएणुप्पण्णपरिणामो सुओ णाम, तस्स लखीए खइयलखीए सिद्धो होदि । अणो वि सच पमेयत्तादओ क्ख परिणामा मत्थि, तेहि किप्प्य सिद्धो होदि ?

तिर्बन्ध मनुष्यगतिके उदयस मनुष्य और देवगतिके उदयसे देव यह कथन प्रकृत नहीं होता ?

समाधान—यह उच्यन्तास विषय है क्योंकि नारक आदि चार पर्यायोंके प्रातः क्षणमें जिस प्रकार नरकमति आदि चार प्रकृतियोंके उदयका क्रमशा अविनामात्वी सम्बन्ध है वैसा शेष कर्मोंके उदयोंका वहाँ अविनामात्वी सम्बन्ध नहीं पाया जाता । अल्प होनेके प्रथम समयके सप्ताकर पर्यायके अन्तिम समय तक जिस प्रकृतिका नियमसे उदय होकर विवक्षित मतिके सिवाय अन्यत्र उदय न होनेका नियम पाया जाता है वसी कर्मप्रकृतिके उदयसे नारकी तिर्बन्ध मनुष्य और देव होता है ऐसा निर्देश किया गया है । अन्यथा मन्त्रवस्था उत्पन्न हो जावगी ।

सिद्ध गतिमें जीव सिद्ध किस प्रकार होता है ? ॥ १२ ॥

यहां भी पूर्वानुसार मय और भिक्षुओंका आश्रय लेकर आठना करना चाहिये भयवा उदय आदि पांच भावोंके आश्रयसे आठना करना चाहिये ।

ध्यायिक सम्भिसे जीव सिद्ध होता है ॥ १३ ॥

कर्मोंके विमूलक क्षयसे उत्पन्न हुए परिणामको क्षय कहते हैं और उसीकी अर्थि अर्थात् ध्यायिक सम्भिक ज्ञान सिद्ध होता है ।

सुद्ध—सिद्ध गतिमें सत्त्व प्रमेयत्त्व आदि अन्य परिणाम भी तो होते हैं उनसे सिद्ध होना है ऐसा क्यों नहीं करते ?

जीवविवाहणामकम्मवेयणियाण पादिकम्मभवएसो क्खिण्ण हादि ? ण, जीवस्स अणप्पभूद सुमग-दुमगादिपत्तयसमुप्पायणे वात्रदाण जीवगुणविणामयचविराहादा । जीवस्स सुह विणा सिम दुक्खुप्पायय मसादवदणीय पादिबवणमं क्खिण्ण लहदे ? ण, तस्स पादिकम्ममहायस्स पादिकम्मादि विष्ठा मक्क-क्कण्णे अममत्थस्स सदो सय्य पउणी णत्थि ति आणावणहं सम्भवएमाकरणादा ।

सत्य भादीणमशुभागां दुविहो सम्भवादा आ देसपादा आ ति । बुद्धं च—

मन्नाकर्णाय पुग उक्खस्स हाप्ति गारुगसमाणे ॥

हेहा देसाग्ण सम्भाग्ण च उक्खिन्ति ॥ १४ ॥

प्रश्न—जीवविवाही नामकम एव बहनीय कर्मोक्तो धातिया कर्म पर्यो नहीं माना ?

समाधान—नहीं माना क्योंकि, उनका काम भवागममृत सुमग दुर्मग आदि जीवकी पर्याय उत्पन्न करना है जिससे उन्हें जीवगुणविनाशक माननेमें पिटोच उत्पन्न होता है ।

प्रश्न—जीवक सुगवा मय करक बुग उत्पन्न करनेवाक मसाला बहनीयका धातिया कर्म नाम पर्यो नहीं दिया ?

समाधान—नहीं दिया क्योंकि वह धातिया कर्मोका सहायकमात्र है भीर धातिया कर्मोके बिना अपना कय करनेमें असमथ तथा उसमें प्रवृत्ति-रहित है । इसी बातका पतसानके सिध भमाठा बहनीयका धातिया कर्म नहीं कहा ।

इन कर्मोंमें धातिया कर्मोका अनुभाग दो प्रकारका है— सर्पधातक भीर द्वाधातक । कहा भी है—

धातिया कर्मोका आ अनुभागशक्ति मता द्वाग् मस्सि भीर दील समान बही गयी है उनमें द्वाग्दुष्पम ऊपर मस्सि भीर गीग् तुस्य मागोंम ता उरट्ट मवापरणीय गति पार जाती है किन्तु द्वाग्मम भागक लोचक अनगितम भागमें ( य उनसे नीच मय सलानुस्य मागमें ) द्वाधातक गति है तथा ऊपरक भमस्त बहुभागोंमें सर्पधातक शक्ति है ॥ १४ ॥



उप्यम्बचादो । तस्स जीवपरिवामस्स एहदियमिदि सभ्या । एदेव एककेण इदियय ओ जानदि पस्सदि सेवदि जीवो सो एहदियो गाम ।

सम्बपादी-वेसपादिसं पाम किं ? पुषदे-दुभिहाणि कम्माभि पादिकम्माणि अपादिकम्माणि वेव । गत्थावरण-उसपावरण-मोहणीय अंतरायाणि पादिकम्माणि; वेद वीय-आउ-वाम-गादाणि अघादिकम्माणि । पापानरनादीणं कर्म पादिवषदेसा ? न, केवलपाप ईसण-सम्मच-वरिच-भीरियाणमपेयमपभिण्णाय जीवगुणाय विराहित्तणेण तेसिं पादिवषदेसादो । संसकम्मार्णं पादिवषदेसो किम्प होदि ? न, तेसिं जीवगुणविनासण सचीप जमावा । कुदो ? न आउअ जीवगुणविनासय, तस्स मरणात्तम्मि वावारादो । य गोदं जीवगुणविनासयं, तस्स गीबुचकुठसमुप्यापणम्मि वावारादो । य खेच पोम्मसविवाहणामकम्माइ पि, तसिं खेचादिसु पडिबद्दणमप्यात्थ वावाराविरोहादो ।

परिवामको एकेन्द्रिय संज्ञा है ।

इस एक इन्द्रियके द्वारा जो जानता है देखता है सेवन करता है वह जीव एकेन्द्रिय होता है ।

प्रश्न—संबंधातित्व और वेशपातित्व किसे कहते हैं ?

समाधान—कहते हैं । कर्म दो प्रकारके हैं पातिया कर्म और अपातिया कर्म । जानावरण बर्हाजानरण मोहमीय और अन्तराय ये चार पातिया कर्म हैं । तथा वेदनीय मायु वायु और गोच ये चार अपातिया कर्म हैं ।

प्रश्न—जानावरण भादिको पातिया कर्म क्यों नाम दिया है ?

समाधान—क्योंकि केवलजान केवलवर्दीम सम्यक्त्व चारिच और वीर्य वर्धात् मारमाकी शक्ति रूप जो धनेक मेदोंमें मिच जीवगुण हैं उनके उक्त कर्म विराधी वर्धात् पातक होते हैं और इसीलिये वे पातिया कर्म कहलाते हैं ।

प्रश्न—( जीवगुणांक विराधक तो होय कर्म भी होते हैं अतएव ) होय कर्मोंको भी पातिया कर्म क्यों नहीं कहत ?

समाधान—होय कर्मोंको पातिया नहीं कहते क्योंकि उनमें जीवके गुणोंका विनाश करनेकी शक्ति नहीं पाई जाती । जैसे मायु कर्म जीवके गुणोंका विनाशक नहीं है क्योंकि उसका काम तो मर घारण करानेका है । पोष भी जीवगुणविनाशक नहीं है क्योंकि उसका काम मीच और उद्य कुछ उत्पन्न करना है । श्लेषविषाकी और पुङ्गवविषाकी नामकर्म भी जीवगुणविनाशक नहीं हैं क्योंकि उनका मरणात्थ वषापोष क्षत्र और पुङ्गवसे होनेके कारण धम्यत्र उनका प्यापार मावनमें विरोध पाता है ।

कस्यएण तेसिं चैव सतोवसमेण अणुदओवसमेण वा सव्वपादिफइयाणमुदएण पाणिं  
दियमुप्पज्जदि । स चैव घाणिंदिय पास-धिक्किंदियाविणामावेण तेइदियज्जादिणामकम्मो  
इयाविणामावेण वा सेइदियो णाम । तेम जुचो जीवा वि सेइदियो होदि । एदेण करणेण  
उओवसमियाए उट्ठीए उट्ठीआ होदि चि सुचे उचं ।

पाणिंदियावरणस्स सव्वपादिफइयाणं सतोवसमेण देसपादिफइयाणमुदएण  
चकसु षाण धिक्किंदियावरण्यण सव्वपादिफइयाणमुदयकसएण तेसिं चैव सतोवसमेण  
अणुदओवसमेण वा देसपादिफइयाणमुदएण मोइदियावरणस्स देसपादिफइयाण उदय  
कसएण तेसिं चैव सतोवसमेण अणुदओवसमेण वा सव्वपादिफइयाणमुदएण चक्खिं  
दिय उप्पज्जदि । कामिंज्जिमा घाणिंदियाविणामावेण चक्खिंदिय ( चउरिंदिय ) ति  
मण्णदि । तेण जुचो जीवो चउरिंदियो । चउरिंदियज्जादिणामकम्मोदयाविणामावेण वा  
चकसु चउरिंदिय ति चत्तन्व । कामिंदियादिचउदि इदिएदि जुचो चि वा जीवो  
चउरिंदियो णाम । तेण कारणेण उओवसमियाए उट्ठीए चउरिंदिया होदि चि उच ।

कामिंदियावरणस्स सव्वपादिफइयाणं सतोवसमेण देसपादिफइयाणमुदएण  
चदुण्णमिंदियाण सव्वपादिफइयाणमुदयकसएण तेसिं चैव सतावसमेण देसपादिफइयाण

तया सर्वपाठी स्वर्षकोंके उदयस प्राणन्द्रिय उत्पन्न होती है । वही प्राणन्द्रिय स्वर्ष  
और जिह्वा इन्द्रियोंकी अधिनामायी भयषा भीन्द्रिय ज्ञाति नामकमोदयकी अधिनामायी  
हानसं तृतीय इन्द्रिय कहलाती है । उस इन्द्रियसे पुनः जीव मी भीन्द्रिय होता है ।  
इसी कारणसे सायापशमिक अधिभक्त द्वारा जीव भीन्द्रिय हाता है ऐसा कदा कदा  
गया है ।

स्वर्षांन्द्रियावरणक भयषाती स्वर्षकक सरवोपनाम य द्वापाती स्वर्षकोंक  
उदयस; अस्तु प्राण और जिह्वा इन्द्रियावरणोंक सपपाती स्वर्षकोंके उदयससे य  
उर्दीक सस्वोपनामस भयषा अनुदयापनामसे एव द्वापाती स्वर्षकोंक उदयस; तथा  
भोत्रोन्द्रियावरणक ब्रह्मपाती स्वर्षकोंके उदयससे य उर्दीक सरवोपनामस भयषा  
अनुदयोपनामसे एव सर्वपाती स्वर्षकोंके उदयस अस्तु इन्द्रिय उत्पन्न होती है । स्वर्षा जिह्वा  
और प्राण इन्द्रियोंकी अधिनामायी हानस अस्तु इन्द्रिय अस्तु इन्द्रिय कहलाती है । उस  
अस्तु इन्द्रियसे पुनः जीव चतुरिन्द्रिय हाता है । भयषा चतुरिन्द्रिय ज्ञाति नामकमो  
दयकी अधिनामायी हानस अस्तु चतुरिन्द्रिय ब्रह्मा यादिय । स्वर्षांन्द्रियादि वार  
इन्द्रियोंस पुनः हमेक कारणे जीव चतुरिन्द्रिय कहलाता है । इमी कारणे भायोपशमिक  
स्मिभक्त द्वारा जीव चतुरिन्द्रिय हाता है ऐसा कदा गया है ।

स्वर्षांन्द्रियावरणक भयषाती स्वर्षकोंके सरवोपनाम य द्वापाती स्वर्षकोंके  
उदयसे; वार इन्द्रियोंके भयषाती स्वर्षकोंके उदयस और उर्दीके सस्वोपनामस तथा

गात्रात्मणश्चतुष्क दस्युत्तिगमंकराद्या पञ्च ।

ता होति देसपात्री सञ्जसणा गोकस्ताया यं ॥ १५ ॥

फासिदियावरणसम्बन्धादिफर्याणमुदयकल्पण तसि चैव संतोषसमेन अशुद्  
 ओषसमेन वा देसपादिफर्याणमुदयण विभिन्मदियावरणसस सम्बन्धादिफर्याणमुदयकल्पण  
 तसि चैव सतावसमेण अशुद्ओषसमेण वा देसपादिफर्याणमुदयण चकसु-सोद् पाकि-  
 दियावरणाञ्च देसपादिफर्याणमुदयकल्पण तसि चैव संतोषसमेन अशुद्ओषसमेन वा  
 सञ्जपादिफर्याणमुदयण सञ्जोषसमियं विभिन्मदिय सङ्गुप्पग्गदि । पस्मिदियाविजा-  
 मानेष सं चैव विभिन्मदियं वीईदियं ति मण्णदि वीईदियवादिधामकम्माद्याविणामाबादो  
 वा । तेष वेईदियं वेईदियं वा श्रुतो वेण वीईदियो गाम तेण सञ्जोषसमियाए सञ्जीए  
 वीईदिया ति सुत्ते मविदं ।

पस्मिदियावरणसस सम्बन्धादिफर्याणं संतोषसमेण देसपादिफर्याणमुदयण  
 विभिन्मा-पाकिदियावरणार्णं सम्बन्धादिफर्याणमुदयकल्पण तसि चैव संतोषसमेण अशुद्  
 ओषसमेण वा देसपादिफर्याणमुदयण चकसु-सादिदियार्णं ( देसपादि ) फर्याण उदय

मति श्रुत मवाधि और मनापर्यय य चार ज्ञानावरण, अणु, मण्डल और मवाधि  
 य तीन वर्तनावरण हान छान भोग उपभोग और वीर्य ये पाँचों अन्तराण तथा  
 संश्रयकवतुष्क और नव बाह्याण ये ठेरह मोहबीज कर्म देहापाती होते हैं ॥ १५ ॥ ]

स्पर्शोन्मिद्यावरणके सर्बपाती स्पर्शकोंके उदयसप्तसे उर्ध्वके सत्त्वोपशमसं  
 मयवा अनुदयोपशमसे और देहापाती स्पर्शकोंके उदयसे, त्रिष्वेन्मिद्यावरणके सर्बपाती  
 स्पर्शकोंके उदयसप्तसे उर्ध्वके सत्त्वोपशमसे मयवा अनुदयोपशमसे और देहापाती  
 स्पर्शकोंके उदयसे, एवं अणु, ध्रोव व ज्ञानेन्मिद्यावरणके देहापाती स्पर्शकोंके उदयसप्तसे  
 उर्ध्वके सत्त्वोपशम मयवा अनुदयोपशमसे और सर्बपाती स्पर्शकोंके उदयसे ज्ञानोपश-  
 मिक त्रिष्वेन्मिय उदय होती है । स्पर्शोन्मिद्या मविनामावी मयवा त्रीन्मिपनामकर्मों  
 उदय मविनामावी हानसे त्रिष्वेन्मियको द्वितीय इन्मिय कहते हैं वृत्ति उदय द्वितीय  
 इन्मियसे मयवा वा इन्मियोसं युक्त हानके कारण जीव त्रीन्मिय होता है इसलिये  
 ज्ञानोपशमिक त्रिष्वेसे जीव त्रीन्मिय होता है देसा सूत्रमें कहा गया है ।

स्पर्शोन्मिद्यावरणके सर्बपाती स्पर्शकोंके सत्त्वोपशमसं और देहापाती स्पर्शकोंके  
 उदयसे, त्रिन्मा और ज्ञानेन्मिद्यावरणोंके सर्बपाती स्पर्शकोंके उदयसप्तसे उर्ध्वके सत्त्वो  
 पशमसे मयवा अनुदयोपशमसे तथा देहापाती स्पर्शकोंके उदयसे, एवं अणु और ज्ञाने  
 म्मिद्योके देहापाती स्पर्शकोंके उदयसप्तसे उर्ध्वके सत्त्वोपशमसं मयवा अनुदयोपशमसं

कृष्णण तेसिं चैव सतोवसमेण अणुदओवसमेण वा सम्बधादिफह्याणमुदएण भाणिं  
दियमुप्पज्जदि । त चैव भाणिंदिय पास जिक्किमदियाविणामावणेण तेइदियजादिणामकम्मो  
दयाविणामावणेण वा तइदियो णाम । तेण जुचो जीवो वि तेइदियो होदि । पदेण कारणेण  
खओवसमियाए ल्हीए तेइदियो होदि चि सुचे उच्चं ।

पासिंदियावरणसस सम्बधादिफह्याणं सतोवसमेण देसधादिफह्याणमुदएण  
चक्खु पाण जिक्किमदियावरणाण सम्बधादिफह्याणमुदयकृष्णण तेसिं चैव सतोवसमेण  
अणुदओवसमेण वा देसधादिफह्याणमुदएण सोइंदियावरणस्म देसधादिफह्याण उदय  
कृष्णण तेसिं चैव सतोवसमेण अणुदओवसमेण वा सम्बधादिफह्याणमुदएण चक्खि  
दियं उप्पज्जदि । फास जिक्का भाणिंदियाविणामावणेण चक्खिदिय ( चउरिंदिय ) ति  
मप्पदि । तेण जुचो जीवो चउरिंदियो । चउरिंदियजादिणामकम्मोदयाविणामावणेण वा  
चक्खु चउरिंदिय ति चक्खु । फासिंदियादिचउहि इदिएहि जुचो चि वा जीवो  
चउरिंदियो णाम । तेण कारणेण खओवसमियाए ल्हीए चउरिंदियो होदि चि उच्चं ।

फासिंदियावरणसस सम्बधादिफह्याणं सतोवसमेण देसधादिफह्याणमुदएण  
चदुष्णमिंदियाण सम्बधादिफह्याणमुदयकृष्णण तेसिं चैव सतोवसमेण देसधादिफह्याण-

तथा सर्वघाती स्पर्शकोंके उदयसे प्राग्नेन्द्रिय उत्पन्न होती है । वही प्राग्नेन्द्रिय स्पर्श  
और जिह्वा इन्द्रियोंकी मथिनामायी मयथा त्रीन्द्रिय जाति नामकमोदयकी मथिनामायी  
हानेसे तृतीय इन्द्रिय कहलाती है । उस इन्द्रियसे युक्त जीव भी त्रीन्द्रिय होता है ।  
इसी कारणसे सायापशमिक छन्दिके द्वारा जीव त्रीन्द्रिय होता है' ऐसा सूत्रमें कहा  
गया है ।

स्पर्शेन्द्रियावरणके सर्वघाती स्पर्शकोंके सत्त्वोपशम य देशघाती स्पर्शकोंके  
उदयसे, अथु प्राण और जिह्वा इन्द्रियावरणोंके सर्वघाती स्पर्शकोंके उदयसयसे व  
उन्हींके सत्त्वोपशमसे मयथा मनुदयोपशमसे पर्य देशघाती स्पर्शकोंके उदयसे, तथा  
प्राग्नेन्द्रियावरणके देशघाती स्पर्शकोंके उदयसयसे व उन्हींके सत्त्वोपशमसे मयथा  
मनुदयोपशमसे पर्य सर्वघाती स्पर्शकोंके उदयसे अथु इन्द्रिय उत्पन्न हाती है । स्पर्श जिह्वा  
और प्राण इन्द्रियोंकी मथिनामायी हानेसे अथु इन्द्रिय अतुर्य इन्द्रिय कहलाती है । उस  
अथु इन्द्रियसे युक्त जीव अतुरिन्द्रिय हाता है । मयथा अतुरिन्द्रिय जाति नामकमो  
दयकी मथिनामायी हानेसे अथुका अतुरिन्द्रिय कहना चाहिय । स्पर्शेन्द्रियादि चार  
इन्द्रियोंसे युक्त हानेके कारण जीव अतुरिन्द्रिय कहलाता है । इसी कारण सायोपशमिक  
छन्दिके द्वारा जीव अतुरिन्द्रिय होता है' ऐसा कहा गया है ।

स्पर्शेन्द्रियावरणके सर्वघाती स्पर्शकोंके सत्त्वोपशम य देशघाती स्पर्शकोंके  
उदयसे, चार इन्द्रियोंके सर्वघाती स्पर्शकोंके उदयसय और उन्हींके सत्त्वोपशमसे मयथा

सुदृश्यं ज्ञेयं सार्धद्वियमुप्यन्वदि तेन च सुओषसमिष्यं । समषतरिंदियाविद्यामावाशो  
पंचद्वियञ्चाविद्यामकम्भोदयात्रिद्यामावाशो वा तं पंचद्वियं । तेन पंचद्वियं पंचदि  
ईदियदि वा ज्ञेयो जीवो पंचद्विजो याम ।

अस विष्वा-भाष-चक्षु-सोर्द्विद्यावरणाणि पयद्विसमुभिकचपाए जोषइकाणि,  
कच तेमिमिह मिहेसो ? ज, फार्सिद्वियावरणादीण मदिआवरणे अंतम्मावाशे । य च  
पंचद्वियखत्रोवसर्मं ततो समुप्यण्णावाण वा मुष्वा अण्य मदिशाणमतिव चर्षिद्वियावरण  
हितो मदिशाणावरणं पुचभूर्दं होन्व । य च एदहितो पुचभूर्दं ज्येर्द्वियमतिव ज्ञेय  
ज्येर्द्वियणावस्त मदिजावर्णं होज । पार्सिद्वियावरणखत्रोवसमवधिद पोर्द्वियमिदि ततो  
पुचभूर्दं ज्ये ? यदि एषं तो य' ततो समुप्यण्णावर्णं मदिशाण, मदिशाणावरणखत्रोव  
समेणापुप्यण्णावाशे । ततो मदिशाणावावेण मदिशाणावरणस्म वि अभावो होन्व । तम्हा

देशपाठी स्पर्शबोके उत्पन्न सूक्ति धामन्त्रिय उत्पन्न होती है इसीस उस क्षयोपशमिक  
कहा है । शेष चारों इन्द्रियोंकी भविनाभावी होनेस अथवा पंचेन्द्रिय आति नामकमों  
व्यक्ती भविनाभावी होनेसे आदेन्द्रिय पञ्चम इन्द्रिय है । उस पञ्चम इन्द्रियसे अथवा  
पांचों इन्द्रियोंसे युक्त जीव पंचेन्द्रिय होता है ।

प्रश्न—स्पर्श विद्या भाष चक्षु और श्रोत्र इन्द्रियावरणोंका प्रकृतिसमुत्की  
र्तन अधिकारमें तो उपदेश नहीं दिया गया फिर यहां उनका कैसे निर्देश किया  
जाता है ?

समाधान—नहीं स्पर्शेन्द्रियादिक आवरणोंका मतिमावरणमें ही अन्तर्भाव  
होनेसे वहां उनके पृथक् उपदेशकी आवश्यकता नहीं समझी गई । पंचेन्द्रियोंके क्षयोप  
शमको वा उससे उत्पन्न हुए ज्ञानको छोड़कर अन्य कोई मतिज्ञान है ही नहीं जिससे  
इन्द्रियावरणोंसे मतिज्ञानावरण पृथग्भूत होवे । और न इन पांचों इन्द्रियोंसे पृथग्भूत  
नोइन्द्रिय है जिससे नोइन्द्रियज्ञानका मतिज्ञान कहा जा सके ।

प्रश्न—नोइन्द्रियावरणके क्षयोपशमसे उत्पन्न होनेवाली नोइन्द्रिय उक्त पांच  
इन्द्रियोंसे पृथग्भूत ही है ?

समाधान—बहि वेसा है ता उसस उत्पन्न होने बाधा ज्ञान मतिज्ञान नहीं  
होया क्योंकि वह मतिज्ञानावरणके क्षयोपशमसे नहीं उत्पन्न हुआ । इस प्रकार मति  
ज्ञानके समावेशसे मतिज्ञानावरणका भी समाप्त हो जाएगा । इसलिये वहाँ इन्द्रियोंका

छण्णमिदियाण खओवसमां त्तां समुप्पज्जणार्थं वा मदियार्णं, तस्मावरण मदियाणावरण-  
मिदि इच्छिदन्वमण्णहा मदियावरणस्सामावप्पसंगा ।

एइदियादीगमोइओ माओ वचओ, एइदियजादिआदिणामकम्मोदएण एइ  
यादिमापोवठमा । अदि एव व इच्छिदन्वदि तो सओगि अओगिजिणार्थं पंचिदियचं व  
लूमदे, खीणावरणे पचइमिदियाणं खओवसमामाया । व च वेसिं पंचिदियचामाओ,  
पंचिदिएसु समुग्घादपदेण असंखेज्जेसु मागेसु सम्बलगे वा चि सुचविरोहाओ ?

एतय परिहारो वुरुचदे— एइदियादीण माओ ओइओ होदि चेव, एइदियजादि  
आदिणामकम्मोदएण वेमिसुप्पसीदसणाओ । एइहाओ चेव सओगि अओगिजिणाण  
पंचिदियच जुज्जदि चि जीवह्णये पि उववण्य । किंतु सुहावये सओगि अओगिजिणाणं  
सुदणएणांमिदियाण पंचिदियच अदि इच्छिदन्वदि तो ववहारएण वचअं । उ अहा-  
पंचसु जाईसु आणि पठिपइणि पच इदियाणि ताणि खओवसमियाणि चि कउण  
उवयारेण पंच वि जादीओ खओवसमियाओ चि कउ सओगि अओगिजिणाणं खओव

क्षयोपशम भयवा उस क्षयोपशमसे उत्पन्न इत्या ज्ञान मतिज्ञान है और उस्तीका भावरण  
मतिज्ञानावरण होता है, ऐसा मानना चाहिये । अथवा मतिज्ञानावरणके समायका  
प्रसंग भा जायगा ।

शुद्ध—एकेन्द्रियादिको भौतिक माय कहना चाहिये, क्योंकि एकेन्द्रियजाति  
मादिक नामकर्मके उदयसे एकेन्द्रियादिक माय पाये जाते हैं । यदि ऐसा न माना  
जायगा तो सयोगी और भयोगी जिनके पंचन्द्रियमाय नहीं पाया जायगा क्योंकि,  
उनके भावरणके क्षीण हो जानपर पांचों इन्द्रियोंके क्षयोपशमका भी समाय हा गया  
है । और सयोगी भयोगी जिनके पंचेन्द्रियत्वका समाय होता नहीं है क्योंकि वेसा  
माननेपर पंचन्द्रिय जीवोंकी भयसा समुदघात पदके छारा सोरके भसक्यात बहु  
भागमें भयवा सर्व छोकमें जीवोंका अस्तित्व है ” इस लक्षसे विरोध भा जायगा ।

समाधान—यहां उक्त वाक्याका परिहार रहते हैं । एकन्द्रियादि जीवोंका माय  
भौतिक तो होता ही है क्योंकि एकेन्द्रियजाति मादि नामकर्मके उदयसे ही  
उनकी उत्पत्ति पायी जाती है । और इन्हींसे सयोगी व भयोगी जिनका पंचन्द्रियत्व  
योग्य होता है वेसा उदघात संभवे भी स्वीकार किया गया है । किन्तु इस सुदृक  
वेध संभवे शुच नपस अमिन्द्रिय कहे जानपास सयोगी और भयोगी जिनके यदि  
पंचेन्द्रियत्व कहना है तो वह वेचन व्ययहार नयस ही कहा जा सकता है । वह इस  
प्रकार है— पांच जातियोंमें जो क्रमशः पांच इन्द्रियां सम्पन्न हैं वे क्षयोपशमिक हैं  
वेसा मानकर और उदघातसे पांचों जातियोंको भी क्षयोपशमिक स्वीकार करके

समिपं पंषिदियत्त शुब्धे । अथवा खीणावरये गङ्गे वि पंषिदियत्तमावसमे खजोवसम-  
अपिदापं पचर्हं वन्निदियापमुवपारेण' लङ्खजोवसमसमागमतिवचर्दसनादो सजोगि  
अजोगित्रिणापं पंषिदियत्तं साहेय्य ।

अर्णिदिओ णाम कध भवदि ? ॥ १६ ॥

एत्थ पुष्पं व गप-विक्खेवे मस्सिद्दं चाल्प्या क्खय्या ।

खइयाए लद्धीए ॥ १७ ॥

एत्थ आदमो भगदि- इंदियमए सरीरे विगङ्गे इंदियानं वि विपमेण विजासो,  
अण्णहा सरीरिदियाप पुषमावप्पसंगादो । इंदियसु विगङ्गेसु णाणास्स विजासो,  
क्खरथेम विजा क्खजुप्पत्तीविरोहादो । णाणामाये बीजविजामा, णाणामायेण विज्जेयवत्त  
बुत्तस्स बीवत्तविरोहादो । बीवामाव न खइया सद्धी वि, परिणायिप्पा विजा परि  
णामावमत्तिवत्तविरोहादो वि । जेर्दं लुब्धे । कुदो ? बीवो णाम णाणसहायां, अण्णहा

सयोयी और अयोगी जिनोंके क्षयोपशमिक पञ्चन्द्रियत्व सिद्ध हो जाता है । अथवा  
आवरणके शीघ्र हान्यसे पञ्चन्द्रियोंके क्षयोपशमके भए हो जानेपर भी क्षयोपशमसे उत्पन्न  
और उपचारसह क्षयापशमिक संज्ञाका प्राप्त पांचा वाङ्मन्द्रियोंका अस्तित्व पाये जायेसे  
सयोयी और अयोगी जिनोंके पञ्चेन्द्रियत्व सिद्ध कर लेना चाहिये ।

जीव अनिन्द्रिय किम प्रकार होता है ? ॥ १६ ॥

यहां पूर्वाजुमार नयों और निक्षयोंका आश्रय लेकर पाठना करना चाहिये ।

धायिक कश्चिमे जीव अनिन्द्रिय होता है ॥ १७ ॥

उक्ता—यहां शंकाकार कहता है—इन्द्रियमय शरीरके विग्रह हा जानेपर  
इन्द्रियोंका भी निवमसे विनाश होता है अथवा शरीर और इन्द्रियोंके पृथग्भावका  
प्रसंग आता है । इस प्रकार इन्द्रियोंके विग्रह हो जानेपर ज्ञानका भी विनाश हो  
जायगा क्योंकि कारणके बिना कार्यकी उत्पत्ति मानममें विरोध आता है । ज्ञानके  
अभावमें जीवका भी विनाश हो जायगा क्योंकि ज्ञानरहित होनेसे निश्चेतन पदार्थके  
जीवत्व माननेमें विरोध आता है । जीवका अभाव हो जानेपर धायिक कश्चि मी नहीं  
हो सकती क्योंकि परिणामी के बिना परिणामोंका अस्तित्व मानममें विरोध आता है ।  
(इस प्रकार इन्द्रियरहित जीवके धायिक कश्चिकी प्राप्ति सिद्ध नहीं होती) ?

समाधान—यह शंका उपयुक्त नहीं है क्योंकि जीव ज्ञानस्वभावी है नहीं तो

वीवामावप्पसगादा । होदु षे ण, पमाप्पामावे पमयस्स वि अमावप्पसगा । ण षेव,  
 तहाणुवलमादो । तम्हा णाणस्स वीवो उवापाणकरममिदि षेत्तम् । तं च उवादेयं  
 मावदम्भमावि, अप्पहा दम्भणियमामावादो । सद्दो इदियविणासे ण णाणस्स  
 विणासो । णाममहकारिकारणइदियाणममावे क्क णाणस्स अतियत्तमिदि ष ण, माण  
 सहावपागगलदम्भाणुप्पण्णउप्पाद-म्भय धुअत्तुवलभिसुमजीवदम्भस्स विणासामावा । ण  
 च एकक क्कञ्च एककादो चव कारणादो सव्वत्य उप्पज्जदि, खइर मिसध धव-वम्मण  
 गोमय-सरयर-सुज्जकत्तेहिता समुप्पज्जमाप्पेक्कगिगक्कञ्जुवलंमा । ण च छदुमत्थावत्थाण  
 पाणकारमचम पडिक्कण्णियाणि म्पिणावरमे मिण्णजादीए पाणुप्पत्तिम्हि सहकारिकारण  
 होति चि गियमो, अइप्पसगादो, अप्पहा मोक्खाभावप्पमगा । ण च मोक्खामावो, वंभ-  
 कारणपडिक्कसत्तितरयणाणमुवलंमा । ण च करणं सक्कञ्च सुव्वत्थ ण करेदि चि गियमो  
 अतिय, तहाणुवलंमा । तम्हा अणिदिएसु करणक्कम उवहाप्पादीद णामरिथ चि  
 वत्तम् । ण च तण्णिकारम अप्पहुसण्णिहाणण तदुप्पत्तीदा । सम्भक्कमाव खएणु

जीवके अभावका प्रसंग भा जायगा । यदि कहा जाय कि हो जान हो ज्ञानस्थभावी  
 जीवका अभाव तो भी ठीक नहीं क्योंकि प्रमाणक अभावमें प्रमेयके भी अभावका  
 प्रसंग भा जायगा । और प्रमेयका अभाव है नहीं क्योंकि ऐसा पाया नहीं जाता । इससे  
 यही ग्रहण करना चाहिये कि ज्ञानका जीव उपादान कारण है । और वह ज्ञान उपाद्य  
 है जो कि पाबन् द्रव्यमात्रमें रहता है अथवा द्रव्यके नियमका अभाव हो जायगा ।  
 इसलिये इन्द्रियोंका विनाश हो जानेपर ज्ञानका विनाश नहीं होता ।

शंका—ज्ञानके सहकारी कारणभूत इन्द्रियोंके अभावमें ज्ञानका अस्तित्व  
 किस प्रकार हो सकता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि कामरुभाष और पुण्ड्रद्रव्यसं अनुत्पन्न तथा उत्पाद  
 प्य एवं पुण्ड्रसे उपसहित जीवद्रव्यका विनाश न ज्ञानसे इन्द्रियोंके अभावमें भी  
 ज्ञानका अस्तित्व हो सकता है । एक कार्य सर्वत्र एक ही कारणसे उत्पन्न नहीं होता क्योंकि,  
 खरिद दीहाम घी घम्मन गोरर सूर्यकिरण व सूर्यकाण्ठ मणि इन मिय मिय  
 कारणोंस एक मणि रूप काम उत्पन्न होता पाया जाता है । तथा छत्रस्थावरस्थामें  
 ज्ञानके कारण रूपसे ग्रहण की गई इन्द्रियां क्षीणावरण जीवके मिय जातीय ज्ञानकी  
 उत्पत्तिमें सहकारी कारण हैं ऐसा नियम नहीं है क्योंकि ऐसा माननेपर अतिप्रसंग  
 शेष भाजायगा वा अथवा मोक्षके अभावका ही प्रसंग भाजायगा । और मोक्षका  
 अभाव है नहीं क्योंकि अन्धकारोंके प्रतिपक्षी एतन्नयकी प्राप्ति है । और कारण सर्वत्र  
 अपना कार्य नहीं करेगा ऐसा नियम नहीं है क्योंकि ऐसा पाया नहीं जाता । इस  
 कारण अनिन्द्रिय जीवोंमें करण कम और व्यपयानस अर्थात् ज्ञान होता है ऐसा ग्रहण  
 करना चाहिये । यह ज्ञान निष्कारण भी नहीं है क्योंकि आत्मा और परार्थके साथ  
 ज्ञान अर्थात् सामीप्यसे वह उत्पन्न होता है । इस प्रकार समस्त कर्मोंके क्षयस उत्पन्न



प्यञ्जचादो लक्ष्याण स्त्रीए अर्षिदियच होदि ।

कायाणुवादेण पुढविकाइओ णाम कथ भवदि ? ॥ १८ ॥

पुढविकाइपादो किञ्चिग्गदो भूइपुग्गो सि पुढविकाइआ पुग्गदि, किं पुढवि  
काइयाणमहिइहो वेगमणमावसंभणम पुढविकाइओ पुग्गदि, किं पुढविकाइयाणम-  
कम्मोदएभेसि पुढीए कत्तल कथ होदि सि बुच ।

पुढविकाइयाणामाए उदएण ॥ १९ ॥

णामपयडीसु पुढवि आउ सेउ-वाउ-वणफ्फदिसग्गिदाआ पयडीओ प्प गिदिह्हाओ,  
सेण पुढविकाइयाणामाए उदएण पुढविकाइओ सि वेइ पइदे ? ज, एण्दियजादिणामाए  
एहासिमठम्मत्ताहो । ज च करणेण विणा कज्जावणुप्यत्ती अरिप । बीमति च पुढवि  
आउ-सेउ वाउ-वणफ्फदि ससकाइयादिसु अणगामि कज्जाभि । उहा कज्जमेत्ताभि चैव  
कम्मभि वि अरिप सि गिच्छत्ता कायग्गो । अदि एव ता ममर महुवर  
ससइ-पयग-गोहिइदगोम सख मक्कुव-विबव यपु अंबीर कयंवादिसण्णियेदि वि माम

हाकेके कारण क्षायिक कृत्तिके द्वारा ही जीव अभिन्विष्ट होता है ।

कायमार्गीवानुसार जीव पृथिवीकायिक कैसे होते है ? ॥ १८ ॥

क्या पृथिवीकायस भिक्खा हुआ जीव भूतपूर्व मयसे पृथिवीकायिक कहा जाता  
है ? या पृथिवीकायिकोंके अभिमुक्त हुआ जीव नैगम मयके लक्षकम्ममसं पृथिवीकायिक  
कहा जाता है ? या पृथिवीकायिक नामकर्मके उदयसे पृथिवीकायिक कहा जाता है ?  
एसी मनमें शंका करके पूछा गया है कि कैसे होता है ।

पृथिवीकायिक नामकर्मके उदयसे जीव पृथिवीकायिक होता है ॥ १९ ॥

संज्ञा—नामकर्मकी प्रकृतियोंमें पृथिवी जल अग्नि वायु और वनस्पति नामकी  
प्रकृतियाँ निर्दिष्ट नहीं की गई । इसलिये पृथिवीकायिक नामप्रकृतिक उदयसे जीव  
पृथिवीकायिक होता है यह बात पटित नहीं होती ?

समाधान—नहीं क्योंकि एकेग्रिष्ट आति नामकर्मकी प्रकृतिमें उक्त सब  
प्रकृतियोंका मूलमौल हो जाता है । कारणके बिना तो कारणोंकी उत्पत्ति होती नहीं है ।  
और पृथिवी अग्नि वायु वनस्पति और वसुकायिक आदि जीवामें उतकी वज्र  
पर्वाणो रूप एकेक कार्य देखे जाते हैं । इसलिये जितने कार्य हैं उतने उनके कारणरूप कर्म  
भी हैं ऐसा विचार कर लेना चाहिये ।

टिप्पणी—यदि जितने कार्य हैं उतने ही कारणरूप कर्म आवश्यक हैं तो अमर मनु  
कर, शक्य परम योग्य इन्द्रिय शंख मत्कुव विव भाव अन्तु, अन्वीर और कम्म

कम्मेहि होद्वमिदि ? ण एस दोसो, इच्छिज्जमाणादो । पुढविकम्प्याण एककीसाए  
 पचवीसाए पचवीसाए छप्पीसाए सत्तवीसाए सि पच उदयङ्काभाभि । २१ । २४ ।  
 २५ । २६ । २७ । एदेसि ठाणार्ण पयडीओ उच्चारिय भेत्तन्नाओ । एवमेदासु  
 बहुसु पयडीसु उदयमागच्छमाणासु कच पुढविकम्प्याणामाए उदएण पुढवि  
 काइओ सि जुज्जेदे ? ण, इदरपयडीणसु उदयस्त साहारणसुवलमादो । ण च पुढविकम्प्याण  
 नामकम्मेदओ सहा साहारणो, अण्णत्वेदस्साशुवलमा ।

आउकाईओ णाम कध भवदि ? ॥ २० ॥

आउकाइयणामाए उदएण ॥ २१ ॥

तेउकाइओ णाम कध भवदि ? ॥ २२ ॥

तेउकाइयणामाए उदएण ॥ २३ ॥

वाउकाइओ णाम कध भवदि ? ॥ २४ ॥

कायिक नामों वाह मी नामकर्म होना चाहिये ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं, क्योंकि यह बात तो श्रुत ही है ।

श्रुति—पृथिवीकायिक जीवोंके इत्तीस बीबीस पचीस छप्पीस और  
 सत्ताईस प्रकृतियोंवाले पाँच उदयस्थान होते हैं । २१ । २४ । २५ । २६ । २७ । इन पाँच  
 उदयस्थानोंकी प्रकृतियोंका उच्चारण करके ग्रहण करना चाहिये । इस प्रकार हम बहुत  
 प्रकृतियोंके (एक साथ) उदय मानेपर यह कैसे उपयुक्त हो सकता है कि पृथिवी  
 कायिक नामप्रकृतिके उदयसे जीव पृथिवीकायिक होता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि दूसरी प्रकृतियोंका उदय तो अन्य पर्यायोंके साथ  
 मी पाया जाता है और इसलिये वह साधारण है । किन्तु पृथिवीकायिक नामकर्मका  
 उदय उस प्रकार साधारण नहीं है क्योंकि अन्य पर्यायोंमें वह नहीं पाया जाता ।

जीव अप्कायिक कैसे होता है ? ॥ २० ॥

अप्कायिक नाम प्रकृतिके उदयमे जीव अप्कायिक होता है ॥ २१ ॥

जीव अमिकायिक कैसे होता है ? ॥ २२ ॥

अमिकायिक नामप्रकृतिके उदयसे जीव अमिकायिक होता है ॥ २३ ॥

जीव वायुकायिक कैसे होता है ? ॥ २४ ॥

वाउकाहयणामाए उदएण ॥ २५ ॥

वणफइकाइओ णाम कध भवदि ? ॥ २६ ॥

वणफइकाहयणामाए उदएण ॥ २७ ॥

एरेसिं सुचागमत्थो सुगमो । गवरि आठकाइयादीय एककीस-अउपीस पंच  
बीस-छम्बीसमिदि चत्तारि उदयइत्थाणि । सत्तावीसाए इगुणं पत्थि, आदाइउज्जोत्ताए  
सुदयामत्ता । पवरि आठ वणफइकइयाणं सत्तावीसाए सह पंच उदयइत्थाणि  
आदायेस विधा त्थे उज्जोत्तस्स करव वि उदयइत्तपादो ।

तसकाइओ णाम कधं भवदि ? ॥ २८ ॥

सुमममेदं ।

तसकाहयणामाए उदएण ॥ २९ ॥

एदं पि सुचं सुगमं । पवरि बीसाए एककीसाए पञ्चुपीसाए छम्बीसा  
सत्तावीसाए अट्ठावीसाए पगुणतीसाए तीसाए एककीसाए गवणमइत्थासुदयइत्तागमिं

बायुक्रियिक नामप्रकृतिक उदयसे बीब बायुक्रियिक होता है ॥ २५ ॥

बीब बनस्पतिक्रियिक कैसे होता है ? ॥ २६ ॥

बनस्पतिक्रियिक नामप्रकृतिके उदयसे बीब बनस्पतिक्रियिक होता है ॥ २७ ॥

इन सूत्रोंका अर्थ सुगम है । विशेषता केवल इतनी है कि अणुक्रियिक आ  
बीबोंके इक्कीस बीबीस पचीस और छम्बीस प्रकृतिपौषाके आठ उदयस्थान हैं  
उनके सत्तारिस प्रकृतिपौषाका उदयस्थान नहीं है क्योंकि इनके आठप और उदयो  
इन दो प्रकृतिपौषोंके उदयका अभाव होता है । किन्तु अणुक्रियिक और बनस्पतिक्रियिक  
बीबोंके सत्तारिस प्रकृतिपौषाके उदयस्थानके मिश्राकर पांच उदयस्थान होते हैं क्योंकि  
इनके आठपके बिना उधोतका कहीं कहीं उदय देखा जाता है ।

बीब त्रसक्रियिक कैसे होता है ? ॥ २८ ॥

यह सत्र सुगम है ।

त्रसक्रियिक नामप्रकृतिके उदयसे बीब त्रसक्रियिक होता है ॥ २९ ॥

यह सत्र भी सुगम है । विशेषता यह है कि त्रसक्रियिक बीबोंके बीस इक्कीस  
पचीस छत्तीस सत्तारिस अट्ठावीस बीबीस तीस इक्कीस भी और न

एकस्वरस उदयद्वाणाभि ह्येति । एदाभि ज्ञानिभूय वचन्वाभि ।

अकाङ्क्षो गाम कथं भवति ? ॥ ३० ॥

छक्कञ्ज्यमामां विष्णोसो णत्थि, मिच्छत्तादिआसवाण विष्णोसाशुवल्लमादो । ण चाणादिचत्थेय मिच्छं मिच्छत्तं विम्वस्सदि, मिच्छस्स विष्णोसविरोहादो । ण मिच्छत्तादिआसवो सादी, सवरेण णिम्मूल्लो ओसरिदासवस्स पुणरुप्पत्तिविरोहादो । एवं सत्थं मजेण अक्कञ्जो गाम कथं होत्ति चि शुचं ।

स्वइयाए लद्धीए ॥ ३१ ॥

ण च अणादितादो मिच्चो आसवो, कूटस्थानादिं मुष्वा पवाहाणादिमिच्छि मिच्छत्ताशुवल्लमादो । उवल्लमे वा ण बीजादीण विष्णोसो, पवाहरूपेण वेसिमणादिस्सदंसमादो । सदा गाम्पादिचं साहणं, अणेर्यतियादो । ण चासवो कूटस्थानादिसहापो,

—  
प्रकृतिपौवाके स्पारह उदयस्यान होते हैं । इनको जानकर कहना चाहिये । (देखो ऊपर पृ ५९)

जीव अकार्यिक कैसे होता है ? ॥ ३० ॥

पदकार्यिक नामप्रकृतिपौका विनाश तो होता नहीं है, क्योंकि मिष्प्यात्वादिक माक्षणोंका विनाश पाया नहीं जाता । भनादित्वकी अपेक्षा मित्य मिष्प्यात्व विनाश भी नहीं होता क्योंकि मित्यका विनाशके साथ विरोध है । मिष्प्यात्वादिक माक्षण सादि भी नहीं है क्योंकि संवरके द्वारा निर्मूल्यतः माक्षणके वृत्त हो जाने पर उसकी पुनः उत्पत्ति माननेमें विरोध आता है । यह सब मतमें धारण करके कहा गया है कि 'जीव अकार्यिक कैसे होता है ।

धायिक लुब्धिसे जीव अकार्यिक होता है ॥ ३१ ॥

भमादि होमेसे माक्षण मित्य नहीं हो जाता क्योंकि कूटस्थ भनादिको छोड़कर प्रवाह भनादिमें मित्यत्व नहीं पाया जाता । यदि पाया जाय तो बीजादिकक्षय विनाश नहीं होता चाहिये क्योंकि, प्रवाह रूपसे तो उनमें भनादित्व देखा जाता है । इसलिये भनादित्व माक्षणके मित्यत्व सिद्ध करनेमें साध्य नहीं हो सकता क्योंकि वह अनैकान्तिक है अर्थात् पक्ष और विपक्षमें समानरूपसे पाया जाता है । और माक्षण कूटस्थ भमादि स्वभाववाला है नहीं क्योंकि प्रवाह भमादि रूपसे जाये हुए

मिच्छन्तस्तत्रम-कृत्वायासरायं पञ्चाहाणादिसंरूपेण समागदानं बहुमात्मकाले वि कृत्य वि  
जीवे विद्यासर्दसगादो ।

जोगाणुवादेण मणजोगी वचिजोगी कायजोगी णाम कथं  
भवदि ? ॥ ३२ ॥

किमोद्देशो किं सुत्रोक्तमिन्द्रो किं परिणामिन्द्रो किं सुत्रो किमुक्तमिन्द्रो वि ?  
५ वाच सुत्रो, ससारिजीवेसु सव्यकम्मार्थ उदरण बहुमाणेसु बोगाभाक्कप्पसगादो,  
सिद्धेसु सव्यकम्मोदयविरहिदेसु भोगस्स अतिवत्तप्पसंगदो ५ । ५ परिणामिन्द्रो,  
उत्थप्पिम्म पुत्तासेसदोसप्पसंगदो । मोवसमिन्द्रो, जावसमिणमाणेण सुक्कमिन्द्रो  
गुणम्मि भोगाभाक्कप्पसंगदो । ५ पादिकम्मोदयसमुत्थूदो, केवलमिन्द्रि खीणपादिकम्मोदय  
भोगाभाक्कप्पसंगदो । पापादिकम्मोदयसमुत्थूदो, अत्रोधिभिन्द्रि वि जीयस्स सत्तपसंगदो ।  
५ पादिकम्मोत्थ उत्रोवसमत्रपिदो, केवलमिन्द्रि भोगाभाक्कप्पसंग । पापादिकम्म  
कसुत्रोवसमत्रपिदो, उत्थ सव्य-वेत्तपादिकरूपामाबादो सुत्रोवसमामाबा । एदं सव्यं

मिष्प्यात्त्व असंयम और कपाय रूप भासबोका बर्तमान काळमें मी किसी किसी जीवमें  
बिनाछ देखा जाता है ।

योगमार्गिणानुसार जीव मनोयोगी, बचनयोगी और काययोगी कैसे  
होता है ? ॥ ३२ ॥

श्रुत्य—योग क्या औपशमिक भाव है कि क्षयोपशमिक कि परिणामिक, कि  
क्षातिक कि औपशमिक ? योग क्षायिक तो हो नहीं सकता क्योंकि वैसा माननेसे तो  
सर्व कर्मोंके उदय सहित संसारी जीवोंके वर्तमान रहते हुए भी योगक अभावका प्रसंग  
आजायगा तथा सर्व कर्मोंके उदय रहित सिद्धोंके योगके अस्तित्वका प्रसंग आजायगा ।  
योग परिणामिक भी नहीं हो सकता क्योंकि वैसा मानने पर भी क्षायिक माननेसे  
उत्पन्न होनेवाले समस्त योगोंका प्रसंग आजायगा । योग औपशमिक भी नहीं है  
क्योंकि औपशमिक भावसे रहित मिष्पादृष्टि सुखस्थानमें योगक अभावका प्रसंग  
आजायगा । योग क्षायिकोंके उदयसे उत्पन्न भी नहीं है क्योंकि सत्यागिकेबलीमें  
क्षातिकोंका उदय क्षीण होनेके साथ ही योगके अभावका प्रसंग आजायगा । योग  
अक्षातिकोंके उदयसे उत्पन्न भी नहीं है क्योंकि, वैसा माननेसे अपयोगिकबलीमें भी  
योगकी उत्पत्तिका प्रसंग आजायगा । योग क्षायिकोंके क्षयोपशमसे उत्पन्न भी नहीं है  
क्योंकि, इससे भी अपयोगिकबलीमें योगके अभावका प्रसंग आजायगा । योग अक्षाति  
कोंके क्षयोपशमसे उत्पन्न भी नहीं है क्योंकि अक्षातिकोंमें सर्वथाही और देहाधारी  
दातों अकारके शरीरोंका अभाव होनेसे क्षयोपशमक भी अभाव है । वह सब मतमें

बुद्धिम्हि काळ्म मम-वचि-कश्यजोगी कथं होदि चि बुचं ।

स्त्रओवसमियाए लद्धीए ॥ ३३ ॥

जोगो षाम जीवपदेसाण परिष्करो सकोच-विकोचलक्ष्णो । सो च कम्माण उदयजणिदो, कम्मोदयविरहिसिद्धेसु तदशुचलमा । अजोगिकेवलिम्हि जोगामावा जोगो ओदइओ ष होदि चि मोसु ष शुच, तस्य सरीरणामकम्मोदयामावा । ष च सरीर षामकम्मोदएण ज्ञायमाणो जोगो तेण विजा होदि, अइप्पसंगादो । एवमोदइयस्स जोगस्स कप खओवसमियच उच्यदे ? ष, सरीरणामकम्मोदएण सरीरपाओगगपोगलेसु बहुसु सचय गच्छमाभेसु विरियतराइयस्स सञ्चपादिफइयाणमुदयामावेण तेसि संतो वसमण देसपादिफइयाणमुदएण समुच्चवादो उदइओवसमववएस विरियं वडुदि, तं विरियं पप्य जण जीवपदेमाण सकोच विकोचो वडुदि तेण जोगो स्त्रओवसमियो चि बुचो । विरियतराइयस्सओवसमजणिदलवडु-हामीहिंतो अदि जीवपदेसपरिष्कंदस्स वडु-हाणीओ

विचार कर पूछा गया है कि जीव मनायोगी वचनयोगी और काययोगी कैसे होता है ।

ज्ञापोपशमिक उच्छिसे जीव मनोयोगी, वचनयोगी अर काययोगी होता है ॥ ३३ ॥

शुद्ध—जीवपदेशोंके सकोच और विकोच मर्थात् विस्तार रूप परिस्पन्दको योग कहत हैं । यह परिस्पन्द कर्मके उत्पत्ते उत्पन्न होता है क्योंकि कर्मोत्पत्ते रहित सिद्धोंके यह नहीं पाया जाता । अयोगिकेवलीमें योगके ममावस यह कहना उचित नहीं है कि योग भीक्षुयिक नहीं होता क्योंकि अयोगिकेवलीके यदि योग नहीं होता तो शरीर नामकर्मका उत्पत्ती भी तो नहीं होता । शरीर नामकर्मके उत्पत्ते उत्पन्न होनेवाला योग उस कर्मोत्पत्तेके विना नहीं हो सकता क्योंकि वैसा माननेसे अतिप्रसंग होप उत्पन्न होगा । इस प्रकार जब योग भीक्षुयिक होता है तो उसे ज्ञापोपशमिक क्यों कहते हैं ?

समाधान—वेसा नहीं क्योंकि जब शरीर नामकर्मके उत्पत्ते शरीर बननेके योग्य बहुतसे पुंजकोंका संघप होता है और बीर्यान्तराप कर्मके सर्वघाती स्पर्शकोंके उत्पत्तामवसे व उन्हीं स्पर्शकोंके सरोपशमसे तथा देशघाती स्पर्शकोंके उत्पत्ते उत्पन्न होनेके कारण ज्ञापोपशमिक कहलामेबासा बीर्य (बड) बडता है तब उस बीर्यको पाकर किं जीवपदेशोंका संकोच विकोच बडता है इसीछिये योग ज्ञापोपशमिक कहा गया है ।

शुद्ध—यदि बीर्यान्तरापके सरोपशमसे उत्पन्न हुए बडकी बुद्धि और हाभिले

होति तो स्त्रीवत्स्रायस्मि सिद्धे जोगवदुर्षं पतन्त्रदे ? अ, स्रजोवसमियवलादो स्रयस्स वलस्स पुषत्तदसगादो । अ च स्रजोवसमियवल्वत्ति-हाणीहितो वत्ति हाणीर्षं गच्छमानो बीवपदेसपरिष्फंदो स्रयवलादो वत्ति-हाणीष गच्छदि, अइप्पसंगादो । अदि जोगो परिर्वत्स्रायस्रजोवसमवदिदो तो सजोगिहि जोगामावो पतन्त्रदे ? अ, सवयारेष स्रजोवसमियं मां पत्तस्स ओइयस्स जोगस्स क्त्यामावविरोहादो ।

सो च जोगो चित्तिहो मयाजोगो वचिजोगो क्वायजागा चि । मयवग्मनादो मिष्कण्णइवमयमवत्तवियं जो जीवस्स सकोष-विकोषो सो मयजोगो । मासावग्मना पोगत्तवपे अवत्तविय जो जीवपदेसाव सक्कप-विकोषो सो वचिजागो णाम । जो वत्तिवह सरीराणि अवत्तविय जीवपदेसार्षं सक्केष विकोषो सो क्वायजोगो णाम । दो

जीवपदे शोके परिस्थानकी वृद्धि और हानि होती है तब तो जिसके अन्तराय कर्म शीघ्र हो गया है एस सिद्ध जीवमें योगकी बहुलताका प्रसंग आता है ?

समाधान—नहीं आता क्योंकि साधोपशमिक बलसे हायिक बल मिथ देखा जाता है । साधोपशमिक बलकी वृद्धि हानिसे वृद्धि हानिको प्राप्त होनेवाला जीवप्रवेशोक्त परिस्थान् सायिक पक्षसे वृद्धि हानिको प्राप्त नहीं होता क्योंकि, देसा माननेसे तो अतिप्रसंग होय आजायगा ।

प्रश्न—यदि योग जीवोन्मत्ताय कर्मके साधोपशमसे उत्पन्न होता है तो सयोगि केबलीमें योगके समावका प्रसंग आता है ?

समाधान—नहीं आता क्योंकि योगमें साधोपशमिक भाव तो उपचारस माना गया है । असकमें ही योग जीवयिक भाव ही है और जीवयिक योगका सयोगिकेबलीमें समाव माननेमें विरोध आता है ।

वह योग तीन प्रकारका है— मनाबोध वचनयोग और काययोग । मनो वर्गवासे विषयक रूप द्रव्यमनके अवलम्बनसे जो जीवका संकोच विकोच होता है वह मनोयोग है । मायावर्षजासम्बन्धी पुत्रकस्फूर्णोंके अवलम्बनसे जो जीवमनुष्योंका संकोच विकोच होता है वह वचनयोग है । जो अनुर्विष शरीरोंके अवलम्बनसे जीवपदेशोंका संकोच विकोच होता है वह काययोग है ।

१ श्लो १—वपयवत्तविय इति पाठ ।

२ श्लो १ वचिरो इति पाठ ।

वा विणिग्न वा जोगा जुगव किण्ण होंति । ण, तेमि णिसिद्धाकमयुत्तीदा । सेसिमभन्नेण  
 युत्ती युवलमदे चे ? ण, इंदियविसयमइक्कत्तजीवपदेसपरिक्फदस्स इदिपहि उवलमविरोहादो ।  
 ण जीवि चलंते जीवपदेमाण सकोच विक्रायणियमो, सिग्गत्तपडमसमण एथा लाअग्ग  
 गच्छंतमि जीवपदेसाणं सक्काय-विकोषाणुत्तमा ।

कम ममज्जागो खओवसमिया ? युषदे । धीरियतरायस्स सञ्जघादिक्खयाण  
 मत्तावसमेण देसपादिक्खयाणमुदएण णाइदियावरणस्स सञ्जघादिक्खयाणमुदयक्खएण  
 तमि चेष सत्तावसमेण देमपादिक्खयाणमुदएण मणप-ज्जचीए पञ्चसयदस्स जेण  
 मणज्जागो समुप्पज्जदि तेपेसो खओवममिआ । धीरियतरायस्स सञ्जघादिक्खयाण  
 सत्तावसमण देमपादिक्खयाणमुदएण त्रिंमदियावरणस्स सञ्जघादिक्खयाणमुदयक्खएण  
 तमि चव सत्तावसमेण दमपादिक्खयाणमुदएण मामाप-ज्जचीए पञ्चसयदस्स सरणाम

शुक्र—हे पा तीन पाग एक साथ क्यों नहीं होते ?

समाधान—नहीं होते क्योंकि उनका एक साथ वृत्ति का निरूप किया गया है ।

शुक्र—अनेक योगोंका एक साथ वृत्ति पाया ता जाती है ?

समाधान—नहीं पाया जाती क्योंकि इन्द्रियोंके विषयस परे जो जीवपदेशोंका  
 परिस्पर होता है उसका इन्द्रियों द्वारा धाम मान लेना विराय माना है । जीवोंके  
 अन्तरे समय जीवपदेशोंके सकोच विक्रायका नियम नहीं है । क्योंकि सिद्ध हानक प्रथम  
 समयमें जब जीव वहांसे अथात् मत्पमाकम सांस्क अमभागका जाता है तब उनका  
 जीवपदेशोंमें सकोच विक्राय नहीं पाया जाता ।

शुक्र—मनोपाग ह्यापावशमिक कैसे है ?

समाधान—यतनात है । चूंकि धीयाग्नरायकर्मके सपपाति रूपकों मरणा  
 पदमम य दशापाती रूपकोंके उदयमः मारिद्रयापरम कमर सपपाति रूपकोंके  
 उदयरायम य अर्धे रूपकोंके सपपातमम तथा दशापाती रूपकोंके उदयम मनपपाति  
 पूरी करमनबामे जीवक मनोपाग उत्पन्न होता है इत्यनिये उन सपपावशमिक माय  
 कहत है ।

इसी प्रकार धीयाग्नरायकर्मके सपपाती रूपकोंके मरणापदमम य दशापाती  
 रूपकोंके उदयसे, अिन्द्रियापरम कमर सपपाती रूपकोंके उदयरायम य अर्धके  
 सपपावशमम तथा दशापाती रूपकोंके उदयम मापावपाति पूर्ण करमनेपाके इतर



कर्मोद्भवस्तस्य वक्षिणोऽङ्गस्तु वक्षिणोऽङ्गस्तु वक्षिणोऽङ्गस्तु वक्षिणोऽङ्गस्तु । वीरियं तदाह्वयस्तु ।  
 पादिकृत्वापार्थं सतोषसमेन देसपादिकृत्वापार्थं देसपादिकृत्वापार्थं देसपादिकृत्वापार्थं देसपादिकृत्वापार्थं  
 कृत्वापार्थो ।

अजोगी णाम कथं भवति ? ॥ ३४ ॥

एतत्प णप भिक्षुसंवेदि अजोगिचस्तु पुत्रं व पाठना कृत्वा ।

स्वह्याए लुदीए ॥ ३५ ॥

आगच्छन्तस्योऽङ्गस्तु वक्षिणोऽङ्गस्तु वक्षिणोऽङ्गस्तु वक्षिणोऽङ्गस्तु । स्वह्या लुदी अजोगी  
 वेदाणुवादेण इत्येवेदो पुरिसवेदो णवुंसपवेदो णाम  
 भवति ? ॥ ३६ ॥

किमोद्भवत्तस्य भावेन किमुद्भवत्तस्य किं स्वह्या किं पारिवामिणं व  
 लुदीए कालेन इत्येवेदादौ कथं हेति वि बुधं । एवंविहसंतस्यपिणासवह्व  
 भवति—

आमकर्मोद्भव संहित जीवके वक्षनयोप पाया जाता है इसीसे वक्षनयोग भी  
 पद्यमिक है ।

वीर्योद्भवत्तस्य कर्मके सर्वघाती स्वर्भक्षके सत्त्वोपदायसे व देहाघाती व  
 उद्वयसे कृत्वापयोग पाया जाता है इसीसे कृत्वापयोग भी कृत्वापद्यमिक है ।

जीव अयोमी कैसे होतु है ? ॥ ३४ ॥

यहां भी वक्षो और निक्षेपोंके द्वारा अयोगित्वकी पूर्ववत् पाठना करना  
 साधिक सधिससे जीव अयोमी होता है ॥ ३५ ॥

योगके कारणमूत घटोरसिक कर्मके निर्मूलक सपसे कृत्वाप हाने  
 अयोगकी कर्म्य साधिक है ।

वेदमार्गानुसार जीव लुदी, पुत्रवेदी और नपुंसकवेदी कैसे होता है

क्या औद्यिक मायसे कि औपशामिक मायसे कि साधिक मायसे  
 सामिक मायसे जीव लुदी जाति होता है ? देखा मनमें विचार कर ली  
 कैसे होता है यह प्रश्न किया गया है ।  
 आचार्य भागका घृत् कहते हैं—

चरित्तमोहणीयस्त कम्मस्त उदएण इत्थि-पुरिस णवुसयवेदा  
॥ ३७ ॥

चरित्तमोहणीयस्त उदएण होति चि सामण्णेण पुचे सञ्चस्स चरित्तमोहणीयस्त उदएण तिण्हं वेदानुप्पत्ती पमञ्जद । ण च एयं, विरुद्धाणं तिण्हमेक्कदो उप्पत्तिविरोहादो । तदो जइ सुत्त षठ्ठदि चि ? ण, ' सामान्यचोदनाञ्च विधेयपञ्चवत्तिष्ठ ' इति न्यायात् अइत्थि सामण्णेण पुत्त सो वि बिसेसोवल्लदी हादि चि, सामण्णादा चरित्तमोहणीयादो तिण्ह विरुद्धाणुप्पत्तिविरोहादो । तदो इत्थिबेदोदएण इत्थियेदो, पुरिसवेदोदएण पुरिस वेदा, णवुसयवदोदएण णवुसयवेदो होदि चि मिद ।

इत्थिबेदद्वयफल्ममपिदपरिणामो किमित्थियेदा पुचदि णामफल्मादपञ्चणिद धण अण्ण-ओणिविसिद्धसरीरं वा । न ताव सररीरमित्थियेदो, ' चरित्तमोहोदएण वेदानुप्पत्तिं पस्सेमो ' चि पदेण सुत्तञ्च सह विरोहादो, सररीरणमङ्गदवेदत्तामात्तादो वा ।

चारित्रमोहनीय कर्मक उदयस चीच स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी और नपुंसकवेदी होता है ॥ ३७ ॥

शंका—चारित्रमोहनीय कर्मके उदयसे स्त्रीवेदी आदिक होते हैं ' देसा सामान्यसे कह वनेपर समस्त चारित्रमोहनीयके उदयसे तीनों वेदोंकी उत्पत्तिका प्रसंग आता है । किन्तु ऐसा है नहीं क्योंकि परस्पर विरोधी तीनों वेदोंकी एक ही कारणसे उत्पत्ति माननेमें विरोध आता है । इसलिये यह सूत्र घटित नहीं होता ?

समाधान—देसा नहीं है क्योंकि सामान्यतः एक रूपसे निर्दिष्ट किये गये मापोंकी आन्तरिक व्यवस्था विरोध विरोध रूपसे होती है इस न्यायक अनुसार यद्यपि सामान्यसे ऐसा कह दिया गया है तथापि प्रथम् प्रथम् वेदोंकी प्रथम् प्रथम् व्यवस्था पायी जाती है क्योंकि सामान्य चारित्रमोहनीयसे तीनों विरुद्ध वेदोंकी उत्पत्ति माननेमें ता विरोध आता ही है । अतः स्त्रीवेदके उदयसे स्त्रीवेद उत्पन्न होता है पुरुषवेदके उदयसे पुरुषवेद और नपुंसकवेदके उदयसे नपुंसकवेद उत्पन्न होता है ऐसा सिद्ध हुआ ।

शंका—क्या स्त्रीयद् प्रप्यकर्मसे उत्पन्न परिणामको स्त्रीवेद कहत हैं या माम कर्मके उदयसे उत्पन्न स्तन जयन योमि आदिस्त विशिष्ट शरीरकी स्त्रीवेद कहते हैं ? शरीरको तो यहाँ स्त्रीवेद नाम नहीं सकते क्योंकि ऐसा माननेपर चारित्रमोहके उदयसे वेदोंकी उत्पत्तिका प्रकरण रहते हैं इस सूत्रसे विरोध आता है और शरीर सहित स्त्रीकोके अणुतवेदत्वके समानता भी प्रसंग आता है । प्रथम यह भी माना नहीं

य पदमपकृतो, एकस्मिन् कृत्त-कारणमात्रविरोहादो ? एतत् परिहारा बुद्धे । न विदिय पकृता, अथस्त्वुदगमादो । य च पदमपकृतस्मिन् बुद्धेशोसा ममवदि, परिणामादो परिणामिणो कृत्तविभेदेन एयचामावादा । बुद्धो ? चारित्रमोहणीयस्स उदओ फारण, कृत्त पुत्र तदुदयविसिद्धो इत्यिवेदसम्बिदा स्त्रीमा । सग पत्ताएण तस्सुप्यत्तमाणावादो न फारण-कृत्तमावो एय विरुद्धत् । एव सेमवेदार्ण पि बत्तत् । सेमा रि मावा एय संभवति, तेहि मात्रहि वेदाण निहसो किण्ण कदा ? न, वेदविषंघनपरिणामन्स एओवसमियादिपरिणामामावा वेदविमिद्धत्तदम्बुद्वियसेममावार्ण पि तिवेयमाहारवार्ण तदेतुचविराहादो ।

अवगदवेदो गाम कर्ध भवदि ? ॥ ३८ ॥

एतत् गय-मिक्तेव मावे अस्तिरूप पुत्रं च चालना कायन्वा ।

आ सक्ता क्याकि एत ही वस्तुमें काय भीर कारण माय स्थापित करनेमें विरोध उत्पन्न होता है ?

समाधान—इस शंकाका परिहार करते हैं । द्वितीय पक्ष तो ठीक नहीं है, क्योंकि देखा जाता ही नहीं गया है । किन्तु प्रथम पक्षमें जो शेष पक्षस्थापा गया है वह घटित नहीं होता क्योंकि परिणामसे परिणामी कर्धचित् मित्र होता है जिससे उनमें एकत्व नहीं पाया जाता । जैसे—चारित्रमोहणीयका उद्भव तो कारण है और वस्तुका कार्य है उस कर्मोद्भवसे पिच्छिप्य अविही कहकामवासा जीव । चूकि विवक्षित कर्मोद्भवसे वस्तु पर्यायसे विच्छिप्य वह जीव उत्पन्न हुआ है अतएव वहां कारण कार्य मात्र विच्छिप्यकी मात नहीं होता । इसी प्रकार शेष वेदाके विरयम भी कहना चाहिये ।

शंका—शेष स्थायोपशमिक मात्रि मात्र भी तो वहां संभव हैं, फिर उन मायोंसे वेदोंका निर्देश क्या नहीं किया ?

समाधान—नहीं किया क्योंकि वेदमूलक परिणाममें स्थायोपशमिकादि परिणामोंका अभाव है तथा वेदविच्छिप्य जीव द्रव्यम स्थित शेष मायोंके तर्कों वेदोंम साधारण होनेसे उन्हें विवक्षित वेदका हेतु माननेमें विरोध जाता है ।

जीव अवगत्तयेदी कैमे होता है ? ॥ ३८ ॥

वहां तय निक्षेप भीर मायोंका आश्रय कर पूर्वके समान चालना करना चाहिये ।

१ अत्रो शिष्य इति पाठ ।

२ अत्रि उद्वेगवित्तैरतो अनी उद्वेगवित्तैरतो इति पाठ ।

## उवसमियाए खइयाए लद्धीए ॥ ३९ ॥

अपिद्वेदोदण उवसममेहि चदिय माहणीयस्स अंतर करिय ब्रह्मजोग  
 द्वापमि अपिद्वेदस्स उदय-उदीरणा भोक्कुक्कृण-परपयडिसंक्रम-द्विदि-अणुमागखडपदि  
 विणा जीवमि पोगलखभाणमच्छणमुबसमो । तन्य जा जीवस्स वेदामावसरूवा  
 लद्धी तीए अबगदवेदा जेण होदि तेण उवसमियाए लद्धीए अबगदवेदो होदि चि  
 बुत्त । अपिद्वेदोदण खबगसेहि चदिय अंतरकरणं करिय ब्रह्मजोगद्वारेण अपिद्वेदस्स  
 पोगलखभाण द्विदि अणुमागेहि सह जीवपदेसेहितो भिस्सेसोसरण खओ पाम ।  
 तत्पुप्पम्मजीवपरिणामो खओ, तस्स लद्धी खइया लद्धी, चीए खइयाए लद्धीए वा  
 अबगदवेदो होदि ।

वेदामाव-लद्धीण एक्ककसमि भेव उप्पज्जमाणीण कम्ममाहाराहेयमावो,  
 कम्म-कारणमावो वा ? ए, समकालेषुप्पज्जमानच्छायंङ्कराण कम्म-कारणमावर्दसणादो,  
 पटुप्पचीए कुट्टलाभावर्दसणादो च । होदु णाम तिवेदद्वक्कम्मकखएण माववेदामावो,

औपशमिक व ध्यायिक लभिसे जीव अपगतवेदी होता है ॥ ३९ ॥

विषक्षित वेदके उदय सहित उपशमधर्मीको ब्रह्मकर, मोहनीय कर्मका मन्तर  
 करके पयायोग्य स्थानमें विषक्षित वेदके उदय उदीरणा अयकरणं उत्करणं पद्यकृति  
 संक्रम स्थितिकाण्डक और अनुभागकाण्डकके बिना जीवमें जो पुत्रलस्कंधीका अयस्थान  
 होता है वसे उपशम कहते हैं । उस समय जो जीवकी वेदके अभाव रूप लभि है  
 वसीसे जीव अपगतवेदी होता है और इसीसे यह कहा गया है कि उपशमलभिसे  
 जीव अपगतवेदी होता है ।

अथवा— विषक्षित वेदके उदयस सायकधेयीको ब्रह्मकर, मन्तरकरण करके  
 पयायोग्य स्थानमें विषक्षित वेदसम्बन्धी पुत्रलस्कंधीके स्थिति और अनुभाग सहित  
 जीवधेयीसं मि-सोपतः तूर हो जानको क्षय कहते हैं । उस अवस्थामें जो जीवका  
 परिणाम होता है वह सायिक भाव है । उसी भावकी लभिको सायिक लभि कहते हैं ।  
 उस सायिक लभिसे अपगतवेदी हाता है ।

धर्मा—वेदका अभाव और उस अभाव सम्बन्धी लभि ये दोनों जब एक ही  
 काळमें उत्पन्न होते हैं तब उनमें आधा-आधेयभाव या कार्य-कारणभाव कैस बन  
 सकता है ?

समाधान—बन सकता है क्योंकि समाव काळमें उत्पन्न हानवाले छाया और  
 अंधुरमें कार्य-कारणभाव देखा जाता है तथा घटकी उत्पत्तिके काळमें ही कुशुलका  
 अभाव देखा जाता है ।

धर्मा—तीनों वेदोंके द्रव्यकर्मोंके क्षयसं भाववदका अभाव घटे ही हा

कारणमावादो कञ्जामात्रस्त' नाइयचादो । किन्तु उच्चसमभेदिभिः सतेसु दम्बकम्मकल्लपेसु  
मावभेदामावो न घट्टे, सते कारणे कञ्जामात्रविरोहादो ? ज, ओसहाण दिट्ठसचीनं  
सामधीरे पपुचाण आमेय पडिहयसचीनं सकञ्जकण्णाधुबलंभादा ।

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई  
णाम कधं भवदि ? ॥ ४० ॥

कोधो दुविहो दम्बकोधो मावकोधो चेदि । दम्बकोधो णाम मावकोधुप्पचि-  
त्तिमिचदम्बं । तं दुविहं कम्मदम्बं णोकम्मदम्बं वेदि । ज तं कम्मदम्बं तं विविहं  
बंभुदय-सतमेएण । खं तं कोहत्तिमिचैणोकम्मदम्बं वेगमनयाहिप्पाएण उच्चकोहवपसं  
त दुविहं सच्चित्तमचिचं वेदि । एदे क्खकसाया वस्स अरिय सो कोधकसाई । एत्थ  
अप्पिदकोपकमत्तं कधं भवदि केण पयत्तेण होदि चि पुच्छा क्खता । एवं सेसकमायाणं

क्योंकि, कारणके अभावसे कार्यका अभाव मानना न्यायसंगत है । किन्तु उपरामधेयीमें  
त्रिकेव सम्मन्धी पुत्रछद्रव्यस्फूर्णके रहते हुए भावभेदका अभाव घटित नहीं होता  
क्योंकि कारणके अभावमें कार्यका अभाव भावनेमें विरोध जाता है ?

समाधान—विरोध नहीं जाता क्योंकि अिनकी शक्ति देखी जा चुकी है ऐसी  
औपचियां जब किसी आमरोग सहित अर्थात् अजीर्णके रोगी औचको ही जाती हैं तब  
जब अजीर्ण रोगसे उन औपचियोंकी वह शक्ति प्रतिहत हो जाती है और वे अपने कार्य  
करनेमें असमर्थ पायी जाती हैं ।

क्यापमार्गानुसार जीव कोषरूपायी, मानरूपायी, मायारूपायी और सोम  
रूपायी कैसे होता है ? ॥ ४० ॥

कोष दो प्रकारका है— द्रव्यकोष और मावकोष । मावकोषकी उत्पत्तिके  
निमित्तभूत द्रव्यकोष द्रव्यकोष कहते हैं । यह द्रव्यकोष दो प्रकारका है— कर्मद्रव्य और  
मोक्षद्रव्य । कर्मद्रव्य बंध बन्ध और सत्यके भेदसे तीन प्रकारका है । कोषके निमित्त  
भूत जिस मोक्षद्रव्यसे वैगमनयके अभिप्रायसे कोष संज्ञा प्राप्त की है वह दो प्रकारका  
है— सच्चित्त और असच्चित्त । ये सब कोषरूपाय जिस औचक होत हैं वह कोषरूपायी है ।  
प्रस्तुत सूत्रमें यह बात पूछी गयी है कि विवक्षित कोषरूपायी कैसे अर्थात् किस  
प्रकारसे होता है । इसी प्रकार कोष रूपायोंका भी कथन करना चाहिये । अविवक्षित

१ अतिउ कम्मजातल चि एत्ति पडं । यत्ती तु चि एत्ति पडं नात्ति ।

२ अतिउ उच्चकण्णाधुबलंभादो एत्ति वाड ।

३ अतिउ क्खत्तिमिचिचं- एत्ति वाड ।

वि वत्तम् । अण्पिदकसाह गिवारिय अप्पिदकसायभाषावणह्मुघरसुत्तमागर्द—

चरित्तमोहणीयस्स कम्मस्स उदण्ण ॥ ४१ ॥

सामप्पेण गिहमे ष्दे वि एत्थ विसेत्तोत्तदी हादि, 'सामान्यषोदनाश्च विद्वपप्ववतिष्ठन्ते' इति न्यायात् । तेण क्कपकमायस्स उदण्ण क्कपकसाह, माणकमायस्स उदण्ण माणकसाह, मापाकमायस्स उदण्ण मापाकसाह, सामकमायस्स उदण्ण सोम कसाह सि सिद्ध ।

अक्साहं णाम कध भवदि ? ॥ ४२ ॥

पुम्बुत्तकसायाण षस्स मभावेण अरुमारु होदि सि पुच्छा कदा होदि । अप्पिदकसाहगहणह्मुघरसुत्त मणदि—

उवसमियाए स्वडयाए लद्धीए ॥ ४३ ॥

चरित्तमोहणीयस्स उवसमेण उरण च जा उप्पण्णलद्धी तीण अकसायसं हादि, ण ससकम्माणं' उरणुवसमण वा, तथो जीवस्स उवसमिय-उहयलद्धीणमणुप्पचीदो ।

कपापोंको छाङ्ग विवक्षित कपापोंका ज्ञान करानके किय भगछा सूत्र भाषा है—

चारित्रमाहनीय कसक उदयसे जीव क्रोध आदि कपायी होता है ॥ ४१ ॥

सामान्यस निर्देश किय जानेपर भी यहाँ विशेष व्यवस्था समझमें आजाती है क्योंकि 'सामान्य निर्देश विशेषोंमें भी घटित होने हैं एसा न्याय है । अतः क्रोधकपायक उदयस आधकपायी मानकपायक उदयस मानकपायी मापाकपायके उदयसे मापाकपायी और सामकपायक उदयसे सोमकपायी होता है यह बात सिद्ध हो जाती है ।

जीव अकपायी कैम हाता है ? ॥ ४२ ॥

'पूर्वोक कपापोंमेंस किम कपायक मभाषम जीव अकपायी होता है यह बात यही पूरी गर्नी है । विवक्षित अकपायीक उदय कपायक किये भगछा सूत्र कहत है—

औषधमिक्क व धायिक उप्पिम जीव अरुपायी हाता है ॥ ४३ ॥

चारित्रमाहनीयक उपासम भार उयम जा सन्धि उदयस हाती है उरुत्तय अकपायक उदयस हाता है । एत कर्मोंके साथ व उपासम अकपायक उदयस गर्नी हाता क्योंकि उसम जीवके (अरुपायक) औषधमिक्क वा क्षायिक उप्पिमा उदयस गर्नी हाती ।

गाणानुवादेण मदिअण्णाणी सुदअण्णाणी विभगणाणी आभिणि  
वोहियणाणी सुदणाणी ओह्णिणाणी मणपज्जवणाणी णाम कर्धं  
भवदि ? ॥ ४४ ॥

तस्य ताव मदिअण्णाणस्स उच्चदे— मदिअण्णाणकारणं दुबिहं दब्बकारणं भाव  
कारणं भदि । तस्य दब्बकारणं मदिअण्णाणमिच्छदब्बं । तं दुबिहं कम्म-णोक्कममेएण ।  
कम्मं तिबिहं पणुदय-मंतमिदि, ओग्गहावरणादिमेएण अणेपबिहं वा । णाकम्मदब्बं  
तिबिहं सच्चिच्च-मिस्समिदि । एदेसिं दब्बाणं जा मदिअण्णाणुप्पायणसत्थीं तं भाव  
कारणं । एदेहिता उप्पण्णमदिअण्णाणी सा कर्धं भवदि केण पपारेण होदि पि पुत्तं  
होदि । एवं सेसणाणाण पि वत्तञ्च ।

एतस्य चोदवो मणदि— अण्णाणमिच्छिं पुत्ते किं षाणस्स अमानो भप्पदि आहो  
ण भेप्पदि पि ? वात्तस्से पक्खो मदिवाणाणामावे मदिपुत्तं सुदमिदि क्खु सुदणाणस्स वि  
अमावप्पसगादो । ण च्चैद पि, ताणममावे सच्चणाणाणमभासप्पमंगा । णाणामावे च

ज्ञानमार्गवानुसार जीव मत्पद्धानी, भुताद्धानी, विममद्धानी, आभिनिबोधिक्क-  
द्धानी, भुतद्धानी, अवचिद्धानी और मनःपर्ययद्धानी किम प्रकार होता है ? ॥ ४४ ॥

इतमसे प्रथम मतिमद्धानका कथन करते हैं— मत्पद्धानका कारण दो प्रकारका  
है— द्रव्यकारण और भावकारण । इतमसे द्रव्यकारण मतिमद्धानका निमित्तभूत द्रव्य  
है जो कर्म और लोकर्मके भेदसे दो प्रकारका है । कर्मद्रव्यकारण तीन प्रकारका है—  
बन्धकर्मद्रव्य उदयकर्मद्रव्य और सस्वकर्मद्रव्य । अथवा यह कर्मद्रव्य भवप्रहावरण  
भावि भेदसे भेदके प्रकारका है । भाकर्मद्रव्य तीन प्रकारका है— सच्चित्त लोकर्मद्रव्य  
अच्चित्त भाकर्मद्रव्य और मिथ लोकर्मद्रव्य । इन द्रव्योंकी जा मतिमद्धानका उत्पन्न करने  
वासी शक्ति है नहीं मतिमद्धानकी कारणभूत है । इन सब कारणोंसे जा मतिमद्धानी  
होता है वह कैसे अथात् किस प्रकारसे होता है यह अर्थ कहा गया है । इसी प्रकार  
शेष ज्ञानोंके विषयमें भी कहना चाहिये ।

द्वितीया— वहाँ उक्तकारण कहता है कि मद्धान कहने पर क्या ज्ञानका अभाव प्रहण  
किया है या नहीं किया ? प्रथम पक्ष तो वन नहीं सकता क्योंकि मतिमद्धानका अभाव  
ज्ञानमेपर चूँकि मतिपूर्वक ही भुतज्ञान होता है इसलिये भुतज्ञानके भी अभावका  
प्रसंग आजायगा । और येना भी माना जा सकता नहीं है क्योंकि मति और भुत  
ज्ञानों ज्ञानके अभावमें सभी ज्ञानोंके अभावका प्रसंग आजाता है । ज्ञानके अभावमें





गार्थं तमज्जापमिदि मज्जा, गाणफलाभावादो । पड पडत्वंमादिस्तु' मिच्छाद्वीपे  
 अहारगम सरहणमुत्तममे दे ? न, उत्तप वि तस्स अपनत्तवसापदसणादो । न चेदमसिद्धं  
 'इदमव चोत्ति' मिच्छयाभावा । अथवा जहा दिसामूढो बन्धु-गण रस-पासवहावगमं  
 सरहता वि अज्जाणी बुद्धद अहारगमदिसमदहणाभावादो, एवं यमादिपयत्ये अहारगमं  
 सरहतो वि अज्जाणी बुद्धदे त्रिणवपयेण सरहण्यमावादो ।

अज्जावसमियाए लद्धीए ॥ ४५ ॥

कथं मदिअज्जाविस्म सुत्रोवसमिया लद्धी ? मदिअज्जाणावरणस्स दञ्जपादि  
 पर्यायमुदएण मदिअज्जाणिचुरलमादो । अदि देसपादिफर्याणमुदएण अज्जाविच होदि  
 ता तस्म आदहयत्त पमरद्धे ? न, सञ्जपादिपर्यायमुदयामावा । कथं पुण सुत्रोव

पदार्थमें ध्यान नहीं उत्पन्न होता यहाँ जो ध्यान होता है वह मज्जान कथ्यता है क्योंकि  
 उसमें ध्यानका फल नहीं पाया जाता ।

उत्तर—यह पद स्त्रीम आदि पदार्थोंमें मिथ्याहृदियोंक मी पदार्थ ज्ञान और  
 ध्यान पाया ता जाता है ?

समाधान—नहीं पाया जाता क्योंकि उनक उस ध्यानमें भी मनभ्यषमाय  
 अथात् भविष्यत्त देखा जाता है । यह बात असिद्ध मी नहीं है क्योंकि यह यत्ना ही  
 है एसे मिथ्यका यहाँ अभाव होता है ।

अथवा पचाप दिशाके सम्बन्धमें विमूढ जीव जब गद्य रस और स्पर्श इन  
 शक्तिव विषयोंके ध्यानानुसार ध्यान करता हुआ मी अज्ञानी कहलाता है क्योंकि  
 उनक पदार्थ ज्ञानही दिशामें ध्यानका अभाव है । इसी प्रकार स्तमादि पदार्थोंमें पचा  
 ज्ञान अथवा उत्पत्ता हुआ मी जीव त्रिम मगवान्क ब्रह्मवानुसार ध्यानके अभावमें  
 अज्ञानी ही कहलाता है ।

घावापशमिक सम्पिप जीर मतिअज्ञानी आदि होता है ॥ ४५ ॥

पंच—मतिअज्ञानी अथवा सायागशमिक सम्पिप किस मार्ग जा सकती है ?

समाधान—क्योंकि उस जीवक मत्पञ्चाभावरत्त कर्मक देहापाशा स्पर्शकोंके  
 उत्पत्ता मत्पञ्चानित्य पाया जाता है ।

पंच—यदि दशाणी स्पर्शकोंक उत्पत्त अज्ञानित्य होता है ना अज्ञानित्यका  
 भीहृदिक भाव मात्रकता प्रसंग माना है ?

समाधान—नहीं आता क्योंकि वही तावपाटी स्पर्शकोंक उत्पत्ता अभाव है ।

पंच—ना फिर अज्ञानित्यमें सायोपशमिचरत्त क्या है ?

समियत्त ! आवरणे सत्ते पि आवरमिञ्जस्स णाणस्स एगदेसो खम्हि उदए उवलम्भदे  
तस्स मायस्स खओवसमनवएसादो खओवसमियत्तमग्गणायस्म ण विरुञ्जदे । अथवा  
णाणस्स विणासो खओ वाम, तस्स उवसमो एगदेसकखओ, तस्स खओवसमसग्गणा ।  
तस्य भागमग्गणा वा उप्पज्जदि चि खओवसमिया छद्दी बुष्सेदि ।

एवं सुदग्गणाण विभगणाण आमिनिबोद्धियणाण-सुद भोद्धि-मणपञ्चवणाणाण पि  
खओवसमिमो भावो वत्तम्भो । णवरि अप्पणो आवरणाण देसपादिकइयाणमुदएण  
खओवसमिया छद्दी होदि चि वत्तम्भ । सत्तण्ह गाणाण सत्त पेव आवरणाणि किण्ण  
होदि चि पे ? ण, पंचणावदिरिचणाणाणुबलंभा । मदिग्गणाण-सुदग्गणाण-विभगणाणाण  
मभावो पि णत्थि, जहाकमेण आमिनिबोद्धिय-सुद ओधिणाणेसु तसिमंतकभावो ।

पुष्पमिदिय ढोगमग्गणासु खओवसमियभावपरूवणाण सम्भपादिकइयाणमुदए  
एएण तसिं पेव सतोवसमेण देसपादिकइयाणमुदएणेपि परूबिदं । सपहि दोण्ह पडिसेह  
काइए देसपादिकइयाणमुदएणव खओवसमियभावो होदि चि परूवेतस्स सुववयण

समाधान—भापरणक होते हुए भी आवरणीय ज्ञानका एक देश जहाँपर  
उदयमें पाया जाता है उसी भाषाको सायोपशमिक भाषा किया गया है । इससे अज्ञानको  
सायोपशमिक भाषा माननेमें कोर बिरोध नहीं आता । अथवा ज्ञानके बिनाशका नाम  
क्षय है । वस क्षयका उपशम हुआ एव क्षय क्षय । इस प्रकार ज्ञानके एकद्वीय सपकी  
सायोपशम संज्ञा मानी जा सकती है । ऐसा सायोपशम होनेपर जो ज्ञान या मज्ञान उत्पन्न  
होता है उसीको सायोपशमिक समिधि कहत हैं ।

इसी प्रकार सुताज्ञान विभगज्ञान आमिनिबोधिज्ञान धृतज्ञान अचधिज्ञान  
भीर मम-पर्ययज्ञानको भी सायोपशमिक भाषा कहना चाहिये । बिरोधता कमसे यह  
है कि इन सब ज्ञानोंमें अपने अपने भापरणोंके देशघाती स्पर्धकोंके उदयसे सायोपशमिक  
समिधि होती है ऐसा कहना चाहिये ।

प्रश्न—इन सातों ज्ञानोंके साथ ही भापरण क्यों नहीं होते ?

समाधान—नहीं होते क्योंकि पाँच ज्ञानोंके अतिरिक्त अन्य कोर ज्ञान पाए  
नहीं आते । किन्तु इससे मत्पज्ञान धृताज्ञान भीर विभगज्ञानवा मभाव नहीं हा जाता  
क्योंकि उमका यथाक्रमसे आमिनिबोधिज्ञान धृतज्ञान भीर अचधिज्ञानमें अन्तर्भाव  
होता है ।

संज्ञा—पहले इन्द्रियमार्गोंवा और यागमार्गोंवा सपघाती स्पर्धकोंके उदयक्षयसे  
उन्हीं स्पर्धकोंके सायोपशमने तथा देशघाती स्पर्धकोंके उदयसे सायोपशमिक भाषाकी  
प्ररूपणा की गयी है । किन्तु यहाँपर सर्पघाती स्पर्धकोंके उदयक्षय और उमके सायोपशम  
इन दोनोंका प्रतिरोध करके केवल देशघाती स्पर्धकोंके उदयसे सायोपशमिक भाषा हाता

विरोहो किञ्च भायदे ? अ, अदि सम्बन्धादिफर्याप्यमुदयकक्षरण सञ्चदेसपादिफर्याप्य-  
मुदयेश्वर सञ्चोवसमियो भावो इच्छिन्नञ्चदि तो फासिदिद्वयभोगो-मदि-सुदगापार्थ  
सञ्चोवसमियो भावो अ पावदे, पासिदियावरण-वीरियतराह्य मदि-सुदगापारवर्ण  
सम्बन्धादिफर्याप्य सम्बन्धालमुदयामावा । अ च सुवचयपविरोहो वि, इन्द्रिय-ओगमगजासु  
अप्पेसिमाह्रियाव वक्तापककमजागावर्ण ई तरव तथापरुवपादो । अ अदो पियमेव  
उप्यञ्चदि तं तस्य कञ्चमियर अ कारणं । अ च देसपादिफर्याप्यमुदयो अ सम्बन्धादि  
फर्याप्यमुदयकक्षरो पियमेव अप्यप्यो वाचञ्चओ, स्त्रीपकमायचरिसमय ओहि  
मजपञ्चरणात्वावरणसम्बन्धादिफर्याप्य खण्य समुप्यञ्चमत्तञ्चोहि-मणपञ्चरणात्वावमञ्च  
वर्णमादो ।

केवलणाणी नाम कथं भवति ? ॥ ४६ ॥

किमोद्देश्योवसमियस्य सञ्चोवसमियस्य पारिणामियेति ? न पारिणामियस्य

है एसा प्रकथन करनेवालेके स्वबचनविरोध होय क्यों नहीं होता ?

समाधान—नहीं होता क्योंकि यदि सर्वपाती स्पर्शकोंके उदयसमये संयुक्त  
देशपाती स्पर्शकोंके उदयसे ही सायोपशमिक भाव मानना इष्ट हो तो स्पर्शेन्द्रिय  
कापयोग और मतिज्ञान तथा भूतज्ञान इनके सायोपशमिक भाव प्राप्त नहीं होया  
क्योंकि, स्पर्शेन्द्रियावरण वीर्यन्तरण और मतिज्ञान तथा भूतज्ञान इनके भावरणोंके  
सर्वपाती स्पर्शकोंके उदयका सब काळमें समाप्त है । अर्थात् उक्त भावरणोंके सर्वपाती  
स्पर्शकोंका उदय कभी होता ही नहीं है । इसमें कोह स्वबचन विरोध भी नहीं है क्योंकि  
इन्द्रियमार्गका और बोगमार्गकामें अन्य व्याख्यानक्रमका ज्ञान करनेके  
लिये वहाँ वैसा प्रकथन किया गया है । जो जिससे नियमता उत्पन्न होता है वह उदयका  
कार्य होता है और वह दूसरा उसको उत्पन्न करने वाला कारण होता है । किन्तु देश  
पाती स्पर्शकोंके उदयके समान सर्वपाती स्पर्शकोंके उदयसमय नियमसे अपने अपने  
ज्ञानके उत्पादक नहीं होते क्योंकि, स्त्रीपकमायके अन्तिम समयमें अर्थात् और ममापर्वव  
ज्ञानावरणोंके सर्वपाती स्पर्शकोंके सपसे अर्थात्ज्ञान और प्रकथनपर्वज्ञान उत्पन्न होते  
हुए नहीं पाये जाते ।

जीव केवलज्ञानी कैसे होता है ? ॥ ४६ ॥

क्या धार्मिक भावसे कि धीपशमिक भावसे कि सायोपशमिक भावसे कि  
पारिणामिक भावसे जीव केवलज्ञानी होता है ? पारिणामिक भावसे ता होता नहीं

भावेण हादि, सम्बन्धीभाण क्वलणाणुप्पत्तिप्पसंगादा । णादइएण, क्वलणाणपडिबधि  
 कम्मादयस्स तदुप्पायणविरोहादो । बोचममियं, गाभावरणस्स मोहणीयस्सेवुबसमाभावा ।  
 ण खओवसमिय, असहायस्स करण-ककम-म्बवहापादीदस्स खओवसमियत्तविरोहादो ।  
 सम्भ पि भाणं केवलणाणमेव आवरणविगमवसेण त्तो विभिग्गयभाणकणाणमुबलंमादो ।  
 ण च एसो णायकणो केवलणाणादो अण्णो, वीवे पच्चइ णाणाणमभावादा । सम्भिमभापो  
 हदोवगम्मेदे ? क्वलणाणेण तिकाळपोपरासेसद्वन्-पञ्जयधिसएणाककमेण इदिपालोआदि  
 सहेज्जापवेकखण सुहुम-दूर समिवादित्रिग्गमधुम्मसककेणककतामेसजीवपदेसेसु सक्कम-सस  
 हेज्ज-सपठिक्कएउ परिमिय अबिसइणाणाणमत्तियत्तविरोहादो । किं च ण केवलणाणेण  
 भवगयरथे सेसभाणाण पवुची, विसदाविसदाणमेककक्केककालम्मि पवुचीविरोहादो,  
 अबगदावगम फसाभावादा च । णाणरगदे त्ति पवुची तदणचगत्त्वाभावादो । त्तदो

क्योंकि यदि एसा होता तो सभी जीवोंक क्वलणानकी उत्पत्तिका प्रसंग भाजाना ।  
 भीद्विक मापसे मी केवलज्ञान नहीं जाता क्योंकि क्वलणज्ञानक प्रतिबधक कर्मोदयसे  
 उसकी उत्पत्ति मानसमें विरोध जाता है । केवलज्ञान भीषणामिक मी नहीं है क्योंकि  
 मोहमीपके समान क्षानापणका तो उपशम ही नहीं जाता ।

क्वलणज्ञान सायापदानिक मी नहीं है क्योंकि प्रमहाय भीर करण, कर्म एषं  
 ध्ययधानसे रहित ज्ञानका सायोपामिक मानसमें विरोध जाता है । यहां संज्ञा दाती है  
 कि समस्त ज्ञान क्वलणज्ञान ही है क्योंकि भावरणके दूर हा ज्ञानसे उमील मिक्कन  
 पोके ज्ञानकण पाय जात हैं । यह ज्ञानकण क्वलणज्ञानसे भिन्न नहीं है क्योंकि जीवमें  
 पाय ज्ञानोका भमाय पाया जाता है । यदि कहा जाय कि जीवमें पाय ज्ञानोका भमाय  
 है यह कहाँस जाना जाता है ? ना इसका समाधान है कि क्वलणज्ञान जाता है त्रिकाल  
 गाबर समस्त द्रव्यों भीर उनकी गर्पायोका विषय कर्मयामा भकमभापी इन्द्रिया  
 कावादि साधनोंस निरपेक्ष भीर मूहम दूर समीप (?) भादि विग्रसमूहन मुक्त । एम  
 क्वलणज्ञानन जीवक आ समस्त प्रवृत्त ध्यान है उनमें कर्मभापी साधनसायेक्ष समतिपत्त,  
 परिमित भीर अविनाद मनि भादि ज्ञानोका अस्मित्य मानसमें विरोध जाता है ? भात  
 क्वलणज्ञानन पदार्थोके ज्ञान मनपर प्रायजानोकी प्रवृत्ति मी नहीं जानी क्योंकि बिना  
 भीर अविनाद ज्ञानोकी एवत्र एक ज्ञानमें प्रवृत्ति मानसमें विरोध जाता है भात ज्ञान हुए  
 पदार्थका पुना ज्ञाननमें चारै फल मी नहीं है । मनि भादि ज्ञानोकी प्रवृत्ति केवलज्ञानने  
 न ज्ञान हुए पदार्थोमें जानी है एसा मी नहीं कह सकत क्योंकि क्वलणज्ञानन न जाना

जीवे न पंच भाषाणि, केवलभाषामेकमेव । न चारण्याणि प्राणमुत्पादयति विद्यासयाज  
 तदुत्पापविरोहादौ । तदा केवलभाषा स्वभावमियं मार्ष सहादि चि न, एदस्म सम  
 हेतुस्त केवलचविरोहादौ । न च छारणोद्भृद्भृगिनिगिगापक्काए अग्निरवप्सो अग्निपुद्गी  
 वा अग्निववहारो वा अस्थि, अणुषलमादा । तदा पदाणि भाषाणि क्वलमायं । तेन  
 क्करणेन केवलभाषा वा सुभोवममियामदि । न उद्भृय पि, सुभ्रा नाम अमारा तस्त  
 क्करणचविरोहादौ । एद सन्व पुद्गीए क्कात्त केवलभाषानी क्व हादि चि मग्निं ।

**स्वह्याए लद्धीए ॥ ४७ ॥**

न च केवलभाषावरणकणमो तुच्छा चि न क्कृतपरो, क्कलभाषावरणमच-सता  
 ह्यामावस्त अपतवीरिय-वेरगा-सम्मच-इमजादिगुणादि शुचत्वविदम्बस्म तुच्छचविरोहादौ ।  
 भावस्त अभावसं न विरुद्धदे, भावाभावापमप्याप्म विस्मसेपेव मन्वप्यजा आर्लमिऊन

यथा हो ऐसा कई पदार्थ ही नहीं है । इसलिये जीवमें पांच ज्ञान नहीं होते एकमात्र  
 केवलज्ञान ही होता है ?

भावरणोंको ज्ञानका उत्पादक मान नहीं सकते क्योंकि जो विनाशक है उन्हीं  
 उत्पादक माननेमें विरोध आता है । इसलिये केवलज्ञान साधोपशामिक भाव ही प्राप्त  
 होता है ऐसा भी नहीं मान सकते क्योंकि साधोपशामिक भाव साधनसापेक्ष ज्ञानसे  
 उसके केवलत्व माननेमें विरोध आता है । शार ( मस ) स डली हुई अग्निसं चिकसे हुए  
 बापको अग्नि नाम नहीं दिया जा सकता न इसमें अग्निकी बुद्धि उत्पन्न होती और न  
 अग्निका स्ववहन ही क्योंकि बिना पाया नहीं जाता । मतपक्ष ये सब मति धारि  
 ज्ञान केवलज्ञान नहीं हो सकते । इस कारणसे केवलज्ञान साधोपशामिक भी नहीं है ।

केवलज्ञान साधिक भी नहीं है क्योंकि, क्षय तो अभावको कहते हैं और अभावको  
 कारण माननेमें विरोध आता है ।

इन सब विषयोंको मनमें करके जीव केवलज्ञानी कैसे होता है यह प्रश्न  
 किया गया है ।

**सायिक सन्धिमे जीव केवलज्ञानी होता है ॥ ४७ ॥**

केवलज्ञानावरणका क्षय तुच्छ अर्थात् अभावकूप भाव है इसलिये वह कोई कार्य  
 करनेमें समर्थ नहीं हो सकता ऐसा नहीं समझना चाहिये क्योंकि केवलज्ञानावरणके  
 वन्ध सत्त्व और उदयके अभाव सहित तथा अनन्तवीर्य वैराग्य सन्धकत्व न इतम  
 आदि गुणोंसे युक्त जीव द्रव्यको तुच्छ भावनेमें विरोध आता है । किसी भावको अभाव  
 कूप मानना विरोधी बात नहीं है, क्योंकि भाव और अभाव स्वभावसे ही एक दूसरेकी

द्विदाणमुवलमादो । ए च उवलममाणे विराहो अस्थि, अणुवतद्विचिसयस्र वस्र उव  
लसीए अस्थिचिरोहादो ।

सजमाणुवादेण सजदो सामाहयच्छेदोवट्टावणमुद्धिमजदो णाम  
कध भवदि ? ॥ ४८ ॥

णाममजमो उवजमजमो ऋमजमा मावसजमा अदि चउम्भिहो सजमो ।  
णाम उवणसजमा गदा । दम्भसजमो दुबिहा आगम-णोआगममेएण । आगमो गदो ।  
णोआगमा तिचिहो आणुगसरीरणोआगमदम्भसजम मवियणोआगमदम्भसजम-सज्जदिरिच  
णाआगमदम्भसजममेएण । जाणुग मविमाणि गदाणि । ऋदिरिचदम्भसजमा संजम  
साहणपिच्छाहार कवली-पोत्थयादीणि । भावसजमा दुबिहो आगम-णोआगममेएण । आगमो  
गदो । णोआगमो तिचिहो खइआ छत्रवममिआ उवसमिआ अदि । एदेसु सजम  
पयारेसु ऋण पयारण सजमो होदि चि पुच्छा कदा । एव सामाहयच्छेदावट्टावणमुद्धि  
सजदाण पि पिदलेहो काययो ।

मर्धात्म रूपसं आच्छिद्यमान करके स्थित पापं जातं है । जो पात पाई जाती है उसमें विरोध  
नहीं रहता क्योंकि विरोधका विषय अनुपस्थित है और इसलिये जहाँ जिस पातकी  
उपस्थिति होती है उसमें फिर विरोधका अस्तित्व माननेमें ही विरोध जाता है ।

संयममार्गणानुसार जीव सयत तथा मामाधिक-छदोपस्थापनशुद्धि संयत कैमे  
हाता है ? ॥ ४८ ॥

नामसयम स्थापनार्थसयम द्रव्यसंयम और भाषमयम इन प्रकार संयम चार  
प्रकारका है । नाम और स्थापना सयम तां गय । द्रव्यसयम आगम और नोभागमके  
मेधसे हो प्रकारका है । भागमद्रव्यसंयम भी गया । नोभागमद्रव्यसयमके तीन भेद  
हैं— द्वायकशरीर नोभागमद्रव्यसंयम भय नोभागमद्रव्यसयम और तद्रव्यतिरिक्त  
नोभागमद्रव्यसंयम । द्वायकशरीर भाग मय्य भी गया । तद्रव्यतिरिक्त नोभागमद्रव्य  
सयम संयमक साधनभूत विधिच्छा आहार वमण्णु (?) पुस्तक आदिका कहत हैं ।

भाषसंयम आगम और नोभागमक मद्भय वर प्रकारका है । आगमभाषसंयम  
गया । नोभागमभाषसंयम तीन प्रकारका है— सायिक सायोपसामिक और  
औपशामिक ।

एत मयप्रोक्त प्रकारोंमेंसे किम प्रकारसे सयम हाता है यह प्रश्न किया गया है ।  
इसी प्रकार सामायिक और उदापस्थापना शुद्धिसंयतोंका भी निराप करना आहिय ।

१ मणि विविता इति वाड ।

२ मणि मयि इति वाड ।

३ मय्या पवतीना जतापणी इति वाड ।

## उवसमियाए स्वडयाए स्वओवसमियाए लद्धीए ॥ ४९ ॥

संज्ञमस्स तन्न उच्छेदे— परिचारणस्स सम्भोवसमय उवसतकस्यापि संज्ञमा  
 हादि पि उवसमियाए लद्धीए संज्ञमस्सुप्यची उचा । कर्षं तस्म सुडया लद्धी ?  
 परिचारणस्स उपण संज्ञमुप्यचीदो । कर्षं स्वओवसमिया लद्धी ? चतुमत्रसम-यावसा-  
 क्रमायाणं देसपादिफट्टयत्तामुदयस संज्ञमुप्यचीदो । कर्ममदेमि उदयस्स स्वओवसमववपसो ?  
 सव्यपादिफट्टयाणि अगत्तगुणहीणानि होइम देसपादिफट्टयचणम परिणमिय उदयमाग  
 ष्ठति, सेसिमणत्तगुणहीणत्वं स्वओ वाम । देसपादिफट्टयसम्भवेज्जगुणमुवसमो । तेहि  
 धम्मजानसमेहि संसुचोदओ स्वओवसमो पाम । तदो समुपपज्जो मज्जमो वि चेण स्वओव

जापशमिक, क्षाधिक और क्षायापशमिक अश्विमे जीव संवत व सामायिक  
 क्षयापस्थान-शुद्धिमयत होता है ॥ ४९ ॥

पहले संवत का वर्णन करते हैं — आरिजावरण कर्मके सर्वोपशमस जिस जीवकी  
 क्षयापे उपशान्त हो गई है उसके संवत होता है। इस प्रकार भीषमिक अश्विमे संवतकी  
 उत्पत्ति करी।

प्रश्न — संवतक क्षायिक अश्वि कस हाती है ?

समाधान—क्योंकि आरिजावरण कर्मके क्षयसे भी संवतकी उत्पत्ति हाती है  
 इससे क्षायिक अश्वि द्वारा जीव संवत होता है।

प्रश्न—संवतके क्षायापशमिक अश्वि किन प्रकार हाती है ?

समाधान—आर्ये संग्रहण कर्मायो और नै नाकपायोके क्षयापाती स्वर्धकोके  
 उपशस संवतकी उत्पत्ति होती है। इस प्रकार संवतके क्षायोपशमिक अश्वि पायी जाती है।

प्रश्न—नाकपायोके क्षयापाती स्वर्धकोके उपशका क्षायोपशम नाम क्यों  
 दिया गया ?

समाधान—स्वर्धपाती स्वर्धक भगवत्तगुण हीम हाकर और क्षयापाती स्वर्धकोके  
 परिजत होकर उपशमे भाते है। उम सज्जानी स्वर्धकोका भगवत्तगुणहीमत्व ही क्षय  
 कहसाता है और इनका क्षयापाती स्वर्धकोके उपस मवस्थान जाना उपशम है। उन्ही  
 क्षय और उपशमम संसुक्त उच्य क्षायोपशम कहसाता है। उसी क्षयापशमस उपश

समिओ । एवं सामाह्यच्छेदोनेष्टावणसुदिसददाण पि वत्तम्भ ।

हादु णाम एदसिं रात्रावसमलद्धी, णोरसमिया खइया च, अणियङ्गीगुणद्वाणादेो उवरी एदेसिममावा । ण च हेट्टिमम्भवगुनमामगत्रागुणद्वाणसु चरित्तमाहणीयस्स उवणा उवमाममा वा अत्थि अणदेमिं खइया उरसमिया वा लद्धी होअ । ण, खइयुवसामगअणि यङ्गीगुणद्वाण वि लोमसजलणवदिरित्तामेमचरित्तमाहणीयस्स खइयुवमामणदमणेण तन्व उइय उवसमियलद्धीग मंभवुवर्लमा । अबवा उवगुवमामगअणुकरणपढममयपपहुट्टि उवरी मन्वरय गइय उवममियमजमलद्धीआ अत्थि चेर । कुदो ? पारदुपडमसमयपपहुट्टि षोरधोवउवगुवसामगअणुकरणपढममादेो । पढिममय कअणिपपीए विणा चरिम समए चेर णिप्यअमाणकअणुवलमादेो च । कधमंक्कस्स चरित्तस्स तिण्णि मावा । ण, एक्करम वि विषययगम्म महुवण्णदमणादा ।

प्रथम भो इसी कारण साधोपशमिक हाता है । इसी प्रकार सामायिक भी उपापस्थापन सुखिसयतोंके विषयमें भी कठना चाहिये ।

शुद्ध—सामायिक भीर उपापस्थापन सुखिसयतोंके संध्यापनाम सन्धि मम ही हा किन्तु उक्त भीष्मायिक भीर सायिक सन्धि नहीं हा सकनी क्योंकि भनिसुत्तिकरण गुणस्थानस ऊपर इन संधियोंका समाध पाया जाता है । भीर भीष्मक अधान् मपूषकरण और भनिसुत्तिकरण इन दू क्षयक व उपशामक गुणस्थानोंमें आरित्रमाहर्नीयकी क्षयका व उपशामना होती नहीं ह जिसम उक्त सयतोंके सायिक व भीष्मायिक सन्धि संमय हा सक ?

समाधान—एसा नहीं है क्योंकि क्षयक व उपशामक सम्बन्धी भनिसुत्तिकरण गुणस्थानमें भी साम संशयनक्य छाडकर मध्य आरित्रमाहर्नीयका क्षयक व उपशामक पाये जानने वहाँ सायिक व भीष्मायिक सन्धियोंकी संभावना पाई जाती है । अधया क्षयक भार उपशामक सम्बन्धी मपूषकरणक प्रथम समयम मगाकर ऊपर सर्वत्र सायिक और भीष्मायिक संमयसन्धियाँ हैं ही क्योंकि उक्त गुणस्थानक प्रारंभ हाजके प्रथम समयम मगाकर धाडु धाडु क्षयक और उपशामन क्य कायकी निष्पत्ति रानी जाती है । यदि प्रत्यक समय कायकी निष्पत्ति न हा ता अन्तिम समयमें भी काय पूरा हाता नहीं पाया जा सकता ।

शुद्ध—एक ही आरित्रक भीष्मायिकादि तीन पाप केन होने हैं ?

समाधान—जिन प्रकार एक ही निच पतंग अधान् बहुचक्र पतंगीक बहुतम क्य दान जात है उसी प्रकार एक ही आरित्र नामा साधान युक्त हा सकता है ।



परिहारसुद्धिसजदो सजदासजदो णाम कर्धं भवदि ? ॥ ५० ॥

एत्य वि णय-णिकस्त्रेवे अस्सिदम् पुम्ब व चात्तमा कायम्मा ।

स्वओवसमियाए लद्धीए ॥ ५१ ॥

चतुसत्रस्य षडभोक्तृमाणां सहरपादिफर्याणमपत्तगुणहाभीए त्वय गंतूण  
देसपादिचभेपुवसतफर्याणमुदएण परिहारसुद्धिमज्जमुप्पचीदो स्वओवसमियाए लद्धीए  
परिहारसुद्धिमज्जमो । चतुसत्रस्य-षडभोक्तृमाणां स्वओवसममच्चिन्देसपादिफर्याणमुदएण  
संबमार्मज्जमुप्पचीदो स्वभावसमलद्धीए संजमार्मज्जमा । तेरसण्ह पयड्डीण देसपादिफर  
याणमुदओ संबमलमधिमिच्छा क्ख संसमामज्जमिच्छि पड्विव-ज्जे ? ण, पञ्चप्राणा-  
वरममण्यपादिफर्याणमुदएण पड्विहयचतुर्मज्ज्यादिदेसपादिफर्याणमुदएण मज्जमा  
संजम माएण संसमुप्पापणे ज्जसमत्पत्तादो ।

सुहुमसापरादयसुद्धिसजदो जहाक्खादविहारसुद्धिसजदो णाम  
कर्धं भवदि ? ॥ ५२ ॥

जीव परिहारसुद्धिमयत औत् मपतामयत कैमे होता हे ? ॥ ५० ॥

यहाँ मी मय और त्रिकोणोंका भाग्य केकर पूर्ववत् वाचना करना चाहिये ।

आयोपशमिक छम्बिसे जीव परिहारसुद्धिसंयत व मपतामयत होता है ॥ ५१ ॥

आर संज्वलन और सब लोकपार्योंके सर्वघाती स्पर्धकोंके मज्जन्तगुणी शक्ति  
हारा अत्यन्त प्राप्त होकर देशघाती रूपसे उपहान्त हुए स्पर्धकोंके उद्वपसे परिहार  
सुद्धिसंयमकी उत्पत्ति होती है इसीलिये आयोपशमिक छम्बिसे परिहारसुद्धिसंयम  
होता है । आर संज्वलन और सब लोकपार्योंके आयोपशम संघातके देशघाती स्पर्ध  
कोंके उद्वपसे संयमासंयमकी उत्पत्ति होती है इसीलिये आयोपशम छम्बिसे संयमा  
संयम होता है ।

धृक्का — आर संज्वलन और सब लोकपार्य एत तेरह मरुतिपोंके देशघाती स्पर्ध  
कोंका उद्वप तो संयमकी प्राप्तिमें निमित्त होता है वह संयमासंयमका निमित्त कैसे  
स्वीकार किया गया है ?

समाधान — यहाँ क्योंकि मत्स्याप्यानावरजक सर्वघाती स्पर्धकोंके उद्वपसे जिन  
आर संज्वलनादिकके देशघाती स्पर्धकोंका उद्वप प्रतिहत हो गया है उस उद्वपके  
संघमासंयमको छोड़ संयम उत्पन्न करनेका सामर्थ्य नहीं होता ।

जीव उत्सवसापराधिकसुद्धिसयत और यथास्मात्विहारसुद्धिसंयत कैमे होता  
हे ? ॥ ५२ ॥

सुगममद ।

उवसमियाए खड्याए लडीए ॥ ५३ ॥

उवसामग-फखबगसुहुमसांपराइपगुणहाणेशु सुहुमसांपराइपसुद्धिसजमस्तुवलमादो  
उवसमियाए खड्याए लडीए सुहुमसांपराइपसुद्धिसंभमा । उवसत-खीपकसायादिसु  
अहाकसादबिहारसुद्धिसखसुभसमादो उवसमियाए खड्याए लडीए अहाकसादबिहार  
सुद्धिसंभमो ।

असजदो णाम कध भवदि ? ॥ ५४ ॥

सुगममेदं ।

सजमघादीण कम्माणमुदएण ॥ ५५ ॥

अपचकलाणावरणस्स उदमो चइ असजमस्स हेइ, संभमासंभमपडिसेइइइइइ  
संभमसजमघादिचादो । तदो सजमघादीण कम्माणमुदएणत्ति कध पइदे ? अ, इदरेत्ति पि  
चरित्तावरणीयाण कम्माणमुदएण विणा अपचकलाणावरणस्स वेससंभमपायणे सामयि

यइ सुअ सुगम है ।

औपशमिक और क्षापिक सम्भिम जीव सुखसाम्परायिकशुद्धिसंपत और  
पथास्पातबिहारशुद्धिसंपत होता है ॥ ५३ ॥

अपचामक नीर खपक जामों प्रकारके सुखसाम्परायिक गुणस्थानोंमें सुख  
सांपरायिकशुद्धिसंपमकी प्राप्ति होती है इत्थंविधे औपशमिक व क्षापिक सम्भिम  
सुखसाम्परायिकशुद्धिसंपम होता है ।

उपसात्तकपाप शीपकपाप आदि गुणस्थानोंमें पथास्पातबिहारशुद्धिसंपमकी  
प्राप्ति होनेसे औपशमिक व क्षापिक सम्भिमसे पथास्पातबिहारशुद्धिसंपम होता है ।

जीव अमयत कैसे होता है ? ॥ ५४ ॥

यइ सुअ सुगम है ।

सयमके पाती कमीके उदयसे जीव असयत होता है ॥ ५५ ॥

शुद्ध—एक अमरत्याज्यानावरणना उदय ही असंयमका हेतु माना गया है  
क्योंकि वही संयमार्थपमके प्रतिपक्षसे प्रारम्भ कर समस्त संयमका घाती होता है। तब  
फिर संयमपाती कमीके उदयसे असंयत होता ऐसा कहना कैसे घटित जाता है ?

समाधान—तर्ही क्योंकि वृत्त गी आदिआवरण कमीके उदयके बिना केवल  
अमरत्याज्यानावरणके बराबरपमकी घात करनेका सामर्थ्य नहीं होता ।

परिहारसुदिसजदो सजदासजदो गाम कधं भवदि ? ॥ ५० ॥

एत्वं वि पय विवसुवे अस्तिद्वय पुष्य व पालना कामया ।

स्वओवसमियाए लक्ष्मीए ॥ ५१ ॥

चतुसत्रलक्ष स्वर्णाकृमायाण सन्ध्यादिकर्याणमन्तगुणहापीए स्वयं गंतुष  
देशपादिचपेचुनसंतकर्याणमुदएण परिहारसुदिसजदो सुओवसमियाए लक्ष्मीए  
परिहारसुदिसजदो । चतुसत्रलक्ष-जवर्णाकृमायाण सुओवसममन्त्रिदेसपादिकर्याणमुदएण  
संभ्रमार्मंशसुप्पीदो सुओवसमलक्ष्मीए संभ्रमार्मंशमा । तेरसन्ध पयवर्षिर्ष देसपादिफर  
याणमुदआ सजदमलमभिमितो कधं संभ्रमार्मंशमभिमित पडिसजदो ? ए, पत्रकलाया  
वरणमन्त्रपादिकर्याणमुदएण पडिहयचतुसत्रलक्षादिदेसपादिकर्याणमुदएण संभ्रमा  
सजदं मानूल सत्रसुप्पायणे अस्मत्त्वत्तादो ।

सुहुमसापराडयसुदिसजदो जहान्खादविहारसुदिसंजदो गाम  
कधं भवदि ? ॥ ५२ ॥

बीज परिहारसुदिसयत और संपत्तासयत केमे दाता है ? ॥ ५० ॥

बहां भी नय भीर तिष्ठेपौका भाध्य केकर पूर्वयत् वाचता करमा चाहिय ।

सायोपशमिक सम्भिसे बीज परिहारसुदिसयत व संपत्तासयत होता है ॥ ५१ ॥

बार संभवसम भीर नय नोकयायके संभ्रमाती स्वर्षकोक मन्त्रगुपी हावि  
द्वारा सपरो प्राप्त होकर देशपाती रूपसे उपशान्त हुए स्वर्षकोके उदयसे परिहार  
सुदिसंपमकी उत्पत्ति होती है इसीछिये सायोपशमिक सम्भिसे परिहारसुदिसंपम  
होता है । बार संभवसम भीर नय नोकयायके सायोपशम संज्ञावाले देशपाती स्वर्ष  
कोके उदयसे संपमासंपमकी उत्पत्ति होती है इसीछिये सायोपशम सम्भिसे संपमा  
संपम होता है ।

श्लोक — बार संभवसम भीर नय नोकयाय इन तरह प्रतियोक देशपाती स्वर्ष  
कोका उदय तो संपमकी प्राप्तिमें निमित्त होता है वह संपमासंपमका निमित्त कैसे  
स्वीकार किया गया है ?

समाधान — नहीं क्योंकि प्रत्याप्यानावरणके संभ्रमाती स्वर्षकोके उदयसे निम  
बार संभवसमपादिकके देशपाती स्वर्षकोका उदय प्रतिहत हो गया है उस उदयके  
संपमासंपमको छान्द संपम उत्पन्न करनेका सामर्थ्य नहीं होता ।

अत्र सूक्तसाप्तायिकसुदिसयत और यथास्थानविहारसुदिसंजदो उच्य होता  
है ? ॥ ५२ ॥

न च गहिदमत्र गेण्हदि केवलदमर्षं, गहिदगहमे फलाभावा । न चासेसविसेसमेचगगाही  
 केवलप्राण ओण सयसत्यसामण्ण केवलदसणस्स विसओ होञ्ज, ससाराबत्याए भावर  
 नवसेम कमेण पयङ्कमाणणाज-दसणाज दम्बाजगमामावप्पमगादो । कुदो ! न गाण  
 दम्बपरिच्छेदय, सामण्णदिरिचविसेसेसु तस्स वावारादो । न दसमं पि दम्बपरिच्छेदयं,  
 तस्स विसेसवदिरिचसामण्णम्मि वावारादो । न केवल ससाराबत्याए भेव दम्बगगहणामाओ,  
 किंतु न केवलिगिह भि दम्बगगहणमत्थि, सामण्ण विसेसेसु पयत-दुरंतपंपसंठिएसु मावद्दार्ण  
 केवलदसण-गाणाण दम्बम्मि वावारविराहादो । न च पयंठि सामण्ण-विसेसा अरिय  
 सण ते वेसिं विसओ होञ्ज । असंतस्स पमेयसे इच्छिञ्जमाणे गह्हसिंण पि पमयच  
 मस्सिएञ्ज, अमावं पडि विसेसामावादो । पमेयामाथे न पमाण पि, तस्स तण्णि  
 रंपणघादो । तम्हा न दसणमत्थि चि सिदं ?

ज्ञानक द्वारा ग्रहण किए पदार्थको ही केवलदर्शन ग्रहण करता है, क्योंकि जो वस्तु  
 ग्रहण की जा चुकी है उसे ही पुनः ग्रहण करनेका कोई फल नहीं । यह भी नहीं हो  
 सकता कि समस्त विरोधभावका ग्रहण करनेबाछा ही केवलज्ञान हो जिससे समस्त  
 पदार्थोंका सामान्य धर्म केवलदर्शनका विषय हो जाय क्योंकि ऐसा मानकर तो  
 संसारावस्थामें जब भावरणक वशासे ज्ञान और दर्शनकी प्रकृति क्रमशः होती है तब  
 द्रव्यके ज्ञान होनेके अभावका ही प्रसंग आजायगा । इसका कारण यह है— ज्ञान  
 द्रव्यका परिच्छेदक अर्थात् ज्ञान करानेबाछा नहीं रहा क्योंकि उसका व्यापार सामान्य  
 रहित विशेषोंमें ही परिमित हो गया और न दर्शन ही द्रव्यका परिच्छेदक रहा क्योंकि,  
 इसका व्यापार विशेष रहित सामान्यमें सीमित हो गया । इस प्रकार न केवल संसारा  
 वस्थामें ही द्रव्यके ग्रहणका अभाव होगा किन्तु केवलीमें भी द्रव्यका ग्रहण नहीं हो  
 सकेगा क्योंकि पञ्चान्तरूपी ब्रुण्त पथमें स्थित सामान्य व विशेषमें प्रकृत हुए  
 केवलदर्शन और केवलज्ञानका द्रव्यभावमें व्यापार माननमें विशेष आता है । पञ्चान्तरः  
 पृथक् सामान्य व विशेष ता होते नहीं है जिससे कि ये क्रमशः केवलदर्शन और केवल  
 ज्ञानके विषय हो सकें । और यदि जो है ही नहीं उसको भी प्रमेयरूपसे मानना अभीष्ट  
 हो तो गण्येका हीन भी प्रमेय कीटिमें आजायगा क्योंकि अभावकी अपेक्षा दोनोंमें कोई  
 विशेषता रही नहीं । प्रमेयके न रहनेपर प्रमाण भी नहीं रहता क्योंकि प्रमाण ता  
 प्रमेयमूलक ही होता है । इसलिये दर्शनकी कोई अलग सत्ता है ही नहीं यह  
 सिद्ध हुआ ?

यामात्रादौ । अत्रमा नाम जीवसहायो, तदो य सा अन्वहि विनासिन्वदि तन्विनासे जीवदम्बस्त नि विनासप्यसंगादौ ? न, उच्यतेमस्मेव संघमस्त जीवस्त लक्ष्मणचा माबादौ । किं लक्ष्मणं ? अस्सामावे दम्बस्सामावो इति त तस्त लक्ष्मण, अहा योगस दम्बस्त रुच-रस-गंध-स्पर्शा, जीवस्त उच्यते । तद्वा न संघमामावेव जीवदम्बस्सामावो इति ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदसणी अचक्खुदंसणी ओहिदसणी गाम कथं भवदि ? ॥ ५६ ॥

एतत् पुत्रं व विकलेवो कायव्यो । य दंसनमतिव विसयामाबादौ । य वन्तस्व मामन्वगमहण इत्यर्थं, केवलदंसनस्य अभावप्यसंगादौ । इदो ? केवलसायेव विकलस योग्यतयाहृत्य-बेज्जपपञ्जपसरूपेसु सम्बन्धेसु अवगपसु केवलदंसनस्य विसयामावा ।

शुद्ध — संघम तो जीवका स्वभाव ही है इसीलिये वह मय्यके द्वारा विनाश नहीं किया सकता क्योंकि उसका विनाश होनेपर तो जीव द्रव्यके भी विनाशका प्रसंग आजायगा ?

समाधान—नहीं जायगा क्योंकि जिस प्रकार उपयोग जीवका संसृज माना गया है उस प्रकार संघम जीवका संसृज नहीं होता ।

शुद्ध—संसृज कित्से कहतें हैं ?

समाधान—जिसके अभावम द्रव्यका भी अभाव हो जाता है वही उस द्रव्यका संसृज है । जैसे—पुच्छ द्रव्यका संसृज रूप रस गंध और स्पर्श व जीवका उपयोग ।

अतएव संघमके अभावमें जीव द्रव्यका अभाव नहीं होता ।

दर्शनमार्गानुमार जीव चक्षुदर्शनी, अक्षुदर्शनी व अविदर्शनी कैम होता है ? ॥ ५६ ॥

यहां पूर्वानुसार मिश्रण करना चाहिये ।

शुद्ध—दर्शन है ही नहीं क्योंकि उसका कार्य विषय नहीं है । बाह्य पदार्थोंके सामान्यको ग्रहण करना दर्शन नहीं हो सकता क्योंकि, वीजा माननेपर कबलदर्शनके अभावका प्रसंग आजायगा । इसका कारण यह है कि जब केवलबाह्यके ज्ञान विच्छन्न गोचर अन्तर् अर्थ और अर्थम पर्याय सरूप समस्त द्रव्यको ज्ञान किया जाता है तब केवलदर्शनक विषय कार्य विषय ही नहीं रहता । ऐसा तो हो नहीं सकता कि कबल

बाहिन्यदि चि च! सम्भं न बाहिन्यदि उच्यते जुषी, किंतु इमा बाहिन्यदि उच्यता  
मावादे। तं अहा— न नाणेण विससा चत्र पेप्यदि सामण्ण-विसेसपयत्तणेण पत्त  
अचंत्तरदम्बुत्तमादे। न च नयदुवधिमयमगणइतस्म नाणस्म सापारत्तमरिय,  
विराहादे। तथा समंतमइसामिणा वि उच—

विधिर्विपकेप्रतिभण्य प्रमागमप्राप्तयत्प्रधान।

गुणा परे मुख्यनिधानहेतुमय स दृश्यात्मवर्तस्त' ॥ इति ॥ १८ ॥

न च एव सति दसणस्म अभावा, पञ्जरथे मात्स्ये तस्म अतरंगरथे वावारादे।  
न च क्वलणाणमत्र सच्चिदुक्तमनुत्तत्वादा बहिरंतरगत्यपरिच्छिद्य, नाणस्म पञ्जरपस्स  
पञ्जापामावादा। भाव वा अणवत्या टुक्कद, अवद्वानकारणामावादा। तस्मा अतरगाव  
ओगादे बहिरंगुवशेणेण पुत्रभूदण हादप्यमण्णहा मय्यशुत्ताश्रुत्तत्वादी। अतरग

समाधान— मध्यम्य ही भागमत्र उत्तम युक्तिही याथा नहीं है, किंतु  
मस्तुन युक्तिही याथा मयाय है। क्योंकि यह उत्तम युक्ति नहीं है। यह इस  
प्रकार है— घान द्वारा कयक विज्ञानका ग्रहण नहीं जाता क्योंकि नामाम्य विज्ञानमक  
हामेन ही द्रव्यका जात्यस्तर स्वरूप पाया जाता है। और नामाम्य तथा विशेष जानों  
मयोंके विषयमूत्र पदार्थका ग्रहण न करनेसे घानका विज्ञानमय भी नहीं बन सकता,  
क्योंकि विसा माननेमें विरोध आता है। तथा समस्तमत्र स्थानमें भी कहा है—

(ह धेयान्निम) धारण मतमें द्रव्य शत्र काम भार भाव इन सब घनपद्योंकी

अपेक्षा किए जानेवाले विधानका स्वरूप परधनुष्यकी अपेक्षासे ज्ञानपाम प्रतिपत्तसे  
सम्बन्ध पाया जाता है। पिपि भार प्रतिपत्त इन जानोंमेंसे आ एक प्रधान होता है यही  
प्रमाण है और दूसरा गीण है। हममें आ प्रधानताका निवाहक है यही मय है जो  
दशमका मयात् धर्मविज्ञानका समर्थक करता है ॥ १८ ॥

इस प्रकार भागम और युक्तिम ज्ञानका अस्तित्व निश्च हाम पर उत्तका अभाव  
नहीं माना जा सकता क्योंकि ज्ञानका व्यापार बाह्य पदार्थोंका छाड़ भग्नरंग बहनुमें  
जाता है। यही यह नहीं कह सकते कि कयउचाम ही वा शक्तिमय मयुक्त हामके  
कारण बहिरंग भार अन्तरंग जानों परच्छिद्य है क्योंकि घान स्वयं एक  
पर्याय है और पर्यायमें दूसरी पर्याय जानी नहीं है। यदि पर्यायमें भी और पर्याय मानी  
जाय तो अवस्थानका बाह्य कारण न ज्ञानम अन्वयका रूप उत्पन्न होता है। इतिमय  
अन्तरंग उपपागने बहिरंग उपपागका पृथग्भूत है ज्ञाना र्थाहिय मय्यथा स्वयम्बर्ही  
उपपत्ति नहीं बनती। अतएव आमावा भग्नरंग उपपाग और बहिरंग उपपाग र्थी

एतव परिहारा उच्यते— अत्रिं दंमण, मुत्तम्मि अह्मम्मणिइसादो । न चासते  
 आवरणिं जे आवारयमत्तिं, अण्णत्तव तहाजुनर्नमादा । न चावयारेण दंसणावरणविइसा,  
 सुहियस्सामाये उवयागजुववत्तीदा । न चावरणिं अं गणिय, चक्खुदसणी अचक्खु  
 दंसणी आदिदंसणी सुओवममियाण, क्वलदमणी सुआण उदीए पि त्वत्थिचपहु  
 प्यायज्जिज्जवयणदंमणादो ।

एवा म सस्सणे अणा णाण-सगल्लसणा ।

सेसा म बाहिरा भासा सप्पे सहागल्लसणा ॥ १६ ॥

असरीरा जीवणना उवजुत्ता दसणे य णाणे य ।

सायारमभायारं ल्लसणमेय तु सिद्धाण ॥ १७ ॥

इत्थादिठवसंहारसुचदंमणादा च । आगमपमाणेण हाहु पाम दसणस्स अत्थिचं  
 न जुत्तीए ये ? न, जुत्तीहि आगमस्स बाहामावादा । आगमन वि अत्था जुत्ती न

समाधान—मह यहाँ उक्त शंकाका परिहार करते हैं— दर्शन है क्योंकि  
 स्वप्नमें जाठ कर्मोंका निर्देश किया गया है। आवरणीयके अभावमें आवारक ही नहीं  
 सकता क्योंकि, धम्वन्न वेना पाया नहीं जाता। यह भी नहीं कह सकते कि दर्शनावरणका  
 निर्देश कबल उपचारसे किया गया है क्योंकि मुख्य वस्तुके अभावमें उपचारकी  
 उपपत्ति नहीं बनती। आवरणीय है ही नहीं सा बात भी नहीं है क्याकि अह्मदशनी  
 अचक्खुदसणी और अचक्खुदसणी सायोपशमिक अस्सिसे तथा केवलदर्शी सायिक  
 अस्सिसे होते हैं एत आवरणीयके आस्तत्वका प्रतिपादन करतबाले जिन मगवान्  
 के बचन देखे जात हैं। तथा—

ज्ञान धार इहामरूप अस्तवपाळा मरा एक भाय्मा ही शाम्बत है। शय समस्त  
 संसागरूप अस्तवपाळा पदाय मुत्तसे पाहा है ॥ १६ ॥

मराठीर अर्थात् काय रहित मुख आचमवशोसे घनीभूत इहाम और ज्ञानमें  
 अनाकार व साकार रूपसे उपसाग एतनबाले यह सिद्ध जीवोंका अस्तव है ॥ १७ ॥

इस प्रकारके अनेक उपसंहारस्व इत्यनस भी यही सिद्ध होता है कि इहाम है।

सुद्धा—भागम प्रमाणसे मह ही दर्शनका अस्तित्व हो किन्तु युक्तिस तो  
 दर्शनका अस्तित्व सिद्ध नहीं होता ?

समाधान—हाना है क्योंकि युक्तियोंसे भागमकी बाधा नहीं होती।

शंका—भागमसे भी ता ज्ञान अर्थात् उत्तम युक्तिकी बाधा नहीं हाना आदिब ?

बाहिरञ्जदि चि चे? सत्त्वं न बाहिरञ्जदि जन्वा शुची, किंतु इमा बाहिरञ्जदि जन्वत्वा  
माबादो । तं अहा- न णाणेन विससो चेत्त भेष्यदि सामण्ण विसेसप्यपचणेण पत्त  
जन्वत्तरदम्बुवलमादो । न च णयदुसभिसयमगेहृतस्स णाणस्स सायारत्तमरिय,  
विरोहादो । तथा समंतमहसामिणा वि उच-

विधिर्विपर्ययप्रतिषेधरूप प्रमाणमश्रान्पत्तरकामान ।

गुणो परो मुख्यनिधामहेतुनय स दर्शतसमर्चनस्ते<sup>१</sup> ॥ इति ॥ १८ ॥

न च एवं सते दसपत्त अमादो, बन्धत्त्ये मोक्ष्ण तस्स अतरंगत्त्ये बावारादो ।  
न च केवलमाणभव सचिदुवसन्नुत्तत्तादो बहिरंतरगत्यपरिच्छेद्य, णाणस्स पन्जयस्स  
पञ्जायामावादा। भाव वा अणवत्त्वा दुक्कदे, अवङ्गानकारप्पामावादो । तम्हा अतरंगोव  
भोगादो बहिरगुणभोगेण पुचभूदेण होद्वग्गमण्णहा सम्यण्णुत्ताणुववत्तीदो । अंतरंग

समाधान—सचमुच ही मागमसे उत्तम युक्तिकी बाधा नहीं होती किन्तु  
प्रस्तुत युक्तिकी बाधा महत्त्व हाती है क्योंकि यह उत्तम युक्ति नहीं है । वह इस  
प्रकार है—ज्ञान द्वारा केवल विशेषका ग्रहण नहीं होता क्योंकि सामान्य विशेषात्मक  
होनेसे ही द्रव्यका आत्यन्तर स्वरूप पाया जाता है । और सामान्य तथा विशेष दोनों  
नयोके विपर्यय पदार्थका ग्रहण न करनेसे ज्ञानका साकारत्व भी नहीं वम सकता,  
क्योंकि विसा माननेमें विशेष जाता है । तथा समस्तमद्र स्वामीने भी कहा है—

(हे भेष्यांस जिन<sup>१</sup>) भावके मतमें द्रव्य क्षेत्र काल और भाव इन सब सत्तुष्टयकी

अपक्षा किये जानेबाछ विधानका स्वरूप परसत्तुष्टयकी अपेक्षासे होनेबाछ प्रतिषेधसे  
सम्बन्ध पाया जाता है । विधि और प्रतिषेध इन दोनोंमेंसे जो एक प्रधान होता है वही  
प्रमाण है और दूसरा गीय है । इनमें जा प्रधानताका नियामक है वही नय है जो  
व्यस्तका अर्थात् धर्मविशेषका समर्पण करता है ॥ १८ ॥

इस प्रकार मागम और युक्तिसे दर्शनका अस्तित्व निश्च होने पर उसका अभाव  
नहीं माना जा सकता क्योंकि दर्शनका व्यापार बाह्य पदार्थोंको छाड़ अन्तरंग पदार्थमें  
होता है । यहाँ यह नहीं कह सकत कि केवलज्ञान ही दो शक्तियोंसे सयुक्त होनेके  
कारण बहिरंग और अन्तरंग दोनों पदार्थोंका परिच्छेदक है क्योंकि ज्ञान स्वय एक  
पर्याय है और पर्यायमें दूसरी पर्याय हाती नहीं है । यदि पर्यायमें भी और पर्याय मानी  
जाय तो अवस्थानका कार्य कारण न हामसे अभावस्था बाप उत्पन्न होता है । इसलिये  
अन्तरंग उपयोगसे बहिरंग उपयोगको पृथग्भूत हो होना चाहिये अन्यथा सपक्ष्यकी  
उपपत्ति नहीं बनती । अतएव भास्माको अन्तरंग उपयोग और बहिरंग उपयोग दोनों

१ प्रतिगु विधिश्च इति पाठ ।

१ इत्यवर्षदुत्तोष ५१

२ प्रतिगु—वैरव इति पाठ ।

४ प्रतिगु बहिरवचनविशेष इति पाठ ।



बहिरंगुपयोगसन्धिददुमचीशुचा अप्या इच्छिद्बुधो ।

अ सामण्यगहन मात्रार्णं गेव कद्रु आयारं ।

अमिससिद्ध्य अथे दसणधिणि मण्मदे समर ॥ १९ ॥

ग च एदेण सुचमेद बकखार्णं विरुन्नेदे, अप्परवम्मि पउचसामण्णसइग्गइयादो  
अ च जीवस्स सामण्णचमसिद्ध भियमेण विना विसईकपत्थिक्खसगोपरार्णत्थ-वेज्जप  
पन्नञ्जानभियवन्नंउरंगार्णं उण्ण सामण्णचाविरोहादो । होदु ष्याम मामण्णेण दसणस्स  
सिद्धी केवल्लंमणस्स सिद्धी च, अ सेसइसणार्णं;

अकण्ण अ पयासदि विरससि न अकण्णसण वेत्ति ।

दिद्धास य अ सरण णापय त अकण्णु सी ॥ २० ॥

परमाणुभ्राणियाइ अतिमउत्तं नि मुचिन्म्याइं ।

त अदिदसण पुण अ पस्सदि ताणि पप्पकळ ॥ २१ ॥

इदि बन्नेत्थविमयइमणपरुवशादो ? अ, एदाण गाहाअं परमत्थत्थमाणुवगमादो ।

वा शक्तिपासे पुक मानवा भगीप सिद्ध होता है । देखा मानव पर—

बस्तुमौका आकार न करक व पदार्थोंम विरोपता न करक जो बस्तु सामान्यका  
ग्रहन किया जाता इ उस ही शास्त्रमें दर्शन कहा है ॥ १० ॥

इस सूत्रसे मतुन प्यारपान बिरुद्ध भी नहीं पढ़ता क्योंकि उक्त सूत्रमें  
सामान्य शब्दका प्रयोग आरम पदार्थके द्विये ही किया गया है । ( इसीके विरोप  
प्रतिपादनक द्विये देखा पदार्थहागम जीवदुख सत्प्रकपणा भाग १ पृष्ठ १४७ भादि )  
जीवका सामान्यत्व मसिद्ध भी नहीं है क्योंकि नियमक विना कामके विषयभूत द्विये  
गव त्रिकसगोचर भनगत भयं भीर व्यंजन पदार्थसे संशित बहिरंग भीर मन्तरंम  
पदार्थोंका जीवमें सामान्यत्व माननेमें कोई विरोप नहीं आता ।

शुद्ध—इस प्रकार सामान्यस दर्शनकी सिद्धि भीर केवलदर्शनकी भी  
सिद्धि मने हा जाय किन्तु उसस रोप दर्शनकी सिद्धि नहीं हाती क्योंकि—

आ बभ्रुइन्द्रियोको प्रकाशित हाता है वा दिवता है उस बभ्रुवदान समझा  
जाता है भीर जो अन्य इन्द्रियोंसे देने हुए पदार्थका ज्ञान होता है उस भबभ्रुदर्शन  
ज्ञानना बाहिय ॥ १ ॥

परमाणुस केकर अठितम रूप तत्र त्रितम मूर्तिक द्रव्य है उन्हें जो प्रवस देकता  
है वह भवधिदर्शन है ॥ २१ ॥

इत सूत्रबचनोंमें दर्शनकी प्रकपणा बालार्थविषयक रूपम की गइ है ?

ममाधान— देना नहीं है क्योंकि तुमन इत गाथाओंका परमार्थ नहीं समझा ।

को सो परमस्वयो ? बुद्धदे- अं यत् चक्षुर्गं चक्षुषां पयासदि प्रकाशते दिस्तदि चक्षुषा इत्यतं वा त तत् चक्षुदसण चक्षुर्दर्शनमिति वेति श्रुते । चर्खिदियणाणादो ओ पुम्बमेव सुवसचीए सामण्णाय अप्पुहआ चक्षुणाणुप्पत्तिमिमिचो तं चक्षुदसण मिदि उच होदि । कभमतरगाए चर्खिदियनिसयपडिबद्धाए सचीए चर्खिदियस्स पठची ? न, अंतगमे बहिरंगस्योवयारेण वातज्जबोहणहु चक्षुस्स अ दिस्तदि तं चक्षु दसणमिदि पकवणादो । गाहाए गतमंज्जमकाळण उज्जुवत्थो किण्ण चप्पदि ? न, तस्य पुम्बुचासेसदोसप्पसंगादो ।

दिहस्स श्वेनेन्द्रिये प्रतिपन्नस्यार्थस्य अ यस्मात् सरण अबगमन नायम्बं ज्ञातव्यं त तत् अचक्षु चि अचक्षुर्दर्शनमिति । मर्खिदियणाणुप्पत्तीदो ओ पुम्बमेव सुवसचीए अप्पणो विसयम्मि पडिबद्धाए सामण्णेव संबेदो अचक्षुणाणुप्पत्तिमिमिचो तमचक्षुदसणमिदि उच होदि ।

सुक्क- यह परमार्थ कौनसा है ?

समाधान- कहते हैं । जो चक्षुमोंको प्रकाशित होता है अर्थात् दिव्यता है मयथा मांका द्वारा देखा जाता है वह चक्षुदर्शन है इसका अर्थ ऐसा समझना चाहिये कि चक्षुस्त्रियज्ञानस ओ पूर्व ही सामान्य स्वशक्तिका अनुभव होता है जो कि चक्षु कामकी उत्पत्तिमें निमित्तकप है वह चक्षुदर्शन है ।

सुक्क- उच चक्षुस्त्रियके विषयसे प्रतिज्ज अतरंग शक्तिमें चक्षुस्त्रियकी प्रवृत्ति कैसे हो सकनी है ?

समाधान- नहीं पदार्थमें तो चक्षुस्त्रियकी अन्तरंगमें ही प्रवृत्ति होती है किन्तु बाह्य जनोंका ज्ञान करानेके लिये अंतरंगमें बहिरंग पदार्थोंके उपकारसे चक्षुमोंको जो दिव्यता है वही चक्षुदर्शन है ऐसा प्रकपण किया गया है ।

सुक्क- गायाका गळा न घोंटकर सीपा अर्थ क्यों नहीं करते ?

समाधान- नहीं करते क्योंकि ऐसा करनेमें तो पूर्वोक्त समस्त दोषोंका मर्खण जाता है ।

गायाके उत्तरार्थका अर्थ इस प्रकार है - जो देखा गया है अर्थात् जो पदार्थ शेष इन्द्रियोंके द्वारा ज्ञाना गया है उससे जो सत्य अर्थात् ज्ञान होता है उसे अचक्षुदर्शन जानना चाहिये । चक्षुस्त्रियको छोड़ शेष इन्द्रियजनोंकी उत्पत्तिस पूव ही अपने विषयमें प्रतिज्ज स्वशक्तिका मच्चक्षुजामकी उत्पत्तिका निमित्तमृत ओ सामान्यसे संबेदनया अनुभव होता है यह अचक्षुदर्शन है ऐसा कहा गया है ।

वहिर्युक्त्वोगसन्निदुमचीञ्चता अप्या इच्छिदुञ्चो ।

अ सामन्नाग्गृह्य भागान् जेष वहु आत्यरं ।

अग्निसेसिद्रूप अ जे दसणभिग् मण्णदे समप ॥ १९ ॥

अ व एदेग सुचयेदं वक्त्वात्प विरुद्धदे, अप्पत्वम्मि पठसामन्नाग्गृह्यभादो  
अ च बीचस्त सामन्नाग्गृह्य विपमेय दिना विसर्गक्यचिक्रात्तमापरार्थतत्त्व-वेज्ज  
पन्नाभोवचियवन्संस्तरं गार्थं तस्य सामन्नाग्गृह्यविरोहादो । होइ नाम सामन्नेन ईसपस्त  
सिद्धी केवळदसमस्त सिद्धी च, अ सेसदसथात्प;

अस्मिन् अ पयासदि विस्सति त अस्सुदसग वेति ।

दिद्वारस य अ सरण नायन्व त अक्कमु ची ॥ २ ॥

परमाणुभादियाइ अतिमत्तन ति मुच्छिन्नाइ ।

त ओहिरत्तर्ण पुण अ पस्तदि ताणि पक्कस ॥ २१ ॥

इदि वज्जत्त्वविपयदंसनपन्वजादो ? अ, एदाय गाहार्थं परमत्पत्थाजुषगमादो ।

दो शक्तिपौसे युक्त मानना अभीष्ट सिद्ध होता है । ऐसा मानने पर—

वस्तुमोका आकार न करके व पदार्थोंमें विशेषता न करके जो वस्तु-सामान्यका  
ग्रहण किया जाता है उसे ही शास्त्रमें दर्शन कहा है ॥ १९ ॥

इस सूत्रसे प्रकृत व्याख्यान विरुद्ध भी नहीं पड़ता क्योंकि वल्ल सूत्रमें  
वामान्य शब्दका प्रयोग आत्म-पदार्थके किये ही किया गया है । (इसीके विरोध  
प्रतिपादनके किये देखो पदार्थशास्त्र बीचङ्गुल सत्प्रकरण भाग १ पृष्ठ १७७ भादि)  
बीचका सामान्यत्व अस्ति न भी नहीं है क्योंकि विपमेके बिना ज्ञानके विषयभूत किये  
गये भिन्नानुपपत्त मनस्त अर्थ और व्यञ्जय पयापसे संक्षिप्त वहिरंय और अन्तरंय  
पदार्थोंका बीचमें सामान्यत्व माननेमें कोई विरोध नहीं आता ।

शुद्ध—इस प्रकार सामान्यस दर्शनकी सिद्धि और केवळदर्शनकी भी  
सिद्धि मछे हो जाय किन्तु उससे शेष दर्शनोकी सिद्धि नहीं होती क्योंकि—

जो अक्षुद्रभिर्पौको प्रकाशित होता है या रिक्तता है उसे अक्षुद्रदर्शन समझा  
जाता है और जो अन्य इन्द्रियोंसे देखे हुए पदार्थका ज्ञान होता है उसे अक्षुद्रदर्शन  
जाचना चाहिये ॥ २ ॥

परमाणुसे लेकर अन्तिम संबंध तक जितने मूर्तिक द्रव्य है उन्हें जो प्रत्यक्ष देखा  
है वह अवधिदर्शन है ॥ २१ ॥

इन मूर्तवस्तुओंमें दर्शनकी प्रकृष्टता बाह्यार्थविषयक रूपस की गई है ?

समाधान— देखा नहीं है क्योंकि तुमने इन गार्थाओंका परमार्थ नहीं समझा ।

ब्रह्मब्रह्मणो सो उच्यते; तदुभयगुणसमम्बिद्वचस्तुदसपावरणीयकम्मकसुखविभागवमिदं  
 जीवपरिणामो सुदि सि घेचन्तो । अचकस्तुसणावरणीयस्व देसभादिफर्याणमुदरय  
 अचकस्तुर्वसर्गं होदि सि कहु खओवसमियाए ल्दीए अचकस्तुदसगमिदि उर्ष । ओधि  
 दसपावरणीयस्व देसभादिफर्याणमुदयजणित्त्वदीवा ओधिवसपी हादि सि खओव  
 समियाए ल्दीए ओधिवसपी भिदिहो ।

केवलदसणी गाम कध भवदि ? ॥ ५८ ॥

सुगममेदं ।

खइयाए ल्दीए ॥ ५९ ॥

दसपावरणीयस्व निम्मूलविणासो खओ गाम । तपो आदजीवपरिणामो खइया  
 ल्दी । तपो केवलदसणी होदि । एत्युवउज्जती गाहा—

एव सुत्तपसिद्ध मणनि जे केवळ ण जदि सि ।

निष्ठादिहो जणो को तपो एव विमोए ॥ २२ ॥

जो उक्तका अयम्याम है वही उपश्राम है । इन्हीं क्षय और उपश्राम रूप दो गुणोंसे युक्त  
 अशुद्धार्थावरणीय कर्मके लक्षणोंके उद्भवसे जो जीवपरिणाम उत्पन्न होता है वही  
 क्षायोपशमिक अग्नि है ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

अशुद्धार्थावरणीयके देशघाती स्पर्शकोंके उद्भवसे अशुद्धार्थ होता है एसा  
 मामकर क्षायोपशमिक अग्निसे अशुद्धार्थ होता है ऐसा कहा गया है । अशुद्धार्थ  
 आवरणीयके देशघाती स्पर्शकोंके उद्भवसे उत्पन्न हुई अग्नि द्वारा अशुद्धार्थनी होता  
 है, इसीसे क्षायोपशमिक अग्निसे अशुद्धार्थनीके हानिका निर्वहण किया गया है ।

जीव केवलदर्शनी कैसे होता है ? ॥ ५८ ॥

यह सुख सुगम है ।

क्षायिक अग्निसे जीव केवलदर्शनी होता है ॥ ५९ ॥

दर्शनावरणीय कर्मका निर्मूल विनाश क्षय है । उस क्षयसे उत्पन्न जीवपरि  
 णामको क्षायिक अग्नि कहते हैं । उसी क्षायिक अग्निसे अशुद्धार्थनी होता है । यही  
 यह उपयोगी गाथा है —

इस प्रकार सुख द्वारा प्रसिद्ध होते हुए भी जो कहते हैं कि केवलदर्शनी नहीं  
 है वनसे बड़ा इध जीवसोकर्म हीन निष्पात्ती होगा ? ॥ २२ ॥

परमाणुआदियार्थं परमाभ्यादिक्रानि अतिमूर्खं चि वा पश्चिमस्कंधादिति मूर्खिद  
 म्भार्थं मूर्तिदृश्याणि च यस्मात् पस्सदि पश्यति मानीते तानि तानि पश्चकस्त साधात् त  
 तत् मोहिर्दंसं अत्रभिदर्शनमिति द्रष्टव्यम् । परमाणुमार्दि काद्य आत्र पश्चिमस्कंधे  
 चि द्विदपोगसद्व्यागमवगमादो पश्चकसादो ओ पुत्रमेव मुत्रसचीविसयउवदोगो ओदि  
 बापुप्यचिनिमिषो त मोहिर्दंसमिति पेचम्, अण्णहा नाग-दसणार्थं भेदाभावादो ।  
 कथं केवलप्रायेण केवलदंसम समानं ? य, जेयप्पमाण्येकवलजागमेण्य मिण्णप  
 विसयउवदोगस्स चि सचियमचचाविरोहादो ।

### खओवसमियाए लदीए ॥ ५७ ॥

अक्षुर्दसणावरणस्स देवपादिकरुदयामधुदपण समुप्पण्णावादो ( अक्षुर्दसण खओ  
 वसमिय ) । क्वमुदयगददेसपादिकरुदयाम खमावसमियत्तं ? उक्खदे-उदयम्मि पदजकस्से  
 सम्भवादिफरुदयान् अमभंतगुणहीणत्त सो तेसि खओ णाम; देसपादिफरुदयार्थं सरूवेण

द्वितीय गायिका कथं इस प्रकार है — परमाणुसं समाकर मन्त्रिम सर्वपर्यन्त  
 जितने मूर्तिक द्रव्य हैं उन्हें जिसक द्वारा साक्षात् देयता है वा जानता है वह  
 अत्रभिदर्शन है ऐसा जानना चाहिये परमाणुसे केकर मन्त्रिम सर्वपर्यन्त ओ पुत्र  
 द्रव्य स्थित हैं उनके प्रत्यक्ष ज्ञानसे पूर्व ही ओ अत्रभिज्ञानकी उत्पत्तिका निमित्तमूत  
 स्वशाक्तिविरपक उपयोग होता है वही अत्रभिदर्शन है ऐसा प्रहण करना चाहिये  
 धर्मका ज्ञान और दर्शनमें कोई भेद नहीं रहता ।

प्रश्न—केवलज्ञानसे केवलदर्शन समान किस प्रकार होता है ?

समाधान—क्यों न हो क्योंकि जानने वाग्य पदार्थक प्रमाणानुसार केवल  
 ज्ञानके भेदसे मित्र आत्मविरपक उपयोगको भी सरत्रमाण माननमें कोई विरोध  
 नहीं आता ।

सापोपशमिक स्मिधमे जीव अक्षुर्दरिणी, अक्षुर्दरिणी और अत्रभिदर्शिनी  
 होता है ॥ ५७ ॥

अक्षुर्दरिणावरणके देशपाती स्पर्शकोंके उदयसे उत्पन्न होनेके कारण अक्षुर्दरिणी  
 सापोपशमिक जाता है ।

प्रश्न—उदयमें जाये हुए देशपाती स्पर्शकोंके सापोपशमिक भाव कैसे हुआ ?

समाधान—जताठ हैं । उदयमें जाकर गिरनेक समयमें सर्वपाती स्पर्शकोंका  
 ओ अनन्तगुण हीन हो जाता है वही उदया क्षय है और देशपाती स्पर्शकोंके स्वरूपसे

स्त्रीणकसायाण सस्सामात्रा पमञ्जदे ? सुच्चमेदं जदि कसाओदयादो चैव तेसुप्पची इच्छिज्जदि । किंतु सरीरणामकम्मोदयज्जपिद्वोगो वि सेस्सा पि इच्छिज्जदि, कम्म बंधणिमित्तत्तादो । तेण कसाए किंहे वि जोगो अण्णि पि स्त्रीणकसायाण लेप्पुत्तं ण विरुद्धदे । जदि बंधकारणाण सस्सत्त उच्चदि तो पमादस्स वि लेप्पुत्तं किण्ण इच्छि ज्जदि ! ण, तस्स कसाएसु अत्तमावादो । असत्तमस्स किण्ण इच्छि ज्जदि ! ण, तस्स वि लेस्सायम्मे अंतम्मावादो । मिच्छत्तस्स किण्ण इच्छिज्जदि ! होइ तस्स लेस्सायत्तपसो, विरोहामावादा । किंतु कसायाणं चैव एत्थ पहाणत्त हिंसादि लेस्सायम्मकारणादो, सेसेसु उदमावादो ।

अलेस्सिओ णाम कथं भवति ? ॥ ६२ ॥

एयं वि निश्चेदमस्सिद्धं परुवणां क्वद्व्या ।

बापद्वयं गुणस्यात्मवर्ती स्त्रीणकसायाण जीवोंके छेदनाके समावका प्रसंग आता है ?

समाधान—सबमुक्त ही स्त्रीणकसायाण जीवोंमें छेदनाके समावका प्रसंग आता यदि केवल कसायोदयसे ही छेदनाकी उत्पत्ति मानी जाती । किन्तु शरीरनाम कर्मके उदयसे उत्पन्न बाण भी तो सदा माता गया है क्योंकि वह भी कर्मके बन्धमें निमित्त होता है । इस कारण कसायाणके मरण हो जानेपर भी कृष्णियोग पडा है इसीलिये स्त्रीणकसायाण जीवोंके छेदना माननेमें कोइ विरोध नहीं आता ।

शंका—यदि बन्धके कारणोंको ही छेदनामात्र कहा जाता है तो प्रमादको भी छेदनामात्र क्यों न मान लिया जाय ?

समाधान—नहीं क्योंकि प्रमादका ठा कसायाणमें ही अन्तर्भाव हो जाता है ?

शंका—असंपमको भी छेदनामात्र क्यों नहीं मानते ?

समाधान—नहीं क्योंकि असंपमका भी तो छेदनाकर्ममें अन्तर्भाव हो जाता है ।

शंका—मिथ्यात्वको छेदनामात्र क्यों नहीं मानते ?

समाधान—मिथ्यात्वका छेदना कहा सकत है क्योंकि उसमें कोइ विरोध नहीं आता । किन्तु यहाँ कसायाणका ही माध्याय है क्योंकि कसायाण ही छेदनाकर्मके कारण है और अन्य बन्धकारणोंमें तत्रका अभाव है ।

अथ अलेस्सियक कैसे होता है ? ॥ ६२ ॥

यहाँ भी निश्चेपके आशयसे प्रकृत्या करना चाहिये ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिओ णील्लेस्सिओ काउलेस्सिओ  
तेउलेस्सिओ पम्मलेस्सिओ मुक्कलेस्सिओ णाम कध भवदि ? ॥६०॥

एत्थ पुम्भ व भिकखेवे अस्सिदुय चात्तना परूवेदम्भा । एत्थ पोआगममाव  
हेस्साए अहियारो ।

ओदइएण भावेण ॥ ६१ ॥

कसायानुमागफरयाणमुदयमागदार्णं नइण्णफरयप्पहुदि माव उक्कस्सफरया  
पि उद्वार्णं छम्मागविहत्थाणं पढममायो मइतमो, तदुदएण आदकसाओ मुक्कलेस्सा  
णाम । विदियमागो मंदतरो, तदुदएण आदकसाओ पम्मलेस्सा णाम । उदियमागो  
मंदरो, तदुदएण आदकसाओ तेउलेस्सा णाम । वउत्तममागो तिष्णो, तदुदएण आदकसाओ  
काउलेस्सा णाम । एवममागो तिष्णरो, तस्सुदएण आदकसाओ णील्लेस्सा णाम । उट्ठो  
तिष्णरमो, तस्सुदएण आदकसाओ किण्हलेस्सा णाम । वेवेदाओ छपि लेस्साओ  
कमायानुमुदएण हँति तेय ओदइयाओ । अदि कसाओदएणं हेस्साओ उचंति ते

लेस्सामार्गवानुसार जीव कुप्पलेस्सा, नील्लेस्सा, कापोत्तलेस्सा, तेआलेस्सा,  
पक्कलेस्सा और मुक्कलेस्सा वात्स कैसे होता है ? ॥ ६० ॥

वहाँ पूर्वानुसार सिद्धेपोंका भाष्य संकर वाचना करना चाहिये । प्रस्तुतमें  
नोभाष्य भाषलेस्साका अधिकार है ।

औद्ययिक भाषसे जीव कुप्प आदि लेस्सानात्म होता है ॥ ६१ ॥

उदयमें भाषे हुए कयायानुमागके स्वर्यकोंके अग्रम्य स्वर्यकसं छकर उत्कृष्ट  
स्वर्यक पर्यंत स्थापित करके इनको छह भागोंमें विभक्त करकेपर प्रथम माग मंदतम  
कयायानुमागका होता है और उसके उदयसे जो कयाय उत्पन्न होती है उसीका नाम  
मुक्कलेस्सा है । दूसरा माग मन्दतर कयायानुमागका है और उसके उदयसे उत्पन्न  
हुई कयायका नाम पक्कलेस्सा है । तृतीय माग मन्त्र कयायानुमागका है और उसके  
उदयसे उत्पन्न कयाय तेआलेस्सा है । चतुर्थ माग तीव्र कयायानुमागका है और उसके  
उदयसे उत्पन्न कयाय कापोत्तलेस्सा होती है । पाँचवाँ माग तीमतर कयायानुमागका है  
और उसके उदयसे उत्पन्न कयायको णील्लेस्सा कहते हैं । छठवाँ माग तीमतम कयाया  
नुमागका है और उससे उत्पन्न कयायका नाम किण्हलेस्सा है । चूँकि ये छहों ही लेस्सायें  
कयायोंके उदयसे होती हैं, इसीलिये वे औद्ययिक हैं ।

सूत्र—एपि कयायोंके उदयसे लेस्सायोंका उत्पन्न होना कहा जाता है तो

स्त्रीणकसायाणं लेस्साभाबो पमच्चदे ! सच्चमेदं वदि कसाओदयादो चेव लेस्सुप्पची इच्छिच्चदि । किंतु सरीरणामकम्मोदयअण्णिद्वोगो वि लेस्सा पि इच्छिच्चदि, कम्म बंधाणिमिचचादो । लेय कसाए फिहे वि जोगो अरिपि पि स्त्रीणकसायाणं लेस्सचं प विरुद्धदे । अदि बंधकरणाण लेस्सच उच्चदि तो पमादस्स वि लेस्सचं किण्व इच्छि छदि ! न, तस्स कसापसु अतब्भाबादो । असवमस्स किण्व इच्छिच्चदि ! न, तस्स वि लेस्सायम्मे अंतब्भाबादो । मिच्छचस्स किण्व इच्छिच्चदि ? होहु तस्स लेस्सात्तएत्तो, विरोहामाबादो । किंतु कसायाणं चेव एत्थ पहाणच हिंसादिउच्छ्वायम्मकरणादो, सेसेसु उदमाबादो ।

अलेस्सिओ णाम कध भवदि ? ॥ ६२ ॥

एत्थ वि णिक्खेवमस्सिइत्थ परुवणा कादब्बा ।

बारहसे गुणस्थानवर्ती स्त्रीणकपाय जीवोंके छेद्याके अभावका प्रसंग आता है ?

समाधान—सबभुव ही स्त्रीणकपाय जीवोंमें छेद्याके अभावका प्रसंग आता यदि केवल कपायोदयसे ही छेद्याकी उत्पत्ति मानी जाती । किन्तु शरीरनाम कर्मके उदयसे उत्पन्न योग भी तो छेद्या माना गया है क्योंकि वह भी कर्मके बन्धमें निमित्त होता है । इस कारण कपायके मष्ट हो जानेपर भी भूँकि योग रहता है इसीलिये स्त्रीणकपाय जीवोंके छेद्या माननेमें कोई विरोध नहीं आता ।

सुद्ध—यदि बन्धके कारणोंको ही छेद्याभाव कहा जाता है तो प्रमादको भी छेद्याभाव क्यों न मान लिया जाय ?

समाधान—नहीं क्योंकि प्रमादका तो कपायोंमें ही अन्तर्भाव हो जाता है ?

सुद्ध—असयमको भी छेद्याभाव क्यों नहीं मानते ?

समाधान—नहीं क्योंकि असयमका भी तो छेद्याकर्ममें अन्तर्भाव हो जाता है ।

सुद्ध—मिध्यात्वको छेद्याभाव क्यों नहीं मानते ?

समाधान—मिध्यात्वको छेद्या कह सकते हैं क्योंकि उसमें कोई विरोध नहीं आता । किन्तु यहां कपायोंका ही प्राधान्य है क्योंकि कपाय ही छेद्याकर्मके कारण हैं और अन्य बन्धकारणोंमें उसका अभाव है ।

अथ अलेस्सिक कैसे होता है ? ॥ ६३ ॥

यहां भी विज्ञेयके आश्रयसे प्रकृपणा करना चाहिये ।



सह्याए लक्ष्मीए ॥ ६३ ॥

लस्ताए कारजकम्माए खएणुप्यण्णजीवपरिजामो सह्या लक्ष्मी, तीए अलेस्सिओ हादि चि ठए होदि । ए सररिजामकम्मसंतसए अण्णियए पइएण सह्याए विरुण्णदे, सस्स संतवामावदे ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिओ अभवसिद्धिओ णाम कध भवदि ? ॥ ६४ ॥

सुगममेद ।

पारिणामिण भावेण ॥ ६५ ॥

एद पि सुगम ।

णेव भवसिद्धिओ णेव अभवसिद्धिओ णाम कध भवदि ? ॥ ६६ ॥

एद पि सुगम ।

सह्याए लक्ष्मीए ॥ ६७ ॥

सुगममेद ।

सायिक लम्बिते जीव अरुण्णियक होता है ॥ ६३ ॥

सह्याए कारजकम्माए कर्मके साथसे उत्पन्न हुए जीव परिजामका सायिक लम्बित कहते हैं, उसी सायिक लम्बिते जीव अरुण्णियक होता है यह धृष्टका तात्पर्य है । शरीर नामकर्मकी सत्ताका होना सायिकत्वके विरुद्ध नहीं है क्योंकि सायिक माव शरीर नामकर्मके अधीन नहीं है ।

भय्यमार्गवालुमार जीव मम्मसिद्धिक व अमम्मसिद्धिक कैसे होता है ? ॥ ६४ ॥

यह धृष्ट सुगम है ।

पारिणामिक मारसे जीव मम्मसिद्धिक व अमम्मसिद्धिक होता है ॥ ६५ ॥

यह धृष्ट भी सुगम है ।

जीव न मम्मसिद्धिक न अमम्मसिद्धिक कैसे होता है ? ॥ ६६ ॥

यह धृष्ट भी सुगम है ।

सायिक लम्बिते जीव न मम्मसिद्धिक न अमम्मसिद्धिक होता है ॥ ६७ ॥

यह धृष्ट सुगम है ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्टी णाम कध भवदि ? ॥ ६८ ॥

किमोदइएण किमुवसमिएण किं उइएण किं खओवसमिएण किं पारिणामिएपेपि  
शुद्धीए ऋऊणेद् कध होदि सि शुच ।

उवसमियाए खइयाए खओवसमियाए लट्टीए ॥ ६९ ॥

दसणमोहणीयस्स उवममेण उवसमसम्मच होदि, खएण खइय होदि, खओव  
समेण वेदगमम्मच । एदेमि तिणई सम्मत्ताण जमेयत्त त सम्माइट्टी णाम । तिस्से इमे  
तिष्णि मावा जय अतिथ तण सम्माइट्टी उवसमियाए खइयाए खओवसमियाए लट्टीए  
होदि सि उच । एजमेयस्स तिष्णि मावा ! ण, पुचमामण्णस्स एककस्स अककमेणाण्य  
अण्णाय अहा विराहो मत्थि तहा एयस्स अहुपरिणामदि विरोहामावावो ।

खइयसम्माइट्टी णाम कध भवदि ? ॥ ७० ॥

सुगममेद ।

सम्यक्त्वमार्गानुसार जीव सम्यग्दृष्टि कैसे होता है ? ॥ ६८ ॥

क्या औद्यमिक भावस सम्यग्दृष्टि होता है कि औपशमिक भावसे कि क्षायिक  
भावसे कि क्षायापशमिक भावसे कि पारिणामिक भावसे एसा मममें विचार कर  
पूजा गया है कि कैसे होता है ।

औपशमिक, क्षायिक और क्षायापशमिक सन्धिमे जीव सम्यग्दृष्टि होता  
है ॥ ६९ ॥

वशममोहनीयके उपशमस उपशम सम्यक्त्व होता है सपसे क्षायिक सम्यक्त्व  
हाता है और क्षायापशममे केवक सम्यक्त्व होता है । इम तीनों सम्यक्त्वोंका जो एकत्व  
है उसीका नाम सम्यग्दृष्टि है । जूकि इम सम्यग्दृष्टिके ये तीन भाग होते है इसीछिये  
सम्यग्दृष्टि औपशमिक क्षायिक प क्षायापशमिक सन्धिमे हाता है ऐसा कहा गया है ।

संज्ञा— एक ही सम्यग्दृष्टिके तीन भाग कैसे होते हैं ?

समाधान— जैसे स्पष्ट है सामान्य जिनका एसी एक ही वस्तुमें एक साथ जानेक  
पण होते हुए भी कोई विराय नहीं आता इसी प्रकार एक ही सम्यग्दृष्टिके अनेक  
परिणाम होममें कोई विराय नहीं है ।

जीव क्षायिकसम्यग्दृष्टि कैम होता है ? ॥ ७० ॥

यह एक सुगम है ।

खह्याए लक्ष्मीए ॥ ७१ ॥

इंसकमोहनीयस्स पिस्सेसविषासो खओ षाम । तम्हि उप्पण्णवीवपरिणामो  
लक्ष्मी षाम । तीए लक्ष्मीए खह्यसम्मादिट्ठी होदि ।

वेदगसम्मादिट्ठी णाम कध भवदि ? ॥ ७२ ॥

सुगममेद ।

खओवसमियाए लक्ष्मीए ॥ ७३ ॥

य बहो— सम्मत्तवत्तपादिफरयाणमर्णत्तगुणहायीए उदयमागदाणमइदहरत्तेसपादि  
चणेण उवसंतान वेण खओवसमसम्मा अरिख तेण तत्तुप्पण्णवीवपरिणामो सुओवसम  
लक्ष्मीसम्भियो । तीए खओवसमलक्ष्मीए वेदगसम्मत्त होदि ।

उवसमसम्मादिट्ठी णाम कध भवदि ? ॥ ७४ ॥

सुगमं ।

उवसमियाए लक्ष्मीए ॥ ७५ ॥

झायिक सम्भिस जीव झायिकसम्पगच्छि होता है ॥ ७१ ॥

इहोन्मोहनीय कर्मके निद्रोप विनाशको क्षय कइत है और उस क्षयसे जो  
जीवपरिणाम उत्पन्न होता है वह सायिक सम्भिस कहलाती है । वही सायिक सम्भिस  
जीव सायिकसम्पगच्छि होता है ।

जीव वेदकसम्पगच्छि कैसे होता है ? ॥ ७२ ॥

वह सूत्र सुगम है ।

झायोपशमिक सम्भिस जीव वेदकसम्पगच्छि होता है ॥ ७३ ॥

वह इस प्रकार है— समन्तगुणी हासिक प्राण उदयमें भाये हुए तथा समस्त  
मत्स्य देशमातिरन्तके रूपस उपदान्त हुए सम्पत्तमोहनीय प्रकृतिके देशघाती स्पर्शकोका  
कृत्कि क्षयोपशम नाम दिया गया है इसीप्रिय उस क्षयोपशमसे उत्पन्न जीव  
परिणामको क्षयोपशम सम्भिस कहते हैं । वही क्षयोपशम सम्भिस वेदक सम्पत्त  
हाता है ।

जीव उपशमसम्पगच्छि कम होता है ? ॥ ७४ ॥

वह सूत्र सुगम है ।

जोपशमिक सम्भिस जीव उपशमसम्पगच्छि होता है ॥ ७५ ॥

इदो ? दंसणमोहणीयस्त उवसमेभेदस्तुप्यचिर्दसनादो ।

सासणसम्माइट्टी णाम कध भवदि ? ॥ ७६ ॥

एत्थ पुञ्चं ष भिक्खेने काळण गोमागमदो भावसासणसम्माइट्टी पेत्तम्मो । सो कध होदि केण पयारेण हादि चि पुञ्छा ।

पारिणामिण्ण भावेण ॥ ७७ ॥

एतो सासणपरिणामो खईओ ण हादि, दसणमोहकस्वपणाणुप्यचीदो । न तत्रोवसमिओ वि, देसमादिफट्टयाणमुदण्ण अणुप्यचीण । उवसमिओ वि ण होदि, दसणमोहवसममाणुप्यचीदो । ओदइओ वि ण होदि, दसणमोहस्तुदपणाणुप्यचीदो । पारिसेसादा पारिणामिण्ण भावेण सासणो होदि । अणताणुवभीणमुदण्ण सासणगुणस्तु बलमादो ओदइओ मारा किण्ण उच्चदे । ण, दसणमोहणीयस्त उदय उवसम-स्वय एओवसमेहि विभा उप्यज्जदि चि सासणगुणस्त कारण चरित्तमोहणीय' तस्स दसण

क्योंकि दर्शनमोहनीय कर्मके उपशमसे उपशम सम्बन्धकी उत्पत्ति देखी जाती है ।

जीव सासादनसम्पगृष्टि कैसे होता है ? ॥ ७६ ॥

यहां पूर्वाहुसार भिक्षेपौंडो करके गोमागम भावसासादनसम्पगृष्टिका ग्रहण करना चाहिये । यह सासादनसम्पगृष्टि कैसे होता है अर्थात् किस प्रकार हाता है ऐसा सूत्रमें प्रश्न किया गया है ।

पारिणामिक भावसे जीव सासादनसम्पगृष्टि होता है ॥ ७७ ॥

यह सासादन परिणाम क्षायिक नहीं होता क्योंकि दर्शनमोहनीयके रूपसे उसकी उत्पत्ति नहीं होती । सासादन परिणाम क्षायोपशमिक भी नहीं है क्योंकि दर्शनमोहनीयके देशघाती स्पर्शकोंके उदयसे उसकी उत्पत्ति नहीं होती । सासादन परिणाम औपशमिक भी नहीं है क्योंकि दर्शनमोहनीयके उपशमसे उसकी उत्पत्ति नहीं होती । सासादन परिणाम औदयिक भी नहीं है क्योंकि दर्शनमोहनीयके उदयसे उसकी उत्पत्ति नहीं होती । अतएव पारिशेष न्यायसे पारिणामिक भावसे ही सासादन परिणाम होता है ।

शुद्धा—अनन्तानुबन्धी क्यार्योंके उदयसे सासादन गुणस्थान पाया जाता है अतएव उस औदयिक भाव क्यों नहीं कहते ?

समाधान—नहीं कहते क्योंकि दर्शनमोहनीयके उदय उपशम क्षय व क्षयोपशमके बिना उत्पन्न होनेसे सासादन गुणस्थावका कारण चरित्तमोहनीय कर्म ही हो

मोहणीयचबिरोहादो । अथांताशुर्बन्धीचदुक्क तदुमयमोहमं वे ? हादु नाम, किंतु मेदमेरु  
बिबक्षित्यं । अथांताशुर्बन्धीचदुक्क चरिचमाहनीयं चेदेति बिबक्षताए सासपगुणो  
पारिषामिजो चि भविदो ।

सम्मामिच्छादिद्वी णाम कथ भवदि ? ॥ ७८ ॥

सुगमं ।

स्वओवसमियाए लक्ष्मीए ॥ ७९ ॥

सम्मामिच्छत्तस सञ्चपादिक्कद्याणसुदएण सम्मामिच्छादिद्वी अदो होदि तेव  
वत्त स्वओवसमिमो भावो चि न सुअदे ! होदु णाम सम्मत्त पदुक्क सम्मामिच्छत्त  
क्कद्याणं सम्बपादिच, किंतु असुदगए बिबक्षितए न सम्मामिच्छत्तक्कद्याणं सम्बपादिच  
मत्थि, तसिसुदए संते वि मिच्छत्तसबलित्तम्मत्तकल्पस्सुचलंमादो । ताणि सम्बपादि  
क्कद्याणि उचंति अंसिसुदएण सञ्चं पादिअदि । न च एव सम्मत्तस गिम्मूल-

सकता हे और चरित्रमोहनीयके दर्शनमोहनीय माननेमें बिराघ माता है ।

प्रश्न—अथांताशुर्बन्धीचतुष्क तो दर्शन और चरित्र दोनोंमें माह उरर  
करनेवासा है ?

समाधान—मझे ही अथांताशुर्बन्धीचतुष्क उमयमोहनीय हो किंतु यहाँ वैसी  
बिबक्षा नहीं है । अथांताशुर्बन्धीचतुष्क चरित्रमोहनीय ही है इन्हीं बिबक्षासे सासा  
व्य गृहस्थानको पारिषामिक कहा है ।

बीच सम्मामिध्यादृष्टि कैसे होता है ? ॥ ७८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सापोपशमिक लम्बिसे बीच सम्मामिध्यादृष्टि होता है ॥ ७९ ॥

प्रश्न—क्योंकि सम्मामिध्यात्व नामक दर्शनमोहनीय प्रकृतिके सर्वघाती  
स्पर्शकोंके बहयसे सम्मामिध्यादृष्टि होता है इसलिये उररके सापोपशमिक माह उपयुक्त  
नहीं है ?

समाधान—सम्मामिध्यात्वकी अपेक्षा मञ्जु ही सम्मामिध्यात्वके स्पर्शकोंमें सर्वघाती  
बना हो किंतु अशुद्धमयकी बिबक्षासे सम्मामिध्यात्व प्रकृतिके स्पर्शकोंमें सर्वघातीपना  
नहीं होता क्योंकि उररका उरर रहनेपर भी मिध्यात्वमिथित सम्मामिध्यात्वका कल्प  
पाया जाता है । सर्वघाती स्पर्शक तो उररके कहते हैं किन्तु उररका उरर होनेसे समस्त  
( प्रतिपक्षी गृहका ) घात हो जाय । किंतु सम्मामिध्यात्वकी ब्यवस्थामें तो हम

निर्गारं पेन्छामो, सञ्भूदासञ्भूदत्वेसु सुल्लस्सइहणदसणादा । तदो जुअदे सम्मा  
मिच्छत्तस्स सञ्जोपसमिञ्जो मानो पि ।

मिच्छादिद्वी णाम कध भवदि ? ॥ ८० ॥

सुगमं ।

मिच्छत्तकम्मस्स उदएण ॥ ८१ ॥

एद पि सुगम ।

मणियाणुवादेण सण्णी णाम कधं भवदि ? ॥ ८२ ॥

सुगम ।

खञ्जोवसमियाए लद्धीए ॥ ८३ ॥

पोहदियावरमस्स सञ्जपादिकरयाण जादिवसेण अणत्तगुणाहाणीए हाइण वेस  
पादिच पाविय उवसताणमुएण सण्णिसदंसणादो ।

असण्णी णाम कध भवदि ? ॥ ८४ ॥

सम्पत्त्वका निर्मूल बिनाश नहीं देखते क्योंकि यहाँ सब्भूत और असब्भूत पदार्थोंमें  
समाव भङ्गान होता देखा जाता है । इसलिये सम्पत्त्विकात्त्वको क्षायापहामिक माव  
मातना उपयुक्त है ।

जीव मिथ्यादृष्टि कैसे होता है ? ॥ ८० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यात्वकर्मके उदयसे जीव मिथ्यादृष्टि होता है ? ॥ ८१ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

संज्ञीमार्गानुसार जीव संज्ञी कैसे होता है ? ॥ ८२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

आपोपपामिक सञ्चिसे जीव संज्ञी होता है ॥ ८३ ॥

क्योंकि मोहाद्विषावरण कर्मके सर्षपाती स्पर्षकोंके अपवी आतिविशेषके  
प्रमाणसे अनन्तगुणी कामिकप पावके द्वारा देशघातित्वको प्राप्त होकर उपरान्त हुए  
पुनः कर्षिके उदय होनेसे संज्ञित्व उत्पन्न होता देखा जाता है ।

जीव असंज्ञी कैसे होता है ? ॥ ८४ ॥

सुगमं ।

ओदहृण भावेण ॥ ८५ ॥

गोत्रदियावरणस्य सन्त्रपादिपद्याममुदयस्य असम्भितस्त दसपादो । य च  
गोत्रदियावरणमसिद्धं कञ्जणय-वदिरेगोहि कारणस्त अत्रिचसिद्धीयो ।

येव सण्णी येव असण्णी णाम कधं भवदि ? ॥ ८६ ॥

सुगममेर्द ।

खद्याए लद्धीए ॥ ८७ ॥

बाणावरणस्य विन्मूलकखण्डपुण्यपरिणामो इदियगिरेवेकलठमल्लनो खद्या लद्धी  
णाम । तीए खद्याए लद्धीए येव-सण्णी नव-जसम्भितं होदि ।

आहाराणुवादेण आहारो णाम कधं भवदि ? ॥ ८८ ॥

सुगममेर्द ।

ओदहृण भावेण ॥ ८९ ॥

यह सब सुगम है ।

औद्यिक भारसे जीव असंझी होता है ॥ ८५ ॥

क्योंकि मोक्षत्रियावरणकर्मके सर्वघाती स्पर्शकोंके उदयस्य असंझी भाव देखा  
जाता है । मोक्षत्रियावरण कर्म अस्तित्व मी नहीं है क्योंकि कार्यके अन्वय और  
परिणामके श्राय कारणके अस्तित्वकी सिद्धि हा जाती है ।

जीव न संझी न असंझी कैमे होता है ? ॥ ८६ ॥

यह सब सुगम है ।

सायिक सम्भिते जीव न संझी न असंझी होता है ॥ ८७ ॥

बाणावरण कर्मके निर्मूलक खण्डपुण्यपरिणामो इदियगिरेवेकलठमल्लनो जीवपरिणाम  
जल्लन होता है उसीको सायिक सम्भिते कहते हैं । उन्नी सायिक सम्भिते जीव न संझी  
न असंझी होता है ।

आहारमागंणानुमार जीव आहारक कैम होता है ? ॥ ८८ ॥

यह सब सुगम है ।

औद्यिक भारसे जीव आहारक हाता है ॥ ८९ ॥

ओरालिय-वेठम्बिय आहारसरीराणमुदएण चाहारो होदि । तेजा-कम्मइयाण मुदएण आहारो किप्प बुच्चदे ? अ, विग्गहगदीए वि आहारिचप्पसंगादो । य च एवं, विग्गहगदीए अनाहारिचदसणादो ।

अणाहारो णाम कर्ध भवदि ? ॥ ९० ॥

सुगममेद ।

ओदइएण भावेण पुण सुइयाए लद्धीए ॥ ९१ ॥

अत्रोगिमयंतत्स सिद्धात्त च अणाहारच सुइयं पादिकम्माण सम्भक्कमाण च खएण । विग्गहगदीए पुण ओदइएण भावेण, तत्थ सम्भक्कमाणमुदयदसणादो ।

एकमेगत्रिकेण सामिन्त णाम अभिभोगहारं समच ।

भौतिक बिक्रियिक च आहारक शरीरनामकमे प्रकृतियोंके उद्यस जीव आहारक होता है ।

मुक्का—तैजस और कामण शरीरोंके उद्यसे जीव आहारक क्यों नहीं होता ?

समाधान—नहीं होता क्योंकि वैसा माननेपर विग्रहगतिमें भी जीवके आहारक होनेका प्रसंग आजायगा । और वैसा है नहीं क्योंकि विग्रहगतिमें जीवके अनाहारक भाव पाया जाता है ।

जीव अनाहारक कैसे होता है ? ॥ ९० ॥

यह रूप सुगम है ।

औद्यिक मात्रसे तथा ध्यायिक लक्षिस जीव अनाहारक होता है ॥ ९१ ॥

अधोधिकेवसी भगवात् और सिद्धोंके ध्यायिक अनाहारक होता है क्योंकि इनके क्रमशः घातिया कर्मोंका च समस्त कर्मोंका क्षय होता है । किन्तु विग्रहगतिमें औद्यिक मात्रसे अनाहारक होता है क्योंकि विग्रहगतिमें सभी कर्मोंका उद्य पाया जाता है ।

इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्य नामक अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।



## एगजीबेण कालाणुगमो

एगजीवेण कालाणुगमेण गदियाणुवादेण गिरयगदीए णेरइया  
केवचिर कालादो होति ? ॥ १ ॥

एग्य मूलाहां किण्व परुभिदा ? न, अउमाइपरुवणत्त उदवगमाओ । गिरय-  
गइणिएमा ससगइणिसेइहो ।

जहण्णेण दसवस्ससइस्साणि ॥ २ ॥

तिरिक्खस्स वा मज्झस्सस्स वा दसवस्ससइस्साउट्टिदीयसु णरएसु उप्पगिइएण  
भिण्णिइइस्स दसवस्ससइस्समेचट्टिदिइसगाओ ।

उक्कस्सेण तेत्तीस सागरोवमाणि ॥ ३ ॥

तिरिक्खस्स वा मज्झस्सस्स वा सत्तमाए पुट्ठवीए तेत्तीससागरोवमाउट्टिदि बभित्ठय  
उरुप्पज्जिम सगट्टिदिमणुपालिय भिण्णिइइस्स तेत्तीससागरोवममेचपिरयभाणुवत्तमाओ ।

एक जीवकी अपेक्षा कालानुगमसे गतिमार्गानुसार नरकगतिमें नारकी कितने  
काल तक रहते हैं ? ॥ १ ॥

पुंज—यहां मूखीय मर्घात् गतिस्तानाम्यकी अपेक्षा प्रकृत्या क्यों बर्हो की ?

समाधान—नहीं की, क्योंकि जारो गतियोंके प्रकृत्यसे उत्तका ज्ञान हो ही  
जाता है ।

सूत्रमें नरकगतिका निबंश दोय गतियोंके निवेद्य करनेके छिये किया गया है ।

जीव कमस कम दस हजार बय तक नरकगतिमें रहता है ॥ २ ॥

क्योंकि किसी तिर्यक या मनुष्यके बराबर बर्षकी आयुस्थितिवाले माराकिसोंमें  
उत्पन्न होकर बर्हसि निक्ख ज्ञानपर नरकमें दस हजार बयमात्रकी स्थिति पावी जाती है ।

जीव अधिकमें अधिक तेत्तीस सागरोपम काल तक नरकमें रहता है ॥ ३ ॥

किसी तिर्यक या मनुष्यके सातवीं पृथिवीमें तेत्तीस सागरोपमकी आयुस्थितिको  
बांधकर व बर्हो उत्पन्न होकर अपनी स्थिति पूरी करके निक्ख ज्ञानपर तेत्तीस सागरो  
पममात्र नरकमात्र पाया जाता है ।

पढमाए पुढवीए णेरइया केवचिर कालादो होति ? ॥ ४ ॥

‘केवचिर’ सरो समय-खण-लख-मुहुच-दिवस-पक्ष-मास-उडु-अयम-सवन्तर-पुग-पुष्प-पस्त सागरोवमादीनि अवेकखदे । सेस सुगमं ।

जहण्णेण दसवाससहस्साणि ॥ ५ ॥

सुगममेद, निरजोषमि परुविदत्तादो ।

उक्कस्सेण सागरोवम ॥ ६ ॥

पढमाए पुढवीए सागरोवमाउडुदिं बंधिदुम पढमाए पुढवीए तप्पज्जिय सग द्विमणुपासिय गिरिपडिदतिरिक्ख-मणुस्सेसु तदुवलमादो । एद पढमाए पुढवीए बुचवहणुपकस्साउअ सीमंत गिरय रोऊअ मत् उरुमंत-समंत-असंत-विम्म-उच-तसिद-वक्कत्त अवक्कत्त-विककत्तसुण्णित्तेरसण्णिमिदयाअ ससडीवडु-पइप्पयाअ किमेव चेव होदि आहो व होदि ति ? एदेसिं सम्भेसिं एद चेव अहणुपकस्साउअ व होदि, किंतु

प्रथम पृथिवीमें नारकी जीव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ४ ॥

‘कितने काल तक यह शब्द समय सप्त मय, मुहुत्त दिवस पक्ष मास ऋतु, अयम संवत्सर पुग पूर्व, पस्य व सागर भादि कालमानोंकी अपेक्षा रक्ता है ।

प्रथम पृथिवीमें नारकी जीव कमसे कम दश हजार वर्ष तक रहते हैं ॥ ५ ॥

यह सुन सुगम है क्योंकि इसकी प्रकृषा भाष नारकीयोंकी प्रकृषामें की जा चुकी है ।

प्रथम पृथिवीमें नारकी जीव अधिकमें अधिक एक सागरोपम तक रहते हैं ॥ ६ ॥

क्योंकि प्रथम पृथिवीकी एक सागरोपम आयुस्थितिकी बांधकर प्रथम पृथिवीमें उत्पन्न होकर व अपनी स्थितिमें पूरी करके बर्हासे निकलमयास तिर्यंथ व मनुष्योंके एक सागरोपमकी मरकस्थिति पायी जाती है ।

वृत्ता — यह जो प्रथम पृथिवीकी अघन्य भीर उत्कृष्ट आयु बतलायी गई है सो क्या सीमन्त मरक रौरव आन्त उद्भ्रात संभ्रात मसंभ्रात विभ्रात तप्त, वसित बन्धन्त भवन्धन्त भीर विन्धन्त नामक तेरहों इन्द्रको तथा उनसे सम्बन्ध अवीचर्य भीर प्रकीर्णक सब विडोंकी वही आयुस्थिति होती है या नहीं होती ?

समाधान—प्रथम पृथिवीके उक्त समस्त विडोंकी अघन्य भीर उत्कृष्ट आयु

सन्धेसि पुष पुष अहण्युक्कस्मात्तमं हादि । स बहा—

सीमतामि ससेडीबद्ध पश्य्यपमि अहण्यमातत्र दमवस्तसहस्साभि, उक्कस्त  
 षाठदिवस्तसहस्साभि [१००००।१००००] । विदियपत्यडे षाठदिवस्तसहस्साभि सम-  
 याहियाभि अहण्यमातत्रं, उक्कस्मं पुष षण्णुदिवस्तसहस्साभि । १००००००० । तदिय  
 पत्यडे अहण्यमातत्रं षाठदिवस्तसहस्साभि समयाहियाभि । १००००००० । उक्कस्त  
 मसंखन्नात्रा पुक्ककोडीश्रो । षाठत्यपत्यडे अहण्यमसंखन्नात्रो पुक्ककोडीश्रो समया-  
 हियात्रा, उक्कस्मं सागरात्रमस्म दममभागा । इम गृह हादि अप्यवादो, सागरोत्रम  
 भूमी होदि बहुदरवादो । भूमिदो क्यसरिसञ्चदादो सुदममभिय इदिदे सुदसेममेविर्प  
 हादि [१] । पुषा उस्तथा दम हादि, दमसु अक्किदक्किहाभिर्दसगादो । तत्य दससु  
 पदमस्म बभूी पतिथ सि एगस्वमभिय सुदसेममभादक्किदे ल्दं वक्कि हाभिपमायं होदि  
 [१] । एत्य उषउञ्जती करणगाहा—

एतनी ही नहीं होती किन्तु सब बिसोंकी पूरक पूरक अप्य भार उत्कृष्ट भायु होती है ।  
 यह इस प्रकार है—

अपम भोजीबद्ध भीर प्रकीर्णक बिसों सहित सीमन्त नामक प्रथम इन्द्रकर्म  
 अप्य भायु दस हजार वर्ष भीर उत्कृष्ट भायु लभ्य इमार वर्षकी होती है [१००००।१००००] ।  
 दूसर पापकर्म अप्य भायु एक समय अधिक मन्त्र हजार वर्ष भीर उत्कृष्ट भायु सात वर्षकी  
 होती है । १००० । तीसरे पापकर्म अप्य भायु एक समय अधिक मन्त्र छाल वर्ष  
 १००० भीर उत्कृष्ट भायु असंख्यात पूर्वकाटिबोंकी होती है । चतुर्थ पापकर्म  
 अप्य भायु एक समय अधिक असंख्यात पूर्वकोटि भीर उत्कृष्ट भायु एक सागरोपमक  
 दसम भाग होती है । यही सागरोपमका दशमोस मुल कह्यता है क्योंकि यह अस  
 है तथा पूरा एक सागरोपम भूमि कह्यता है क्योंकि यह मुगकी मदेरा बड़ा है ।  
 भूमिः मुगक समान भागोम ग्रीहित करके उसमेंसे मुगका घटाइलपर दस भाग हाता  
 है— १ - १ = १० । उत्कृष्ट भायु है क्योंकि चतुर्थ भादि तरहमें पापकर्म पर्यन्त  
 दस पापकर्मोंका आयुममात्र निकारना है भार इहाँ दस दशमोस भवसियत हाभि वृद्धि  
 पायी जाती है । इन दस दशमोस चतुर्थ पापकर्म संबंधी प्रथम दशमोस ता वृद्धि है नहीं ।  
 इसलिये यह दस दशमोस घटाकर शत्रु भीका नी बट दशमोस भाग ब्रजस जा लभ्य जाता है  
 वह वृद्धि हाभिना ब्रजस हाता है । ( १ - १ - ११ + १ = १ ) । यही बिस  
 करण भाया उपपत्ती है—

सुख मूमीण निससो उण्ठपमभिनो दु जो हने बड्डी ।  
बड्डी इण्ठगुणिदा मुइसदिया होइ बड्डीपत्त ॥ १ ॥

पुणो एवमाभिदबड्डी दंससु ठाणेसु ठविय पगादिपगुत्तरसलागादि गुणिय सुइ  
पकखे कदे इण्ठिद-इण्ठिदपत्तडाअमाउअ होदि । ससम पमाणमेद  $\frac{१}{१} | \frac{१}{१} | \frac{१}{१} | \frac{१}{१} | \frac{१}{१}$   
 $\frac{१}{१} | \frac{१}{१} | \frac{१}{१} | \frac{१}{१} | \frac{१}{१}$  । एसो अत्थो सुत्ते अबुत्तो कथं णब्बेदे ? किमिदि ण पुत्तो, पुत्तो  
पेर देसामासियभावेण । एद सुत्तं देसामासियमिदि कुत्तो णब्बेदे ? गुरुबदेमादो ।

विदियाए जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइया केवचिर कालादो  
होति ? ॥ ७ ॥

सुख और मूमिका जो विशय अर्थात् अन्तर हो उसे बस्तेघस भाजित करवनेपर  
जो बुद्धिका प्रमाण जाता है उस बुद्धिका अमीएने गुणा करके मुत्तम जोकनेपर बुद्धिका  
पत्त प्राप्त हो जाता है ॥ १ ॥

पुनः इस प्रकार साथे हुए बुद्धिके प्रमाणको दश स्थानोंमें स्थापित कर एकादि  
उत्पत्तर बड्डी हुई शखाकामोंसे गुणितकर लम्पको मुत्तम में मिमा वेनेसे प्रत्येक अमीए  
पायकेका आयुप्रमाण निकल जाता है । इस प्रकार निकासो हुआ अतुर्थ भादि पायकेका  
आयुप्रमाण निम्न प्रकार है —

कम सं	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
पायका	४	७	९	७	८	९	१	११	१२	१३
आयुम	१६	२०	१६	६	६	३	१६		१६	१

शंका—एसा अर्थ सूत्रमें ना कहा नहीं गया फिर यह कहाँस जाना जाता है ?

समाधान—कैसे नहीं कहा गया ? देहामर्शक भायसे कहा ता गया है ।

शंका—प्रस्तुत सूत्र देहामर्शक है यह कैसे जान लिया ?

समाधान—गुरुजीके उपदेशसे हमन जाना कि प्रस्तुत सूत्र देहामर्शक है ।

दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तकके नरकोंमें नारकी भी कितन फल  
तक रहते हैं ? ॥ ७ ॥

मन्त्रसि पुष पुष अहण्णुक्कस्माउअं हादि । त अहा—

सीमंतमि समहीषद्द पदण्ययमि अहण्णामाउअं दमबस्ससहस्साणि, उक्कस्स पउदिबस्ससहस्साणि [१०० ०।९ ०००] । विदियपत्तयड षठदिबस्समहस्साणि सम यादियाणि अहण्णमाउअं, उक्कस्सं पुण पउदिबस्ससहस्साणि । ९००००००० । तदिय पत्तयड अहण्णमाउअं पउदिबस्समहस्साणि समयादियाणि । ९००००००० । उक्कस्स-ममत्तज्जाआ पुग्गकाहीओ । षउत्तमपत्तयड अहण्णमसंखरुआओ पुग्गकैहीओ समया दियामा, उक्कस्सं सागरत्तमस दमममागा । इमं सुह हादि अप्पवादो, सागरोषम मूमी होदि बहुदरवादा । भूमिदो क्कपसरिमन्डशादा सुहमवणिय वृविदे सुहसेममपिर्ष होदि [१] । पुगा उत्तभा दम हादि, दमसु अरुद्धिबवद्धिहापिदसजादो । तत्त दससु पदमस वद्धी गरिय ति एग्गवमणिय सुदमेमपआहिद उद्द वद्धि हापियमाण होदि [१] । एष उउउमेणी करणगाहा—

इतमी ही वही हाती किणु सब विमोकी पूयक पूयक अण-व भीर उत्तह भायु हाती है । एह इत प्रकार है—

अपन अभीवज भीर प्रकीर्णक विमो सहित सीमन्त नामक प्रथम इन्द्रकर्म अण्य भायु द्वा द्वार पर भीर उत्तह भायु मध्य द्वार बरही होती है [१०० १९ ०००] । दूसरे पापकर्म अण्य भायु एक समय अधिक मन्त्र द्वार पर भीर उत्तह मन्त्र साल बरही हाती है । ० ०००० । तीसरे पापकर्म अण्य भायु एक समय अधिक मन्त्रे काळ पर ९०००००० भीर उत्तह भायु अस्सक्यात पूषकाटिपोंकी होनी है । अतुप पापकर्म अण्य भायु एक समय अधिक अस्सक्यात पूषकोटि भीर उत्तह भायु एक सागरापमके दाम माग हाती है । वही सागरापमका द्वामांस मुग्ग कहलाता है क्योंकि, वह अण्य है तथा पूषा एक सागरापम भूमि कहलाता है क्योंकि यह मुग्गकी अपेक्षा बड़ा है । मूषिण मुग्गक समान मागोंमें रोहित करके उच्चमेंले मुग्गका घटात्मपर दोष मान हाता है—  $१ - १' = १$  । उभाय द्वा है क्योंकि अतुप भादि तरहमें पापक पर्यन्त द्वा पापकोंका आयुजमात्र निकालना है आर इही द्वा स्थानोंमें व्यवस्थित हाति वृद्धि पायी जाती है । इस द्वा स्थानामें अतुप पापक संबंधी प्रथम स्थानमें ता वृद्धि है नहीं । इसलिय एकका द्वामेंले घटाकर उर भीका भी बट द्वामें माग दमन आ साथ जाता है यह वृद्धि हातिना प्रमाक हाता है।  $(१० - १ - १ + ९ = १)$  । वही मिक्ष काल गाथा उपर्योगी है—

एतय अहासयभाओ अस्लिण्दन्वा । एदाणि दा वि सुत्ताणि देसामासियाणि,  
 पादेकं पुढवीणं जहण्णुकस्सद्धिदीपरूक्खणामुहेण सम्भपत्यडाणमाउद्धिदिषणणादो । एदेहि  
 दादि वि सुत्तेहि सच्चिदत्यस्स परूक्खण कस्सामो । तं जहा तणओ' यणमो मणओ  
 मणओ षादा सघादो त्रिष्मा त्रिष्मओ लोलो सल्लुओ षणलोलुवा वेदि ण्द विदिय  
 पुढवीए इत्या । एदेसिमाउद्धिदीए आपिञ्जमाणाए पढमपुढविउक्कस्साउअ सुहं काळम  
 भिदियाए पुढवीए उक्कस्साउअ मिष्मिमागरोवमपमाण भूमि काळम एक्कारम इंदए  
 उत्सेहं काळम पुम्बिल्लकरणगाहाए विदियपुढवीएक्कारमपत्यडाण पादकणमाउपमाण  
 माणदम्भं । तसि पमाणमद  $\left[ \begin{array}{c|c|c|c|c|c|c|c|c|c|c|c|c} \frac{1}{2} & \frac{1}{2} & \frac{1}{2} & \frac{1}{2} & \frac{1}{2} & \frac{1}{2} & \frac{1}{2} & \frac{1}{2} & \frac{1}{2} & \frac{1}{2} & \frac{1}{2} & \frac{1}{2} & \frac{1}{2} \\ \hline 1 & 1 & 1 & 1 & 1 & 1 & 1 & 1 & 1 & 1 & 1 & 1 & 1 \end{array} \right] ३$  । तदियाए  
 पुढवीए तघो तसिदो तवणा तावणा गिदाहो पञ्जलिदो उज्जलिदो सुपञ्जलिअ संपज्ज

यहां पर सूत्रके अर्थ करना यथासंभव व्याख्या माध्य ज्ञाना आदि अर्थान्  
 तीम सात आदि सागरोपमोंका क्रमशा दूसरी, तीसरी आदि पृथिवीयोंके आयुप्रमाण  
 रूपस योजित करना चाहिये। पूर्वोक्त शानों सूत्र इशामर्क हैं क्योंकि य प्रत्येक पृथिवीकी  
 अक्षय्य और उत्तम स्थितिकी प्रकृपणा द्वारा अपने अपने समस्त पाषाणोंकी आयुस्थितिकी  
 सूचना करते हैं। अब हम यहां इन शानों सूत्रोंके द्वारा सूचित अर्थका प्रकृपण करते हैं।  
 यह इस प्रकार है -

तनक स्तनक यनक मनक घात संघात जिध जिन्धक सोम आनुय और  
 स्तनसोनुय य मनशा द्वितीय पृथिवीके ग्यारह इन्द्रकोंके नाम हैं। इसकी आयुस्थिति  
 आनेके मिय प्रथम पृथिवीकी उत्तम स्थितिकी मुग्य करके तथा दूसरी पृथिवीकी तीम  
 सागरोपम प्रमाण उत्तम आयुका भूमि करके आर ग्यारह इन्द्रकोंका उत्सव करके पूर्वोक्त  
 करणगाथानुसार द्वितीय पृथिवीके ग्यारह पाषाणोंमें प्रत्येकका आयुप्रमाण स मात्रा  
 चाहिये।

उदाहरण—जि १ संघर्षी मुग्य = १ सा भूमि = ३ सा उत्सव = ११ अतएव  
 प्रत्येक प्रस्तक मिये सूत्रिका प्रमाण हुआ - (३-१) - ११ = ११ । इसका इच्छा अर्थान्  
 प्रस्तकी क्रमसंरपास गुणा करनेपर य भूमिमें मिश्रानेपर ग्यारहों प्रस्तोंका आयुप्रमाण  
 इस प्रकार आता है—

प्रस्तक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
मा य सा	१११	१११	१११	१११	१११	२११	२११	२११	२११	२११	१

तीसरी पृथिवीमें तस अमित तपन तापन निशच प्रकृपित उज्जलि

सुगममेर्द ।

जहण्णेण एकं तिण्णि सत्त दस सत्तारस वावीस सागरो-  
वमाणि सादिरेयाणि ॥ ८ ॥

बिदियाए पुढ्डीए समयाहियमेक्कं सागरोवम । तदियाए पुढ्डीए तिण्णि  
सागरोवमाणि समयाहियाणि । अउग्गीए पुढ्डीए सत्त सागरोवमाणि समयाहियाणि ।  
पथमीए पुढ्डीए दस सागरोवमाणि समयाहियाणि । छट्ठीए पुढ्डीए सत्तारस सागरो-  
वमाणि समयाहियाणि । सत्तमीए पुढ्डीए वावीस सागरोवमाणि समयाहियाणि ।  
सादिरेयमिदि बुत्ते एक्का पथ समयो अदिजा ति कथ वज्जदं ? 'उत्तरिन्तुक्कस्सट्ठीरी  
समयाहिया इट्ठिमपुढ्डीण चहण्णा' ति वयणादो गम्भदे ।

उत्कस्सेण तिण्णि सत्त दस सत्तारस वावीस तेत्तीस सागरो  
वमाणि ॥ ९ ॥

पह सत्त सुगम हे ।

कमसे कम दूमरी पूयिणीमें कुछ अधिक एक सागरोपम, तीसरीमें कुछ अधिक  
तीन, चौथीमें कुछ अधिक सात, पांचवीमें कुछ अधिक दस, छठवींमें कुछ अधिक  
सत्तर और सातवींमें कुछ अधिक बार्हस सागरोपम तब नारकी जीव रहते हैं ॥ ८ ॥

दसवीं पूयिणीमें एक समय अधिक एक सागरोपम तीसरी पूयिणीमें एक समय  
अधिक तीन सागरोपम चौथी पूयिणीमें एक समय अधिक सात सागरोपम पांचवीं  
पूयिणीमें एक समय अधिक दस सागरोपम छठी पूयिणीमें एक समय अधिक सत्तर  
सागरोपम और सातवीं पूयिणीमें एक समय अधिक बार्हस सागरोपम प्रायुका प्रमाण है ।

संज्ञा—सूत्रमें आ सातिरेक अर्थात् 'कुछ अधिक' शब्द माया है उससे एक  
मात्र समय ही अधिक होता है यह कैसे जान लिया ?

समाधान— क्योंकि 'अत्तरोत्तर ऊपरकी उत्कृष्ट स्थिति एक समय अधिक होकर  
नीचे कीचड़ी पूयिणीयोंकी अल्प स्थिति होती है' इस भागमबचनसे ही जाना जाता  
है कि उपर्युक्त पूयिणीयोंकी अल्पप्रायुमें सातिरेकका प्रमाण एक मात्र समय अधिक है ।

द्वितीयादि पूयिणीयोंमें नारकी जीव अधिकसे अधिक क्रमशः तीन, सात, दस,  
सत्तर, बार्हस और तेत्तीस सागरोपम कल एक रहते हैं ॥ ९ ॥

क्कस्साउअं च समयार्हियं चावीस तेचीस सागरोपमाणि २२।२३।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खो केवचिर कालदो होदि ? ॥ १० ॥  
सुगममेद ।

जहण्णेण खुदाभवग्गहण ॥ ११ ॥

मज्जुस्मेहिंसो आगतूण तिरिक्खअपज्जत्तेसुप्पज्जिय सत्थ अहम्पाठङ्किदिमच्छिय  
भिष्किङ्किण गदस्स सुदाभवग्गहणमेचअहम्पाकालुबलंमादो ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसस्सेज्जपोग्गलपरियट्टं ॥ १२ ॥

अप्यपिद्दगदीहिंसो आगतूण तिरिक्खेसुप्पज्जिय आरलियाए असंखेच्चदिमाग  
मेचपोग्गलपरियट्ट तिरिक्खेसु परियट्टिण अम्मगदिं गदस्स सुत्तुक्कालुबलंमादो ।  
असंखेच्चपोग्गलपरियट्टेत्ति वुत्ते आरलियाए अमखेच्चदिमागमेचा वेव होत्ति ।

एक समय अधिक चाईस सागरोपम तथा उहृष्ट आयु तेवीस सागरोपम है । २२। ३३।

तिर्यचगतिमें तिर्यच जीव कितने काल तक रहता है ? ॥ १० ॥

एह एव सुगम है ।

१ तिर्यचगतिमें तिर्यच जीव कमसे कम एक सुद्रमवग्रहण काल तक रहता  
है ॥ ११ ॥

क्योंकि मज्जुप्पगतिसे भाकर तिर्यच अपर्याप्तकोंमें उत्पन्न होकर वहां अघम्य  
आयुस्तिपतिमात्र काल रहकर वहांसे निकलनेवाले जीवके सुद्रमवग्रहणमात्र अघम्य  
काल पाया जाता है ।

तिर्यचगतिमें जीव अधिकतः अधिक असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अनन्त  
काल तक रहता है ॥ १२ ॥

क्योंकि अविचक्षित गतियोंसे भाकर तिर्यचोंमें उत्पन्न होकर भीर भावकीके  
असंख्यातवें भागमात्र वार पुद्गलपरिवर्तन काल तक तिर्यचोंमें परिभ्रमण करके अघ्य  
गतिमें जानेवाले जीवके सुद्रोक्त असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अनन्त काल  
पाया जाता है । असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन कहनेका तात्पर्य भावकीके असंख्यातवें  
भागमात्र वारस है ।



सिदा सि षदे षड इंदया । एदेसिमाउर्ध्वं पुञ्ज व आगिद्रूप आयुर्ध्वं । तसि संदिद्धी एसा

१	१	२	३	४	५	६	७
---	---	---	---	---	---	---	---

 । षउरधीए पुडवीए आरा तारे मारो बंतो तमा खारो

खदखदो षेदि सष इंदया । एदेसिमाउअपमार्धं पुञ्ज व आगेद्वर्धं । तस्स संदिद्धी एसा

१	२	३	४	५	६	७
---	---	---	---	---	---	---

 । पंचमीए पुडवीए तमो भमो स्रसो खभो तिमिसो षेदि

पंच इंदया । एदेसिमाउअपमागस्स संदिद्धी एसा 

१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---

 । छट्टीए पुडवीए

हिमो बहसो तस्संस्त्रो षदि तिभिण इंदया । तेसिमाउअपमागस्स संदिद्धी एसा

१	१	२२
---	---	----

 । सषमाए पुडवीए अवशिष्टाणमिदि एकस्त्रे षउ इंदमो । तस्य बहसु

सुमन्वक्षित मीर संप्रवृद्धित नामक षड इन्द्रक हैं । इनकी आयु मी पूर्वोक्त विधिते जानकर के भासा चाहिये । उनकी संरधि इस प्रकार है—

प्रस्तर	१	२	३	४	५	६	७	८	९
मा म सा	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०

बीषी पृथिवीमें मार तार, मार वास्त तम कात मीर कातकात नामक सात इन्द्रक हैं । इनका आयुप्रमाण मी पूर्वानुसार के भासा चाहिये । इसकी संरधि इस प्रकार है—

प्रस्तर	१	२	३	४	५	६	७
मा म सा	७३	७५	७७	७९	८१	८३	८५

पांचवीं पृथिवीमें तम भ्रम स्रप अन्ध मीर तिमिन्न नामक पांच इन्द्रक हैं । इनके आयुप्रमाणकी संरधि इस प्रकार है—

प्रस्तर	१	२	३	४	५
मा म सा	११२	१२३	१३४	१४५	१५६

छठी पृथिवीमें हिम कर्क मीर कर्तुक नामक तीन इन्द्रक हैं । इनके आयु प्रमाणकी संरधि यह है—

प्रस्तर	१	२	३
मा म सा	१८३	२०४	२२

सातवीं पृथिवीमें अवधिरपाव नामक एक ही इन्द्रक है । वहाँ अल्प आयु

१ कर्कटी पृथिवीवास्तव्य नामक इति पाठ ।

२ मरुतु नामक इति पाठ ।

अर्णिदिएहिंते' आगत्तण पंचिदियतिरिक्ख-पंचिदियतिरिक्खपञ्जत्त-पंचिदिय  
तिरिक्खजोभिणीसु उप्पज्जिय जहाकमेण पचाणउदि-सत्तेचालीस-पण्णारसपुष्पकाडीओ  
परिभमिय दाणेण दाणाणुमोदणेण वा तिपत्तिद्वेवमाठड्ढिदिएसु तिरिक्खेसु उप्पज्जिय  
सगजाठड्ढिमच्छिय देवेसु उप्पण्यस्स एत्तिपमेत्तकालस्सुबलमादो । कर्षं तिरिक्खेसु  
दाणस्स समथो ? न, तिरिक्खसज्जदामज्जदाम सच्चित्तमंजणे गहिदपच्चक्खामं सस्सपत्त-  
वादिं देततिरिक्खान उदधिरोषादो । इत्थि-पुरिस-णवुंमयवदेसु महुक्खपुष्पकाडीओ  
अच्छदि चि क्ख णक्खेदे ? आइरियपरपरागयउवदेसादो ।

पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्ता केवचिर कालादो होति ? ॥ १६ ॥  
सुगममेद ।

जहण्णेण खुदाभवग्गहण ॥ १७ ॥

क्योंकि पंचमिन्द्रियाँका छोड़ एकमिन्द्रिय भावि भग्य ज्ञानीय जीवोंमेंसे आकर  
पंचमिन्द्रिय तिर्येच पंचेन्द्रिय तिर्येच पर्याप्त य पंचमिन्द्रिय तिर्येच परिभमती जीवोंमें उत्पन्न  
होकर कर्मदाः पंचानये सैतार्थान् य पन्त्रह पूर्वकोटिप्रमाण काळ तक परिभ्रमण करके  
दान क्षमस अधवा दामका अनुमोहन करनेसे तीस पण्यापमडी आयुस्थितियाळ भोग  
भूमिक तिर्येचोंमें उत्पन्न होकर अपनी आयुस्थितिमात्र यहाँ रहकर देवोंमें उत्पन्न होने  
वाले जीवके सुखोक्त काळ घटित होता पाया जाता है ।

सुंझ—तिर्येचोंमें दान देना कैसे समथ हो सकता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि जो तिर्येच संयतामयत जीव सच्चित्तमंजमके  
प्रत्याप्याप्त मर्यात् अतको ग्रहणकर लेते हैं उनके नियं दाहकीकि पत्तों मादिका दान  
करनवासे तिर्येचोंके दान दना मात्र लभेमें कोई विरोध नहीं माना ।

सुंझ—एरी पुरुष न मनुंसक वत्री पंचेन्द्रिय तिर्येचोंमें माठ माठ पूर्वकोटि-  
प्रमाण काळ तक ही जीव रहता है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—आचार्यपरम्परागत उपदेष्टसे ।

जीव पंचमिन्द्रिय तिर्येच अपर्याप्त कितन फल तक रहत हैं ? ॥ १६ ॥

यह खूब सुगम है ।

कर्मसे कर्म सुद्वनवग्रहण काळ तक जीव पंचमिन्द्रिय तिर्येच अपर्याप्त रहते  
हैं ॥ १७ ॥

बहुिया न ह्येति चि कथं जन्वे? य, आदिरियपरपरागदुबदेसादो ।

पचिंदियतिरिक्स्वपचिंदियतिरिक्स्वपज्जत्त-पचिंदियतिरिक्स्वजो  
णिणी केवचिरं फालादो ह्येति ? ॥ १३ ॥

( सुगममेई । )

जहण्णेण सुहामवग्गहण अंतोमुहुत्त ॥ १४ ॥

पचिन्धियतिरिक्स्वाय सुरामभग्गहण, तत्थ अपज्जत्ताण समसादो । ससेसु  
अंतामुहुत्तं, तत्थ अपज्जत्ताणमभासादो । य च पज्जत्तसु जहण्णाउट्ठिदिपमाय सुरामभ  
ग्गहणं होदि, अतोमुहुत्तुवदसस्म एदस्स अमत्त्वपत्तप्पमंगादो ।

उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि पुत्रकोट्टिपुधत्तेणम्महियाणि  
॥ १५ ॥

श्रुंका—असंख्यात पुत्रसुपरिचरंमोका तात्पर्य भावकीटि असंख्यातयं माममात्र  
कारसे ही है अधिक नहीं यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—भाषार्थपरम्परागत रूपसेइससे ।

जीव पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त व पंचेन्द्रिय तिर्यंच यानिमती  
कितने काल तक रहते हैं ? ॥ १३ ॥

( यह सूत्र सुगम है । )

कमसे कम सुद्रमबग्रहणकाल व अन्तर्मुहूर्तकाल तक जीव पंचन्द्रिय तिर्यंच,  
पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त व पंचेन्द्रिय तिर्यंच यानिमती होते हैं ॥ १४ ॥

क्योंकि पंचेन्द्रिय तिर्यंचाका कमसे कम काल सुद्रमबग्रहणमात्र है कारण कि  
पंचेन्द्रिय तिर्यंचोमें अपर्णात्त जीवोका होमा भी संभव है । शेष तिर्यंचोका काल अन्त  
मुहूर्त है क्योंकि, वममें अपर्णात्त नहीं होते । पर्याप्त व जीवोमें अग्रम्यायुस्त्रिपतिका प्रमाण  
सुद्रमबग्रहणकाल मात्र नहीं होता पर्यात् उससे अधिक होता है क्योंकि यदि पर्णात्त  
कोका संपन्न आयुप्रमाण भी सुद्रमबग्रहणकाल मात्र होता तो प्रस्तुत सूत्रमें अन्तमुहूर्त  
कालके उपदेशके निरर्थक होनेका संसर्ग आजाता ।

अधिकसे अधिक पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पर्योपमप्रमाण काल तक  
जीव पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त व पंचेन्द्रिय तिर्यंच यानिमती रहते  
॥ ... ॥

(मणुसगदीए) मणुसा मणुसपज्जत्ता मणुसिणी केवचिर कालादो  
होति ? ॥ १९ ॥

एगवीशस्स कालानुगम कीरमाणे 'मणुसो केवचिरं कालादो होदि' धि एगवीश  
विसयपुच्छाए हादग्गमिदि ? ण, एक्कमिद्दि धि बीने एयाणेयसत्तावलक्खिण्णए असुद्धदम्भ  
द्विपविवक्खाए अणयत्तस्स अधिरोहादो । सम्भत्थ पुच्छापुम्भो चेव अत्यगिरेसो  
किमद्द कीरद ? ण, वयणपपुत्तीए परदुत्तपदुप्पायणफलवादो ।

जहण्णेण खुदाभवग्गहणमतोमुहुत्त ॥ २० ॥

सामण्यमणुस्सार्णं नहण्णाउट्ठिदिपमाणं सुदामवग्गहणं होदि, तत्थ अपज्जत्तार्णं  
समवादो । पत्तम मणुसिणीसु नहण्णाउट्ठिदिपमाणमतोमुहुत्त, तत्थ तत्था हेट्ठिमआउट्ठिदि  
विमप्पाणमणुवलमादो । सेम सुगम ।

उक्कस्सेण तिण्णि पलिदेवमाणि पुव्वकोट्टिपुधत्तेणब्भदि  
याणि ॥ २१ ॥

(मनुष्यगतिमें) बीब मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त व मनुष्यिनी कितने काल तक रहते  
हैं ? ॥ १९ ॥

सुक्क—अप एक जीवनी भवेसा कालानुगम किया जा रहा है तब जीव मनुष्य  
कितम काल तक रहता है इस प्रकार एक जीव विषयक ही प्रश्न जाना चाहिये ( न कि  
पह्लवचनारामक जैसा कि सूत्रमें पाया जाता है ) ।

समाधान—जहाँ क्योंकि एक व मनक सत्पासे उपलक्षित जीवमें मणुस्य  
प्रत्यार्थिक नयकी भवेसा अनेकत्वके कथमत कारे विराध नहीं उत्पन्न होता ।

श्रुंका—सध्व प्रभवूषक ही अर्थका निर्देश क्यों किया जा रहा है ?

समाधान—'यह वचनप्रकृति परापरकाराध है' ऐसी धर्या उत्पन्न करने का  
फलकी समझायासे ही यहाँ प्रभवूषक अथवा निर्देशा विधा जा रहा है ।

कमस कम भुत्रमवग्रहणमात्र या अन्तमुहुत्तमात्र काल तक जीव मनुष्य,  
मनुष्य पर्याप्त व मनुष्यिनी रहते हैं ॥ २० ॥

सामान्य मनुष्योंकी अथवा मायुस्थितिका प्रमाण भुत्रमवग्रहणमात्र होता है  
क्योंकि, सामान्य मनुष्योंमें अवर्षाण जीवोंका हाना समब है । किन्तु पर्याप्तक मनुष्य और  
मनुष्यिणियोंमें अथवा मायुस्थितिका प्रमाण अन्तमुहुत्त है क्योंकि उनमें ( अर्थात्पर्याप्तक  
अर्थात्से ) मायुस्थितिक विकल्प अन्तमुहुत्तस कमके नहीं पाये जाने । शय सूत्राध  
सुगम है ।

अधिकम अधिक पूर्वकोट्टिपुधकम्भमे अधिक तीन पत्त्यापम काल तक जीव  
मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त व मनुष्यिनी रहते हैं ॥ २१ ॥

अपिपिदेहिता आगतूय पंचिदिय ( तिरिक्त्त ) अपत्रचएसु उप्पजिय सञ्जहण्ण-  
कासेय सुञ्जमाणाउअ कदलीपादेय धादिय रुदाभवग्गहणमच्छिय निप्पिदिदस्म एतदुवने  
मादो । पंचिदियतिरिक्त्तपत्रचएसु कदलीपादेय धादिदसुञ्जमाणाउअसु रुदाभवग्गहणकासे  
किमिदि वीवत्तम्भेदे ? य, तस्य अत्तमुहुत्तादे पत्तस्म वि सुञ्जमाणाउअस्स अतामुहुत्तस  
हेइदो पद्वामावा । देव-भेरएसु रुदाभवग्गहणमेत्ता अतामुहुत्तमेत्ता वा आउट्टिदी  
किण्ण सम्भेदे ? य, एतय दसण्ह वत्तसहस्माण हेइदा आउअस्म बंधामावा, तत्तत्त-  
सुञ्जमाणाउअस्स कदलीपादामावादे य ।

उक्कस्सेण अतोमुहुत्त ॥ १८ ॥

हुदो ! अपिपिदेहिता आगतूय पंचिदियतिरिक्त्तपत्रचएसु उप्पजिय सञ्ज  
क्कस्सियं मच्चिट्ठिमच्छिय निप्पिदिदस्म वि अतामुहुत्तादो अदियकालस्माणुवत्तमा ।

क्योंकि, किन्हीं भी अवस्थित पर्यायोंसे भाकर पंचन्द्रिय तिर्यक अपर्याप्तकोंमें  
उत्पन्न होकर व सर्वत्रमय काखसे मुख्यमान आयुको कदलीपातसे नष्ट करके  
धुम्रमवग्रहणमात्र जीकर निकल जानेवाले जीवक सूत्रोक्त काल पाया जाता है ।

ईका—कदलीपातसे मुख्यमान आयुको नष्ट करनेवाले पंचन्द्रिय तिर्यक पर्याप्त  
कोंमें धुम्रमवग्रहणमात्र काक क्यों नहीं पाया जाता ?

समाधान—बर्ही पाया जाता क्योंकि, पर्याप्तकोंमें अत्यन्त शीघ्र आयुका  
घात करनेवाले जीवके भी मुख्यमान आयुका अन्तर्मुहूर्तकालसे कममें नष्ट होना संभव  
नहीं है ।

ईका—देव और तारकी जीवोंमें धुम्रमवग्रहणमात्र मधया अन्तर्मुहूर्तमात्र  
आयुस्थिति क्यों नहीं पायी जाती ?

समाधान—बर्ही पायी जाती क्योंकि वृष और तारकीयों सम्बन्धी आयुका वृष  
वृष हजार वर्षसे कम नहीं होता और तारकी मुख्यमान आयुका कदलीपात भी नहीं  
होता ।

अधिकसे अधिक अन्तर्मुहूर्त काल तक जीव पंचेन्द्रिय तिर्यक अपर्याप्त रहते  
है ॥ १८ ॥

क्योंकि किन्हीं भी अवस्थित पर्यायोंसे भाकर पंचेन्द्रिय तिर्यक अपर्याप्तकोंमें  
उत्पन्न होकर और वहाँ सर्वोत्कृष्ट मवस्थितिमात्र काल तक रहकर निकलनेवाले जीवके  
भी अन्तर्मुहूर्तसे अधिक काक बर्ही पाया जाता ।

(मणुसगदीए) मणुसा मणुसपञ्जत्ता मणुसिणी केवचिर कालादो होति ? ॥ १९ ॥

एगजीवैस्स कालानुगमे कीरमाणे 'मणुसो केवचिरं कालादो होदि' ति एगजीव विसयपुच्छाए होद्वमिदि ? न, एककम्हि वि जीवै एयाणेयसखावलक्खिए असुद्धदम्भ द्वियविक्खसाए अमयत्तस्स अभिरोहादो । सन्धत्थ पुच्छापुम्भो वेव अत्यगिरसो किमहु कीरद ? अ, वयणपवुसीए परहुत्तपदुप्पायमफलत्तादो ।

जहण्णेण खुद्धामवग्गहणमतोमुहुत्त ॥ २० ॥

सामणमणुस्माण जहण्णाठड्ढिदिपमाणं खुद्धामवग्गहणं होदि, तस्स अपञ्जत्ताम समवादो । पत्तत्त मणुसिणीसु अहण्णाठड्ढिदिपमाणमतोमुहुत्त, तत्थ तत्तो हेड्ढिमभाउड्ढिदि वियप्पाणमणुवलमादो । सेस सुग्गं ।

उक्कस्सेण तिण्णि पल्लिदेवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणम्भहि याणि ॥ २१ ॥

(मनुष्यगतिमें) जीव मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त व मनुष्यिनी कितने काल तक रहते हैं ? ॥ १९ ॥

उत्तर—जब एक जीवकी अचेष्टा कालानुगम किया जा रहा है तब जीव मनुष्य कितने काल तक रहता है इस प्रकार एक जीव वियपक ही एक जाना चाहिये, ( न कि वहुवचनमात्मक जैसा कि सूत्रमें पाया जाता है ) ?

समाधान—नहीं क्योंकि एक व अनेक सत्त्वासे उपलसित जीवमें मनुष्य प्रत्यापेक नयकी अचेष्टा अनेकस्थले कथमसे कोई विरोध नहीं उत्पन्न होता ।

संक्षेप—सर्वत्र प्रभूपृथक् ही अर्थका निर्वेण किया जा रहा है ?

समाधान—'यह ब्रह्ममप्रवृत्ति परोपकारार्थ है' ऐसी अज्ञा उत्पन्न करने रूप पृथकी समिलायाम ही यहाँ प्रभूपृथक अर्थका निर्वेण किया जा रहा है ।

कमसे कम सुद्वमवग्रहणमात्र या अन्तर्मुहूर्तमात्र काल तक जीव मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त व मनुष्यिनी रहते हैं ॥ २० ॥

सामान्य मनुष्योंकी अधम्य भायुस्थितिका प्रमाण सुद्वमवग्रहणमात्र होता है क्योंकि सामान्य मनुष्यामें अपर्याप्त जीवोंका होना संभव है । किन्तु पर्याप्तक मनुष्य कीर मनुष्यिनियोंमें अधम्य भायुस्थितिका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त है क्योंकि उनमें ( अपर्याप्तकोटि अभावेसे ) भायुस्थितिके विकल्प अन्तर्मुहूर्तसे कमसे नहीं पाये जाते । शेष सूत्राद्य सुगम है ।

अधिकसे अधिक पूर्वकोटिपृथक्त्वमे अधिक तीन पत्न्योपम काल तक जीव मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त व मनुष्यिनी रहते हैं ॥ २१ ॥

हुदा ! अप्यिदेहितो जागृत्य अपिदमणुसमुत्तमश्रिय सचेतासीस-तेषीस सप्तपुष्पकोडीभ्यो महाक्रमेण परिममिय दापय दापाशुमोदय वा सिपलिदोषमाउद्धिदि मणुस्तेसुप्यस्य तदुत्तमादो ।

मणुस्सम्पज्जता केवचिर कालादो ह्येति ? ॥ २२ ॥

क्रमेण बहुवचनभिरेसा श्रुतये ? य, पुष्पुचक्रमेण एककमिह बहुचयिदस्य अविरोधादो । अथवा य एत्य एककेण चैव जीवेन अहियारो, किंतु पादेकं सम्प्रतीयेति अहियारो यि काउग बहुवचनभिरेसो उच्यन्तये ।

जहण्णेण खुदाभवगहण ॥ २३ ॥

हुदा ! अप्यिदेहितो जागृत्य तत्पुष्पश्रिय भादसुरामरगहयमच्छिय विष्पिद्विभ्य अमप्यिदसु उप्यस्य तदुत्तमादो ।

उचकस्सेण अतोमुहुत्त ॥ २४ ॥

क्योंकि किन्हीं भी अविश्लिष्ट पर्यायोंसे आकर विपक्षित मनुष्योंमें उत्पन्न होकर क्रमशः सैतासीस तेईस व सात पूर्वकोटि काळ परिभ्रमण करके हान देकर अथवा दाबना अनुमोदन करके तीन पर्योपम आयुस्वित्तिकाके ( मागमूमिह ) मनुष्योंमें उत्पन्न हुए जीवके उचोक्त काळ पाया जाता है ।

जीव अपर्याप्तक मनुष्य कितने काळ तक रहते हैं ? ॥ २२ ॥

द्वय—सुभमें बहुवचननात्मक निर्देश कैसे उपयुक्त बहता है ?

समाधान—क्योंकि ऐसा पहल कह चुके हैं ठही क्रमसे कृि जीव एक ही है अमेक ही है, अतएव मणुस द्रव्याधिक मयसे बहुवचनके निर्देशसे कोई विरोध उत्पन्न नहीं होता । अथवा यहाँ केवल एक ही जीवकी अपेक्षाका अधिकार नहीं है किंतु मतेक रूपसे सभी जीवोंकी अपेक्षा अधिकार है ऐसा समझकर बहुवचननिर्देश उपयुक्त सिद्ध हो जाता है ।

क्रमसे कम सुद्रमवग्रहणमात्र काळ तक जीव अपर्याप्त मनुष्य रहते हैं ॥ २३ ॥

क्योंकि, किन्हीं भी अन्य पर्यायोंसे आकर अपर्याप्तक मनुष्योंमें उत्पन्न होकर कश्मीरघातसे मुख्यमान आयुके साथ साथ सुद्रमवग्रहणमान काळ तक रहकर न बहसि विकस्यकर किती भी मय पर्यायमें उत्पन्न होनेवाले जीवके उचोक्त काळकी प्राप्ति होती है ।

अधिकसे अधिक अन्तमुहूर्त काळ तक जीव अपर्याप्त मनुष्य रहते हैं ॥ २४ ॥

हृदो ? अहबहुवारमेदेसु अहदीहाठओ होइण ठप्पण्णस्स वि दोषडियामेचमव  
 ङ्किदीए अमावाहो ।

देवगदीए देवा केवचिर कालादो हेंति ? ॥ २५ ॥

सुगममेद'

जहण्णेण दसवाससहस्साणि ॥ २६ ॥

तिरिक्ख मज्जुस्तेहिंता बहण्णाउङ्किदिद्वसुप्पन्निअय विग्गपस्स एचियमेत्तकाल  
 वत्तंमादा ।

उक्कस्सेण तेत्तीस सागरोवमाणि ॥ २७ ॥

सत्तहसिदिदेवेसु आठअ वंचिय कमण सत्तुप्पन्निअय तेत्तीससागरोवमाणि  
 तत्तच्छिद्दं विग्गपस्स तदुबलमाहो । सत्तहमनग्गहप्पाणि दीहाठङ्किदिपसु देवेसु  
 उप्पादे क्खतो बहुओ लम्मदि चि वुत्ते न, देव-जेरएपार्यं मोगभूमितिरिक्ख-मज्जुस्तावं

क्योंकि अन्क बहुवार मपर्याप्त मनुष्योंमें अतिदीर्घायु होकर भी अल्पक रूप  
 जीवके दो घड़ी मात्र मवस्थितिका होना मतमव है ।

देवगतिमें जीव देव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ २५ ॥

यह सुन सुगम है ।

कमसे कम दस हजार वर्ष तक जीव देव रहते हैं ॥ २६ ॥

क्योंकि तिर्येचों वा मनुष्योंमेंसे निकलकर व अल्प आयुवाले देवोंमें उत्पन्न  
 होकर वहांसे निकले हुए जीवके सुलोक मात्र काल ही देवपर्यायमें पाया जाता है ।

अधिकसे अधिक तेत्तीस सागरोपम काल तक जीव देव रहते हैं ॥ २७ ॥

क्योंकि सर्वापेक्षिदि विनामपासी देवोंमें आयुको बांधकर कमरा; वहां अल्पक  
 होकर व तेत्तीस सागरोपम काल मात्र वहां रहकर निकले हुए जीवके सुलोक काल  
 पाया जाता है ।

छंका—दीर्घायुस्वित्वाले देवोंमें सात भाठ मर्कोंका ग्रहण करजसे नीर भी  
 अधिक काल देवगतिमें पाया जा सकता है ?

समाधान—महाँ पाया जा सकता क्योंकि देव नारकी मोगभूमिअ तिर्येच



एव ह्यक्षरं पुषो तत्प्रेषात्तरात्पुष्पसीय अमावादी । इदा ? अन्वतामावादी ।

भवणवासिय-चाणवेतर-जोदिसियदेवा केवचिर कालादो ह्येति ?

॥ २८ ॥

सुगममेद ।

जहृष्णेण दसवाससहस्साणि, (दसवाससहस्साणि,) पलिदोवमस्स अट्टममागो ॥ २९ ॥

भवणवासिय-चाणवेतराण दसवाससहस्साणि बहृष्णाउद्दिदी, जोदिसियाण पलिदो वमस्स अट्टम मागो । नियन्तापो किम्प होदि ? ए, समेसु उरेमापुरेसीसु बह्रासंखे मोक्ष अन्पस्सासंभवादी । सेम सुगम ।

उत्कस्सेण मागरोवम सादिरेय, पलिदोवम सादिरेय, पलिदो वम सादिरेय ॥ ३० ॥

और मागभूमिञ मनुष्य इत्यत्र मत्नेपट पुनः उली पयापमे भगन्तर अत्यासि नहीं पायी जाती क्योंकि इसका अत्यन्त अभाव है ।

और भवनवासी, बानध्यन्तर व ज्योतिषी देव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ २८ ॥ यह सूत्र सुगम है ।

क्रमसे क्रम दश हजार वर्ष तक, दश हजार वर्ष तक तथा पर्योपमके अष्टम माग काल तक और क्रमशः भवनवासी, बानध्यन्तर व ज्योतिषी देव रहते हैं ॥ २९ ॥

भवनवासी और बानध्यन्तर देवकी अल्प आयुस्थिति तथा हजार वर्ष है तथा ज्योतिषी देवोंमें अल्प आयुस्थिति पर्योपमके अष्टम मागमात्र है ।

संज्ञा—अल्प आयुस्थिति इसके विपरीतरूपसे अर्थात् भवनवासी और बानध्यन्तर देवोंमें पर्योपमके अष्टम माग और ज्योतिषी देवोंमें दश हजार वर्षकी अवधि नहीं हो सकती ?

समाधान—नहीं हो सकती क्योंकि अदिप और अनुदिप पदाके समाप होनेपर अर्थात् अन्वतामावादी ओङ्कार मन्व प्रकार विद्याल होना अर्थात् है ।

एव ह्यक्षरं सुगम है ।

अधिकमें अधिक क्रमशः सातिरेक एक सागरापम, सातिरेक एक पर्योपम व सातिरेक एक पर्योपम काल तक और भवनवासी, बानध्यन्तर व ज्योतिषी देव रहते हैं ॥ ३० ॥

मन्वन्वासिणसु सागरोवममदसागरोवमहिय । प्राणवैतर जादिसिणसु पलिदोवमं  
अहपसिदोवमहिय तक्कस्तुद्विदिपमाण हादि । म च बभसुसेण सह विरोहो, उवरिम  
आठवमोवहुणापादेक घादिय उप्पण्णेसु एदेसिमाउवाणसुवलमादो । एत्थ सम्भत्थ किंनुण-  
पमाण आनिदुण वत्तम्भ । एदेसु तिसु वि वबलाएसु अहण्णाउअप्पहुदि जावुककस्ताठव  
पि समठवरवहुणिए आठमं बह्वुदि, पापटाणममाना । मम सुगम ।

सोहम्मीसाणण्यहुदि जाव मदर-सहस्मारकप्पवामियदेवा केवचिर  
कालादो होति ? ॥ ३१ ॥

सुगममद ।

जहण्णेण पलिदोवम वे सत्त दम चोदम सोलस सागरोवमाणि  
साठिरेयाणि ॥ ३२ ॥

सोषम्मीसाणसु दिवहुपलिदोवमं जहण्णाउअ, सणककुमार-माहिंदसु अहुअञ्ज

मन्वन्वासी इधोमं उरुह्र भायुस्थितिका प्रमाण मध सागरापम अधिक एक  
सागरोपम होता है तथा घामन्वस्तर भीर ज्योतिषी वृषोमं मत्र पर्योपम अधिक एक  
पस्यापम होता है । इस प्रकार उरुह्र भायुके प्रमाणके कथनका भायुपन्धसम्बन्धी सूत्रमें  
कहे गये प्रमाणस विरोध नहीं उत्पन्न होता क्योंकि ऊपरकी भायुको उद्घर्तमापातसे  
घात करके उत्पन्न हुए मन्वन्वासी भादि वृषोमं भायुभोका प्रमाण इसी प्रकार पाया जाता  
है । इस छप भायुभामें सा किंचिद् हीन प्रमाण होता है उसका कथन आमकर करना  
चाहिये । ( देखो जीवद्वान कालानुगम सूत्र १९ टीका भाग ४ पृ ३८९ )

इस तीनों देवलोकोमं अथय्यायुमे मकर उरुह्र भायु पर्यन्त उत्तरोत्तर एक एक  
समय अधिक क्रमसे भायु पकती है क्योंकि यहाँ प्रत्येका मनाय है । छप सूत्रार्थ  
सुगम है ।

जीव सौषम-ईशानसे लगाकर अठार-सहस्रार पयन्त कल्पवासी देव कितन  
काल तक रहते हैं ? ॥ ३१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

क्रमसे क्रम साठिरक एक पस्यापम, दो सागरोपम, साठ सागरोपम, दस  
सागरोपम, चौदह सागरोपम व सोलह सागरोपम काल तक जीव माधम-ईशानसे लेकर  
अठार-सहस्रार तकक कल्पवासी देव होते हैं ॥ ३२ ॥

सौषम और ईशान वृषोमं उरु पर्योपम अथम्भ भायु है । समककुमार और

सागरोवमाणि, बम्ह-बम्होचरेसु साद्वसत्सागरोवमाणि, लांठव-काविष्ठसु साद्वससागरा  
वमाणि । सुक्क-महासुक्केसु साद्वसोवसागरोवमाणि सद्दर सद्दस्सारकप्पेसु साद्वसोवम-  
सागरोवमाणि अद्दम्भाउर्ब ।

उक्कस्सेण वे सत्त दस चोदम सोल्लम अट्टारस सागरोवमाणि  
सादिरेयाणि ॥ ३३ ॥

साहमीसावसु' अट्टावसागरावमाणि दम्भाणि, मगक्कमार-साहिदसु साद्वसत्-  
सागरोवमाणि देव्वाणि, बम्ह-बम्हाचरसु साद्वदमसागरावमाणि देव्वाणि, स्रंतव-कापिष्ठसु  
साद्वचावसागरावमाणि दम्भाणि, सुक्क महासुक्केसु साद्वमात्तसागरावमाणि दम्भाणि,  
सद्दर-सद्दस्सारसु साद्वअट्टारससागरावमाणि दम्भाणि । एत्थ दम्भणपमाण ज्ञाणिदम  
वत्तम्भं । एवाणि दो वि सुत्ताणि देसामासयाणि । तण्णदिहं सुद्धवस्स पक्कवर्णं कस्सामां ।  
तं अद्दा-उट्ट विमसा च्चदा वग्गु वीरो अक्कणो गद्दमा गलिणो कर्षणा रुद्धिरो चंभा  
मरुद्धिसो वेसुरिजा रुजगा रुषिरा अक्का फल्लिहा तपणीओ महा अक्कं हरिदो पउमं

माहेन्द्र स्वर्गोमें अद्दार सागरापम प्रह्व भीर प्रह्वोत्तर स्वर्गोमें सादे सात सागरोपम  
सांतव भीर कापिष्ठ स्वर्गोमें साद्व वसा सागरोपम शुद्ध भीर महासुक्केमें साद्व चौवह  
सागरोपम तथा सातार भीर सद्दस्सार स्वर्गोमें साद्व सोल्लह सागरोपम अज्ज्य मायु है ।

अधिकसे अधिक साठिरेक दो, सात, दस, चौवह, मातह व अट्टारह सागरापम  
कल लक बीच सौषर्मे-ईशान आदि कर्णोमें रहते हैं ॥ ३३ ॥

सौषर्मे-ईशान कस्याम कुछ कम अद्दार सागरापम सवत्तमार माहेन्द्रमें कुछ कम  
सादे सात सागरोपम अद्द अद्दोत्तरम कुछ कम साद्व वसा सागरोपम सांतव कापिष्ठमें  
कुछ कम साद्व चौवह सागरोपम शुद्ध महासुक्केमें कुछ कम सादे सोल्लह सागरोपम तथा  
सातार-सद्दस्सार कर्णोमें कुछ कम साद्व अट्टारह सागरोपम अज्ज्य मायुप्रमाण होता है ।  
यहां वधोव भयोत्त कुछ कमका प्रमाण आमकर कहना चाहिये ।

वर्णयुक्त दार्तो सुत्र देशामर्शक हैं इसलिये इनके द्वारा उचित वर्णका प्रकरण  
करते हैं । यह इस प्रकार है—

अनु, विमल चन्द्र वसु पीर, अठव नन्वव नसिम क्कान्न दधिर वंच  
मन्त् ( मारतव ), माजीण ( बीरा ) विद्धर्य त्थक दधिर वन्त्, स्वरिड तपनीय  
मेघ ( मेघ ) अन्न, हरित पद्म आदिताण्ण वरिठ नन्वावर्तं प्रसंकर, पिप्पाक गज मिघ

सोहिदको वरिद्धा गणामचो पहकरो पिह्णो गजो मिषो पमा यदि सोधम्मीसाणे एकक  
 चीस पत्यडा होति । एतथ उडुम्हि पढमपत्यडे अहण्यमाउत्रे दिवद्वपतिदोयम उककस्त  
 मद्दसागरोबम । एचो तीसण्ह इदयान वड्डी बुच्चदे । तत्य अदसागरोबम मुहं होदि,  
 भूमी अन्नाइज्जसाभरोबमाणि । भूमीदो मुहमभणिय उच्छएण मागे हिदे सागरोबमस्त  
 पण्णारसमागो वड्डी होदि [१] । एदमिच्छिउपत्यठमग्याए गुणिय मुहे पक्खिचे विमला  
 दीप्य तीसण्ह पत्यडाणमाउत्राणि होति । तसिमसा सद्विही—

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०

साधम्मीसाणे एककचीस पत्यडामि पि कभ पम्पदे ?

इगित्थस सत्त चत्तारि दाणिग एक्केकक छक्क एक्काए ।

उडुआणिविमाणिण्ण तिरिक्खिसट्ठी मुणेपम्भा ॥ २ ॥

बीर प्रमा इन नामाक इकतीस प्रस्तर सौधर्म ईशान कस्यमें हैं । इनमेंमे क्कणु नामक  
 प्रथम प्रस्तरमें अथव्य आयु उडु पन्थोपम व उत्तए आयु मध सागरोपमप्रमाण है ।  
 अब यहाँ द्वितीयादि तीस इन्द्रकोंमें वृद्धिका प्रमाण कहत हैं— यहाँ अर्थ सागरोपम ता  
 मुल है बीर अकार सागरोपम मूमि है । अतपथ मूमिमेंस मुलको घटा बने प उच्छूप  
 अर्थात् उत्सोच ( ३० ) स भाग देमेपर (  $2\frac{2}{3}-\frac{1}{3}$  )  $= 20 = 2^1 = 2^1$  एक सागरोपमका  
 पन्ध्रहवां भाग वृद्धिका प्रमाण जाता है । इस  $2^1$  को अमीय प्रस्तरकी संख्यासे गुणित  
 करके मुख्यमें मिच्छादेमेसे विमलादिक तीस प्रस्तरोंकी आयुना प्रमाण होता है । उसकी  
 संदधि इस प्रकार है । ( मूसमें देखिय )

संज्ञा—सौधर्म ईशान कस्यमें इकतीस प्रस्तर हैं यह कैसे जाना ?

समाधान—सौधर्म ईशान कस्यमें इकतीस विमान प्रस्तर हैं सातकुमार माहेंद्र  
 कस्यमें सात ब्रह्म प्रद्योत्तरमें चार अंतथ कपिष्ठमें दो शुक्र महाशुभमें एक, शतार  
 सहस्रारमें एक आमत प्राणत बीर भारत अथ्युत कस्यमें एक तथा नी प्रियेयकोंमें एक  
 एक, अनुदिनोंमें एक और अनुत्तर विमानोंमें एक इस प्रकार क्कणु आदिक इन्द्रक  
 विमान तिरिसठ जानना चाहिये ॥ २ ॥

इति अरिसवयपादो ।

अंजपो वक्ष्यमाला भागा गरुडा लगत्तं वलहदा चक्रमिदि एदे सयक्कुमार  
माहिदेसु सच परबडा । एदेसिमाउअप्यमाण आभिञ्जमाये सुहमहुइज्जसागरोवमाभि,  
भूमि साउमचसागरोवमाभि, मच उस्महो इदि । तेमि संदिद्धी—

$$\begin{array}{|c|c|c|c|} \hline 1 & 2 & 3 & 4 \\ \hline \end{array}$$

। अरिद्धा इवमिदि वद्धा वन्नुचरो पि चचारि वद्ध-वन्नुचरकप्येसु  
परबडा । एदेसिमाउआगं संदिद्धी एमा—

$$\begin{array}{|c|c|c|} \hline 1 & 2 & 3 \\ \hline \end{array}$$

। वन्नुचिउओ लतओ पि  
संतय इविद्धसु इभिण परबडा । तेमिमाउआगमेमा संदिद्धी—

$$\begin{array}{|c|c|} \hline 1 & 2 \\ \hline \end{array}$$

। महासुका  
पि एकका येन परबडो सुकक महासुकरकपसु । समि आउअस एसा संदिद्धी

$$\begin{array}{|c|} \hline 1 \\ \hline \end{array}$$

इस भाष्य वचनसे जाना जाता है कि सौधम ईशान कस्यमे इकतीस प्रस्तर है ।

अंजत वनमास भाग गरुड खांगख वक्षमत्र और चक्र ये सात प्रस्तर  
समत्कुमार-माहेन्द्र कस्योमे है । उनमे मायुका प्रमाण सामके द्विप मुख बढ़ाई सागरोपम  
भूमि साके सात सागरोपम और उत्सेध सात है । ( अतएव यहाँ बुद्धिमा प्रमाण हुआ  
(  $3\frac{1}{2} - 2\frac{1}{2}$  )  $= 1 = 2$  इस प्रकार प्रथम प्रस्तरका मायुप्रमाण हुआ  $1 + 1 = 2 = 2$  ।  
इसी प्रकार बुद्धिमे इए प्रस्तरकी सख्यामा गुणा करके मुक्तमे जोड़नेसे वनमासमे  
मायुका प्रमाण  $2\frac{1}{2}$  नागमे ४, गरुडमे ५, खांगखमे  $2\frac{1}{2}$ , वक्षमत्रमे  $2\frac{1}{2}$   
और चक्रमे  $3\frac{1}{2}$  जाता है ।

अरिष्ट वेचसमित ब्रह्म और ब्रह्मोत्तर य चार विमान-प्रस्तर ब्रह्म ब्रह्मोत्तर  
कस्योमे है । इनकी मायुका प्रमाण मुख  $3\frac{1}{2}$ , भूमि  $1\frac{1}{2}$  और उत्सेध ४ सेकर पूर्वोक्त  
विधिसे अनुसार अरिष्टमे  $3\frac{1}{2} + 4 = 7\frac{1}{2}$  वेचसमितमे  $7\frac{1}{2} + 3\frac{1}{2} = 11$  ब्रह्ममे  
 $11 + 3\frac{1}{2} = 14\frac{1}{2}$  और ब्रह्मोत्तरमे  $14\frac{1}{2} + 3\frac{1}{2} = 18\frac{1}{2}$  जाता है ।

ब्रह्मिष्ठप और क्रांतव य क्रांतव कापिष्ठ कस्योक्त वा विमान प्रस्तर है द्विपमे  
पूर्वोक्त विधि अनुसार मायुका प्रमाण इस प्रकार है—(  $18\frac{1}{2} - 1\frac{1}{2}$  )  $= 17$  वा ६ ।  
 $2 \times 1 + 1\frac{1}{2} = 2\frac{1}{2}$   $2 \times 2 + 1\frac{1}{2} = 4\frac{1}{2}$  अर्थात् ब्रह्मिष्ठपमे  $2\frac{1}{2}$  और क्रांतवमे  $4\frac{1}{2}$   
सागरोपम है ।

सुक-महासुक कस्योमे महासुक नामका एक ही प्रस्तर है । यहाँ मायुके प्रमाण  
की संख्या है  $2\frac{1}{2}$  सा ।

१ अग्नि नागा इति पाठ ।

२ वक्ष्यमी सुरेदमाश्चाल इति पाठ ।

सहस्रारो चि एफको चैव पत्पडो सदर सहस्रारकप्पेसु । तस्म आठमस्म संदिद्धी [१] ।

आणदप्पहुडि जाव अवराइदविमाणवासियदेवा केवचिर  
कालादो होंति ? ॥ ३४ ॥

सुगममेवं ।

जहण्णेण अट्टारस वीम वावीस तेवीम चउवीस पणुवीस  
छन्वीम मत्तावीस अट्टावीस एगुणत्तीस तीसं एकत्तीस वत्तीस मागरो  
वमाणि सादिरेयाणि ॥ ३५ ॥

आणद् पाप्पदकप्पे साइअट्टारससागरोबमाणि । आरण अञ्चुदकप्प समयाहिय  
भीस सागरोबमाणि । उवरि महाकम्म भवभंजज्जेसु वावीस तवीस चउवीस पणुवीस  
छन्वीस सत्तावीसं अट्टावीस एगुणत्तीस तीसं सागरोबमाणि समयाहियाणि । णवाणुदित्तेसु  
एफकत्तीसमागरोबमाणि समयाहियाणि । चटुसु अणुचरेसु वत्तीस सागरोबमाणि

छातार सहस्रार कर्णोंमें सहस्रार सामका एक ही प्रस्तर है । उसमें आयुप्रमाण  
है १८३ सा ।

जीव आनत कल्पमे लकर अपराजित तक्क विमानवासी देव कितने काल तक  
रहते हैं ? ॥ ३४ ॥

पह सूत्र सुगम है ।

भमसे कम सातित्तेक अट्टारह, बीस, चाइस, चेईम, चौवीस, पचीस, छप्पीस,  
सत्ताईस, अट्टाईस, उनतीस, तीस, इक्कीस व पचीस सागरोपम काल तक जीव क्रमश  
आनत आदि अपराजित विमानवासी देव रहते हैं ॥ ३५ ॥

आनत प्रायत कल्पमें अथम्य आयु प्रमाण साइ अट्टारह सागरोपम व आरण  
कप्पुत कल्पमें एक समय अधिक बीस सागरोपम है । इससे ऊपर नच त्रियेयकोंमें  
क्रमशः सुवर्णममें चारस ममोपमें तइस सुमपुसमें चौबीस पशोपमें पचीस सुमद्रमें  
छप्पीस विद्यासमें सत्ताईस सुमत्तमें अट्टाईस भीमत्तमें वसतीस भीर प्रीतिवत्तमें  
तीस सागरोपमप्रमाण अथम्य आयुस्थिति है । त्रियेयकोंसे ऊपर अर्धिय् अर्धिमासी आयु  
नच अनुविशोंमें एक समय अधिक इक्कीस सागरोपमप्रमाण अथम्य आयुस्थिति है ।  
अनुविशोंसे ऊपर अर्धिय् अर्धिपत्त अथत भीर अपराजित इन चार अनुत्तर विमानोंमें

समयादिपानि । सेत सुगम ।

उक्कस्तेण वीस वावीस तेवीस चउवीस पणुवीसं छुवीस  
सत्तावीस अट्टावीस एगुणतीस तीस एककत्तीम वत्तीस तेत्तीस सागरो  
वमाणि ॥ ३६ ॥

एदामि उक्कस्साउआणि वडहणाउअविहाणेण जाअेयम्याणि । एदेहि वडहणुइस्स  
सुचेहि बेसामासिपदि छइइत्थस्स परूवणा फीरदे । तं वडा- आपदा पाणदो पुप्फआ  
णि आपद-पाणदकप्पेसु तिष्मि पणवडा । ससिमाउअस्स पुम्भुत्तकमेण आभिदसंदिही  
एसा- 

१	१
१	१

 । सादकरो भारणे अण्डुदा वि आरण अण्डुदकप्पसु तिष्मि परवडा ।  
एदेसिमाउआणं संदिही- 

१	१
१	१

 । एषो उवरि सुदमणा अमाषा सुप्पवुद्धा अगो-

एक समय अधिक वत्तीस सागरोपमप्रमाण अल्प्य आयु है । दोष स्वार्थ सुगम है ।

अधिकमे अधिक वीम, वर्यम, तेइम, चापीम, पत्तीम, छम्मीम, सत्तार्थस,  
अट्टार्थस, उन्तत्थस, तीम, इकत्तीम, वत्तीस और तेत्तीम सागरोपम काठ ठक वीव  
आनत-प्राप्त आदि विमानवासी देव रहते हैं ॥ ३६ ॥

इस वरुद्ध आयुओंको अल्प्य आयुके विपरव्याप्तुसार योगित कर केना आदिपे ।  
अर्थात् आनत-प्राप्तमें वरुद्ध आयु बीस सागरोपम व आन्य मध्युतमें वर्यस  
सागरोपम है । नी प्रेषयकाम क्रमशा २१ २४ २ २६, २७ २८ २९, ३० और ३१  
सागरोपम है । नी अनुविद्योम वत्तीस सागरोपम है और आर अगुत्तर विमानोंमें  
तेत्तीस सागरोपम वरुद्ध आयु है ।

अल्प्य और वरुद्ध आयुवित्तिका सिद्धता करनेवाके उपर्युक्त दोषों सुख देना  
मर्यक है अतएव उनके द्वारा सुचित किये गये मर्यकी वहाँ मरुपणा की जाती है । यह  
इस प्रकार है-

आनत प्राप्त कस्योमें तीव्र प्रस्तर हैं - आनत प्राप्त और पुण्यक । इन्में  
पुण्यक क्रमसे निकाला गया आयुप्रमाण इस प्रकार है- आनतमें १९, प्राप्तमें १९, १  
और पुण्यकमें २ सागरोपम ।

आरण-मध्युत कस्योमें तीव्र प्रस्तर हैं- सार्तकर आरण और मध्युत । इनकी  
आयुका प्रमाण निकालने पर सार्तकरमें २०, आरणमें २१ और मध्युतमें २२  
सागरोपम जाता है ।

मध्युत कस्यसे ऊपर नी प्रेषयकोंके ती प्रस्तर है अिनके नाम हैं-सुवर्धान

हरो सुमदा सुवितालो सुमणसो सोमणसो पीदिंको ति एदे णव पत्यडा णवगेवज्जसु ।  
 एदेसिमाउवाण वड्ढि हाणीओ णरिष, पादककमेककेकपत्यडस्स पाहणियादो । तेसिमाठ  
 आय सदिद्धी एसा— २३२४२५२६२७२८२९३०३१ । गवाणुरिससु आहण्णो  
 नाम एक्को चेव पत्यडो । तम्हि' आउअं एत्थिप होदि ३२ । पंचाणुघरेसु सव्वड्ढ  
 सिद्धिसण्णिदो एक्को चेव पत्यडो । विअय-वैअयंत-अयत-अवराअिदाण जहण्णाठअ  
 समयायियवचीससागरोवममच्चमुक्कस्स तेचीससागरोवमाणि । जहण्णुककम्ममेदामावादो  
 सव्वड्ढिसिद्धिदिमाणस्स पुव पत्तवणा कीरदे —

सव्वड्ढिसिद्धियविमाणवासियदेवा केवचिरं कालादो हांति ? ॥ ३७ ॥  
 गयत्यमेदं ।

जहण्णुककस्मेण तेत्तीस सागरोवमाणि ॥ ३८ ॥  
 एद पि सुगम ।

इदियाणुवादेण एहदिया केवचिरं कालादो हांति ? ॥ ३९ ॥

अमांय सुमवुद्ध यदोअर सुमत्र सुविशाअ सुममग् सोमनस् और प्रीतिंकर । हममें  
 आयुमोंकी हानि-वृद्धि नहीं है क्योंकि प्रत्येकमें एक एक प्रस्तरकी प्रधानता है । इनकी  
 आयुमोंकी सङ्घटि यह है । ( मूलमें देखिये )

ती अनुविद्योमं भावित्य नामका एक ही प्रस्तर है जिसमें आयुका प्रमाण ३५  
 सागरोपम है ।

पांच अनुस्तरोंमें सर्वायंसिद्धि नामका एक ही प्रस्तर है । इनमें विअय वैअयन्त  
 अयत और अवराअित इन चार विमानोंकी जघम्य आयु एक समय अधिक सर्वांस  
 सागरोपमप्रमाण तथा उत्कृष्ट आयु तेत्तीस सागरोपमप्रमाण है ।

सर्वायंसिद्धि विमानमें जघम्य और उत्कृष्ट आयुका मेह नहीं है इसलिये उसकी  
 पृथक् प्ररूपणा की जाती है ।

जीव सर्वायंसिद्धि विमानवासी देव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ३७ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है ।

कमसे कम और अधिकसे अधिक तेत्तीस सागरोपमप्रमाण काल तक जीव  
 सर्वायंसिद्धि विमानवासी देव रहते हैं ॥ ३८ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

इन्द्रियमार्गानुमार जीव एहन्ड्रिय कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ३९ ॥



सुगमम् ।

जहण्णेण सुद्धाभवग्गहण ॥ ४० ॥

कृदो ! अण्णिदिदिपरिहितो परदिपसुप्पजिय पावसुरामवग्गहणमेत्तकालमण्ठिय  
अण्णिदियं गदस्स तदुवलमादो ।

उत्तकस्सेण अणतकालममस्वज्जपोग्गलपरियट्ट ॥ ४१ ॥

कृदो ! अण्णिदिदिपरिहिता परदिपसुप्पजिय अत्तत्तिपाए असखेत्तादिमागमेत्त  
पोग्गलपरियट्टे कुम्मारवक्कं व परियट्टिय अण्णिदिय गयस्स तदुवलमादो ।

बादरेहंदिपा केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ४२ ॥

सुगममेदं ।

जहण्णेण सुद्धाभवग्गहणं ॥ ४३ ॥

एद पि सुगमे ।

उत्तकस्सेण अगुलस्म अमस्वेज्जदिमागा असंस्सेज्जामस्सेज्जाओ  
ओसण्णिणित्थस्मण्णिणो ॥ ४४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

कमस कम सुप्रमवग्रहण काल तक जीव एकेन्द्रिय रहते हैं ॥ ४० ॥

क्योंकि मध्य अक्षिबद्धित इन्द्रियोंवाले जीवोंमेंसे भाकर एकेन्द्रियों उत्पन्न  
होकर अक्षीयावसं पावित सुप्रमवग्रहणमान काल रहकर मध्य इन्द्रियादि जीवोंमें  
गये हुए जीवके सूक्ष्म काष्ठप्रमाण पाया जाता है ।

अधिकसे अधिक असम्प्राप्त पुष्टपरिवर्तनप्रमाण अनन्त काल तक जीव  
एकेन्द्रिय रहते हैं ॥ ४१ ॥

क्योंकि अक्षिबद्धित इन्द्रियोंवाले जीवोंमेंसे भाकर एकेन्द्रियों उत्पन्न होकर  
भावकीके मसम्प्राप्त मागमान पुष्टपरिवर्तन कुम्मारके कालके समान परिश्रमण करके  
इन्द्रियादिक मध्य जीवोंमें गये हुए जीवके सूक्ष्म काष्ठ प्रतिष्ठ होता है ।

जीव बादर एकेन्द्रिय कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ४२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

कमस कम सुप्रमवग्रहणमात्र काल तक जीव बादर एकेन्द्रिय रहते हैं ॥ ४३ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

अधिकसे अधिक असम्प्राप्तप्रमाण असर्विन्दी-उत्सर्विन्दीप्रमाण अंगुष्ठके  
असम्प्राप्तमे माग काल तक जीव बादर एकेन्द्रिय रहते हैं ॥ ४४ ॥

अणपिदिदिएहिता बादरेइदियसुप्पमिय अगुलस्स अत्तंसेज्जिदिमागमसखेजा  
सपेळ मोसपिणी-उवसपिणीमेचकाल कुलालचकक व तयेव परिममिय भिग्गयस्स  
एदस्स संमबुबलमा ।

वादरएइदियपज्जत्ता केवचिर कालादो होंति ? ॥ ४५ ॥

सुगममदं ।

जहण्णेण अतोमुहुत्त ॥ ४६ ॥

पज्जत्तएसु अंतोमुहुत्त मोत्तम अणस्स जहण्णयाउअस्स अणुबलमादो ।

उक्कस्सेण सखेज्जाणि वाससहस्साणि ॥ ४७ ॥

अणपिदिदिएहितो बादरेइदियपज्जत्तएसुप्पज्जिय सखेज्जाणि वाससहस्साणि  
तयेव परिममिय भिग्गयस्स तदुबलमादो । बहुतं काल तय क्खिण्ण हिंइदे ? य,  
केवलणामादा विभिग्गयमिजवणस्सेदस्स सयलपमाणहितो अहियस्स भिसंवादामाना ।

मधियसित इग्गियोवाले जीवोंसे भाकर वादर एकेन्द्रियोंमें तयव होकर  
अगुलक मसंख्यातव मागममाण मसंख्यातासख्यात भवसपिणी उत्सपिणी मात्र काळ  
तक कुम्हारके लकेके समान उची पर्यायम परिभ्रमण करके निकसनेवाले जीवके सूत्रके  
काळका-हाना समझ पाया जाता है ।

जीव वादर एकेन्द्रिय पर्याप्त कितन काळ तक रहते हैं ? ॥ ४५ ॥

पह सूत्र सुगम है ।

कमस कम अन्तमुहुत्त काळ तक जीव वादर एकन्द्रिय पर्याप्त रहते हैं ॥ ४६ ॥

क्योंकि पर्याप्तक जीवोंमें अन्तमुहुत्तक सिखाय सम्य अणम्य भाषु पापी ही  
नहीं आती ।

अधिकम अधिक मरुपात हजार वर्षों तक जीव वादर एकन्द्रिय पर्याप्त  
रहते हैं ॥ ४७ ॥

क्योंकि विवक्षितका लोड सम्य इग्गियोवाले जीवोंसे भाकर वादर एकेन्द्रिय  
पर्याप्तकोंमें तयव होकर संख्यात हजार वर्षों तक उची पर्यायमें परिभ्रमण करके निकले  
हुए जीवके सूत्रके काळप्रमाण पाया जाता है ।

धुका—सख्यात हजार वर्षोंसे अधिक काळ तक जीव वादर एकन्द्रिय पर्याप्तकोंमें  
वर्षों नहीं भ्रमण करता ?

समाधान—नहीं करता क्योंकि केवलजानसत निकले हुए व समस्त प्रमाणोंसे  
अधिक प्रमाणमूल इस सिद्धांतके संबंधमें बिसंवाद नहीं हो सकता ।

वादरेइदियअपज्जचा केवचिरं कालादो होति ? ॥ ४८ ॥

सुगम ।

जहण्णेण सुद्धाभवग्गहण ॥ ४९ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण अतोमुहुत्त ॥ ५० ॥

अपेयसहस्मारं तत्थेव पुना पुना उप्पण्यस्स वि अंतासुहुत्तं मोक्षं उरि  
आउत्तिदीपमशुबलमादो ।

सुहुमेइदिया केवचिरं कालादो होति ? ॥ ५१ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण सुद्धाभवग्गहण ॥ ५२ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण असस्सेज्जा लोगा ॥ ५३ ॥

जीव बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्त कितन काल तक रहते हैं ? ॥ ४८ ॥

यह सब सुगम है ।

कमसे कम सुदृग्मग्रहण काल तक जीव बाहर एकेन्द्रिय अपर्याप्त रहते हैं ॥ ४९ ॥

यह सब भी सुगम है ।

अधिकसे अधिक अन्तर्गुहृत काल तक जीव एकेन्द्रिय बाहर अपर्याप्त रहते हैं ॥ ५० ॥

क्योंकि भलेक हवासे बाहर लसी पर्याप्तमे पुना पुना उत्पन्न हुए जीवक भी अन्तर्गुहृतको छोड़ और ऊपरकी वायुस्थितिपा पापी ही नहीं जाती ।

जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ५१ ॥

यह सब सुगम है ।

कमसे कम सुदृग्मग्रहण काल तक जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय रहते हैं ॥ ५२ ॥

यह सब भी सुगम है ।

अधिकसे अधिक कमस्पात लोकप्रमाण काल तक जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय रहते हैं ॥ ५३ ॥

अग्निदिग्हितो आगत्य सुदुमेद्दिपसुप्पत्रिय असंखेज्जलोगमेत्तकालमद्दिद्वल  
 ष सत्पेव परिममिय निग्गयम्मि तदुबलमादा । बादरद्विदीदो किमहं सुदुमद्विदी ष  
 अग्महिया मादा । ण, बादरेद्दिपसु आउबबधमाणपोरिहिता सुदुमेद्दिपसु आउबबधमाण  
 वाराणमसखेज्जगुणघादो । तं कष णम्बदे ? एदम्हादो विणवयणादा ।

सुदुमेद्दिपया पज्जत्ता केवचिर कालादो हँति ? ॥ ५४ ॥

सुगम ।

जहण्णेण अतोमुहुत्त ॥ ५५ ॥

एद वि सुगमं ।

उन्वस्सेण अतोमुहुत्त ॥ ५६ ॥

अस्य इन्द्रियोवामे जीयोमेसे धाकर सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीयोमे उत्पन्न होकर  
 असंप्यात मोक्षप्रमाण काल तक तथाप्य ह्ये असक समान उसी पर्यायमें परिभ्रमण  
 करके निकल ह्ये जीयोमे सूक्ष्म काय पाया जाता है ।

प्रश्न—बादर जीयोकी स्थितिसे सूक्ष्म जीयोकी स्थिति अधिक क्यों मही हुए ?

समाधान—मही हुए पर्योकि बादर एकेन्द्रिय जीयोमें कितनी पार आयुबन्ध  
 होता है उनस सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीयोके समव्यापारगुणी अधिक बार आयुक बध होते हैं ।

प्रश्न—यह कैसे जाता कि सूक्ष्म एकेन्द्रियोक बादर एकेन्द्रियोकी अपेक्षा  
 असंख्यातगुणी बार अधिक आयुबंध हाते हैं ?

समाधान—इसी जिनपचनसे ही या यह बात जानी जाती है ।

जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ५४ ॥

यह सूक्ष्म सुगम है ।

कमसे कम अन्तर्हृत् काल तक जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक रहते  
 हैं ? ॥ ५५ ॥

यह सूक्ष्म मी सुगम है ।

अधिकसे अधिक अन्तर्हृत् काल तक जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक  
 रहते हैं ॥ ५६ ॥

अनेपसहस्वनारं तत्पुष्पम वि अंतोमुहुत्तदो अहियमराड्विरीए अजुबलमा ।  
सुहुमेहदियअपज्जत्ता केवचिर कालादो होंति ? ॥ ५७ ॥  
सुगम ।

जहण्णेण सुहाभवग्गहणं ॥ ५८ ॥

एदं वि सुगमं ।

उक्कस्सेण अतोमुहुत्त ॥ ५९ ॥

सुहुमेहदियप अचापमपन्नचापं च उक्कस्सममराड्विदिपमाणंतामुहुत्तमेर, सुहु  
मात्र पुत्र मराड्विदी असंख्यया लोगा कथमेदं न विरुद्धदे ? च, पन्नताप अचपसु  
असखेन्वास्सेगमेचवारगदिनामदि च करेतस्स उद्विरोधादो ।

वीहदिया तीहदिया चउरिंदिया वीहंदिय-तीहदिय-चउरिंदिय  
पज्जत्ता केवचिर कालादो होंति ? ॥ ६० ॥

क्योंकि अनेक सहस्रबार उसी उसी पर्याप्तमें उत्पन्न होने पर भी अन्तर्मुहूर्तसे  
अधिक सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंकी मरस्थिति नहीं पायी जाती ।

जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तक कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ५७ ॥

यह सत्य सुगम है ।

कससे कम सुद्रमवग्रहण काल तक जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त रहत  
हैं ॥ ५८ ॥

यह सत्य भी सुगम है ।

अधिकसे अधिक अन्तर्मुहूर्त काल तक जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त  
रहते हैं ॥ ५९ ॥

शंका—सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंकी उत्पन्न मरस्थितिका  
प्रमाण अन्तर्मुहूर्त ही है जब कि सूक्ष्म जीवोंकी मरस्थिति असंख्यात लोकप्रमाण है  
यह बात परस्पर विरुद्ध क्यों न मानी जाय ?

समाधान—वही क्योंकि सूक्ष्म जीव असंख्यात लोकप्रमाण बार पर्याप्तक और  
अपर्याप्तकमें आबागमन करत हैं इसलिये हमके अधिकिष्ठ पर्याप्त व पर्याप्त कालके  
अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होते हुए भी सूक्ष्म पर्याप्तसम्बन्धी कालक असंख्यात लोकप्रमाण हेतुमें  
कोई विरोध नहीं आता ।

जीव द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, तथा द्वीन्द्रिय पर्याप्त, त्रीन्द्रिय पर्याप्त  
व चतुरिन्द्रिय पर्याप्त कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ६० ॥

सुगम ।

जहण्णेण खुदाभवग्गहणमतोसुहुत्त ॥ ६१ ॥

एतथ महाकमेण वीहदिय-तीहदिय-अउरिदियाणं सर्गतम्भूदअपज्जत्तसंमत्तादो  
सुरामवग्गहणमेदेसिं येव पन्त्रचाणमवोसुहुत्त, एतथ अपन्त्रचाणममात्तादो ।

उक्कस्सेण सखेज्जाणि वामसहस्साणि ॥ ६२ ॥

अअपिदिदियहितो आगतूण मारसवास-एगुण्णवण्णरादिदिय-छम्मासाउएसु वीह  
दिय-तीहदिय-अउरिदिएसुपुण्णज्जय बहुवार एत्थेव परियट्ठिय णिग्गयस्स धुत्तकाल-  
संमत्तादो ।

वीहदिय-तीहदिय-अउरिदियअपज्जत्ता केवचिर कालादो होंति ?

॥ ६३ ॥

सुगम ।

जहण्णेण खुदाभवग्गहण ॥ ६४ ॥

यह एव सुगम है ।

कमसे कम सुद्रमवग्रहणमात्र काल व अन्तर्मुहूर्ते काल तक जीव विकलत्रय व  
विकलत्रय पर्याप्त होते हैं ॥ ६१ ॥

यहाँ क्रमानुसार वीन्द्रिय वीन्द्रिय और अतुरिन्द्रिय जीवोंमें उनके अपर्याप्तोंका  
भी अन्तर्भाव है अतएव उन्हीं अपर्याप्तोंकी अपेक्षा उनका कमसे कम सुद्रमवग्रहण काल  
होता है । उन्हीं वीन्द्रियादिक जीवोंके पर्याप्तोंका काम अन्तर्मुहूर्ते है क्योंकि इनमें  
अपर्याप्तोंका अभाव है ।

अधिकसे अधिक संरूपात हजार वर्षों तक जीव विकलत्रय व विकलत्रय पर्याप्त  
होते हैं ॥ ६२ ॥

अधिवक्षित इन्द्रियवाले जीवोंमेंसे माकर बादह वर्ष उनवास रात्रिदिन तथा  
एह मासकी भाषुपासे वीन्द्रिय वीन्द्रिय व अतुरिन्द्रिय जीवोंमें उत्पन्न होकर बहुत बाल  
कहीं पर्याप्तोंमें परिभ्रमण करक भिक्षुनेवाले जीवके सुषोक्त कालका होता संभव है ।

जीव वीन्द्रिय अपर्याप्त, वीन्द्रिय अपर्याप्त व अतुरिन्द्रिय अपर्याप्त  
कितने काल तक रहत हैं ? ॥ ६३ ॥

यह एव सुगम है ।

कमसे कम सुद्रमवग्रहण काल तक जीव विकलत्रय अपर्याप्त रहते हैं ॥ ६४ ॥

उत्कस्सेण अतोमुहुत्त ॥ ६५ ॥

एदामि दो वि सुचामि सुगमामि ।

पर्विदिय-पर्विदियपज्जत्ता केवचिरं कालादो होंति ? ॥ ६६ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण सुद्धाभवग्गहणमतोमुहुत्त ॥ ६७ ॥

एदं पि सुगमं ।

उत्कस्सेण सागरोवमसहस्साणि पुब्बकोट्टिपुधत्तेणव्भद्वियाणि  
सागरोवमसदपुधत्त ॥ ६८ ॥

पर्विद्विमाण पुब्बकोट्टिपुधत्तव्भद्वियसागरोवमसहस्साणि । एत्थ सागरोवम-  
सहस्समिदि एगवपयेव होदव्वं, वहुत्तं सहस्साणमभावारो ? अ, सागरावेषेसु बहुत्त

अधिकमे अधिक अन्तर्गृहर्त काल तक जीव विकसत्रय अवर्षाप्त रहत  
हैं ॥ ६५ ॥

ये शर्षो सूत्र सुगम है ।

जीव पंचेन्द्रिय व पंचेन्द्रिय पर्याप्त कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ६६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

कमसे कम सुद्रमग्रहण काल व अन्तर्गृहर्त काल तक जीव पंचेन्द्रिय व  
पंचेन्द्रिय पर्याप्त रहते हैं ॥ ६७ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

अधिकमे अधिक पूर्वकोट्टिपुधत्तसे अधिक सागरोपमसहस्र व सागरोपमशत  
पुधत्त काल तक जीव क्रमशः पंचेन्द्रिय व पंचेन्द्रिय पर्याप्त रहते हैं ॥ ६८ ॥

पंचेन्द्रिय जीवोंका काल पूर्वकोट्टिपुधत्तसे अधिक एक हजार सागरोपमप्रमाण  
होता है ।

संज्ञा—इस सूत्रमें सागरोपमसहस्रं देसा एक वचनात्मक निर्देश होता  
आदिपे या न कि बहुवचनार्थक क्योंकि सामान्य पंचेन्द्रिय जीवोंके मवस्थितिकालमें  
अनेक सहस्र सागरोपम वहीं होते ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि सहस्रमें नहीं किन्तु सागरोपमोंमें

दंसणादो । ण सहस्ससहस्स पुम्भमिवादो' इदि चि आसकमिन्ज, उक्खाणुसारेण  
सकखणस्स पुष्पिदसणादो । पन्वचाण पुण सागरोपमसदपुषत्त । कपमेद पम्भदे ?  
अहासखपायादो ।

पविंदियअपज्जत्ता केवचिर कालादो होति ? ॥ ६९ ॥

सुगम ।

जहण्णेण खुदाभवग्गहण ॥ ७० ॥

उक्कस्सेण अतोमुहुत्त ॥ ७१ ॥

एदापि दो मि सुचानि सुगमाणि ।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया  
केवचिर कालादो होति ? ॥ ७२ ॥

एद पि सुगमं ।

यों बहुत्य पाया जाता है । परीं भी भाशिका नहीं करता चाहिये कि यदि बहुत्यतका  
संबंध सहस्रसे म होकर सागरोपमोंसे या तो सहस्र शब्दको सागरोपमके पश्चात् न  
एककर उससे पूर्व विशेषरूपसे रखना या क्योंकि सदयक अनुसार सप्तजकी प्रवृत्ति  
देखी जाती है ।

पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका काळ सागरोपमशतपुषत्त्व ही है ।

द्वका—पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंका सागरोपमशतपुषत्त्व काळ कैसे जाना ?

समाधान—सूत्रमें पधार्त्तय न्यायसं उपर्युक्त प्रमाण जाना जाता है ।

जीव पधन्द्रिय अपर्याप्त कितने काळ तक रहते हैं ? ॥ ६९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

कमस कम सुद्रभवग्रहण काल तक जीव पंचेन्द्रिय अपर्याप्त रहते हैं ॥ ७० ॥

अधिकसे अधिक अन्तर्गृह्य काळ तक जीव पंचेन्द्रिय अपर्याप्त रहते हैं ॥ ७१ ॥

ये दोनों सूत्र सुगम हैं ।

कायमार्गणानुसार जीव पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजकायिक व वायुकायिक  
कितने काळ तक रहते हैं ? ॥ ७२ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।



जहण्णेण सुदाभवग्गहण ॥ ७३ ॥

एवं पि सुगम ।

उक्कस्सेण असस्सेज्जा लोगा ॥ ७४ ॥

अपिदक्खपादा आगतूण अपिदक्खयम्मि सट्ठप्पन्निअप अमत्तेग्गलोगमेत्त झ्झत्तं तत्त्व परिमहियिण्णिग्गयम्मि तद्दुबलमादो ।

बादरपुढवि-बादरआउ बादरतेउ-बादरवाउ-बादरवणप्फदिपत्तेय-सरीरा केवचिर कालादो हाँति ? ॥ ७५ ॥

सुगम ।

जहण्णेण सुदाभवग्गहण ॥ ७६ ॥

एवं पि सुगम ।

उक्कस्सेण कम्मट्ठिदी ॥ ७७ ॥

कमसे कम छुट्टमवग्रहण क्कत्तं त्थं जीव पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजकायिक व वायुकायिक रहते हैं ॥ ७३ ॥

एह एव मी सुगम है ।

अधिकसे अधिक असंख्यातलोकप्रमाण क्कत्तं त्थं जीव पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजकायिक व वायुकायिक रहते हैं ॥ ७४ ॥

क्योंकि अविश्रित कापसे आकर व विश्रित कापसे उतरघ होकर असंख्यातलोकमात्र काक त्थं त्थं पर्यायमें परिग्रहण करक निकलनेवाले जीवके सुभोक काक पाया जाता है ।

जीव बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक, बादर तेजकायिक, बादर वायुकायिक व बादर वनस्पतिकायिक प्रसंख्यरीर कितने क्कत्तं त्थं रहते हैं ? ॥ ७५ ॥

एह एव सुगम है ।

कमसे कम छुट्टमवग्रहण क्कत्तं त्थं जीव बादर पृथिवीकायिकादिक उपर्युक्त पर्यायोंमें रहते हैं ॥ ७६ ॥

एह एव मी सुगम है ।

अधिकसे अधिक कमस्तिप्रमाण क्कत्तं त्थं जीव बादर पृथिवीकायिकादिक उपर्युक्त पर्यायोंमें रहते हैं ॥ ७७ ॥

कम्महिदि चि बुच सत्तरिसागरोत्तमकोडाकोठिमत्ता येत्तन्ना, कम्मविसेसहिदि मोत्तण कम्मस्ताठहिदिगाहणादो । के चि आइरिया सत्तरिसागरोत्तमकोडाकोठिमाबलियाए असत्तेज्जदिमागेण गुणिद् बादरपुढविकायादीण कायहिदी होदि चि मणंति । तेसिं कम्म हिदिबवएसो कन्ने कारणोबयसदो । एद् वक्खाम्ममरिच चि कर्बं णम्बदे ? कम्महिदि माबलियाए असत्तेज्जदिमागेण गुणिदे बादरहिदी होदि चि परियम्मवयण्णद्वाशुववचीदो । तस्य सामण्णेण बादरहिदी हादि चि अदि वि उच तो वि पुढविकायादीणं बादरार्थं पत्तेपकायहिदी येत्तन्ना, असत्तेज्जासत्तज्जाओ ओस्सपिणी उस्सपिणीओ चि सुत्तम्मि बादरहिदिपरुवमादो ।

बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरतेउकाइय-बादरवाउका इय-बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्ता केवचिरं कालादो होति ?

॥ ७८ ॥

सुगम ।

सुअंमे ओ कर्मस्थिति शब्द है उससे सत्तर सागरापम कोडाकोठि माब काठका ग्रहण करना बाहिये क्योंकि विदाय कर्मोंकी स्थितिका छाकुर कर्मसामान्यकी आयुस्थितिका ही यहाँ ग्रहण किया गया है । किन्तु ही माचार्य एसा कहत हैं कि सत्तर सागरापम कोडाकाठिको आयलीके असत्प्रातये भागस गुण्य करनेपर बादर पृथिवीकायादिक जीवोंकी कायस्थितिका प्रमाण जाता है । किन्तु उमकी यह कर्म स्थिति सेवा कर्मके कारणके उपचारसे ही सिद्ध होती है ।

श्रद्धा—येना ध्याप्पाम है यह कैसे जाना जाता है ?

सुभाषान — कर्मस्थितिको मावलीक असत्प्रातये भागस गुणित करनेपर बादरस्थिति हाती है एत परिकर्मके धनकी अभ्यया उपपत्ति बन नहीं सकती इसीसे उपर्युक्त ध्याप्पाम जाना जाता है ।

यहाँपर यद्यपि सामान्यसे बादरस्थिति होती है ऐसा कहा है ता भी पृथिवीकायादिक बादर प्रत्यक्षरीर जीवोंकी स्थिति ग्रहण करना बाहिये क्योंकि सुअंमे बादरस्थितिका प्ररूपम असत्प्रातासंख्यात अवसरिणी उस्सपिणी प्रमाण किया गया है ।

जीव बादर पृथिवीकायिक, बादर अपकायिक, बादर सेजकायिक, बादर वायु कायिक व बादर वनस्पतिकायिक प्रत्यक्षरीर पर्याप्त किन्तु काल तक रहत है ? ॥ ७८ ॥

यह सब सुगम है ।

जहण्णेण अतोमुहुत्त ॥ ७९ ॥

एद पि मुगम ।

उक्कस्सेण संग्जेज्जाणि वाससहस्साणि ॥ ८० ॥

असपिइकायादा आगतूल बादरपुडवि-बादरआउ-बादरतेउ-बादरवाउ बादर  
बेणप्फदिपचमरीरप-अचपमु अहाकमेण बानीसबस्मसहस्स-सचबस्मसहस्स-तिणिदिबस  
तिणिबस्ससहस्स दमबस्मसहस्साउण्णु उप्पमिय संयेन्दबस्ससहस्साणि तस्सच्छिय  
भिग्गदस्स तदुल्लमादा ।

बादरपुडवि-बादरआउ-बादरतेउ-बादरवाउ-बादरवणप्फदिपसेय-  
सरीरअपज्जता केवचिर कालादो ह्येति ? ॥ ८१ ॥

मुगम ।

जहण्णेण खुदाभवग्गहण ॥ ८२ ॥

कमम कम अन्तर्हृत्त काउ तक जीव बादर पृथिवीकायिक आदि पर्याप्त  
रहत हैं ॥ ७९ ॥

एद एध मी मुगम है ।

अधिक्रम अधिक संख्यात हजार बर्यो तक जीव बादर पृथिवीकायिकादि  
पर्याप्त रहत हैं ॥ ८० ॥

अविबक्षित बायम आकर बादर पृथिवीकायिक बादर अप्कायिक बादर  
तत्रकायिक बादर वायुकायिक मीग बादर वनस्पतिकायिक प्रत्यक्षशरीर पर्याप्तबर्मे  
पथाकमम बार्हस ह्यार बर्ये स्मात ह्यार बर्ये मीन दिबस तीन ह्यार बर्ये ब दश  
ह्यार बर्ये मी आयुषाम मीजोम उत्पन्न हाकर ए संख्यात ह्यार बर्यो तक उर्ला पर्याप्त  
रहकर निकसमपाम जीवके सुबोण्ड प्रमाण काय पाया जाता है ।

जीव बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक, बादर तत्रकायिक, बादर वायु  
कायिक बादर वनस्पतिकायिक प्रत्यक्षशरीर अपवाप्त किन्तु काल तक रहत हैं ॥ ८१ ॥

एद एध मुगम है ।

कमम कम श्रुतमनप्ररम बाल तक जीव बादर पृथिवीकायिक आदि अपर्याप्त  
रहत हैं ॥ ८२ ॥

उक्कस्सेण अतोमुहुत्त ॥ ८३ ॥

एदाणि वि सुगमाणि ।

सुहृमपुढविकाइया सुहृमआउकाइया सुहृमतेउकाइया सुहृम  
वाउकाइया सुहृमवणप्फदिकाइया सुहृमणिगोदजीवा पच्चत्ता अपच्चत्ता  
सुहृमेइदियपज्जत्त अपज्जत्ताण भगो ॥ ८४ ॥

अहा सुहृमेइदियाण अहण्णेण सुहृमवग्गहण उक्कस्सेण अमसन्नजा सागा तथा  
एदसिं सुहृमपुढविकाइयाण उहण अहण्णुक्कस्सकाला' होति । अहा सुहृमइदियपज्जत्ताणं  
अहण्णकालो उक्कस्सकालो वि अतोमुहुत्तं होदि तथा सुहृमपुढविकायादीण उहणं पज्ज  
त्ताण अहण्णुक्कस्सकाला होति । अहा सुहृमइदियअपज्जत्ताणं अहण्णकालो सुहृमव  
ग्गहणमुक्कस्सो अतोमुहुत्तं तथा एदसिं उहणमपज्जत्ताण अहण्णुक्कस्सकाला होति सि  
मणिद इदि । सुहृमणिगोदग्गहणमणत्थय, सुहृमवणप्फदिकाद्यग्गहणनेव सिटीदा ।

अधिकसे अधिक अन्तर्मुहूर्त काल तक जीव बादर पृथिवीकायिक आदि  
अपर्याप्त रहते हैं ॥ ८३ ॥

ये सूत्र भी सुगम हैं ।

सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म अपकायिक, सूक्ष्म तजकायिक, सूक्ष्म वायुकायिक,  
सूक्ष्म वनस्पतिकायिक और सूक्ष्म निगोदजीव तथा इन्हीं पर्याप्त व अपर्याप्त जीवोंके  
कालका निरूपण क्रमसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त व सूक्ष्म एकन्द्रिय  
अपर्याप्तोंके समान है ॥ ८४ ॥

असि प्रकार सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंका अग्रम्यसे सुहृमवग्गहण और उक्कस्से  
असक्यात् ओक्कप्रमाण काळ है उसी प्रकार इन सूक्ष्म पृथिवीकायिकादिक उहणोका  
अग्रम्य और उक्कप्र काळ होता है । असि प्रकार सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अग्रम्य  
काळ और उक्कप्र काळ भी अन्तर्मुहूर्त होता है उसी प्रकार सूक्ष्म पृथिवीकायिकादिक उह  
पर्याप्तोंका अग्रम्य और उक्कप्र काळ होता है । असि प्रकार सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त  
जीवोंका अग्रम्य काळ सुहृमवग्गहण और उक्कप्र अन्तर्मुहूर्त होता है उसी प्रकार इन उह  
अपर्याप्तोंका अग्रम्य और उक्कप्र काळ होता है । यह सूत्रका अभिप्राय है ।

टीका—सूक्ष्म सूक्ष्म निगोदजीवोंका ग्रहण करना अत्यन्त है, न्यायिक सूक्ष्म  
वनस्पतिकायिक जीवोंका ग्रहणसे ही अन्तर्ग्रहण सिद्ध है । तथा सूक्ष्म वनस्पतिकायिक

अथ सुद्रुमवणपफदिकाइपपरिचा सुद्रुमभिगोदा अतिथ, तहापुनरुलमादो ! मेद जुब्बदे, अरथ सुर्च अतिथ तरथ आहरियनयपार्ग वक्खापार्ग अथ पमापत्तं होदि । अरथ पुन त्रिणवपथविभिगप सुत्तमत्ति अ तत्थ परेसि पमानत्तं । सुद्रुमवणपफदिकाइए मभिद्व सुद्रुमभिमेत्तबीना सुषम्मि परुविदा, त्तो परेसि पुन परुवण्णाहापुनवचीदो सुद्रुम वणपफदिकाइए सुद्रुमभिगोदान विसेसो अतिथ सि वम्बदे ।

वणपफदिकाइया एइदियाण भंगो ॥ ८५ ॥

अहा परदिमाण अहण्णात्ता सुरामवग्गहणसुक्कस्सो अणत्तकालममंभे अ पोगलपरियट्टं तहा वणपफदिकाइयाग्गं अहण्णात्ता उक्कस्सकस्सो अ होदि सि उच होइ ।

णिगोदजीवा केवचिरं कालदो होति ? ॥ ८६ ॥

सुगमं ।

जइण्णेण सुद्रुमवग्गहण ॥ ८७ ॥

एदं वि सुगमं ।

उक्कस्सेण अइइज्जपोमालपरियट्ट ॥ ८८ ॥

जीबोंके सिध सुद्रुम निगोद जीव हैं मी वहाँ कर्कोकि बैना पाया नहीं जाता ?

समाधान— यह शंका ठीक नहीं है क्योंकि जहाँ सुख नहीं है वहाँ भाषार्थ बचनोंके भीर व्याख्यानोंको प्रमाणाता होती है । किन्तु जहाँ त्रिण वगवानके मुलसि निर्गत सुख है वहाँ इसका प्रमाणाता नहीं होती । चूंकि सुद्रुम वनस्पतिकार्याधिको कह कर सुद्रुम सुद्रुम निगोदजीबोंका निरूपण किया गया है अतः इनके पृथक् प्रकारकी अण्यपानुपपत्तिसं सुद्रुम वनस्पतिकार्याधिक और सुद्रुम निगोदजीबोंके अर्थ है वह जाना जाता है ।

वनस्पतिकार्याधिक जीबोंके कासक्य कवन एकेन्द्रिय जीबोंके समान है ॥ ८५ ॥

त्रिण प्रकार एकेन्द्रियोअ अण्ण्य कास सुद्रुमवग्गहण और अत्तप मसंज्जात्त पुत्तकपरिवर्तनप्रमाण अनत्त कास है उसी प्रकार वनस्पतिकार्याधिक जीबोंका अण्ण्य कास और अत्तक कास होता है यह सूचना अर्थ है ।

जीव निगोदजीव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ८६ ॥

वह सुख सुगम है ।

जीव अण्ण्यसे सुद्रुमवग्गहण कास तक निगोदजीव रहते हैं ॥ ८७ ॥

वह सुख मी सुगम है ।

जीव अधिकसे अधिक अइइ पुत्तकपरिवर्तनप्रमाण काल तक निगोदजीव रहते हैं ? ॥ ८८ ॥

अणिगादजीवस्म णिगोदसु उप्पणस्स उन्नस्मण अट्टाइज्जपोगलपरिपट्टिता  
उपरि परिमवणामावादो ।

नाटरणिगोदजीवा नादरपुढविकाइयाण भगो ॥ ८९ ॥

जहा पादरपुढविकाइयाण जहण्णकाला सुदाभवरगहणमुक्कस्मा कम्मट्टिदी तथा  
पट्ठिं जहण्णुक्कस्सकाला होंति । जहा नादरपुढविकाइयपञ्चणाण कामो तथा पादर  
णिगादपञ्चणाण इति । अपरि पादरपुढविकाइयपञ्चणाण उक्कस्माउट्टिदी मग्गज्जाणि  
वस्समइस्समाणि, पादरणिगोदपञ्चणाण पृण उन्नस्सकाला अतामुहुत्तं । जहा पादर  
पुढविकाइयअन्नञ्चणाण जहण्णकालो सुदाभवरगहणमुक्कस्सकाला अतामुहुत्तं तथा पादर  
णिगादपञ्चणाण जहण्णुक्कस्सकाला षि मणिदं इति ।

तसकाइया तसकाइयपज्जत्ता केवचिर कालाणे होंति ? ॥ ९० ॥

सुगम ।

जहण्णेण खुदाभवग्गहण अतोमुहुत्त ॥ ९१ ॥

पयोंचि निगादजीवोंमे उप्पन्न हूण निगादस मित्र जीवणा उक्कम्म भङ्गा  
पुग्गमपरिपत्तनोस ऊपर परिभ्रमण इ ही नहीं ।

पादर निगादजीवोंस काल पादर पृथिवीकापिकोके ममान इ ॥ ८९ ॥

जिस प्रकार पादर पृथिवीकापिकोका अपण्य कार शुद्धमपवदह भीर उरह  
वमणियनि प्रमाण इ उर्वा प्रकार नादर निगादजीवोंका अपण्य भार उरह काल होता  
है । जिस प्रकार नादर पृथिवीकापिक पयामोंका कार है उर्वा प्रकार पादर निगाद  
पर्याप्तोंका काम होता है । विनाय कम्म रत्तता है कि नादर पृथिवीकापिक पर्याप्तोंकी  
उरह भायुणियनि संख्यात इकार पर इ परणु नादर निगाद पर्याप्तोंका उरह काम  
अन्तमुहत्त ही है । जिस प्रकार नादर पृथिवीकापिक पर्याप्तोंका अपण्य काम शुद्धमप  
वदह भीर उरह काम अन्तमुहत्त है उर्वा प्रकार नादर निगाद पर्याप्तोंका अपण्य  
भीर उरह काम होता है ।

तीव प्रमहापिक आर प्रमहापिक पयाण रिग्गे वान तरु रहन हैं ? ॥ ९० ॥

पर एव सुगम है ।

अपण्यम शुद्धमवदह आर अन्तमुहत्त काल तरु जीर कम्म प्रमहापिक और  
प्रमहापिक पयाण रहन हैं ॥ ९१ ॥

सुगममद् वि ।

उत्कस्सेण वे सागरोवमसहस्माणि पुब्बकोट्टिपुधत्तेणम्महियाणि  
वे सागरोवमसहस्माणि ॥ ९२ ॥

तमकाइयाअ पुब्बकोट्टिपुधत्तवम्महियाणि वे सागरोवमसहस्माणि, वेसि पत्र  
चाल व सागरोवमसहस्स वेव । इदा ? अहार्यखवायादो ।

तमकाइयअपज्जत्ता केवचिरं कालानो होति ? ॥ ९३ ॥

सुगमं ।

जहण्णणं सुद्धाभवग्गहण ॥ ९४ ॥

सुगम ।

उत्कस्सेण अतोमुहुत्त ॥ ९५ ॥

एद्दं वि सुगमं ।

यह सूत्र भी सुगम है ।

अधिक्रम अधिक पूर्वकाट्टिपुधत्तस अतिक्र दा सागरोवमसहस्स और केवस  
दा सागरोवमसहस्स काल तक बीव क्रमशः प्रसक्तयिक और प्रसक्तयिक पर्याप्त रहते  
हैं ॥ ९२ ॥

प्रसक्तयिकोंका उत्पत्त कास पूर्वकोट्टिपुधत्तसे अधिक हो सागरोवमसहस्स  
भीट प्रसक्तयिक पर्याप्तका कबक दा सागरोवमसहस्स ही है क्योंकि यहाँ यथासंभव  
ग्याव लगता है ।

बीव प्रसक्तयिक अपर्याप्त कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ९३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

क्रमम क्रम सुद्धाभवग्गहण काल तक बीव प्रसक्तयिक अपर्याप्त रहते हैं ॥ ९४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अधिक्रम अधिक अन्तमुहुत्त काल तक बीव प्रसक्तयिक अपर्याप्त रहते  
हैं ॥ ९५ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

जोगाणुवादेण पचमणजोगी पचवचिजोगी केवचिर कालादो  
होति ? ॥ ९६ ॥

‘सागिणो’ इदि वयणादो बहुवयणभिरसो किण्ण कऽदो ? ण, पंचण्ण पि  
एयचाविणामावेण एयवयणुववचीदो । सेसं सुगम ।

जहण्णेण एयसमओ ॥ ९७ ॥

मणजोगस्स ताव एगममयपरूबणा कीरद । स सदा—एगो कायजोगेण अण्छिदो  
कायजोगेण एएण मणजोगे आगदो, तणेगममयमच्छिय विदियसमये मरिय काय  
जोगी मादा । लद्धो मणजोगस्स एगममआ । पचवा कायजोगेण एएण मणजोगे आगदे  
विदियसमए वाधादिदस्स पुणरवि कायजागा चेव आगदो । लद्धो विदियपपारेण  
एगममओ । एव सेसानं चदुण्ह मणजोगानं पचण्ह वचिजोगाणं च एगममयपरूबणा  
दोहि पपारेहि माएण कायव्वा ।

योगमार्गणानुसार जीव पांच मनोयोगी और पांच वचनयोगी कितने काल  
तक रहते हैं ? ॥ ९६ ॥

संज्ञा— जोगियो इस प्रकारक वचनसे यहाँ बहुवचनका निर्देश क्यों  
नहीं किया ?

समाधान— नहीं किया क्योंकि पाँचोंके ही एकत्रयक साथ मयिनाभाव वामसे  
यहाँ एकवचन उचित है ।

शेष सुप्रार्थ सुगम है ।

कमसे कम एक समय तक जीव पांच मनोयोगी और पांच वचनयोगी रहते  
हैं ॥ ९७ ॥

प्रथमतः मनोयोगके एक समयकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकार है—  
एक जीव काययोगसे स्थित था यह काययोगकासक क्षयस मनोयोगमें आया उसक साथ  
एक समय रहकर व द्वितीय समयमें मरकर काययोगी हो गया । इस प्रकार मनोयोगका  
अध्याय काळ एक समय प्राप्त हो जाता है । मयथा काययोगकाळके क्षयसे मनोयोगके  
प्राप्त होनेपर द्वितीय समयमें ध्याघातको प्राप्त हुए उसको फिर भी काययोग ही प्राप्त  
हुमा । इस तरह द्वितीय प्रकारस एक समय प्राप्त होता है । इसी प्रकार शेष चार  
मनोयोगों और पांच वचनयोगोंके भी एक समयकी प्ररूपणा दोनों प्रकारोंसे जातकर  
करना चाहिये ।



उक्कस्सेण अतोमुहुत्त ॥ ९८ ॥

अणपिद्वागादो अण्णिदमोर्गं गत्वा उक्कस्सेण तत्त्वं अतोमुहुत्तपमाय पडि  
विरोहामावादा ।

कायजागी केवन्निर कालादो होदि' ? ॥ ९९ ॥

किमहुमेत्थ एगवयमभिरेमो कदा ? ज एस दासा, एगवीरं मोत्तण बहदि  
संविदि एत्थ पत्राज्जमामावादा ।

जहण्णेण अतोमुहुत्त ॥ १०० ॥

अणपिद्वागादो कायमोर्गं गदस्स सहष्वास्सस्स वि अतोमुहुत्तपमाय मात्तुण  
एगममयादिपमाणापुबउमामो ।

उक्कस्सेण अणंतकालमसंन्वेज्जपोग्गलपरियट्ट ॥ १०१ ॥

अणपिद्वागादा कायमोर्गं गत्वा तत्त्वं सुहु दीहदमकिउप काल करिय एइदियेसु  
उत्पन्नास्स आसियाए अमत्तिज्जदिमागमेत्तपोग्गलपरियट्टाणि पत्तियट्टिरस्स कायमोर्ग-  
क्कस्सकामुवत्तमादा ।

अधिकम अधिक अन्तमुहुत्ते काल तद् जीव पांच मनायागी और पांच बचन-  
यागी रहते हैं ॥ ९८ ॥

क्योंकि अविचक्षित योगसे विचक्षित पागका प्राप्त होकर उत्कर्षसे वही अन्न  
सुहृत् तद् अवरुपात्त हानेमें कोई विराय नहीं है ।

जीव काययोगी कितन काल तद् रहता है ? ॥ ९९ ॥

श्रेय—वहाँ एकवचनका निर्देश किस स्थिति किया ?

समाधान—यह बार बार नहीं है क्योंकि एक जीवका उत्पन्न बहुत जीवोंसे  
वहाँ अपात्रन नहीं है ।

कमम कम अन्तसुहृत् तद् जीव काययोगी रहता है ॥ १०० ॥

क्योंकि अविचक्षित पागसे कायपागका प्राप्त हुए जीवक अपत्य कालका प्रमाण  
अन्नसुहृत्तका उत्पन्न एक समघातिकरुप नहीं पाया जाता ।

अधिकम अधिक अमरुपात्त पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अन्नन काल तद् जीव  
काययोगी रहता है ॥ १०१ ॥

क्योंकि, अविचक्षित पागसे कायपागका प्राप्त होकर और वही अतिशय दीर्घ  
काल तद् रहकर कालका करक एकत्रियोग उत्पन्न हुए जीवक आद्यमीक असेव्यात्तप  
भागमात्र पुद्गलपरिवर्तन अमरु काल हुए काययोगका उत्पन्न काल पाया जाता है ।

१ श्रेय तेषि इति काल ।

ओरालियकायजोगी क्वेचिर कालादो होदि ? ॥ १०२ ॥

मुगमं ।

जहण्णेण एगममओ ॥ १०३ ॥

ममजागेण वचिजोगेण वा अछिय तेमिमद्दाखपण ओरालियकायजोगगद  
बिदियसमप फल्ल फल्लण जोगतरं गदस्स एगसमपदमणादा ।

उक्कस्मेण वावीस वासमहस्माणि देसूणाणि ॥ १०४ ॥

घासीसभाससहस्साउभपुटवीक्काणमु उप्पग्गिय सन्नजहण्णप फल्लण आरालिय  
मिस्सद्द गमिय पन्नसिगदपमसमयप्पट्टुदि आव अतोमुट्टुण्णवानीमवाससहस्माणि  
ताव ओरालियकायजोगुत्तंमादा ।

ओरालियमिस्सकायजोगी वेउव्वियकायजोगी आहारकायजोगी  
क्वेचिर कालादो होदि ? ॥ १०५ ॥

जहण्णेण एगममओ ॥ १०६ ॥

जीव औदारिककाययागी कित्ते काल तक रहता है ? ॥ १०२ ॥

यह सूत्र समम है ।

कमम कम एक समय तक जीव औदारिककाययोगी रहता है ॥ १०३ ॥

क्योंकि मनायोग मध्या सन्नयोगके साथ रहकर उनके कालक्षयस औदारिक  
काययागीको प्राप्त हानक शिवाय समयमें भरकर योगांतरको प्राप्त हुए जीवके एक  
समय देखा जाता है ।

अधिकसे अधिक बार्दस हजार वर्षों तक जीव औदारिककाययागी रहता  
है ॥ १०४ ॥

क्योंकि वासस हजारा वर्षकी आयुबाह्य पृथिवीवायुकोमें उत्पन्न होकर सर्व  
अधम्य कामस औदारिकमिभकालको शिवाकर पर्याप्तिक प्राप्त हानक मयम समयसे  
छकर अन्तर्मुहूर्त कम बार्दस हजार वर्ष तक औदारिककाययाग पाया जाता है ।

जीव औदारिकमिभकाययागी, वैक्रियिककाययोगी और आहारककाययागी  
कित्ते फल्ल तक रहता है ? ॥ १०५ ॥

कमसे कम एक समय तक जीव औदारिकमिभकाययोगी आदि रहता है ॥ १०६ ॥

आरात्रियकायजोषादिनामाविर्द्धात् क्वाङ्गदमजागिञ्जिगन्धि आरात्रिय  
मिस्मस्म एगसमञ्च लम्पद्, तत्त्वं आरात्रियमिस्सेम विष्णा अण्यजोगामाभादौ । मण-वचि  
जोगोर्हिता वतञ्जियजागद्विदियसमए मद्स्म एगसमभो वतञ्जियकायजोगस्त उव  
लम्पद्, मुदपद्मसमए कम्मइय आरात्रिय-वेठञ्जियमिस्सकायजोगे मोत्तूण वेठञ्जियकाय-  
जाम्माणुवलमादा । मण-वचिजोगोर्हिता आहारकायजोगद्विदियसमए मुदस्म मूलसरीर  
पविहस्स वा आहारकायजोगस्त एगममञ्च लम्पद्, मुदाय मूलसरीरपविह्वाण ष  
पडमममए आहारकायजोगाणुवलमादा ।

उक्कस्सेण अतोमुहुत्त ॥ १०७ ॥

मणजोगादा वचिजागादो वा वतञ्जिय आहारकायजोग गंतूण सञ्चुकस्म अत-  
मुहुत्तमच्छिय अण्यजोग गदस्म अतामुहुत्तमत्तञ्जुवलमादा, अण्यपिद्वोगादो ओरा  
त्रियमिस्मञ्च गदूण सञ्चुकस्मकालमच्छिय अण्यजोग गदस्म ओरात्रियमिस्मस्म  
अतामुहुत्तमत्तञ्जुवलमादा । सुद्धमईदियअपञ्जवत्तु वादरइदियअपञ्जवत्तु ष

भौदारिककायपागके अविनामापी इण्डसमुत्पातसे कपाटसमुत्पातका प्राप्त हुए  
सयोगी जिनम भौदारिकमिधका एक समय पाया जाता है क्योंकि इस अवस्थाम  
भौदारिकमिधका विना अन्य पाग पाया नहीं जाता । मनायोग या बचनयोगसे वैदिकिक  
काययोगको प्राप्त होकर द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त हुए जीवके वैदिकिककाययोगका  
एक समय पाया जाता है क्योंकि मरजाके प्रथम समयम कामकायपाग भौदारिक  
मिधकायपाग और वैदिकिकमिधकायपागका छोड़कर वैदिकिककाययोग पाया नहीं  
जाता । मनापाग भयवा बचनयोगसे आहारकाययोगका प्राप्त होनेके क्षिणय समयमें  
मृत्युको प्राप्त हुए या मृत्यु शरीरमें प्रविष्ट हुए जीवके आहारकायपागका एक समय  
पाया जाता है क्योंकि मृत्युका प्राप्त या मृत्यु शरीरमें प्रविष्ट हुए जीवके प्रथम समयमें  
आहारकायपाग पाया नहीं जाता ।

अधिकमे अधिक अन्तमुहुत्त काल तक जीव आदारिकमिधकाययोगी आदि  
रहता है ॥ १०७ ॥

क्योंकि मनायोग भयवा बचनयोगसे वैदिकिक या आहारकाययोगको प्राप्त  
होकर सञ्चोदए अन्तमुहुत्त काल तक रहकर अन्य पागको प्राप्त हुए जीवके अन्तमुहुत्त  
मात्र काल पाया जाता है तथा अविजसित पागसे भौदारिकमिधकाययोगको प्राप्त होकर  
व सञ्चोदए काल तक रहकर अन्य पागको प्राप्त हुए जीवके भौदारिकमिधका अन्त  
मुहुत्तमात्र उरुदए काल पाया जाता है ।

शुद्ध—एकप्रप अर्थात्तमें और बादर एवेच्छिय अर्थात्तमें साव

सत्तद्धमनगाहणापि गितरगुप्पणस्स बहुओ फासो किण्ण लम्भदे ? ण, ताओ सम्भाओ  
हिदीआ एककदा करे वि अतोमुहुत्तमेचकालुत्तभादा ।

वेतवियमिस्सकायजोगी आहारमिस्सकायजोगी केवचिर  
कालादो होदि ? ॥ १०८ ॥

सुगम ।

जहण्णेण अतोमुहुत्त ॥ १०९ ॥

एगसमभा किण्ण लम्भदे ? ण, ण्ठय मरण जागपरावचीणससभनादो ।

उक्कस्सेण अतोमुहुत्त ॥ ११० ॥

सुगम ।

कम्मइयकायजोगी केवचिर कालदि होदि ? ॥ १११ ॥

भाउ भयमहण तक मिरन्तर उत्पन्न हुए जीवके बहुत काम क्यों नहीं पाया जाता ?

समाधान—नहीं पाया जाता क्योंकि उन सब स्थितियोंके इकट्ठा करनेपर  
भी अन्तर्मुहूर्तमात्र काळ पाया जाता है ।

जीव वैक्रियिकमिभकाययोगी और आहारकमिभकाययोगी कितने काल तक  
रहता है ? ॥ १०८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

कमसे कम अन्तर्मुहूर्त काल तक जीव वैक्रियिकमिभकाययोगी और आहारक  
मिभकाययोगी रहता है ॥ १०९ ॥

ईका - यहाँ एक समयमात्र अचम्य काळ क्यों नहीं पाया जाता ?

समाधान—नहीं पाया जाता, क्योंकि, यहाँ मरण और योगपरावृत्तिका होना  
सत्समय है ।

अधिकसे अधिक अन्तर्मुहूर्त काल तक जीव वैक्रियिकमिभकाययोगी और  
आहारकमिभकाययोगी रहता है ॥ ११० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जीव कर्मणकाययोगी कितने काल तक रहता है ? ॥ १११ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमओ ॥ ११२ ॥

एगविग्गह क्कच्छ उप्पण्णस्स तदुपलंभादो ।

उत्तकस्सेण तिण्णिण समया ॥ ११३ ॥

तिण्ण समपाणसुररि विग्गहाणुत्तमादो ।

वेदाणुवादेण हत्थिवेदा केवचिर कालादो होंति ? ॥ ११४ ॥

सुमम ।

जहण्णेण एगसमओ ॥ ११५ ॥

उत्तसमसहीदो ओत्तरिय मवेदा हात्थ विदियममए सुदस्स पुरिमवदेण परिणयस्स एगसमओत्तमादा ।

उत्तकस्सेण पत्तिदोवमसदपुत्त ॥ ११६ ॥

अथपिद्वेदादो इत्थिवद्दं गत्थ पत्तिदावममदपुत्त एत्थेण परिममिय पत्था

यह एक सुगम है ।

कममे कम एक समय तक जीव कामजकाययोगी रहता है ॥ ११२ ॥

क्योंकि एक विग्रह ( मोड़ा ) करके उत्पन्न हुए जीवके सुशौच काळ पाया जाता है ।

अधिकमे अधिक तीन समय तक जीव कामजकाययोगी रहता है ॥ ११३ ॥

क्योंकि तीन समयोंके ऊपर विग्रह पाये नहीं जाते ।

वेदमार्गीणानुसार जीव जीवेदी किन्तु काल तक रहत है ? ॥ ११४ ॥

यह एक सुगम है ।

कमम कम एक समय तक जीव जीवेदी रहता है ॥ ११५ ॥

क्योंकि उपनामधर्मासे उत्तरकर सचेत् होते हुए द्वितीय समयमें मृत्युका प्राप्त होकर पुन्यवेत्से परजत हुए जीवके एक समय पाया जाता है ।

अधिकम अधिक पत्तोपमसदपुत्त काल तक जीव जीवेदी रहता है ॥ ११६ ॥

जीव अविश्रित करके श्रीवेत्को प्राप्त होकर और पत्तोपमसदपुत्तकाल काळ

अग्नेवेद गदो । सदपुष्यमिदि किं ? तिसदप्यहुति त्वाव गवसदाणि चि एद सन्व  
वियप्या सदपुष्यमिदि युञ्चति ।

पुरिसवेदा केवचिर कालादो ह्येति ? ॥ ११७ ॥

सुगमं ।

जहृष्णेण अतोमुहुत् ॥ ११८ ॥

पुरिसवेदोदपण उत्रमममेदि चडिय अगदवेदो होदून पुषो उत्रसमसेदीदो  
ओदग्माणो सवेदो होदून वेदस्व अदि करिय सत्रजहृष्णमतोमुहुत्तमहृमन्डिय पुणो  
उत्रमममेदि चडिय अगदवेदमार्व गदम्मि पुरिसवेदम्म अनोमुहुत्तमचकालस्सुवलमादा ।

उक्कस्सेण सागरोवमसदपुष्यत् ॥ ११९ ॥

पुष्यवेदम्मि अगंतकालमसरोन्मलोगमेत् वा अन्डिय पुरिमवेद गत्तण तम  
छडिय सागरोवमसदपुष्यत् तत्थक् परिभमिय अण्वर्दं गदस्म तदुवलमादो । १० ]

तक उत्रमं ही परिभमण करक पक्कात् मय्य वेदका प्राप्त हुआ ।

उप्य—शतपुष्यस्य किसे कहते हैं ?

समाधान—तीन सौस केकर मौ सौ तक प सब यिकस्य शतपुष्यस्य  
कह जाने हैं ।

जीव पुरुषवेदी कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ११७ ॥

यह सूक्ष सुगम है ।

कममे कम अन्तर्मुहूर्त काल तक जीव पुरुषवेदी रहते हैं ॥ ११८ ॥

पुरुषवेदके उदयम उपशमधेयी चङ्कर अगगतवेदी होकर पुनः उपशम  
धेयीसे उतरता हुआ अवेद होकर वेदका भादि करके सर्वत्रयस्य मन्तमुहूर्त काल  
तक रहकर मौर फिर उपशमधेयी चङ्कर अगगतवेदस्यो प्राप्त हुए जीवके पुरुष  
वेदका मन्तमुहूर्त काल पाया जाता है ।

अधिकसे अधिक सागरोपमशतपुष्यस्य काल तक जीव पुरुषवेदी रहते  
हैं ॥ ११९ ॥

मनुसकवेदमें अमन्त काल अथवा अर्धव्याज साकमात्र काल तक रहकर  
पुरुषवेदको प्राप्त होकर मौर फिर उसे न छोड़कर सागरोपमशतपुष्यस्य काल तक  
उत्रमं ही परिभमण करके मय्य वेदका प्राप्त हुए जीवक यह सूक्ष काल पाया जाता

एदमेत्य सर्वपुत्रमिति गहिद ।

णवुसयवेदा केवचिर कालादो ह्येति ? ॥ १२० ॥

सुगम ।

जहणणेण एगसमओ ॥ १२१ ॥

नर्भुमयवेदादएव उवसमसहिं चदिय मादरिय सवेदा हाद्म विदियसमए कालं करिय पुरिसवेदं गदस्स एगममयदमण्णो । पुरिसवेदस्स एगसमओ किम्भ सद्धो ? ए, अबयदवेदां होद्व सवेदमाहविदियसमए कालं करिय देवेसुप्पण्णो नि पुरिसवेदं मोत्तम अण्ववेदस्सुदयामाणेषु एगसमयाणुवसमादो ।

उक्कस्मेण अणतकालमसखेज्जपोग्गलपरियट्ठ ॥ १२२ ॥

अवप्पिद्वेदा नर्भुमयवेदयं गत्थ आबलियाए अममे अदिमाममेसपोग्गलपरियट्ठे परियट्ठिण्ण अण्ववेदं गदस्स उवसद्धीदा ।

हे । १० सामरूप्यम यहाँ शतदूषकत्वसे ग्रहण किये गये हैं ।

श्रीव नर्भुसकवेदी कियेने काल तक रहते हैं ? ॥ १२ ॥

यह पूत्र सुगम है ।

कमसे कम एक समय तक श्रीव नर्भुसकवेदी रहते हैं ॥ १२१

क्योंकि नर्भुसकवेदके उदयसे उपशमभभी चक्रकर, फिर उतरकर, सवेद होकर भीर द्वितीय समयमें मरकर पुरुषवेदको प्राप्त हुए श्रीवके नर्भुसकवेदका कमसे कम एक समय काल देखा जाता है ।

सूत्र — पुरुषवेदका अण्वय काल एक समय क्यों नहीं पाया जाता ?

समाधान—नहीं पाया जाता क्योंकि मरगतवेद होकर भीर सवेद होनेके द्वितीय समयमें मरकर देवोंमें उत्पन्न होनेपर भी पुरुषवेदको छोड़कर अन्य वेदके उदयका समाप्त होनेसे एक समय काल नहीं पाया जाता ।

अधिकसे अधिक अर्धस्वात पुरुषपरिवर्तनप्रमाण अनन्त काल तक श्रीव नर्भुसकवेदी रहते हैं ॥ १२२ ॥

क्योंकि अभिवक्षित वेदस नर्भुसकवेदको प्राप्त होकर भीर वाक्यके अर्धस्वातमें भागभाष पुत्रपरिवर्तन परिश्रमण करके अन्य वेदको प्राप्त हुए श्रीवके सुशोक काल पाया जाता है ।

अवगदवेदा केवचिर कालादो ह्येति ? ॥ १२३ ॥

सुगम ।

उवसम पडुच्च जहण्णेण एगसमओ ॥ १२४ ॥

उवसमसेहिं चडिय अवगदवेदो हादूण एगसमयमाच्छिय विदियसमए कालं  
अदूण वेदमात्रं गदस्स तदुवलमादो ।

उवक्सेण अतोमुहुत्त ॥ १२५ ॥

इत्थिक्कोदण्ण पडुमयंशदप्पम वा उवसमसेहिं चडिय अवगदवदा हादूण  
सम्पुवक्खसमत्तामुहुत्तमाच्छिय वेदमात्रं गदस्स तदुवलमात्ता ।

खवग पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त ॥ १२६ ॥

खवगसेहिं चडिय अवगदवदा होदूण मन्वजहण्णकालेण परिणिध्युदस्स  
तदुवलमादा ।

जीव अपगतवदी क्खित्ते कालं तकं रहते ई ? ॥ १२३ ॥

यह सुत्र सुगम है ।

उपसमकक्षी अपेया कममं यमं एकं समयं तकं जीव अपगतवदी रहत  
इ ॥ १२४ ॥

पर्योक्ति उपसमधणी अकूवर अपगतवदी हाकर भीर एकं समयं रहकर द्वितीय  
समयमे भरकर सवदपनवा प्राणं हूप जीवकः एकं समयं कालं पाया जाता है ।

आधिक्रम आधिक्रम अन्तर्मुहूर्तं कालं तकं जीव अपगतवदी रहते ई ॥ १२५ ॥

पर्योक्ति श्रीवदक उदयस वा नपुंसकपदक उदयस उपसमधणी अकूवर अपगत  
वदी हाकर भीर सपौन्दर अन्तर्मुहूर्तं कालं तकं रहकर सवदपनवा प्राणं हूप जीवकः  
उदयस अन्तर्मुहूर्तं कालं पाया जाता है ।

धपकक्षी अपेया कममं यमं अन्तर्मुहूर्तं कालं तकं जीव अपगतवदी रहत  
इ ॥ १२६ ॥

पर्योक्ति एतवधेणी अकूवर भीर अपगतवदी हाकर सर्वत्रपाय कालं मुत्तिवा  
प्राणं हूप जीवकः एतव कालं पाया जाता है ।



उक्त्वस्तेण पुत्रकोटी देसूण ॥ १२७ ॥

देवस्त पेरय्यस्म वा सद्यसम्मार्हट्टिस्त पुत्रकोडाउणसु मशुसमुबगन्नित्रप  
यइवस्ताभि गमिय संभम पडिन्नत्तिय सन्नवहण्यकालेभ खभगसर्हि आडिय अबगदंधदो  
होदून् केवलशाण समुप्पत्तय देहणपुत्रकोटिं विहरिय अबभगमार गदस्त तदुबलंमारो ।

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई  
केवचिर कालादो ह्येदि ? ॥ १२८ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एयसमओ ॥ १२९ ॥

अणप्यिदकमायादो काधरुमायं गतून् एगसमयमच्छिय कालं करिय विरयमं  
मोत्तण्णमार्गमुप्पन्नस्म एगसमओरत्तमादो । कोधस्म पापादण एगसमओं मत्ति,  
भाषादिदे वि काधस्सेव समुप्पत्तीदा । एवं ससत्तिह कमायानं पि एगममयपरूवणा  
कायन्ना । मवरि एवेसिं तिह कमायान पापादेण वि एगममयपरूवणा कायन्ना ।

अधिकमे अधिक कुछ कम एक पूर्वकानि पर्य तक जीव अपगतवैरी  
रहते हैं ॥ १२७ ॥

क्योंकि देव अधवा मारक क्षापिकसम्मार्हट्टिके पूर्वकोटि आयुबाळ मनुष्यों  
बत्यन्न हाकर माठ पर्य बिठाकर संभमका प्राप्त कर सद्यज्जग्य कालमे क्षापकमणी  
बइकर अपगतवैरी हाकर कवकपापका उत्पन्न कर और कुछ कम पूर्वकोटि पर्य तक  
विहार करके जबंधक भवस्याहो प्राप्त होनेपर वह मृतोक्त काळ पाया जाता है ।

कपायमार्गवानुमार जीव क्रोधकपायी, मानकपायी, मायाकपायी और साम-  
कपायी कब तक रहता है ? ॥ १२८ ॥

यह सुख सुगम है ।

कममे कम एक समय तक जीव क्रोधकपायी आदि रहता है ॥ १२९ ॥

क्योंकि अविचक्षित कपायसं क्रायकपायको प्राप्त होकर एक समय रहकर  
मार किर मरकर मरकगतिको छोड़ अन्य गतिपामे उत्पन्न हुए जीवके एक समय  
पाया जाता है । क्रोधके व्यापातसे एक समय मर्हीं पाया जाता क्योंकि व्यापातको  
प्राप्त होनेपर भी पुनः क्रोधकी ही उत्पत्ति होती है । इसी प्रकार शेष तीन कपायोंके  
भी एक समयकी प्रकल्पना करना चाहिये । विशेष इतना है कि इन तीन कपायोंके  
कपातसे भी एक समयकी प्रकल्पना करना चाहिये । मरककी मरणा एक समय

मरण एगममए मणमाण माणम्म मणुमगइ, मायाण तिगिक्कगइ, सामम्म दवगइ  
माण ममासु तिसु गइसु उप्पाअप्पया । इदा ? तिगय मणुम तिगिक्कउ-दवगइसु  
उपप्पमाण पटमममण जहाउमण काष-माण-माया-लामाण चवुदयदमणादा ।

उक्कस्सेण अतोमुहुत्त ॥ १३० ॥

अणप्पिदक्कमायादा अप्पिदक्कमायं गणुक्कम्मकाल तय द्विदम्म वि अतामुहु  
त्तादा अधियक्कालाणुत्तमात्ता ।

अक्कमाई अवगतवेत्तभगो ॥ १३१ ॥

अहा अरगदवत्ताण उवमममहिं मरगमहिं च पदुय उवत्ताण एगममय  
अतामुहुत्तपम्पणा, उक्कम्मण अतामुहुत्त-देवुलपुव्वयाडिपम्पणा च कदा तथा  
अरुमायाण वि अणुक्कम्मदि कल्पपम्पणा पादप्पा वि मणिद हादि ।

णाणाणुवादेण मत्तिअण्णाणी सुत्तअण्णाणी केवच्चिर कालादो  
हादि ? ॥ १३२ ॥

इहमपर मानवी मनुष्यगति मायावी तियेयगति भीर सामवी रूपगतिक्क छाक्कउर उर  
तीम गानपामे जीवका उत्पन्न कगता धादिप । काल्य यद वि मरुव मनुष्य तियेय भार  
रूप गतियामे उत्पन्न दुप जीवोक्क प्रथम समयमे यथावमय काय मान माया भार सामवी  
उदय दग्ग जाता हे ।

मधिरुम अधिक्क अन्तमुहुत्त काल मरु खीर काषरुपायी आदि रहता हे ॥ १३० ॥

कयोवि मधियसित्त कयायम पिपसित्त कयायवा मान हावर उट्टए काल  
मरु वही मियत दुप मी जीवक अन्तमुहुत्तम अधिक्क काल मही पाया जाता ।

अक्कपायी जीवोक्क कान अपगतमियोक्क ममान हे ॥ १३१ ॥

इत्थ प्रका मरगतपदियाक्क उवामधवी भार उरवधवीवी मरधा जय यम  
एक समय य अन्तमुहुत्त कालवी प्रकपत्ता तथा उरवध मरमुहुत्त य कुत्त कम्म गूववादि  
पर प्रमाण कालवा प्रकपत्ता बी मर हे उगी प्रका मरवाया जीवोवी भी अपण्य भीर  
उरवध कालप्रकपत्ता कगता गगादय । यद उर गूववा मध हे ।

ज्ञानमागालाणुमाए खीर मरगतानी भैर भुताप्रानी इत्थन कान मर रहता  
हे ॥ १३२ ॥

मुगम ।

अणादिओ अपज्जवसिदो ॥ १३३ ॥

अमभियं पट्टण एमो गिदसा, अमभयसमाणमभै वा ।

अणादिओ सपज्जवसिदो ॥ १३४ ॥

एसा मभियजीर पट्टण गिदसा फसे ।

सादिओ सपज्जवसिदो ॥ १३५ ॥

एमो गिदसो गागादो अण्णालं गदमभियजीर पट्टण कदा ।

जो सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स इमो गिदसो-जहण्णेण

अतोमुहुत्त ॥ १३६ ॥

सम्माइहिसस मिच्छत्तं गत्तल मदि-सुत्तअण्णाणाणि पडिवाग्गिय सव्वअहण्ण-  
मतासुहुत्तमच्छिय सम्मत्तं गंत्थ पठिबण्णमदि सुवसाणस्त अहण्णाफात्तवत्तभादा ।

उक्कस्सेण अद्धपोग्गल्पपरियट्ट देसूण ॥ १३७ ॥

यह सूत्र मुगम है ।

मत्पज्ञानी और भुताज्ञानी बीजोंका फल अनादि अनन्त है ॥ १३३ ॥

यह निर्देश अमभय अथवा अमभय समाप्त मध्य जीवकी अपेक्षासे किया गया है ।

उक्त दोनों अज्ञानियोंका फल अनादि-सान्त है ॥ १३४ ॥

यह निर्देश मध्य जीवकी अपेक्षासे किया गया है ।

उक्त दोनों अज्ञानियोंका फल सादि-सान्त है ॥ १३५ ॥

यह निर्देश ज्ञानसे अज्ञानका प्राप्त हुए मध्य जीवकी अपेक्षासे किया गया है ।

जो यह सादि-सान्त है उसका निर्देश इस प्रकार है-सम्यग्ज्ञानसे मिथ्याज्ञानको

प्राप्त हुआ मध्य जीव कमसे कम अन्तर्मुहूर्त तक मत्पज्ञानी और भुताज्ञानी रहता है ॥ १३६ ॥

क्योंकि सम्यग्दृष्टि जीवसे मिथ्यात्वको प्राप्त होकर मत्पज्ञान और भुताज्ञानको

प्राप्त कर जब अर्धजन्म अन्तर्मुहूर्त फल तक रहकर सम्यक्त्वको प्राप्त होकर मतिज्ञान

और मुक्तज्ञानका प्राप्त करकेनेपर अमभय फल पाया जाता है ।

उपर्युक्त जीव अधिकसे अधिक छूट कम अर्धपुट्टनपरिवर्तन फल तक

मत्पज्ञानी और भुताज्ञानी रहता है ॥ १३७ ॥

अणादियमिच्छाद्दृष्टिस्तु तिष्णि वि करणाणि अद्दपोग्गलपरियद्दस्स भाहिं क्खत्तण  
पोग्गलपरियद्ददिसमए उषसमसम्मत्त भत्तूण आमिन्निबोहिय-सुदप्पाणाणि पडिवत्तिज्जय  
सम्भज्जहण्णमतोमुहुत्तमच्छिय छत्रावळियाआ अत्थि चि सासण गत्तूण मदि-सुदअण्णाण  
माहिं करिय मिच्छत्त गत्तूण पोग्गलपरियद्दस्स अद्द देय्ण परिमभिय पुत्तो अपच्छिमे  
मेवे मदि-सुदप्पाणाणि उप्पाइय अतोमुहुत्तेण अबधगर्च गदस्स देय्णपोग्गलपरियद्दस्स  
अद्दवत्तमादो ।

विभगणाणी केवचिर कालादो होदि ? ॥ १३८ ॥  
सुगमं ।

जहण्णेण एगसमओ ॥ १३९ ॥

देवस्स णरइयस्स वा उषसमसम्माद्दृष्टिस्तु उषसमसम्मत्तटाए, एगसमयावेमसाए  
सामर्थं गत्तूण विभगणानेण मह एगसमयमच्छिय वित्थियसमए मदस्स' तद्दुवलमादो ।

उक्कस्सेण तेत्तीस सागरोवमाणि देसूणाणि ॥ १४० ॥

क्योंकि अनादिमिच्छादृष्टि जीवके मर्षपुष्ट उपरियर्तन कालके बाहिर तीनों ही  
करणोंको करके पुद्गलपरिवर्तनके प्रथम समयमें उपशमसम्पत्त्यको ग्रहणकर आभिनि  
बोधिक व भूत धानको प्राप्त करके और सर्वप्रथम भस्मसुद्धर्त काल तक रहकर उपशम  
सम्पत्त्यमें छद्म भाषणियां शेष रहनेपर सासादनसम्पत्त्यको प्राप्त होकर मति और भूत  
जडानका भादि करके मिध्यात्यको प्राप्त हो कुछ कम मर्षपुद्गलपरिवर्तन काल तक  
अमय करके पुनः अस्तिम मयमें मति एवं भूत धानको उत्पन्न कर भस्मसुद्धर्त कालसे  
अवस्थान अयस्याको प्राप्त होनेपर कुछ कम मर्षपुद्गलपरिवर्तन काल पाया जाता है ।

जीव विभगज्ञानी कितने काल तक रहता है ? ॥ १३८ ॥

यह सब सुगम है ।

कमस कम एक समय तक जीव विभगज्ञानी रहता है ॥ १३० ॥

क्योंकि देव अथवा मारकी उपशमसम्पत्त्यदृष्टिके उपशमसम्पत्त्यकालमें एक  
समय शेष रहनेपर सासादनसम्पत्त्यको प्राप्त होकर और विभगज्ञानके साथ एक समय  
रहकर द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त होनेपर यह स्वर्णक काल पाया जाता है ।

आधिकसे अधिक कुछ कम वेणिस सागरोपम काल तक जीव विभगज्ञानी  
रहता है ॥ १४० ॥

तिरिक्तस्म मणुस्म वा तेचीसाठडिदिस्सु सत्तमपुढविपरइएस्सु उप्पजिप्रय  
छप-जचीआ समाणिय विमगणापी होद्व्य भंतोमुहुत्तैप्पणतेचीसाठडिदिमच्छिय  
विग्गदस्म तद्वत्तमादो ।

आभिणिवाहिय-सुद-ओहिणाणी केवचिर कालादो होदि ?  
॥ १४१ ॥

सुगम ।

जहण्णेण अतोमुहुत्त ॥ १४२ ॥

द्वस्म भेरईयस्म वा मदि-सुद विमगणाणेहि अस्सिद्धस्म मम्मत्त पेत्तुप्पत्त-  
इदमत्तिमुदोहिणाणस्म अहप्पमतामुहुत्तमच्छिय मिच्छत्तं गयस्म तइमगादो ।

उत्तकस्सेण छावट्टिमागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ १४३ ॥

द्वस्स गणइयस्म वा पडिबण्णउत्तममत्तम्मत्तेण सह समुप्पण्णमदि-सुद आदि  
णाणस्म बद्दगसम्मत्तं पटिबज्जय अविबट्टिणाणहि अतामुहुत्तमच्छिय पदेजतोमुहुत्त  
ण्युप्पक्कोडाठममत्तस्सेसुववन्निच्चय पुणा बीसंसागरोवमियस्सु देवसुववज्जय पुणा पुग्ग

क्योंकि तिरिक्क मयवा मनुष्यक तेचीस सागरोपमप्रमाण भापुबाछे सत्तम  
प्रायेचीके तारकियोंमे उत्पन्न होकर छह पयातियोंका पूर्ण कर विमगनामी होकर अठ  
सुहुत्त कम तेचीस सागरोपमप्रमाण भापुस्थिति तक रहकर बहानि तिरिक्कनपर बह  
एताक काल पाया जाता है ।

जीव आभिनिवाधिक, धृत और अविज्ञानी कितन काल तक रहता है ? ॥ १४१ ॥

यह सुगम है ।

कममे कम अन्तसुहुत्त काल तक जीव आभिनिवाधिकज्ञानी, धृतज्ञानी एवं अवि  
ज्ञानी रहता है ॥ १४२ ॥

क्योंकि मति धत और विमग ज्ञानक साथ स्थित वेप अथवा मारकीक  
सम्यक्त्वको प्रदत्तकर मीर मति धत एवं अविज्ञानका उत्पन्न करके उनमें अल्प  
अन्तसुहुत्त काल तक रहकर मिथ्यात्वका प्राप्त होनेपर उक्त काल क्ता जाता है ।

अधिक्रम अधिक मासिक छयामठ सागरापम काल तक जीव आभिनिवाधिकज्ञानी,  
धृतज्ञानी एवं अविज्ञानी रहता है ॥ १४३ ॥

यह मयवा मारकीक प्राप्त हुए उपरामसम्यक्त्वक साथ मति धृत और अविज्ञान  
ज्ञानका उत्पन्न करके बहसम्यक्त्वका प्राप्त कर अपित्त हीनों ज्ञानक साथ अन्तसुहुत्त  
काल तक रहकर हम अन्तसुहुत्तसे हीन पूर्वकादि भापुबाछ मनुष्योंमे उत्पन्न होकर पुनः  
बीस सागरोपमप्रमाण भापुकास बहामे उत्पन्न होकर पुनः पूर्वकादि भापुबाछ मनुष्योंमे

काठाठएसु मणुस्सेसुववञ्जिय चावीससागरोवमङ्किदीएसु देवेसुववञ्जिअरुण पुणो पुण्वकोडा  
 ठएसु मणुस्सेसुववञ्जिय खइय पङ्किय चउवीससागरोवमाउङ्किदिपसु देवेसुववञ्जिअरुण  
 पुणो पुण्वकाठाठएसु मणुस्सेसुववञ्जिय योदावसेसे वीविए फेवल्भाणी हाइय अबवगत्त  
 गदस्स चदुहि पुण्वकोडीहि सादिरयछावङ्किसागरोवमाणुनलमादो । वेदगसम्मत्तेण  
 छावङ्किसागरोवमाणि ममाविय खइय पङ्किय तेठीससागरोवमाउङ्किदिपसु देवेसुप्पाइय  
 अबवओ किण्व कपो ? ण, सम्मत्तेण मह खदि ससारे सुहु बहुअं काल परिमनइ तो  
 चदुहि पुण्वकाठीहि सादिरयछावङ्किसागरोवमाणि चव परिममदि पि वक्खामत्तरदसणहु  
 सुवदेसणादो । अतोसुहुचादियछावङ्किसागरोवमाणि णिण्व बुवाभि ? ण, केवलवेदगसम्मत्तेण  
 छावङ्किसागरोवमाणि सपुण्णाणि परिममिय खइयमाव गदस्स तदुवलमादो ।

मणपज्जवणाणी केवलणाणी केवचिर कालादो हेति ? ॥१४४॥

सुगम ।

उत्पन्न होकर पुनः बाह्य सागरोपम आयुषात्त ब्रह्मोत्पन्न होकर पुनः पूर्वकोटि आयुषात्त  
 मनुष्यात्त उत्पन्न होकर सायिकसम्यक्त्वका प्रारंभ करके चावीस सागरोपम आयुस्थिति  
 पाछे ब्रह्मोत्पन्न होकर पुनः पूर्वकोटि आयुषात्त मनुष्यात्त उत्पन्न होकर जीवितके  
 योग्य रूप रहनेपर केवलभाणी होकर अन्त्यक अवस्थाको प्राप्त होनेपर चार पूर्वकोटिपौसे  
 अधिक उपासठ सागरोपम पाये जाते हैं ।

प्रश्न—वेदकसम्यक्त्वक साथ उपासठ सागरोपमप्रमाण सुमाकर और फिर  
 सायिकसम्यक्त्वको प्रारंभ कर तेठीस सागरोपमप्रमाण आयुस्थितिपाछे ब्रह्मोत्पन्न  
 कराकर अन्त्यक क्यों नहीं किया ?

समाधान— नहीं क्योंकि 'सम्यक्त्वके साथ यदि जीव सत्कारमें गूब बहुत काल  
 तक भ्रमण करे तो चार पूर्वकोटिपौसे सायिक उपासठ सागरोपमप्रमाण ही भ्रमण करता  
 है वरना सम्यक् व्याख्यान शिक्षात्मके सिध धिसा उपेक्ष किया है ।

प्रश्न—ब्रह्मसुहृत्स अधिक उपासठ सागरोपम क्यों नहीं कह ?

समाधान— नहीं ब्रह्मोत्पन्न केवल संस्कृतसम्यक्त्वके साथ समग्र उपासठ  
 सागरोपम भ्रमणकर सायिकमात्रको प्राप्त हुए जीवके ब्रह्मसुहृत्से अधिक उपासठ  
 सागरोपम पाये जाते हैं ।

जीव मनःपर्यवशानी और कवलशानी कितन फल तक रहते हैं ? ॥ १४४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जहृष्णेण अतोमुहुत् ॥ १४५ ॥

दोसु संश्रदेसु परिणामपक्षपुष्पाइदकवल-मगपञ्जरनाभेसु सम्भ्रजहृष्णे कर्त्तं  
तदि मह अस्थिय अमन्ममर्षपमाव गदेसु पदस्तुषुठमादो ।

उक्कस्सेण पुव्वकोठी देसूणा ॥ १४६ ॥

कुदा ! गम्मादिअहुवस्सेहि संजमं पडिवन्जिय आमिणिवाहिय मुदवाजाभि  
उप्पाइय अंतोमुहुत्तेण मगपञ्जरनाभमुष्पाइय पुम्भोहिं विहरिय देवेसुप्पज्जस्स  
देसुणपुम्भोहिंकातावसमादो । एण कवत्तयाभिस्स वि उक्कस्सकालो पत्तन्तो । बभरि  
देवहिंता वेरइहिंता वा आगतूण पुम्भोहाउपमु स्सपसम्मत्तेण सह उप्पाइय  
गम्मादिअहुवस्सेहि संजमं पडिवन्जिय अंतोमुहुत्तमस्थिय केवत्तणाभमुष्पाइय देसुणपुम्भ  
ओहिं विहरिय अर्षपमाव गदस्स वत्तन्तं ।

सजमाणुवादेण सजदा परिहारमुद्धिसजदा सजदासजदा केव  
चिर कालादो होंति ? ॥ १४७ ॥

कमस कम अंतमुहते तक जीव मनःपर्ययमानी और केवलमानी रहत हैं  
॥ १४५ ॥

बयाभि वा सपत्तं अथ क परिणामाक निमित्तस केवलज्ञान व मनःपर्ययज्ञानको  
वत्पत्र वरके और सर्वप्रथम काळ तक उभये साथ रहकर अमंयम पर्यं अवगच्छक मापको  
म्यत्त ज्ञानपर यह काल पाया जाता है ।

अधिकसे अधिक कुछ कम पूर्वकाटि वय तक जीव मनःपर्ययमानी और केवलमानी  
रहते हैं ॥ १४६ ॥

बयाकि गर्भसंसादि केकर भाठ बयोंसे संयमको म्यत्त कर मन्तमुहर्त्तसे  
मनःपर्ययज्ञानका उत्पन्न कर और पूर्वकोटि वय तक विहार करके ब्रह्ममें उत्पन्न हुए जीवके  
कुछ कम पूर्वकोटि काळ पाया जाता है इसी प्रकार केवलज्ञानीका भी उत्पन्न नाम  
बहना चाहिये । विशेष यह है कि वेबों या मापकियोंमेंसंसादि पूर्वकोटि वायुवायि  
अनुष्णोंमें सापिबसग्वत्त्वक साथ उत्पन्न होकर गर्भसंसादि केकर भाठ बयोंसे संयमका  
ज्ञान कर, मन्तमुहर्त्त रहकर कमज्ञान उत्पन्न कर और कुछ कम पूर्वकोटि तक विहार  
करके अवगच्छक अवस्थाका ज्ञान हुए जीवक कुछ कम पूर्वकाटि काळ पाया जाता है परता  
बहना चाहिये ।

जीव सयममार्गानुसार सपत्तं, परिहारमुद्धिसंयत और मवतामंयत कितने  
काल तक रहत हैं ? ॥ १४७ ॥

सुगम ।

जहण्णेण अतोमुहुत्त ॥ १४८ ॥

कुदो ! सज्जमं परिहारसुद्धिसंज्जमं सज्जमासज्जमं च गंतूण अहण्णकासमच्छिय  
अण्णगुण गदेसु तदुपलमादो ।

उत्तकस्सेण पुवकोढी देसूणा ॥ १४९ ॥

कुदा ? मणुस्सस्म गग्गमादिअहुवस्सहि सज्जमं पडिबन्जिय देसूणपुम्भक्कोटिं  
सज्जममणुपालिय क्काल क्कळ्ळण देवेसुप्पण्णस्म देसूणपुम्भक्कोटिमेत्तसज्जमक्कालुवलमादो ।  
एव परिहारसुद्धिसज्जदरस वि उत्तकस्सकालो वत्तन्वो । णवरि सण्णसुत्ती इद्दिय तीस  
बरसाणि गमिय तदा वासपुज्जण त्तिरथयरपाद्मूले पण्णक्कळ्ळणणामभेयपुम्भ पडिद्दुम्भ  
पुणो पण्ण परिहारसुद्धिसज्जम पडिबन्जिय देसूणपुम्भक्कळ्ळणमच्छिद्दुम्भ देवेसुप्पण्णस्स  
वत्तन्वं । एवमहुत्तीसवस्सेहि उणिया पुम्भक्कोढी परिहारसुद्धिसंज्जमस्स कालो पुत्तो ।  
अ वि आइरिया सालसवस्सेहि के वि वासीसवस्सेहि उणिया पुम्भक्कळ्ळि ति मणंति ।  
एव संज्जदाममस्स वि उत्तकस्सकाला वत्तन्वो । णवरि अतोमुहुत्तपुवत्तेण उणिया

पह सुख सुगम है ।

कमसे कम अन्तर्मुहूर्त काल तक जीव संयत आदि रहते हैं ॥ १४८ ॥

पर्योकि समय परिहारसुद्धिसंयम और समयमासयमको प्राप्त होकर व अण्ण  
कास तक रहकर अन्य गुणस्थानको प्राप्त होकर वह सुखोक्त काळ पाया जाता है ।

अधिकसे अधिक कुछ कम पूर्वकोटि काल तक जीव संयत आदि रहते  
हैं ॥ १४९ ॥

पर्योकि गमस छकर आठ बर्योस समयका प्राप्त कर और कुछ कम पूर्वकोटि  
वर्ष तक संयमका प्राप्त कर व मरकर बर्योस उत्पन्न हुए मनुष्यके कुछ कम पूर्वकोटि  
मात्र समयकाळ पाया जाता है । इसी प्रकार परिहारसुद्धिसंयतका भी उत्पन्न काळ  
कहना चाहिये । विशेष इतना कि सबसुत्ती होकर तीस बर्योका भिताकर पञ्चात्  
पर्यप्यक्कत्ते तीर्थकरके पाद्मूलमे प्रत्याख्यान नामक पूर्वका पङ्कर पुनः उत्पन्नात् परि  
हारसुद्धिसंयमका प्राप्त कर और कुछ कम पूर्वकोटि वष तक रहकर बर्योस उत्पन्न हुए  
जीवके उपर्युक्त काळप्रमाण कहना चाहिये । इस प्रकार अकृतीस बर्योस कम पूर्वकोटि  
वर्षप्रमाण परिहारसुद्धिसंयमका काळ कहा गया है । कोई आचार्य सोसह बर्योस  
और कोई बार्हस बर्योसे कम पूर्वकोटि वर्षप्रमाण कहते हैं । इसी प्रकार संयतसंयतका  
भी उत्पन्न काळ कहना चाहिये । विशेष यह कि अन्तर्मुहूर्तपुवत्तेसे कम पूर्वकोटि वर्ष



पुष्पकाठी संभ्रमासत्रमस्त काला वि वचन ।

सामाह्य-छेदोवद्वावणसुद्धिसजदा केवचिर कालादो ह्येति ?

॥ १५० ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमओ ॥ १५१ ॥

उपसमसञ्जीवो आयरमाणस्त सुहुमसापराइयसुद्धिसजदा सामाह्य-छेदावद्वा-  
वणसुद्धिसंभ्रमं पडिबन्धिय तत्थ एगसमयमच्छिय विदियसमए सुदस्त एगसमत्रा  
पलमादो ।

उक्कस्सेण पुत्रकोढी देमूणा ॥ १५२ ॥

पुष्पकोडाठमणुस्सस्त गम्मादिअहुवस्सहि सामाह्य-छेदोवद्वावणिसुद्धिसंभ्रमं  
पडिबन्धिय अहुवस्सणपुष्पकाठिं विहरिय देसेसुप्पण्यस्स तदुवलमादो ।

सुहुमसापराइयसुद्धिसजदा केवचिर कालादो ह्येति ? ॥ १५१ ॥

संप्रमासयमका बाध होता है पसा कहना चाहिये ।

जीव मामाधिक-छेदापस्थापनशुद्धिमयत किंन काल तक रहते हैं ? ॥ १५० ॥

बह सूत्र सुगम है ।

कमस कम एक समय तक जीव सामाधिक-छेदापस्थापनशुद्धिमयत रहत  
हैं ॥ १५१ ॥

उपसमसञ्जीव उतरनवाक्य जीवके सुखमसापराधिकशुद्धिसंप्रमस सामाधिक-  
छेदापस्थापनशुद्धिसंप्रमको प्राप्त कर और उसमें एक समय तक रहकर द्वितीय  
समयमें मरणपर एक समय पाया जाता है ।

अधिकमें अधिक कुछ कम पूर्वकाटि वर्षप्रमाण काल तक जीव मामाधिक-  
छेदापस्थापनशुद्धिमयत रहते हैं ॥ १५२ ॥

पूर्वकाटि वर्षप्रमाण आयुवास मनुष्यक गमाहि माठ वर्षसि सामाधिक-  
छेदापस्थानिकशुद्धिसंप्रमका प्राप्त कर और माठ वय कम पूर्वकाटि वय तक बिहार  
करक दोमों उ पत्र हानपर बह सुखाक काल पाया जाता है ।

जीव सुखमसापराधिकशुद्धिमयत किंन काल तक रहते हैं ? ॥ १५३ ॥

सुगम ।

उवसम पद्दुञ्च जहण्णेण एगसमओ ॥ १५४ ॥

इदो ! चर्चता वा अणियही उवसमओ उवसंतकसाआ मा सुद्रुमसांपराइयसुद्धि संजदो आदो, तस्थ एगसमयमाच्छिय विदियसमए सुदस्म तदुबलमादो ।

उक्कस्सेण अंतोमुहुत्त ॥ १५५ ॥

सुद्रुमसांपराइयगुणह्माणम्मि अतोमुहुत्तादा अहियकालमवह्माणामावा ।

स्वग पद्दुञ्च जहण्णेण अतोमुहुत्त ॥ १५६ ॥

इदो ! सुद्रुमसांपराइयसुद्धनगस्त मरणाभावादो ।

उक्कस्सेण अतोमुहुत्त ॥ १५७ ॥

सुगमं ।

जहाक्खादविहारसुद्धिमजदा केवचिर कालादो होति ? ॥ १५८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपशमकी अपेक्षा कमसे कम एक समय तक जीव सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयत रहत है ॥ १५४ ॥

क्योंकि लक्षता हुआ अनिपुणिकरण उपशमक भयवा उपशान्तकणाय जीव सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयत हुआ वहाँ एक समय रहकर द्वितीय समयमें मरणका प्राप्त हुए उसके सुशोक्त काल पाया जाता है ।

अधिकसे अधिक अन्तर्गृहृत काल तक जीव सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयत रहते हैं ॥ १५५ ॥

क्याकि सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानमें अन्तर्गृहृतस अधिक काल तक भयस्थान ही नहीं होता ।

क्षपककी अपेक्षा कमसे कम अन्तर्गृहृत काल तक जीव सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धि संयत रहत है ॥ १५६ ॥

क्योंकि, सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयत क्षपकक मरणका समाप्त है ।

अधिकसे अधिक अन्तर्गृहृत काल तक जीव सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयत रहत है ॥ १५७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

जीव यथास्थानविहारसुद्धिसंयत किञ्चन काल तक रहत है ? ॥ १५८ ॥

सुगमं ।

उवसमं पद्भुच्च जहण्णेण एगसमओ ॥ १५९ ॥

हृदो ! सुदुमसांपरिपयसुदिसन्नदस्स उवससकसायस पडिबजिजय एगसमयमच्छिय विदियसमप सुदस्स एगसमओवठमादो ।

उत्तकस्सेण अतोमुहुत्त ॥ १६० ॥

हृदो ! उत्तसत्तकसायस्स अंतोमुहुत्तादा जहियकलाभावा ।

स्ववग पद्भुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त ॥ १६१ ॥

हृदो ! स्ववगमहिं चडिय खीयकसायसुत्तणे अहाकसात्तमन्नम पडिबजिजव सबोगी होदुत्त अंतोमुहुत्तम अर्धमगत गदस्स तदुवलमादो ।

उत्तकस्सेण पुव्वकोढी देसूणा ॥ १६२ ॥

हृदो ! गदमादिअहुवस्सानि गमिय सन्नमं पेत्तण सन्नसहुएण कासेण माहणीयं

यह सूत्र सुगम है ।

उपशमकी अपेक्षा कमसे कम एक समय तक जीव यथास्थितनिहारसुद्धि संयत रहते हैं ॥ १५९ ॥

क्योंकि सूक्ष्मसाम्पराधिकसुद्धिसंयतके उपशान्तरूपायत्तका प्राप्त होकर और एक समय रहकर द्वितीय समयमें मरण करनेपर एक समय काळ पाया जाता है ।

अधिकसे अधिक अन्तर्मुहूर्त कमल तक जीव यथास्थितनिहारसुद्धिसंयत रहते हैं ॥ १६० ॥

क्योंकि उपशान्तरूपायत्त अन्तर्मुहूर्तसे अधिक काळ है ही नहीं ।

अपककी अपेक्षा कमसे कम अन्तर्मुहूर्त कमल तक जीव यथास्थितनिहारसुद्धि संयत रहते हैं ॥ १६१ ॥

क्योंकि उपशमकेपीपर अहृत्त क्षीयकसाय गुणस्थानमें यथास्थितसंयमको प्राप्त कर और फिर समोगी होकर अन्तर्मुहूर्तसे अल्पक मयस्थाको प्राप्त हुए जीवके यह सूत्रका काळ पाया जाता है ।

अधिकसे अधिक कुछ कम पूर्वकाटि वर्ष तक जीव यथास्थितनिहारसुद्धिसंयत रहते हैं ॥ १६२ ॥

क्योंकि गर्मादि भाठ क्योंकि विताकर संयमको प्राप्त कर सर्वसु काळसे

एविय स गणखादसजशे होतुम देसकपुत्रकोठिं विहरिय अंशमस परस्म तदुजनादो ।  
असजदा केवचिर कालादो होंति ? ॥ १६३ ॥

सुगम ।

अणादिओ अपज्जवसिदो ॥ १६४ ॥

अमविय पइएथ एसा णिरेसा ।

अणादिओ सपज्जवसिदो ॥ १६५ ॥

मविय पइएच एसो णिरमो ।

सादिओ सपज्जवसिदो ॥ १६६ ॥

सादि सांतमसजम पइएच एमो णिरमो ।

जो मो सादिओ सपज्जवसिदो तस्म इमो णिरेसो-जहण्णेण  
अतोमुहुत्त ॥ १६७ ॥

इया ? सजइस्स परिणामपक्वण्य अमअमं गर्तुं अथ मअइएणमतोमुहुत्त  
मच्छिय सअमं गदस्स जहण्णकालुबलमादा ।

मोहनीयका अय कर पचाटपातसयत होकर और कुछ कम उपचारों पर एक विद्या  
कर मअअक अवस्थाको प्राप्त हुए जीवके यह सूत्रांक काय गथा गथा है ।

जीव असयत कितने काल तक रहते हैं ? ॥ १६३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयत जीवोंका काल अनादि अनन्त है ॥ १६४ ॥

यह निर्देश अमन्य जीवकी अपेक्षासे किया गया है ।

असयतोंका काल अनादि सान्त है ॥ १६५ ॥

यह निर्देश मध्य जीवकी अपेक्षासे किया गया है ।

असयतोंका काल सादि सान्त है ॥ १६६ ॥

यह निर्देश सादि सान्त असयतकी अपेक्षा कि-

जो यह सादि-सान्त असयत है उसका इम इह

सुहृत्त काल तक जीव असयत रहते हैं ॥ १६७ ॥

क्योंकि संयत जीवक परिणामोंक निर्माणों ॥ १  
सर्वत्रयण्य अस्तसुहृत्त काल तक एहकर पुनः निवर्तन ॥ १६७ ॥  
पाया जाता है ।

उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्ट देसूण ॥ १६८ ॥

इदो ! अद्धपोग्गलपरियट्टस्स भाद्रिसमण मंजमं पत्तण उक्कसमसम्मचहाण  
छावतिपावसेयाए असंजमं गंतूण उक्कपोग्गलपरियट्ट परियट्टिदूण पुमो तिब्धिं फरणाप्ति  
कादूण संजमं पडिबण्णस्स तदुक्कमादा ।

दसणाणुवावेण चक्खुदमणी केवचिरं कालादो होति ? ॥ १६९ ॥  
सुगमं ।

जहण्णेण अतोमुट्ठत्त ॥ १७० ॥

इदो ! अपक्खुदसणेण हिदस्स चक्खुदसणी गत्तुण जहण्णमंतामुट्ठत्तमच्छिय  
पुणो अपक्खुदसणं गदस्स तदुक्कमादो । चठरिदियअप च्चणसु उप्पाहय सुद्धामरग्गहमं  
अहण्णकास्से चि किम्प पत्तुभिदं ! म, चक्खुदसणीअपक्कएसु सुद्धामरग्गहणमंत्तजहण्ण-  
कासाधुक्कमादो ।

उक्कस्सेण वे सागरोवमसहस्साणि ॥ १७१ ॥

अधिकसे अधिक कुछ कम अर्थपुद्गलपरिवर्तन काल तक जीव जन्मपत  
रहते हैं ॥ १६८ ॥

क्योंकि अर्थपुद्गलपरिवर्तनके प्रथम समयमें सपमको ग्रहण कर उपरान्त  
सम्यक्त्वके कायमें वह भावधियां शेष रहमपर अर्थपमको प्राप्त होकर कुछ कम अर्थ  
पुद्गलपरिवर्तन प्रथम कर पुनः तीन कर्णोंको करके संवमका प्राप्त हुए जीवके वह  
पुनोक्त काय पाया जाता है ।

दधनमार्गवासुसार जीव चक्षुदर्शनी कियेने काल तक रहते हैं ॥ १६९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

कमसे कम अन्तर्मुहूर्त काल तक जीव चक्षुदर्शनी रहते हैं ॥ १७० ॥

क्योंकि मन्वसुदर्शनी सहित स्थित जीवके चक्षुदर्शनी होकर कमसे कम अन्तर्मुहूर्त  
रहकर पुनः मन्वसुदर्शनी होनेपर मन्वसुदर्शनीका अन्तर्मुहूर्त काय प्राप्त हो जाता है ।

संज्ञा—किसी जीवका चतुर्दिग्गय अपर्णाप्तकोंमें अर्थात् अन्वयपर्णाप्तकोंमें  
उत्पन्न कराकर चक्षुदर्शनीका अन्वय काय सुप्रमथमग्रहणमात्र क्यों नहीं प्रकल्प किया ?

समाधान—वहाँ किया क्योंकि चक्षुदर्शनी अपर्णाप्तकोंमें सुप्रमथमग्रहणमात्र  
अन्वय काय नहीं पाया जाता । ( देखो जीवद्वय कायासुगम सूत्र २७८ वीका ) ।

अधिकसे अधिक दो हजार सागरोपम काल तक जीव चक्षुदर्शनी रहता है  
॥ १७१ ॥

एरुदिओ वेरुदिओ शेरुदिओ अउरिदियादिसु उप्पाज्जिय वेमागरोअमसहस्सानि परिममिय अचअसुदसणीसु उप्पण्णसुअलमादो । अचअसुदसणकसुअओवममसस ण्मा फालो भिदिहा । उवजोग पुण पइअच अइण्णककस्सेअ असोअहुत्तमत्ता वेव ।

अचअसुदसणी केवचिर कालादो होंति ? ॥ १७२ ॥

सुगम ।

अणादिओ अपज्जवसिदो ॥ १७३ ॥

अमवियममवियसमानमविय वा पइअच ण्मो भिदो । कुणे ? अचअसुदस णकसुआअसमराहिदछदुमरयाणमणुअलमादो ।

अणादिओ सपज्जवसिदो ॥ १७४ ॥

णिअण्ण सिअमाअमवियजीव पइअच ण्मो भिदो । अचअसुदमणसम सादिस णविय, केवलदममादो अचअसुदसणमागअछताणममावाणे ।

ओधिदसणी ओधिणाणीभगो ॥ १७५ ॥

अयोकि किछी एकेअिय अिअिय अ अीअिय अीअके अतुअिअियादि अीअोअे अत्यअ होकर दो हआर सागरोपम काळ तक परिअमण करके अचअसुदशनी अीअोअे अत्यअ होनेपर अअुअरुअनका वा हआर सागरोपम काळ माअ हो आता है । यह काळ अअुअरुअनके अयोपअमके अहा गया है । उपयोगकी अयेसा तो अअुअरुअनका अण्ण अ उरुअ काळ अण्णअुअरुअनका ही है ।

अीअ अचअसुदरुअनी कितन काळ तक रहत है ? ॥ १७२ ॥

यह अच सुगम है ।

अीअ अनादि अनन्त मी अचअसुदरुअनी हाता है ॥ १७३ ॥

अमअ्य वा अमअ्यक समान अमअ्यकी अण्णसास यह भिदोअ किया गया है अयोकि अचअसुदरुअनके अयोपअमके रहित अण्णस्य अीअ पाये नहीं जात ।

अीअ अनादि सान्त मी अचअसुदरुअनी होता है ॥ १७४ ॥

यह भिदोअ अिअयअ सिअ होनेपाळ अमअ्य अीअकी अण्णसा किया गया है । अचअसुदरुअन सादि नहीं होना अयोकि अयोपअरुअनम पुअः अचअसुदरुअनमे अनेअामे अीअोअे अमाअ है ।

अअभिदरुअनीकी काळअरुअण्णा अअभिअानीक समान है ॥ १७५ ॥

हुदो ! ओहिणापिस्नेप अहप्णेण अंतासुहुत्तस्स, उक्कस्सेण सादिरेयछावट्टिसाग  
रावमाणसुवसंमादो ।

केवलदसणी केवलणाणीभगो ॥ १७६ ॥

हुदो ! कवत्थ्यापीम ( ५ ) अहणुक्कस्मपदेहि अंतासुहुत्त-दसूणपुक्कस्सेणीम  
केवलदसणीमसुवसंमादो ।

लेस्साणुवादेण विण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सिया केवविर  
कालादो होति ? ॥ १७७ ॥

सुगम ।

जहप्णेण अतोमुहुत्त ॥ १७८ ॥

हुदा ! अप्पिदसम्मादो अविह्वदादो अप्पिदमेस्ममार्गतूप मच्चजहप्पमतसुहुत्त  
मच्छिय अविह्वदसंस्तर गयस्स तदुवसंमादो ।

उक्कस्सेण तेत्तीस-सत्तारस-मत्तसागरोवमाणि सादिरेयाणि  
॥ १७९ ॥

क्योंकि, अविह्वदानीके समान अविह्वर्तनका भी कामस वम अन्तर्मुहूर्त और  
अधिकमे अधिक सातिरेक उपासक सागरोपम कास पाया जाता है ।

केवलदसनीकी कासप्ररूपका केवलजानीके समान है ॥ १७६ ॥

क्योंकि, केवलजानियोंके समान केवलवर्तनी कीबोका भी अप्पच काम अन्त  
मुहूर्त और उक्कच काम कुछ कम एक पूवकादि पाया जाता है ।

लेस्सामार्गणानुसार जीव कुप्पलेस्स्या, नीलसेस्स्या व कापोतलेस्स्याबासे कितने  
कास तक रहते हैं ? ॥ १७७ ॥

यह एक सुगम है ।

कमम कम अन्तर्मुहूर्त कउ तक जीव कुप्पलेस्स्या, नीलसेस्स्या व कापोतसर्वा-  
बासे रहत है ॥ १७८ ॥

क्योंकि अविह्वसित अविह्वर केर्यास विवसित मेद्वामे भाकर सबसे कम  
अन्तर्मुहूर्त कास रहकर अन्य अविह्वर मेद्वामे आमबामे जीवक उक्त उद्वामोका  
अन्तर्मुहूर्त काम प्राप्त होता है ।

अधिकम अधिक सातिरेक तृतीय, सत्तर व साठ सागरोपम कास तक जीव  
कुप्प, नील व कापोत लभ्याशमे रहते हैं ॥ १७९ ॥

कुदो ! विरिक्खसु मणुस्सेसु वा किण्ण-णील-काउलेस्साहि सम्बुद्धस्समतोमुद्दुच्च  
मच्छिय पुणो तेत्तीस-सत्तारस-सत्तसागरोवमाठड्ढिदिणेरइएसु उपजिय किण्ण-णील काउ  
लेस्साहि सह अप्पप्पणो आउड्ढिदिमच्छिय त्तो भिण्णिदिद्वम अतोमुद्दुच्चकाल ताहि च  
लेस्साहि गमेद्वण अविद्वल्लेस्सतरं गदस्स दाहि अतोमुद्दुचेहि समदियतेत्तीस-सत्तारस  
सत्तसागरोवममेचविलेस्साकालुवलमादो ।

तेउलेस्सिमय-पम्मलेस्सिय सुक्कलेस्सिया केवचिरं कालादो ह्येति ?

॥ १८० ॥

सुगम ।

जहण्णेण अतोमुद्दुत्त ॥ १८१ ॥

कुदो ! अण्णपिदसेस्सादो अबिद्वदादो अप्पिदल्लस्स गंत्य त्त्य अहम्ममतो  
मुद्दुच्चमच्छिय अबिद्वल्लस्सतर गयस्स नहण्णकालद्वसमादो ।

उक्कस्सेण वे-अट्टारस-तेत्तीससागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ १८२ ॥

क्योंकि तिर्यक्तो वा मनुष्योंमें कृष्ण नील व कापातलेस्या सहित सबस अधिक  
मन्तर्मुहूर्त काल रहकर फिर तैतीस सत्तरह व सात सागरोपम वायुस्थितिवाने  
कापकियोंमें उत्पन्न होकर कृष्ण नील व कापात लेस्याओंके साथ अपनी अपनी वायु  
स्थितिप्रमाण रहकर वहाँसे निकल मन्तर्मुहूर्त काल उन्हीं लेस्याओं सहित प्यतीत करके  
अन्य भविष्य लेस्याम गये हुए जीवके उक्त तीम लेस्याओंका दो मन्तर्मुहूर्त सहित  
क्रमशः तैतीस सत्तरह व सात सागरोपममात्र काल पाया जाता है ।

जीव तेजलेस्या, पद्मलेस्या व शुक्ललेस्यावाले कियने काल तक रहते हैं ।

॥ १८० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

क्रमसे क्रम अन्तर्मुहूर्त काल तक जीव तेज, पद्म व शुक्ल लेस्यावाल रहते हैं

॥ १८१ ॥

क्योंकि भविष्यसिद्ध भविष्य लेस्यास विषयित लेस्यामें जाकर वहाँ क्रमस  
क्रम मन्तर्मुहूर्त काल तक रहकर अन्य भविष्य लेस्यामें जानेवाले जीवके उक्त  
लेस्याओंका मन्तर्मुहूर्तप्रमाण अथवा काल देखा जाता है ।

अधिकसे अधिक सात्त्विक वा, अठारह व तृतीम सागरोपम काल तक जीव  
क्रमशः तेज, पद्म व शुक्ल लेस्यावाले रहते हैं ॥ १८२ ॥



दुदा ! तउ पम्म सुक्कस्सस्माहि मच्चुक्कस्समंतासुहुत्तमत्तमच्छिय पुजो अहाकम्म  
अहुत्तं अ साठह्वारम सधीससागरोयमाउट्टिदिप्पु देवेसुप्पन्निय अवाट्टिदलेस्साहि सप  
सगाउट्टिदिमणुपालिय सधो भविय अंतोसुहुत्तकालं ताहि येव लस्साहि अच्छिय अविस्स  
लस्सत्तं गयस्स सगसुक्कस्सकालाणसुवत्तंमादो ।

भवियाणुवादेण भावसिद्धिया केवचिर कालादो ह्येति ? ॥१८३॥

सुगमं ।

अणादिओ मपज्जवमिदो ॥ १८४ ॥

दुदा ! अणामरुवेणागमस्स भवियभावस्स अत्रागिचरिमसमए विद्यासुवत्तंमादा ।  
अभवियसमाणा नि भवियधीरो अरिष ति अणादिओ मपज्जवमिदो भवियभावो किम्भ  
पम्भिदो ! ण, तए अविणाससधीए अमावादो । सधीए येव एएअ अहियारो, सधीए

क्याकि तअ एए और सुद्ध सेदयामों सहित सपौत्तए अन्तमुहुत्तंमात्र रहकर  
पुनः यथाक्रमस मकारे साडे अठारह व ततीस भागदायम आयुस्थितिवाले कबोम  
उत्पन्न होकर अपरिधन सेदयामों सहित अपनी अपनी आयुस्थितिका पूरी करके बर्बात  
निश्चय कर अन्तमुहुत्त काम तक जहाँ सेदयामों सहित रहकर मध्य भविस्स अस्यामों  
गय हुए जीवनक उत्त अस्यामोंका अपना अपना उच्छ्रय काम प्राप्त हो जाता है ।

मध्यमार्गणानुमार जीव मध्यमिद्धिक कित्ते कालं तह रहते ह्ये ॥ १८३ ॥

यह सब सुगम है ।

जीव मनादि सान्त मध्यमिद्धिक हाता है ॥ १८४ ॥

क्याकि अनादि स्वरूपस भाय हुए मध्यमावका मयागिरूपलीक अस्तित्व  
समयम विद्यास पाया जाता है ।

दुदा—अमध्यक ममान भी ता मध्य जीव हाता है तब फिर मध्यमावको  
अनादि और अनन्त क्यों नहीं मरूपज किया ?

ममाधान—तहीं किया क्याकि मध्यम अविनाश शक्तिका मभाव है ।  
अर्थात् यद्यपि अनादिम अनन्त काम तक रहनेवाले मध्य जीव है ता सही पर  
जन्म में शक्ति रूपम ता संसारविनाशकी समाधना है अविनाशत्वकी नहीं ।

दुदा—यहाँ मध्यमशक्तिका अविनाश है इसकी व्यक्तिका नहीं यह कैसे

नयि सि कच णव्वद् ? अथादि सपज्जवसिदसुत्तण्णद्वाणुववचीदा ।

मादिओ मपज्जवसिदो ॥ १८५ ॥

अभविद्या भविष्यमात्र ण गच्छति, भविष्याभविष्यमात्रमन्वताभानपडिग्गदियाथ मयाहियरणचविराहादो । ण सिद्धो भविओ इदि, णट्ठासंसासबाण पुणरुप्पचिचिरोहादो । तम्हा भविष्यमात्रो ण सादि चि ? ण एस दोसा, पज्जवद्वियययाबल्लंणणादो अप्पडिबण्णे सम्मत्ते अणादि अणतो भविष्यमात्रो अंतदीदिसमारो; पडिबण्णे सम्मत्ते अणो भविष्यमात्रो उप्पज्जइ, योगरूपपरियइस्स अट्टमत्तसाराणट्ठाणादो । एव समत्तंण-भुममत्तणादिउव्वट्ठु पांगरूपपरियइससाराण जीवाण पुष पुष भविष्यमात्रो वत्तम्भो । तदो मिद्ध भविष्याण सादि सांतचमिदि ।

अभविष्यसिद्धिया केवचिर कालादो होंति ? ॥ १८६ ॥

जाना जाता है ?

समाधान—मध्यस्थको ज्ञानादि-सपयवसित कहनबाब सूत्रकी मध्यस्था उपपत्ति बन नहीं सकती। इसीसे जाना जाता है कि यहाँ मध्यस्थ शक्तिस भविष्य है।

सीध सादि सान्त मध्यसिद्धिक भी हाता है ॥ १८५ ॥

शुद्ध—मध्य मध्यस्थका प्राप्त हो नहीं सकता क्योंकि मध्य और मध्य मात्र एक दूसरेके अत्यन्तानाशको धारण करनेबाब हमेश एक ही जीवमें क्रमस भी उनका अस्तित्व सामनेमें विरोध जाता है। सिद्ध भी मध्य हाता नहीं है क्योंकि जिन जीवोंके समस्त कर्मोका मध्य हागयई उनके पुन उन कर्मोकावर्ती उत्पत्ति माननेमें विरोध जाता है। अतः मध्य सादि नहीं हो सकता ?

समाधान—यह कोर वाप नहीं क्योंकि पयायार्थिक मयक मध्यममसे अथ तक सम्यक्त्व ग्रहण नहीं किया तब तक जीवका मध्यत्व ज्ञानादि प्रसन्न रूप है क्योंकि तब तक उसका संसार अन्तर्हित है। किन्तु सम्यक्त्वक ग्रहण कर लेनेपर मध्य ही मध्यमात्र उत्पन्न हो जाता है क्योंकि सम्यक्त्व उत्पन्न होनासपर विर कबम मध्यपुण्यपरिवर्तनमान कास तक संसारमें स्थिति रहनी है। इसी प्रकार एक समय कम उपाधपुण्यपरिवर्तन संसारबाब वा समय कम उपाधपुण्यपरिवर्तन संसार बाब भादि जीवोंके पृथक् पृथक् मध्यमात्रका रूप करना चाहिय। इस प्रकार यह सिद्ध हो जाता है कि मध्य जीव सादि सान्त हाते है।

जीव अभविष्यसिद्धिक कितन काल तक रहत है ? ॥ १८६ ॥

सुगम ।

अणादिओ अपज्जवसिदो ॥ १८७ ॥

अप्रवियमाओ षाम विपअणपज्जाओ, तेभेदस्स विनासेण हाइण्णमण्णहा इण्णचप्पसयादो चि ? होदु विर्यअणपज्जाओ, ज च विर्यअणपज्जायस्स सम्भस्स विनासेण होइण्णमिदि विपमो अत्थि, एर्यंतवाइण्णमगाओ । ज च न विगस्सदि चि इण्णं होदि, उप्पाप-ट्ठिदि भगसगपस्स इण्णमाअण्णुअगमाओ ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठी केवचिर कालादो होंति ? ॥ १८८ ॥

सुगमं ।

जइण्णेण अतोमुहुत्त ॥ १८९ ॥

हुदो ? मिण्णदिट्ठिरस बहुमो सम्मत्तपज्जाएण परिणमियस्स सम्मत्तं गंतुअ इण्णमतोमुहुत्तमण्णिय मिण्णत्त गयस्स तदुअलमाओ ।

उक्कस्सेण छावट्ठिमागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ १९० ॥

यइ सूअ सुगम इ ।

जीव अनादि अनन्त काल तक अमम्यसिद्धि रहते हैं ॥ १८७ ॥

संज्ञा—अमम्यभाव जीवकी एक व्यंजनपर्यायका नाम है इसलिये उसका विनाश भवस्य होना चाहिये नहीं तो अमम्यत्वके द्रव्य इत्येका प्रसंग भाजायगा ?

समाधान—अमम्यत्व जीवकी व्यंजनपर्याय मध्ये ही हो पर सभी व्यंजनपर्यायका भवस्य माहा होना चाहिये ऐसा कोई नियम नहीं है क्योंकि ऐसा माननेसे एकान्त वाइण्ण प्रसंग भाजायगा । ऐसा भी नहीं है कि जो परंतु विनाश नहीं होती वह द्रव्य ही होना चाहिये क्योंकि जिसमें अत्याद जीव्य भीर व्यय पाय जाते हैं उसे द्रव्य रूपसे स्वीकार किया गया है ।

सम्यक्त्वमार्गानुसार जीव मम्यगृह्णति क्खिने काल तक रहते हैं ? ॥ १८८ ॥

यइ सूअ सुगम इ ।

कमसे कम अन्तर्मुहूर्त काल तक जीव सम्यगृह्णति रहते हैं ॥ १८९ ॥

क्योंकि जिसमें अनेक बार सम्यक्त्व पर्याय प्राप्त कर भी है पर मिथ्यागृह्णति जीवक सम्यक्त्वको अंतर कमसे कम अन्तर्मुहूर्त काल तक रहकर मिथ्यात्वको आतेपर सम्यक्त्वको अन्तर्मुहूर्त काल प्राप्त हो जाता है ।

अभिक्रमे अधिक सातिरेक उपासठ सागरोपम काल तक जीव मम्यगृह्णति रहते हैं ॥ १९० ॥

इदा ? तिष्णि करणामि कइइम पढमसम्मव पेत्तुण अंतोसुद्धुचमच्छिय वेदग मम्मत्त पट्टिबन्जिय क्तय तीहि पुब्बकाडीहि समहियवात्तालीमसागरोवमाणि गमिय यइय पइइवेय चठवीससागरोवमाठडिदिएसु दवेसुप्पन्जिय पुणो पुम्भकोट्टिआठडिदि मजुस्मसुप्पन्जिय अबसाप्पे अबघगत्त गयस्स तदुवलमादा ।

खइयसम्माइट्ठी केवचिर कालादो होंति ? ॥ १९१ ॥

सुगम ।

जहण्णेण अतोमुहुत्त ॥ १९२ ॥

इदो ? वेदगसम्मादिक्खिस्स दमणमाइणीयं खविय खइयसम्मत्तं पट्टिबन्जिय जहण्णकालेण अबघगत्त गयस्स तदुवलमादो ।

उक्कस्सेण तेत्तीसमागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ १९३ ॥

इदो ? चठवीसमतकम्मियसम्माइट्ठिदेवस्स पेइयस्स वा पुम्भकोटाउअमजुस्सेसु

क्योंकि किसी जीवम तीनों करण करक प्रथम सम्पन्नत्व ग्रहण किया और मग्नमुहुरत काम रहकर वेदकमम्यत्स्य धारणकर लिया । वहाँ तीन काटि अधिक प्यात्तीस सागरोपम काम व्यतीत करक आधिक्यसम्पत्स्य स्थापित किया और तीसरी सागरोपम आयुस्तिथिबाने कर्मों उत्पन्न हुआ । इसके पश्चात् पूषकाटि आयुस्तिथिबाने मनुष्योंमें उत्पन्न होकर आयुक मग्न समयमें अक्षय्यकामात्र प्राप्त कर लिया । ऐसे जीवक सम्पन्नत्वका सातिरेक ( चार पूर्वकोटि अधिक ) छयानठ सागरोपमप्रमाण काष्ठ प्राप्त हो जाता है ।

जीव धायिकसम्पन्नदृष्टि कितने फल तक रहते हैं ? ॥ १९१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

क्रमेण क्रम अन्तमुहुरत फल तक जीव धायिकसम्पन्नदृष्टि रहत हैं ॥ १९२ ॥

क्योंकि बहुकसम्पन्नदृष्टि जीवके वदानमोहनात्मिका क्षयण करके साधिकसम्पन्नत्वको उत्पन्न कर अक्षय्य काष्ठस्य अक्षय्यकामात्रको प्राप्त होमेपर अन्तमुहुरत काम प्राप्त जाता है ।

अधिक्रम अधिक सातिरेक तृतीय सागरोपमप्रमाण फल तक जीव धायिकसम्पन्नदृष्टि रहते हैं ॥ १९३ ॥

क्योंकि जब चौथीस कर्मोंकी मत्ताबान्या सम्पन्नदृष्टि वष या नारकी पूर्वकाटि

पुष्पस्स गम्मादिअट्टवस्सापमतोमुहुत्तमहिपाय उवरि खइय पट्टविय देववपुम्भकोटि  
मच्छिय वेत्तीसाठट्टिदिदेवेसुप्पन्निय पुष्पा पुष्पकोटिआठट्टिदिमजुस्सेसुप्पन्निय अंतो  
मुहुत्तपावसेसे संमारे अन्नममाव गयस्स दाभतोमुहुत्ताहियअट्टवस्सएदोपुष्पकोटिदि  
साहियतेथीमसागगेरमाणमुत्तमाशो ।

वेदगसम्माइट्ठी केवचिर कालादो ह्येति ॥ १९४ ॥

मुमम ।

जहण्णेण अतोमुहुत्त ॥ १९५ ॥

मिच्छाअट्टिस्स दिट्ठमग्गस्स मम्मत्त पत्तूप अट्टवमंतोमुहुत्तमच्छिय मिच्छत्तं  
गयस्स वट्टवसभारा ।

उत्तकस्सेण छावट्टिसागरोवमाणि ॥ १९६ ॥

कुदो ? उवममत्तम्मत्तादो वेदगसम्मत्त पट्टिवन्निय मेससुंममावाउत्तव्वपीत्त  
सागरोवमाठट्टिदिपसु देवेसुवन्निय तदा मजुस्सेसुवन्निय पुष्पो मजुस्साउत्तव्वपीत्त-

भायुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न होकर गमस भाठ बर्ष के अन्तमें हर्ष मधिक हो जायेपर  
झायिकसम्पत्त्वको स्थापित करता है और कुछ कम पूर्वकोटि तक रहकर तेजीस  
सागरोपमकी भायुस्थितिवाले देवोंमें उत्पन्न होकर पुनः पूर्वकोटि भायुस्थितिवाले  
मनुष्योंमें उत्पन्न होकर अन्तमें हर्ष मात्र संसारकालके अन्तमें रहनेपर अल्पकालको  
प्राप्त हो जाता है तब उसके झायिकसम्पत्त्वका काळ हो अन्तमें हर्षसे अधिक भाठ बर्ष  
कम वा पूर्वकोटि सहित वेतीस सागरोपमप्राप्त पाया जाता है ।

जीव वेदकसम्पत्त्वदि किन्ने कसल तक रहते हैं ? ॥ १९४ ॥

बह म्म सुगम है ।

कमसे कम अन्तमें हर्ष काल तक जीव वेदकसम्पत्त्वदि रहते हैं ॥ १९५ ॥

क्योंकि सप्तमार्ग प्राप्त करके अन्तमें मिथ्याहृदिक सम्पत्त्व ग्रहण करके कमसे  
कम अन्तमें रहकर पुनः मिथ्या-वर्गे अन्ते जातपर वेदकसम्पत्त्वका अन्तमें हर्ष अन्त  
प्राप्त हो जाता है ।

अधिकमें अधिक स्यामठ सागरोपम कसल तक जीव वेदकसम्पत्त्वदि रहते हैं  
॥ १९६ ॥

क्योंकि एक जीव उपग्रामसम्पत्त्वसत् वेदकसम्पत्त्वको प्राप्त होकर शेष  
मुज्यमान भायुमें कम बर्ष सागरोपम भायुस्थितिवाले देवोंमें उत्पन्न हुआ । फिर वहानि  
मनुष्योंमें उत्पन्न होकर पुनः मनुष्यापुत्र कम बर्षोंमें सागरोपम भायुस्थितिवाले देवोंमें

सागरोवमाउद्विदिपसु देवेसुप्यन्त्रिय पुनो मणुस्सगदिं गत्थ सुवमायमणुस्साउएण  
 दंसणमोहकस्ववणपेत्तधुत्तिस्समायमणुसाउएण च उम्मचटवीससागरोवमाउद्विदिपसु  
 देवेसुप्यन्त्रिय मणुस्सगदिमागत्य तस्य भदगसम्मचकालो अंतोसुहुचमेत्ता अत्थि सि  
 दमणमाहकस्ववण पट्टविय कदकरणिन्त्रो होदूण कदकरणि जघरिमममण द्विदस्स छावट्टि  
 मागरोवममेत्तकालुवलमादो ।

उवसमसग्मादिद्वी मम्मामिच्छादिद्वी केवचिर कालादो होंति ?

॥ १९७ ॥

सुगम ।

जहणणेण अतोमुहुत्त ॥ १९८ ॥

कुदो ? मिच्छादिद्विस्स पइमसम्मच पड्विचन्त्रिय छावट्टियावमस सामण गदस्स  
 तदुवलमादो । एव सग्मादिच्छादिद्विस्स भि जहण्णकाला वत्तणो । मभरि मिच्छादादो  
 वेदगमम्मत्तादो वा सग्मादिच्छादिं गत्थ अहण्णकालमच्छिय गुमतर गदा सि वत्तणं ।

उत्पद्य ह्यभा । वहांस पुनः मनुष्यगतिमें जाकर मुष्यमान मनुष्यायुसे तथा वंशम  
 मोहके क्षयज पर्यन्त भाग मोगी जानेवाणी मनुष्यायुसे कम चौवीस सागरोपम  
 आयुस्थितिवाळे देवोंमें उत्पद्य ह्यभा । वहांस पुनः मनुष्यगतिम भाकर वहां वेदक  
 सम्यसककामके मस्तमुहूर्तमात्र रहनेपर वंशममाहके क्षयणको स्थापितकर कृतकरणीय  
 हो गया । एम कृतकरणीयक अन्तिम समयमें स्थित जीवके वेदकसम्यकत्वका उपामत  
 सागरोपममात्र काल पाया जाता है ।

जीव उपग्रमसम्पग्घटि व सम्पग्मिध्यादटि कितन काल तक रहत हैं ? ॥ १९७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

कमसे कम अन्तमुहूर्त काल तक जीव उपग्रमसम्पग्घटि व सम्पग्मिध्यादटि  
 रहते हैं ॥ १९८ ॥

क्योंकि मिध्यादटि जीवके प्रथम सम्यकत्वको प्राप्त कर प्रथमोपग्रमसम्यकत्वके  
 क्षयमें यह भावमी होय रहनेपर साक्षात्त गुणस्थानमें जानपर उपग्रमसम्यकत्वका  
 मस्तमुहूर्त काम पाया जाता है । इसी प्रकार सम्पग्मिध्यादटिका भी अचण्य काम कहना  
 चाहिये । केवल विशेषता यह है कि मिध्यात्वस या पदकसम्यकत्वस सम्पग्मिध्यात्वमें  
 जाकर य अचण्य बाल पदा रहकर अण्य गुणस्थानमें जानेपर सम्पग्मिध्यात्वका ,अण्य  
 मुहूर्तमात्र अचण्य काम पाया जाता है वसा कहना चाहिये ।

उत्कस्सेण अतोमुहुत्त ॥ १९९ ॥

सुगमम् ।

सामणसम्माइट्ठी केवचिर कालादो ह्येति ? ॥ २०० ॥

सुगम ।

जहण्णेण एयसमओ ॥ २०१ ॥

उत्सवसम्मत्तद्वाण एगममयाबमेवे सामण्य गदस्स मासणगुणस्स एगममय कालाबलमादो । जेत्थिया उत्सवसम्मत्तद्वा एगममयमादिं क्खट्ठल ज्ञाणुक्कस्सेण छावळियाओ थि अरसेमा अत्थि सत्थिया थेव सामणगुणद्रावियप्पा ह्येति । उत्सवस मम्मत्तक्कसं सणुण्यमच्छिओ सामण्यगुण ण पट्ठिव-ज्जदिसि क्कच गच्छेदे ? एदम्हादा थेव सुत्ताओ, आत्तरियपरपरागदुबदेमादा थ ।

उत्कस्सेण छावलियाओ ॥ २०२ ॥

सुगम ।

अधिकमें अधिक अन्तर्भूत काल तक बीब उत्सवसम्पगच्छति व सम्पगिमध्या-  
च्छति रहते हैं ॥ १९९ ॥

यह सब सुगम है ।

बीब सामादनसम्पगच्छति किन्तु काल तक रहत है ? ॥ २०० ॥

यह सब सुगम है ।

कममें कम एक समय तक बीब सामादनसम्पगच्छति रहत हैं ॥ २१ ॥

क्याकि उत्सवसम्पगच्छके काममें एक समय होय रहनेपर सासादान गुणस्था ममें अनेबास जीबके सासादान गुणस्थानका एक समय काल पाया जाता है । एक समयस परात्म कर अधिकसे अधिक छह आवणियों तक जितना उत्सवसम्पगच्छका काम होय रहता है उतने ही सासादानगुणस्थानकामके विषय होते हैं ।

श्रेष्ठ—ओ बीब उत्सवसम्पगच्छके संपूर्ण काम तक उत्सवसम्पगच्छमें क्या है वह सासादान गुणस्थानमें नहीं जाता यह कैसे जाता ?

समाधान—मस्तुत नृत्तसे ही तथा आचार्यपरम्परागत उपदेशस मी पूर्णकाल जाना जाती है ।

अधिकमें अधिक छह मासों काल तक बीब सामादनसम्पगच्छति रहते हैं ॥ २०२ ॥

यह सब सुगम है ।

मिच्छादिद्वी मदिअण्णाणीभगो ॥ २०३ ॥

ब्रह्मा मदिअण्णाणिस्म अणादिअपञ्चमिद अणादिसपञ्चमसिद्-सादिसपञ्चम  
सिद्दियप्या बुधा तथा एदस्स वि वत्तम्भा । मादि सपञ्चमसिद्अण्णाणस्स क्खला जहण्णेण  
अतामुत्तुच, उक्कस्सुण उवहुपोगलपरियह् अथा बुच तथा मिच्छत्तस्स वि वत्तम्भ ।

सण्णियाणुवादेण सण्णी केवचिर कालादो होंति ? ॥ २०४ ॥

सुगम ।

जहण्णेण खुद्दामवरगहण ॥ २०५ ॥

खुद्दा ! असण्णीहिंत्तो सण्णिअपञ्चत्तएमुप्पज्जिय सुद्दामवरगहणमग्घिय अम  
ग्घिच गदस्स उदुबलमादा ।

उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्त ॥ २०६ ॥

असण्णीहिंत्ता सण्णीमुप्पज्जिय सागरावमसदपुधत्त उक्कव परिममिय निग्गयस्स  
उदुबलमादो ।

मिथ्यादृष्टि जीवोंकी फालप्ररूपणा मतिप्रज्ञानी जीवोंक समान है ॥ २०३ ॥

जिस प्रकार मतिमञ्जामी जीवोंके अनादि अनादि अनादि-आगत और सादि आगत  
ए तीन विक्षय बतलाये गये हैं उसी प्रकार मिथ्यादृष्टि जीवोंक भी कहना  
चाहिये । जिस प्रकार सादि-आगत अज्ञानका अणुव्य कास अणुमुहत्त और उद्वेग कास  
अपार्थपुण्ड्रपरिवर्तनमात्र बतलाया गया है उसी प्रकार मिथ्यात्वका भी कहना चाहिये ।

संज्ञीमार्गानुसार जीव चित्तन काल तक संज्ञी रहते हैं ? ॥ २०४ ॥

यह स्व सुगम है ।

कमस कम सुद्रमवग्रहणमात्र काल तक जीव सञ्जी रहते हैं ॥ २०५ ॥

क्योंकि अज्ञानी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि संज्ञी अणुव्यत्तकॉम उत्पन्न होकर सुद्रमव  
ग्रहणमात्र काल रहकर पुनः अज्ञानीभावका प्राप्त हुए जीवोंके सुभोक्त कास पाया  
जाता है ।

अधिकत अधिक सागरापमश्रुतपृथक्त्वमात्र काल तक जीव सञ्जी रहत हैं  
॥ २०६ ॥

क्योंकि अज्ञानी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि संज्ञीमें उत्पन्न हो गईपर सागरापम  
श्रुतपृथक्त्व काल तक परिश्रमण करके मिथ्यात्वकास जीवोंके संज्ञीत्वका सागरापमश्रुत  
पृथक्त्वप्रमाण उत्पन्न कास पाया जाता है ।



असण्णी केवचिर कालादो ह्येति ? ॥ २०७ ॥

सुगम ।

जहण्णेण सुदाभवग्गहण ॥ २०८ ॥

एद पि सुगमं ।

उक्कस्सेण अणतकालममंस्सेज्जपोग्गलपरियट्ठ ॥ २०९ ॥

एद पि सुगमं ।

आहाराणुवादेण आहारा केवचिरं कालादो ह्येति ? ॥ २१० ॥

सुगम ।

जहण्णेण सुदा भवग्गहण तिसमयूण ॥ २११ ॥

तिष्णि विग्गहे क्कळ्ळ सुद्धमेइदियसुप्पिअय चउत्तसमय आहारी होत्थन ।  
माणाउअं क्कळ्ळीपादेण मादिय अबसाण विग्गह करिय विग्गयस्स तिसमऊपरं  
भवग्गहणमेवाहारक्कसुवसमादा ।

जीव कित्ते काल तक असणी रहत हैं ? ॥ २०७ ॥

यह सज सुगम है ।

कमसे कम सुद्धभवग्रहणमात्र काल तक जीव असणी रहत हैं ? ॥ २०८ ॥

यह सज भी सुगम है ।

अधिकसे अधिक असस्यास पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अनन्त काल तक  
असणी रहते हैं ॥ २०९ ॥

यह सज भी सुगम है ।

आहारमार्गानुसार जीव आहारक कित्ते काल तक रहते हैं ? ॥ २१० ॥

यह सज सुगम है ।

कमसे कम तीन समयसे हीन सुद्धभवग्रहण मात्र काल तक जीव जा  
रहते हैं ॥ २११ ॥

क्योंकि तीन मास केपर सजस एवमिअय जीवोंमें उत्पद्य हो पीये स  
आहारक हाकर मुख्यमाम आयुको क्कळ्ळीपातसे छिन्न करके अन्तमें विग्रह करके ।  
अनपाके जीवसे तीन समय कम सुद्धभवग्रहणमात्र आहारक पाया जाता है ।

उक्कस्सेण अगुलस्स असस्सेज्जदिभागो अमंस्वेज्जासस्सेज्जाओ  
आसप्पिणी-उस्सप्पिणीओ ॥ २१२ ॥

कुदो ! विग्गाहं फाळण आहारी होवूण अंगुलस्स असस्सेज्जदिभागमसंखन्ना  
सस्सेज्जाओसप्पिणि उस्सप्पिणिफालमत्तं परिभमिय कयविग्गाहस्स तदुवलमादो ।

अणाहारः केवचिर कालदो होंति ? ॥ २१३ ॥

सुगम ।

जहण्णेणेगसमओ ॥ २१४ ॥

एदं पि सुगमं ।

उक्कस्सेण तिण्णि समया ॥ २१५ ॥

समुग्गादगयसज्जागिम्हि तिण्णिविग्गाहकयजीये वा तदुवलमादो ।

अतोमुहुत्त ॥ २१६ ॥

अवागिम्हि अणाहारिस्स अंतोमुहुत्तफालुवलमादो । अण्णापमेसो काला पुत्ता,

अधिकसे अधिक अगुलके असस्पातवें भागप्रमाण असंख्यातासख्यात  
अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी फल तक जीव आहारक रहते ह ॥ २१२ ॥

क्योंकि विग्रह करने आहारक हो अंगुलक असस्पातव भागप्रमाण असंख्याता  
संख्यात अवसर्पिणी उस्सर्पिणी काल मात्र परिभ्रमण कर विग्रह करनेवाक जीयके सुभोक  
काल पाया जाता है ।

जीव अनाहारक कितने काल तक रहते हैं ? ॥ २१३ ॥

यह सून सुगम है ।

कमसे कम एक समय तक जीव अनाहारक रहते ह ॥ २१४ ॥

यह सून भी सुगम ह ।

अधिकसे अधिक तीन समय तक जीव अनाहारक रहते हैं ॥ २१५ ॥

क्योंकि समुष्पात करनेवाके सयोगिकेवासी य तीन विग्रह करणवाके जीयक  
अनाहारत्वका तीन समयप्रमाण काल पाया जाता है ।

अधिकसे अधिक अन्तर्मुहूर्त काल तक भी जीव अनाहारक रहते ह ॥ २१६ ॥

क्योंकि अवागिकेवासीके अनाहारत्वका अन्तर्मुहूर्त काल पाया जाता है ।

श्रुति—यह कालप्रकरण बन्धक जीवोंकी अपेक्षा की गर है किन्तु अवागी

य च अजागी मयर्षतो वधञ्चो, तस्य आसवामावादे । न च अप्यत्य अप्याहारिस्स  
 अतोऽसुदुचमेचा कसो सम्मदि । तदो जेर्द पडदि सि ? न पसु दसो, अपसुवठककम्म-  
 पागठकपुंभायं सैगमेचजीवपदसाग च अण्णाण्यवधमवकित्तय अबोगीणं पि  
 वधगत्तमुवगमादे । य च 'मयुरसा अर्बमा वि अन्वि' सि प्देव सुत्तण सुह विरोहा,  
 लोम-कसापदीहितो मायमाणपवग्गवधामाव पडुव तस्य तपोवदेसादे ।

एगदीयेण कञ्जा सि समत्तमणिजोगरा ।

मगवान तो बन्धक नहीं हात क्याकि उनके कर्मोंके भासवका अभाव है । अन्धक नहीं  
 अनाहारी जीवका अन्तर्मुहूर्तप्रमाण काख पाया नहीं जाता । अतएव यह अनाहारीका  
 अन्तर्मुहूर्तप्रमाण काख प्रकृत नहीं होता ?

समाधान—यह कोई बात नहीं है क्योंकि चार अघातिक कर्मोंके पुत्र  
 कर्मोंका भीर छोड़प्रमाण जीवप्रकर्मोंका परस्पर बन्धन देखते हुए अवागी जीवोंके  
 भी बन्धकभाव स्वीकार किया गया है । एसा माननेपर अनुप्य बन्धक भी हात है  
 इस सूत्रसे विरोध भी नहीं आता क्योंकि उक्त सूत्रमें याग और कपाय भाषिसे  
 बन्धन होनेवाले मर्षीय बन्धके अभावकी अपेक्षासे मर्षीयोंके बन्धक होनेका  
 कपदेश किया गया है ।

एक जीवकी अपेक्षा वास नामक अनुपागद्वार समाप्त हुआ ।

## एगजीवेण अंतराणुगमो

एगजीवेण अतराणुगमेण गदियाणुवादेण गिरयगदीए णेरइ  
याण अंतरं केवचिर कालादो होदि ? ॥ १ ॥

मूलोपधिसयपुच्छा किण्ण कया ? ग, मूलोपधिविबद्धकालपररूपवामावादो ।  
किमिदि वस्स कालो ण सुत्तो ? न, तस्साणुत्तसिद्धीदो । केवचिरमिदि पुत्त एग-वे-विभिण  
बाव अपंतमिदि अंतरपुच्छा कदा होदि । सेसं सुगमं ।

जहण्णेण अतोमुहुत्त ॥ २ ॥

कुदो ? भेरइयस्स भिरयादो थिग्गयस्स तिरिक्खेसु मणुस्सेसु वा गम्मोपकक-  
तियप-जचपसु उप्पन्निजय सम्भसइण्णाउअकालेम्मंतर भिरयाउअ वधिय कालं करिय

एक जीवकी अपवा अंतरानुगमसे गतिमार्गानुमार नरकगतिमें नारकी जीषोका  
अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ १ ॥

शुद्धा—यहां मूलोपधियक अर्थात् गुणस्थानोंकी अपेक्षा कामसम्बन्धी प्रश्न  
क्यों नहीं किया गया ?

समाधान—नहीं किया गया क्योंकि मूलोपसम्बन्धी कामप्रकृष्टा भी तो  
नहीं की गयी ।

शुद्धा—मूलोपसम्बन्धी काळ क्यों नहीं बतलाया गया ?

समाधान—नहीं बतलाया गया क्योंकि बिना बतलाये भी उसके ज्ञानकी  
सिद्धि हो जाती है ।

कितने काळ तक देसा कहनेपर क्या एक समय अन्तर होता है क्या दो  
समय क्या तीस समय इस प्रकार अनन्त समयों तककी अन्तरसम्बन्धी पूछा की  
गयी है । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

कमसे कम अन्तर्मुहूर्त काल तक नरकगतिसे नारकी जीषोका अन्तर होता  
है ॥ २ ॥

क्योंकि, नरकसे निकलकर गमोपक्रान्तिक तिरिक्ख जीषोमें अथवा मनुष्योंमें  
उत्पद्य हो सबस कम आयुके मीतर नरकायुको बाँझ मरण कर पुनः नरकोंमें उत्पद्य

पुनो गिरयसुववण्यस्त अहण्यवतोमुहुचतकुरलमादा ।

उक्कस्सेण अणतकालमसस्सेज्जपोग्गलपरियट्ट ॥ ३ ॥

गेरह्यस्त गिरयादा विगंतण अणत्पिद्दगद्दीसु आसत्तिपाय असस्सेज्जविभागमेव  
पोग्गलपरियट्टे परियट्टिद्द पच्छा गिरयसुववण्यस्स युचतकुरलमादो ।

एव सत्तसु पुढवीसु गेरहया ॥ ४ ॥

गेरहया इदि सुत्ते गेरहयाअं वि वेत्तम् । सत्तसु पुढवीसु गेरहयाय तिरिक्ख  
मणुस्सगम्भोरक्कवियप अणत्तसुप्पत्तिव्य सत्तवहणमंतोमुहुचमण्ठिय अत्तिविरयसु-  
प्यण्यस्स अतरक्कत्त सरिक्खा वि सुत्त हादि ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खाणमतर केवचिर कालादो होदि ? ॥ ५ ॥

सुयमं ।

हृय नारकी जीवके नरकगतिसे अन्तर्गृह्यतमात्र अन्तर पाया जाता है ।

अधिकमे अधिक असम्प्यात् पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अनन्त काल तक नरकगतिसे  
नारकी जीवोंका अन्तर होता है ॥ ३ ॥

क्योंकि नारकी जीवके नरकसे निकलकर अविश्रित गतियोंमें भावसीके  
असंख्यातवै आगप्रमाण पुद्गलपरिवर्तन परिश्रमण करके पश्चात् पुनः नरकोंमें उत्पन्न  
होनेपर सुबोले अन्तरका प्रमाण पाया जाता है ।

इस प्रकार मातों पृथिवियोंके नारकी जीवोंका नरकगतिसं अन्तर होता  
है ॥ ४ ॥

सूत्रमें जो गेरहया अर्थात् 'नारकी' ऐसा प्रथमाश्ल पद है उससे 'गेरहयाय'  
अर्थात् नारकी जीवोंका ऐसा सम्बन्धसूत्रक अर्थ प्रकृत करना चाहिये । सातों ही  
पृथिवियोंमें नारकी जीवोंके गर्भोपजातिक पयास तिपचो व मनुष्योंमें उत्पन्न होकर  
सबसे कम अन्तर्गृह्यत काल रहकर विश्रित नरकोंमें उत्पन्न हृय जीवना अन्तरकाय  
सदृश ही होता है ऐसा प्रस्तुत सूत्रके द्वारा कहा गया है ।

तिर्यचगतिसे तिर्यच जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।



जुदा ! सप्तकुमार माहिदेवाणं तिरिक्ष्ण-मञ्जुस्माउञ्जं बंधमाणाजमाउञ्जस्य  
अहण्णाद्विदीपं मुहुत्तपुषत्तपमाजत्तादा । तिरिक्ष्ण-मञ्जुस्माउञ्जं अहण्णेण मुहुत्तपुषत्तमत्त  
बभिय तिरिक्ष्णेषु मञ्जुस्तेसु वा उप्पग्गिअय परिणामपत्तण्णएण पुणो सप्तकुमार माहिदेसु  
आउञ्जं बभिय सप्तकुमार-माहिदेसुप्पग्ग्याण जहण्णमत्तरं होदि चि बुद्धं होदि ।

उक्कस्सेण अणत्तकालमसस्सेज्जपोग्गालपरियट्ठं ॥ १७ ॥

सुगमं ।

वम्हवम्हुत्तर-लंत्तवकाविट्ठकप्पवासियदेवाणमत्तर केवचिर का-  
लादो होदि ? ॥ १८ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण दिवसपुधत्तं ॥ १९ ॥

हुदो ! एवेदि बन्धमाजजाउञ्जस्य दिवसपुषत्तादो हेट्ठा द्विदिबंवाभात्ता ।

क्योंकि तिरिष्ण या मनुष्य आयुका बांधनबाधे सप्तकुमार और माहेन्द्र देवोंके  
तिरिष्ण व मनुष्य मत्तसम्बन्धी अथवा स्थितिका प्रमाण मुहूर्तपुषत्तव पावा जाता है ।  
इसी मुहूर्तपुषत्तवप्रमाण अथवा तिरिष्ण व मनुष्य आयुको बांध कर तिरिष्णोंमें व  
मनुष्योंमें उत्पन्न होकर परिष्णामोंके निमित्तसे पुनः सप्तकुमार-माहेन्द्र देवोंकी आयु  
बांधकर सप्तकुमार माहेन्द्र देवोंमें उत्पन्न हुए जीवोंका मुहूर्तपुषत्तवप्रमाण अथवा  
मत्त होता है ऐसा सूत्र द्वारा बतलाया गया है ।

अधिकसे अधिक असस्यास पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अनन्त काल तक सप्तकुमार  
और माहेन्द्र देवोंका दशगतिसे अन्तर होता है ॥ १७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

ब्रह्म ब्रह्माक्षर व छान्दन-कापिष्ठ कल्पनासी देवोंका दशगतिसे अन्तर कितने काल  
तक जाता है ? ॥ १८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

कमसे कम दिवसपुषत्तवमात्र ब्रह्म ब्रह्माक्षर और छान्दन-कापिष्ठ कल्पनासी  
देवोंका अपनी दशगतिसे अन्तर होता है ॥ १९ ॥

क्योंकि उक्त देवों द्वारा जो आगामी भवकी आयु बांधी जाती है उसका  
स्थितियुक्त दिवसपुषत्तवस कम होता ही नहीं है ।

अशुभय-महाम्यद्वि विना तिरिक्त्त-मनुस्मा गर्भमादो अपिक्त्तता चय कर्षं दवेसुप्पञ्जति ?  
ण, परिणामपरूपण तिरिक्त्त मनुस्सपञ्जत्ताम दिवसपुषत्तजीवियाण सरयुप्पत्ताए  
विरोहामावादे ।

उक्कस्सेण अणतकालममस्वेज्जपोग्गलपरियट्ट ॥ २० ॥

सुगम ।

सुक्कमहासुक्क-सदारसहस्रारकप्पवामियदेवाणमतर केवचिर  
कालादो होदि ? ॥ २१ ॥

सुगम ।

जहण्णेण पक्खपुधत्तं ॥ २२ ॥

हृदो ! एदेहि वज्जमाणआठअस्स पक्खपुषत्तादा हेट्ठा जहण्णद्विदिर्षमाभावादे ।

शुंका—दिवसपुषत्त्वकी भायुमें ता तिर्यञ्च व मनुष्य गर्भसे मी नहीं निकल  
पात और इसलिये इनमें मनुष्यत व महावत भी नहीं हो सकते । ऐसी अवस्थामें व  
दिवसपुषत्त्वमात्रकी भायुक्त पञ्जात पुनः देवोंमें कैसे उत्पन्न हो सकते हैं ?

समाधान—यह शका ठीक नहीं क्योंकि परिणामोंके निमित्तस दिवसपुषत्त्व  
मात्र जीवित रहनेवाले तिर्यञ्च व मनुष्य पयात्तक जीवोंके देवोंमें उत्पन्न हानमें कार  
विरोध नहीं आता ।

अधिकत अधिक असम्प्राप्त पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अनन्त काल तक प्रस  
प्रसोत्तर व लान्तव अपिष्ठ देवोंका देवगतिसे अन्तर हाता है ॥ २० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

शुक्र-महाशुक्र और शतार-सहस्रार कल्पवासी देवोंका देवगतिसे अन्तर कितने  
काल तक होता है ? ॥ २१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

क्रमसे कम पक्षपुषत्त्व काल तक शुक्र-महाशुक्र और शतार-सहस्रार कल्पवासी  
देवोंका देवगतिसे अन्तर होता है ॥ २२ ॥

क्योंकि उक्त देवों द्वारा बांधी जानेवाली भायुका अक्षय स्थितिबन्ध पर  
पुषत्त्वसे कम नहीं होता ।



कृदा ? अपिदगदीदो विगगतूष अणपिदगदीसुप्यजिष्य सुदामवगगहनमच्छिष्य  
पुषो अपिदगदीमागयस्त सुदामवगगहनमर्षतठवतमादा ।

उक्त्स्मेण अणतकालमसस्वेज्जा पोगगलपरियट्टा ॥ १० ॥

कृदो ? अपिदगदीदा विगगतूष पद्दिस-विगलिदियादिअणपिदगदीसु आगति  
याण असउन्मदिमागमेत्तपोगगलपरियट्टे मभिय अपिदगदीमागदम्सु तदुवतमादा ।

देवगदीए देवाणमतर केवचिर कालादो होदि ? ॥ ११ ॥

मुगमं ।

जहण्णेण अतोमुहुत्त ॥ १२ ॥

कृदा ? देवगदीदा आगतूष तिरिक्त्त मनुम्मगम्भारक्त्तियपज्जत्तदसुप्यजिष्य  
पज्जत्तीओ ममाभिय इवाउअं वपिय देवसुप्यन्नास्म अंतोमुहुत्तठवतमादा ।

उक्त्स्मेण अणतकालमसस्वेज्जा पोगगलपरियट्टा ॥ १३ ॥

कथोकि विवक्षित गतिसे निक्कसकर मभियक्षित गतिपौम उत्पन्न हो व वहा  
भुअमवमहणमात्र वाक्क एक्कए पुनः विवक्षित गतिमे भाव हूप जीपके सुअमवमहण  
मात्र अन्तर पाया जाता है ।

अधिकम अधिक असस्य्यात् पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अनन्त काल तक पूर्वोक्त  
तिर्यचोक्त्त तिर्यचगतिमे और मनुष्योक्त्त मनुष्यगतिमे अन्तर होता है ॥ १ ॥

कथोकि विवक्षित गतिसे निक्कसकर एकत्रिष्व व पिकलेन्निष्य भादि मभियक्षित  
गतियामे भावजीवक मसक्कात्तमे मागप्रमाण पुद्गलपरिवर्तन अमन्न कर विवक्षित गतिमे  
भाव हूप जीपके सुअोक्त प्रमाण अन्तर पाया जाता है ।

देवगतिसे देवोक्त्त अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ११ ॥

पद्द सुअ सुगम है ।

कमसे कम अन्तर्मुहूर्त्त काल तक देवोक्त्त देवगतिसे अन्तर होता है ॥ १२ ॥

कथोकि देवगतिसे आकर गमोपक्रान्तिक पर्याप्त तिर्यचो व मनुष्योमे उत्पन्न  
होकर पर्याप्तार्थ पूर्ण कर देवगु वांय पुनः देवामे उत्पन्न हूप जीपके देवगतिसे अन्त  
र्मुहूर्त्तमान अन्तर पाया जाता है ।

अधिकम अधिक असस्य्यात् पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अनन्त काल तक देवगतिसे  
देवोक्त्त अन्तर होता है ॥ १३ ॥

इदा ! दशगदीदो भोपरिय ससतिसु गदीसु आरसियाए असलेन्जदिमागमेच  
पामालपरियह उक्कस्सेण परियद्धिण पुमा दशगदीए आगमणे बिराहामावादो ।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोदिसिय-मोधम्मीमाणक्पवासियदेवा  
देवगदिमगो ॥ १४ ॥

अथा देवगदीए जहण्णेण अतामुहुत्तपुक्कस्सेण असंसुज्जवोग्गसपरियहमच  
अतर बुसं तथा एदंसि पि जहण्णुक्कस्सतराणि । देवा इदि मुत्त देवाणमिदि भेत्तमं,  
'माई मन्तवणसरोओ' सि एदेण लक्खणेण लुत्त-ण-सहादो ।

सणक्कुमार माहिंदाणमतर केवचिर कालादो होदि ? ॥ १५ ॥

सुगम ।

जहण्णेण मुहुत्तपुधत्त ॥ १६ ॥

क्योंकि देवगतिसे उत्तरकर दोप तीन गतियोंमें अधिकस अधिक आयलीके  
असंख्यातवें मागमात्र पुत्रसपरिवर्तनप्रमाण अन्तरकाळ कहा गया है उसी प्रकार इन मन्त्रवासी  
भादि दशोंका जन्म व उरुह्य अन्तर जानना चाहिये । देवा येना प्रथमास्त पद्  
कहमेस दशोंका एत पद्यमत्त पद्का प्रह्व करना चाहिये क्योंकि भादि मत्त  
प अन्त व्यंजन और स्वरका प्राकृतमें विकल्पसे सोप हा जाता है " इस नियमस यहां  
पद्यी विमलिके सूचक जे शब्दका सोप हा गया है ।

मन्त्रवासी, मान्मन्तर, ज्यातिपी व सांभर्म ईशान कल्पवासी दशोंका अन्तर  
एवगतिके समान ही है ॥ १४ ॥

जिस प्रकार देवगतिसे कमस कम अन्तर्मुहूर्तमात्र और अधिसे अधिक  
असंख्यात पुत्रसपरिवर्तनप्रमाण अन्तरकाळ कहा गया है उसी प्रकार इन मन्त्रवासी  
भादि दशोंका जन्म व उरुह्य अन्तर जानना चाहिये । देवा येना प्रथमास्त पद्  
कहमेस दशोंका एत पद्यमत्त पद्का प्रह्व करना चाहिये क्योंकि भादि मत्त  
प अन्त व्यंजन और स्वरका प्राकृतमें विकल्पसे सोप हा जाता है " इस नियमस यहां  
पद्यी विमलिके सूचक जे शब्दका सोप हा गया है ।

सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्पवासी दशोंका देवगतिसे अन्तर कितने काल तक  
हाता है ? ॥ १५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

कमसे कम मुहूर्तपूयकाल तक सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्पवासी दशोंका  
देवगतिसे अन्तर हाता है ॥ १६ ॥

हुदा ! सप्तकहूमर माहिंदवबाप तिरिकु-मणुस्माउअं बंधमाणात्पमाउअस्म  
अहण्णाट्टिदीए मुहुचपुचपमागघादा । तिरिकु-मणुस्माउअ अहण्णेण मुहुचपुचपमेचं  
बभिय तिरिकुअमु मणुस्मसु वा उप्पत्रिय परिणामपच्चएण पुणो सप्तकहूमर माहिंदसु  
आउअ बंधिय सप्तकहूमर-माहिंदेसुप्पण्णाण अहण्णमतरं होदि पि बुच होदि ।

उकस्सेण अणतकालमसंखेज्जपोगगलपरियट्टु ॥ १७ ॥

सुगम ।

धम्भवम्हुत्तर-लांतवकाविट्टुक्प्पवासियदेवाणमतर केवचिर का  
लादो होदि ? ॥ १८ ॥

सुगम ।

जहण्णण दिवसपुधत्त ॥ १९ ॥

हुदो ! एददि बन्धमाणाउअस्म दिवमपुधत्तादा हेद्दा विदिबधामत्तादा ।

क्याकि तियेच या मनुप्य भायुओ बांधनबास सप्तकहूमर और माहेन्द्र देवोके  
तियेच व मनुप्य मनसम्बन्धी उप्पत्त स्थितिना प्रमाण मुहुत्तपुचपत्त पाया जाता है ।  
इसी मुहुत्तपुचपत्तप्रमाण अपण्य तियेच व मनुप्य भायुका बांध कर तियेचोमे व  
मनुप्योमे उप्पत्त बाकर परिणामोके भिमिचसे पुण सप्तकहूमर-माहेन्द्र देवोकी बाप  
बांधकर सप्तकहूमर-माहेन्द्र देवोमे उप्पत्त रूप जीवोका मुहुत्तपुचपत्तप्रमाण अपण्य  
अन्तर होता है एसा सूत्र द्वारा बतलाया गया है ।

अधिकमे अधिक अर्सक्यात्त पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अनन्त काल तक सप्तकहूमर  
और माहेन्द्र देवोका देवगतिसे अन्तर होता है ॥ १७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

ब्रह्म ब्रह्मोत्तर व छान्दन-कापिष्ठ कल्पवासी देवोका देवगतिसे अन्तर कितने काल  
तक होता है ? ॥ १८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

कमसे कम दिवसपुचपत्तमात्र ब्रह्म ब्रह्मोत्तर और छान्दन-कापिष्ठ कल्पवासी  
देवोका अपनी देवगतिसे अन्तर होता है ॥ १९ ॥

क्योंकि, ब्रह्म देवो बाप जो भागामी सबकी भायु बांधी जाती है उसका  
स्थितिवन्ध विवसपुचपत्तसे कम होता ही नहीं है ।

अणुवय-महम्मएहि विणा तिरिक्ख-मणुस्सा गम्मादो अभिक्खंता चव क्कम दवेसुप्पन्नत्ति ?  
 म, परिणामपच्चएण तिरिक्ख मणुस्सपन्नच्चार्णं दिवमपुवत्तमौविपाण तत्थुप्पचीए  
 विरोहामावादो ।

उक्कस्सेण अणतकालमसखेज्जपोग्गलपरियट्ट ॥ २० ॥

सुगम ।

सुक्कमहासुक्क-सदारसहस्मारकप्पवामियदेवाणमतर केवचिर  
 कालादो होदि ? ॥ २१ ॥

सुगम ।

जहण्णेण पक्खपुवत्तं ॥ २२ ॥

इदो ? एवेहि वन्नामाणआठअस्स पक्खपुवत्तादा हेत्ता अहण्णहिविचामावादो ।

शुद्धा—विषसपृथक्त्वकी आयुमें तो तिर्यच्च व मनुष्य गर्भसे भी नहीं निकल  
 पाते और इसलिये उनमें मणुवत्त व महावत्त भी नहीं हो सकते। ऐसी मनुष्यमें वे  
 विषसपृथक्त्वमात्रकी आयुके पश्चात् पुनः देहोंमें कैसे उत्पन्न हो सकते हैं ?

समाधान—यह टीका ठीक नहीं क्योंकि परिणामोंके निमित्तसं विषसपृथक्त्व  
 मात्र जीवित रहनेवाले तिर्यच्च व मनुष्य पयात्तक जीवोंके देहोंमें उत्पन्न होना  
 विरोध नहीं आता ।

अधिकसे अधिक असंख्यात पुत्रगणपरिवर्तनप्रमाण अनन्त काल तक ब्रह्म  
 असोत्तर व सान्तव अपिपु देहोंका देवगतिसे अन्तर होता है ॥ २० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

शुक्क-महाशुक्क और अतार-सहस्रार कल्पवासी देहोंका देवगतिसे अन्तर कितने  
 काल तक होता है ? ॥ २१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

कमसे कम पक्षपृथक्त्व काल तक शुक्क-महाशुक्क और अतार-सहस्रार कल्पवासी  
 देहोंका देवगतिसे अन्तर होता है ॥ २२ ॥

क्योंकि एक देहों द्वारा बांधी जानेवाली आयुका अन्तम स्थितिबन्ध पक्ष  
 पृथक्त्वसे कम नहीं होता ।

उक्कस्सेण अणत्तकालमसस्वेज्जपोग्गलपरियट्ठ ॥ २३ ॥

सुगम ।

आणदपाणद-आरणअञ्चुदकप्पवासियदेवाणमंतर केवधिरं

कालदो होदि ? ॥ २४ ॥

सुगम ।

जहण्णेण मामपुधत्त ॥ २५ ॥

कुशो ! एदेहि बन्धुमालमजुस्साउमम्भ मासपुषपत्ता हेत्ता जहण्णादिबवा-  
मापादो । एदे मजुस्सोपवाइणो मजुस्सा पि गम्भादिअणुवस्सेसु गदेसु अणुम्भय-महम्भयाणं  
गाहिणो । ए अणुम्भय महम्भयदि विणा एदेसुप्पत्ती अत्थि, तहोवदसामापादो । तदा  
ए मासपुषपत्तरं अज्जग्गे, किंतु वासपुषपत्तरेण होइअमिदि ? एत्थ परिहारो अणुवदे । त

अधिकसे अधिक असंख्यात पुत्रगणपरिवर्तनप्रमाण अनन्त काल तक तक उक्त  
देशोंका देशगतिसे अन्तर होता है ॥ २३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

आनत-प्राणत और आरण अच्युत कल्पवासी देशोंका देशगतिसे अन्तर कितने  
काल तक होता है ? ॥ २४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

कमसे कम मासपूषकत्व तक तक देशोंका देशगतिसे अन्तर होता है ॥ २५ ॥

क्योंकि आनत प्राणत आरण ए अच्युत कल्पवासी देशों काय बांधी जाने  
वाली मनुष्यायुका स्थितिअल्प कमसे कम मासपूषकत्वसे नीच होता ही नहीं है ।

सूत्र—अथ आनत आदि चार कल्पवासी देश मनुष्योंमें उत्पन्न होते हैं तब  
मनुष्य होकर भी वे गर्भसे उत्पन्न भाउ कर्ष व्यतीत हो जानेपर मजुमत ए महामतीको  
प्रदण करण है । मजुमतको ए महामतीको प्रदण न करनेवाले मजुम्भोकी आनत आदि  
देशोंम उत्पत्ति ही नहीं होती क्योंकि ऐसा कल्पवृक्ष नहीं पाया जाता । अतएव आनत  
आदि चार देशोंका मासपूषकत्व अन्तर नहना युक्त नहीं है उनका अन्तर कर्षपूषकत्व  
हाना चाहिये ।

समाधान—उक्त दोषका परिहार करते हैं । यह इस प्रकार है—मजुमत ए

ब्रह्मा- न च अणुवद-महम्मदेहि सज्जुत्ता चेष तिरिक्ख-अणुस्सा आणद-पाणददेवेसुप्पज्जति  
 चि पियमो जग्धि, तिरिक्खअसज्जदसम्मोइह्दीगं छरन्नुपोसपसुत्तेण सह विरोहादो । न च  
 आणद-पाणदअसज्जदसम्मोइह्दीणो मणुस्साउअस्स जहण्णहिदि वचमाणा वासपुत्रत्तादो  
 हेत्ता वचति, महावेषे जहण्णहिदिवचत्ताहेद् मम्मोइह्दीणमाउअस्स वासपुत्रत्तमेव  
 हिदिपरुवत्तादो । तदो आणद पाणदमिन्हाइह्दिसस मणुस्साठम मासपुत्रत्तमेव वधिय  
 पुणो मणुस्सेसुप्पज्जिय मामपुत्रत्त जीविदूण पुणो सण्णिपधिदिमतिरिक्खसम्मूच्छिम  
 पज्जत्तयसु अंतोसुद्दत्ताउसुववन्जिय पज्जत्तयदो होद्व च संजमामअमं पद्विवन्जिय  
 आणदादिमु आउअं वधिय उप्पण्णस्म जहण्णमंतर होदि चि वत्तन् ।

उक्खस्समणतकालममखेज्जपोग्गलपरियट्ट ॥ २६ ॥

सुगम ।

णवगेवज्जविमाणवामियदेवाणमतर केवचिर कालादो होदि ?

॥ २७ ॥

सुगमं ।

महात्रतोस संयुक्त ही तिर्येच व मनुष्य मानत प्राणत देवोमं उत्पन्न हों पेसा नियम नहीं  
 है क्योंकि ऐसा माननेपर ता तिर्येच असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका जो छद् राहु स्वरामं  
 पतखाने बासा सूच है उनस विरोध उत्पन्न हो जायगा । ( जेसो पररांहागम जीवद्वारा,  
 स्पृशानानुगम सूत्र २८ व टीका पुस्तक ४ पृ० २०७ धादि ) । और मानत-प्राणत  
 करपवासी असंयतसम्यग्दृष्टि देव जब मनुष्यायुकी अग्रम्य स्थिति बांधते हैं तब व  
 बर्षपूषफस्वसे कमकी मायुस्थिति नहीं बांधते क्योंकि महाराधमें अग्रम्य स्थितिकल्पके  
 काळविमाणमें सम्यग्दृष्टि जीवोंकी मायुस्थितिका प्रमाण बर्षपूषफस्वमात्र प्रकृषित किया  
 गया है । अता मानत प्राणत कल्पवासी मिथ्यादृष्टि देवक मासपूषफस्वमात्र मनुष्यायु  
 बांधकर फिर मनुष्योंमें उत्पन्न हो मासपूषफस्व जीवित रहकर पुनः अन्तर्मुहूर्तमात्र मायु  
 बाळ संघी पंचेन्द्रिय तिर्येच समूर्च्छन पर्यात जीवोंमें उत्पन्न होकर पर्यातक हो संयमा  
 सयम ( मनुष्यत ) ग्रहण करक मानतादि कल्पोंकी मायु बांधकर वहां उत्पन्न हुए  
 जीवके सुभोक्त मासपूषफस्वप्रमाण अग्रम्य अन्तरकाळ होता है पेसा कइया आदिये ।

अधिकसे अधिक अमरुपात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अनन्त काळ मानत प्राणत  
 और आरभ-अभ्युत कल्पवासी देवोंका अन्तर कितने काळ तक इत्ता है ॥ २६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

नौ प्रैवेयक विमानवासी देवोंका अन्तर कितने काळ तक इत्ता है ? ॥ २७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उचकस्तेण अणतकालमसंस्केज्जपोग्गलपरियट्ठ ॥ २३ ॥

सुगम ।

आणदपाणद-आरणअच्चुदकप्पवासियदेवाणमंतर केवधिरं  
कालादा होदि ? ॥ २४ ॥

सुगम ।

जहण्णेण मासपुषत्त ॥ २५ ॥

कुनो ? एदेहि बन्धमाप्पमज्जुस्ताठअस्स मासपुषत्तादा इट्ठा अहण्णाट्ठिविषया-  
मावासे । एदे मज्जुस्तोअवाएणो मज्जुस्ता वि गग्गादिअहण्णस्सेसु गदेसु अणुअण्य-महण्णयानं  
गाहिणो । य य अणुअण्य महण्णयदि विणा एदेसुअण्यो अरिय, तहाअदसाभावासे । उरो  
य मासपुषत्तरं अणुअदे, किंत्तु मासपुषत्तमेव होदण्णमिदि ? एत्थ परिहारो अणुअदे । व

अधिकसे अधिक असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अनन्त काल तक उक्त  
देशोंका देशगतिसे अन्तर होता है ॥ २३ ॥

यह सत्य सुगम है ।

आनत-प्राणत और आरम-अण्युत कल्पवासी देशोंका देशगतिसे अन्तः कितने  
काल तक होता है ? ॥ २४ ॥

यह सत्य सुगम है ।

कमसे कम मासपुषत्त्व तक उक्त देशोंका देशगतिसे अन्तर होता है ॥ २५ ॥

क्योंकि आनत प्राणत आरम व अण्युत कल्पवासी देशों द्वारा बांधी जाने  
वाली मनुष्यायुका स्थितिबन्ध कमसे कम मासपुषत्त्वसे भीचे होता ही नहीं है ।

सुझ—अब आनत आदि आर कल्पवासी देश मनुष्योंमें उत्पन्न होते हैं तब  
मनुष्य होकर भी वे गर्भसे लेकर आठ वर्ष व्यतीत हो जानेपर मज्जुमत व महाप्रतोंको  
ग्रहण करते हैं । अणुमतोंको व महामतोंको ग्रहण न करकेवाले मनुष्योंको आनत आदि  
देशोंमें उत्पत्ति ही नहीं होती क्योंकि वैसे कल्पका नहीं पाया जाता । अतएव आनत  
आदि आर देशोंका मासपुषत्त्व अन्तर कबला युक्त नहीं है अतएव अन्तर वर्षपुषत्त्व  
होना चाहिये ?

समाधान—उक्त शंकाका परिहार कहते हैं । यह इस प्रकार है—अणुमत व

बहा- ण च अप्पम्भद महब्बदेहि सजुत्ता येव तिरिक्ख-मणुस्सा आणद-पाणददेधेसुप्पत्तंति  
 चि पियमो अणिय, तिरिक्खअसजदसम्माइह्ठीण छरन्जुपोसअसुत्तेय सह विरोहादो । ण च  
 आणद-पाणदअसजदसम्माइह्ठीणो मणुस्साउअस्स जहप्पह्ठिदि बंधमाना पासपुबत्तादो  
 हेत्ता वचति, महाबधि जहप्पह्ठिदिबधत्ताछदे सम्मादिह्ठीणमाउअस्स वामपुबत्तमेव  
 ह्ठिदिपरूवत्तादो । तदो आणद पाणदमिच्छाह्ठिस्स मणुस्साउअ मासपुबत्तमेव बंधिय  
 पुणो मणुस्सेसुप्पन्निजय मामपुबत्त वीविदूव पुणो सण्णियर्षिदियतिरिक्खसम्मूष्ठिम  
 पन्जचपसु अतोमुत्ताउअसुवत्तज्जिय पन्जचयदो होदूव संजमामज्जमं पट्टिनन्जिय  
 आणदादिमु आउअं भविय उप्पण्णस्म जहण्णमंतर होदि चि वत्तव्व ।

उक्कस्समणतकालममखेजपोग्गलपरियट्ट ॥ २६ ॥

सुगम ।

णवगेवज्जविमाणवामियत्तेवाणमतर केवचिर कालादो होदि ?

॥ २७ ॥

सुगम ।

महाव्रतोंस सयुक्त ही तिर्येव व मनुष्य मानत प्राणत देवोंमें उत्पन्न हों ऐसा नियम नहीं  
 है क्योंकि ऐसा माननेपर ता तिर्येव असंयतसम्यग्दृष्टि जीवाका ओ छह राजु स्पर्शन  
 पतमाने पास सृष्ट है उमस विरोध उत्पन्न हो जायगा । ( देखो परलंटागम जीवद्वय,  
 स्पर्शानुगम सूत्र २८ व टीका पुस्तक ४ पृ० २०७ भादि ) । और मानत-प्राणत  
 कल्पवासी असंयतसम्यग्दृष्टि देव जब मनुष्यायुकी अद्यम्य स्थिति बांधते हैं तब व  
 कर्षपृथक्त्वसे कमकी आयुस्थिति नहीं बांधते क्योंकि महाबन्धमें अद्यम्य स्थितिरन्धके  
 काष्ठविभागमें सम्यग्दृष्टि जीवोंकी आयुस्थितिका प्रमाण कर्षपृथक्त्वमात्र प्रकृतिया  
 गया है । अतः मानत प्राणत कल्पवासी सिध्दादृष्टि देवके मासपृथक्त्वमात्र मनुष्यायु  
 बांधकर फिर मनुष्योंमें उत्पन्न हो मासपृथक्त्व जीवित रहकर पुनः अन्तर्मुहूर्तमात्र आयु  
 बांधे सबी वैशेषिक्य तिर्येव समूर्द्धम पयात जीवोंमें उत्पन्न होकर परांतक हो सयमा  
 सयम ( मनुव्रत ) ग्रहण करके आनतादि कर्षोंकी आयु बांधकर वहां उत्पन्न हुए  
 जीवके सूत्रोक मासपृथक्त्वप्रमाण अद्यम्य अन्तरकाळ होता है ऐसा कहना चाहिये ।

अधिकसे अधिक भ्रमण्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अनन्त काळ मानत-प्राणत  
 और आरण अच्युत कल्पवासी देवोंका अन्तर होता है ॥ २६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

नौ प्रवेयक विमानवासी देवोंका अन्तर कितने काळ तक हाता है ? ॥ २७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।



जहण्णेण वामपुधत्त ॥ २८ ॥

एता ? वामपुधत्ताने हेहा आउअस्म जहण्णदिदिषामायासे ।

उक्कस्मेण अगतकालमसम्भेज्जपोग्गल्परियट्ठ ॥ २९ ॥

मिच्छादिद्वीपमर्षणममाराणमत्थ समयादा ।

अणुत्थि जाव अवराद्धदविमाणवामियेदेवाणमत्तर केवचिर  
कालाने होत्ति ? ॥ ३० ॥

सुगम ।

जहण्णेण वामपुधत्त ॥ ३१ ॥

एता ? मग्गान्दिदीण वामपुधत्तादा हेहा आउअस्म जहण्णदिदिषामायासे ।

उक्कस्मेण पे मागरोवमाणि मादिरेयाणि ॥ ३२ ॥

कमम कम वपुष्यस्य काल तक ना प्रोषक विमानशामी देवोस्य अन्तर हाता  
हे ॥ २८ ॥

क्याकि श्री विषयक विमानशामी देव वपुष्यस्यस्य मायका अपण्य आयुसिधिनि  
बांधन ही मही है ।

अपिद्यम अधिक अमर्यात पुत्रनपरिवर्तनप्रमाण अनन्त कमल तक ना प्रोषक  
विमानशामी देवोस्य अन्तर हाता हे ॥ २९ ॥

क्याकि त्रिद्व र्म्या अत्रयत वाम तक मेगारमे परिभ्रमत्र कारमा दान व दमे  
मिच्छादिदि उवाका मी मा विषयकाम अत्रय हाता समय है ।

अनुदिश आदि अणुत्थि पण्य विमानशामी देवोस्य अन्तर काल तक  
हाता हे ॥ ३० ॥

सह एव सुगम है ।

कमम कम वपुष्यस्य काल तक अनुदिश आदि अणुत्थि पण्य विमान-  
शामी देवोस्य अन्तर हाता हे ॥ ३१ ॥

क्याकि सायणदि उवाक आयुषा अपण्य रियातिकेव मी वपुष्यस्यस्य मीक  
मही हाता ।

अपिद्यम अधिक मातृक दा मागरोवप्रमाण काल तक अनुदिशादि अणु  
त्थि पण्य विमानशामी देवोस्य अन्तर हाता हे ॥ ३२ ॥

कुतो ? अणुदिमादिदेवस्य पुष्वकोडावअमणुस्सेसुप्पात्रिय पुष्वकोडिं वीविद्वम साइमीसाणं गत्तण तत्प अङ्गुल्लज्जमागरोवमाणि गमिय पुणो पुष्वकोडावअमणुस्स सुप्पन्जिय मज्जम वेत्तण अप्पप्यणो विमाणम्मि उप्पप्पस्स सादिरेपवेसागरोवममचं तरुवलमादो ।

सम्बद्धसिद्धिविमाणवामियदेवाणामतरं केवचिरं कालादो ह्योदि ?

॥ ३३ ॥

सुगम ।

णत्थि अंतरं गिरतरं ॥ ३४ ॥

कुदा ? सम्बद्धमिद्धीदो मणुसगइमोइप्पस्स मात्तु मात्तुमप्पत्तं गमणामावाणे ।

‘नत्थि अतरं गिरतरं’ इदि पुणरुत्तदामप्पसंगादा दाप्पमेक्कइरस्स सगहो कायन्तो । न एम दासो, दा अप्प अचत्तं विय द्विदोण्ह पि मिस्साणमणुगइह्ठ पुरुवयत्तस्स पुणरुत्त

क्योंकि अनुविद्यादि वेदके पूर्वकोटि की आयुवाले अनुप्योंमें उत्पन्न होकर एक पूर्वकोटि तक जी कर सौघर्म-ईशान स्पर्शको जाकर वहाँ अङ्गुल सागरोपम काळ प्यतीत कर पुनः पूर्वकोटि की आयुवाले अनुप्योंमें उत्पन्न होकर संप्रथमका ग्रहण कर अप्रथम अपने विमानमें उत्पन्न हान पर तमका अन्तरकाळ सातिरेक हो सागरोपम प्रमाथ प्राप्त हो जाता है ।

सर्वाथसिद्धि विमानवासी देवोंका अन्तर कितन काल तक जाता है ? ॥ ३३ ॥

यह घट्ट सुगम है ।

सर्वाथसिद्धि विमानवासी देवोंका अपनी गतिसे अन्तर होता ही नहीं, वह गति निरन्तर है ॥ ३४ ॥

क्योंकि सर्वाथसिद्धिसे अनुप्यगतिमें उत्पन्नेवाले जीवका मोक्षके सिवाय अन्यत्र गमन होता ही नहीं है ।

सूत्र— सर्वाथसिद्धि विमानवासियोंका कोई अन्तरकाळ नहीं होता वह गति निरन्तर है देसा कहनेमें पुनःकति दोपका प्रसंग जाता है अतएव वा कतिप्योंमेंसे किसी एकका ही समग्र करना चाहिये । अर्थात् वा तो अन्तरकाळ नहीं होता इतना कहना चाहिये वा निरन्तर है इतना ही कहना चाहिये ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं क्योंकि द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक इन दो नबोंका अथकम्बम करनेवाले दोनों प्रकारके दिप्पोंके अनुमदके लिय उक्त प्रकारसे प्रकथन करनेवाले सुप्रकारके ————— ही होता । अन्तर नहीं है यह

दोषमात्रादा । अपि अतस्मिदि धयण पञ्चरङ्गियणपट्टिदसिस्ताणमणुग्गाहकारय, विदिदा  
पदिरिचपदिमेह खत्र बारदत्तादो । गिरंतस्मिदि धयण द्वाङ्गियमिस्माणुगाहयं, पदिमेह  
पदिरिचपिदीप पदुप्पायणादा । मग सुगम ।

इदियाणुवादेण एहंदियाणमतर केवचिर कालादो होदि ? ॥ ३५ ॥

एगारारपुच्छादो खत्र मयत्तरयपन्नशाममवादा किमहुं पुवा पुवा पुच्छा कीरे ?  
ण श्मापि पुच्छामुच्चाणि, किंतु मादगियाणमामक्रिययणाणि उन्नयुनुत्पत्तिमिदिचापि,  
एदो ण दोमो सि ।

जहण्णेण खुदाभवग्गहण ॥ ३६ ॥

सुगमं ।

उक्कस्मेण वेमागरोवमसहस्साणि पुत्तकोडिपुधत्तेणभहियाणि  
॥ ३७ ॥

वयम पर्यापार्थिक मयदा भवत्तरय करममाणे शिष्योका अनुग्रहकारी हे क्योंकि यह  
पञ्चन विभिन्न रहित प्रतिपद्यम व्यापार करता है । मितस्तर है यह पञ्चन प्रत्याधिक  
शिष्याका अनुग्रहक है क्योंकि यह प्रतिपद्यमे रहित विधिका प्रतिपादक है ।

दोष मूलाध सुगम है ।

इन्द्रियमार्गानुसार एकेन्द्रिय बीजोका अन्तर कितने काल तक जाता है ?

॥ ३५ ॥

शुद्ध—केवल एक बार प्रश्न करके समस्त भयदा प्ररूपण किया जा सकता  
था फिर बार बार यह प्रश्न क्यों किया जाता है ?

समाधान—ये पुच्छाग्रह नहीं हैं किन्तु भाष्यार्थके मार्गाकारक बचन हैं  
जिनका कि विभिन्न अंगक सूचकी उत्पत्ति करना है । श्मश्रुये यह बार बार प्रश्न करना  
कारण बाल नहीं है ।

कममे कम सुद्रमरप्रहणमात्र काल तक एकेन्द्रिय बीजोका अन्तर जाता  
है ॥ ३६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अधिकमे अधिक पृथक्पट्टिपृथक्त्वमे अधिक दो हमार मागरोपमप्रमाण काल  
तक एकेन्द्रिय बीजोका अन्तर जाता है ॥ ३७ ॥

कुदो ? एइरिएइता निग्गयस्म तसकाइण्मु चय ममसम्प पुत्रकडिपुघष  
म्हियेतागतोषमसहस्ममेचलमडिदीदो उभरि तस्य अवह्वाणामावादो ।

यादरएइदिय-पज्जत्त-अपज्जत्ताणमतर केवचिर कालादो होदि ?

॥ ३८ ॥

सुगममदमासकमुत्त ।

जहण्णेण सुद्धाभवग्गहण ॥ ३९ ॥

सुगम ।

उक्कस्सेण अमस्सेज्जा लोगा ॥ ४० ॥

कुदा ? बादरएइरिएइता निग्गतुम् सुद्धमइदिएण्मु अमसुज्जलरगमचकाम्पदो  
उभरि अवह्वाणामावादो । इदु णाम एदमंतर बादरएइरियाण्, ण ठेसि पज्जत्ताणमपज्जत्ताण  
ण, सुद्धमइदिएण्मु अप्पिदबादरइणिएण्मु च परिपडुंतस्स पुष्पिण्णवारादो अइमइस्सलर-

क्योंकि एकेन्द्रिय जीवामें निकल कर कयल बसकायिक जीवोंमें ही भ्रमण करनेवाले जीवके पूर्वकोटिपूयस्त्वस मयिक हा हजार भागएोपममान स्थितिमें ऊपर बसकायिकोंमें रहनेका अभाव है ।

बादर एकन्द्रिय, बादर एकन्द्रिय पर्याप्त व बादर एकन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका अपनी गतिमें अन्तर कितने काल तक जाता है ? ॥ ३८ ॥

यह आशंकाएन सुगम है ।

कमसे कम सुद्धमवग्रहणमात्र काल तक उक्त एकन्द्रिय जीवोंका अन्तर जाता है ॥ ३९ ॥

यह सूच सुगम है ।

अधिकम् अधिक अमंस्पाठ लक्षणमाण काल तक उक्त एकन्द्रिय जीवोंका अन्तर जाता है ॥ ४० ॥

क्योंकि बादर एकेन्द्रिय जीवोंमेंसे निकलकर एदम एकन्द्रियोंमें एतद्वयात एवममाण कालसे ऊपर रहना अभाव नहीं है ।

उत्तर—यह असाह्यता अक्षयमाण कालका अन्तर बादर एकन्द्रिय (सामान्य) जीवोंका मत ही है पर यह अन्तरमाण पुषक पुषक बादर एकन्द्रिय पर्याप्तों व अपर्याप्तोंका नहीं है सकृता क्योंकि सूक्ष्म एकन्द्रियोंमें तथा अपिपरित (एवाम वा अपर्याप्त) बादर एकन्द्रियोंमें अर जीव परिभ्रमण करता है तब पूर्वोक्त अन्तर

संसाधो । हाडु गाम पुम्बिल्लंसादा इमस्स अतरस्स अरुमहण्णं, सो वि एदेसिमंतगकालो पुम्बिल्लतरकालाच्च असंखेज्जलोगमत्तो वेव, पागतो । कुओ ? अर्मात्तकवदसामारादो ।

सुहुमेहदिय-पज्जत्त-अपज्जत्ताणमतर केवचिर कालदो होदि ?

॥ ४१ ॥

सुगम ।

जहण्णेण सुद्धाभवग्गहणं ॥ ४२ ॥

एद पि सुगमं ।

उक्कस्सेण अगुलस्स असस्खेज्जदिभागो असस्खेज्जासस्खेज्जाओ ओमपिणी-उस्सपिणीओ ॥ ४३ ॥

कुओ ? सुहुमेहदिपरिहितो पिग्गयस्स वादरेहदिपसु वेव ममंतस्स वादरेहदिय

अधिक बड़ा अन्तरकाळ प्राप्त हो सकता है ?

समाधान—पूर्वोक्त अन्तरसं यह पर्याप्तक व अपर्याप्तकोका अलग अलग प्राप्त अन्तर अधिक बड़ा मछे ही हो जाय पर तो मी इम पर्याप्त व अपर्याप्त एकेन्द्रिय बाहर जीवोंका अन्तर पूर्वोक्त अन्तरकाळके समान मसंख्यात लोकप्रमाण ही रहेगा समस्त नहीं हो सकता क्योंकि बाहर एकेन्द्रिय जीवोंके समस्त कालप्रमाण अन्तरकाळ अपर्याप्त ही नहीं है ।

एहम् एकेन्द्रिय, एहम् एकेन्द्रिय पर्याप्त और एहम् एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ४१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

कमसे कम सुद्रमवग्रहण काल तक एहम् एकेन्द्रिय व उनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंका अन्तर होता है ॥ ४२ ॥

यह सूत्र मी सुगम है ।

अधिकमे अधिक अगुलके असंख्यातने भागप्रमाण असंख्यातासंख्यात अउ सपिणी-उरसपिणी काल तक एहम् एकेन्द्रिय व उनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंका अन्तर होता है ॥ ४३ ॥

क्योंकि, एहम् एकेन्द्रियासं निकलकर बाहर एकेन्द्रियोंमें ही अमन करनेवाले

द्विदीदा उचरि भवद्वाणामावादो । तेसि पञ्जत्तापञ्जत्ताणं पि एदम्मादा अतरादो  
अदियमतरं होदि, अण्णपिइसुइमेइदियसु वि सत्तारोबलंभादो । किंतु तो वि अगुलसस  
असत्तेज्जदिमागमेसं खेव अंतर होदि, अण्णोअएसामावादो ।

वीइदिय-तीइदिय-चउरिंदिय-पचिंदियाणं तस्सेव पज्जत्त-अपज्ज  
त्ताणमतर केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ४४ ॥

सुगम ।

जहण्णेण खुदाभवग्गहण ॥ ४५ ॥

सुगम ।

उक्कस्सेण अणतकालमसंसेज्जपोग्गलपरियट्ठं ॥ ४६ ॥

कुदो ? अप्पिइइदियहिंमो' णिग्गयसस अण्णपिइइदियादिसु आबलियाए जसत्ते

जीवके बाहर एकेन्द्रियकी स्थितिसं (जो कि उपर्युक्त प्रमाण है) ऊपर बर्हा रहनेका प्रमाण  
है । उक्त जीवोंके पर्याप्त व अपर्याप्तका ( अलग अलग ) अन्तर यद्यपि पूर्वोक्त प्रमाणसे  
अधिक होता है क्योंकि इन जीवोंका अविश्वसित सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें भी सत्कार पाया  
जाता है । किंतु फिर भी अन्तर अगुलके असंख्यातयें भाग ही जाता है क्योंकि इस  
प्रमाणसे अधिक प्रमाणका अर्थ कोई उपदेश पाया नहीं जाता ।

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचिन्द्रिय जीवोंका तथा उन्हींके पर्याप्त  
और अपर्याप्त जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ४४ ॥

यह खल सुगम है ।

कमस कम सुद्रमवग्रहण काल तक उक्त द्वीन्द्रियादि जीवोंका अन्तर होता  
है ॥ ४५ ॥

यह खल सुगम है ।

अधिकसे अधिक असम्प्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अनन्त काल तक उक्त  
द्वीन्द्रियादि जीवोंका अन्तर होता है ॥ ४६ ॥

क्योंकि विश्वसित इन्द्रियोंपासे जीवोंमेंस निकर कर अविश्वसित एकेन्द्रिय

अग्निभागमक्षपाग्गलपरियद्वाणि परियद्गुण विराहामात्रादो ।

कायाणुवादेण पुढविकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-चाउकाइय-  
वादर सुहुम पज्जत्त-अपज्जत्ताणमतर केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ४७ ॥  
सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दामवरगहण ॥ ४८ ॥

एह पि सुगमं ।

उत्तकस्सेण अणतकालमसस्सेज्जपोग्गलपरियद्द ॥ ४९ ॥

इहा ! अप्पिदक्काय मोत्तण अप्पिदसु वणप्फदिकायादिसु आवलियाए अत्त  
ए-अग्निभागमक्षपाग्गलपरियद्वाणि परियद्दुं संभोवत्तमादो ।

वणप्फदिकाइयणिगोदजीवनादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्ताणमतरं  
क्वचिरं कालादो होदि ? ॥ ५० ॥

मादि जीवोम भावर्त्तक अर्त्तत्तात्तये माग पुद्दलपरिचर्त्तम अमण करत्तमे कार विरोप  
नहीं माता ।

अयमागजातुमार पृथिवीकायिक, अप्फायिक, तेवकायिक, वायुकायिक,  
वाद्दर और सुहुम तथा पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोका अन्तर कितने काल तक इत्या  
दि ॥ ४७ ॥

यह सब सुगम है ।

कमसे कम सुद्दमग्रहण काल तक पृथिवीकायिक आदि उक्त जीवोका अन्तर  
होता है ॥ ४८ ॥

यह सब भी सुगम है ।

अधिकसे अधिक अमस्यात्त पुद्दलपरिचर्त्तनप्रमाण अनन्त काल तक उक्त  
पृथिवीकायिक आदि जीवोका अन्तर होता है ॥ ४९ ॥

क्योंकि विपक्षित कायको छाडकर अविपक्षित अनम्यतिक्काय आदि जीवोम  
भावर्त्तक अर्त्तत्तात्तये मागमात्र पुद्दलपरिचर्त्तन अमण करत्ता संभव है ।

वनस्पतिकायिक निगाद् वाद्दर और सुहुम तथा पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोका  
अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ५० ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुडा भवग्गहण ॥ ५१ ॥

एद पि सुगम ।

उक्क्स्सेण असस्सेज्जा लोगा ॥ ५२ ॥

इदो ! अप्पिदणप्फदिकायादो भिग्गयस्स अणप्पिदप्पुड्ढीकपादिसु च व  
हिंढतस्स असस्सेज्जलाग मात्तुण अण्णस्स भत्तरस्स असमवादा । सेस सुगम ।

वादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरिरपज्जत्ताणमत्तर केवचिर कालादो  
होदि ? ॥ ५३ ॥

सुगम ।

जहण्णेण खुडा भवग्गहण ॥ ५४ ॥

एद पि सुगमं ।

एद खू मी सुगम हे ।

कमसे कम सुद्धमवग्रहणमात्र काल तक उक्त वनस्पतिक्रायिक निर्गोद जीवोंका  
अन्तर हाता हे ॥ ५१ ॥

एद खू मी सुगम हे ।

अधिकस अधिक अससुपाय लफप्रमाण काल तक उक्त वनस्पतिक्रायिक निर्गोद  
जीवोंका अन्तर हाता हे ॥ ५२ ॥

फयोंकि विचक्षित वनस्पतिक्रायस निकलकर अविचक्षित पृथिवीकायादिकोसे  
ही भ्रमण करमेबाधे जीवके असेरपात कोकप्रमाण कालको छोड़कर अन्य प्रमाण  
भन्तर हाता असेमत्र हे । एव सुजाय सुगम हे ।

वादर वनस्पतिक्रायिक प्रम्येकशरीर पर्याप्त जीवोंका अन्तर कितन काल तक  
हाता हे ? ॥ ५३ ॥

एद खू मी सुगम हे ।

कमसे कम सुद्धमवग्रहण काल तक बादर वनस्पतिक्रायिक प्रम्येकशरीर पर्याप्त  
जीवोंका अन्तर होना हे ॥ ५४ ॥

एद खू मी सुगम हे ।



उक्कस्सेण अङ्गाहज्जपोग्गलपरियट्ठ ॥ ५५ ॥

कुदा ? अप्पिद्वयत्तसकाइयपज्जत्त-अपज्जत्ताणमतर मंत्तस्स  
अङ्गाहज्जपोग्गलपरियट्ठितो अहियञ्जतरात्तुत्तमादो ।

तसकाइयत्तसकाइयपज्जत्त-अपज्जत्ताणमतर केवधिर काल्हादो  
ह्येदि ? ॥ ५६ ॥

सुगम ।

जहण्णेण सुद्धाभवग्गहण ॥ ५७ ॥

एव पि सुगम ।

उक्कस्सेण अणतकालमसत्त्वेअपोग्गलपरियट्ठ ॥ ५८ ॥

कुदो ? अप्पिदत्तमक्कप्पट्ठितो विमंत्तुअ अप्पिद्वयत्तसकाइयादिस्स आपत्तिपाए  
असंख्यअदिमागमपोग्गलपरियट्ठानमंतरसप्पियार्थेत्तुत्तमादा ।

अधिकम अधिक अङ्गार्थे पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण वादर वनस्पतिक्रायिक प्रत्येक  
धरि पर्याप्त जीवोंका अन्तर होता है ॥ ५५ ॥

क्योंकि विवक्षित वनस्पतिक्रायिक जीवोंमेंसे निकलकर मविवक्षित विपेय  
आदि जीवोंमें धमन करनेवाले जीवके अङ्गार्थे पुद्गलपरिवर्तोंस अधिक आन्तरकाक  
वही पाया जा सकता ।

असक्रयिक और प्रमक्रयिक पर्याप्त व अपर्याप्त जीवोंका अन्तर कितन काठ  
तक होता है ? ॥ ५६ ॥

एव एव सुगम है ।

कममे कम सुद्गमप्रदह्य काठ तक उक्त असकायादि जीवोंका अन्तर होता है  
॥ ५७ ॥

एव एव यी सुगम है ।

अधिकमे अधिक असंख्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अनन्त काठ तक प्रम  
कायादि उक्त जीवोंका अन्तर होता है ॥ ५८ ॥

क्योंकि विवक्षित असक्रयिक जीवोंमेंसे निकलकर मविवक्षित वनस्पति  
कायादि जीव में जावलीके असंख्यातोंमें मागप्रमाण पुद्गलपरिवर्तोंका अन्तरकाक  
पाया जाता है ।

जोगाचुवादेण पचमणजागि-पचवचिजोगीगमनर केवचि  
फालाणे होति ? ॥ ५० ॥

सुगवं ।

जहण्ण अतोमुहूत्त ॥ ६० ॥

इति । ममशागण शयशागि विविशाग वा मन्त मन्तज्जम्भमेतद्गुह्यमस्तिप  
पुसा मन्तशागमादस्य ज्जम्भमेतद्गुह्यमस्तिप । ममवचिजोगि-जोगीगमनर पचवचि  
शागण च पच पच अन्त पचवचि, मन्तशागण । उच्च उच्चमन्त शिन्त मन्त ?  
ण, शागि ६ इति वा मन्त शिन्तमन्तमन्तमन्त अन्तमन्त ।

उच्चम्भेण अणत्तकालममस्वज्जपागण्णियट्ट ॥ ६१ ॥

मन्तशागणानुस्य कच मन्तशागि शीशेण वचनशागि शीशेण अन्त शिन्त  
वात्त मन्त शागि हे । ॥ ५० ॥

वत्त मन्त मन्त हे ।

इति मन्त मन्त मन्तमन्तमन्त शिन्त मन्त शागि शीशेण वचनशागि शीशेण  
अन्त शागि हे ॥ ६० ॥

इदा ? ममशोगादा ऋषिजोग गंत्य सत्य सम्पुष्कस्ममद्धमच्छिय पुषो अय  
जोगं गन्तुं छन्द वि सम्बन्धिं फल गमिय मशदिपसुप्यत्रिय आवलियाए अमे  
ख अदिमागमेचपोगगलपरियङ्गनामि परियङ्गिय पुषा मणभाग गदम्भ तदुत्तमादो ।  
सेमयचारिमणजोगीणं पचषिजोगीणं च एव च अतरं पन्चेदम्भ, विसमामावादा ।

कायजोगीणमतर केवचिर कालादो होदि ? ॥ ६२ ॥

सुगम ।

जहण्णेण एगसमओ ॥ ६३ ॥

इदा ? अयजोगादा मणजोग ऋषिजोग वा गंत्य एगममयमच्छिय त्रिदिय  
समण सुदे पाषादिदे वा अयजोगं गदस्म एगममयअनरुत्तमादा ।

उत्कस्सेण अतोमुहुत्त ॥ ६४ ॥

इदा ? अयजागादो मणजोग ऋषिजोग च परिवाडीए गतण दोगु वि सम्पु  
ष्कस्मकालमच्छिय पुषा कायजोगमागदस्म अतोमुहुत्तमचनरुत्तमादा ।

क्याकि मणयोगसे बचनयोगमें जाकर वहां मधिक काल तक रहकर पुनः  
काययोगमें जाकर और वहां भी सबसे अधिक काल ध्यतानकरके एकेत्रियोंमें उत्पन्न  
होकर भाषाओंके संसंध्यातय मागप्रमाण पुत्रपपरिवर्तन परिधमण कर पुनः मण  
योगमें भाये हुए जीवके बल प्रमाण मन्तरकाय पाया जाता है ।

शेष बार मणयोगी और पांच बचनयोगी जीवोंका भी इसी प्रकार मन्तर  
प्रकृति करवा चाहिये क्योंकि इस अयहासे उनमें कार्य विशेषता नहीं है ।

काययोगी जीवोंका अन्तर कितन फल तरु होता है ? ॥ ६२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

कमसे कम एक समय तक काययोगी जीवोंका अन्तर होता है ॥ ६३ ॥

क्योंकि काययोगसे मणयोगमें या बचनयोगमें जाकर एक समय रहकर  
दूसरे समयमें मरण करते या पाणके व्याघातित होनेपर पुनः काययोगमें भाव्य हुए  
जीवके एक समयका अल्प मन्तर पाया जाता है ।

काययोगी जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त होता है ॥ ६४ ॥

क्याकि काययोगसे मणयोग और बचनयोगमें मन्तरा जाकर और उन दोनों ही  
योगोंमें उनके सबोत्कृष्ट काल तक रहकर पुनः काययोगमें भाव्य हुए जीवके अन्तर्मुहूर्त  
प्रमाण काययोगका मन्तर प्राप्य होता है ।

- ओरालियकायजोगी-ओरालियमिस्सकायजोगीणमतर केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ६५ ॥

सुगम ।

जहण्णेण एगसमओ ॥ ६६ ॥

बुद्धा ? ओरालियकायजोगी मणआग वधिजाग वा गंतूण एगसमयमच्छिय विदियममए भापादवसण ओरालियकायजोगी गदस्स एगसमयअतरुत्तलंभादा । ओरालिय मिस्सकायजोगीस्स अपअत्तमावेण मणवधिजोगविरहियस्स क्वमंतरस्स एगसमआ ? ण ओरालियमिस्सकायजोगीदो एगविग्गाह करिय कम्मइयजोगम्मि एगसमयमच्छिय विदियसमए ओरालियमिस्स गदस्स एगसमयअतरुत्तलंभादा ।

उवकस्सेण तेत्तीस सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ ६७ ॥

--

औदारिककाययोगी और औदारिकमिधकाययोगी बीचोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ६५ ॥

यह सून सुगम है ।

औदारिककाययोगी और औदारिकमिधकाययोगी बीचोंका अल्पन्त अन्तर एक समय होता है ॥ ६६ ॥

क्योंकि औदारिककाययोगीसे मजयोग या वज्जनयोगमें जाकर एक समय रहकर बृद्धरे समयमें भागका व्याघात होनेसे औदारिककाययोगीमें भाव हुए अर्थात् औदारिक काययोगीका एक समय अन्तर प्राप्त होता है ।

ईश्वर—औदारिकमिधकाययोगी ता अपर्याप्त अवस्थामें होता है अथ कि बीचके मजयोग और वज्जनयोग जाता ही नहीं है अतएव औदारिकमिधकाययोगीका एक समय अन्तर किस प्रकार हो सकता है ?

समाधान—नहीं, हो सकता है क्योंकि औदारिकमिधकाययोगीका एक विग्रह करके कार्मिक योगमें एक समय रहकर बृद्धरे समयमें औदारिकमिधयोगमें भावे हुए बीचके औदारिकमिधकाययोगीका एक समय अन्तर प्राप्त हो जाता है ।

औदारिककाययोगी व औदारिकमिधकाययोगी बीचोंका उत्कृष्ट अन्तर सात्तरेक केतीस सागरोवप्रमाण होता है ॥ ६७ ॥

कुदो ! आराखियकायभोगादो बचारिमज-बचारिबधिभोगेसु परिममिय कस  
करिय तेचीसाठडिदियसु देखेसुबबन्जिय सगडिदिमळिय हो विगगेह कसूम मनुस्सेसु-  
प्यजिय ओराखियमिस्सकायभोगेसु हीहकालमधिय पुणो ओराखियकायभोग मरुत  
बबदि अंतोसुहुचेदि बेदि' समपदि सादिरेयतेचीससागरोबममेरुतलुवसंमादो । एबमोस-  
खियमिस्सकायभोगसु वि अतर वचणं । पबदि अंतोसुहुपुणपुणकोडीए सादिरेयाधि  
तेचीससामरोबमाधि अंतरं होदि, बेरुपदिहो पुणकोडाउअमणुस्सेसुप्यजिय ओराखि  
मिस्सकायभोगसु आदि करिय सन्बसुं पन्बचीओ समाधिय ओराखियकायभोगेमेठरिब  
पुणकोडि देखण गमिय तेचीसाठडिदिदेवेसुप्यजिय पुणो विगगेह कसु ओराखि  
मिस्सकायभोग गदसु तहुवसंमादो ।

वेउज्वियकायजोगीणमतर केवचिर कालादो होदि ? ॥ ६८ ॥

सुगम ।

अर्थोकि औदारिककायभोगसे आर ममयोगी व आर बचनयोगीमें परिममित  
हो मरण कर तेतीस सागरोपमप्रमाण आयुस्थितिवाळे देखोंमें उत्पन्न होकर वहाँ मपनी  
स्थितिप्रमाण रहकर पुनः हो विग्रह करके मनुष्योंमें उत्पन्न हा औदारिकमिधकाय-  
भोग सहित हीरे काल रहकर, पुनः औदारिककायभोगमें आयु रूप जीवक मी अन्त  
सुद्धी व हो समघोंस अधिक तेतीस सागरोपमप्रमाण औदारिककायभोगका अन्त  
मायु हा जाता है ।

इसी प्रकार औदारिकमिधकायभोगका मी अन्त कहना चाहिये । कबल  
विशयता यह है कि औदारिकमिधकायभोगका अन्त अन्तसुद्धी कम पूर्वकोदिसे अधिक  
तेतीस सागरोपमप्रमाण होता है क्योंकि मारपी जीवोंमेंसे निकककर, पूर्वकदि  
आयुवाळ मनुष्योंमें उत्पन्न हा औदारिकमिधकायभोगका मारम कर कमसे कम  
काळमें पर्याप्तियोंको पूर्य करके औदारिककायभोगके द्वारा औदारिकमिधकाय  
भोगका अन्त कर कुछ वम पूर्वकोडि काल अतीत करके तेतीस सागरोपमकी आयु  
वाळे देखोंमें उत्पन्न हो पुनः विग्रह करके औदारिकमिधकायभोगमें आयेवाळे जीवके  
सुखे काळप्रमाण अन्त पाया जाता है ।

बैश्विककाययोगी जीवोंअ अन्त कितने काल तक होता है ? ॥ ६८ ॥

बह सुग सुगम है ।

जहण्णेण एगममओ ॥ ६९ ॥

वेतम्बियकायजोगादो मणजोगं बच्चिज्जागं वा गत्थं तत्थ एगसमयमच्छिय  
विदियसमए भाषाद्वसेण वेतम्बियकायजोगं गदस्स तदुबलमादो ।

उक्कस्सेण अणतकालमसंस्सेज्जपोग्गलपरियट्ट ॥ ७० ॥

अतरस्स पाहणियादो एगबयण णडुमयत्तं च पुन्नेदं । सेस सुगम ।

वेतम्बियमिस्सकायजोगीणमतर केवचिर कालादो होदि ? ॥ ७१ ॥  
सुगमं ।

जहण्णेण दसवाससहस्साणि सादिरेयाणि ॥ ७२ ॥

हुदो ? तिरिक्खेहिंठो मणुस्सेहिंठा वा इवेसु णेरइएसु वा उप्पन्निव दीहक्कालेष  
छप्पन्नीआ' समाणिय वेतम्बियकायजोगेण अंतरिय देसुणदसवाममहस्साणि अच्छिय  
तिरिक्खेसु मणुस्सेसु वा उप्पन्निव सध्वजहण्णण कालेष पुणो आगतुण वेतम्बियमिस्स

बैक्रियिककाययोगियोंका ब्रषन्य अन्तर एक समय है ॥ ६९ ॥

पर्योकि बैक्रियिककाययोगस समयो या यजनयागमें जाकर वहाँ एक समय  
तक रहकर दूसरे समयमें उच्च योगका प्र्याप्त होजानके कारण बैक्रियिककाययोगमें  
जानेवाले जीवके एक समयममात्र बैक्रियिककाययोगका अन्तर पाया जाता है ।

बैक्रियिककाययोगियोंका उत्कृष्ट अन्तर असंग्र्यात् पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अनन्त  
काल है ॥ ७० ॥

सुखमें जो अनन्तकाल व असंप्र्यात्पुद्गलपरिवर्तन हम दोनों शास्त्रोंमें एकवचन  
भीर मनुस्मृतिकका उपभाग किया गया है वह अन्तरकी प्रथमता बतलानके लिए  
है और इसलिये उपयुक्त ही है । शेष सुचार्य सुगम है ।

बैक्रियिकमिभ्रकाययोगियोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ७१ ॥

यह सुख सुगम है ।

बैक्रियिकमिभ्रकाययोगियोंका ब्रषन्य अन्तर कुछ अधिक द्रष्टु हठार वर्ष होता  
है ॥ ७२ ॥

पर्योकि तिरिक्खेसे अथवा मनुस्मृतिसे देखें या मारकियोंमें उरयत्त होकर हीर्य  
कास डारा उच्च पर्यासिया पूरी कर बैक्रियिककाययोगक द्वारा बैक्रियिकमिभ्रकाययोगका  
अन्तर करके कुछ कम दया हजार वर्ष तक वहीं रहकर तिरिक्खे अथवा मनुस्मृतिसे अथवा  
हो लक्षके कम कालमें पुनः द्रष्टु या मारक गतिमें जाकर बैक्रियिकमिभ्रयोगको प्राप्त

गदस्स साधिरयदसपस्ससइस्समचंतकवत्तमादो । कपमेदेसिं साधिरयत्तं ? ज, वेउभियमि  
स्सहादो तिरीकत्त-मपुस्सप जचार्णं गम्मजार्णं अइष्णाठवस्स बहुपुवत्तमादो ।

उत्कस्सेण अणंतकालमसस्वेज्जपोम्मालपरियट्ट ॥ ७३ ॥

कुदो ! वेउभियमिस्सक्यपभागादो वेउभियक्यपभोगं गत्तुंतरिय असउत्त-  
पोम्मालपरियट्टणाणि परियट्टिय वेउभियमिस्स गदस्स तदुवल्लमादो ।

आहारकायजोगि—आहारमिस्सकायजोगीणमंतर केवचिरं  
कालादो होदि ? ॥ ७४ ॥

सुगम ।

जहण्णेण अतोमुट्ट ॥ ७५ ॥

कुदो ! आहारक्यपयोगादा अण्यभोगं गत्तुं सम्बलहुंमंतोसुट्टमच्छिय पुषा

हृदय जीवके सातिरेक दया हकार वर्षममाद्य वैश्वियकमिभकाययोगका अघन्य अन्तर  
पाया जाता है ।

सुका—इम दया हकार वर्षके सातिरेकता कैस है ?

समाधान—वहीं क्योंकि वैश्वियकमिभयोगके कासकी अपसा तिपक व  
मनुष्य पर्याप्त गर्मज जीवोंकी अघन्य आयु बहुत पायी जाती है ।

वैश्वियकमिभकाययोगियोंका उत्कृष्ट अन्तर अमरुप्यात पुट्टलपरिवर्तनप्रमाण  
अनन्त काल है ॥ ७३ ॥

क्योंकि, वैश्वियकमिभकाययोगस वैश्वियककाययोगमें आकर वैश्वियकमिभ  
काययोगका अन्तर मारैय कर अमरुप्यात पुट्टलपरिवर्तन परिष्कार कर पुनः वैश्वियक  
मिभकाययोगमें आनेवासे जीवक सुश्रेष्ठ ममाज अन्तर पाया जाता है ।

आहारककाययोगी और आहारकमिभकाययोगी जीवोंका अन्तर किमन काल  
तक हाता है ? ॥ ७४ ॥

बह स्य सुगम है ।

आहारकक्ययोगी और आहारकमिभकाययोगी जीवोंका अघन्य अन्तर अन्त  
सुहृत हाता है ॥ ७५ ॥

क्योंकि, आहारककाययोगस अघ्न्य भागका आकर, रावस कम अन्तर्मुहूर्त रहकर

आहारकायजोगं गदस्स अतामुहुत्तवत्तमादो । एगसमओ क्खिण्ण लउमदे । ण,  
आहारकायजागस्स बायादामावादो । ण्णमाहारमिम्मकायजोगस्स वि वचन्मं । मरि  
आहारमरीरसुहाविय सुत्तवहण्णञ्ज क्खलण पुणा वि उट्ठामेत्तस्स पम्मममए अतरपरिममची  
कयय्या ।

उफस्मेण अद्धपोग्गलपरियट्ट देस्सूण ॥ ७६ ॥

हुदा ! अणादियमिच्छादिद्विस्स अद्धपोग्गलपरियट्टादिममए उवत्तमसम्मत्त सुत्तमं  
च लुगञ्च घत्तण अंसामुहुत्तमच्छिय (१) अप्पमचो होदुअ (२) आहारमरीर वविय  
(३) पट्टिमग्गा हादूण (४) आहारमरीरसुहाविय अतोमुहुत्तमच्छिय (५) आहारकाय  
जागी हादूण आदिं करिय एगममयमच्छिय क्खलं फल्लम अतरिय उवत्तुपोग्गलपरियट्ट  
मविय अतोमुहुत्तमम समा अद्धमत्त करिय (६) अतोमुहुत्तमच्छिय (७) अब्बमावं

पुनः आहारकाययोगको प्राप्त हुए जीवके आहारकाययोगका भस्तमुहुत्तप्रमाण भस्तर  
पाया जाता है ।

प्रश्ना — आहारकाययोगका एक समयमात्र भस्तर क्यों नहीं प्राप्त हो सकता ?

समाधान — नहीं हो सकता क्योंकि आहारकाययोगका व्यापार नहीं हो  
सकता ।

इसी प्रकार आहारमिथकाययोगका भस्तर भी कदा पाहिये । केवल विशेषता  
यह है कि आहारकारीरको उत्पन्न करके सबसे कम काममें पुनः आहारकारीरको  
उत्पन्नके प्रथम समयमें भस्तरकी समाप्ति करवना चाहिये ।

आहारकाययोगी भार आहारमिथकाययोगी बीबींका उरट्टए अन्तर कुछ  
कम अर्धपुद्गलपरिवर्तनप्रमाण हाता है ॥ ७६ ॥

क्योंकि एक भवादि मिथ्यादधि जीवने अधपुद्गलपरिवर्तनप्रमाण संसारद्वेष  
रहनाक भादि समयमें अप्पामसम्पकथ भीर संबम इम कामोंका एक साथ प्रहम विषा  
भीर भस्तमुहुत्तं रहकर (१) अप्पमत्त हाकर (२) आहारकारीरका वय करके (३) प्रतिमत्त  
अयात् अप्पमत्तमे क्कण हा अप्पमत्त हाकर (४) आहारकारीरका उत्पन्न करके भस्तमुहुत्त  
रहा (५) भीर आहारकाययोगी हाकर उमका प्रारंभ करके व एक समय रहकर मर  
गया । इन प्रकार आहारकाययोगका भस्तर प्राप्त हुआ । पद्यात्त यही जीव अयाधपुद्गल  
परिपलम भ्रमण करके सत्तुम्भक भस्तमुहुत्तमात्र प्राप्त करनेपर भस्तरकाम समाप्त कर  
अयात् पुनः आहारकारीर उत्पन्न कर (६) भस्तमुहुत्त रहकर (७) अर्धघणमावका प्राप्त



गयस्म अहाक्रमेण अहृदि सचिदि अंचोमुहृचेदि ऊमअद्वयोगलपरियहमेचतकवलमादा ।  
कम्मद्वयकायजोगीणमतरं केवचिर कालादो होदि ? ॥ ७७ ॥  
सुगमं ।

जहण्णेण खुदाभवग्गहण तिसमऊण ॥ ७८ ॥

तिणि विग्गे कळ्ळ सुदामवग्गहणमि उप्पविज्जय पुला विग्गं पाउण  
विग्गयस्म तिममऊणसुदामवग्गहणमेचतकवलमादा ।

उक्खस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असखेज्जासखेज्जाओ  
ओमपिणि-उस्मपिणीओ ॥ ७९ ॥

कुदो ? कम्मद्वयकायजोगादो आरासियमिस्स बेउअियमिस्स वा गंतुण असखेज्जा-  
मसखेज्जाओपिणी-उस्सपिणीपमानमंगुलस्स अमंखेज्जदिभागमेचकालमच्छिय विग्गं

दोगया । दस जीवक पचाक्रम माड या सात भयान् आहारककाययोगका माड और  
आहारकमिधकाययोगका सात मत्तमुहृत्तसे कम मर्यपुत्रकपरिकर्मात्र मत्तरकाळ पाया  
जाता है ।

कामिककाययागी जीवोंका अन्तर किञ्चन काल तक हाता है ? ॥ ७७ ॥

यह सून सुगम है ।

कामिककाययागियोंका अपन्य अन्तर तीन समय कम सुदमवग्गहणमात्र हाता  
है ॥ ७८ ॥

क्योंकि तीन विग्रह करके सुदमवग्गहणमात्र जीवोंमें उत्पन्न होपुनः विग्रह  
करके विज्जमेघाळे जीवके तीन समय कम सुदमवग्गहणमात्र कामिककाययोगका  
अपन्य मत्तर प्राप्त होता है ।

कामिककाययोगियोंका उत्कृष्ट मन्तर अंगुलक अमंखेज्जातर्णे भागप्रमात्य अंत  
म्यातामंमपात् अमपिणी-उस्मपिणी काल तक हाता है ॥ ७९ ॥

क्योंकि कामिककाययागसे औदारिकमिध मत्तया पैकिपिकमिध काययोगमें  
आकर मर्यक्यातासंख्यात् मयसर्पिणी उत्सपिणीप्रमाण अंगुलके मर्यक्यातर्णे भागमात्र  
काम तक रहकर पुनः विग्रहगतिका प्राप्त हुए जीवके कामिककाययोगका सुखात् मत्तर

गरस्स तदुत्तमादो ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदाणमतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ८० ॥

सुगम ।

जहण्णेण सुद्धाभवग्गहण ॥ ८१ ॥

सुगम ।

उत्तस्सेण अणतकालमसत्त्वेज्जपोग्गलपरियट्ट ॥ ८२ ॥

कृदा ? इत्थिवेदादा विग्गयस्स पुरिम-गवुसयवेदेसु चैव ममतस्स आबलियाण  
अमस्सज्जदिभागमेत्तपोग्गलपरियट्टाणमतरं सत्त्वेज्जुत्तमादा ।

पुरिसवेदाणमतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ८३ ॥

सुगम ।

जहण्णेण एगसमओ ॥ ८४ ॥

कृदो ? पुरिसवेदेसुवममत्तिं चटिय अवगदददो होइण एगममयमतरिय

काल पाया जाता है ।

वेदमार्गानुसार स्त्रीवेदी श्रीबौद्ध अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ८० ॥

यह सब सुगम है ।

स्त्रीवेदी श्रीबौद्ध अपन्य अन्तर सुद्धाभवग्रहण काल होता है ॥ ८१ ॥

यह सब सुगम है ।

स्त्रीवेदी श्रीबौद्ध उत्कृष्ट अन्तर असंफयात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अनन्त काल  
है ॥ ८२ ॥

क्योंकि स्त्रीवेदस निष्कलकर पुनःपेव वा मर्षुसकषेधमं ही-धमण करतेवामे  
श्रीबौद्धे भाषणीके असत्त्वात्तये भागप्रमाण पुद्गलपरिवर्तनकय श्रीबौद्धा अन्तरकाल  
मात्र हो जाता है ।

पुद्गलवेदियोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ८३ ॥

यह सब सुगम है ।

पुद्गलवेदियोंका अपन्य अन्तर एक समय होता है ॥ ८४ ॥

क्योंकि पुद्गलवेद सहित उपशमभेदीका बहकर अपगतबही हो एक समय तक

विदियसमए क्कलं क्कळ्ळ पुरिसवेदेसुप्पन्वस्स एगसमयमेत्तत्तल्लमादो ।

उत्कस्सेण अणत्तकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्ठ ॥ ८५ ॥

सुगमं ।

णवुंसयवेदानमत्तर केवधिर कालादो होदि ? ॥ ८६ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अतोमुट्ठत्त ॥ ८७ ॥

सुदामवग्गहण किप्प सम्भे ? )अ, ) अपज्जत्तएसु सुदामवग्गहणमेत्ता उट्ठिदिएसु  
णवुंसयवेदे मोत्तए इत्थि पुरिसवेदानमणुवल्लमादो, पज्जत्तएसु नि भंतोमुट्ठत्तं मात्तए  
सुदामवग्गहणस्स अणुवल्लमादो ।

उत्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्त ॥ ८८ ॥

इदो ? णवुंसयवेदादा विग्गयस्स इत्थि-पुरिसवेदेसु एव दिवंतस्स सागरोवम

पुरुषवेदका अन्तर बरके वृत्ते समयमें मरत्य कर पुरुषवेदी जीर्णोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवके  
पुरुषवेदका एक समयमात्र अन्तर पाया जाता है ।

पुरुषवेदियोंका उत्कट अन्तर अमंस्पात पुरुषगलपरिवर्तनप्रमाण अनन्त काल  
है ॥ ८५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

नपुंसकवेदियोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ८६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

नपुंसकवेदियोंका अधन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त होता है ॥ ८७ ॥

शब्द—नपुंसकवेदी जीर्णोंका अधन्य अन्तर क्षुद्रमवग्रहणप्रमाण क्यों नहीं प्राप्त  
हो सकता ?

समाधान—नहीं हो सकता क्योंकि क्षुद्रमवग्रहणप्रमाण धारुणात्से अपवात्तक  
जीर्णोंमें नपुंसकवेदके छोड़ करै व पुरुषवेद नहीं पाया जाता और पर्याप्तकोंमें अन्त  
सुहर्तक सिधाय क्षुद्रमवग्रहणप्रमाण काळ नहीं पाया जाता ।

नपुंसकवेदियोंका उत्कट अन्तर सागरापमज्ञतपृषक्त्वं इत्यादि ॥ ८८ ॥

क्योंकि नपुंसकवदने निवृत्तकर करी और पुन्य वेदोंमें ही प्रमत्त करनेवाले

सदपुषचादा उवरि तत्याधङ्गाणामावादा ।

अवगदवेदाणमतर केवचिर कालादो होदि ? ॥ ८९ ॥

मुगमं ।

उवमम पहुञ्ज जहण्णेण अतोमुहुत्त ॥ ९० ॥

हुदो ? उवसमसहीदा ओपरिय सम्भजहण्णमतामुहुत्त सवेदी हादूणतरिय पुणो उवसमसहिं चटिय अवेदत्त गयस्त तदुबलमादा ।

उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्ट देसूण ॥ ९१ ॥

हुदो ? अणादिपमिच्छाशङ्किस्स तिग्णि वि करणाणि काऊण अद्धपाग्गलपरियट्ट स्सादिममण मम्मत्त संसम च जुगत्त घण्ण अंतोमुहुत्तमच्छिय उवसमसेहिं चटिय अवगदषदो हादूण हेड्ढा मायरिय सवेदो हादूण अंतरिय उवहुपोग्गलपरियट्ट ममिय पुणा अतोमुहुत्तचाससेस ससारे उवममसहिं चटिय अवगदवेदा होदूण अतर समाणिय पुणे

जीवकं सागतोपमशतपृथक्त्वस ऊपर वहां रहना संभव नहीं है ।

अपगतवेदी जीवोक्क अन्तर कित्तन काल तक हाता है ? ॥ ८९ ॥

यह सब मुगम है ।

उपशमकी अपथा अपगतवेदी जीवोक्का अपन्य अन्तर अन्तर्मुहुत्तमात्र हाता है ॥ ९० ॥

क्योंकि उपशमधर्णीस उत्तरकर सपम कम अन्तर्मुहुत्तमात्र संवेदी हाकर अपगतवेदित्यका अन्तर कर पुनः उपशमधर्णीको चङ्ककर अपगतवेदमात्रका प्राप्त जानबास जीवके अपगतवेदित्यका अन्तर्मुहुत्तमात्र अन्तर पाया जाता है ।

उपशमकी अपथा अपगतवेदी जीवोक्क अन्तर कुछ कम अर्धपुट्टपरि वतनप्रमाय होता है ॥ ९१ ॥

क्योंकि किसी अनादिमिध्याचष्टि जीवन तीनों करण करक अपपुट्टपरिपर्यक्त भादि समयमें सम्भवत्त भीर संयमका एक पाथ प्रदय किया बार अन्तर्मुहुत्त रहकर उपशमधर्णीका चङ्ककर अपगतवेदी हागया । चरमि फिर जीव उत्तरकर सवरी हा अपगतवेदका अन्तर प्रारंभ किया भीर उपाधपुट्टपरिवनप्रमाण धमय कर पुनः सेसारक अन्तर्मुहुत्तमात्र हाय रहनपर उपशमधर्णीका चङ्ककर अपगतवेदी हो अन्तरका सामान्य किया । पद्यान् फिर जीव उत्तरकर अपगतवेदीको चङ्ककर अपगतवेदमात्र

तद्यो आयरिय खडगसेदिं षडिय अर्धमात्रं गयस्म तद्बलमादो ।

स्ववर्गं पट्टञ्च णत्थि अतर गिरतर ॥ ९२ ॥

इहा ! खडगाणमवगदवेदार्यं पुण्यो वेदपरिजामाणुप्पचीहा ।

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई भायकसाई लोमकसाई

णमतर केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ९३ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण एगसमओ ॥ ९४ ॥

इहो ! कोषण अरिष्ठय माणादिगदविदियसमए वापाइम, कासं क्वत्तु  
वरइएसु उप्पाइण वा, आगदकोषादयस्स एगसमयअंतउत्तमादा । एव एव ससकमा-  
याणामेगसमयअंतरपरुक्कवा क्वयम्भा । अवरि वाधादे अंतरस्स एगसमओ अरिष, वाधादे  
कासस्सेव उदयईममादो । किंतु मरजेण एगसमओ वत्तणा, मजुस्स-तिरिक्क-इवेसुप्पण-  
पडमसमए माण-माया-साहार्यं नियमेणुइपदंसमादो ।

प्राप्त किया । ऐसे जीवके अपगतवदित्वका कुछ कम अर्धपुद्गलपरिवर्तमान अंतर  
काल प्राप्त हो जाता है ।

सपकणी अपेक्षा अपगतवदी जीवोंका अन्तर नहीं होता, निरन्तर है ॥ ९२ ॥

क्योंकि सपकमेणी अइमेवाडोके एक बार अपगतवदी हाजामेपर पुनः केद  
परिजामकी उत्पत्ति नहीं होती ।

क्यापमार्गानुसार कोषकपायी, मानकपायी, मायाकपायी और लोमकपायी  
जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ९३ ॥

वह धन सुगम है ।

कोषादि चार कपायी जीवोंका समन्य अन्तर एक समय होता है ॥ ९४ ॥

क्योंकि कोषकपायमें रहकर मानादिकपायमें जानेके दूसरे ही समयमें  
ध्यायातसे अथवा मरकर मारकी जीवोंमें उत्पत्ति होजानेसे कोषोद्य संचित जीवके  
कोषकपायका एक समयमान अन्तरकाल प्राप्त हो जाता है । इसी प्रकार शय कपायोंके  
भी अन्तरकी प्रकल्पना करना चाहिये । केवल विशेषता यह है कि मानादि कपायोंके  
ध्यायातके द्वारा एक समयप्रमाण अन्तरकाल नहीं होता क्योंकि ध्यायात होनेपर  
कोषका ही उद्भव देखा जाता है । किंतु मरनेके द्वारा मानादिकपायोंका एक समय  
प्रमाण अन्तर कहना चाहिये क्योंकि मनुष्य तिरिक्क व देवोंमें उत्पन्न हुए जीवके प्रथम  
समयमें क्रमशः मान माया व लोमका नियमसे उद्भव देखा जाता है ।

उक्कस्सेण अतोमुहुत्त ॥ ९५ ॥

अपिदकसायादो अणपिदकसारं गंतुशुक्कस्समतोमुहुत्तमच्छिय अपिदकसाय  
मामदस्स तदुपलमादो ।

अकसाई अवगदवेदाण मंगो ॥ ९६ ॥

हुदो ? ( उचसम पडुच ) अहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कस्संग उचहुपोग्गळपरिवहं;  
सुवग पडुच मत्थि अतरमिन्धेदेहि त्तो मेदामाबादो ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणी-सुदअण्णाणीणमत्तरं केवचिर  
कालादो होदि ? ॥ ९७ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अतोमुहुत्त ॥ ९८ ॥

हुदो ? मदि-सुदअण्णाणेहिंत्तो सम्मत्त धेत्तुम सण्णालेसु अहण्णकालमंतरिय पुणे

क्रोधादि चार कपायी जीबोंक अत्तुत्त अन्तर अन्तर्मुहूर्तमात्र है ॥ ९५ ॥

क्योंकि बिबक्षित कपायसे अधिकक्षित कपायमें जाकर अधिकसे अधिक अन्त  
र्मुहूर्तप्रमाण रहकर बिबक्षित कपायमें भाये हुए जीबक उस कपायक अन्तर्मुहूर्तप्रमाण  
अन्तरकास प्राप्त होता है ।

अकपायी जीबोंक अन्तर अपगतवेदी जीबोंके समान होता है ॥ ९६ ॥

क्योंकि ( उपदामकी मयेसा ) अघम्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्तुत्त अन्तर  
उपार्थपुत्रपरिवत्त अकपायी जीबोंके भी जाता है । उपककी मयेसा अन्तर नहीं होता  
बिरन्तर है । इस प्रकार अकपायी और अपगतवेदी जीबोंकी अन्तर-प्रकपयामें कोई  
भेद नहीं है ।

ज्ञानमार्गानुसार मतिअज्ञानी और भुतअज्ञानी जीबोंका अन्तर कितने फल  
तक होता है ? ॥ ९७ ॥

यह सब सुगम है ।

मतिअज्ञानी और भुताज्ञानी जीबोंका अपन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्तप्रमाण होता  
है ॥ ९८ ॥

क्योंकि मतिअज्ञान व भुतअज्ञानसे सम्यक्त्व ग्रहणकर मतिज्ञान व भुत  
ज्ञानमें जाकर क्रमसे कम कायका अन्तर रूकर पुनः मतिअज्ञान व भुतअज्ञान भावमें गये

मदि-सुदञ्ज्याणी गदस्व तदुचलमादा ।

उचकस्सेण वेञावट्टिसागरोवमाणि ॥ ९९ ॥

कुदा ! मदि-सुदञ्ज्याणिस्व सम्मत्तं घत्तूण छावट्टिमागरावमाणि देमूणादि  
सञ्ज्याण्येसु अतरिय पुणो मम्मामिच्छत्तं गत्तूण मिस्सवाणदि अतरिय पुणो सम्मत्तं घत्तूण  
छावट्टिमागरोवमाणि दसुणाणि भमिय मिच्छत्तं गदस्व तदुचलमादो । कुदो दसुणत्तं ?  
उवसमसम्मत्तकालादो बञ्छावट्टिअम्मत्तरमिच्छत्तकालस्स बहुनुवर्त्तमादो । सम्मामिच्छा  
इत्थिमाण मदि-सुदञ्ज्याणमिदि कुदु क्वमाप्रिया सम्मामिच्छत्तंण प्पत्तरावेति । तण्ण  
पट्टे, सम्मामिच्छत्तमायात्तणात्तस्स सम्मामिच्छत्तं व 'पत्तञ्ज्यत्तरस्स मदि सुद  
अण्णमात्तचनिरोहादो ।

विभगणाणीणमतर केवचिर कालादो होदि ? ॥ १०० ॥

इए जीयके अन्तर्भूतप्रमाण अन्तरकाल पाया जाता है ।

मतिअज्ञानी और भुताज्ञानी जीवोंका उत्कृष्ट अन्तर दा छपासठ सागरापम  
अर्थात् एक सौ बत्तीस सागरोपम काल होता है ॥ ९९ ॥

क्योंकि किसी मति युतमजामी जीवके सम्पत्त्व ग्रहण करके कुछ कम  
छपासठ सागरोपम कालप्रमाण सम्पत्त्वज्ञानका अन्तर द्वाकर पुनः सम्पत्त्विध्यात्वका  
आकर मिथ्याज्ञानका अन्तर द्वाकर पुनः सम्पत्त्व ग्रहण करके कुछ कम छपासठ साग-  
रोपमप्रमाण परिश्रमण कर मिथ्यात्वको जायसे दो छपासठ सागरोपमप्रमाण मति  
युत मजामाका अन्तरकाल पाया जाता है ।

सका—दो छपासठ सागरोपमोंम जा कुछ कम काल बटसाया है वह क्यों ?

ममाज्ञान—क्योंकि उपग्रहसम्पत्त्वकाकालसे दो छपासठ सागरोपमोंके मीतर  
मिथ्यात्वका काल अधिक पाया जाता है । ( देखो पु ५, सू १ अन्तरानुगम सूत्र ५ की  
श्रीका ) ।

सम्पत्त्विध्याद्विज्ञानका मति युत मजाम रूप मानकर कितने ही आचार्य  
उपर्युक्त अन्तर प्रकल्पनामें सम्पत्त्विध्यात्वका अन्तर नहीं दिखाते । पर वह बाल घडित  
नहीं होती क्योंकि सम्पत्त्विध्यात्वमात्रके अर्थात् हुआ ज्ञान सम्पत्त्विध्यात्वके समान  
एक अल्प आठिका बन जाता है अतः उस ज्ञानका मति युत मजाम रूप माननेमें बिरोध  
भाता है ।

निमग्नानिर्पोक्ता अन्तर कितने काल होता है ? ॥ १०० ॥

१ अज्ञानी तन्मादिच्छत्तं वत्तं अज्ञानादिच्छत्तं वत्तं इति पाठः ।

सुगम ।

जहण्णेण अतोमुहुत्त ॥ १०१ ॥

कुदो ? देवस्स भेरइयस्स वा विमंगणाणस्स दिट्ठमंगस्स मम्मच पेषूण ओहिणाणेण सुअअहण्णमत्तोमुहुत्तमाच्छिय विमंगणाणं मिच्छत्त च जुगवं पडिबण्णस्स अहण्णतरुवल्लमादो ।

उक्कस्सेण अणतकालमसखेज्जपोगगलपरियट्ठ ॥ १०२ ॥

कुदो ? विमंगणाणादो मदिअण्णाभं गत्तणतरिय आबलियाए मअखेच्चदिभाग मेचपोगगलपरियट्ठ परियट्ठिअ विमंगणाण गदस्स तदुवल्लमादो ।

आभिणिवोहिय-सुद-ओहि-मणपज्जवणाणीणमत्तर केवधिंरं कालादो होदि ? ॥ १०३ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अतोमुहुत्त ॥ १०४ ॥

यह एव सुगम है ।

विमंगणानियोक्य अधन्य अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त है ॥ १०१ ॥

क्योंकि एक विमंगणानी दूध या मारकी सीबके समार्ग पाकर सम्यक्त्व ग्रहण कर अविज्ञान सहित कमसे कम अन्तर्मुहूर्त रहकर विमंगणाम भीर मिच्छपागबको एक साथ प्राप्त होमपर विमंगणानका अन्तर्मुहूर्तमात्र अधम्य अन्तर प्राप्त होना ह ।

विमंगणानियोक्य उन्कट अन्तर अमंख्यात्त पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अनन्त काल है ॥ १०२ ॥

क्योंकि विमंगणानस मतिप्रदानको जाकर अन्तर प्राग्म कर आसकीके भले क्यातये भागमात्र पुद्गलपरिवर्तन परिक्रमण कर विमंगणानको प्राप्त होनेबाम जीबके विमंगणानका सूबोक्त काल पाया जाता है ।

आमिनिबोधिकणानी, अउमानी, अविमानी और मनःपयपणानी सीबोका अन्तर कितने काल होता है ? ॥ १०३ ॥

यह एव सुगम है ।

आमिनिबाधिक आदि उक्त चार ज्ञानियोक्य अधन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त होता है ॥ १०४ ॥



कुदो ? मदि-सुद भोहिषाणेषु द्विददेनस्म गेरदपस्स वा मिच्छत्तं गत्तुष मदि सुद-विमगत्रप्याणहि अंतरीय पुणो मदि सुद आहिषाणमागदस्म अहण्णेणताहुत्तत्तुरु-वसंमादा । एषं मणपन्त्रवणावस्स नि । वधरि मणपन्त्रवणाणी सवदा तन्नाण विषामिय अंतोहुत्तमच्छिय तस्सेव पावस्स पुणा आणेदव्वा ।

उत्कस्सेण अद्दपोग्गलपरियट्ट देसूण ॥ १०५ ॥

कुदो ? अणादियमिच्छाद्विस्स अद्दपोग्गलपरियट्टस्म पढमसमप उवसमसम्मच पडिबन्जिय तस्सेव देव-वेरदपसु विरोषामाषादा मदि सुद भोहिषाणाणि उप्पाइय छाव सियाओ उवसमसम्मचद्दा अरिय पि सासणं गंतुषतरिय' पुणा मिच्छत्त अद्दपोग्गल परियट्टं ममिय अंतोहुत्तचारमेवे समारे मम्मत्तं पडिबन्जिय मदि-सुदवाजावमतरं ममा

क्योंकि मति भूत और अक्षयि ज्ञानोंमें स्थित किसी देव या भारती जीवके सिध्दात्त्वको जानकर मति भवान् भूतज्ञान व विमगज्ञानक द्वारा अन्तर करके पुनः मतिज्ञान भूतज्ञान व अक्षयिज्ञानमें आनेपर उक्त ज्ञानोंका अन्तर्भूतप्रमाण अथवा अन्तर प्राप्त होता है ।

इसी प्रकार मनःपर्यवहारीका भी अथवा अन्तर अन्तर्भूतप्रमाण होता है । केवल विशेषता यह है कि मन पर्यवहारी संबन्ध जीव मनःपर्यवहारीको मष्ट करके अन्तर्भूतप्रमाण तक उस ज्ञानके विना रहकर फिर उसी ज्ञानमें साक्षात् जाना चाहिये ।

आभिनिसोषिक आदि चार ज्ञानोंका उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम अर्धपुत्रपरि-परिवर्तनप्रमाण होता है ॥ १५ ॥

क्योंकि किसी जन्तुविमिध्वाद्यदि जीवम अपने अर्धपुत्रपरि-परिवर्तनप्रमाण (संसार शेष रहनेके) प्रथम समयमें उपशमसम्यक्त्व ग्रहण किया और उसी सब स्थानमें मतिज्ञान भूतज्ञान व अक्षयिज्ञान उत्पन्न किये, क्योंकि देव और भारती जीवोंमें उक्त अक्षय्यमें इनके उत्पन्न होनेमें कोई बिरोध नहीं जाता । फिर उपशमसम्यक्त्वके कारणमें उक्त अक्षय्यी शेष रहनेपर वह जीव साक्षात्मनुष्यत्वानमें गया और इस प्रकार मतिज्ञान आदि तीनों ज्ञानोंका अन्तर प्राप्त हो गया । फिर उसी जीवने सिध्दात्त्व सहित अर्धपुत्रपरि-परिवर्तनप्रमाण अमल कर संसारके अन्तर्भूतप्रमाण शेष रहनेपर सम्यक्त्वको ग्रहण कर लिया और इस प्रकार मति-भूत ज्ञानोंका अन्तर समाप्त किया ।

१ वेदिवान् मदे विं वाणी अवाणी ? गोवया । वाणी वि अवाणी वि । ३ वाणी ठे विवया इवानी । ४ वा— अविमिनीवेवानी उपवाणी । ५ अवाणी ठे वि विवया इववाणी । ६ वा— वदवाणी पुन अवाणी व । अवाणी < २. वेदिवस्तु को वाणी वद अवाणी । अन्तर उक्तान्न वदव्य दत्तात्पत्रवत्तं को वाणी अवाणी । अवाणी वीणा । अवाणी वाणी । वदवया < ५

गिय पुणो अंतोसुद्धुच गत्तण ओहिजाणसुप्पाइय त्तयेव तदतर पि समापिय अंतोसुद्धुचेण केवलणापसुप्पाइय अबधमार्भ गइस्स उवहुपागगलपरियइत्तइवलमादा ।

एव मणपञ्जवणाणस्स त्ति । पत्ररि उवसमसम्मत्तम सह मणपञ्जवणाणस्स विराहादो पडमसम्मत्तं बालाविय सुद्धुत्तपुच्च गदे मणपञ्जवणाणमादीण अंतरस्स अबसाणे च उपाएदइ ।

केवलणाणीणमतर केवचिर कालादो होदि ? ॥ १०६ ॥

सुगम ।

णत्थि अतर गिरतर ॥ १०७ ॥

हुदा ! केवलणाणे मसुप्पप्णे पुणा तस्स विष्णासामावादो ।

सजमाणुवादेण सजद-सामाहयछेदोवट्ठावणसुद्धिसजद-परिहार सुद्धिसजद-सजदासजदाणमतर केवचिर कालादो होदि ? ॥ १०८ ॥

सुगम ।

पश्चात् अन्तमुद्दान काळ व्यतीत करके उसने अथविज्ञान उत्पन्न कर लिया और उसी समय अथविज्ञानका अन्तर समाप्त किया । फिर उसमें अन्तमुद्दानकासे केवलज्ञान उत्पन्न कर अथपद्धत्याय प्राप्त कर लिया । ऐसे जीवक मतिमान अन्तज्ञान और अथविज्ञानका उपायपुद्गलपरिवर्तनप्रमाण उत्कृष्ट अन्तर पाया जाता है ।

इसी प्रकार मनापर्ययज्ञानका भी उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम धर्मपुद्गलपरिवर्तन प्रमाण होता है । केवल विशेषता यह है कि उपशमसम्पत्त्यन मनापर्ययज्ञानका विरोध होनेके कारण प्रथमोपशमसम्पत्त्यनका काळ समाप्त कर मुद्दानपृथक्त्य व्यतीत होजानेपर यात्रिमें व अन्तरके अन्तमें मनापर्ययज्ञान उत्पन्न करना चाहिये ।

केवलज्ञानियोंका अन्तर कितने फल तक होता है ? ॥ १०६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

केवलज्ञानियोंके ज्ञानका कमी अन्तर ही नहीं जाता, वह ज्ञान निरन्तर होता है ॥ १०७ ॥

क्योंकि केवलज्ञान उत्पन्न होनेपर फिर उसका विनाश नहीं होता ।

सयममार्गानुसार सयत, सामायिक व छदोपस्थापन शुद्धिसयत, परिहार विशुद्धिसयत और संयतामंयत जीवोंका अन्तर कितने फल तक होता है ? ॥ १०८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

## जहण्येण अतोमुहुत्त ॥ १०९ ॥

कुदो ! अपिदसजमद्विदिजीवमसंजर्म' जदून पुषा अपिदमजमस्म जहण्यकलेण  
पीदि जहण्यमतरं होदि । जवरि सामाह्यच्छदान्हावणसजदो उवसमसेदि' जदिय सुहुम  
सजम-जहण्यलादमजमेसु अतरिय पुषो हेहा आपरियस्त सामाह्य-छेदोवहावणसुदि  
संजमेसु पदिदस्त जहण्यमतरं होदि । परिहारसुदिसंजमादो सामाह्य छेदोवहावणसुदि  
सजर्म जेद्व्य जहण्येण अंतोसुहुत्तेण पुषो परिहारसुदिसजममागइस्म जहण्यमतरं होदि ।

## उन्नकस्सेण अद्वपोग्गलपरियट्ट देसूण ॥ ११० ॥

कुदो ! जवादियमिच्छसुदिसु अद्वपोग्गलपरियट्टस्त जदियमए पदमसम्मणं  
सजर्म य जगर्षं पद्वण अंतोसुहुत्तमच्छिय मिच्छसं गंतुमंतरिय उवहुपागगलपरियट्टं  
ममिय पुषो अंतोसुहुत्तावसेसे संसारे सजर्म पदिवजिज्य अतरं समामिय अतोसुहुत्त  
मच्छिय अवपगच गदस्त उवहुपागगलपरियट्टमेत्तठरत्तमादो । एषं सामाह्य छेदोवहा-

संपत्त भादि उक्त संयमी जीवोका अवन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्तमात्र होता है ॥१०९॥

क्योंकि विवक्षित संयममें स्थित जीवको मसंयममें लेजाकर कमसे कम  
काष्ठमें पुन विवक्षित संयममें लानेपर वह संयमका उक्त अल्प अन्तर प्राप्त होता  
है । केवल विशेषता यह है कि सामाधिक व छेदापस्थापन शुद्धिसंपत्त जीवके उपशम-  
येषीको जाकर सूक्ष्मसाम्यराय व यथाक्यात संयमोंके द्वारा अन्तर देकर पुन अर्थात्  
जीव अंतरमपर सामाधिक व छेदापस्थान शुद्धिसंयमोंमें जानेपर उक्त दोनों संयमोंका  
अल्प अन्तर होता है । तथा परिहारशुद्धिसंयमले सामाधिक व छेदापस्थापन  
शुद्धिसंयममें जाकर अन्तर्मुहूर्त काष्ठसे पुन परिहारशुद्धिसंयममें भाय हुए जीवके  
परिहारशुद्धिसंयमका अल्प अन्तर होता है ।

संपत्त भादि उक्त संयमी जीवोका उक्त अन्तर कुछ कम अर्धपुत्रगलपरिवर्तन-  
प्रमाय होता है ॥ ११ ॥

क्योंकि किसी समाधिमिथ्यावृत्ति जीवके अर्धपुत्रगलपरिवर्तनमात्र संसार शेष  
रहनेके भादि संयममें प्रथमोपशमसम्यन्तन भी संयम होनाको एक साथ ग्रहण कर  
अन्तर्मुहूर्त रहकर मिथ्यात्वको जाकर अन्तर प्रारंभ करके अपार्थपुत्रगलपरिवर्तनमात्र  
अमय कर पुन अन्तर्मुहूर्तमात्र संसार शेष रहनेपर संयम ग्रहण कर व अन्तरकाष्ठ  
समाप्त कर अन्तर्मुहूर्त उक्त यह अवस्थाकमावच्छे प्राप्त होनेपर उक्त संयमोंका अपार्थ  
पुत्रगलपरिवर्तनमात्र अन्तर पाया जाता है ।

इसी प्रकार सामाधिक व छेदापस्थापन शुद्धिसंपत्तको अन्तर कहना चाहिये

वपसुदिससजदाण, मेदामाबादो । एवं परिहारसुदिससजदस्म वि । नश्चि मया  
 दिपमिच्छादिद्वी अद्वयौगालपरियद्वम् आदिसमए तवसमसम्मच सजम च जुगव वत्तण  
 वासपुवचमच्छिय पच्छा परिहारसुदिससजम गतूप मिच्छत्त पुना गमिय अतरावेदव्वा,  
 संजमगाहणपदमसमयादो वासपुवचणेण विणा परिहारसुदिससजमगाहणमाबादो । अबसाणे  
 वि परिहारसुदिससजम गेहाविय पच्छा सामाहयच्छेदोवद्वत्तण-सुहृम प्रहावखादसंजमान  
 वेत्तण अर्धवगो कयव्वा । एवं सखदासंजदस्स वि । पश्चि अवसाथे विष्णि वि करणाभि  
 काठपुवसमसम्मसं संजमासंजम च गहिदपदमसमए अतरं समाभिय अतोसुहृचमच्छिय  
 संजम वेत्तण अवधगत गदो चि वत्तण ।

सुहृमसापराह्यसुदिसजद—जहावखादविहारसुदिससजदाणमतर  
 केवचिर कालादो होदि ? ॥ १११ ॥

सुगम ।

क्योंकि वमक पूर्वोक्त संपत्तोंके अन्तरसे काह भेद नहीं होता ।

इसी प्रकार परिहारशुदिसंपत्तिका भी अन्तर होता है । केवल विशेषता यह  
 है कि अनादिमिथ्यादृष्टि जीवक अर्धपुण्यपरिवर्तक भादि समयमें उपशमसम्पत्तव  
 और समयको एक साथ ग्रहण कर वर्यपुण्यत्त्व रहकर पश्चात् परिहारशुदिसंपत्तको प्राप्त  
 कर पुनः मिथ्यात्वमें आकर अन्तर उत्पन्न कराना चाहिये क्योंकि संघम ग्रहण करनेके  
 पश्चात् वपपुण्यत्त्वक बिना परिहारशुदिसंपत्त ग्रहण नहीं किया जा सकता । अन्तरके  
 समाप्तिकालमें ही परिहारशुदिसंघमको ग्रहण करके पश्चात् सामायिक व छेदापस्थाम,  
 सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यात संघमोंमें अज्ञाकर मन्थकमाव उत्पन्न कराना चाहिये ।

इसी प्रकार संपत्तासमय जीवका भी अन्तर उत्पन्न करना चाहिये । केवल  
 विशेषता यह है कि अन्तमें तीनों करण करके उपशमसम्पत्तव व समयसंघमको ग्रहण  
 करनेके प्रथम समयमें ही अन्तरकाल समाप्त कर अन्तमुद्धर्त रहकर संघम ग्रहण कर  
 मन्थकमावको प्राप्त हुआ, ऐसा करना चाहिये ।

सूक्ष्मसाम्परायशुदिसंपत्तों और यथाख्यातविहारशुदिसंपत्तोंका अन्तर कितने  
 काल होता है ? ॥ १११ ॥

यह सब सुगम है ।

उत्तमम पङ्क्तञ्च जहण्णेण अतामुहुत्त ॥ ११२ ॥

कुशो ! अन्तर्गतस्व सुदुमसांपरायसुद्विसंघदस्म उत्तमंतकमात्रा हाद्वय अहा-  
कखादेर्गतस्व पुषा सुदुमसांपरायसुद्विसंघदे पदिदस्स तदुवर्त्तमादा । अहाकखादसंघमादो  
हेहा पदिय अहण्णमंतोसुदुचमच्छिय पुषो कमेणुवति चदिय उत्तसतकसाभा हाद्वय  
अहाकखादसंघमं गदस्स अहण्णातल्लवर्त्तमादा ।

उत्तकस्सेण अद्वपोगालपरियट्टं देसूण ॥ ११३ ॥

कुशो ! अणादिपिच्छाद्विस्म विग्घि वि करणाणि काद्वय अद्वपोगालपरियट्टस्म  
आदिमस्य पङ्क्तमम्मस्य संघमं च सुगर्भं चत्थण अंतासुदुचण सन्नजहण्णेष उत्तसमसंघि  
चदिय सुदुमसांपरायमा होद्वय तन्म अहण्णंतोसुदुचमच्छिय उत्तसतकमात्रो होद्वय  
सुदुमसांपरायसुद्विसंघदो पुषो हाद्वय तस्म पङ्क्तमस्य अहाकखादसुद्विसंघमंतरस्सादि  
करिय पुषा अंतोसुदुचण अभिपट्टिगुणहाण विचदिय सामास्य उदोवहुवण  
पदिदपङ्क्तमस्य सुदुमसांपरायसुद्विसंघमंतरस्म आदि करिय कमेण हेहा ओपरिय

उपशमकी अपेक्षा सूक्ष्मसाम्पराय और यथाक्यात शुद्धिसंपत्तौका अपन्य अन्तर  
काल अन्तर्मुहूर्तमात्र होता है ॥ ११२ ॥

क्योंकि देखी जाइते हुए सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंघतकं उपशांतक्याय हाकर  
पथाक्यातसंघमकं हाण सूक्ष्मसाम्परायसंघमका अन्तर कर पुनः गिरकर सूक्ष्म  
साम्परायशुद्धिसंघममें भानेपर अन्तर्मुहूर्तमात्र अन्तरकाळ पाया जाता है । पथाक्यात  
संघमस नीचे गिरकर कमसे कम अन्तर्मुहूर्तमात्र रहकर पुनः कमसे ऊपर जाकर  
उपशांतक्याय होकर पथाक्यातसंघम ग्रहण करनेवाले जीवके पथाक्यातसंघमक  
अन्तर्मुहूर्तमात्र अथवा अन्तर पाया जाता है ।

सूक्ष्मसाम्पराय और यथाक्यात शुद्धिसंपत्तौका उत्कृष्ट अन्तरकाल कुछ कम  
अर्धपुत्रगणपरिवर्तनप्रमाण है ॥ ११३ ॥

क्योंकि कोई अनादिपिच्छादि जीव तीनों ही करण करके अर्धपुत्रगणपरिवर्तक  
आदि संघममें प्रथमापशमलस्यरत्न नीर संघमको एक साथ ग्रहण कर सबसे कम अन्त  
मुहूर्त काळसे उपशमप्रतीको जाकर सूक्ष्मसाम्परायिक हुआ और वहां कमसे कम  
अन्तर्मुहूर्तमात्र रहकर उपशांतक्याय होगया । पश्चात् पुनः सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धि  
संघत होकर उसके प्रथम संघममें ही पथाक्यातशुद्धिसंघमका अन्तर प्रारंभ किया ।  
पुनः अन्तर्मुहूर्त काळसे अतिदृष्टिकरण गुणस्थानमें गिरकर सामायिक व छेदोपस्थापन  
शुद्धिसंघममें गिरनेके प्रथम संघममें सूक्ष्मसाम्परायिक शुद्धिसंघमका अन्तर प्रारंभ  
किया । फिर कमसे नीचे उतरकर अर्धपुत्रगणपरिवर्तनप्रमाण अमल कर अन्तमें

उबहुपोग्गलपरियहू ममिय अबसाप्पे सम्मत्त सज्जम च येत्तुवससद्धिं चडिय सुद्धमसाय  
 रात्ता उबसंतकसाओ च होद्धम सुद्धमसापराइयसुद्धिसंज्जदो पुणो होद्धम कमेण अतराणि  
 समाणिय हेद्धा आपरिय पुणो खवगसद्धिं चडिय मधवगत गइस्स उबहुपोग्गलपरियहू  
 तरस्सुबलभादो । खवगसद्धीए दोण्हर्मवराणं परिसमची किण्ण कदा ? ण, उबसामगेहि  
 एत्थ अहियारादा ।

खवग पहुच्च णत्थि अतरं णिरतर ॥ ११४ ॥

हुदो ? खवगाण पुणो आगमणाभावादो ।

असज्जाणमतर केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ११५ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण अतोमुहुत्त ॥ ११६ ॥

सम्यक्त्व और संयमको एक साथ ग्रहण कर उपग्रामधनीपर चढ़ा तथा सूक्ष्मसाम्य  
 रापिक और उपग्राम्तरकाय हाकर पुनः सूक्ष्मसाम्यरायशुद्धिसंपत्त हाकर क्रमसे दोनों  
 मन्तरकाओंको समाप्त कर वहीं उतरकर पुनः सपकमेनीपर चढ़ा और मधवक  
 मासको प्राप्त होगया । ऐस जीवके सूक्ष्मसाम्यराय और यथाक्यात शुद्धिसंयमका  
 कपाधपुङ्खपरिचर्तप्रमाण उत्कृष्ट मन्तर पाया जाता है ।

झका — सपकमेनीमें जयम्य और उतररु इम हानों मन्तरोंकी परिसमाप्ति क्यों  
 नहीं की ?

समाधान—वहीं की क्योंकि यहाँ ता कवळ उपग्रामकोंका अधिकार है  
 सपकोंका नहीं ।

सपकमेनी अपक्षा सूक्ष्मसाम्यरापिक और यथास्यातविहारशुद्धिसंपत्तोंका अन्तर  
 नहीं होता, निरन्तर है ॥ ११४ ॥

क्योंकि सपक जीवोंका स्वीक्याय शुणस्थामसे सीटकर पुनः सूक्ष्मसाम्यराय  
 शुणस्थाममें जासका जमाव है ।

असपत्तोंका अन्तर कितन काल तक हाता है ? ॥ ११५ ॥

यह सज्ज सुगम है ।

असपत्तोंका जयम्य अन्तरकाल अन्तसुहर्तमात्र है ॥ ११६ ॥

कुदा ! अमत्रदस्म सत्रम धेनुष्य अहण्यमतामुदुत्तमन्त्रिय पुनो असत्रमं गदस्म  
तदुत्तमादौ ।

उक्कस्सेण पुव्वकोढी देसूण ॥ ११७ ॥

कुदो ! सण्णिपधियसम्मूच्छिमपज्जचयस्म छदि पज्जतीहि पज्जत्तपदस्म  
विस्समिय विमुदा हावूण संसमासत्रमं धेनुष्यतरिय देसुपुव्वकोढि वीविय क्कत्त  
क्कत्तय देवेसुप्यप्पपदममए समाभिरंतरस्स असोमुदुत्तपुव्वकोढिमेत्तत्तत्तत्तमादा ।

दसणाणुवादेण चक्खुदसणीणमतर केवचिरं कालदो होदि !

॥ ११८ ॥

सुगमं ।

जहण्णेण खुद्दामवग्गहण ॥ ११९ ॥

कुदो ! वो जीवो चक्खुदसणी पप्रदिय-वदिय-त्ते-दिय-रुद्धि-पज्जचयसु पुरा  
मवग्गहणमेत्ताठ्ठिदियसु अण्यदरेसु अचक्खुदसणी हावूणप्यन्त्रिय सुद्दामवग्गहणमतरिय  
पुनो चठ्ठिदिमादिसु चक्खुदसणी होवूणप्यणो तस्म सुद्दामवग्गहणमेत्तत्तत्तमादौ ।

क्योंकि अक्षयत जीवक समय प्रहण कर कससे कम अन्तर्मुहूर्तकाय रहकर  
पुनः अक्षयमम आमपर अन्तर्मुहूर्तमात्र अन्तर प्राप्त होता है ।

असयतोऽथ उत्कृष्ट अन्तरकाल कुठ कम पूर्वकोटि होता है ॥ ११७ ॥

क्योंकि किसी संज्ञी पक्षेत्रिय सम्मूर्च्छिम परांत जीवने छद्दा पर्याप्तियोंसे पूर्व  
हाकर विधाम छे विद्युत् वा समयमास्यम प्रहणकर असयमका अन्तर प्राप्त किया और  
कुठ कम पूर्वकोटि काय जीकर मरकर वृषोमें उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें अन्तर  
समाप्त किया अर्थात् असयममाय प्रहण किया । ऐसे जीवक असयमका अन्तर्मुहूर्त कम  
एक पूर्वकोटिमात्र अन्तरकाल पाया जाता है । (देखा पु ४ काठानुगम सूत्र १८) ।

दर्शनमार्गानुमार चक्षुदर्शनी जीवोऽथ अन्तर कितने काल तक होता है ?

॥ ११८ ॥

पह सूत्र सुगम है ।

चक्षुदर्शनी जीवोऽथ अल्प अन्तरकाल सुद्रमवप्रहणमात्र होता है ॥ ११९ ॥

क्योंकि जो चक्षुदर्शनी जीव सुद्रमवप्रहणमात्र वायुस्थितिवाले किसी भी  
पक्षेत्रिय क्षेत्रिय व क्षेत्रिय सप्पपयात्तकोमि अक्षुदर्शनी हाकर उत्पन्न होता है और  
सुद्रमवप्रहणमात्र काल चक्षुदर्शनीका अन्तर कर पुनः चक्षुर्दिग्यादिक जीवोंमें चक्षु  
दर्शनी हाकर उत्पन्न होता है उस जीवके चक्षुदर्शनीका सुद्रमवप्रहणमात्र अन्तरकाल  
पाया जाता है ।

उक्कस्सेण अणतकालमसखेज्जपोग्गलपरियट्ट ॥ १२० ॥

कुदा ! चक्खुदसणीहिंत्तो णिप्पिच्चिय अचक्खुदसणीसु समुप्पज्जिय अतरिदूण  
भावलियाए असंसुज्जदिमागमेच्चपोम्भानपरियट्ट गमिय पुणो चक्खुदसणीसुप्पण्णस्म  
उदुक्कमादो ।

अचक्खुदसणीणमतर केवचिर कालादो होदि ? ॥ १२१ ॥

सुगम ।

णत्थि अतर णिरतर ॥ १२२ ॥

केवलदसणिसु पुणो अचक्खुदसणुप्पचीए अभावादो ।

ओधिदसणी ओधिणाणिभगो ॥ १२३ ॥

सहप्पेण अतोसुहुचक्खुनकस्सेण उक्कपोग्गलपरियट्टमिच्चदेहि दोण्ह भेदाभावादा ।

चक्खुदर्शनी जीबोंका उत्कृष्ट अन्तर असम्प्यात पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अनन्त  
काल होता है ॥ १२० ॥

क्योंकि चक्खुदर्शनी जीवामसे निकलकर मच्चक्खुदर्शनी जीबोंमें उत्पन्न हो अन्तर  
प्रारम्भ कर भाषसीके मसख्यातके भागमात्र पुद्गलपरिवर्तनोंके विनाकर पुनः चक्खुदर्शनी  
जीबोंमें उत्पन्न हुए जीबके चक्खुदर्शनीका सूत्रात् उत्कृष्ट अन्तर पाया जाता है ।

अचक्खुदर्शनी जीबोंका अन्तर कितन काल तक होता है ? ॥ १२१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अचक्खुदर्शनी जीबोंका अन्तर नहीं होता, व निरन्तर हाते हैं ॥ १२२ ॥

क्योंकि अचक्खुदर्शनीका अन्तर केवलदर्शनी उत्पन्न होनेपर ही हो सकता है।  
पर एक बार जो जीब केवलदर्शनी हो गया उसके पुनः अचक्खुदर्शनीकी उत्पत्ति नहीं  
हो सकती ।

अचक्खुदर्शनी जीबोंके अन्तरकी प्ररूपणा अचक्खिदानी जीबोंक समान है ॥ १२३ ॥

क्योंकि अचक्खिदानी और अचक्खिदानी जीबोंके सम्पन्न अन्तर अन्तमुहूर्तमात्र  
भीर उत्पन्न अन्तर उपाधपुद्गलपरिवर्तनप्रमाणमें कोई अर्थ नहीं है ।



केवलदसणी केवलणाणिभगो ॥ १२४ ॥

अंतराभाष पदि दाण्ड भेदाभावादो ।

लेस्ताणुवादेण किण्डलेस्सिय-गील्लेस्सिय-काउलेस्सियाणमत  
केवविर काल्पदो होदि ? ॥ १२५ ॥

सुगम ।

जहण्णेण अतोमुहुत्त' ॥ १२६ ॥

ब्रह्मा ! किण्डलेस्सियस्स पील्लेस्सं, गील्लेस्सियस्स काउलेस्सं, काउलेस्सियस्स  
तवलेस्सं गत्तं अप्पनो लस्साए महण्ण्यकस्सयागदस्सं अतोमुहुत्तत्तत्तंमादा ।

उष्कस्सेण तेत्तीमसागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ १२७ ॥

ब्रह्मा ! पुष्कस्सेहातत्रा मधुस्सा गम्मादिअण्णवसालमग्गंत्ते छत्रंतोमुहुत्तमरिष  
पि किण्डलस्साए परिणमिय आदि करिय पुष्पो पील्ल-काउ-लेठ पम्म-सुष्कस्सेस्साए

कवसर्द्धनी जीर्णोक्त अन्तरकी प्ररूपणा केवलदसानी जीर्णोक्त समान है ॥ १२४ ॥

क्योंकि इन शान्ति मन्तरका समाप होता है और इसकी अपेक्षा दोनोंमें  
कोई भेद नहीं है ।

उभयामार्गानुसार कृष्णलेश्या, नीललेश्या और कापातलेश्यावाले जीर्णोक्त  
अन्तर कितने अलग लफ होता है ? ॥ १२५ ॥

यह सज सुगम है ।

कृष्ण, नील और कापोत लेश्यावाले जीर्णोक्त अधन्य अन्तरअल अन्तमुहुत्त  
हाता है ॥ १२६ ॥

क्योंकि कृष्णलेश्यावाले जीर्णोक्त नीललेश्यामें नीललेश्यावाले जीर्णोक्त कापोत  
लेश्यामें व कापोतलेश्यावाले जीर्णोक्त लेश्यावाले जीर्णोक्त कापोत लेश्यामें अधन्य  
वासक द्वारा पुष्प पापिस भावेने अन्तमुहुत्तप्रमाण अन्तर पाया जाता है ।

कृष्ण, नील और कापात लेश्यावाले जीर्णोक्त अन्तर कुछ अधिक तर्तीत  
सागरापमप्रमाण होता है ॥ १२७ ॥

क्योंकि एक पूर्वकारिणी भाग्युपाया मनुष्य गर्भसे भादि मन्तर जाड कर्णिक  
अन्तर छह अन्तमुहुत्त शब्द रहनपर कृष्णलेश्या रूप परिणामका प्राप्त हुआ । इस प्रकार  
कृष्णलेश्याका मारिष कर पुनः नील कापाल तेज पत्र भीर शुद्ध लेश्याओंमें परिपारी

१ कृष्ण नील-कापोतलेश्यावाले अल अन्तमुहुत्त अन्तरे वरिष्ठमन्तरवापि भाषियामि ।

परिबाहीए अंतरिय सजमं बेकूण तिसु सुहलेस्सासु दक्षणपुम्बफोडिमच्छिय पुणो तेचीससागरोबमात्तद्धिदिएसु दनेसुप्पन्त्रिय तत्तो आगतूण मणुस्सेसुप्पन्त्रिय सुक्क-पम्म तेउ-काठ-णीलस्ससाओ कमेण परिणामिय किण्णलेस्साए परिणामयस्स दमअंतामुहुत्तण अहुवस्सहि उभियाए पुम्बकाडियाए सादिरेयाण तचीससागरोबमाण अतरत्तणुवसमादो । एव वेव पील काउलस्साप पि वत्तम्भं । भवरी अहु-छप्रतामुहुत्तणहुवस्सहि ऊणिपाए पुम्बकाडिए सादिरेयाणि तेचीससागराबमाणि पि वत्तम्भ ।

तेउलेस्सिय-पम्मलेस्मिय-सुक्कलेस्सियाणमतर केवचिर कालादो होदि ? ॥ १२८ ॥

सुगम ।

जहण्णेण अतोमुहुत्त ॥ १२९ ॥

जमसे जाकर भन्तर करता हुआ संघम ग्रहण कर तीन गुन सेइयाधोमें कुछ कम पूर्व कोटि कासप्रमाण रहा और फिर तर्तीस सागरोपम भायुस्थितिवाले देशोंमें उत्पन्न हुआ । फिर वहांसे भाकर मनुष्यामें उत्पन्न होकर शुद्ध पक्ष तेज कापोत और नील सेइया रूप जमसे परिणमित हुआ और भन्तमें कृष्णसेइयामें भागया । ऐस जीवके दृश भन्तमुहुत्त कम भाठ वपसे हीन पूर्वकोटि अधिक तेतीस सागरोपमप्रमाण कृष्णसेइयाका भन्तरकास प्राप्त होता है । इसी प्रकार नीलसेइया और कापोतसेइयाके उत्पन्न भन्तर कालका प्ररूपण करना चाहिये । विशेषता केबल इतनी है कि नीलसेइयाका भन्तर करते समय भाठ और वापात सेइयाका भन्तर करते समय छह भन्तमुहुत्त कम भाठ वपसे हीन पूर्वकोटि अधिक तेतीस सागरोपमप्रमाण भन्तरकास बनसामा चाहिये ।

तेजसेइया, पक्षध्या और शुद्धसेइयावाले जीवोंका अन्तर कितने फल तक हाता है ? ॥ १२८ ॥

पक्ष धृष्ट सुगम है ।

तेज, पक्ष और शुद्ध सेइयावाले जीवोंका जयन्य अन्तरकास अन्तमुहुत्तमात्र होता है ॥ १२९ ॥

१ ज-आमबी-अतोमुहुत्तण इति वाडा ।

२ तेज-पक्षधृष्टसेइयावालेका अन्तर जयन्यमात्रमुहुत्त वपसेवास्त काओत्तसेवा पुठपरिवाती ।

३ ए २९ १ ईउतिवाण एव भवरी व उवहरतनिधुक्कओ इ । पोम्बकाडिवा इ वपवध्या रीति विवसेण ॥

कुदो ? तेउ-यम्म-सुककलस्साहिंतो अविद्वमन्वत्तस्स गत्थं बह्वण्णकलेण  
पट्ठिंणीयत्थियं अण्णपणां लेस्साणामागइस्स अहम्मंतत्तल्लमादो ।

उक्कस्सेण अणतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्ठं ॥ १३० ॥

कुदो ? अप्पिदत्तेस्सादा अविद्वत्तापिदत्तेस्सामं गंतूणं अत्तरियावत्थियाए जसं  
खन्नादिमागमेत्तपोग्गलपरियट्ठेणु किण्ण-णील-काठत्तेस्साहिं अविद्वत्तेसु अप्पिदत्तम्भ  
मागइस्स सुत्तुककस्सत्तल्लमादो ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धियं अभावसिद्धियाणमत्तरं केवचिरं  
कालादो होदि ? ॥ १३१ ॥

सुगमं ।

णत्थियं अत्तरं णिरत्तरं ॥ १३२ ॥

कुदो ? भवियाणमभवियाणं च अण्णोण्णमरूढेण परिणामामावादो ।

क्योंकि तेज, पद्म व लुङ्ग देखासे भयनी भविरोधी मय्य देखायें जाकर व  
अयम्य काठसे छौटकर पुनः भयनी भयनी पूर्व देखायें जानेवाले जीवके अन्तर्भूतमात्र  
अयम्य अन्तरकाळ पाया जाता है ।

तेज, पद्म और लुङ्ग संख्याका उत्कृष्ट अन्तरकाल मत्तस्मात् पुद्गलपरिवर्तनप्रमाण  
अनन्त काळ होता है ॥ १३ ॥

क्योंकि विवक्षित देखासे भविद्वज्ज भवियक्षित देखाओंका प्राप्त हो अन्तरको  
प्राप्त हुआ । पुनः भावकीके मत्तस्मात्तवें मागमात्र पुद्गलपरिवर्तनोंके कृष्ण नील और  
कापोत देखाओंके साथ धीतमेपर विवक्षित देखाका प्राप्त हुए जीवके वल देखाओंका  
सूत्रोक्त उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त होता है ।

मय्यमार्गवानुमार मय्यसिद्धिक और अमय्यसिद्धिक जीवोंका अन्तर किन्ने  
काळ तक होता है ? ॥ १३१ ॥

यद्दं सुगमं है ।

मय्यसिद्धिक और अमय्यसिद्धिक जीवोंका अन्तर नहीं होता, वे निरन्तर हैं ॥ १३२ ॥

क्योंकि मय्य और अयम्य जीवोंका अण्णोण्णस्वरूपसे परिणामका अभाव है  
अर्थात् मय्य व भी अमय्य नहीं है मत्तना और अयम्य कभी मय्य नहीं हो सकता ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्टि-वेदगसम्माइट्टि उवसमसम्माइट्टि  
सम्मामिच्छाइट्टीणमतर केवचिर कालादो होदि ? ॥ १३३ ॥

सुगम ।

जहण्णेणतोमुहुत्त ॥ १३४ ॥

हुदो ! सम्माइट्टिस्स मिच्छं गंतूण जहण्णेण कालेण पुणो सम्मत्तामागदस्स  
जहण्णतरुत्तमादा । एव वेदगसम्मत-सम्मामिच्छत्ताण, विससाभावाद्दो । एव उवसम  
सम्माइट्टिस्स वि । णवरि उवसमवेदीदो आदिष्णस्स आदि करिय वेदगसम्मत  
जहण्णदमतरिय पुणो उवसममर्हि समारहणहु दसणमोहणीयमुवसमिय उवसमसम्मत  
गयस्स जहण्णमंतर वत्तण ।

उक्कस्सेण अद्वपोग्गलपरियट्ट देसूण ॥ १३५ ॥

हुदो ! अणादियमिच्छादिट्टिस्स अद्वपोग्गलपरियट्टादिमण सम्मत पसुण  
अंतोमुहुत्तमच्छिय मिच्छत्त गंतूणुक्कपोग्गलपरियट्टमतरिय अवमाण सम्मत सज्जं च

सम्पक्कवर्माणका अनुसारा सम्पग्घटि वेदकसम्पग्घटि, उपसमसम्पग्घटि और  
सम्पग्घटिप्यादटि बीर्षोका अन्तर कित्त काल तक होता है ? ॥ १३३ ॥

यद सूत्र सुगम है ।

उक्त बीर्षोका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्तमात्र है ॥ १३४ ॥

क्योंकि सम्पग्घटिक मिध्यात्वका प्राप्त होकर जघन्य कालस पुनः सम्पक्कवर्णका  
प्राप्त होनेपर उक्त जघन्य अन्तर प्राप्त जाता है । इसी प्रकार वेदकसम्पग्घटि भी  
सम्पग्घटिप्यादटिप्याका भी जघन्य अन्तर करमा चाहिये क्योंकि, उसमें विशेषताका  
अभाव है । इसी प्रकार ही उपसमसम्पग्घटिका भी जघन्य अन्तर कहना चाहिये ।  
परन्तु यिनायता यह है कि उपसमसम्पग्घटिमें उतर हुए जीवका भादि करक येदकसम्प  
क्कवर्ण जघन्य काल तक अन्तर करक पुनः उपसमसम्पग्घटिपर आइनेक किये दर्शनमाहतीयका  
उपसमसम्पग्घटिप्याका प्राप्त हुए जीवक यह जघन्य अन्तर कहना  
चाहिये ।

उक्त बीर्षोका उत्कृष्ट अन्तरपरत कुछ कम अथपुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है  
॥ १३५ ॥

क्योंकि अनादिमिध्यादटिक अथपुद्गलपरिवर्तनक प्रथम समयमें सम्पक्कवर्णका  
ग्रहण कर भी उक्त साथ अन्तर्मुहूर्त रदकर मिध्यात्वका प्राप्त होनेपर वरार्थ अथान्  
कुछ कम अथपुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अन्तरका प्राप्त हो अन्तमें सम्पक्कवर्ण एक समयका

सुगर्भं भेषुर्वातर समाभिय अतामुद्गुचोण अषपगण गदस्स उषड्ढुपागमपरियहंतकवले-  
मादो । एवं बद्गममग्नाइडिस्स वि बचध्वं । णवरि अणादियमिच्छादिड्ढी उषसमसम्मत्तं  
भेषुण अतामुद्गुचमच्छिय पुणो वेदगसम्मत्तं भेषुण तत्थ वि अंतोमुद्गुचमच्छिय पुणो  
मिच्छत्तण अंतरिदो ति बचध्व । अषसाले वि उषसमसम्मत्तादो बद्गममग्ना पडिबन्ध-  
पढमममए अंतरं समाणदेव्व । एषमुषसमसम्मग्नाइडिस्स वि बचध्वं, सामग्नासम्मग्नाइडि-  
हितो भदाभावादा । एष सम्मानिच्छाइडिस्स वि । णवरि उषसमसम्मग्नाइडि सम्मा-  
मिच्छत्तं वेदुण मिच्छत्तं गमिम अंतरउवेदध्वो । अषसाले वि उषसमसम्मत्तादो सम्मा-  
मिच्छत्तणदपढमममए अतरं समाभिय अतोमुद्गुचमच्छिय अर्षभमाष जेयणो ।

स्वह्यसम्माहट्टीणमतर केवचिर कालादो होदि ? ॥ १३६ ॥

सुगर्भं ।

णत्थि अतर णिरंतर ॥ १३७ ॥

स्वह्यसम्माहट्टीण सम्मत्ततरगमनाभावादा ।

सासणसम्माहट्टीणमतर केवचिरं कालादो होदि ? ॥ १३८ ॥

एक साथ प्रहण कर अन्तरका समाप्त करत हुए अन्तर्मुहूर्तसे अर्धरात्रिकालको प्राप्त होने पर कुछ कम अर्धरात्रिकपरिवर्तनमात्र अन्तर प्राप्त होता है । इसी प्रकार वेदक-सम्पत्तिका भी उत्कृष्ट अन्तर कहना चाहिये । विशेष इतना है कि अनादिमिष्यादृष्टि उपशमसम्पत्तिको प्रहण कर और उसके साथ अन्तर्मुहूर्त रहकर पुनः वेदकसम्पत्तिको प्रहणकर और वहाँ भी अन्तर्मुहूर्त रहकर पुनः मिष्यात्वसे अन्तरित होता है इस प्रकार कहना चाहिये । अन्तमें ही उपशमसम्पत्तसे वेदकसम्पत्तिको प्राप्त होनेके प्रथम समयमें अन्तरका समाप्त करना चाहिये । इसी प्रकार उपशमसम्पत्तिको भी उत्कृष्ट अन्तर कहना चाहिये क्योंकि सामान्य सम्पत्तियोंसे उसके कई भेद बर्ती हैं । इसी प्रकार सम्पत्तिमिष्यादृष्टिका भी उत्कृष्ट अन्तर कहना चाहिये । विशेष इतना है कि उपशमसम्पत्तिको सम्पत्तिमिष्यात्वमें लेजाकर पुनः मिष्यात्वका प्राप्त कराकर अन्तर कराजा चाहिये । अन्तमें ही उपशमसम्पत्तसे सम्पत्तिमिष्यात्वको प्राप्त होनेके प्रथम समयमें अन्तरको समाप्त कर और अन्तर्मुहूर्त रहकर अर्धरात्रिकालको प्राप्त कराजा चाहिये ।

सायिकसम्पत्तियोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ १३९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सायिकसम्पत्तियोंका अन्तर नहीं होता, वे निरन्तर हैं ॥ १३७ ॥

क्योंकि सायिकसम्पत्ति अर्ध रात्रिकालको प्राप्त नहीं होते ।

सासादनसम्पत्तियोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ १३८ ॥



पट्टिबन्धय उच्यतेऽपिमाकृष्टिय तपो आदिषो वि ष सासप पट्टिबन्धदि वि अदि  
प्याभो एदस्स सुचस्स । तेपतोमुहुचमच अहन्तरं गोबल्लमदे ।

उच्यतेऽपिमाकृष्टिय तपो आदिषो वि ष सासप पट्टिबन्धदि वि अदि ॥ १४० ॥

कुत्रो ? अजादियमिच्छादृष्टिस्स अह्नोपोगलपरियद्वादिमम गहिदसम्मचस्स  
सासर्णं गंतुम उच्यतेऽपिमाकृष्टिय तपो आदिषो वि ष सासप पट्टिबन्धदि वि अदि  
एयसमम सासभो हाद्वन अतर समाधिय पुनो मिच्छत्तं सम्मच ष क्रमेण मत्त  
अचमार्थं गदस्स उच्यतेऽपिमाकृष्टिय तपो आदिषो वि ष सासप पट्टिबन्धदि वि अदि ।

मिच्छादृष्टी मदिअण्णाणिमगो ॥ १४१ ॥

अह्नोपोगलपरियद्वादिमम गहिदसम्मचस्स अह्नोपोगलपरियद्वादिमम  
गहिदसम्मचस्स अह्नोपोगलपरियद्वादिमम गहिदसम्मचस्स अह्नोपोगलपरियद्वादिमम  
गहिदसम्मचस्स अह्नोपोगलपरियद्वादिमम गहिदसम्मचस्स अह्नोपोगलपरियद्वादिमम

सण्णियाणुवादेण सण्णीणमतरं केवचिरं कालादो हादि ?

॥ १४२ ॥

सुयमं ।

यममे सासादनको प्राप्त कर उपसमभेषीपर भाकृष्ट हो बसस उतरा हुआ मी जीव  
सासादनको प्राप्त नहीं होता यह इस सूत्रका अभिप्राय है । इस कारण अन्तर्मुहूर्तमात्र  
अवश्य अन्तर प्राप्त नहीं होता ।

सासादनसम्यग्दृष्टिर्कोऽत्र उत्कृष्ट अन्तर कुष्ठ कम अर्धपुद्गलपरिवर्तनप्रमाण है  
॥ १४० ॥

क्योंकि, अजादियमिच्छादृष्टिके अर्धपुद्गलपरिवर्तनके प्रथम समयमें सम्यक्त्वका  
प्रमाणकर सासादनको प्राप्त हो कुछ कम अर्धपुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अवश्यकर संसारके  
अन्तर्मुहूर्त होय रहनेपर प्रथमसम्यक्त्वका प्रमाणकर एक समय सासादन एकर  
अन्तरको समाप्त कर पुनः क्रमसं मिष्यात्व भीर सम्यक्त्वको प्राप्त हो अवश्यकमात्रको  
प्राप्त होनेपर कुछ कम अर्धपुद्गलपरिवर्तनप्रमाण अन्तर प्राप्त होता है ।

मिष्यादृष्टिका अन्तर मति-अज्ञानिके समान है ॥ १४१ ॥

क्योंकि अह्नोपोगलपरियद्वादिमम गहिदसम्मचस्स अह्नोपोगलपरियद्वादिमम  
गहिदसम्मचस्स अह्नोपोगलपरियद्वादिमम गहिदसम्मचस्स अह्नोपोगलपरियद्वादिमम  
गहिदसम्मचस्स अह्नोपोगलपरियद्वादिमम गहिदसम्मचस्स अह्नोपोगलपरियद्वादिमम

सण्णियाणुवादेण सण्णीणमतरं केवचिरं कालादो हादि ? ॥ १४२ ॥  
यह सूत्र सुगम है ।

जहण्णेण खुडाभवग्गहण ॥ १४३ ॥

एद वि सुगम ।

उक्कस्मेण अणतकालममसेज्जपोग्गलपरियट्ट ॥ १४४ ॥

मणीहिता अमणीण गत्तण अमण्णिट्ठिदिमच्छिय सण्णीसुप्पण्णस्स आरठियाण  
अमणेज्जदिमागमेत्तपाग्गलपरियट्टत्तकवलमादा ।

अमणीणमतर केवचिर कालादेो होदि ? ॥ १४५ ॥

सुगम ।

जहण्णेण खुडाभवग्गहण ॥ १४६ ॥

एद वि सुगम ।

उक्कस्मेण सागरोवममदपुधत्त ॥ १४७ ॥

अमणीहिता मणीण गमण सण्णिट्ठिदि मयिय अमणीसुप्पण्णस्स सागरोवम  
मदपुधत्तमत्तकवलमादा ।

मग्गी जीरोस अन्तर उपन्यम सुत्तभवप्रदणप्रमाण ई ॥ १४३ ॥

एद सूत्र मी सुगम दे ।

मग्गी जीरोस उट्टए अन्तर अमरुपय पुत्तगलपरिउत्तनप्रमाण अनन्त कठ दे  
॥ १४४ ॥

कसोदि मग्गिपोंमे मग्गिपोंमे जावर धीर एहा मसंघादी स्थितिप्रमाण एदकर  
मग्गिपोंमे उत्तए एए जीपक भापरीक मसंघातके भागमात्र पुत्तमपरिवत्तनप्रमाण  
अन्तर प्रान्न हाता ई ।

अमग्गी जीरोस अन्तर कित्तन क्यत्त मरु हाता ई ? ॥ १४५ ॥

एद सूत्र सुगम दे ।

अमग्गी जीरोस अन्तर उपन्यम सुत्तभवप्रदणप्रमाण दे ॥ १४६ ॥

एद सूत्र मी सुगम ई ।

अमग्गी जीरोस उट्टए अन्तर मागवमउत्तगृहकप्रमाण ई ॥ १४७ ॥

कसोदि मग्गिपोंमे मग्गिपोंमे जावर धीर एहा मसंघादी स्थितिप्रमाण अमल कर  
मग्गिपोंमे उत्तए एए जीपक भागमात्रमात्रात्तएकप्रमाण अन्तर प्रान्न हाता ई ।





णाणाजीवेहि भगविचयाणुगमे

णाणाजीवेहि भगविचयाणुगमेण गदियाणुवादेण गिरयगदीए  
णेरइया णियमा अत्थि ॥ १ ॥

विचया विचारणा । केसि ? अत्थि गत्थि चि मंगार्थं । कुशोवगम्भे ? 'णेरइया  
णियमा अत्थि' चि सुत्थिरेसादो । ने बघगाहियारे एदस्मत्तमावो, सम्बद्धं णियमेण  
पुनो अणियमण च मग्गणाण मग्गणविममाण च अत्थिचपरूवणाए एदस्से सामण्य  
त्थिचपरूवणम्मि अत्थमावविरोहादो ।

एव सत्तसु पुढवीसु णेरइया ॥ २ ॥

कुदा ? णियमा अत्थिचत्थेण मेदामावादो । सामण्यपरूवणादो येव विसमपरूव  
णाए सिद्धाए किमहुं पुनो परूवणा कीरदे ? ए, सत्तण्ह पुढवीण णियमेणत्थिचामाव वि  
सामण्येण णियमा अत्थिचत्त विरोहामावादो ।

नाना बीबोकी अपेक्षा भगविचयानुगममे गतिमार्गानुमार नरकगतिमें नारकी  
जीव नियमसे हैं ॥ १ ॥

विचय शब्दका अर्थ यहां अस्ति-नास्ति भगोका विचार करना है ।

शब्द—बह कहाँसे जाना जाता है ?

समाधान—बह नारकी जीव नियमसे हैं इस सूत्रके निर्देशसे जाना जाता है ।

इसका अर्थकाधिकारमें अस्तभाव नहीं हो सकता क्योंकि, यहां जो सर्व व्याप्त  
नियमसे व अनियमसे मार्गका एव मार्गजाविशेषोंकी अस्तित्वप्रकरण है उसका सामान्य  
अस्तित्वप्रकरणामे अस्तभाव होनेका विरोध है ।

इसी प्रकार सातों पृथिवियोंमें नारकी जीव नियमसे हैं ॥ २ ॥

क्योंकि सातों पृथिवियोंमें नारकियोंके नियमित अस्तित्वसे कोई भेद नहीं है ।

शब्द—सामान्यप्रकरणसे ही विशेषप्रकरणके सिद्ध होनेपर पुनः प्रकरण  
किसलिये की जाती है ।

समाधान—जहाँ क्योंकि सात पृथिवियोंके नियमसे अस्तित्वके ममावमें भी  
सामान्यप्रकरणसे नियमता अस्तित्वके होनेमें कोई विरोध नहीं है । अर्थात् यदि कहावित्  
किसी पृथिवीविशेषमें सर्वत्र नियमसे नारकी बीबोका अस्तित्व न भी होता तो भी  
सामान्यसे अन्य पृथिवियोंकी अपेक्षा अस्तित्वका विधान हो सकता था ।

तिरिक्त्वागदीए तिरिक्त्वा पचिंदियतिरिक्त्वा पचिंदियतिरिक्त्वा  
पज्जत्ता' पचिंदियतिरिक्त्वाजोणिणी पचिंदियतिरिक्त्वाअपज्जत्ता मणुस  
गतीए मणुसा मणुसपज्जत्ता मणुमणीओ णियमा अत्थि ॥ ३ ॥

इहा ? तीदात्यागद-बहुमापञ्चलमु एदामि मग्गशाज मग्गपविस्समाय ष  
गगापसाइम्मय सान्छडाभावादा ।

मणुमअपज्जत्ता सिया अत्थि सिया णत्थि ॥ ४ ॥

मणुमअप-त्रचाम कपावि अन्विष हादि कपावि ष हादि । इदो ? महावदा ।  
अ महावा णाम ? अम्मतरमावा ।

तेवगतीए देवा णियमा अत्थि ॥ ५ ॥

इहा ? तिसु वि षत्तसु दवाण विरहाभावादा ।

एव भवणवामियण्णहुडि जाव सत्रद्धमिद्विविमाणवामियदेवेसु  
॥ ६ ॥

नियन्त्रगतिमें तियष, पंचन्द्रिय तियष, पचन्द्रिय तियष पर्याप्त, पचन्द्रिय तियष  
यानिमती अर पंचन्द्रिय तियष अपयाप्त, तथा मनुष्यगतिमें मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त  
आर मनुष्यनी नियममे ६ ॥ ३ ॥

क्याकि भर्तात् अतागत व पतमान कामोम इज मार्गजामो व मार्गजाविशेषोअ  
गंगाप्रवाहक समान म्पुच्छर बर्दा हाता ।

मनुष्य अपर्याप्त कदाचिन् ६ मी, आर कदाचिन् नहो मी ई ॥ ४ ॥

क्याकि मनुष्य अपर्याप्तोअ कदाचिन् अस्मित्थ हाता ई मीर कदाचिन् बर्दा  
हाता क्योंकि एमा इत्थमाय हा ई ।

द्वय— इत्थमाय किस कहत हैं ?

समाधान— आभ्यातरमायवा इत्थमाय कहत हैं । अथात् पदनु या वस्तुस्थितिही  
उम व्यपग्यावा उमवा स्वमाय कहत हैं आ उमवा धीनरी गुण है भीर वाता परिस्थिति  
पर अरविचन लही है ।

दरगतिमें ६व नियममे ६ ॥ ५ ॥

क्याकि मीमा हा कायामे द्याक विरहका अभाव है ।

इहा प्रसार मरनशमिषोव लच्छ मराधमिद्धिमिमानशमिषो कुरु दर नियममे  
६ ॥ ६ ॥

इन्द्रो ? सञ्चकालेसु अचित्तणेण तेदिमेदोसिं मगमाभादा ।

इदियाणुवादेण एइदिया नृदरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता  
णियमा अत्थि ॥ ७ ॥

इदा ? एदंसिं पवाहस्म तिसु वि कालसु बाण्ठेदाभावादा ।

वेइदियत्तेइदियत्तउरिंदिय-पचिंदिय पज्जत्ता अपज्जत्ता णियमा  
अत्थि ॥ ८ ॥

सुगम ।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया  
वणफ्फदिकाइया णिगोदजीवा वादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता  
वादरवणफ्फदिकाइयपत्तेयमरीरा पज्जत्ता अपज्जत्ता तसकाइया  
तसकाइयपज्जत्ता अपज्जत्ता णियमा अत्थि ॥ ९ ॥

एदांसिं मगमाभ मगणविमसाण च पवाहस्म बोण्ठेदाभावादा ।

क्योंकि सब कालोंमें अस्तिव्यक्ती अपक्ता इनका सामान्य रूपोंस काइ मद्  
महीं है ।

इन्द्रियमागणारु अनुमार एरुन्द्रिय वादर सुह्म पपात्त अपर्याप्त जीव नियमम  
ह ॥ ७ ॥

क्योंकि इनके प्रवाहका तीनों ही कालोंमें व्युत्पत्त नहीं जाता ।

त्रीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय आर पचन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त नियमम  
ह ॥ ८ ॥

कायमागणानुमार शृषिर्षीकायिक, जलकायिक, तत्रकायिक, यापुकायिक, वन  
स्पतिकायिक निगादजीव वादर सुह्म पर्याप्त अपर्याप्त, तथा वादर वनस्पतिकायिक  
प्रत्यक्षररीर पपात्त अपर्याप्त, एव त्रसकायिक, प्रसकायिक पर्याप्त अपर्याप्त जीव  
नियमम ह ॥ ९ ॥

क्योंकि इन मागलाभों प मागणापिण्योके प्रवाहका व्युत्पत्त नहीं जाता ।

जोगाणुवादेण पचमणजोगी पचवचिजोगी कायजोगी ओरा  
लियकायजोगी ओरालियमिस्सकायजोगी वेउव्वियकायजोगी कम्म  
इयकायजोगी णियमा अत्थि ॥ १० ॥

सुगम ।

वेउव्वियमिस्सकायजोगी आहारकायजोगी आहारमिस्सकाय  
जागी सिया अत्थि सिया णत्थि ॥ ११ ॥

इदो ! सांतरसहावादो । अ च सहापो परपञ्चसुभोगारुदा, अइप्पसगादा ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदा पुरिमवेदा णसुसयवेदा अवगदवेदा  
णियमा अत्थि ॥ १२ ॥

गगापसाहस्सेव विच्छेदामाषादो ।

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई  
अकसाई णियमा अत्थि ॥ १३ ॥

योगमार्गानुसार पांच मनापोयी, पांच बचनयोगी, काययोगी, औदारिक  
काययोगी, औदारिकमिभकाययोगी, वैक्रियिककाययोगी और कार्मणकाययोगी नियमसे  
हैं ॥ १० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

वैक्रियिकमिभकाययोगी, आहारकाययोगी और आहारमिभकाययोगी  
कदाचित् हैं भी, कदाचित् नहीं भी हैं ॥ ११ ॥

क्योंकि इनका सास्तर स्वभाव है । और स्वभाव दूसरोंके प्रभुके योग्य नहीं  
होता क्योंकि देखा होनेसे अतिप्रसंग दाच जाता है ।

वेदमार्गानुसार स्रीवेदी, पुरुषवेदी, नृपुंसवेदी और अपगतवेदी तीन  
नियमसे हैं ॥ १२ ॥

क्योंकि गंगामन्त्राहक समान इनका विच्छेद नहीं होता ।

कायमार्गानुसार कोधकायी, मानकायी, मायाकायी, लोभकायी  
और अकायी तीन नियमसे हैं ॥ १३ ॥

गुणम ।

णाणाणुवाणेण मदिअण्णाणी मुत्तअण्णाणी विभगणाणी  
आभिणित्रोदिय-मुत्त ओहि-मणपज्जवणाणी केवलणाणी णियमा अत्थि  
॥ १४ ॥

पाणिना इदि इद्वृत्तपणिसिमा इत्थि कमा । न, इत्थान्तपुग्गिम-एत्थमपत्तिग  
मरुत्तिना उपपन्नएदमावृत्तपणम्म निशामाण मावृत्तमादा । उदा- एत्थण अग्गी व्रत्ति,  
मत्ता इत्थी एत्ति वि । मग गुणम ।

मनमाणुवाणेण मामाडय-उदात्तवृत्तवणमुद्धिमज्जा परिहारमुद्धि-  
मज्जा जहास्सात्तिहाग्गुद्धिमज्जा मज्जामज्जा अमज्जा णियमा  
अत्थि ॥ १५ ॥

गुणम ।

एद गृह मगम हे ।

मानमाणानुमाग मत्तिअग्गानी, भुत्तअग्गाना, विमग्गानी, आभिनिवाधिअग्गानी,  
भुत्तअग्गाना, अविधिअग्गानी, मत्त-एत्थपणानी भाग वानअग्गानी नियमम हे ॥ १४ ॥

द्वेष-गृहमे णत्तिना एत्ता इदुत्तममिद्वेषा वपों मरी विपा ।

मत्तपान-मरी वपोंदि इत्थान्त पुत्तिग धीर अत्तुगवत्तिग इत्थो उत्त  
अत्तपान-इत्तवत्तका विद्वत्ता मत्त वापा अग्गाना हे । द्वेष- एत्तए अग्गी अत्तिनि (एत्तएत्त  
अत्ति अग्गानी हे) मत्ता इत्थी अत्ति (मत्त इत्थी अग्गानी हे) । एत्ता अग्गी अत्ति इत्थी  
वत्तामे इत्तमावृत्तवत्तका मत्त इत्तपाना हे । एत्त गृह मगम हे ।

मत्तपान-एत्तपाना मामात्ति-उदात्तवृत्तवणमुद्धिमज्जा परिहारमुद्धिमज्जा, एत्ता  
एत्ताविहारमुद्धिमज्जा इत्तपानमज्जा अत्तपान अत्तपान अत्तपान हे ॥ १५ ॥

एद गृह मगम हे ।

सुदुमसांपराह्यसजदा सिया अतिय सिया णत्थि ॥ १६ ॥

एदं वि सुगम ।

दसणाणुवादेण चवसुदसणी अचक्खुदंसणी ओहिदसणी केवल-  
दसणी णियमा अतिय ॥ १७ ॥

एत्थं वि सुगम ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिया णील्लेस्सिया काउलेस्मिया तेउ-  
लेरिसिया पम्मलेस्सिया सुक्कलेस्सिया णियमा अतिय ॥ १८ ॥

सुगमं ।

भवियाणुवादेण भवमिद्विया अभवसिद्विया णियमा अतिय  
॥ १९ ॥

सिद्धिपुरस्कथा भविया षाम, तथ्विवरीया अभविया षाम । मिद्धा पुण न  
भविया ष च अभविया, तथ्विवरीयस्वरुत्तादो । तथा ते वि णियमा अत्थि ति किण्व

सुदुमसांपराह्यसजदा कदाचित् हैं भी और कदाचित् नहीं भी हैं ॥ १६ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

दशनमार्गजानुमार चसुदसणी, अचक्खुदसणी, ओहिदसणी और केवलदसणी  
नियमसे हैं ॥ १७ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिया, णील्लेस्सिया, काउलेस्मिया, तेउ-  
लेरिसिया, पम्मलेस्सिया और सुक्कलेस्सिया नियमसे हैं ॥ १८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

भवियमार्गजानुमार भवमिद्विक और अभवमिद्विक नियमसे हैं ॥ १९ ॥

सिद्धिपुरस्कथा भविया षाम और तथ्विवरीया अभविया षाम इतसे विपरीत जीवोंको  
अमध्य कहते हैं । सिद्ध जीव न था मध्य ही है और न अमध्य भी है क्योंकि कदा  
स्वरूप मध्य और अमध्य दोनोंसे विपरीत है ।

ईकं—मध्य न अमध्योंके समान सिद्ध भी नियमसे है इस प्रकार क्यों

बुध ! न, ऋषमाहियारे सिद्धात्मवषयाण समधामाषादो । सेस सुगम ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठी वेदगसम्माइट्ठी ( स्वइयसम्माइट्ठी )  
मिच्छाइट्ठी गियमा अत्थि ॥ २० ॥

सुगम ।

उवसमसम्माइट्ठी ( सासण ) सम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी सिया  
अत्थि, सिया णत्थि ॥ २१ ॥

इदो ! एदेसिं रिण्ढ मगणावयप्पाण मातरसरुवचदमप्पादो ।

मणियाणुवादेण सण्णी अमण्णी गियमा अत्थि ॥ २२ ॥

सुगम ।

आहाराणुवादेण आहारा अणाहारा गियमा अत्थि ॥ २३ ॥

एद पि सुगम ।

एव शाण्डिल्यवेदि मगविषयाशुगमो समतो ।

नहीं कहा ?

समाधान—नहीं क्योंकि वषकाधिकारमें मषयक सिद्धोंकी संभावनाका समान  
है । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

सम्यक्त्वमागणानुसार सम्यग्दृष्टि, वदकसम्यग्दृष्टि, ध्यापिकसम्यग्दृष्टि और  
मिथ्यादृष्टि नियममें हैं ॥ २० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपश्रमसम्यग्दृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्मामिथ्यादृष्टि कदाचित् हैं मी  
और कदाचित् नहीं मी ॥ २१ ॥

क्योंकि हम तीन मागणाममेंवोंका साम्तर स्वरूप देखा जाता है ।

सद्धिमार्गानुसार सद्धी और असद्धी बीच नियममें हैं ॥ २२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहारमार्गानुसार आहारक और अनाहारक बीच नियममें हैं ॥ २३ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

इस प्रकार जाना तीनोंकी भवेसा मंगदिव्ययानुगम समाप्त हुआ ।



## द्वयपमाणाणुगमो

द्वयपमाणाणुगमेण गदियाणुवादेण गिरयगदीए णेरइया द्वय  
पमाणेण केवडिया ? ॥ १ ॥

एदाआ मग्गणाआ सम्बझलमत्थि एदाआ च सम्बझल णरिप ति भाषात्रीर  
भगविचयाणुगमय आणविय सपहि तासु मग्गवासु द्विद्वीवाप पमाणपरुणपई  
इत्थापिआगहारमागदं । गिरयगदिवयण समगदीण पठिमहा कथा । णेरइया ति  
वयणेण गिरयगदमंइणरइयवदिरित्तइग्गदीण पडिसहा कथो । एवरपमालेण ति वयण  
खचपमाणादीणं पडिसहा कथो । केवडिया इदि भासंका आइरियस्म ।

असंखेज्जा ॥ २ ॥

सखंज्जात्थंठाण पडिसेइहुममरुअवयण । एदं पि तिदिई अमंखज्जं । एव  
एवहि अमंखज्जं णरइयामी टिहा पि आणवणहुमचरमुत्तं मणदि—

असखेज्जासखेज्जाहि ओसपिणिउत्सपिणीहि' अवहिरंति  
कालेण ॥ ३ ॥

द्रव्यप्रमाणानुसमसे गतिमार्गानुसार नरकगतिकी अपघा नारकी बीज द्रव्य  
प्रमाणसे कितन हैं ? ॥ १ ॥

ये मार्गप्राये सर्वकाळ ई और ये मार्गप्राये सर्वकाळ पही हे इस प्रकार  
बाना बीजोंकी अपेक्षा संभवियानुगमसे अतथाकर अब जब मार्गप्रायोंमें विपत बीजोंके  
प्रमाणके निरूपणार्थे द्रव्यानुयोगद्वार प्राप्त होता है । परकगतिके बचनसे होय गतिबोध  
प्रतिषेध किया है । 'नारकी' इस बचनसे नरकगतिसं सम्बद्ध नारकिकीके अतिरिक्त अन्य  
द्रव्याधिकीका प्रतिषेध किया है । 'द्रव्यप्रमाणसे' इस प्रकारके बचनसे अक्षप्रमाणाधिकीका  
प्रतिषेध किया है । कितने हैं इस प्रकार यह साधारण्यी भाषांतर है ।

नारकी बीज द्रव्यप्रमाणस असंख्यात हैं ॥ २ ॥

संख्यात व अस्मत्के प्रतिषेधके द्विषे असंख्यात बचन है । यह असंख्यात  
की तीन प्रकार है । उनमेंसे इस असंख्यातमें नारकगति स्थित है इस बातके सापकार्य  
उत्तरसूत्र करते हैं —

कसकी अपेक्षा नारकी बीज असंख्यातानंरुपात अवसर्विणी और उत्सर्विणि  
पोसे अपहृत होते हैं ॥ ३ ॥



पयारमिदि सन्धिज्जायङ्मुचरसुचं मणदि—

तासिं सेढीण विक्खमसूची अगुलवग्गमूल विदियवग्गमूलगुमि  
देण ॥ ६ ॥

अभिअंगुलपदमवग्गमूले अभिअंगुलस्स विदियवग्गमूलगु गुमिदे तासिं सङ्कीर्णं  
विक्खमसूची इदि । गुमिदेशात्ति मेदं उदियाए एगवयण, किंतु सप्तमीए एगवयणेव  
पदमाए एगवयणेण' वा होदग्गमण्णाहा सुचङ्खसवपामावादे । एत्थ सामण्णगेरइयार्णं बुव  
विक्खमसूची नेव गेरइयमिच्छाद्दुदीर्णं जीवङ्गाजे परुविदा, कप तेमेदं ण विरुञ्जेदे ? व  
विरुञ्जेदे, आत्तावमेवामावादे । अग्गदो पुण मेदो अत्थि येव, सामण्ण-विसेसविक्खम  
सूचीर्णं समावचविरोहत्थो । मिच्छाद्दुदुविक्खमसूची सपुण्यवणगुलविदियवग्गमूलमत्ता  
किम्प येप्पेदे ? ण, सामण्णगेरइयाण परुविदपर्णगुलविदियवग्गमूलविक्खमसूचिणा  
पदेव सुरार्चसुचोय सह विरोहादो । ण त पि सुचमिदि पच्चवङ्गादुं सुच, सुरावपुन-

व्यातासंख्यात मी ज्ञेक प्रकार है मता उसके निर्णयार्थ उक्त सूत्र कहते हैं—

तत्र अगभजिपौकी विष्कम्भसूची सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलमे गुणित तस्यै  
प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ॥ ६ ॥

सूच्यगुलके प्रथम वर्गमूलका सूच्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे गुणित करनेपर  
जब अगभजिपौकी विष्कम्भसूची आती है । वहाँ सूच्यमें गुणितेण यह पर तृतीयाक्ष  
एकबचन नहीं है किन्तु सप्तमीका एक बचन वा प्रथमाका एक बचन होना  
चाहिये, अन्यथा सूच्यके अर्थका सम्बन्ध नहीं बैठता ।

शुद्ध—यहाँ जो सामान्य मारुकिपौकी विष्कम्भसूची कही गई है वही जीव-  
व्याजमें मारुकी मिष्पावटिपौकी कही गई है उसके साथ यह विरोधको कैसे व प्राप्त  
होमा ?

समाधान—जीवव्याजसे इस कथनका कोई विरोध न होगा क्योंकि यहाँ  
माहापमेवका समाव है । परमार्थसे तो मेव ही क्योकि सामान्य व विशेष विष्कम्भ-  
सूचियोंमें समावताका विरोध है ।

शुद्ध—मिष्पावटिपौकी विष्कम्भसूची सगूर्ण-धर्मागुलके द्वितीय वर्गमूल  
प्रमाण क्यों नहीं ग्रहण करते ?

समाधान—वहाँ क्योकि वैसा माननेपर इसका सामान्य मारुकिपौकी धर्मा  
गुलके द्वितीय वर्गमूलमात्र विष्कम्भसूचीको प्रकृष्ट करनेवाले इस सुप्रबन्धसूच्यके साथ  
विरोध हाया । वह भी तो सूत्र है इस प्रकार विरोध उत्पन्न करना मी कथित नहीं है ।

संपारस्त तस्त एदम्हादो पहाणत्तामावादो । तम्हा एत्तयतमविकर्म्ममग्धी संपुष्पघणगुल-  
विदियवग्गमूलमेत्ता, मिच्छद्दक्खिविक्खमग्धी पुण किंघुणघणगुलविदियवग्गमूलमेत्ता ति  
येत्तम् । एत्थ विक्खमग्धी-अपहारफालदव्याण खंडिद माग्धिद विरत्तिद अबहिद पमाण  
कारण-णिठ्ठि विवप्पहि परूबणा षायम्हा ।

एव पढमाए पुढवीए गेरइया ॥ ७ ॥

सामण्यगेरइयाण पमाण क्व पढमाए पुढवीए गेरइयाण इदि ? ण, दाण्हमालावाणं  
मेत्तामावादो । अत्थदा पुम अत्थि मेत्तो, अप्पहा छण्ण पुढवीण वरइयाणममाणप्प  
सगादो । तम्हा पुष्पिच्छविक्खमग्धी एगरूबस्म असंखन्धदिमाण्ण्णा पढमपुढविणार  
इयाणं विक्खमग्धी इदि । मेत्तं आग्धिद्व वत्तम् ।

विदियाए जाव सत्तमाए पुढवीए गेरइया दन्वपमाणेण केव  
इया ? ॥ ८ ॥

एदमासंख्यसुत्त सरउन्नामउन्नाणतसत्ताणमयेक्खदे । एत्थ तिसु वि संखासु

क्योंकि सुद्धकम्भके उपसंहारसूत्र वस सूत्रके इस सूत्रकी अपेक्षा प्रथमतयाका अभाव है ।  
इसलिये यहाँकी विष्कम्मसूची समूह्य धर्मागुलके द्वितीय धर्मागुलमात्र और मिष्पाइदि  
योंकी विष्कम्मसूची कुछ कम धर्मागुलके द्वितीय धर्मागुलमात्र है, ऐसा ग्रहण करना  
चाहिये । यहाँपर विष्कम्मसूची व अयहाएकाम प्रथ्योका परिष्ठित भागित विगठित  
अपहत प्रमाण कारण निरुक्ति और विवरण, इनके द्वारा प्रकल्प करना चाहिये ।  
( दृष्टिये जीवस्थान-अध्ययप्रमाणानुगम सूत्र १७ की टीका ) ।

सामान्य नारकियोंके समान ही प्रथम पृथिवीके नारकियोंका द्रव्य  
प्रमाण है ॥ ७ ॥

प्रश्न—सामान्य नारकियोंका प्रमाण प्रथम पृथिवीके नारकियोंका कैसे हो  
सकता ?

समाधान—यहाँ क्योंकि ज्ञानों आत्मार्थोंमें कोई भेद नहीं है । परन्तु परमार्थस  
भेद है ही अन्वया छह पृथिवीयोंके नारकियोंके अभावका प्रसंग होगा । इस  
कारण पूर्व विष्कम्मसूची एक रूपके असंख्यातयें भागस हीन होकर प्रथम पृथिवीके  
नारकियोंकी विष्कम्मसूची होती है । शय जानकर कहना चाहिये ।

द्वितीय पृथिवीस उपर सातवीं पृथिवी तक प्रत्येक पृथिवीके नारकी द्रव्य  
प्रमाणसे कितने हैं ? ॥ ८ ॥

यह आशावासूत्र संख्यात असंख्यात और अनन्त संख्याकी अपेक्षा रहता है ।

एदीए सखाए बिदिपादिछप्पुडबिगरहया अबडिदा पि ज्ञानायणहुमुत्तरमुत्त मबदि ।  
अघवा, बिदिपादिछप्पुडबिगरहया भागता, आपजेरयाजमर्पतसखाभावादे । तदो दोम्ब  
संखार्य मन्ने एदीए संखाए छप्पुडबिगेरहया अबडिदा पि ज्ञानायणहुमुत्तरमुत्तमागर्-  
-

असखेज्जा ॥ ९ ॥

असखेज्जमयणेण सखेज्जस्म पडिसहा कदा । अमग्गेज्जं पि परिण-सुत्त म  
खेज्जामयं अमेण तिबिहं । एत्थ एदमिह असखं अ छप्पुडबिदम्बमवडिदमिदि ज्ञापा-  
वधं कस्सपमाणपरुवणमुत्तमागर्-

असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण

॥ १० ॥

एदम असखे जामेण अमयणेण परिण मुत्तासंखेज्जामं पडिसेहा कदा । एद पि  
असंखेज्जासंखेज्जं अहण्णुक्कस्स-तम्बदिरिचमेएण तिबिहं । एत्थ एदमिह सखाविमेमे  
छप्पुडमिदमं हादि पि ज्ञानायणहुमुत्तरं सुत्तपमाणपरुवणमुत्तमागर्-

एव तीनों ही संख्याओंमेंसे इस संख्यामें द्वितीयादि छह पृथिवियोंके नारकी अवस्थित  
हैं इसके ज्ञापनार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं । अथवा द्वितीयादि छह पृथिवियोंके नारकी  
बलन्त यहीं हैं क्योंकि, सामान्य नारकीयोंके बलन्त संख्याका अभाव है । इसलिये वा  
संख्याओंके मध्यमें इस संख्यामें छह पृथिवियोंके नारकी अवस्थित हैं इसके ज्ञापनार्थ  
उत्तर सूत्र मान्य होता है—

द्वितीयादि छह पृथिवियोंके नारकी द्रव्यप्रमाणमे असंख्यात हैं ॥ ९ ॥

असंख्यात इस बचनसे संख्यातका प्रतिपक्ष किया गया है । असंख्यात भी  
परीतासंख्यात युक्तासंख्यात और असंख्यातासंख्यातक भेदसे तीन प्रकार है । इनमेंसे  
इस असंख्यातराशिये छह पृथिवियोंके द्रव्यका अवस्थान है, इसके ज्ञापनार्थ काठ  
प्रमाणकी प्रकृष्टता करनेवाला सूत्र मान्य होता है—

द्वितीय पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक प्रत्येक पृथिवीके नारकी कसकी  
अपेक्षा असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी और वसर्पिणियोंसे अपहृत होते हैं ॥ १ ॥

इस असंख्यातासंख्यात बचनसे परीतासंख्यात और युक्तसंख्यातका प्रति  
पक्ष किया गया है । यह असंख्यातासंख्यात भी अज्ञेय उत्कृष्ट और तद्द्रव्यतिरिक्तके  
भेदसे तीन प्रकार है । इनमेंसे इस संख्याविशेषमें छह पृथिवियोंका द्रव्य है इसके  
ज्ञापनार्थ अपना क्षेत्रप्रमाणप्रकृष्टताका सूत्र मान्य होता है—

खेत्तेण सेडीए असखेज्जदिमागो ॥ ११ ॥

एवेण अगसेडीदो उषरिमवियप्पाण पडिसहो कदो । अत्रसेसदोसग्गाण मन्ने  
पदीए सग्गाए द्विदिमिदि जाणावणहुमुत्तरसुत्तं मणदि—

तिस्से सेडीए आयामो अमखेज्जाओ जोयणकोडीओ ॥१२॥

एवेण मूचिअगुलादिहेद्विमवियप्पाण पडिसहो कदा, मूचिअगुलादिद्विममत्ताए  
असखज्जअपत्तामावदो । त पि सम्भदिरित्तअसखज्जअसखज्जअपत्तामावणकोडिमत्त  
होदूण अणेयवियप्प । तण्णिण्णयकरणहुमुत्तरसुत्तं मणदि—

पढमादियाण सेडिवग्गमूलाण सखेज्जाणमण्णोण्णव्वासो ॥१३॥

संदिपट्टमवग्गमूलमार्दि कदूण आब धारमम-दसम अहुम-छट्ट-तदिय विदियवग्ग  
मूला चि पुष पुष गुण्णगारगुणिज्जमाण कमणावद्विदछण्ह वग्गपत्तीणमण्णाण्णव्वासो कद्वे

क्षेत्रक्षी भपक्षा द्वितीय पृथिवीमे छकर सातवीं पृथिवी तक प्रत्येक पृथिवीक  
नारकी अगभणीक असम्प्यातयें मागप्रमाण हैं ॥ ११ ॥

इस सूत्रक द्वारा अगभणीसे उपरिम विकस्योक्ता प्रतिषेध किया गया है । अथ  
शेष दो सख्याओंके मध्यमें इस संख्यामें उक्त द्रव्य स्थित है इसक आपमाथ उत्तरसूत्र  
करत हैं—

अगभणीके असम्प्यातयें मागकी उस अधीका आपाम असम्प्यात योजनकोटि  
है ॥ १२ ॥

इस सूत्रक द्वारा सूर्यगुलादि मयलन विकस्योक्ता प्रतिषेध किया गया है  
क्योंकि, सूर्यगुलादिरूप अघस्तन संख्यामें असंख्यात योजनसंख्या भयाप है । यह  
तत्त्वतिरिक्त असंख्यातासंख्यात असंख्यात योजनकोटिप्रमाण होकर अनेक विकसरूप  
है । इसका निषेध करनक छिये उत्तर सूत्र करत हैं—

तपयुक्त असंख्यात कोटि योजनोक्ता प्रमाण मयमादिक संख्यात अगभणीवर्ग-  
मूलोंके परस्पर गुणनफल रूप है ॥ १३ ॥

अगभणीके मयम अगमूयको भावि करके उसके चारहयें दशयें आठवें छठ  
तीसरे भीर दसरे वर्गमूल तक पूर्य पूर्य गुणकार व गुण्य नमस मयस्थित छह वर्ग

ब्रह्मकामेय विदिय तदिय-वउरव-पचम छन्द-सप्तमपुढविद्वन्वपमाण हादि । कचमेधियाय  
 नेव सेद्विबग्गमूलाजमञ्जोष्मन्मासादा एदिस्स एदिस्से पुढवीए दण्न होदि सि बन्वदे ।  
 य, अक्षरियपरंपरामद्विबुद्धावदमेण सुदवगमादो । उच च—

भास दस अहेन य मूला छ सिग दूग च मिरएद्ध ।

एकास गर सठ य पण य चउररु च एवेसु ॥ १ ॥

तिरिक्स्वगदीए तिरिक्स्वा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १४ ॥

एदमासंक्षुत्त संसुज्जासये जाणतापि अरेकएद ।

अणत्ता ॥ १५ ॥

एदम संखे-असंखेज्जासं पडिसेहो कदा । सं च अणत्तं परिच-उच प्रवता-  
 पंतमेएण तिथियर्थं । तस्य एदमिह अर्थे तिरिक्खा छिदा सि जाणावणद्वुगगिहसुत्त  
 भागदं—

राशियोंका परस्पर गुणा करनेपर पचासमसं द्वितीय तृतीय चतुर्थ पंचम षष्ठ और  
 सप्तम पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण होता है ।

संख — इतने ही अणुओंपर्यन्तमूर्खोंके परस्पर गुणमसे इस दम पृथिवीका द्रव्य  
 होता है वह कैसे जाता जाता है ?

समाधान — नहीं क्योंकि व्याख्यार्थपरस्परगत मन्त्रिद्व उपदेशसे अक्षका ज्ञान  
 प्राप्त है । कहा भी है—

गरुडोंमें द्वितीयादि पृथिवियोंका द्रव्यप्रमाण छानेके द्विये अणुओंका  
 बारहवां दशवां ब्याठवां छठा तीसरा और बृहता वर्गमूख भवहारकाळ है । तथा वेदोंमें  
 छात्रकुमारदि पंच कल्पयुगलोंका द्रव्यप्रमाण छानेके द्विये अणुओंका प्यारहवां  
 तीसरा स्यातवां पंचवां और बीया वर्गमूख भवहारकाळ है ॥ १४ ॥

तिर्यचगतिमें तिर्यच जीव द्रव्यप्रमाणसे कितने हैं ? ॥ १४ ॥

यह भाशंकासूत्र संख्यात असंख्यात और अनन्तकी अपेक्षा रखता है ।

तिर्यचगतिमें तिर्यच जीव द्रव्यप्रमाणसे अनन्त हैं ॥ १५ ॥

इस सूत्रसे संख्यात और असंख्यातका प्रतिषेध किया गया है । वह अनन्त भी  
 परीतानन्त पुक्तानन्त और अनन्तानन्तके भेदसे तीन प्रकार है । वनमेंसे इस अन्तमें  
 तिर्यच जीव स्थित है इसके व्यापकार्ये उपरिम सूत्र प्राप्त होता है—

अणताणताहि ओसपिणि-उस्मपिणीहि ण अवहिरति कालेण

॥ १६ ॥

किमद्भुमणताणताहि ओसपिणि-उस्मपिणीहि तिरिक्का ण अवहिरिञ्जति ? अतीन्द्रलगाहपादो । अवहरिदे संते को दोसो ? ण, मध्यजीवाण सम्भसिं षोच्छेद प्यसगादो । एदेण परिच-शुचापताणं पडिसेहो क्खो । अणताणतं पि ब्रह्मणुक्कस्स तम्भिरिचमेएण तिविहं होदि । तस्य एदम्हि अणताणते तिरिक्का षुद्धा धि जाणानप्यद्भु सुवरिद्धिसुचमागदं—

स्वेत्तेण अणताणता लोगा ॥ १७ ॥

एदेण ब्रह्मण्यअणताणतस्स पडिसेहो क्खो । कुद्धा ? तस्य अणताणतलांगामम मावादो । एद पि कर्षं णम्भे ? लोगेण ब्रह्मणे अणताणते मागे दिवे लद्धम्मि अणता

तिर्यच बीष कालकी अपेक्षा अनन्तानन्त अवसरिणी और उत्सर्पिणियोंसे अपहृत नहीं होते हैं ॥ १६ ॥

शुक्र—तिर्यच बीष अमन्तानन्त अक्षरपिणी और उत्सर्पिणियोंसे क्यों नहीं अपहृत होते ?

समाधान—क्योंकि यहाँ केवल अतीत कालका ग्रहण किया गया है । ( देखो बीषरुचाल-ब्रह्मण्यमाणाशुगम पृ २९ ) ।

शुक्रा—अमन्तानन्त अक्षरपिणी और उत्सर्पिणियोंसे इनके अपहृत होनेपर कौनसा दोष उत्पन्न होता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि ऐसा होनेपर सब मय बीषोंके ध्युच्छेदका प्रसंग जाता है ।

इस शुक्रके द्वारा परितानन्त और युक्तामन्तका प्रतिषेध किया गया है । अमन्तामन्त भी अक्षर्य उत्कृष्ट और तद्व्यतिरिक्तके अक्षरसे तीन प्रकार है । उनमेंसे इस अमन्तानन्तमें तिर्यच बीष कियत है इसके आपत्कार्य उपरिम शुक्र प्राप्त होता है—

तिर्यच बीष क्षेत्रकी अपेक्षा अनन्तानन्त लोकप्रमाण है ॥ १७ ॥

इस शुक्रके द्वारा अक्षर्य अमन्तानन्तका प्रतिषेध किया गया है क्योंकि अक्षर्य अमन्तामन्तमें अमन्तानन्त लोकका अभाव है ।

शुक्रा—यह भी कैसे जाता जाता है ?

समाधान—क्योंकि लोकका अक्षर्य अमन्तानन्तमें भाग इनपर अक्षर्य राशिमें



णतसंखामावादे । एकस्सापतापतस्म चि पडिसेहो कदो, अणतापतापि सम्पपत्रयपदम  
बगामूठाणि चि अमभिद्वज अपतापता स्मगा चि गिरेमादो ।

पंचिदियतिरिक्ख-पंचिदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिदियतिरिक्खजो  
णिणी-पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १८ ॥

एदमासकामुचं मण ज्ञामसुत्रं अणतापि अवेकउदे' ।

असंखेज्जा ॥ १९ ॥

एदेण मंखेज्जापतापं पडिसेहो कदा, असंखे-अम्मि तदुमयसंभविणेहाहा ।  
त पि असंखेज्ज परिच सुत्त असंखे-ज्जामंखेज्जमएण निविडं । तन्व इमम्मि अमंखज्ज  
एदेमिभबहुणमिदि जाणावगामुत्तमुत्त मणदि —

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओमपिणि उस्सपिणीहि अवहिरंति  
फालेण ॥ २० ॥

एदेण परिच-सुत्तामखेज्जाम पडिसेहो कदो, तत्त असंखेज्जामंख-ज्जामं

अमन्तामन्त संख्यावा अमाव है ।

उत्तुय अमन्तामन्तका मी प्रतिपद्य क्रिया गया है क्योंकि अमन्तामन्त सर्व  
पयाथाक प्रथम बगामूठ देसा न कहकर अमन्तामन्त साक पसा निर्देश क्रिया है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यच, पञ्चन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त, पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमयी और  
पंचन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणम जितन है ? ॥ १८ ॥

एह माणकाएण संख्यात्त असंख्यात्त और अमन्तकी अपसा कएता है ।

उपपुक्त तिर्यच द्रव्यप्रमाणमे अमंख्यात्त है ॥ १९ ॥

इसके द्वारा संख्यात्त व अमन्तका प्रतिपद्य क्रिया गया है क्योंकि अमंख्यात्तम  
संख्यात्त व अमन्त इन दोनोंकी संभावनाका विरोध है । वह असंख्यात्त मी परीतासंख्यात्त  
युक्तासंख्यात्त और असंख्यात्तासंख्यात्तके भेदसे तीन प्रकार है । उनमेंमे इस अंशक्यात्तमे  
उक्त मीथाका अपख्यात्त है इसके कारणार्थ उत्तर सूत्र कहन है—

उक्त पारो तिर्यच जीव कालकी अपघा अमन्त्यातामस्यात्त अवमपिणी और  
उत्तपिणियोम अपहन हात है ॥ २ ॥

इस सूत्र द्वारा परीतासंख्यात्त और युक्तासंख्यात्तका प्रतिपद्य क्रिया गया है,

ओसपिणि-उस्मपिणीणमभावदो । एदेण चेव अहण्णअमखज्जासउन्नस्स वि पडिमेदो  
 क्खो । कुदो ? तस्य वि असखेज्जासखे-जाण ओसपिणि उस्मपिणीणमभावदो । अ  
 सेमसु दोसु अमखेज्जासखेज्जसु कम्मि असखेज्जासखे-जे इम होदि पि प्राणावणह  
 सुत्तरसुत्तं मणदि—

त्वेत्तेण पंचिदियतिरिक्त्वा-पंचिदियतिरिक्त्वापञ्जत्त-पंचिदिय  
 तिरिक्त्वाजोणिणि पंचिदियतिरिक्त्वापञ्जत्तएहि पदरमवहिरदि देवअव  
 हारकालादो असखेज्जगुणहीणेण कालेण मखेज्जगुणहीणेण कालेण  
 सखेज्जगुणेण कालेण असखेज्जगुणहीणेण कालेण ॥ २१ ॥

बेहप्राणगुलसद्वग्गपमाणदेवअवहारकालमावलिपिए असखेज्जदिमाणेण खडिदे  
 पंचिदियतिरिक्त्वाव अवहारकालो होदि । तस्मिं खव देवअवहारकाले सप्पाओमामखेज्ज  
 रूखहि माग हिद पदरगुलसस मखेज्जदिमागा आगच्छदि । सा पंचिदियतिरिक्त्वा  
 पञ्जत्तामवहारकाला इदि । देवावहारकाल सखेज्जरूखेहि गुण्णिदे पंचिदियतिरिक्त्वा  
 ओपिणीणमवहारकालो होदि । देवअवहारकाल आवलिपिए असखेज्जदिमाणेण माग

क्योंकि, उन दोनों में असख्यातासख्यात भवसंपिंबी उस्तसंपिंबियोंका भवाप है ।  
 इन्हीं ही अण्ड्य असख्यातासख्यातका भी प्रतिषेध किया गया है क्योंकि अण्ड्य  
 असख्यातासख्यातमें असख्यातामख्यात भवसंपिंबी उस्तसंपिंबियोंका भवाप है । भवदोष  
 हो अमख्यातासख्यातोंमेंस किस असख्यातामख्यातमें उक्त निषेध जीव है इसका  
 वापनार्थ उक्त सूत्र कहते हैं—

ध्वप्रकी अपेष्ठा पंचन्ट्रिय तिपच्च, पंचन्ट्रिय तिपच्च पयाप्त, पंचन्ट्रिय तिपच्च  
 यानिमती और पंचेन्ट्रिय तिपच्च अपयाप्त जीवोंके द्वारा क्रमशः देवअवहारकालम  
 अमख्यातगुण हीन कालमें, सख्यातगुण हीन कालमें, सम्ख्यातगुण सत्तस और अ  
 म्यातगुण हीन कालमें अगप्रतर अपहत इता है ॥ २१ ॥

हो सा उक्तम सूत्रगुलके धर्मप्रमाण देवअवहारकालको भाष्यीके अमख्यातमें  
 मागस स्थित करनेपर पंचन्ट्रिय तिपच्चोंका अयहारकाल होता है । उर्ही देवअवहार  
 कालको तत्रावाग्य अख्यात रूपोंस भासित करनेपर प्रतरांतगुलका संख्यातकी माग  
 जाता है । वह पंचेन्ट्रिय तिपच्च पयाप्त जीवोंका अयहारकाल होता है । देवअवहार  
 कालका संख्यात रूपोंसे गुणित करनेपर पंचन्ट्रिय तिपच्च यानिमती जीवोंका अयहार  
 काल जाता है । देवअवहारकालमें भावनीच असख्यातमें मागका माग देवपर प्रतरांत

हिंदे पदरंगुलस्य असखे-त्रिदिभागो आगच्छति । यो पंचिदियतिरिक्त्वा अपञ्जत्तापम  
 हारकालो होति । एदे अवहारकाले महाकमेण ससागहृदे इविय पंचिदियतिरिक्त्वा  
 पंचिदियतिरिक्त्वापञ्ज-पंचिदियतिरिक्त्वाओमिणी-पंचिदियतिरिक्त्वापञ्जत्तापमात्रेण अग-  
 पदर अचिदिरिन्त्रमात्रे ससगात्रो अगपदरं च सुगमं समर्पति । तत्प एगपारमवदि  
 रिदपमाण महाकमेण पंचिदियतिरिक्त्वा पंचिदियतिरिक्त्वापञ्जत्ता पंचिदियतिरिक्त्वा  
 ओमिणीया पंचिदियतिरिक्त्वापञ्जत्ता च ह्येति चि बुच होति । एदेण एदेति  
 अगपदरस्य असखे-त्रिदिभागत्परूपेण सुतेण उक्त्वासासंखे-त्रिदिभागस्य पंचिदिये  
 करो । य च तस्मदिदिचस्य असखे-त्रिदिभागस्य सस्यस्य गह्वर, कथतमसस्यविपप्याचं  
 पंचिदिये कथञ्च तस्येकत्रियप्यस्यत्र विप्ययसरूपेण परुदित्वादे ।

मणुसगदीए मणुस्मा मणुसअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ?

॥ २२ ॥

पदमासकमुत्त संखे-त्रिदिभागस्य अर्थात्तरकं । सेस सुगमं ।

असखेज्जा ॥ २३ ॥

शुद्धय असंख्यातया भाग जाता है । यह पंचेन्द्रिय तिर्यक अवर्षांत जीवोंका अवहारकाल  
 होता है । इस अवहारकालोंको पद्याक्रमसे शाखाकामूल स्थापित कर पंचेन्द्रिय तिर्यक  
 पंचेन्द्रिय तिर्यक पर्वत पंचेन्द्रिय तिर्यक योमिमती और पंचेन्द्रिय तिर्यक अवर्षांतोंके  
 प्रमाणस्य अगमतरके अग्रहत करनेपर शाखाकायें और अगमतर एक साथ समाप्त  
 होते हैं । उनमें एक बार अग्रहत प्रमाण पद्याक्रमसे पंचेन्द्रिय तिर्यक पंचेन्द्रिय तिर्यक  
 पर्वत पंचेन्द्रिय तिर्यक योमिमती और पंचेन्द्रिय तिर्यक अवर्षांत जीव हात हैं यह एक  
 कथनका अभिप्राय है । इन जीवोंके अग्रमतरक असंख्यातयें माणस्वका प्ररूपण करने  
 बाल इस मूलके द्वारा इरूप असंख्यातासंख्यातका प्रतिपेय किया गया है । और  
 तद्व्यतिरिक्त असंख्यातासंख्यातका भी सबका प्रहण नहीं होता क्योंकि इसके सब  
 विकल्पोंका प्रतिपेय करने उनमेंसे एक विकल्पका ही निर्णयस्वरूपसे निरूपण किया  
 गया है ।

मनुष्यप्रतिमें मनुष्य और मनुष्य अवर्षांत द्रव्यप्रमाणमें कितने हैं ? ॥ २२ ॥

यह माणस्वमूल संख्यात असंख्यात व अग्रमतरकी अपेक्षा रखता है । शेष मूलार्थ  
 सुपम है ।

मनुष्य और मनुष्य अवर्षांत द्रव्यप्रमाणसे अर्थात्तरक है ॥ २३ ॥

एदण वयणेण संरिन्जाणवाप पडिसहो कटो, पडिवक्खमिराकरणेण सक्कउ' पदुप्पायप्पादो । त पि अर्मखेन्न तिवियप्पमिदि कटु इदमिदि गिष्ठाओ गरिय । इद चय होदि ति गिष्ठायउप्पायणद्धसुत्तरसुध मपदि—

असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्मप्पिणीहि अवहिरति कालेण ॥ २४ ॥

एदेण परिण जुत्तामरुज्जाप पडिसहो कटो, पडिवक्खमिसेह क्खअण असखेज्जा- गरोन्नववणस मक्कउ'पदुप्पायप्पादा । त पि बहण्णुक्कम्मस सप्पदिरिचमेएय तिविह मिदि कटु न तस्य गिष्ठाओ अरिय । तस्य गिष्ठाउप्पायणद्धसुत्तरसुध मपदि—

खेत्तेण सेढीए असखेज्जदिभागो ॥ २५ ॥

एदेण उक्कत्तअसउज्जासंरुन्नवस्म पडिसहो कटो, सेढीए असखेज्जदिभागस्म

इस धम्मस संख्यात व असंख्यातका प्रतिषेध किया गया है क्योंकि प्रति पक्षका निराकरण करनेस अपने पक्षका प्रतिपादन हाता है । यह असंख्यात भी तीन प्रकार है ऐसा करके उनमेंसे 'यह असंख्यात है इस प्रकार निर्णय नहीं है' अतः यही असंख्यात है इसका निर्णय उत्पन्न करनेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

मनुष्य और मनुष्य अपर्याप्तक कालकी अपेक्षा असंख्यातासख्यात असर्पिणी उत्सर्पिणियोसि अपहृत हाते हैं ॥ २४ ॥

इस सूत्रके द्वारा परीतासंख्यात और युक्तासंख्यातका प्रतिषेध किया गया है क्योंकि प्रतिपक्षका सिधेध करके असंख्यातासंख्यात बचनको स्वयस निकरण करना है । यह असंख्यातासंख्यात भी अधम्य उत्कृष्ट नीर तद्व्यतिरिक्त मध्ये तीन प्रकार है ऐसा करके उनमें विशेष निश्चय नहीं है । अतः उक्त तीन मेंसे विशेषके निश्चयोत्पादिसार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा मनुष्य व मनुष्य अपर्षस अगभेज्जके असंख्यातवें मागप्रमाण है ॥ २५ ॥

इसके द्वारा उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातका प्रतिषेध किया गया है क्योंकि

१ प्रतीय उक्कत्त इति पाठः ।

२ अतरी ति इति पाठः ।

रूपपरिचायतचिरादादा' । सेतेसु दासु एकस्य अवयवजहृष्टरसुत्तं मणदि—

तिसे सेठीए आयामो असस्वेज्जाओ जोयणकोडीओ ॥२६॥

एदेण बह्व्यजस्रदेज्जासंखेज्जसस पबिसेहो क्खे । कुदो ? तस्य असंखेज्जाओ  
जोयणकोडीममादाओ । असंखेज्जाओ आयणकोडीओ वि अपेयवियप्पाओ सि क्खस्य  
विच्छपामादाओ तस्य सुद्धु विच्छुप्पायणजहृष्टरसुत्तं मणदि—

मणुस मणुसअपज्जत्तएहि रूव रूवापनिस्वत्तएहि सेठी अवहि  
रदि अंगुलवग्गमूल तदियवग्गमूलगुणिदेण ॥ २७ ॥

अभिअंगुलपदमवग्गमूल तस्सेव तदियवग्गमूलस्य गुणिय ससागभूर्द ठवि  
रूवाहियमनुस्सरासिपमाअस सेठि अवहिरिज्जदि । किमई रूवस्य पक्खंवा कीरेदे ?  
क्खसुम्माए सेठीए वेआअमणुसरासिदि अवहिरिज्जमाणे अवहारससागमेचरूवाव

अपभेणीक एक काम परीतान्तपमका विरोध है । सब शेष वा असंख्यातासंख्यातोंमें  
एकका विषय करनेके लिये उक्त सूत्र कहत हैं—

उक्त अगभणीक असंख्यातके मागकी भेणी अर्थात् पक्षिका आयाम असंख्यात  
योजनकोटि है ॥ २६ ॥

इसके द्वारा अथवा असंख्यातासंख्यातका प्रतिषेध किया गया है क्योंकि  
इसमें असंख्यात याजनकोटियाका अभाव है । असंख्यात याजनकोटियोंके भी अनेक  
विकाररूप होकर विध्ययका अभाव है अतः उनमें मछे प्रकार निष्प्रयात्पानार्थ उक्त  
सूत्र कहते हैं—

अस्यंगुलक प्रथम वर्गमूलका उसके ही तृतीय वर्गमूलस्य गुणित करनेवा जो  
संख्य जोके उसे छठाअंशमें स्थापित कर रूपाधिक मनुष्यों और रूपाधिक मनुष्य  
अपर्याप्तों द्वारा अगभणी अपहन जाती है ॥ २७ ॥

अस्यंगुलक प्रथम वर्गमूलका उसके तृतीय वर्गमूलस्य गुणित करके सस्य  
राशिका सासाकारूप स्थापित कर रूपाधिक मनुष्यप्रमाणस अगभणी अपहन जाती है ।

संख्य—अपका प्रक्षेप किमसिय किया जाता है ?

ममापान—कृदि अगभेणी हृत्तयुग्म राशिकरूप है । अतएव इसमेंस तत्रात्र  
राशिकरूप मनुष्यराशिक अपहन करनेपर अपहारसासाकारामात्र शेष रहै अपोंको घटानेके

सुप्परत्तापमवणपण्ह । त खेव सलामरासिं ठविय रूवाहियमणुस्सपज्जत्तच्चम्महियमणुस  
अपज्जत्तरासिणा अबहिरदि । किमिह रूवाहियमणुस्सपज्जत्तरासी पक्खिप्पदे ? मणुस  
अपज्जत्तरासिपमाणेण' जगसेहीए अबहिरिअमाणए सलामरासिमेचरूवाहियमणुसपज्जत्त  
रासिस्स उच्चरंतस्स अवणपण्ह ।

मणुस्सपज्जत्ता मणुसिणीओ द्व्यपमाणेण केवडिया ? ॥२८॥

सुगम ।

कोडाकोडाकोडीए उवरिं कोडाकोडाकोडाकोडीए हेट्टदो छण्ह  
वग्गाणमुवरि सत्तण्ह वग्गाण हेट्टदो ॥ २९ ॥

एव सामन्नेण अदि वि सुत्ते वुत्त तो वि आहरियपरपरागदेव गुरुबदेसेण अवि  
रुद्धेण पच्चमवग्गस्स घणमेत्तो मणुस्सपज्जत्तरासी होदि चि वेत्तव्या । तस्स पमाणमद-  
७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६ । एत्थ गाथा—

द्विये तस्समं रूपका प्रक्षेप किया जाता है। (इन राशियोंके लिये देखो पुस्तक ३ पृ २४९)।

तपस्युक्त शब्दाकाराशिको ही स्थापित कर रूपाधिक मनुष्य पर्याप्त राशिसे अधिक मनुष्य अपर्याप्त राशिसे जगभरणी अपहृत हाती है ।

शुक्ल—रूपाधिक मनुष्य पर्याप्त राशिका प्रक्षेप किस स्थिति किया जाता है ?

समाधान—मनुष्य अपर्याप्त राशिप्रमाणसे जगभरणीके अपहृत करनेपर शब्दाकाराशिका राशिमात्र शेष रूपाधिक मनुष्यराशिको घटानेके स्थिति उक्त राशिका प्रक्षेप किया जाता है ।

मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनियों द्रव्यप्रमाणमे कितनी हैं ? ॥ २८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

कोडाकोडाकोडीके ऊपर और कोडाकोडाकोडाकोडीके नीचे छह वर्गोंके ऊपर व सात वर्गोंके नीचे अर्थात् छठे और सातवें वर्गके बीचकी संख्याप्रमाण मनुष्यपर्याप्त व मनुष्यनियां हैं ॥ २९ ॥

यद्यपि इस प्रकार सूत्रमें सामान्यरूपसे ही कहा है तथापि भाचार्यपरम्परागत अपिश्य गुरुपदेशसे पंचम वर्गके घनप्रमाण मनुष्य पर्याप्त राशि है इस प्रकार ग्रहण करना चाहिये । उसका प्रमाण यह है— ७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६ । यही गाथा—



एदस्स तिष्णि चदुग्मागा मणुसिणीओ, एगो' चदुग्मागा पुरिस नबुमयरासी होदि ।  
सहीणबुद्धीय पुण बोद्धन्जमाणे एदेण सुत्तेण सह वक्खाणावरिण्हि पम्बुविदमणुसपन्ञ्चत्त  
रासिपमाण निपमण विरुज्जदे, कोडाकोडाकोडाकोडीए हेडुदो पि सुत्तम्मि एगवयण  
पिरेसादो । ष च ह्वानमण्णा सरेन्धे वडुदे जेण नवण्ह कोडाकोडाकोडाकोडीण  
कोडाकोडाकोडाकोडिचं होन्ज, विरोहादो । किं च जे वक्खाणावरियपम्बुविद मणुस्सपञ्चत्त  
रासिपमाण होदि, मणुमसुत्तम्मि तस्स वचीए अमापादो, एदम्हादो सत्तगुणसम्बुद्ध  
सिद्धिदिमाणवासियदेवान पि ओयमलक्खम्मि अवह्वानामापादो च । सेस सुगम ।

देवगदीए देवा द्रव्यप्रमाणेण केवडिया ? ॥ ३० ॥

एदमासकासुत्त संखेन्नासंखेन्नामंतार्लंषण ।

असखेज्जा ॥ ३१ ॥

एदेण संख-भाणताय पडिसहो कदो,

पर्याप्त मनुष्य रागिके चार भागोंमें से तीन भागप्रमाण मनुष्यनियों हैं और एक  
अनुष्योद्य पुण्य व मनुष्यक राशि है । किन्तु स्वर्गीय बुद्धिसे वेदानपर पर्याप्त स्वर्तवतासे  
विचार करमएत इस सूत्रके साथ ध्यात्वानाचार्यों द्वारा निकपित मनुष्य पर्याप्त राशिका  
प्रमाण निपमसे विरोधको प्राप्त हाता है क्योंकि कोडाकोडाकोडाकोडीके लीजे' इस  
प्रकार सूत्रमें एक बखतका निर्देश किया गया है । और स्थानसहा संख्यातमें है नहीं  
मिससे भी कोडाकोडाकोडाकोडिको ( एकरवकूपसे ) कोडाकोडाकोडाकाईपना हो  
सके, क्योंकि ऐसा मामनेमें विरोध है । इसके अतिरिक्त ध्यात्वानाचार्यों द्वारा प्रकपित  
मनुष्य पर्याप्त राशिका प्रमाण बनता भी नहीं है क्योंकि इस प्रकार मनुष्यक्षेत्रमें एक  
मनुष्यराशिही स्थिति नहीं हो सकती तथा इससे ( मनुष्यनीराशिसे ) सातगुणे  
सर्वायसिद्धिदिमानवासी वृक्षोंका भी एक जाल योजनामें सबस्थान नहीं बन सकता ।  
( विरोध जाननेके लिये देखो पुस्तक ३ पृ २१८ का विशेषार्थ ) । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

देवगतिमें देव द्रव्यप्रमाणमे कितने हैं ? ॥ ३० ॥

एह मासंकासुत्त संख्यात असंख्यात व भगवत्तका अयमम्वन करनपाका है ।

देवगतिमें देव द्रव्यप्रमाणसे असंख्यात हैं ॥ ३१ ॥

इस सूत्रके द्वारा संख्यात व भगवत्तका प्रतिपत्त किया गया है क्योंकि—



निरस्पति परस्याप स्वाच कचयति भुति ।

तमो विभुञ्जी मास्य यथा मासयति प्रमा ॥ ३॥

इदि वयणादो । तं पि असंखेन्मं परिच मुच असंखज्जासंखे ज्ञमेण्य तिनिरं ।  
सत्य एदमिद असंखेन्मं दबाजमबहुपमिदि ज्ञागामनसुचरसुचं मयदि—

असखेज्जासखेज्जाहि ओसपिणि उस्सपिणीहि अवहिरंति  
कालेण ॥ ३२ ॥

एदेम परिच सुचामल्ल दार्पं पडितेहो कदा । पदराल्लियाण असंखज्जासंखेज्जा  
णमांसपिणि उस्सपिणीय सखमाबादो' अहण्यअसंखज्जासखेज्जासु वि पडितेहो कसो ।  
इदोसु दोसु एककस्स ग्गहण्यसुचरसुचं मयदि—

स्वेत्तेण पदरस्स वेळप्यण्यगुलसदवग्गपडिभाण ॥ ३३ ॥

वेळप्यणांगुलसदवग्गा पंचसङ्खिमहस्स-पंचसद-छत्तीमपदगुलाणि । जगपदरस्स  
एदम पडिमाण्य देवरासी होदि । एदेय वयणेण एकस्सअसंखेज्जासखेज्जासु पडिमेई

जिस प्रकार प्रमा भयकारको मरु करती हुई प्रकाशनीय पदार्थका प्रकाश  
करती है उन्ही प्रकार भुति परके समीपका निराकरण करती है और अपने समीप  
अर्थको कहती है ॥ ३१ ॥

इस प्रकारका बचन है । वह असंख्यात भी परीतासंख्यात सुखासंख्यात और  
असंख्यातासंख्यातक महसे तीन प्रकार है । जता उनमेंसे इस असंख्यातमें देवोंका  
मवस्थाव है ऐसा अतथात्तेके किये उत्तर सूत्र कहते हैं—

द्व कालकी अपेक्षा असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणीयंसे अपहृत  
होते हैं ॥ ३२ ॥

इस सूत्र द्वारा परीतासंख्यात और सुखासंख्यातका प्रतिषेध किया गया है ।  
प्रतराचलीमें असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणीयोंका सम्राज होनेसे अल्प  
असंख्यातासंख्यातका भी प्रतिषेध किया गया है । अब अन्य दो असंख्यातासंख्यातोंमेंसे  
एकके महत्व करनेके किये उत्तर सूत्र कहते हैं—

सैत्रकी अपेक्षा देवोंका प्रमाण अयप्रतरक दो सौ छप्पन अंगुलोंने कर्मरूप  
प्रतिमागसे प्राप्त होता है ॥ ३३ ॥

दो सौ छप्पन अंगुलोंका वर्ग पैंसठ हजार पांच सौ छत्तीस प्रतरांगुलप्रमाण होता  
है । इस जगप्रतरके प्रतिमागसे देवराशि होती है । अर्थात् दो सौ छप्पन सूक्ष्मगुलोंके कर्मका  
जगप्रतरम माग होनेपर जो कल्प हो ततना देवराशिका प्रमाण है । इस बचनसे उत्तर

काञ्चन विसिद्धस्त अमहण्मायुक्कस्तस्त परूबणा कदा ।

भवणवामियदेवा दव्यपमाणेण केवडिया ? ॥ ३४ ॥

सुगम ।

असखेज्जा ॥ ३५ ॥

पडिबकउपडिसेई काठण सपससपदुप्पायणादा ष्देम सुत्तय सरउन्नाणताण पडिसेहा कदा । तं पि असखेज्ज परिच-जुत्त असखन्नासउ-उमेण्ण तिचिई हादि । तथ पि अपपिदम्म पडिमेहड्डुत्तरसुत्त मणदि—

असखेज्जामखेज्जाहि ओसपिणि-उस्मपिणीहि अवहिरति कालेण ॥ ३६ ॥

एदेण परिच जुत्तासखन्नाणं पडिमहा कदा । अहण्णअसउन्नामखेज्जं पि पडिसिद्ध, तथ असखेज्जासखेज्जओमपिणि उस्सपिणीणममावादा । सपदि अवममेसु दोसु अपपिदपडिमहड्डुत्तरसुत्त मणदि—

खेत्तेण अमखेज्जाओ सेडीओ ॥ ३७ ॥

असंप्यातासंख्यातका प्रतिपद्य करक उप रहे अज्ञान्यानुत्कृष्टी प्रकयणा थी है ।

मदनवामी देव द्रव्यप्रमाणसे कितने ई ? ॥ ३४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मदनवासी देव द्रव्यप्रमाणस असख्यात ई ॥ ३५ ॥

प्रतिपद्यका नियमकर स्वपसका प्रतिपादन करमेसे इस सूत्रके द्वारा मन्व्यात और अनन्तका प्रतिपेद्य किया गया है । यह असंप्यात भी परीतामख्यात युक्तासंख्यात और असंप्यातासंप्यातके भेदस तीन प्रकार है । उनमेंसे भी अधिकतम असंप्यातके प्रतिपद्यार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा मदनवामी देव अमन्व्यातासंख्यात अवमर्पिणी-उत्तमर्पिणियोमे अपहृत हाते ई ॥ ३६ ॥

इसके द्वारा परीतासंप्यात और युक्तासंप्यातका प्रतिपद्य किया गया है । इसके साथ अज्ञान्य असंप्यातासंप्यातका भी प्रतिपद्य कर दिया है क्योंकि उनमें असंप्याता संख्यात अद्यसार्वथी उत्तमर्पिणियोंका अभाव है । जब अज्ञेय वा अमन्व्यातासंख्यातोंमेंसे अधिकतमके प्रतिपद्यार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा मदनवामी देव असंप्यात अगभपीप्रमाण ई ॥ ३७ ॥

पदेण सुत्तण उक्कस्सअसंखेज्जासउअस्स पडिसहा कदो, सोगाममणिसादा ।  
अमरउअभा सडीओ वि मणेपमपमिष्णाओ, तग्गिण्णयउप्पायणइसुत्तसुत्तं मणदि—  
पदरस्म असस्सेज्जदिभागो ॥ ३८ ॥

एदण अगपदरस्स दुमाग-तिमागादीण पडिसहा कदो । अगपदरस्म असखअ  
दिमागा वि अणयमेपमिष्णाओ चि तस्य विच्छयअण्णइसुत्तसुत्तं मणदि—

तामिं सेडीणं विक्खमसूची अगुल अगुलवग्गमूल  
गुणिणेण ॥ ३९ ॥

सुधिअंगुलं तस्मअ पडमरग्गमूलेण गुणिद सेडीणं विक्खमसूची हादि ।  
मम सुग्गम ।

वाणवैतरदेवा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ४० ॥

सुग्गम ।

असस्सेज्जा ॥ ४१ ॥

इम सूत्रक द्वारा उररूप अमंस्यातामरपालक्य प्रतिषेध किया गया है क्योंकि,  
यहाँ मावावा विहोदा मही है । अमंस्यात अगभणिया भी अमेक मेहोमे मित्र है अना  
उतक निर्वापान्वादनार्थे उत्तर सूत्र कहत है—

उपयुक्त अमस्यात अगभणिया अगप्रतरक अमस्यातके भागप्रमाण प्रहय करना  
चाहिय ॥ ३८ ॥

इमस अगप्रतरक द्वितीय मृतीय मागादिकोवा प्रतिषेध किया गया है । अग  
प्रतरका अमंस्यातको भाग भी अमेक मवासे मित्र है अता उनमे विधयअनार्थे उत्तर  
सूत्र कहत है—

उन अमस्यात अगभणियोकी विच्छमसूची सुप्यगुलये सुप्यगुलके ही वगी  
मूनम गुणित करनेपर आ सम्भ हा उतनी है ॥ ३९ ॥

सुप्यगुमका उमक ही प्रथम अगमूमने गुणित करनेपर उम अमंस्यात  
अगभणियोकी विच्छमसूची हानी है । यय सूत्राय सुग्गम है ।

आनप्यन्ता दव्व अप्यप्रमाणम कितने है ? ॥ ४० ॥

यह सूत्र सुग्गम है ।

आनप्यन्ता दव्व अप्यप्रमाणम अमंस्यात है ॥ ४१ ॥

पदेण संखेज्जापताण पटिसेहो कदो । असखेज्ज पि परिच-शुच प्रसंखेज्जा  
सखेज्जेण विविह । तय अणप्पिदपडिसइहसुचरसुर्च भणदि—

असखेज्जासखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति  
कालेण ॥ ४२ ॥

पदेण परिच-शुचामखजाण जहणप्रसखेजासखेज्जस य पटिसेहो कदो, तय  
असखेज्जासखेज्जापताणमासप्पिणि उस्सप्पिणीणमभावादे । इदरेसु दासु अणप्पिदपडिमइह  
सुचरसुच भणदि—

खेत्तेण पदरस्स सखेज्जजोयणसदवग्गपडिभाएण ॥ ४३ ॥

सप्पाओग्गसंखेज्जापणसद् वगिय तेण अणपदरे आण्हिद् वाणसेत्तदेवाण  
पमाण हादि । सेस सुगमं ।

जोदिसिया देवा देवगदिभंगो ॥ ४४ ॥

इसक द्वारा संख्यात य अनन्तरा प्रतिपद्य किया गया है । असंख्यात भी परीता  
संख्यात युक्तसंख्यात और असंख्यातासंख्यातक मेधने तीन प्रकार है । उनमें अपिबक्षित  
असंख्यातक प्रतिपेद्याय उत्तर सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा वानस्पन्तर देव असंख्यातासंख्यात अपसर्पिणी-उत्सर्पिणियोंसे  
अपहृत हाते हैं ॥ ४२ ॥

इस सूत्र द्वारा परीतासंख्यात युक्तसंख्यात और अपम्य असंख्यातासंख्यातका  
भी प्रतिपेद्य किया गया है क्योंकि उनमें असंख्यातासंख्यात अपसर्पिणी उत्सर्पिणियोंका  
समाप है । अथ इतर वा असंख्यातासंख्यातोंमें अपिबक्षितक प्रतिपेद्याय उत्तर सूत्र  
कहत हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा वानस्पन्तर द्रव्यका प्रमाण जगप्रतरक संख्यात में योजनोक्ते  
सगरूप प्रतिभागस प्राप्त हाता है ॥ ४३ ॥

क्षेत्रायाय संख्यात सा योजनोक्ता घग् करक इत्सम जगप्रतरक अपपरित्त  
करनपर वानस्पन्तर द्रव्यका प्रमाण दाता ह । शय सूत्राय सुगम है ।

ज्योतिषी द्रव्यका प्रमाण देवगतिक समान है ॥ ४४ ॥

ब्रह्मा ! पद्मस्तु ब्रह्मण्यर्णगुणसदवगपटिमागचपण तदा विसेसाभावो । नरि  
अत्यहो विसेसो अतिप, सो आणिय मचन्द्रो ।

सोहन्मीमाणकप्यवासियदेवा ट्व्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ४५ ॥  
सुगमं ।

असस्त्रेज्जा ॥ ४६ ॥

एदम सखेज्जस्स पडिसेहो करो । अणतस्स पुण पडिसहो इवामपरुजपादा वेव  
सिद्धा । असंखज्ज पि पुण्युत्तममेव तिविह । त्त्वेकस्सव गहणहमुत्तरसुत्त मणदि—

असस्त्रेज्जासस्त्रेज्जाहि ओसप्पिणि-उत्सप्पिणीहि अवहिरंति  
कालेण ॥ ४७ ॥

एदम परित्त-सुत्तासंखेज्जार्ण ब्रह्म्यअसंखे-ज्जामउज्जस्स य पडिसेहा करो,  
एतय असंखेज्जामंखेज्जापमोसप्पिणि-उत्सप्पिणीणमभावो । अवसेसेसु दोसु एकस्सेव  
गहणहमुत्तरसुत्तं मणदि—

क्याकि अणप्रतरके दो ही लय्यत भंगुल्लोके बर्गकप प्रतिभागपनेकी अपेसा  
सामान्य ब्रह्मराशिभ्र ज्वातिपी देवराशिमें कारि विशेषता नहीं है । परन्तु अर्थसे विशेषता  
है उधे आमकर कहना चाहिये । ( देखिये जीवस्थान-ब्रह्म्यप्रमाणानुगम पृ २६८ का  
विशेषार्थ ) ।

सौधर्म व ईशान कल्पवासी देव ब्रह्म्यप्रमाणसे कितने हैं ? ॥ ४५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सौधर्म व ईशान कल्पवासी देव ब्रह्म्यप्रमाणसे असंख्यात हैं ॥ ४६ ॥

इस सूत्र द्वारा संख्यातका प्रतिषेध किया गया है । अमन्तका प्रतिषेध देवोंकी  
भोगप्ररूपभासे ही सिद्ध है । असंख्यात ही पूर्णतः कमसे हीम अकार है । इनमेंसे एकके  
ही ग्रहण करनेके किये उत्तर सूत्र कहते हैं—

सौधर्म-ईशान कल्पवासी देव कालकी अपेक्षा असंख्यतासंख्यात अवसर्पिणी  
उत्सर्पिणियोंसे अपहृत होते हैं ॥ ४७ ॥

इस सूत्रक द्वारा परीतासंख्यात मुकासख्यात भीर अल्पय असंख्यातासंख्यातका  
भी प्रतिषेध किया गया है क्योंकि उभमें असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणियोंका  
अभाव है । अवशेष दो असंख्यातासंख्यातोंमें एकके ही ग्रहण करनेके किये उत्तर सूत्र  
कहते हैं—

खेत्तेण असस्वेज्जाओ सेठीओ ॥ ४८ ॥

एदेण उक्कस्सअसंखेज्जामएजेम्म पडिसहो कणे, लोगादिपिरेसाणमभावाद्दो । असंखेज्जाओ सेठीओ अणेषवियप्पाआ । तासिं णिप्पामद्दुघरसुत्तं मणदि—

पदरस्स असस्वेज्जदिभागो ॥ ४९ ॥

एदण जगपदरस्स दुभाग तिमागादिपडिसहो कद्दो । पदरस्स असंखेज्जदिमागा वि अणेषवियप्पो चि आदसेदहविणामणद्दु उच्चरसुत्तं मणदि—

तासिं मेठीण विक्कम्ममसूची अगुलस्स वग्गमूल विदिय तदिय वग्गमूलगुणिदेण ॥ ५० ॥

सूचिअगुलविदियवग्गमूल तस्सेव तदियवग्गमूलगुणिदे सठीण विम्मउमस्स सूची होदि । वणगुलतदियवग्गमूलमत्तसठीओ सापम्मीमाणकप्पेसु दत्ता होति चि पुत्तं इदि ।

सणकुमार जाव सदर-सहस्सारकप्पवासियेदेवा सत्तमपुठवी भंगो ॥ ५१ ॥

उपर्युक्तं देव क्षत्रकी अपेक्षा असंख्यात जगधनीप्रमाणं इ ॥ ४८ ॥

इसक द्वारा उत्कृष्ट अमरुत्यातासंख्यातका प्रतिपद्य क्रिया गया है क्योंकि यहाँ साकारिकोंके निर्देशका अभाव है । असंख्यात जगधनियों अन्तक विकल्परूप है । उनका नियमाद्य उत्तर सूत्र कहते हैं—

ये अमरुत्यात जगधनियों जगप्रतरके असंख्यातके भागप्रमाण इ ॥ ४९ ॥

इस सूत्र द्वारा जगप्रतरके द्वितीय-तृतीय भागादिकोंका प्रतिपद्य क्रिया गया है । जगप्रतरका असंख्यातका भाग भी अन्तक विकल्परूप है इस कारण उत्पद्य हुए सम्बेदक विमोक्षामाद्य उत्तर सूत्र कहते हैं—

उन अमरुत्यात जगधनियोंकी विक्कम्मसूची सूर्यगुलक तृतीय वग्गमूलगुणित सूर्यगुलक द्वितीय वग्गमूलप्रमाण इ ॥ ५० ॥

सूर्यगुलका द्वितीय वग्गमूल उर्ध्वक तृतीय वग्गमूलस गुणित होकर असंख्यात जगधनियोंके विक्कम्मकी सूची होता है । पनागुलक तृतीय वग्गमूलमात्र जगधनीप्रमाण सौषमं इत्यन्त कर्णोमे इत्येति यह उक्त वचनका फलितार्थ है ।

मनकुमारमे लक्ष्मण प्रसार-सहस्रार कल्प उरक कल्पजानी दर्शक प्रमाण सत्तम पृथिवीके समान इ ॥ ५१ ॥

कदा ? सहीए असखेज्जभागमेण एदेसिं त्तो मरामावादा । विससदो पुष मेदा अरिय, सेहीए एकारस-शबम-सत्तम पंचम-चत्तरबगरगमूलार्थं अहाकमेण सेहीमाम हागमेण्युवर्लमादा । एदे मागहार पत्य होति पि कच गण्वदे ? आइसियपरंपरामद अबिठ्ठुवदेसादो ।

आणद जाव अवराइदविमाणवासियदेवा दब्बपमाणेण केव डिया ? ॥ ५२ ॥

सुगम ।

पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागो ॥ ५३ ॥

एदेण सत्तमस्स पडिसहो कदा । पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागा पि अणयपपारो, तच्चिण्ययहुत्तरमुत्तं भगदि—

एदेहि पलिदोवममवहिरदि अतोमुहुत्तेण ॥ ५४ ॥

एरहि पुण्युचदवेहि पलिदावम अवहिरिज्जमाय अतोमुहुत्तम पलिदावममवहिरिदि ।

क्योंकि हमके अगभेर्णिके असख्यातते भागत्वकी अपेक्षा सप्तम पृथिवीके मारकियोस कार मेव नहीं है । परन्तु तिस्रोपकी अपेक्षा मेव है क्योंकि यहाँ यथाक्रमस ग्यारहवाँ जीवाँ सातवाँ पाँचवाँ भीर बीया इन अगभेर्णिके बर्गमूलाकी श्रेणीमापहार रूपसे उपलब्धि है ।

प्रश्ना—ये मागहार यहाँ है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यह आचार्यपरम्परागत अधिरथ उपवृष्टसे जाना जाता है ।

आनठम लेकर अपराजित विमान त्रुके विमानवासी इव द्रव्यप्रमाणस क्रिते है ? ॥ ५२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपयुक्त देव द्रव्यप्रमाणस पन्वोपमके अनग्यातते भागमात्र है ॥ ५३ ॥

इस सूत्र द्वारा संख्यातका प्रतिपद्य किया है । पन्वोपमका असंख्यातता माग जी सबक प्रकार है उसक निश्चयार्थ उत्तर सूत्र कहत है—

इन देवोंके द्वारा अन्तर्गृह्यतम पस्यापम अपहृत हाता है ॥ ५४ ॥

इन पूर्वोक्त देवों द्वारा पस्यापमके अपहृत करनेपर अन्तर्गृह्यतस पस्वोपम अपहृत

एतत् अतोमुद्बुत्तपमाणमावलिष्याए असंखेज्जदिमागो । सखेज्जावलिष्यासु सखेज्जाव  
 बीजाणमुद्बुत्तमे संते कथं पत्तिदोवमस्त आवलिष्याए असखेज्जदिमागो भागहारो होदि ?  
 ए एतत् आवलिष्याए अमसंखेज्जदिमागा संखेज्जावलिष्याया वा अतोमुद्बुत्त, किं  
 असंखेज्जावलिष्याओ एतत् अतोमुद्बुत्तमिदि धेत्तन्नाआ । कथमसंखेज्जावलिष्याणमतो  
 मुद्बुत्तत् ? न, कन्धे कागणोवपारेण तासि तदविरोहादो ।

सव्वट्टमिद्विमाणवासियदेवा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ५५ ॥  
 सुगम ।

असखेज्जा ॥ ५६ ॥

एद पि सुगम ।

इन्द्रियाणुवादेण एइन्द्रिया चादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता  
 दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ५७ ॥

होता है । यहाँ अन्तर्मुहूर्तका प्रमाण भाषणीका असंख्यातवां भाग है ।

शुंका—सख्यात भाषणियोंमें सख्यात जीवोंका उपक्रम इन्हींपर भाषणीका  
 असंख्यतवां भाग पद्योंपमका भागहार कैसे हो सकता है ?

समाधान—यहाँ भाषणीका असंख्यातवां भाग अथवा सख्यात भाषणियों अन्त  
 मुहूर्त नहीं है किन्तु यहाँ असंख्यात भाषणियों अन्तर्मुहूर्त हैं एसा ग्रहण करना चाहिये ।  
 ( देखो जीवस्थान-द्रव्यप्रमाणानुगम पृ २८५ ) ।

शुंका—असंख्यात भाषणियोंके अन्तर्मुहूर्तपता कैसे बन सकता ?

समाधान—कारणका उपचार करनेसे असंख्यात भाषणियोंके अन्तर्मुहूर्त  
 पतेका कोई विरोध नहीं है ।

सर्वार्थसिद्धिविमानवासी देव द्रव्यप्रमाणसे कितने हैं ? ॥ ५५ ॥

एह सख सुगम है ।

सर्वार्थसिद्धिविमानवासी देव द्रव्यप्रमाणसे असंख्यात हैं ॥ ५६ ॥

एह सख मी सुगम है ।

इन्द्रियभागोपाक अनुसार एकन्द्रिय, एकन्द्रिय पर्याप्त, एकन्द्रिय अपर्याप्त,  
 बाहर एकन्द्रिय, बाहर एकन्द्रिय पर्याप्त, बाहर एकन्द्रिय अपर्याप्त, सूक्ष्म एकन्द्रिय,  
 सूक्ष्म एकन्द्रिय पर्याप्त, और सूक्ष्म एकन्द्रिय अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणसे कितने  
 हैं ? ॥ ५७ ॥



एदमासंक्रान्तुच मंखे चासंखे जाणताल्लण । सस सुगम ।

अणता ॥ ५८ ॥

एदेष मखेन्चासंखे प्राण पडिसेहो कदो । तं पि अणत परिच-सुचापतल्ल-  
मण्य तिदिहं । उत्थेक्कस्सेव गहण्डुमुचरसुच मणदि—

अणताणताहि ओसपिणि-उस्मपिणीहि ण अवहिरंति कालेण  
॥ ५९ ॥

एदेष जहण्यअणताणतस्स पडिसहा कदो, अदीदक्कलादो अर्पंतगुणस्स सहण्य  
मर्गतामत्तचविरोहादा । अजहण्यअणुक्कस्स उद्धस्सअर्गताणताण होण्हं पि गहण्यपसंमे  
सत्थक्कस्स गहण्डुमुचरसुच मणदि—

खेत्तेण अणताणता लोगा ॥ ६० ॥

एदेष उद्धस्सअणताणतस्स पडिसहा कदो, अणताणतसञ्चय अयपडमवगमूसस्म

यह माशकाच्च संख्यात मसख्यात भीर मनस्ता मासमन करणेपाछा है ।  
येच सुचाप सुगम है ।

उपर्युक्त प्रत्येक एकन्द्रिय बीज अनन्त है ! ॥ ५८ ॥

इस सूत्र द्वारा संख्यात भीर मसख्यातका प्रतिषेध किया गया है । यह मन्त्र  
भी परीतामन्त्र सुचापमन्त्र भीर मनस्तामन्त्रके भेदके तीन प्रकार है । कममस एकके ही  
ग्रहणार्थ उत्तर सूत्र कहल है—

उपर्युक्त बीज कतली अपेक्षा अनन्तानन्त अक्षरिणी-उत्सविणियोसे अपर  
नहीं होते हैं ॥ ५९ ॥

इस सूत्र द्वारा अग्रम्य अनन्तानन्तका प्रतिषेध किया गया है क्योंकि अतीत-  
कालसे अनन्तगुण कामका अग्रम्य अनन्तानन्तत्वका विरोध है । मज्झिमासुत्तर भीर  
उत्तर अनन्तानन्त इन नामाके भी ग्रहणका प्रसंग होनेपर उनमसे एकके ही ग्रहणार्थ  
उत्तर सूत्र कहते हैं—

यत्रही अपेक्षा उक्त नौ प्रकारक एकन्द्रिय बीज अनन्तानन्त साक्षप्रमाण  
हैं ॥ ६ ॥

इस सूत्र द्वारा उत्तर अनन्तानन्तका प्रतिषेध किया गया है क्योंकि,  
अनन्तानन्त गर्भ पर्यायके प्रथम पर्यायस्वरूप उत्तर अनन्तानन्तका अनन्तानन्त

उक्कस्मअणताणवस्स अणताणवल्लोणघविरोहादो । सेस जीवङ्गानमंगो ।

वीहदिय-तीहदिय-चउरिंदिय-पचिंदिया तस्सेव पज्जत्ता अपजत्ता  
दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ६१ ॥

सुगमं ।

असस्वेज्जा ॥ ६२ ॥

एदेण सस्वेज्जाणतपठिमहा कदो । त पि असस्वेज्ज परिच-उत्त वसस्वेज्जा  
सस्वेज्जमण्ण विविह । तत्थ दाण्हमवणयणइत्थुत्तरसुत्त मणदि—

असस्वेज्जासस्वेज्जाहि ओसप्पिणि उस्मप्पिणीहि अवहिरति  
कालेण ॥ ६३ ॥

एदेण परिच जुधासस्वेज्जाण वदण्णमसस्वेज्जामेवेज्जस्स य पडिसेहो कदो,  
एदेसु विट्ठ अमस्वेज्जामसस्वेज्जासप्पिणि उस्सप्पिणीणमत्थिचविरोहादो । अजइण्णु  
क्कस्सुक्कस्मअणवेजाण दोण्ह पि गहणप्पमग तत्थेक्कस्म अणयणइत्थुत्तरसुत्त मणदि—

आकस्मका विरोध है । शय प्रकृषणा जीवस्थानके समान है ।

डीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पचेन्द्रिय और उन्हीके पर्याप्त व अपर्याप्त  
जीव द्रव्यप्रमाणसे कितन हैं ? ॥ ६१ ॥

यह स्रष्ट सुगम है ।

उपर्युक्त डीन्द्रियादिक जीव द्रव्यप्रमाणसे असंख्यात हैं ॥ ६२ ॥

इसके द्वारा संख्यात और अनन्तका प्रतिषेध किया गया है । यह असंख्यात  
भी परीतासंख्यात युक्तासंख्यात और असंख्यातासंख्यातके भेदसे तीन प्रकार है ।  
उनमेंसे दोका विराकरण करनेके लिये उत्तर स्रष्ट कहते हैं—

उपर्युक्त डीन्द्रियादिक जीव कालक्षी अपेक्षा असंख्यातामस्यात अनसंपिणी  
उत्सर्पिणियोंसे अपहृत होते हैं ॥ ६३ ॥

इस स्रष्ट द्वारा परीतासंख्यात युक्तासंख्यात और अक्षय्य असंख्यातासंख्यातका  
प्रतिषेध किया गया है क्योंकि इन तीनोंमें असंख्यातासंख्यात अपसर्पिणी  
उत्सर्पिणियोंके अस्तित्वाका विरोध है । अक्षय्यात्तरुद्ध और उत्तरुद्ध दोनों ही अक्षय्य  
व्यातासंख्याताके प्रहयका प्रसंग होनेपर उनमेंसे एकके विन्यास्य उत्तर स्रष्ट कहते हैं—

स्वेत्तेण वीहृदिय-तीहृदिय-चउरिंदिय-पचिंदिय तस्सेव पञ्जत्त  
अपज्जत्तेहि पदर अवहिरदि अगुलस्स अमस्सेज्जदिभागवग्गपडि  
माण अगुलस्स सस्सेज्जदिभागवग्गपडिमाण अगुलस्स असस्से-  
ज्जदिभागवग्गपडिमाण ॥ ६४ ॥

एदेण उक्कस्सअसंखेन्धासंखेज्जस्स पडिसेहो क्खे, क्कूपमहप्पपरिचारवत्तस्स  
पदरस्स असंखेन्धदिभागविराहादो । छचिअगुले आवलिपाए असस्से-प्रदिमाणेण मांमे  
हिद सद्ध वग्गिद वीहृदिय-तीहृदिय-चउरिंदिय पचिंदियापमवहारक्खत्ता होदि । तन्नि  
पंच विसेसाहिए क्खे एदेसिमपञ्चचाणमवहारक्खलो होदि । छचिअगुलस्स सस्सेज्जदिमाणे  
वग्गिदे एदेसि पञ्चचाणमवहारक्खलो हादि । सेस वीवट्ठाणम्मि बुचविहाण  
णाऊळ वचम्मं ।

कायाणुवादेण पुढविकाइय आउकाइय-तेउकाइय-चाउकाइय  
वादरपुढविकाइय-वादरआउकाइय-वादरतेउकाइय-वादरवाउकाइय-  
वादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरा तस्सेव अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइय-

वेत्रकी अपेक्षा त्रीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय व पञ्चन्द्रिय तथा उर्दीके  
पर्याप्त एव अपर्याप्त जीवों द्वारा छन्द्यगुलके असंख्यातवें भागके बर्गरूप प्रतिभागमे,  
छन्द्यगुलके संख्यातवें भागके बर्गरूप प्रतिभागसे और छन्द्यगुलके अमस्यातवें  
भागके बर्गरूप प्रतिभागमे अग्रतर अग्रत होला है ॥ ६४ ॥

इस छन्द्यके द्वारा उत्कृष्ट असंख्यातवत्क्यातक्य प्रतिषेध किया गया है, क्योंकि  
एक कम अग्रत परीतान्तको अग्रतरके असंख्यातवें भागपनेका विरोध है। छन्द्य  
गुलमे मावलीके असंख्यातवें भागका भाग क्षेत्रपर जो छन्द्य हो उसका वर्ग करनेपर  
त्रीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय और पञ्चन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल होता है। उर्दीका  
विशेष अधिक करनेपर इन्हींके अपर्याप्त जीवोंका अवहारकाल जाता है। छन्द्यगुलके  
संख्यातवें भागका वर्ग करनेपर इन्हींके पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है। दोष  
जीवस्थालमें कहे हुए विधानको जानकर कहना चाहिये। (देखा पुस्तक ३ पृ ३१३  
भादि) ।

कायमार्गाणाक अनुमार पृथिवीकायिक, जलकायिक, तेजकायिक, वायुकायिक,  
वादर पृथिवीकायिक, वादर जलकायिक, वादर तेजकायिक, वादर वायुकायिक, वादर  
वनस्पतिकायिक प्रत्येकगरीर और इन्हींके अपर्याप्त, तथा छन्द्य पृथिवीकायिक,

सुहुमआउकाइय-सुहुमतेउकाइय-सुहुमवाउकाइय तस्सेव पज्जत्ता  
अपज्जत्ता द्वयपमाणेण केवढिया ? ॥ ६५ ॥

सुगम ।

असखेज्जा लोगा ॥ ६६ ॥

एदेण सखेज्जाणंताण परिच-सुचामंतेज्जाण बहस्युक्कस्तअसखज्जासंखेज्जाण  
च पडिसेहो क्खदा । सेसं सुगम ।

वादरपुढविकाइय-वादरआउकाइय-वादरवणप्फदिकाइयपत्तेय  
सरीरपज्जत्ता द्वयपमाणेण केवढिया ? ॥ ६७ ॥

सुगम ।

असखेज्जा ॥ ६८ ॥

एदेण संखेज्जाणंताण पडिसेहो क्खदो । स पि असंखेज्जं विविह । तत्थक्कस्सेव  
गहणहसुत्तसुत्त मणदि—

एहंम अलक्षयिक, एहंम सज्जकयिक, एहंम वायुकायिक और इन्हीं चार सूक्ष्मोंके  
पर्याप्त व अपर्याप्त, ये प्रत्येक बीज द्रव्यप्रमाणसे कितने हैं ? ॥ ६५ ॥

यह सब सुगम है ।

उपर्युक्त बीजोंमें प्रत्येक बीजराशि असम्प्राप्त लोकप्रमाण है ॥ ६६ ॥

इस सूत्रके द्वारा संख्यात अमल परीतासत्यात युक्तासत्यात अघन्य असं  
ख्यातासंख्यात और बल्लह्य असंख्यातासंख्यातका प्रतिपेक्ष किया गया है । शेष सूत्रार्थ  
सुगम है ।

बादरपुषिणीकायिक, बादर सलक्षयिक और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक  
शरीर पर्याप्त बीज द्रव्यप्रमाणसे कितने हैं ? ॥ ६७ ॥

यह सब सुगम है ।

उक्त बीज द्रव्यप्रमाणसे असम्प्राप्त हैं ॥ ६८ ॥

इस सूत्रके द्वारा संख्यात व अलक्ष्यका प्रतिपेक्ष किया गया है । यह असंख्यात  
भी तीन प्रकार है । तममें एकके ही ग्रहणार्थ बल्लह्य सूत्र कहते हैं—

असखेज्जासखेज्जाहि ओसपिणि उस्सपिणीहि अवहिरति कालण  
॥ ६९ ॥

एदेष परिच जुचासखेज्जास अहण्यसखे जासखेज्जस्स य पडित्तेहो कसो, वेसु  
असखेज्जासखेज्जोसपिणी-उस्सपिणीणममावादो' । उक्कस्तासउज्जासखेज्जपडित्तह  
सुत्तरसुत्तं मपदि—

खेत्तेण वादरपुढविकाइय-वादरआउकाइय-वादरवणप्फदिकाइय  
पत्तेयमरीरपज्जत्तएहि पदरमवहिरदि अगुलस्म असंखेज्जदिभागवग्ग  
पडिभाएण ॥ ७० ॥

एत्थ सुविअगुनस्म पडिदावमस्स असखेज्जदिमागा मागहात्ते होदि ।  
संस सुगम ।

वादरतेउपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ७१ ॥  
सुगमं ।

उक्त शीब कालकी अपेक्षा असख्यातासख्यात असपिणी-उस्सपिणीयोम अपहृत  
हते हैं ॥ ६९ ॥

इस सूत्रक द्वारा परीतासंख्यात युक्तासंख्यात और अथम्य असंख्यातासंख्यातका  
प्रतिषेध किया गया है क्योंकि उनमें असंख्यातासंख्यात असपिणी-उस्सपिणीयोम  
अभाव है । उक्तद असंख्यातासंख्यातके प्रतिषेधार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

क्षत्रकी अपेक्षा वादर पृथिवीक्षयिक, वादर अलक्षयिक और वादर बनस्पति-  
क्षयिक प्रत्येकद्वारीर पर्याप्त शीबों द्वारा सूर्यगुलके असख्यातमें मागक बर्गरूप प्रति  
मागसे वगप्रतर अपहृत होता है ॥ ७० ॥

यहां पस्योपमका असख्यातका माग सूर्यगुलका मागहार है । शेष सूत्राथ  
सुगम है ।

वादर तेजक्षयिक पर्याप्त शीब इध्यप्रमायसे कितन हैं ॥ ७१ ॥  
यह सूत्र सुगम है ।

असस्त्रेज्जा ॥ ७२ ॥

पदेस सस्त्रेज्जातार्णं पडिसेहो कडो । असस्त्रेज्जं पि तिविह परिष मुच  
मसस्त्रेज्जासस्त्रेज्जमेएण । क्त्य परिष-जुत्तासस्त्रेज्जाण जइण्णुक्करसासस्त्रेज्जासस्त्रेज्जाण  
च पडिसेहहृत्तुत्तरसुत्तं मणदि—

असस्त्रेज्जावलियवग्गो आवलियघणस्स अतो ॥ ७३ ॥

असस्त्रेज्जावलियवग्गो पि बुचे पदरावलियप्पहुड्डित्तरिमवग्गार्णं गहयं पच  
वप्पिवारमड्डमावलियघणस्स अतो इदि युच । सेमं सुगम ।

चादरवालपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवड्डिया ? ॥ ७४ ॥

सुममं ।

असस्त्रेज्जा ॥ ७५ ॥

सस्त्रेज्जातार्णं पडिसेहो एवेण कडो । तिविहेसु अत्तमेज्जेसु एदमिह अरासेज्जे

बादर त्थक्यायिक पर्याप्त बीव द्रव्यप्रमाणस्य अराग्याय है ॥ ७२ ॥

इस सूत्रके द्वारा संख्यात च अमन्तका प्रतिषेध किया गया है । आरोक्ष्यात भी  
परीतासंख्यात युक्तासंख्यात भीर असंख्यातासंख्यातके भेदके तीव्र प्रकार है । ततो  
परीतासंख्यात युक्तासंख्यात अद्यप्य असंख्यातासंख्यात भीर वत्तए आरोक्ष्याता  
संख्यातके प्रतिषेधार्थ उत्तर सूत्र कहत है—

उक्त असंख्यातस्य प्रमाण असत्प्यात आवलियोक्कं परीक्ष्य है आ आक्षीके  
पनके भीतर जाता है ॥ ७३ ॥

'इत्थं असंख्यातका प्रमाण आरोक्ष्यात आक्षीकोक्कं परीक्ष्य है' इत्यादि वदनेपर  
प्रतरावली भाषि उपरिम धर्मोंके प्रवृत्तके प्रात दागपर उक्त विचारकार्य 'आक्षीके  
धर्मके भीतर है' ऐसा कहा गया है । दोष सूत्रार्थ सुगम है ।

बादर वायुकायिक पर्याप्त बीव द्रव्यप्रमाणस्य विना ? ॥ ७४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

बादर वायुकायिक पर्याप्त बीव द्रव्यप्रमाणस्य अराग्याय है ॥ ७५ ॥

इस सूत्रके द्वारा संख्यात च अमन्तका प्रतिषेध किया है । तीव्र प्रकारके अर्थ-

वाद्रवाठपञ्चरात्री द्विदो वि आमावणदुमुत्तरसुच मन्दि—

अमस्वेज्जामस्वेज्जाहि ओमपिणि उस्सपिणीहि अविहरति  
कालेण ॥ ७६ ॥

प्रदेश परिच मुत्तासखेज्जात्रां ब्रह्मण्यप्रमंस्त्रज्जामस्वेज्जस्स य पडिसेहो कदा, तेसु  
असंख्जासखेज्जात्रामोमपिणि उस्सपिणीणममावादा । अत्रब्रह्मण्यकस्म उक्कस्सअस-  
खेज्जासखताग गह्वप्यमगे ठक्कस्सअसंखेज्जामस्वेज्जस्स पडिसेहणदुमुत्तरसुच मन्दि—

स्वेत्तेण असस्वेज्जाणि पदराणि ॥ ७७ ॥

प्रदेश अत्रब्रह्मण्यकस्सअसंखेज्जासंखेज्जस्म सिद्धी कदा । अमस्वेज्जाणि जगपद-  
राणि अनपविहाणि वि तन्निप्पयदुमुत्तरसुच मन्दि—

लोगस्स सुस्वेज्जदिभागो ॥ ७८ ॥

पणस्सेग तप्पाओमसंखेज्जकूपे दिद वाद्रवाठकाइयपञ्चरात्री होदि ।  
सेस सुगम ।

क्यातोंमेंसे इस असंख्यातमें वाद्र वायुकायिक पर्याप्त राशि स्थित है इसके वापमार्य  
बत्तर सूत्र कहते हैं—

वाद्र वायुकायिक पर्याप्त बीव कालकी अपेक्षा असंख्यातासंख्यात असर्पिणी-  
सत्सर्पिणियोंसे अपहृत होते हैं ॥ ७६ ॥

इस सूत्रके द्वारा परीतासंख्यात मुक्तासत्प्यात और अण्य अनख्यातासंख्यातका  
प्रतिपक्ष किया गया है, क्योंकि उद्यमें असंख्यातासंख्यात अक्षरिणी सत्सर्पिणियोंका  
अभाव है । अत्रब्रह्मण्यकस्स और उक्कस्स असंख्यातासंख्यातोंके प्रमाणका प्रसंग होनेपर  
उक्कस्स असंख्यातासंख्यातके प्रतिपेक्षार्थ बत्तर सूत्र कहते हैं—

वाद्र वायुकायिक पर्याप्त बीव क्षेत्रकी अपेक्षा असंख्यात जगप्रतरप्रमाण  
हैं ॥ ७७ ॥

इस सूत्रके द्वारा अत्रब्रह्मण्यकस्स असंख्यातासंख्यातकी स्थिति की गई है ।  
असंख्यात जगप्रतर अनेक प्रकार हैं इस कारण उनके निर्णयार्थ बत्तर सूत्र कहते हैं—

उन असंख्यात जगप्रतरोंका प्रमाण लोकका असंख्याततां माय है ॥ ७८ ॥

अन्यसंख्यात तत्प्रापोप्य संख्यात रूपोंका माय देनपर वाद्र वायुकायिक पर्याप्त  
राशि होती है । जोव प्रजाप्यं सगम है ।

वणफ्फदिकाडयणिगोदजीवा वादरा सुहुमा पज्जता अपज्जता  
द्व्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ७९ ॥

सुगमं ।

अणता ॥ ८० ॥

एदेण सखेन्नासखेन्नाण पडिसेहो कदो । अणत पि तिविह । त्त्य एदग्धि  
अणत णेसिमवद्धानमिदि आणाएवाहुसुत्तरसुत्त मणदि—

अणताणताहि ओसपिणि उस्सपिणीहि ण अवहिरति कालेण  
॥ ८१ ॥

एदेण परिच्छ मुत्ताणताण सहस्यअणताणतस्स य पडिमहा कदा । एदग्धि अण  
ताणताणमोमपिणि उस्सपिणीणममावादा । अजइप्पुक्कस्सअणताणतस्स गहणहुसुत्तर  
सुत्त मणदि—

वनस्पतिक्रायिक बीब, निगोद बीब, वनस्पतिक्रायिक बादर बीब, वनस्पति  
क्रायिक सूक्ष्म बीब, वनस्पतिक्रायिक बादर पर्याप्त बीब, वनस्पतिक्रायिक बादर  
अपर्याप्त बीब, वनस्पतिक्रायिक सूक्ष्म पर्याप्त बीब, वनस्पतिक्रायिक सूक्ष्म अपर्याप्त  
बीब, निगोद बादर बीब, निगोद सूक्ष्म बीब, निगोद बादर पर्याप्त बीब, निगोद  
बादर अपर्याप्त बीब, निगोद सूक्ष्म पर्याप्त बीब और निगोद सूक्ष्म अपर्याप्त बीब,  
ये प्रत्येक द्रव्यप्रमाणसे कितने हैं ? ॥ ७९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपर्युक्त प्रत्येक बीबराशि द्रव्यप्रमाणसे अनन्त है ॥ ८० ॥

इस सूत्रके द्वारा सत्यात व असत्यातका प्रतिषेध किया गया है । अनन्त ही  
तीन प्रकार हैं । उनमेंसे इस अनन्तमें इनका अयस्थान है इसके आपनार्थे उत्तर सूत्र  
बहत है—

उपर्युक्त प्रत्येक बीबराशि कालसे अपेक्षा अनन्तानन्त अबमपिणी उत्सपिणियोम  
अपहत नहीं जाती है ॥ ८१ ॥

इस सूत्रके द्वारा परीतानन्त युक्तानन्त और अधम्य अनन्तानन्तका निषेध  
किया है क्योंकि, इनके अनन्तानन्त अबमपिणी उत्सपिणियोका अभाव है । अत्र  
त्याह अन्तानन्तके प्रहाराय उत्तर सूत्र बहन है—



स्वेत्तेण अणताणता लोगा ॥ ८२ ॥

पदेण उक्कस्सत्रणवार्त्तस्स पडिस्सहा क्खो । संसं सुग्गमं ।

तसकाइयत्तसकाइयपज्जस अपज्जत्ता पचिंदियपचिंदियपञ्चत्त

अपज्जत्ताण भग्गो ॥ ८३ ॥

तमकइयपाल पंचिंदियममो, तमकइयपञ्चत्ताण पचिंदियपञ्चत्ताण भग्गो, तसकाइयत्रपञ्चत्ताण पचिंदियत्रपञ्चत्ताण भग्गो । इदो ? समाभाण सहासंखाण संसंखादो । भावलिमाए असुरेत्तदिमागेण सखेत्तदिरुवहि भावलिमाए अमत्तज्ज दिमागेण च पुच पुच भोवत्तिदपदरंगुलहि जगपदरम्मि भागे हिदे पंचिंदिय पचिंदिय पञ्चत्त-पंचिंदियत्रपञ्चत्ताण रासीओ होंति चि बुत्त हादि । सेमं सहा बीवत्ताण पुचं सहा वत्तम् ।

जोगाणुवादेण पचमणजोगी तिण्णिवचिजोगी दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ८४ ॥

सुग्गम ।

उपर्युक्त प्रत्येक नीवरसि सेत्रकी अपघा अनन्तानन्त लोकाप्रमाण है ॥ ८२ ॥

इस सूत्रके ज्ञाप उक्तप्र मनस्तामस्तका प्रतिषेध किया गया है । दोष सूत्रार्थ सुग्गम है ।

प्रमत्तयिक, प्रमत्तयिक पर्याप्त और त्रसत्तयिक अपर्याप्त जीवोंका प्रमाण त्रसत्तयिक, पचन्टिय पर्याप्त और पचेन्टिय अपर्याप्त जीवोंका समान है ॥ ८३ ॥

त्रसत्तयिकोंका प्रमाण पंचन्टियोंके समान त्रसत्तयिक पर्याप्तोंका प्रमाण पंचेन्टिय पर्याप्तोंके समान और त्रसत्तयिक अपर्याप्तोंका प्रमाण पंचेन्टिय अपर्याप्तोंके समान है क्योंकि समान पर्याप्त संख्याक अनुसार होता है । भावलीके असंख्यातके भागसे संख्यात करीस और अपर्याप्त असंख्यातके भागसे पूरक पूरक अपर्याप्त प्रत्यंगुलोंका जगत्तरमे भाग जगत्तर जगत्तर पंचन्टिय पंचन्टिय पर्याप्त और पंचेन्टिय अपर्याप्तोंकी राशियां होती हैं यह उक्त जगत्तरका अभिप्राय है । हाय जिस जीवस्थानमें कहा है वैसे वही भी कहा जाहिय ।

पागमागवानुमार पांच मनावागी और मत्त, जगत्त य उमत्त य तीन वचनवागी इत्थप्रमाणम रिज्जत ई ? ॥ ८४ ॥

वह एक सुग्गम है ।

देवाण सस्वेज्जदिभागो ॥ ८५ ॥

देवाणमवहारकालं ब्रह्मप्यर्णगुलसद्वग्ग सप्पाभोमासंखन्त्ररूवेहि गुणिद एदेमि  
मवहारकाला होंति । एदेहि जगपइराम्हि माग हिद पुम्बुत्तइरामीओ होंति । सेमं सुगम ।

वचिजोगि असच्चमोसवचिजोगी दब्बपमाणेण केवडिया ?  
॥ ८६ ॥

सुगमं ।

असस्वेज्जा ॥ ८७ ॥

एदेण सस्वेज्जाणताण पडिसहो कदा । इदो ? उभयसच्चिमनुत्तत्तारे । अमम्वज्ज  
पि तिविह । तस्यइम्हि एदेसिमवद्वाभमिदि आप्पावच्चट्टमुत्तरसुत्त मनदि —

अमस्वेज्जासस्वेज्जाहि ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहि अवहिरति  
कालेण ॥ ८८ ॥

एदेण परिच मुत्तासखन्त्राण' ब्रह्मप्यत्रसखन्त्रामखन्त्रस्म य पडिसहा कदा,

पाँच मनोयोगी और तीन बचनयोगी द्रव्यप्रमाणमे देवोंके संख्यातमें माग  
प्रमाण हैं ॥ ८५ ॥

वो ही छान्दस सूक्तश्रुतियोंके वर्गरूप देवोंके अवहारकालको तत्कालयोग्य संख्यात  
रूपोंसे गुणित करनेपर इनके अवहारकाल होते हैं । इनसे जगत्तरक मासित करनेपर  
पूर्वोक्त माठ रागियाँ जाती हैं । शप सूत्राय सुगम है ।

बचनयोगी और असत्यमृषा अर्थात् अनुभव बचनयोगी द्रव्यप्रमाणम कितन  
हैं ? ॥ ८६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

बचनयोगी और असत्यमृषाबचनयोगी द्रव्यप्रमाणम असम्प्यात हैं ॥ ८७ ॥

इस सूत्रक द्वारा संख्यात व अमस्तका प्रतिषेध किया गया है क्योंकि, यह सूत्र  
संख्यात व अमस्तके प्रतिषेध तथा असंख्यातके विधानरूप उभय गणित संयुक्त है ।  
अमस्यात भी तीन प्रकार है । उनमेंसे इस असंख्यातमें इनका अग्रप्राण है इससे  
आपमार्य उत्तर सूत्र कहते हैं—

बचनयोगी और असत्यमृषाबचनयोगी कथलक्षी अपथा अमस्यातामस्यात  
अमपिणी-उत्सविणियोमि अपहत्त हात हैं ॥ ८८ ॥

इस सूत्रक द्वारा परीतार्थक्यात युक्तार्थक्यात और अग्रप्य अर्थक्यातामक्यातका

एदेसु असखन्नासखेन्नामं ओसप्यिधि-उसप्यिणीममावादो । सेमदोअसखेजासखजेसु  
एकस्मावहारपट्टसुचरसुच भवदि—

स्वेत्तेण वचिजोगि-असच्चमोसवचिजोगीहि पदरमवहिरदि  
अंगुलस्स सखेज्जदिभागवग्गपाडिभाएण ॥ ८९ ॥

एदेण उक्कस्सअसखेज्जासखेन्दस्म पडिसेहो करो, तस्म पदरस्म असखेज्ज  
दिभागवविराहादो । सखे प्रव्वाहे ओवह्तिदपदरगुलेण जगपदरे मागे हिदे दो वि  
रासीआ मागच्छति । सेमं सुगम ।

कायजोगि ओरालियकायजोगि ओरालियमिस्सकायजोगि-कम्म  
इयकायजोगी त्व्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ९० ॥

सुगम ।

अणता ॥ ९१ ॥

एदेण सखन्नासखेन्नाम पडिसहा करा । अणतं पि तिचिह । तथ पदग्धि  
अणते पदाआ रासीओ ह्तिदाओ पि आणावणपट्टसुचरसुच भवदि—

प्रतिषेध किया गया है क्योंकि इतमें असख्यातासंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणियोंका  
अभाव है । शेष दो असंख्यातासंख्यातोंमेंसे एकके अन्वयार्थ उक्त सूत्र कहते हैं—

अत्रकी अवस्था भवनयोगी और असत्यमृपात्रभनयोगियों द्वारा सूर्यगुत्तके  
संख्यातके मागक बर्गरूप प्रथिमागमे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ८९ ॥

इस सूत्रके द्वारा उक्त असंख्यातासंख्यातका प्रतिषेध किया गया है क्योंकि  
उसको जगप्रतरके अन्वयार्थका मागपनेका विराध है । संख्यात रूपोंसे अपवर्तित प्रतरों  
गुत्तका जगप्रतरमें माग केनेपर दायों ही राशियां जाती हैं । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

काययोगी, औदारिककाययोगी, औदारिकमिभकाययोगी और कर्मणकाययोगी  
द्रव्यप्रमाणसे कितने हैं ? ॥ ९० ॥

एह सूत्र सुगम है ।

उपयुक्त और द्रव्यप्रमाणमे अनन्त हैं ॥ ९१ ॥

इस सूत्रके द्वारा संख्यात व असंख्यातका प्रतिषेध किया गया है । अनन्त भी  
हीन प्रचार है । उनमेंसे इस अन्वयार्थ व औदारिकियां स्थित हैं इसका ज्ञानार्थ उक्त  
सूत्र कहते हैं—

अणताणताहि ओसपिणि-उस्सपिणीहि ण अवहिरति कालेण

॥ ९२ ॥

एदेण परिच जुत्ताणताणं' जहण्णअणताणतस्स य पडिमेहा कदो, तेसु अणताण  
सापमासपिणि-उस्सपिणीणममात्वादा । सपहि दोसु अर्पताणतेसु एक्कस्स पडिमेहइ  
सुअगमुत्त मज्झि—

स्वेत्तेण अणताणता लोगा ॥ ९३ ॥

एदेण उक्कस्माणताणतस्स पडिसेहो कदो, लोगवयणण्णाहाजुमवचीदो । सेस सुअगं ।

वेउच्चियकायजोगी दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ९४ ॥

सुअग ।

देवाण सस्सेज्जदिभागूणो ॥ ९५ ॥

देवसु पचमण पचवधि-वेउच्चियमिस्सक्कायजोगिरासीओ देवाण संखेज्जदि  
मागमेत्ताओ देवरासीदो अणदिदे अबसेस वेउच्चियक्कायजोगिपमाणं होदि ।

उपर्युक्त जीव कालकी अपेक्षा अनन्तानन्त अबसर्पिणी उस्सर्पिणियोरे अपह्न  
नहीं होते हैं ॥ ९२ ॥

इस सूत्रक द्वारा परीतानन्त युक्तानन्त आर अथव्य अमन्तामन्तका प्रतिपेक्ष  
किया गया है क्योंकि इनमें अमन्तामन्त अथसर्पिणी उस्सर्पिणियोंका अभाव है । अथ  
वा अमन्तामन्तोंमेंसे एकके प्रतिपेक्षार्थ उत्तर सूत्र कहत हैं—

उपर्युक्त जीव क्षत्रकी अपेक्षा अनन्तानन्त साक्षप्रमाण हैं ॥ ९३ ॥

इस सूत्रके द्वारा उरुद्ध अमन्तामन्तका प्रतिपेक्ष किया गया है क्योंकि अन्वया  
कार्कमिर्देशकी उपपत्ति नहीं बनती । शय सूत्रार्थ सुअग है ।

बैक्रियिककाययोगी द्रव्यप्रमाणसे कितने हैं ? ॥ ९४ ॥

यह सूत्र सुअग है ।

बैक्रियिककाययोगी देवोंक सख्यातयें मागस कम है ॥ ९५ ॥

इसमें पांच मनोयोगी पांच बन्धनयोगी और बैक्रियिकमिधकाययोगी इन देवोंक  
सख्यातयें मागमात्र वाशियोंका देववाशियोंसे घटा द्वापर अथवाय बैक्रियिककाययोगियोंका  
प्रमाण होता है ।

वेतव्वियमिस्सकायजोगी दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ९६ ॥

सुगम ।

देवाण सखेज्जदिभागो ॥ ९७ ॥

द्वरासिं सख्खवाससहस्सुववमनकाळमंविदसंखे मखेहे क्खे एगख्खं वेउभिय  
मिस्सरासिपमाय होदि ।

आहारकायजोगी दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ ९८ ॥

सुगम ।

चदुवण्ण ॥ ९९ ॥

एहं पि सुगम ।

आहारमिस्सकायजोगी दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १०० ॥

सुगम ।

सखेज्जा ॥ १०१ ॥

बैक्रियिकमिभक्काययोगी द्रव्यप्रमाणसे कितने हैं ? ॥ ९६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

बैक्रियिकमिभक्काययोगी द्रव्यप्रमाणसे देवोंके संख्यातबे मागमात्र हैं ॥ ९७ ॥

संख्यात बर्षसहस्रम हातेवाछ उपक्रमयकाळोंमें संख्यात देवराशिके संख्यात  
कण्ड करणपर वनमेंसे एक कण्ड बैक्रियिकमिभक्काययोगी राशिका प्रमाण होता है ।  
( देखो जीवस्थान द्रव्यप्रमाणानुगम पृ ४ का विद्योपार्थ ) ।

आहारकाययोगी द्रव्यप्रमाणसे कितने हैं ? ॥ ९८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहारकाययोगी द्रव्यप्रमाणसे शैतन हैं ॥ ९९ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

आहारमिभक्काययोगी द्रव्यप्रमाणसे कितने हैं ? ॥ १०० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहारमिभक्काययोगी द्रव्यप्रमाणसे संख्यात हैं ॥ १०१ ॥

सखेज्जा ति ययणेण असखेज्जावताण पडिवेदो कदा । सखेज्ज अदि वि  
अणयपयार ता वि च्चदुवण्णमंतर खेष ते होंति, णो पडिद्धा, आहारमिस्सफालम्मि  
तिनागाररुद्धप च्चत्ताहारमरीरकालादा सखेज्जगुमहीणम्मि संखिदाण जीवाणं च्चदुवण्ण  
सखाविरोहाद्दो । आइरियपरपरागदठवदसेण पुण सत्तावीस जीवा होंति ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १०२ ॥

सुगम ।

देवीहि सादिरेय ॥ १०३ ॥

दव्वरासिं तेसीमसुड्डाणि फाऊणगसंबडमवपिद दवीण पमाण हादि । पुणो तत्थ  
तिरिक्ख-मणुस्माण इत्थिवेदरासिं पक्खित्थे मच्चिरियवेदरासी होदि ति दवीहि सादिरेय  
मिदि बुत्त ।

पुरिसवेदा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १०४ ॥

सुगमं ।

सत्त्यात है इस यजनस असंख्यात मीर भमस्तका प्रतिषेध किया है । यद्यपि  
सत्त्यात मी भलेक प्रकार है तथापि ये जीवमके मीतर ही होते हैं बाहर नहीं, क्योंकि  
तीन यागोंसे अक्षर्य पर्याप्त आहारक शरीरकायसे सख्यातगुण्ये हीन आहारमिधकायमें  
संश्लिष्ट जीवोंके औपल सत्त्याका विरोध है । किन्तु माचार्यरत्नपरागत उपदेशसे सत्ता  
इस मीव होते हैं । ( वर्यो मीवस्थान द्रव्यप्रमाणानुगम सूत्र १२ की टीका ) ।

वदमार्गणाक अनुमार स्त्रीवेदी द्रव्यप्रमाणसे कितने हैं ? ॥ १०१ ॥

पह सूत्र सुगम ह ।

स्त्रीवेदी द्रव्यप्रमाणकी अपक्षा देवियोंसे कुछ अधिक हैं ॥ १०३ ॥

दव्वरासिक तेतीस दण्ड करक अनम्म एक दण्डके कम कर दवेपर इषियोंका  
प्रमाण होता है । पुनः उसमें तिर्यक् व मनुष्य सम्बन्धी स्त्रीवेदरासिको ओङ्क दवेपर  
सर्व स्त्रीवेदरासि होती है इसीकारण स्त्रीवेदी इषियोंसे कुछ अधिक है एसा  
कहा है ।

पुरुषवेदी द्रव्यप्रमाणस कितन हैं ? ॥ १०४ ॥

पह सूत्र सुगम है ।

देवेहि सादिरेय ॥ १०५ ॥

देवरात्रिं तेषीसखंडाणि क्वाण्य उर्यगखंडं द्वाणं पुरिसवदपमाण । पुजा तस्य  
तिरिक्ख-मनुस्वपुरिसवदरासिग्धि पद्विखत्त सम्भपुरिसवेदपमाण हादि चि देवहि सादि  
रेयपमाण होदि चि बुधं ।

णबुसयवेदा दत्रपमाणेण केवडिया ? ॥ १०६ ॥

सुगमं ।

अणता ॥ १०७ ॥

एरेण संखे जासख्खं प्राणं पडिमहा कदा । तिचिहे अणत दोण्हमणताण पटिसइह  
बुधरसुधं मनदि —

अणंताणंताहि ओमपिणि उस्मपिणीहि ण अवहिरंति कालेण

॥ १०८ ॥

एरेण परिच-हुचागमाण अहण्यअणंताणंताण्य य पडिमहा कदा, एदेसु अणताण

पुल्लवेदी द्रव्यप्रमाणकी अपक्षा देवोमि कुल्ल अचिक्रु हें ॥ १ ५ ॥

इक्ष्वाशिक ततीस खण्ड करके उनमेंसे एक खण्ड देवोमि पुण्यवेधियाका प्रमाण  
है । पुनः उनमें तिपेख व मनुष्य सम्बन्धी पुण्यवेधियाका जोड़ देनेपर सर्व पुण्य  
वेधियोंका प्रमाण होता है इसी कारण पुण्यवेधियोंका प्रमाण देवोमिसे कुल्ल अचिक्रु है  
एसा कहा है ।

नपुमकवेदी द्रव्यप्रमाणमे कितने हें ? ॥ १ ६ ॥

एह सूत्र सुगम है ।

नपुमकवेदी द्रव्यप्रमाणमे अनन्त हें ॥ १ ७ ॥

इस सूत्रके द्वारा संख्यात व अल्प्यातका प्रतिषेध किया गया है । अत्र तीव्र  
प्रकारक अमन्तमेंसे वा अमन्तोंके प्रतिषेधार्थ उक्त सूत्र ब्रह्म है—

नपुमकवेदी कालकी अपक्षा अनन्तानन्त अरमपिणी उत्सर्पिधियोंमे अपहृत  
मही होते हें ॥ १०८ ॥

इस सूत्रके द्वारा पटीतानन्त पुन्यातानन्त और अचन्य अमन्तानन्तका प्रतिषेध किया

ताजमामपिणि-उस्मपिणीणमभावादा । दासु अणताणतसु एक्कस्मात्तहारणद्वयुत्तरसुत्तं  
महादि—

स्वेत्तेण अणताणता लोमा ॥ १०९ ॥

एदण उक्कस्मात्तताणतम्म पटिमहो रुदा । कुदा ? हागणिहमण्णहाणुत्तवत्तीदा ।

अवगदवेत्ता तत्रपमाणेण केवडिया ? ॥ ११० ॥

सुगम ।

अणता ॥ १११ ॥

एदण सुखज्जासखज्जाण पटिमहा रुदा । तिभिह अणत कम्हि अणगद्वद्वान्ण  
पमाण हादि ? मणताणत । कुदा ? अदीक्कालम्म उक्कस्मज्जुत्ताणत जहण्णमपत्तापत्तं  
ए उन्नीपिय अज्जहण्णाणुक्कस्मात्तताणतम्मि अणद्विहम्म अमम्म अदिमागभूदअणगद  
पदगामी अणताणता होत्ति पि अविहद्धाश्रितियउत्तदमादा । मम सुगमं ।

गया है क्योंकि इनमें समन्तानन्त भवमर्षिणी इत्यर्षिणीया भवाप है । तत्र वा  
अनन्तानन्तमित्येव एकक भवचारणाय उत्तरं नृप कहत है—

नपुमकवदी क्षयसी अयेथा अनन्तानन्त मोरप्रमाण है ॥ १०९ ॥

इस नृपक द्वारा उक्तप्रमाणमन्तका प्रतिषेध किया गया है क्योंकि मन्तया  
भाकविदेवाकी उपपत्ति नहीं पत्ती ।

अपगतवरी इत्यप्रमाणम क्लृप्त है ? ॥ ११० ॥

यह नृप सुगम है ।

अपगतवरी इत्यप्रमाणम अनन्त है ॥ १११ ॥

इस नृपक द्वारा संख्यात ए अन्तमन्तका प्रतिषेध किया गया है ।

प्रका—मीन प्रकारक अनन्तमित्येव कान्तम अनन्तमित्येव अपगतवरीयाका प्रमाण है ।

गमाधान—अपगतवरीयाका प्रमाण अनन्तमित्येव संख्यामित्येव है क्योंकि उक्तप्रमाण  
युक्तान्तम भी अन्तम अनन्तमित्येव का ही प्रकार अन्तमित्येव अनन्तमित्येव अपगतवरीयाका  
भी कान्तम अन्तमित्येव मागभूत अपगतवरीयाका अनन्तमित्येव है तथा अपिण्ड  
अपगतवरीयाका अनन्तमित्येव का उपपत्ति है । तत्र नृपस्य सुगमं है ।



कसायाणुवादेण कोधकमाई माणकमाई मायकमाई लोमकमाई  
दन्वपमाणेण क्वडिया ? ॥ ११२ ॥

सुगम ।

अणता ॥ ११३ ॥

एदेष संखेज्जामखे ज्ञाम पडिमहा करो । विविह अणते एकरुस्मारहारमहु  
सुत्तरसुत्त मज्झि—

अणताणताहि ओमपिणि-उस्मपिणीहि ण अविहरति कालेण  
॥ ११४ ॥

एदण परिच-जुत्तार्गताण अहम्मप्रगतार्गतस्म य पडिमेहा कदा, एदसु अणताण  
तामपिणि उस्मपिणीणममावादा । दोसु अणताणतेसु एकरुस्मारहारमहुसुत्तरसुत्त मज्झि—

खेत्तेण अणताणता लोगा ॥ ११५ ॥

एदण एकरुस्मअणताणतस्म पडिमेहा कदा, लोगनिरेमणहाणुत्तरणीदा ।  
सेम सुगम ।

कपायमार्गणाक अनुसार क्कपकापायी, मानकपायी, मायाकपायी और नाम  
कपायी द्रव्यप्रमाणम कितने हैं ? ॥ ११२ ॥

एह स्रुत्त सुगम है ।

उपर्युक्त चारों कपायबाले जीव द्रव्यप्रमाणमे अनन्त हैं ॥ ११३ ॥

इस स्रुत्त द्वारा संत्पात व असत्पातका प्रतिपेक्ष किया गया है । मय तीन  
प्रकारके मयमत्तामेंसे एकके मयभारवार्थ उत्तर स्रुत्त कहते हैं—

उपर्युक्त चारों कपायबाले जीव काठकी अपेक्षा अनन्तानन्त अवमर्षिणी  
और उन्मर्षिणियोंमे अपहृत नहीं हात है ॥ ११४ ॥

इस स्रुत्त द्वारा परीतामस्त युक्तानस्त और अपण्य मयमत्तामस्तका प्रतिपेक्ष  
किया गया है क्योंकि, इन्म मयमत्तामस्त अवमर्षिणी उन्मर्षिणियोंका मयाव है । मय  
वा मयमत्तामस्तामेंसे एकके मयभारवार्थ उत्तर स्रुत्त कहते हैं—

उक्त चारों कपायबाले जीव क्षत्रकी अपेक्षा अनन्तानन्त स्वरूपमात्र  
हैं ॥ ११५ ॥

इस स्रुत्त द्वारा उरुहृष्ट मयमत्तामस्तका प्रतिपेक्ष किया गया है क्योंकि मयमत्ता  
कोव निर्देहाकी वपपत्ति नहीं बनती । स्रुत्त मयमत्ता सुगम है ।

अकसाईं दव्वपमाणेण केवढिया ? ॥ ११६ ॥

सुगम ।

अणता ॥ ११७ ॥

एदण सुखे-आसखेज्जाण पडिमहो कदा । णवविधसु अणंतसु कम्मि अरुमाइ रामी इत्थि । अजइण्णाणुक्कस्सअमताणंते । कुदा ? जम्मि जम्मि अणताणतय मग्गिज्जत्थि तम्मि तम्मि अजइण्णाणुक्कस्समणताणतय अत्तव्व इदि परियम्मचयणादो । वदि अणता णतयस्स गहण तो ' अर्णताअताहि आमप्पिणि उस्मप्पिणीहि णाअहिंरंति कालणत्ति ' किण्ण युच्चदे ? ण, अदीदक्खलादा अमत्तज्जगुणहीणाणमयवइरणविराहादा । अणताणताआ आमप्पिणि उस्मप्पिणीओ ति किण्ण युच्चद ? ण, आमप्पिणि उस्मप्पिणिपमाणण करिमाण अणताणताआ आमप्पिणि उस्मप्पिणीओ होति ति सुत्तिमिदुत्तादा ।

णाणाणुवादेण यदिअण्णाणी सुदअण्णाणी णवुमयभगो ॥ ११८ ॥

अकपायी जीव द्रव्यप्रमाणम कित्ते हें ? ॥ ११६ ॥

यह सुगम सुगम है ।

अकपायी जीव द्रव्यप्रमाणमे अनन्त है ॥ ११७ ॥

इस सूत्रक द्वारा मत्स्यातका प्रतिशेष किया गया है ।

प्रश्ना - नी मत्स्याक भनस्तोमं किम भनस्तमं अकपायी जीवगति है ?

समाधान - अत्रप्रम्यानुक्कए भनस्तानस्तमं अकपायी जीवगति है क्योंकि, जहां जहां भनस्तानस्तकी राज करमा हा यहाँ यहाँ अत्रप्रम्यानुक्कए भनस्तानस्तकी प्रहण करना खादिय एमा परिक्रमका पथत है ।

प्रश्ना - यदि भनस्तानस्तका प्रहण करमा है तो कामकी भवता भनस्तानस्त अयमपिणी-उत्तराणिजिपोस महीं भगहन दात है एमा क्यों महीं कहत ?

समाधान - महीं क्योंकि भनीत कामस भवेत्स्यातगुण हीम अकपायी जीवोंके भगहन म होमका विराध है ।

प्रश्ना - ता फिर भनस्तानस्त अयमपिणी उत्तराणिजिप्रमाण है एमा क्यों महीं कहत ?

समाधान - महीं क्योंकि उनक अयमपिणी उत्तराणिजिप्रमाण करमाए अत्रप्रम्यानुक्क अयमपिणी उत्तराणिजिपोस हाती है यह युक्ति ही सिद्ध है ।

ज्ञानमाणकके अनुसार मतिप्रज्ञानी आर धृतप्रज्ञानियोग्य प्रमाण ननुमरः पदियोरु समान है ॥ ११८ ॥

अथा शयुंमयवेदस्य पमाशपरूषणा कदा तथा कादृश्या, विममामाशादा ।

विभगणाणी दृवपमाणेण केवडिया ? ॥ ११९ ॥

सुगम ।

देवेहि सादिरेय ॥ १२० ॥

षष्ठ्यप्यगुरुमद्वयमात्र सादिग्गेय अगपद्रग्नि माग हिद् देवविभगणाणिपमार्थं  
हादि । पुनो एत्थ तिगादिविभगणाविपमाण पक्खिच्च सम्भविभगणाविपमत्थ्य हादि  
पि देवेहि सादिरेयमिदि पमाशपरूषण कदा । ममं सुगम ।

आभिणिनाहिय-सुद आधिणाणी दृवपमाणेण केवडिया ?  
॥ १२१ ॥

सुगम ।

पलिद्वोवमस्म अमस्वेज्जदिभागो ॥ १२० ॥

पदेण सखं ज्ञातताण पटिसेहा कदा, परिषं सुचार्यं ज्ञातसुदं अमभ्रमयेज्जदा-

जिस प्रकार पशुसंरक्षकियोंकी प्रमाणप्रत्यक्षा की है उसी प्रकार गतिमन्त्रानी और  
अन्यजातियोंकी प्रमाणकी प्रकल्पना करना आदिपे क्याकि दोषात्त कोर विद्येयता  
बर्दा है ।

विभंगज्ञानी द्रव्यप्रमाणम कित्तन ई ? ॥ ११९ ॥

यह सख सुगम है ।

विभंगज्ञानी द्रव्यप्रमाणाकी अपवा देवोम कुछ अधिक हैं ॥ १२० ॥

आधिक शीघ्री छप्यम अशुभोके वर्गका अगप्रतरमें माग स्नेपर देव विभंग  
जातियोंका प्रमाण होता है । पुनः इन्में तीन गतियोंके विभंगजातियोंका प्रमाण  
औरस्नेपर सम्पन्न विभंगजातियोंका प्रमाण होता है इसी कारण विभंगज्ञानी वर्गोंसे  
कुछ अधिक हैं इस प्रकार उनकी प्रमाणप्रत्यक्षा की गयी है । दोष सुचार्यं सुगम है ।

आमिनिबोधिद्विज्ञानी, अतज्ञानी और अविज्ञानी द्रव्यप्रमाणमे कित्तने  
हैं ? ॥ १२१ ॥

यह सख सुगम है ।

उक्त तीन ज्ञानरासे बीष द्रव्यप्रमाणसे पर्योपमके अर्थरूपात्तमें मागप्रमाण  
हैं ॥ १२२ ॥

इस अर्थमे संख्यात व अनन्तका प्रतिपेध किया गया है, साथ ही परीताल

सखेज्जस्स वि । जहण्णअसंखज्जासंखेज्जपडिसंहइमुत्तमसुत्त मणदि—

एदेहि पलिदोवममवहिरदि अतोमुहुत्तेण ॥ १२३ ॥

एत्थ आत्रलियाए अमखेज्जादिमागा अतोमुहुत्तमिदि भत्तम्भा । इत्था ?  
आप्रियपंगपरागदुव्वेसादो ।

मणपज्जवणाणी दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १२४ ॥

सुगमं ।

सखेज्जा ॥ १२५ ॥

एदेण अमखेज्जाणताण पडिसद्दा कदा । संस सुगम ।

केवलणाणी दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १२६ ॥

सुगमं ।

अणत्ता ॥ १२७ ॥

एदेण सखेज्जासंखज्जाण पडिसद्दा कदा । संस सुगम ।

ख्यात मुक्तामत्त्यात भीर उरुत्थ मसंख्यातासत्त्यातना मी प्रतिपद्य किया गया है ।  
अथम्य मसत्त्यातासत्त्यातके प्रतिपेद्यार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

उक्त तीन ज्ञानमाल जीवों द्वारा अन्तर्गृह्यमे पस्योपम अपहृत हाता है ॥१२३॥

यहां भाषलीका मसंख्यातवां भाग अन्तर्गृह्ये है इस प्रकार प्रहस्य करमा आदिपे  
पर्योकि एसा आचार्यपरम्परागत उपदेश है ।

मनःपर्ययज्ञानी द्रव्यप्रमाणम कितने हैं ? ॥ १२४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मन पर्ययज्ञानी द्रव्यप्रमाणमे संख्यात हैं ॥ १२५ ॥

इस सूत्रके द्वारा मसत्त्यात व अणत्तना प्रतिपद्य किया गया है । सर सूत्रार्थ  
सुगम है ।

केवलज्ञानी द्रव्यप्रमाणस कितने हैं ? ॥ १२६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

केवलज्ञानी द्रव्यप्रमाणमे अनन्त हैं ॥ १२७ ॥

इस सूत्र द्वारा मत्त्यात भीर मसंख्यातका प्रतिपद्य किया गया है । सर सूत्रार्थ  
सुगम है ।

मजमाणुवादेण सजदा सामाह्यच्छेदोवट्टावणसुद्धिसजदा दव्व  
पमाणेण केवडिया ? ॥ १२८ ॥

सुगमं ।

कोट्टिपुधत्त ॥ १२९ ॥

एदं पि सुगमं ।

परिहारसुद्धिमजदा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १३० ॥

सुगमं ।

सहस्सपुधत्त ॥ १३१ ॥

एदस्स परूवभाए जीवट्टागमगा ।

सुद्धमसांपराह्यसुद्धिसजदा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १३२ ॥

सुगमं ।

सदपुधत्त ॥ १३३ ॥

संयममार्गणाके मनुमार सयत और सामायिक छदापस्वापनशुद्धिसयत द्रव्य  
प्रमाणसे कितने हैं ? ॥ १२८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सयत और सामायिक-छेदोपस्वापनशुद्धिसंयत द्रव्यप्रमाणसे कोट्टिपुधत्तप्रमाण  
हैं ॥ १२९ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

परिहारशुद्धिसंयत द्रव्यप्रमाणसे कितने हैं ? ॥ १३० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

परिहारशुद्धिसंयत द्रव्यप्रमाणसे सहस्रपुधत्तप्रमाण हैं ॥ १३१ ॥

इसकी प्रकृषणा जीवस्थानके समान है । ( तस्को जीवस्थान द्रव्यप्रमाणासुगम  
सूत्र १५ की टीका ) ।

सस्मसांपरायिकशुद्धिसंयत द्रव्यप्रमाणसे कितने हैं ? ॥ १३२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सस्मसांपरायिकशुद्धिसंयत द्रव्यप्रमाणसे सदपुधत्तप्रमाण हैं ॥ १३३ ॥

एदं पि सुगम ।

जहाक्खादविहारसुद्धिसजदा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १३४ ॥  
सुगम ।

सदसहस्सपुधत्त ॥ १३५ ॥

एदस्म पन्वणाए जीवहाणमगो ।

सजदासजदा दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १३६ ॥

सुगम ।

पल्लिदोवमस्स असखेज्जदिमागो ॥ १३७ ॥

एदेण संखेज्जाणताणसुक्कस्सअसखेज्जासंखेज्जस्म य पडिसहो क्खत्ता, एदेसिं पडिवक्खसत्ताणिसेसादो । अहण्णअसखेज्जासंखेज्जाओ हेड्डिमसखेज्जाण पडिसेहड्ड सुचरसुत्तं मणदि—

एदेहि पल्लिदोवममवहिरदि अतोमुहुत्तेण ॥ १३८ ॥

एत्य अंतोमुहुत्तमिदि पुत्ते' असंखेज्जाणलियाआ पि वचम्म । कुदा ?

यह सूत्र भी सुगम है ।

यथास्यातविहारसुद्धिसंयत द्रव्यप्रमाणस कितने हैं ? ॥ १३४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

यथागम्यातविहारसुद्धिसंयत द्रव्यप्रमाणस इतसहस्रपृथक्त्वममाण हं ॥ १३५ ॥

इसकी प्रकृपणा जीवस्थानक समान है । ( वरुण जीवस्थान-द्रव्यप्रमाणासुगम पृ १७ ४० ) ।

सयतासयत द्रव्यप्रमाणस कितने हैं ? ॥ १३६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सयतासंयत द्रव्यप्रमाणसे पस्योपमके असस्यातवें भाग हैं ॥ १३७ ॥

इस सूत्रके द्वारा सप्यात अनन्त और अरुण्य असंख्यातासप्यातका प्रतिबन्ध किया गया है क्योंकि यहाँ इनके प्रतिपक्षभूत संख्याका निर्देश है । अथवा असंख्याता संख्यातसे मीत्रिके असंख्याताके प्रतिपक्षाय उत्तर सूत्र कहत है—

संयतामयतो' द्वारा अन्तर्मुहूर्तस पस्योपम अपहृत होता है ॥ १३८ ॥

यहाँ अन्तर्मुहूर्त एसा कहनेपर असप्यात भावधिया' देखा प्रहस करमा

वह्नुत्सवस्यस्य अतोऽनुत्सव गहवादी । एदेण पलिदावम माग हिदे संवदासजद  
दम्भमागच्छदि । सेम सुगम ।

असजदा मदिअण्णाणिभगो ॥ १३९ ॥

पञ्चद्वियणए अबलविज्जमाणं जदि वि अमंज्जदाप तहिंतो मदा अरिय तो वि  
असजदा मदिअण्णाणिभगा वि पुच्छदे, इच्छद्वियणए अबलविज्जमाणं मदाभावादा ।

दसणाणुवादेण चक्खुदमणी दज्वपमाणेण केवडिया ? ॥१४०॥

सुगम ।

असखेज्जा ॥ १४१ ॥

एदण सखंजाणताण पठिमेहा कदा, तमिं विरुअण्णिदमा । अमखेज्ज वि  
मिबिहं । तत्त अणहियपअसखेज्जपडिसदुत्तरसुघमागदं—

अमंखेज्जासंखेज्जाहि ओसापिणिउस्मपिणीहि अवहिरंति  
कालेण ॥ १४२ ॥

आहिणे कयाकि वैपुण्यवाची अणुमुत्तका यहाँ प्रहण है । इस असेव्यात भावर्त्तात्प  
अणुमुत्तका पस्यापम माग इअपर सेयतासयत द्रव्य माता है । ( हेरा जीवरण  
अपममाणाणुगम पृ २९, ८७-८८ तथा एराणानुगम पृ १५७ ) । दोप सुचार्य सुगम है ।

अमपतोअ प्रमाण मतिअण्णानियोक ममान है ॥ १३९ ॥

यथापार्थिवलयका अणुअणु करनपर अर्थापि असपतोके मनिअण्णानियास अ  
है तथापि असपताका प्रमाण प्रतिअण्णानियास समान है वसा अहा है कयाकि  
अपार्थिवलयका अणुअणु करनपर शक्ति का अणु अर्थापि है ।

इअनमागथाऊ अनुमार अणुदर्शनी अणुप्रमाणसे कितन है ? ॥ १४ ॥

एह सूत्र सुगम है ।

अणुदर्शनी अणुप्रमाणम अणुपात है ॥ १४१ ॥

इस सूत्रक द्वारा सेव्यात आर अणुअणु मतिपथ किया गया है कयाकि यहाँ  
उअक पिअणु सल्याका निर्देश है । असेव्यात भी तीन प्रकार है । अमसेल अमपिअणु  
असपताकोक प्रतिअणुअणु उअर सूत्र प्राण्य हाता है—

अणुदर्शनी अणुअणु अणुअणु अणुअणु अणुअणु अणुअणु अणुअणु अणुअणु  
अणुअणु अणुअणु ॥ १४२ ॥

एतेण परिच-ञ्चुवासंखेज्जाम ब्रह्मणामसखेज्जसस य पडिसेहो कदो,  
एत्थ भमसखेज्जसंखेज्जामपिणि उस्सपिणीनमावादो । इच्छिदअसखेज्जसखेज्जसस  
जागावणह्मत्तरसुच मणदि—

खेत्तेण चक्खुदसणीहि पदरमवहिरदि अगुलस्स सखेज्जदि  
भागवग्गपडिमाणे ॥ १४३ ॥

अचिअगुलस्स संखेज्जदिमाग पणिगय एतेण जगपदग्ग्मि मागे हिदे अक्खु  
दसणिगामी होदि । एत्थ अउरिदियादिअपन्नचरासी अक्खुदमणक्खुओवसमलक्खिओ  
अदि अप्पदि तो जगपदरस्स पदग्गुलस्स असखेज्जदिमागा भागहरो हादि । अरि सो  
एत्थ न गहिदा, पन्नचरासिम्हि ना अक्खुदसणुबजागामावादो, इअअक्खुदमणमावादो  
वा । एतेण उक्कस्सामसखेज्जसस पडिमेहा कदो ।

अचक्खुदसणी असज्जदभंगो ॥ १४४ ॥

कदो ? दम्मद्वियणमावलण मदाभावादा । मेम सुगम ।

ओह्रिदसणी ओह्रिणाणिभगो ॥ १४५ ॥

इस सूत्रक द्वारा परीतासक्यात युकासप्यात भीर अण्य असक्यातासंख्यातका  
प्रतिषेध किया गया है क्योंकि इनमें भमक्यातासक्यात अयसपिणी उस्सपिणीया  
अभाव है । इच्छित असक्यातासक्यातके प्राप्तार्थ उत्तर सूत्र कहत है—

अत्रकी अपेक्षा अहुदसणियो द्वारा अक्खुगुलके सम्प्राप्तके भागक वगरूप  
प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ १४३ ॥

अक्खुगुलके संख्यातके भागका घण करके इनका जगप्रतरमें भाग एतेपर  
अहुदसणीराशि हाती है । यहाँ यदि अहुदसनाउरलके अयोपशमसे अयसपिण  
अनुरिम्हियादि अयसपिण र शिका प्रहण किया जाय ता प्रतरागुलका असंख्यातका भाग  
अप्रतिभारका भागहार होता है । परन्तु उम यहाँ नहीं प्रहण किया क्योंकि  
अयसपिणराशिमें अयसपिणराशिके समान अहुदसनाअयोपशमका अभाव है अयसा अक्खु  
अभावका अभाव है । ( अया अयसपिण अयसपिणानुगम सूत्र १२७ की टीका ) । इस  
सूत्रक द्वारा उत्तर असंख्यातासंख्यातका प्रतिषेध किया गया है ।

अअहुदसणियोका प्रमाण अयसपिणक ममान है ॥ १४४ ॥

क्योंकि अयसपिणक अयका अयसपिण करनपर दोनोंमें अर भेद नहीं है । शेष  
सूत्राथ सुगम है ।

अअहिदसणीय प्रमाण अअहिदसणीयोके ममान है ॥ १४५ ॥



सुगमं ।

केवलदसणी केवलगाणिभगो ॥ १४६ ॥

एदं वि सुगम ।

लेस्साणुवादेण विण्हलेस्मियणील्लेस्सियकाउलेस्सिया अम  
जदमंगो ॥ १४७ ॥

कृदा ! दस्यद्वियवयारलंभजादा । पञ्चब्रह्मिण्यं पुण अउत्तविअमाने भण्णि  
विससो, सो आणिय पत्तम्या ।

तेउलेस्मिया दत्तपमाणेण केवद्विया ? ॥ १४८ ॥

सुगमं ।

जादिमियदेवेहि मादिरेय ॥ १४९ ॥

बल्लप्यन्नागुलमद्वगगण मादिरगण अगपदरम्मि भाग हिद आणिमियददा तेउ

एह सूत्र सुगम है ।

केवलदर्शनियोक्य प्रमाण केवलज्ञानियोक्य ममान है ॥ १४६ ॥

एह सूत्र भी सुगम है ।

सत्यामार्गणाके अनुमाग कृष्णलक्ष्यानाल, नीलसन्पायाल और कापातलपा-  
याले जीवोक्य प्रमाण अमपठोके समान है ॥ १४७ ॥

क्याकि एहां द्रव्याधिक मयका अकसम्यम किया गया है । परन्तु पर्यायाधिक  
अपका अकसम्यम करलेपर विशेषता है उमे आनकर कहता आदिय ।

तज्जोसेत्यावाले द्रव्यप्रमाणम कितने है ? ॥ १४८ ॥

एह सूत्र सुगम है ।

तज्जोसेत्यावाले द्रव्यप्रमाणम जी अरेधा ज्यादिवी देसोसे कुछ अधिक हैं ॥ १४९ ॥

साधिक हो सी छान्यर धेगुमोके चर्गका अगमतरमो भाग देलेपर जा मध्य हो

१ कृष्ण नील पायोलेकेसा एकसो अकसम्यमपायाल आ कल्पनाक-तामिद तद्विषयवस्तुविनिर्माण  
द्विज ते तालेन केलेपल्लवत्तम्येरा । उ उ ५ २९ १

२ तज्जोसेत्या अकसम्यमेन म्योशिरैवा आधिक । उ उ ५ २९ १

लस्मिया ह्येति । पुषा तत्थ मणशामिय-भाणवेतर-तिरिक्ख मणुस्मतेउलस्मियरामिद्धि  
पक्खिच्च सम्भा तेउलस्मियरामी होदि । तेण आदिमियदेवेदि मादिनेयमिदि पुत्त ।  
मम सुगम ।

पम्मलेस्मिया दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १५० ॥

सुगमं ।

सण्णिपत्तिदियतिरिक्खजोणिणीण सस्वेज्जदिभागो ॥ १५१ ॥

सुवेज्जपदरगुलेदि तप्पाभागेदि जगपदग्ग्मि भागे दिदे पम्मलस्मियरामी  
हादि । मम सुगम ।

सुक्कलेस्सिया दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १५२ ॥

सुगम ।

पल्लिदोवमस्स असस्वेज्जदिभागो ॥ १५३ ॥

उत्तने तेज्जोसेइयावाले न्यातिर्या देव हँ पुनः उत्तमें मधनयासी चानव्यन्तर तिपेच  
मौर मनुष्य तज्जोसेइयावालोकी हादिओ आइनेपर सर्व तज्जोसेइयावालोकी हाशि हाती  
हँ । इमी कारण तेज्जोसेइयावान्नाका प्रमाण न्योतिर्या देवोंले पुट मधिक हँ पन्ना कहा  
हँ । शेष सूचार्य सुगम हँ ।

पद्मलक्ष्यावाल जीव द्रव्यप्रमाणम कितने हँ ? ॥ १५० ॥

यह सूत्र सुगम हँ ।

सत्री पंचेन्द्रिय वियच्च यानिमित्तियोक मस्यात्तं भागप्रमाण हँ ॥ १५१ ॥

तत्प्रायोग्य सख्यात्त प्रतरीगुणोंका अगप्रतरमें माग वनेपर पद्मलक्ष्यावालोका  
प्रमाण होता हँ । शेष सूचार्य सुगम हँ ।

शुक्ललक्ष्यावाल जीव द्रव्यप्रमाणम कितन हँ ॥ १५२ ॥

यह सूत्र सुगम हँ ।

शुक्ललक्ष्यावाल जीव द्रव्यप्रमाणमे परयोपमके अमस्यात्तं भागप्रमाण

हँ ॥ १५३ ॥

एतेषु संसिद्धार्णवार्णव पडिसेहो कदा । इतो ? एदेमि विरुद्धमन्त्राभिरेमादा ।  
अभिच्छिद्रसंश्लेषपडिसेहइहसुचरसुच भवति —

एदेहि पलिदावममवहिरदि अतोमुहुत्तेण ॥ १५४ ॥

एतव अवहारकास्य असंश्लेषाप्रतिपत्त्या । एतव पडिशोभने मागे हिद सुकृ  
सेस्मिपरासी होदि । समं सुगम ।

मवियाणुवादेण भवसिद्धिया दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १५५ ॥

सुगमं ।

अणता ॥ १५६ ॥

एतव संसिद्धार्णवार्णव पडिसहो कदा, मन्त्रस्य वयणस्य सपडिवन्सुक्तामणेन  
अप्यथा अन्वस्य पदुप्यापवादो । अभिच्छिद्राणतसु मविपराभिस्म पडिमेइहसुचरसुच  
भवति —

अणताणताहि ओमपिणि उस्मपिणीहि ण अवहिरंति कालेण  
॥ १५७ ॥

इस सूत्रके द्वारा संख्यात और असंख्यात प्रतिपेध किया गया है क्योंकि यहाँ  
एक विरुद्ध संख्याका निर्देश है । अभिच्छिद्राणतसु संख्यातके प्रतिपेधार्थ उक्त सूत्र  
कहाते हैं—

सुहसेस्यावासे जीवो द्वारा अन्तर्गृह्यते संख्यापम अपहृत होता है ॥ १५४ ॥

यहाँ अवहारकास्य असंख्यात भावस्वभाव है । इसका पदोपममे प्राग वेनेपर  
सुहसेस्यावासे जीवोका प्रमाण होता है । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

मध्यमार्गणाक अनुमात मध्यमिद्धिक रूपप्रमाणम कित्तनं है ? ॥ १५५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मध्यमिद्धिक जीव रूपप्रमाणम अनन्तं है ॥ १५६ ॥

इस सूत्रके द्वारा संख्यात और असंख्यातका प्रतिपेध किया गया है क्योंकि सभी  
वचन अपने प्रतिपक्षका विरुद्धरूप कर स्वकीय मनीषा अर्थके प्रतिपादक होते हैं ।  
अभिच्छिद्राणतसु संख्यातके प्रतिपेधार्थ उक्त सूत्र कहाते हैं—

मध्यमिद्धिक कालकी अपेक्षा अनन्तानन्त अवसर्पिणी-उत्सर्पिणियोस्ते अपहृत  
नहीं होते ॥ १५७ ॥

एदेम परिच-सुचाणताण सइह्मअणताणतस्म य पडिसेहो कइओ, एदसु अर्धतानं  
तामपिणि ठस्मपिणीअममावादो । अणवहरण पि अहीरफालगइहादो । सेसं सुगमं ।  
अभिच्छिद्रापताणतपडिसेहइसुचरसुच मभदि—

खेत्तेण अणताणता लोगा ॥ १५८ ॥

एदेम उक्कस्सअणताणतस्स पडिसेहो कइओ, अणताणतापि सध्वपन्नयपडम  
वगमूलापि पि अमणिय अणताणतलोगापपणादो । सेसं सुगम ।

अभवसिद्धिया दव्वपमाणेण केवडिया ? ॥ १५९ ॥

सुगम ।

अणता ॥ १६० ॥

अहणहुचाणतमिदि संचर्यं । कुदा ? आइरियपरपरागपठवदेसाओ । कप एदस्स

इस सूत्रके द्वारा परीतामस्त युक्तान्त भीर अग्रम्य अमस्तामस्तका प्रतिपद्य  
किया गया है क्योंकि इनमें अमस्तामस्त अमसपिणी उस्मपिणियोंका अभाव है । अग्रहत  
न होनेका कारण भी यह है कि यहां अमस्तामस्त अमसपिणी-उस्मपिणियोंसे केवल  
भरीत कामका ग्रहण किया गया है । शेष सूत्रार्थ सुगम है । अभिच्छिद्र अमस्तामस्तका  
प्रतिपद्यार्थ उचर सूत्र कहते हैं—

अभवसिद्धिक भीव खेत्तकी अपथा अनन्तानन्त सोकप्रमाण ई ॥ १५८ ॥

इस सूत्रके द्वारा उरहय अमस्तामस्तका प्रतिपद्य किया गया है क्योंकि  
सर्व पर्यायार्थ प्रथम वर्गमूलप्रमाण अमस्तामस्त ऐसा न कहकर अमस्तामस्त सोकोंका  
उपलब्ध किया गया है । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

अभवसिद्धिक ग्रन्थप्रमाणसे कितने हैं ? ॥ १५९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अभवसिद्धिक ग्रन्थप्रमाणसे अनन्त हैं ॥ १६० ॥

यहां अमस्तासे युक्तान्त ऐसा ग्रहण करना चाहिये क्योंकि इस प्रकार  
आचार्यपरपरागत उपदेश है ।

सूत्र—अप्यके न होनेसे व्युच्छिद्रिका प्राप्त न होनेवाली अमप्यराशिक

अथर्षं सते अन्नाच्छिज्जप्रमाणस्त अर्णतवपमो ? न, अर्णतस्त केवलप्रमाणस्त येन विसर्प  
अवच्छिद्येण संज्ञायस्ययारेण अर्णतचविरोहामावादी ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिद्वी स्वइयसम्माइद्वी वेदगसम्मादिद्वी  
उवसमसम्मादिद्वी सामणसम्माइद्वी सम्मामिच्छाइद्वी दब्बपमाणेण  
केवडिया ? ॥ १६१ ॥

सुगम ।

पलिदोवमस्त असस्तेज्जदिमागो ॥ १६२ ॥

पदेण सस्तेज्जाणंताणं पडिमहा कदा, उक्कस्सअसरे—जामस्तेज्जस्स वि ।  
अभिच्छिदअसंखज्जपडिसेइइसुत्तरसुत्त मणदि—

एदेहि पलिदोवममवहिरदि अतोमुहुत्तेण ॥ १६३ ॥

एत्थ सम्मादिद्वी-वेदगसम्मादिद्वीणमवहारकाळा भावतियाए असंखज्जदिमागो

ममस्त यह संज्ञा कैस सम्मथ है ?

समाधान—जहाँ क्योंकि अमस्तकप कबलकालक ही विषयमें अवस्थित  
संख्याओंक उपचारसे ममस्तपत्रा माननेमें कोई विरोध नहीं आता ।

सम्यक्त्वमागणके अनुसार सम्यग्दृष्टि, स्थापिक्रम्यग्दृष्टि, बहुक्रम्यग्दृष्टि,  
तपस्समसम्यग्दृष्टि, सासादनमम्यग्दृष्टि और सम्यगिच्छ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे कितने  
हैं ? ॥ १६१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपर्युक्त जीव पत्न्योपमके असंख्यात्मके मागप्रमाण हैं ॥ १६२ ॥

इस सूत्रके द्वारा संप्रत्यक्ष और अनन्तका तथा कल्प असंख्यातासंख्यातका  
भी प्रतिपन्न किया गया है । अतिच्छिन्न असंख्यातक प्रतिपेचार्य उक्त सूत्र कहत हैं—

उक्त जीवों द्वारा अनन्तपूर्वसे पत्न्यापम अपहृत होता है ॥ १६३ ॥

यहां सम्यग्दृष्टि और बहुक्रम्यग्दृष्टियाका अवधारकाळ भावतियाके मसंख्यातके

१ अतिउ रूपर इति पाठ ।

२ अत्रही बोधिसम्बल वात्सल्य वापरी अतिउवात्सल्य वापरी बोधिसम्बल वात्सल्य  
वापरी बोधिसम्बलवात्सल्य वात्सल्य इति पाठ ।

ति भेत्तव्या । इदो ? सुत्ताविरुद्धगुरूवदेसादो । स्वइयमग्माइहीण पुण सखज्जाबलियाओ,  
अवसेसापमसखेज्जाबलियाओ चि भेत्तव्य । सस सुगम ।

मिच्छाइटी असजदभंगो ॥ १६४ ॥

इदा ? दम्बद्वियणयावलषणे दोणइ रासीण मेदाणुबलमादो ।

सण्णियाणुवादेण सण्णी दम्बपमाणेण केवडिया ? ॥ १६५ ॥

सुगमं ।

देवेहि सादिरेयं ॥ १६६ ॥

इदो ? देवा सब्बे सण्णियो, तस्य णेरइय मणुस्तरासिमसखज्जसेद्धिमेच पुणो  
अगणइरस्स असंखेज्जदिमागमेचतिरिक्खसण्णिरासिं च पक्खिच्च सयलसण्णीणं पमाणु  
प्पर्त्तादा । सेस सुगम ।

असण्णी अमजदभंगो ॥ १६७ ॥

एदं पि सुगमं ।

भागमात्र प्रहण करमा चाहिये क्योंकि वसा सूत्रस अभिद्वय गुरुपक्षरा है । सायिक  
सग्यरदृष्टियोंका अणुहारकास सत्त्वात् भावकी तथा शय उपशामसम्पदृष्टि भादि तीनका  
अणुहारकाळ असत्त्वात् भावकीप्रमाण प्रहण करमा चाहिये । शय सूत्रार्थ सुगम है ।

मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्यप्रमाण असंयत बीबंकि समान ह ॥ १६४ ॥

क्याकि द्रव्यार्थिक नपका अवलम्बन करनेपर मिथ्यादृष्टि भीर असंयत इन  
दानों दृष्टियोंमें कोई भेद नहीं है ।

मन्निमार्गानुसार सभी जीव द्रव्यप्रमाणस किनन हैं ? ॥ १६५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

संघी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपक्षा दबोसे कुछ अधिक ह ॥ १६६ ॥

क्योंकि वेच सत्र संघी हैं। उनमें असत्त्वात् धनिमात्र मात्रक भीर मनुष्य  
दासिका तथा अणुप्रतरक असत्त्वात्तर्षे भागप्रमाण तियेच संक्षिपशिक्षा मिळानपर  
समस्त संक्षिपोंका प्रमाण उत्पन्न हाता है । शय सूत्रार्थ सुगम है ।

अमंडी बीबोंका प्रमाण अमयतोंके समान है ॥ १६७ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

आहाराणुवादेण आहारा अणाहारा दब्बपमाणेण केवडिया ?

॥ १६८ ॥

सुगम ।

अणंता ॥ १६९ ॥

एदंथ सत्ते नासंत्तेन्नाथ पडिमहा कदा । तिथिहेसु अणससु मभिमिच्छिदाणस-  
पडिसेहहसुचरसुत्तं मणदि—

अणताणताहि ओसपिणि-उस्सपिणीहि ण अवहिरंति कालेण

॥ १७० ॥

एदंथ परिच-मुत्तायतामं जहम्मप्रणवायतस्स य पडिमेहो कदा, एदसु अणतायं  
तोसपिणि-उस्सपिणीजममावाधो । उक्कस्समज्जताणंतस्स पडिसेहहसुचरसुत्तं मणदि—

स्वेसेण अणताणता लोगा ॥ १७१ ॥

एद पि सुगम ।

एव दम्भगमाणाणुगमे सि सम्पत्तमभियोगार ।

आहारमार्गिकाके अनुसार आहारक और अनाहारक जीव द्रव्यप्रमाणमे  
फिरेने हैं ? ॥ १६८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहारक और अनाहारक जीव द्रव्यप्रमाणसे अनन्त हैं ॥ १६९ ॥

इस सूत्रके द्वारा संख्यात और असंख्यातका प्रतिषेध किया गया है । तीनों  
प्रकारके जन्तुओंमें भूमिच्छिन्न जन्तुओंके प्रतिषेधार्थ वचन सूत्र कहते हैं—

आहारक और अनाहारक जीव कानकी अपेक्षा अनन्तानन्त अवसर्पिणी-  
उत्सर्पिणियमि अपहृत नहीं होते हैं ॥ १७० ॥

इस सूत्रके द्वारा परीतानन्त सुखानन्त और अकल्प्य जन्तुजन्तुका प्रतिषेध  
किया गया है क्योंकि इनमें जन्तुजन्तु अवसर्पिणी उत्सर्पिणियोंका समाप है । अकल्प्य  
जन्तुजन्तुके प्रतिषेधार्थ वचन सूत्र कहते हैं—

आहारक और अनाहारक जीव क्षेत्रकी अपेक्षा अनन्तानन्त लोकप्रमाण हैं ॥ १७१ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

इस प्रकार द्रव्यप्रमाणानुगम धर्मियोगद्वारा समाप्त हुआ ।

## सैत्ताणुगमौ

सैत्ताणुगमेण गदियाणुवादेण गिरयगदीए णेरइया सत्थाणेण  
ममुग्घादेण उववादेण केवडिस्सेते ? ॥ १ ॥

उत्थ सत्थाण दुविह सत्थाणसत्थाण विहारवदिसत्थाणमिदि । वेण-कसाय  
वेउच्चिय-मारणतिपमेएण समुग्घादो चउच्चिहा । एत्थ णेरइएसु आहारसमुग्घादो णत्थि,  
महिद्विपचारमिसीणमभावादो । कवलिसमुग्घादा भि णत्थि, एत्थ सम्मच मोक्षूण पयगचस्स  
पि अमानादो । तज्जयसमुग्घादो भि उत्थ णत्थि, विणा महक्खण्हि उदभावादो । उववादो  
पगभिहो । उत्थ वदणावमेण ममरीरादा बाहिमगपदसमादि कान्ण चाबुक्खसेण सत्तीर  
तिगुण विपुञ्जण वेणमसमुग्घादो णाम । क्कमायतिव्वदाए ममरीरादा जीवपदेसाण  
तिगुणविपुञ्जण क्कमायसमुग्घादो णाम । विविदिद्विस्म माहप्पेण मखेज्जामसुज्जोपणाभि  
मरीण ओह्वहिय अवह्वाण वउच्चियसमुग्घादो णाम । अप्पप्पणो अच्छिदपदमादा

क्षेत्रानुगमस गतिमार्गभाक् अनुमार नरकगतिमें नारकी जीव स्वस्थान, समुद्-  
धान और उपवासे क्लिप्त क्षेत्रमें रहत है ? ॥ १ ॥

इनमें स्वस्थान पत्र स्वस्थानस्वस्थान और विहारपत्रस्वस्थानके भेदस हो प्रकार  
है । ऐशता कपाय वैक्रियिक भार मार्जतिकक भेदस समुद्घात चार प्रकार है । यहाँ  
नारकीमें आहारकममुद्घात नहीं है, क्योंकि महर्षिमात्र श्रुतियोंका यहाँ भ्रमाय  
है । कवलिसमुद्घात भी नहीं है क्योंकि यहाँ सम्यक्त्वका छात्र प्रतका गन्ध भी नहीं  
है । तज्जससमुद्घात भी यहाँ नहीं है क्योंकि यिना महामर्त्तक तज्जससमुद्घात  
नहीं होता । उपवाद् एक प्रकार है । इनमें यदनाक ब्रह्मस भयन शरीरस बाहर एक  
प्रदेशको भावि करके उत्कृष्टता भयन शरीरस तिगुण भावप्रदशोंके कैयमेका नाम यदना  
समुद्घात है । कपायकी तीमतास जीवप्रदशोंका भयन शरीरसे तिगुण प्रमाण कैयमेको  
कपायसमुद्घात कहते हैं । विविध क्लिष्टाके माहात्म्यसे संन्यात ए भर्त्सत्यान पात्रमोंको  
शरीरसे न्याय करके जीवप्रदशोंके भावस्थानको वैक्रियिकममुद्घात कहत हैं । मायामकी

१ प्रतिगु वीरियताण इति पाठः ।

२ आ-वापलाः वेउच्चियसुगगते इति पाठः ।

३ अवर्ती विवपाविपुञ्जण आ-वापलाः विवपाविपुञ्जण इति पाठः ।

४ क-उमलाः विविदिद्विस्म इति पाठः ।





सुप्त मण्डि—

लोगस्त असखेज्जदिभागे ॥ २ ॥

एतत्त लोको पञ्चविहा— उक्तलोगा अधोलोगा तिरियलोगा मणुसलोगो सामण्ण-  
लोमा चदि । एदेसि पंचम्ह पि लोगाण लोगगहमेण गहर्म्म फादम्ह । कुदो ? देसा  
माधियचादो । गेरइया सम्भपदेहि चदुष्ण लोगणमसखेज्जदिभागे होति, माणुसलोगादो  
असखेज्जगुणे । तं जहा— सत्थाणसत्थाणरासी मूलरामिस्म सखेज्जा भागा, विहारबदिसत्थाण  
वेपण-कमाय-वेठम्भियसमुग्घादरासीओ मूलरामिस्म सखेज्जदिभागो । एदमत्थपद्  
सम्भत्थ पत्तम्भं । पुणो सत्थाणमत्थाणादिभेरइयरासीओ ठविय अंगुसस्म सखेज्जदिभाग  
मेत्तभोगाहणाहि गुणिय थेरासियकमेण पंचहि लोमेहि ओषट्ठिदे चदुष्ण लोगणमसखे  
ज्जदिभागो, माणुसलोगादो असखेज्जगुणमागच्छदि । गवरि वेपण-कमाय-वेठम्भिय  
समुग्घादेसु आगाहणा ज्वगुणा क्कपम्भा । मारणतिपत्तेथे आणिजमाथे विदियपुट्टरि  
इम्भादो आणदम्भं, तत्थ रज्जुमेत्तायामुबलमादा । पम्भपुट्टविमारणतिपत्तेत्त पत्तम्भ  
भोपइया किम्भ कीरद, असखेज्जगुणदम्भदमभादो, आबलियाए असखेज्जदिभाग

बन्धन सुप्त कहते हैं—

नारकी जीव उक्त तीन पदोंसे लोकोके असख्यातवें भागमें रहते हैं ॥ २ ॥

यहाँ लोको पांच प्रकारका है— ऊर्ध्वलोक अधोलोक तिर्यग्लोक मनुष्यलोक  
भीर सामान्यलोक । यहाँ लोकोके ग्रहणसे हम पाचों ही लोकोंका ग्रहण करना चाहिये  
क्योंकि यह सुप्त ब्रह्मलोक है । नारकी जीव सच पदोंसे चार लोकोंके असख्यातवें  
भागमें भीर मनुष्यलोकसे असख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं । वह इस प्रकार है— स्वस्थान  
स्वस्थानराशि मूलराशिके अख्यात बहुभाग तथा विहारबदस्वस्थानराशि वेदनासमुप्  
पातराशि कयायसमुप्पातराशि पच वैक्रियिकसमुत्पातराशि ये राशियाँ मूलराशिक  
सत्थातवें भागप्रमाण होती हैं । यह अर्धपद् सर्वत्र कहना चाहिये । पुन स्वस्थान  
स्वस्थानादि नारकराशियोंका स्थापित कर अगुलके संख्यातवें भागमात्र अयगाहनामोंसे  
गुणित कर वैराशिकक्रमसे पांच लोकोंसे (पृथक् पृथक्) अयपतित करनेपर चार  
लोकोंका असख्यातवें भाग भीर मानुषलोकसे अर्धस्थानगुणा क्षेत्र अय होता है ।  
विशेषता यह है कि वेदनासमुप्पात कयायसमुप्पात और वैक्रियिकसमुप्पातमें  
अयगाहना मीगुणी करना चाहिये । ( जीवस्थानकी क्षेत्रप्रकरणमें वैक्रियिकसमुप्पातके  
विषय अयगाहना मीगुणी नहीं किन्तु संख्यातगुणी अयगम करी गर है । ब्रह्म पु ४  
पृ ११ ) । मार्कांतिक क्षेत्रके निकालते समय उसे द्वितीय पृथिवीके द्रव्यम निकालना  
चाहिये क्योंकि वहाँ राजुमात्र मायामकी उपमण्डि है ।

शुद्धा—प्रथम पृथिवीके मार्कांतिकक्षेत्रको ग्रहण कर अयगतमा क्यों नहीं की  
जाती क्योंकि वहाँ असख्यातगुणा द्रव्य देना जाना है तथा मायवीक अर्धस्थानमें

मेनुबन्धनमकालसुवर्तमादो च ? अ, तस्य सखे-ज्जदोयजमेघमारर्षितियखेत्तायाम  
 ईसजादो । पढमपुढधीए वि विग्गहर्गईए कष मारणतियजीवापममखेज्जजायणायामं  
 मारणतियखेत्तसुवत्तमदे ? अ, असखेज्जमेघिपढमवग्गमूलमेत्तायाममारणतियखेत्तजीवां  
 बहुआणमणुवत्तमादो । तेण विदियपुढविदम्भे पत्तिदोषमस्स असखेज्जदिमागमणुवत्तमम  
 कालेण माग दिदे एगसमण्य मरंतजीवाण पमान होदि । पुणो एदेसिमसखेज्जदिमागो  
 मारणतिय विजा कालं करदि, बहुआण सुहपाणीणममादादो अर्षत्तञ्जा मागा  
 मारणतियं ज्ञेति । मारणतिय करंताणमसखेज्जदिमागा उजुगदीए मारणतिय  
 करदि, अप्पमा विदपदेसादो कंहुज्जुवत्तचमिह उप्पज्जमाणामं बहुआणमणुवत्तमादो ।  
 विग्गहर्गदीए मारणतिय करंताणमसखेज्जदिमागो मारणतिय विजा विग्गहर्गदीए  
 उप्पज्जमावरासी हादि, तस्य मरंतजीवाण अमंखेज्जे माग मारणतियकालमंवरठअकमम  
 कालेण आबळियाए अमंखेज्जदिमागमेघेण गुणिद् मारणतियकालमिह सधिदरासि  
 पमाव हादि । पुणो सम्भुहवित्थारेण अवरज्जुगोण गुणिद् मारणतियखेत्तं हादि ।

भागमात्र उपक्रमव्यसकी भी उपलब्धि है ।

समाधान—नहीं क्योंकि वहाँ सख्यात योद्धममात्र मारणास्तिक क्षेत्रका  
 भाषाम वृत्ता आता है ।

संका—तो फिर प्रथम पृथिवीमें भी विग्रहगतिम मारणास्तिक जीवाका संख्यात  
 वाक्य भाषामबाधा मारणास्तिक क्षेत्र कैसे उपलब्ध होता है ? (पृष्ठा पु ४ पृ १३ १४)

समाधान—नहीं क्योंकि संख्यात क्षेत्रियोंक प्रथम वर्गमूसमात्र भाषामभावे  
 मारणास्तिक क्षेत्रमें बहुत जीवोंकी अनुपलब्धि है ।

इसकिसे द्वितीय पृथिवीके प्रथममें पक्ष्यापमके संख्यातक भाषामात्र उपक्रमव्य  
 काकका भाग देनेपर एक समयसे मारणास्तिक जीवोंका प्रमाण होता है । पुनः इनके  
 संख्यातकमें मागप्रमाण जीव मारणास्तिकसमुदायके विना ही काकको करते हैं तथा  
 वहाँ बहुत पुनपयाव्य भाषियोंका अभाव होनेसे अमंखेत्त बहुमात्रप्रमाण जीव मारणा  
 स्तिकसमुदायको करते हैं । मारणास्तिकसमुदाय करवेवासोके संख्यातकमें मागमात्र  
 अजुगतिमें मारणास्तिकसमुदाय करते हैं क्योंकि अवन स्थित प्रशास बाणक समाप्त  
 अजु क्षेत्रम उत्पन्न होनेबाध बहुत जीव नहीं पाये आत । विग्रहगतिसे मारणास्तिक  
 समुदायको करवेबाधक संख्यातकमें मागप्रमाण मारणास्तिकके पिमा विग्रहगतिसे  
 बलव्य होनेबासी राशि है इस कारण मरंतवाय जीवोंके संख्यात बहुमात्रको भाषणीके  
 संख्यातक भाषामात्र मारणास्तिककाकके भीतर उपक्रमव्यकाकसे गुणित करनेपर  
 मारणास्तिककाममें संखित राशिका प्रमाण आता है । पुनः जैसे मीराजुगुणित मुक-  
 विन्तारमें गुणा करनेपर मारणास्तिक क्षेत्र आता है । यहाँ भी पाँच क्षेत्रोंका अयवर्तन

एतय वि पञ्चलागावहूण पुत्र्य व कायन्व ।

उत्पन्नदक्षेत्ते आभिन्जमाणे पल्लितोत्तमस्त असखञ्जदिभागेष विदियपुटविद्वे  
भाग द्विदे तिरिक्खेहिंतो विदियपुत्र्यीए उप्पज्जमाभरासी होदि । एदस्त असखेज्जदि  
मागां वेव उमुगदीए उप्पज्जदि, कहुज्जुएण मग्गेण सगठप्पचिद्वाणमागञ्छमाण  
जीवाण बहुयाणमणुवलमादो । तेणेदस्त असखञ्जजा मागा विग्गाहगदीए उप्पज्जमाण  
तिरिक्खरासी होदि । पुणो एद दम्ब तिरिक्खोगाहणमुहवित्तियारेण सप्पाआग्ग-  
असखञ्जसोयणगुणेण गुणिदे उववादखेत्त होदि । ओवहूणा पुर्व्वं व कायन्वा । सेस  
आणिय वत्तव्व ।

एव सत्तसु पुढवीसु णेरहया ॥ ३ ॥

इतो ! सत्याण-महग्गधाद-उववादेहिं लागस्त असखेज्जदिभागत्त पडि विमे  
सामाभादो । एसो दव्वड्डियणय पडुन्ध णिदेसां । पञ्जवट्टियणयं पडुन्ध परुविज्जमाण  
सत्तसु पुढवीय दम्बविसमो ओगाहणविससा मारणतिय-उववादेत्तेत्ताणमायामविसेसा  
व अत्थि । गवरि सो वाणिय वत्तव्व ।

पूर्वके समान करना चाहिये ।

उपपादक्षेत्रक निकालनमें एस्यापमक असंख्यातके भागस द्वितीय पृथिवीक  
द्रव्यको भाजित करनेपर तिर्यञ्चोत्ते द्वितीय पृथिवीमें उत्पन्न ज्ञानवासी राशि होती है ।  
इसका असख्यातका भाग ही अज्ञानतम उत्पन्न होता है क्योंकि बाणक नमान अज्ञु  
मार्गस अपमे उत्पत्तिस्थानको ज्ञानवाळ जीय बहुत महीं पाये जाने । इसीलिये इसक  
असंख्यात बहुभागप्रमाण विग्रहगतिस उत्पन्न ज्ञानवासी तिर्यञ्चराशि है । पुनः इस  
द्रव्यका उत्पत्त्याय असख्यात पाञ्चमस गुणित तिर्यञ्चोत्ती अज्ञानादनाक्य मुत्तयिन्मारस  
गुणित करनेपर उपपादक्षेत्र होता है । अथर्वनेन पूर्वक समान करना चाहिये । शय  
ज्ञानकर कहना चाहिये ।

इमी प्रकार सात पृथिवियोंमें नारकी जीव उपपुक्त पदोंमें लोकरु अमम्यातके  
भागमें रहते ह ॥ ३ ॥

क्योंकि स्वस्थान समुद्रघात और उपपाद पर्वोंस साकक असंख्यातके भागवत्त  
प्रति कोई विशेषता नहीं है । यह निर्वेदा द्रव्याधिक नक्षत्री अपक्षास है । पयायाधिक  
नक्षत्री अपक्षा प्रकल्प करनेपर सात पृथिवियोंक द्रव्यकी विदोपता अज्ञानादना  
विज्ञापता और मारणात्मिक एवं उपपाद क्षेत्रके भायामजी विज्ञापता भी है ।  
इसलिये इसे ज्ञानकर कहना चाहिये ।

तिरिक्त्वा गदीए तिरिक्त्वा सत्याणेण समुग्धादेण उववादेण  
केवडिसेत्ते ? ॥ ४ ॥

सत्याणसत्याण विहारवदिसत्याण-वेदण-कसाय-बटाभिय-मारणतिप उववाद  
पदाणि तिरिक्त्वेसु अत्थि, अवमेमाणि वत्थि । एदेहि एदेहि तिरिक्त्वा केवडिउत्थ होंति  
चि आसंक्किप परिहार मण्दि—

सव्वलोए ॥ ५ ॥

हुदो ? आणंतिपादा । म प न मग्गाति चि आसंक्किणग्गं, छागागामम्मि  
अणंतागाइणमत्थिसुमवाद्दो । विहारवदिसत्याणउत्थे चिण्ह स्सेगानमसंसेग्गदिमागो,  
तिरिपटागस्स संसेग्गदिमागो, अङ्गाइग्गमादो अंसंक्कग्गुण । हुदो ? तसपग्गत्तापं  
तिरिक्त्वाण संसेग्गदिमागम्मि विहारुपसंमादो । उदो एदं पुण परुवेदग्गं ? म,  
सत्याणम्मि एदस्सेतग्गुहत्थेण पुण परुपणामावादा । वेडवियसमुग्गादत्थेचं पदुग्ग

तिरिपघगतिमे तियप स्वप्पान, समुत्पाठ और उपपादसं कित्तन धम्मं रहते  
हैं ? ॥ ४ ॥

स्वप्पानस्वप्पान विहारवत्स्वप्पान बदमानमुत्पाठ कयापसमुत्पाठ विक्रियिक्-  
समुत्पाठ मारणत्थिइसमुत्पाठ और उपपाद म पत् तियत्थोमे हते हैं शप नहीं बात ।  
इम पत्तोस तियेच कित्तन धम्मं रहते हैं इस प्रकार मार्शका कटके उसका परिहार  
करते हैं—

तियप और उक्त पदोकी अपथा सर्वे लोकमे रहते हैं ? ॥ ५ ॥

क्योंकि व अनन्त हैं । अनन्त हानसे व मार्शमे नहीं समाने हैं एसी मार्शका  
भी नहीं करता चाहिये क्योंकि, मार्शकाशमे अनन्त भयगाइमशाकि सम्मथ है ।  
विहारवत्स्वप्पानशप तीम मार्शक असंख्यातये भाग तियेक्काक संख्यातये भाग  
और कटारं हीपस असंख्यातमुजा है क्योंकि वस पयात तियेक्का तियेक्का  
संख्यातये भागमे विहार पाया जाता है ।

द्वैत—स्वप्पानस्वप्पानसे विहारवत्स्वप्पानशपमे विषयता हानके कारण  
इमकी पूयत् प्रकपया करना चाहिये ?

मयापान—नहीं क्योंकि स्वप्पानम इसका अन्तमाव हानमे पूयत् प्रकपया  
नहीं की मर ।

वैदिकिकसमुत्पाठका क्षेत्र आर मार्शके असंख्यातये भाग और अनुप्यत्त

लागाणममल्लञ्जदिभागा, माणुसुखेत्तादा असखेज्जगुण । इदा ? तिरिक्खेसु विठम्भमाण  
गमी पछिदावमस्म असखेज्जदिभागमत्तघणगुलदि गुणिदसेहीमेत्तो चि गुरुभेदेसादो ।  
तम्हा यदस्स पुषपत्त्रणा कादम्हा ? ण, पदस्म समुग्घादे अंतम्मात्तादा । सेसं सुगम ।

पचिंदियतिरिक्ख-पचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता पचिंदियतिरिक्ख  
जोगिणी पचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता सत्याणेण समुग्घादेण उववादेण  
केवहिस्सेत्ते ? ॥ ६ ॥

एदमासंकासुच सुगम ।

लोगस्स असखेज्जदिभागे ॥ ७ ॥

एदं दमामासिय सुच, इत्तपदुप्पायणसुहेण छुचिदाभेयत्यादो' । एत्थ ताव पचि  
दियतिरिक्ख-पचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पचिंदियतिरिक्खजोगिणीण पुप्पदे । सं म्हा — एदे

असंख्यातगुणा है क्योंकि तिर्यचोंमें विक्रिया करनेवाली राशि पस्योपमके असंख्यातमें  
मागमात्र घनांगुलोंसे गुणित जगज्जोषीप्रमाण है एसा गुरुका उपदेश है ।

शंका—क्योंकि तिर्यचोंके वैदिकिकसमुद्घातक्षेत्रमें विशेषता है इस कारण  
इसकी पूयत् प्ररूपणा करना चाहिये ?

समाधान—तहीं क्योंकि इसका समुद्घातमें अन्तर्भाव हो जाता है । शय  
सुचार्य सुगम है ।

पंचन्द्रिय तिर्यच, पंचन्द्रिय तिर्यच पयात्त, पंचेन्द्रिय तिर्यच यानिमती और  
पंचन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्त मीर स्वस्थान, मसुद्घात और उपपादमे कितन क्षेत्रमें  
रहते हैं ॥ ६ ॥

यह आशकासुच सुगम है ।

उपर्युक्त चार प्रकारक तिर्यच उक्त पदोंमें एकक असंख्यातमें भागमें  
रहते हैं ॥ ७ ॥

यह इशामशक सूत्र है क्योंकि एक वृत्त कथनकी मुख्यतास अनेक अर्थोंका सूचित  
करता है । यही यहक पंचन्द्रिय तिर्यच पंचेन्द्रिय तिर्यच पयात्त मीर पंचन्द्रिय तिर्यच  
यानिमतिषोंका क्षेत्र कहा जाता है । यह इस प्रकार है— य तीनों ही स्वस्थानस्वस्थान

तिष्णि वि सत्त्वाणसत्त्वाण विहारपदिसत्त्वाण-वेदण-कसायसमुत्पादगदा तिण्हं सागाणम संखे-अदिमागं, तिरियस्सगस्स सखे-अदिमागे, अङ्गाइ-आदो अस्सखे-अगुण अण्ठंति । इदो ! एदेसि सखे-अधनगुलेगाइणत्तादो । पंचिदियतिरिक्खेसु अपन्चचगसी होदि बहुओ, तस्सेचेण किप्प मोबहुणा कीरेदे ? ज, तन्त्र अंगुलस्स असखे-अदिमागोगाइणम्मि बहुबलेचाजुबलमादो । विहारपाओग्गरासिस्स सखे-अ मागा सत्त्वाणसत्त्वाणरासीए एत्थ सखे-अदिमागमचा सेसरासीओ चि पेचन् ।

वेदधियसमुत्पादसेत्तं चदुम्हं खेगाणमसखे-अदिमागो, अङ्गाइ-आदो अस्सखे-अ गुण । इदो ! तिरिक्खेसु विठन्नमाणरासिस्स असखे-अधनगुलेदि गुविदसेदिमत्तपमापु बसमादो । एदे तिष्णि वि मारणतियसमुत्पादगदा तिण्हं खेगाणमसखे-अदिमागे अण्ठंति । इदो ! एदेसि तिण्हं पंचिदियतिरिक्खण पस्सिदोबमस्स अमखे-अदिमाग-मेत्तमागहात्तबलमादो । तं अहा— एदाओ तिष्णि वि रासीओ पहापीभूदमखे-अवस्सत्तअ तिरिक्खे-अधनमकासेण आवत्तिपाए असखे-अदिमागण मागे दिदे एमसमएण मरंतजीवात्तं पमाण होदि । एदेसिमसखे-अदिमागो खेव मारणतिएण विजा विष्किट

विहारएत्थस्सएण वेदनासमुत्पात और कपायसमुत्पातको प्राप्त होकर तीन लोकोंके असंख्यातके भागमें तिर्थाङ्गकोके संख्यातके भागमें और अङ्गारं द्वीपके असंख्यातगुणे शत्रुमें रहते हैं क्योंकि ये संख्यात घनांगुलप्रमाण भवगाहभावासे हैं ।

शुद्ध—पंचमित्रिय तिर्यचोंमें अपर्णात्त राशि बहुत है इसलिये उनके क्षेत्रसे क्यों नहीं अपवर्तन करते ?

समाधान—महीं क्योंकि पंचमित्रिय तिर्यच अपर्णात्तोंमें अगुलक असंख्यातप मायप्रमाण भवगाहभा होवेसे बहुत शक्ती प्राप्ति नहीं होती । विहारएयोग्यराशिक संख्यात बहुभागप्रमाण एवं स्वस्यानस्वस्यान राशिक संख्यातके भागमात्र यहाँ क्षेत्र राशिवाँ हैं ऐसा प्रहण करना चाहिये ।

वैदिकिकसमुत्पातअत्र चार लोकोंके असंख्यातके भाग और अङ्गारं द्वीपके असंख्यातगुणा हैं क्योंकि तिर्यचोंम विक्रिया करवेपासी राशिअ प्रमाण असंख्यात घनांगुलोंसे शुद्धित अगभजीमात्र पाया जाता है । ये तीनों ही तिर्यच मारणात्मिक समुत्पातको प्राप्त होकर तीन लोकोंके असंख्यातके भागमें रहते हैं क्योंकि इन तीनों पंचमित्रिय तिर्यचोंके पस्यापमक असंख्यातके भागमात्र मायहार उपलब्ध है । यह इस प्रकार है— इन तीनों ही राशिधोंमें प्रधानभूत संख्यातघर्णांगुल तिर्यचोंके उपक्रमक कासत्त्व आच्छादक असंख्यातके भागका भाग क्षेत्रए एक समयमें मरतेवाले जीवोंका प्रमाण होता है । इनके असंख्यातके भाग ही मारणात्मिकसमुत्पातके विना मरत्य करने

भाषामि चि कृद् एदस्म असखञ्जे माग मारणतियउत्तपकरणकालेय आश्लियाए  
 असखेञ्जदिभागण गुभिदे गुणगारुषकमणकालादो मागहारुषकमणकालो संखेञ्जगुणो  
 चि उषरिमगुणगारेण हेड्दिममागहारमाश्लियाए असखेञ्जदिभागमोवड्डिय सेसेण मागे  
 हिदे सग-सगगमीण सखेञ्जदिभागो आगच्छदि । पुणो असखेञ्जजायणाण सुक्कमारण  
 तियबीवे इच्छिय अप्पगो पलिदोवमस्स असखेञ्जदिभागो मागहारो उवेदञ्चो । पुणो  
 एद राप्तिं रन्नुगुभिदसखेञ्जपदरंगुलेहि गुभिद मारणतियखेत्त होदि । एदेण तिसु  
 लागसु मागे हिदेसु पलिदोवमस्स असखेञ्जदिभागो आगच्छदि चि तिण्ह लागायम  
 संखेञ्जदिभाग अप्पच्छति चि बुत्त । णर-तिरियल्लोगेहिंसो असखेञ्जगुणे ।

तिण्ह रासीणसुववाद्दखेत्त पि तिण्ह लोगाणममखेञ्जदिभागो णर तिरियलागहिंता  
 असखेञ्जगुणं । एदस्स खेत्तस्म पमाण भाणिञ्जमाण मारणतियमगो । णषरि एगममय  
 संधिदो ण्मा रामि चि कृद् आश्लियअसखेञ्जदिभागो गुणगारे अवणदञ्चो । पदमदद

बाबी राशि है एसा ज्ञानकर इनके असंख्यात बहुभागका मारणात्मिक उपक्रमणकारूप  
 भाषनीक असंख्यातके भागसे गुणित करनेपर चूंकि गुणकारभूत उपक्रमणकारूपसे  
 मागहारभूत उपक्रमणकारूप संप्रयातगुणा है इसलिय उपरिम गुणकारस भाषनीके  
 असंख्यातके भागरूप अद्यस्तन मागहारका अपवतन करके शेषका माग शेषपर अपनी  
 अपनी राशिपोंका संख्यातका भाग जाता है । पुनः असंख्यात योजनों तक मारणात्मिक  
 समुद्घातको करनेवाले जीवोंकी इच्छाराशि स्थापित कर अन्य पस्यापमके असंख्यातके  
 भागमात्र मागहारको स्थापित करना चाहिये । पुनः इस राशिका राशुन गुणित असंख्यात  
 मतरांगुल्लोत्ते गुणित करनेपर मारणात्मिक क्षेत्रका प्रमाण होता है । इसका तीस छाकोंमें  
 माग शेषपर पक्षोपमका असंख्यातका भाग छाप्य होता है । इसीछिय तीस छाकोंक  
 असंख्यातके भागमें रहते हैं ऐसा कहा है । उक्त जीव मारणात्मिक समुद्घातको प्राप्त  
 हाकर मनुष्यत्वाक और तिरियल्लोत्तपकरण मन्व्यातगुण क्षममें रहन है । ( वेग्या पुस्तक ४  
 पृ ७१-७२ ) ।

उक्त तीस राशिपोंका उपगहक्षेत्र भी तीस छाकोंक असंख्यातके भागप्रमाण  
 और मनुष्यत्वाक व तिरियल्लोत्तपकरण असंख्यातगुणा है । इस क्षमक प्रमाणके निकालनका  
 रीति मारणात्मिकक्षेत्रके समान है । बिशय इतना है कि यह राशि एक समय सचिन  
 है ऐसा ज्ञानकर भाषनीका असंख्यातका भाग गुणकार अलग करना चाहिये । प्रथम



सुबसंहारिय विदियदद्विद्विर्जाव इग्लिय अबग पलिदावमस्म अमंग्य-त्रदिमागा भागहाग  
उपेदप्या ।

पर्विदियतिरिक्त्वाअप-त्रत्ता स-चाज-वेदण कमायममुग्भादगदा पदुष्ट सागाजम-  
मसि-त्रदिमाग, अत्राह-भादा अमंग्य-त्रगुण अर्थेति । बुदा ? उस्मपवपुगुन पलिदावमस्म  
अमंग्य-त्रदिमागण सुद्विद्व-एगर्त्तमत्तागाहपादा । मारभनिय उववाद्गदा तिर्ण सागाजम  
सख-त्रदिमाग, शर तिरियसागर्हिता अमंग्य-त्रगुण अ-छति । बुदा ? दा तिग्गि-  
पलिदावमस्स अमंग्य-त्रदिमागमत्तागाहाराण अहाक्रमत्र माग्गतिय उववाद्गवत्तसु  
उवत्तभादा । सम सुगम ।

मणुसगदीए मणुसा मणुमपञ्जत्ता मणुसिणी सत्याणेण उववाणेण  
वेवडिस्वेत्ते ? ॥ ८ ॥

एत्य मन्वाजपि-पन मन्वाद्यमन्वाण-विहाग्गदिमन्वापाण गदण, मन्वाजपण  
दाहं भेदाभावादा । सम सुगम ।

लोगस्म असस्वेज्जदिभागे ॥ ९ ॥

दुग्गवा उपसंहार कर द्वितीम दुग्गमे स्थित जीवोकी इत्ता कर मय्य पस्यापमवा  
असंख्यातवा भाग मागहार स्थारित वरत्ता आदिय ।

पंचन्दित्रय तिवच्च अपपात्त जीव स्वस्थान वरत्तामनुत्पात्त और कपायसमुद्  
धातको प्राप्त होकर चार मासोंके असंख्यातव भागमें तथा अहाह उत्पन्न असंख्यातगुण  
क्षेत्रमें रहते हैं क्योंकि उन्मत्त पलांगुमका पस्यापमके असंख्यातव भागस अग्नि  
करनेपर एक स्रष्टाभाव पंचन्दित्रय तिवच्च अपपात्तोंकी भवगाहमा मध्य जाती है ।  
मारजातिक और उपपाद्का प्राप्त पंचन्दित्रय तिवच्च तीन जोशोंके असंख्यातव भागमें  
तथा मनुष्यका व तिर्यग्लोके असंख्यातगुण क्षेत्रमें रहते हैं क्योंकि पस्यापमके वा  
व तीन असंख्यातव भागमात्र मागहार पथाक्रम मारजातिक और उपपाद् सत्रोंमें  
उपलभ्य है । शय सुचार्य सुगम है ।

मनुष्यगतिमें मनुष्य, मनुष्य पयात्त और मनुष्यिनी स्वस्थान व उपपाद् पद्म  
कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? ॥ ८ ॥

इस सुत्रमें स्वस्थान व नवोद्यत्त स्वस्थानस्वस्थान और विहारवत्स्वस्थान  
जासोध्य प्रद्वक्ष किया गया है क्योंकि, स्वस्थानपतेसे जोनाम कार्य भेद नहीं है । शय  
सुचार्य सुगम है ।

उक्त तीन प्रकारके मनुष्य स्वस्थान व उपपाद् पद्ममें सोकरु असंख्यातव  
भागमें रहते हैं ॥ ९ ॥

एतत्प लागणिसो देसामासियो, तत्प पचन्ह लागण गहण होदि । एदण  
 छिदरयस्त पन्वण कस्तामो । तं ब्रह्म— सत्याणमयाण बिहारवदिसत्याण  
 द्विदतिविहा मणुमा चदुण्ह लोगाणमसखज्जदिमाग अञ्छति । इदो ? मणुस मणुम  
 पञ्च मणुमणीण मणुज्जीवाण खेत्तग्गहणाने । संहीण अमत्तेज्जदिमागमत्तमणुम  
 अपञ्चत्ताप मत्तयाणखेत्तम् गहण क्किण्ण कीरदे ? ण, तस्म अंगुलस्स संखज्जदिमाग  
 संखज्जंगुलेसु वा णिच्चियक्कमेण अवहाणादा । उववाद्दगदा तिण्ह लोगाणमसखज्जदि  
 माग, णर तिरियलोरोहिंसो अमत्तेज्जगुणे अञ्छति । इदो ? पहाभीफद्दमणुमअपञ्चत्त  
 उववाद्दखेत्तादो । गवरि मणुमपञ्चत्त मणुमणीणसुववाद्दखेत्त चदुण्ह लागणमसखज्जदि  
 मागा, अह्हाइज्जादो असंखेज्जगुण । मणुमाणसुववाद्दखेत्ताणयणविहाण बुञ्चदे ।  
 त ब्रह्म— मणुमअपञ्चत्तरामिमावलियाए अमत्तेज्जदिमागमेत्तुवक्कमणकालेण दोदि  
 पत्तिदापमस्स अमत्तेज्जदिमागदि य ओषट्ठिय पत्तिदोषमस्स अमत्तेज्जदिमागोबद्धिद  
 पद्दगुलेण गुणिदमहीत्तत्तमागेण गुणिदे उववाद्दयेत्त इदि । एत्थ पंचलागाबहूण  
 भाविय कापय्य । मेम सुगमं ।

सूत्रमें श्लोकका निर्देश देसामशक है इसलिय उक्त पाँचों श्लोकोंका ग्रहण होता है । इस सूत्रसं सूचित मध्या प्रकृपा करता है । यह इस प्रकार है— स्वस्थानस्वस्थान और विहारपरस्वस्थानमें स्थित तीन प्रकारके मनुष्य चार भागोंके असें कथाने भागमें रहते हैं क्योंकि यहाँ मनुष्य मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनी इस संस्थान जीवोंके श्रेयका ग्रहण है ।

शुद्धा—जगभर्षीके असें कथाने भागमाध मनुष्य अपयामोंके स्वस्थानक्षेत्रका ग्रहण पर्याप्त नहीं किया जाता ?

समाधान—नहीं क्योंकि मनुष्य अपर्याप्तराशिका भगुलक संस्थानके भागमें मध्या संस्थान भगुलाम स्थितकमस मधस्थान है ।

उपपादको प्राप्त उक्त तीन प्रकारके मनुष्य तीन श्लोक अन्तर्गतमें भागमें तथा मनुष्यलाक व तिपरमांस अस्वस्थानगुण क्षेत्रमें रहत हैं क्योंकि यहाँ मनुष्य अपर्याप्तोंके उपपादक्षेत्री प्रधानता है । विशेषता यह है कि मनुष्य गवाण और मनुष्य मियोंका उपपादक्षेत्र चार श्लोक अन्तर्गतमें भाग तथा मद्धार तीपम असें कथान गुणा है । मनुष्योंके उपपादक्षेत्रके निकालनके विधानका कहत है । यह इस प्रकार है— मनुष्य अपर्याप्त राशिका भाषणीके असें कथाने भागमाध उपकमकाकाम तथा पस्यापमके वा असें कथान भागाम अपर्याप्त करके पस्यापमके अन्तर्गतमें भागमें अपर्याप्त प्रतरांगुलस गुणित जगभर्षीके साथमें भागम गुणित करनपर उपपादक्षेत्र होता है । यहाँ पाँच श्लोकोंका अपर्याप्त जानकर करना चाहिए । दोष सूत्राय सुगम है ।

ममुग्धादेण केवडिखेत्ते ? ॥ १० ॥

परप समुग्धात्प्रिरेसो दम्बाड्डियनपमवलविय कुदा, संगहिदवेदन-कमाय-वेठ  
भिय मारभंतिय-तेजाहार-दड-कवाड पदर-सोगपूरणचादा । मम सुगम ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ११ ॥

येष णं दसामासियं सुच तेणेदेन सुददत्तपपण्णं कस्सामा । तं ब्रह्मा—  
बदण-कमाय-वेठभिय-तेजाहारसमुग्धात्प्रदा ति विहा ममुमा चदुण्हं लोमाणमसंखेज्जदि  
भाग, माणुमखेचस्स सखे-ब्रदिभागे । णरि मणुमिणीसु तेजाहार पत्तिय । मारभंतिय  
समुग्धादगदा तिण्हं सागाणममखेज्जदिभागे, मर तिरियलोणेहिंसा असंखेज्जगुणे अण्हंति ।  
कुदा ! पहाणीकदमणुमअण-अचखपादो । णरि मणुमपण्णच मणुमिणीय मारभंतियखेचं  
चदुण्हं लोगाणमसंखे-ब्रदिभागो, माणुमखेचपादो असंखेज्जगुण । णं दं-कवाडलेचाप  
पि वचम्भ । णरि कवाडखेचं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो । सपदि पदर-सोगपूरण

उक्त तीन प्रकारक मनुष्य समुद्घातमे कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? ॥ १० ॥

यहां समुद्घातका निर्देश द्रव्यार्थिक मयका मयकजन्म करके स्थित है क्योंकि  
बह पर बेचना कपाय वैदिकियक मारजातिक तीव्रस आहार वृद्ध कपाट प्रतर  
भीर जोकपूरण इन सब समुद्घातोंका संग्रह करनेवाला है । शप खर्चायें सुगम है ।

उक्त तीन प्रकारक मनुष्य समुद्घातकी अपेक्षा साकके अर्मस्पातमें भागमें  
रहते हैं ॥ ११ ॥

क्योंकि यह बेचाप्रार्थक मूल है मत । इसके प्राय सुचित मर्चकी प्रकल्पना करते  
हैं । बह इस प्रकार है—बेचना कपाय वैदिकियक तीव्रस भीर आहारक समुद्घातको  
प्राप्त तीन प्रकारके मनुष्य आर साकके असंख्यातमें भागमें तथा मनुष्यक्षेत्रक संख्यातमें  
भागमें रहते है । विशेष इतना है कि मनुष्यनिर्णयमें तीव्रस भीर आहारक समुद्घात  
बर्ही होते । मारजातिकसमुद्घातको प्राप्त उक्त तीन प्रकारके मनुष्य तीन साकोंक  
असंख्यातमें भागमें तथा मनुष्यक्षेत्र क तिर्यक्क्षेत्रक असंख्यातगुण क्षेत्रमें रहते हैं  
क्योंकि, यहाँ मनुष्य अपर्णालोंका क्षेत्र प्रधान है । विशेष इतना है कि मनुष्य पर्णाल  
भीर मनुष्यनिर्णयक मारजातिक क्षेत्र आर जोकोंक असंख्यातमें भाग तथा मानुषक्षेत्रके  
असंख्यातगुणा है । इसी प्रकार वृद्ध भीर कपाट क्षेत्रोंका भी प्रमाण बहना चाहिये । परन्तु  
इतना विशेष है कि कपाटक्षेत्र तिर्यक्क्षेत्रक संख्यातमें भागप्रमाण है । अब प्रतर भीर

समुग्घादे पट्टुच्च खचपट्टुप्पायणट्टुत्तरसुत्तं मणदि—

असस्सेज्जेसु वा भाएसु मव्वलोगे वा ॥ १२ ॥

पदसमुग्घाद लोयस्स अयस्सेज्जेसु भागेसु अवट्टान्ना हादि, वादवत्तएसु जीवपदे सामममावादा । लोयपूरणसमुग्घादे सव्वलोगे अवट्टार्यं हादि, जीवपदेसभिरिदिल्लोगा गासपदेसामावादा । अथवा मन्त्रमेदमक्कं चैव सुत्तमेक्कस्स समुग्घादगदस्स तिसु अवट्टापिसु खेचमेदपट्टुप्पायणादा ।

मणुसअपज्जत्ता सत्याणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिस्सेत्ते ?

॥ १३ ॥

सुगममर्दं ।

लोगस्स अमस्सेज्जदिभागे ॥ १४ ॥

पदं दसामासियसुत्तं, सेण्णेषु सुत्तिदत्तपरुत्तं कस्सामो त अहा— सत्याण पदम-असायसमुग्घादगदा चदुण्हं लोयाममसंखेज्जदिभाग, मणुसस्सेचस्स संखेज्जदिभाग

साकपूरण समुत्पातकी अपक्षा कर क्षत्रनिरूपणक क्रिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

समुत्पातकी अपेक्षा उक्त तीन प्रकारक मनुष्य लोकक असंख्यात बहुभागोंमें अथवा सब लोकमें रहत हैं ॥ १२ ॥

मत्तरसमुत्पातकी अपक्षा लोकक असंख्यात बहुभागोंमें अथवा सब हाता है क्योंकि सातवसुत्तोंमें जीवप्रदेशोंका समाव रहता है । साकपूरणसमुत्पातकी अपक्षा सब लोकमें अवस्थान होता है क्योंकि इस अवस्थामें जीवप्रदेशोंमें रहित साकपूरणक प्रदेशोंका समाव है । अथवा यह सब एक ही सूत्र है अर्थात् उपयुक्त दोनों सूत्र भिन्न नहीं हैं किन्तु एक ही सूत्ररूप हैं क्योंकि एक केवलिसमुत्पातगत जीवकी तीन अवस्थाओंमें क्षत्रभेदका कथन करते हैं ।

मनुष्य अपर्याप्त स्वस्थान, समुत्पात और उपपादकी अपेक्षा किन्तु सूत्रमें रहते हैं ? ॥ १३ ॥

यद् सूत्र सुगमं है ।

मनुष्य अपर्याप्त उपयुक्त तीन पदोंकी अपेक्षा लोकक असंख्यातों भागमें रहत हैं ॥ १४ ॥

यह देशामर्शक सूत्र है इसलिये इसक द्वारा स्थिति भयकी प्रकल्पना करते हैं । यह इस प्रकार है— स्वस्थान बदनासमुत्पात और कर्णायसमुत्पातको मान्य मनुष्य अपर्याप्त चार लोकोंके असंख्यातों भागमें तथा मणुसस्सेचक संख्यातों भागमें संखित

विधिपद्धतम । विष्णुसकमण पुण अमरु-जात्रा वायव्यझडीत्रा माणुमनेत्तादा  
 अमरु-प्रगुजात्रा । मारणतियमसुखादगदा तिण्ड ठागाणममउन्मदिभाग, जर तिरिय  
 नागहिता अमंखे-प्रगुण अस्थिति । मारणतियसेचानयपरिहाय पुष्पद-— सुभिअंगुल  
 पदम-तदियवमामूले गुणेइण अगसेइमिदि माग हिदे दध्वं हादि । तमिदि आश्लियाय अंस  
 ऐरअमागमचउवककमणकालण भाग हिदे एगसमयमंभिइमरवराभी हादि । एदस्म  
 अमउन्मदिमागा मारणतिएण विष्णु विष्णिइमागरासी होदि । पुणे मारणतियरामिमाव  
 तियाय अंसउ-अदिमागण मारणतिपउवककमणकालेण गुणिदे मारणतियझठमंरत  
 सभिदरामी हादि । पुजा अक्षरेण पत्तिदोवमस्म अमखन्त्रदिमागण भागे हिद रन्नु  
 आपामेण पत्तिदावमअंसउन्मदिमागणांकिदिपदरगुलस्म अमरु-अदिमागेण विष्णुमं  
 वृकमारणतियरामी हादि । पुणे एदस्म ओगाइमगुणगार त्रिदे मारणतियउच हादि ।  
 एत्थ ओरइम आणिय हायन् ।

क्रमसे रहत है । परन्तु विष्णुसकमसे मानुपसबसे मंसंख्यातगुणी असत्पात यादव  
 काठिया मनुष्य अपत्यांका सब है । मारणास्तिकसमुद्घातको प्राप्त हुए मनुष्य  
 अपत्यांका तीन भागोंके असत्पातके भागमें भीर मनुष्यका एक तिर्यग्भासक असत्पात  
 गुण अमर रहते है । मारणास्तिक अत्रके निवासनेका विधान कहत है— सूर्यगुलके  
 प्रथम भीर ततीय वर्गमूळोंका परस्परमें गुण कर अगसेभीमें भाग देवेपर मनुष्य  
 अपत्यांका उष्यप्रमाण प्राप्त होता है । उसमें भाषलीके असत्पातके भागमात्र इय  
 क्रमबकाइका भाग इनेपर एक समय संचित मरनेबाले मनुष्य अपत्यांकी राशि होती है ।  
 इसके असत्पातके भागप्रमाण मारणास्तिकसमुद्घातक बिना मरण करनेवाली राशि है ।  
 पुनः मारणास्तिक राशिवा भाषलीके असत्पातके भागइय मारणास्तिक उष्यप्रमाणकालम  
 गुणित करकेपर मारणास्तिक काइक मीतर संचित राशिवा प्रमाण होता है । पुनः अथ  
 पस्योपमक अंसत्पातके भागसे माहित करनेपर जो अथ्य हा उतवा उन्मुप्रमाण आपामसे  
 तथा पस्योपमक असत्पातके भागसे अपवर्गित प्रतरांगुलके असत्पातके भागप्रमाण  
 विष्णुममं मारणास्तिकसमुद्घातको करकेबाइ मनुष्य अपत्यांका प्रमाण हाता है ।  
 पुनः इसके अगगाइनागुणकारक स्थापित करकेपर, अर्थात् इस राशिवा अमपाइनास  
 गुणित करकेपर मनुष्य अपत्यांका मारणास्तिक सब होता है । यहाँ अपवर्गित  
 सावकर करवा चाहिये ।

१ प्रतिपु विष्णुसकमे इति वाच ।

२ प्रतिपु -शेषवचनविधानी इति वाच ।

उववाद्गदा तिष्ण लोगापमसखज्जदिमाग, णर-तिरियलागहिंता असखज्जगुणे  
अच्छति । एत्थ उववाद्देत्त मारणतियसेत्त व ठवदम्भ । णवरि एसो रासी एगसमय  
सचिदो सि आषशियाए अमंखेज्जदिमागगुणगारो ण दादम्भो । पडमदंभमुवसंहरिय  
विदियदंभण सेहीण सखेज्जदिमागयामेष मुक्कमारणतियजीवे इच्छिय अण्णगो  
पलिदावमस्स अमखेज्जदिमागो मागहाग ठवेदम्भो । एत्थ ओक्कणा पुब्ब व कायम्भं ।

देवगदीए देवा सत्याणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ?

॥ १५ ॥

एत्थ उवाहार-कफलिसमुग्घादा णरिय, देवसु तत्तिमरियचविराहादा । किं  
सम्बलागे किं सोगस्म असखज्जेसु भागसु किं वा सखेज्जदिमाग किमसखेज्जदिमाग  
किमपत्तिमभाग किं वा मखज्जासंख-त्रापतलागतु चि पुच्छिदे उचरसुत्त भगदि ।  
अथवा आसकिदसुत्तमेई । वासरेण विणा कफमामफावगम्मदे ? एण विणा वि तदङ्का-  
पगदीदो ।

उपपादको प्राप्त मनुष्य भयपान्त्त तीन खोकके असत्प्यातये मागमें भार  
मनुष्यसोक एव तिपख्खाकस असत्प्यातगुण क्षेत्रमें रहते हैं । यहाँ उपपादको  
मारणास्तिक अत्रक समान स्थापित करना चाहिये । विशेष इतना है कि यह राशि  
एक समयसहित है अतएव भाषसीका असत्प्यातर्था भाग गुणकार नहीं देना चाहिये ।  
प्रथम इच्छका उपसंहार कर द्वितीय इच्छसे जगभेणीके सत्प्यातये मागप्रमाण भाषामस  
मुक्कमारणास्तिक शीषोंकी इच्छाराशि स्थापित कर एक अन्य पस्योपमका असत्प्यातर्था  
भाग भागहार स्थापित करना चाहिये । यहाँ भयपान्तन पूवक समान करना चाहिये ।

द्वगतिमें इव स्वस्थान, समुत्पात और उपपादसे कितने क्षेत्रमें रहते हैं ?

॥ १६ ॥

यहाँ तैजससमुत्पात भाहारकसमुत्पात और कथलिसमुत्पात नहीं है क्योंकि  
इसमें इसके अस्तित्वका विराय है । क्या खक भास्में क्या खोकके असत्प्यात बहु  
मागोंमें क्या खोकके सत्प्यातये मागमें क्या खोकके असत्प्यातये मागमें क्या खोकके  
अनन्तये मागमें अथवा क्या सत्प्यात असत्प्यात व अमल खोकमें रहते हैं ऐसा  
पूछनेपर उत्तर सूत्र कहते हैं । अथवा यह भाषनाम्न है ।

शुक्र—वा शत्रुक बिना कैस भासंकाका परिभान होता है ?

समाधान—क्योंकि वा शत्रुक पिमा भी उस अथका परिपान हा जाता है ।

## लोगस्स अमंस्वेज्जदिभागे ॥ १६ ॥

इमामामियसुत्तमिदं, तेण्णदेण सुच्चिदत्त्वस्स परूषणं कीरदे । तं जहा— सत्थाण  
सत्थाण विहारवदिमत्थाण-भेयण-कमाय-भेउम्भियसमुग्घादगदा देवा तिण्ह लागामसंखे  
ज्जदिभागे, तिरियलोगम्म संखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तादो असंखे-ज्जगुणे भवति ।  
इहा ! पहाणीकदोइमियसखेत्तादा । विहारवदिमत्थाण-भेयण-कमाय-भेउम्भियससीओ  
सग-सगरामीणे मच्चत्थ संख-ज्जदिभागमत्तामा, सत्थाणसत्थाणराधी सगरासिस्स सच्चत्थ  
संख-ज्जामागमत्ता चि क्वच षण्णदे ? वा, गुरुवदेसादो, एवेसु पवेसु व्हिददेवा तिरिय  
लोगस्स संखज्जदिभाग भवति चि क्वत्तापादा वा षण्णदे । मारणतियममुग्घादगदा  
तिण्ह लोगाममण-ज्जदिभाग गर-तिरियलोगाहितो अमखे-ज्जगुण अण्ठंति । एवस्स  
गुत्तस्स इवणविहाण गुत्तश्च । तं जहा— एत्थ वाणभेत्तरखेच पहाम, सत्थत्थमंखे-ज्ज

द्व उपयुक्त पदोंमें लोकोके अभाष्यातवें भागमें रहते हैं ॥ १६ ॥

यह सूत्र कथामशक है इसलिये इसके द्वारा सूचित मधुकी प्ररूपणा करते  
हैं । यह इस प्रकार है— स्वस्थानस्वस्थान विहारपरस्वस्थान यन्नाममुद्घात क्वाव  
समुद्घात भीर वैकियिचसमुद्घातको प्राप्त वच तीन लोकोके अमंख्यातवें भागमें  
तियग्माकक स्वस्थानव भागमें भीर मानुसखेत्रम मसंख्यातगुण खेत्रमें रहते हैं क्वाचि  
यहां ज्वातिपौ क्वाका शत्रु प्रधान है । विहारव-स्वस्थान यन्नासमुद्घात क्वाव  
समुद्घात भीर वैकियिचसमुद्घातका प्राप्त राशिवां सयव भयनी भयनी राशिपौके  
सक्यातवें भागमात्र भीर स्वस्थानस्वस्थानराशि सयव भयनी राशिक संख्यात बहु  
भागप्रमाण जाती है ।

धृता— विहारपरस्वस्थान यन्नासमुद्घात क्वावसमुद्घात भीर वैकियिच  
समुद्घातका प्राप्त राशिवां भयनी भयनी राशिपौके संख्यातवें भागमात्र है तथा  
स्वस्थानस्वस्थानराशि सयव भयनी राशिक संख्यात बहुभागप्रमाण है यह किस  
आमा जाता है ?

ममाधान—जहाँ क्वाचि उपर्युक्त राशिवाका प्रमाण शुद्ध उपरदान जाता  
जाता है । मयवा इस पदमें स्थित दप तियग्माकक संख्यातवें भागमें रहते हैं इस  
व्याख्यात्मक जाता जाता है ।

मारणा तन्नासमुद्घातका प्राप्त वच तीन लोकोके अमंख्यातवें भागमें तथा  
मनुष्यातक व निर्गमाकक मसंख्यातगुण शत्रुमें रहते हैं । इस शत्रुक रथागतापिवातका  
बहते हैं । यह इस प्रकार है— यहाँ पात्रपत्तराका शत्रु प्रधान है क्वाचि यहाँपर

भासाठपसु तस्य द्वियवसखेज्जवासाठपरिहो असखेज्जगुणेषु आवलिपाए असखेज्जदि-  
मागमेषुवक्कमणकालुवलंमादो। तेण धेतररासिं ठविय मारणतियठवक्कमणकालेणोवद्विद  
सगुवक्कमणकालसखेज्जरूवेहि भागे हिदे मुक्कमारणतियपञ्जीवा होति। तेसिमसखेज्जदि  
भागो ईसिपम्मारदिठवरिमपुडपीसु उपज्जदि पि पलिदोषमस्स असखेज्जदिभागो  
मागहारो दादम्भो। तिरिक्खसु रज्जुमेत्त गंतुप्पन्जमाणञ्जीवाणमागमण्ह प पुणां  
पदरगुलस्स सखेज्जदिभागमत्त्वसखेज्जवरज्जहि गुभिदे मारणतियस्येत्तं होदि।

उपवादगदा तिण्ह लोमाणमसखेज्जदिभागो, णर तिरियलोगाहिता असखेज्जगुणे  
अच्छति। एदस्स खेत्तस्म विण्णासो मारणतियमगो। षवरि तिरिक्खरासिं तिरिक्खमाण  
मुक्कमणकालण आवलिपाए असखेज्जदिभागोपोवद्विय पुणो दधेसुप्पन्जमाणरासिमिच्छिय  
त्त्पाप्रोगामसखेज्जरूवेहि ओवद्विय रज्जुमेत्त गंतुप्पन्जमाणञ्जीवाण पमाणागमण्ह  
पलिदोषमस्स असखेज्जदिभागो मागहारा दादम्भो। पुणो विदियद्वेण रज्जुसखेज्जदि  
भागमेत्तायदञ्जीवाण पठर समत्तामावादो पुणो अप्णेगो पलिदोषमस्स असखेज्जदिभागो

स्थित असंख्यातर्थापुणोकी मयेसा असंख्यातगुणे यहाथि संख्यातर्थापुणोके मापकीके  
असंख्यातर्था भागमात्र उपक्रमणकालकी उपलब्धि है। इसलिये व्यस्तत्वाशिको स्थापित  
कर मारणास्तिक उपक्रमणकालसे अपवर्तित मये उपक्रमणकालरूप संख्यात रूपोंका भाग  
बेनेपर मुक्कमारणास्तिक जीवोंका प्रमाण होता है। उमरु असंख्यातर्था भाग ईपत्था  
ग्मागदि उपरिम वृथिविद्योमे उत्पन्न होता है इसलिये पस्योपमका असंख्यातर्था भाग  
मागहार देना चाहिये। तिर्येचोमे राजुमात्र जाकर उत्पन्न होनेवाले जीवोंका भागमनाथं  
पुनः मतरांगुलके संख्यातर्था भागस गुभित सख्यात, राजमंसि गुभित करनेपर मारणा  
स्तिक शेष होता है।

उपवादको प्राप्त वृत्त तीन लोकोंके असंख्यातर्था भागमें तथा मनुष्यसाक प  
तिर्येग्लोकमे असंख्यातगुणे शेषमें रहते है। इस क्षेत्रका विन्यास मारणास्तिक क्षेत्रके  
समान है। बिशेष इतना है कि तिर्येचराशिको तिर्येचोके उपक्रमणकालरूप मापकीके  
असंख्यातर्था भागमें अपवर्तित कर पुनः बेचोमे उत्पन्न होनेवाली राशिकी इच्छा कर  
ताप्रयोग्य असंख्यात रूपोंसे अपवर्तित कर राजुममाण जाकर उत्पन्न होनेवाले जीवोंके  
प्रमाणको सानेके लिय पस्योपमका असंख्यातर्था भाग मागहार देना चाहिये। पुनः द्वितीय  
वृत्तसे राजुके संख्यातर्था भागमात्र मायामको प्राप्त जीवोंकी प्रचुर संभावना न होनेसे  
पुन एक और अन्य पस्योपमका असंख्यातर्था भाग मागहार देना चाहिये। पुनः



मागहारो दादृष्या । पुषो सखेन्द्रपदरंगुल्लुगिद्वगमडिमखे-त्रमागेण गुभिदे उववाद्  
खेच हादि । एत्य पचलोगावद्वृष्य आणिय कामव्य ।

भवणवासियप्यद्वुष्टि जाव सव्वद्वुष्टिसिद्धिविमाणवासियदेवा देवगदि  
भगो ॥ १७ ॥

एमो दम्भद्वियणय पद्वन्व पिहसा, पन्वद्वियणय अवलवि-दमागे अत्यि  
विमसा । तं वहा— सत्थाणमत्थाण विहारवदिसत्थाण-वेदण-कमाय वेउभियपसमुग्धादगदा  
भवणवासियदेवा चदुण्हें लागायममंखे-त्रदिमाग, अन्नाइन्नादा अमखेन्द्रगुणे अन्धंति ।  
एत्य उचचिण्णासो जापिय कायव्या । उववाद्गदाण पि एव पच वचव्य । तिरिक्क  
मज्जुमार्य वे विग्गहे काद्व्य मज्जगामियदेवेसु मंठीए संखेन्द्रदिमागायामेण विदियिद्वे  
विवादाथद्वुववादयेचं तिरियलोगादो अमखे-त्रगुण किम्प लम्भदे ? गेदमसमवादा ।  
एगविग्गह काळय उणुप्यण्णाणमुववादयेचापामो ग ताव अमंउन्त्रजोयणमेचा 'सोसम  
दु खरो मागो पद्वद्वुन्ने य तह पुनामीदि । आववद्वुलो अमीदि' चि सुत्तण सह विरोहदा ।

सत्थाण प्रतरंगुलास गुञ्जित जगधेणिक सत्थाणव मागसे गुणित करमपर उपपादसेत्र  
होना है । यहाँ पांच लोकोका मपरमंन जानकर करना चाहिये ।

भवनवासियोम सेइर मजोथेमिद्विरिमानगामी देवो तरुका अत्र देवगदिके  
समान है ॥ १७ ॥

यद भिवेदा द्रव्याधिक मयकी मयसासे है पर्यायाधिक मयका मयसजन करनेपर  
विज्ञापना है । यह इस प्रकार है— कृष्यालस्वरूपाम विहारवत्स्वरूपाम वेवनासमुद्भात  
कगपसमुद्भात भीर वैत्रियिकसमुद्घातको प्राप्त भवनवासी देव आर मांको  
ममप्यातवे मागम भीर मद्दार् इपमं मसप्यातगुण अत्रमे रहत है । यहाँ क्षेत्रविश्याम  
जानकर करना चाहिये । उपपादकां प्राप्त भवनवासी देवोंके मी क्षेत्रका इमी प्रकार  
कथन करना चाहिये ।

सुरा—हो विग्रह करक मयमवामी द्वामे जगधणीके संव्वातवे मागममाप  
जायामम द्वितीय वण्डम प्राण निवक मनुप्याका उपपादसत्र तिगस्ताकसे अमंप्यातगुण  
क्या नहीं पाया जाता ?

ममाधान— एसा नहीं पाया जाता पराकि मर्मभय है । एक विग्रह करक मयम  
वासियोमे उणुप्य हानयास तिबेक मनुप्याक उपपादसत्रका भायाम अमंप्यात याजनमात्र  
नहीं है पर्योकि एरमाग सानह सहस्र याजन पद्वद्वुसमाग भीरवासी सहस्र  
याजन भीर मप्यद्वुसमाग अस्मी सहस्र याजन मादा द इस द्वाक साथ विरोध  
हागा ।

साग्रे अद्भुत इच्छा गतुं एगविग्गह करिय तिरिच्छण रञ्जए सखेज्जदिमाग  
 गनुणुप्यण्णार्णं विदियदंढायामो सेठीए सखेज्जदिभागमेत्ता रुम्मदि ति भेद पि भइदे,  
 तेसिं सुद्धु यावत्तादो । त इदो षगम्मद ? तिरियलोगस्म अमखेज्जदिमागो पि  
 मक्खामाहरियवयत्तादो । न दोण्णि विग्गह काळणुप्यण्णणं विदिय तदियदंढाण संजोगा  
 सेठीए सखेज्जदिमागायामो सेठिं पलिदोवमस्म अमखेज्जदिमाणेण सुद्धिदंढगसुद्धा  
 यामो वा रुम्मदि ति बोणु जुघ, कइन्नुववत्ताए सग्गदिमाहिंतो आगतुं एगविग्गह  
 काळण उप्पज्जमाणजीवेहिंतो दे। विग्गहे कादूण उप्पज्जमाणजीवाणमसखेज्जदिमागत्तादो ।  
 तदो भवणसासियाणमुववादसेत्त तिरियलोगस्म असखेज्जदिमागा पि सिद्धं । मारणत्तिय  
 समुग्गादग्गा तिण्हं लोगाणमसखेज्जदिमाणे णर तिरियलोगादा अमखेज्जगुणे अच्छत्ति ।  
 इदो ? मत्थाग्गादा अद्भरञ्जुमेत्त तिरिच्छेण गतुं एगविग्गह करिय सखेज्जदंढुओ  
 उद्धु गतुं सगउप्पत्तिट्ठाण पत्ताण तदुवलत्तादा । षाण्णेतत्त जेत्तिमियाण देवग्गदिमगो

आकाशमें स्थित हाकर नीच जाकर एक विग्रह करके तिर्यग्गुप्ते राहुके  
 सत्पातमें भाग जाकर उत्पन्न होनेवालोंके द्वितीय दण्डका मायाम अगधेवीके सत्पातमें  
 भागमात्र प्राप्त है यह भी पटित नहीं होता क्योंकि ये बहुत छोटे हैं ।

प्रश्न—यह कहाँ जाना जाता है ?

समाधान— उपपन्नगत भवनसासियोंका क्षेत्र तिर्यग्गोक्तका असत्पातर्वा भाग  
 है इस प्रकार व्याख्याताचार्योंके अन्तस ज्ञाना जाता है । जो विग्रह करके उत्पन्न हुए  
 जीवोंके द्वितीय व तृतीय दण्डक संयोगमें अगधेवीके सत्पातमें भागमात्र मायाम  
 अगधेवीको पस्यापमके असत्पातमें भागमें लण्डित करनेपर एक लण्डप्रमाण  
 मायाम प्राप्त है ऐसा कहना भी उचित नहीं है क्योंकि षाण्णके समान अणु अगधेवीमें  
 सर्व विशाओंसे आकर एक विग्रह करके उत्पन्न होनेवाले जीवोंकी अपेक्षा जो विग्रह  
 करके उत्पन्न होनेवाले जीव असत्पातमें भागमात्र हैं । इसलिये भवनसासियोंका उप  
 पन्नक्षेत्र तिर्यग्गोक्तके असत्पातमें भागमात्र है यह बात सिद्ध हुई ।

मारणात्ति-समुद्घातको प्राप्त उक्त देव तीन छोड़कर असत्पातमें भागमें  
 और मनुष्यलोक व तिर्यग्गोक्तसं असत्पातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं क्योंकि स्वस्थानसे  
 सर्व राहुमात्र निरले जाकर एक विग्रह करके सत्पात राहु ऊपर जाकर अपने उत्पत्ति  
 स्थानको प्राप्त हुए उक्त देवोंके उपर्युक्त क्षेत्र पाया जाता है ।

बानध्यन्तर और ज्योतिषी देवोंके क्षेत्रका प्रकरण देवगतिक समान है जो

मायहारो दाहयो । पुगो सखेन्द्रपदंगुल्लुगिद्वगमेविसंखेन्द्रमागेण गुभिदे उववाद  
खेचं हादि । एत्थ पंचसोगोवहुण आणिय काययं ।

भवणवासियप्यहुदि जाव सव्वट्टुसिद्धिविमाणवासियदेवा देवगदि  
भंगो ॥ १७ ॥

एसा दम्भट्टियण्य पडुण्य विरेमा, पन्धरट्टियण्य अबलविज्जमापे अत्थि  
विसेसो । तं बहा— मत्थाणसत्थाण विहारवदिसत्थाण-वेदथ फसाय वेउम्भियसमुग्घाद्गदा  
भवणवासियदेवा पडुण्हे खेगाणमसंखे-त्रदिमाण, भङ्गाइ-आदो असखेन्द्रगुणे अण्छंति ।  
एत्थ खेचविष्णासो आणिय काययो । उववादगदाण पि एवं चत्तयं । तिरिक्क  
मणुमावं थे विग्गहे कादूल भवणवासियदेवेसु सेवीए सखे-त्रदिमागायामेण विदियदंठे  
विनादाणमुववादखेचं तिरियसोगादो अमखेन्द्रगुणं किञ्च सुव्वपदे ? वेदममंभवाण ।  
एगविग्गहं काऊळ ठणुप्पण्णाणमुववादखेचायामो ण ताव अमखेन्द्रओपयामेचो ' सोत्तम  
हु खरो मागो पक्कहुला य सह सुत्तामीदि । आपपहुलो अमीदि ' ति सुत्तण सह विराहादो ।

संख्यात प्रतरांगुल्लोस गुभित अगधेयिक संख्यातय मागसे गुभित करमपर उपपादसंख  
होता है । यहाँ पाँच छोटी-छोटी मयचर्तन जानकर करना चाहिये ।

मदनवासियोंमें लेकर सर्वार्थमिद्धिनिमानवामी दूनों तकका संत्र दशगतिके  
समान है ॥ १७ ॥

यद विरेंच प्रथार्थिक मयकी मयहासे ह पर्याथार्थिक मयका मयसंयन करनेपर  
विशेषता है । यह इस प्रकार है— कुर्यामस्वस्यात् विहारवत्स्वस्यात् वेत्तासमुद्घात  
कपायसमुद्घाद भीर वैक्रियिकसमुद्घातको प्राप्त मयनवासी दूब बार छोटीके  
असंख्यातके मागमें बार बड़ाई डीपसं मयस्यातगुण क्षत्रमें रहते हैं । यहाँ क्षत्रविष्यास  
जानकर करना चाहिये । उपपादको प्राप्त मयनवासी दूबोंके भी शेषका इन्ही प्रकार  
कथन करना चाहिये ।

शुद्धा—दो विग्रह करके मयनवासी दूबोंमें अगधेयिके संख्यातके मागप्रमाण  
मायामसे द्वितीय दण्डमें प्राप्त तिर्येच मनुष्योंका उपपादक्षेप तिर्येच्छोकसं असंख्यातगुणा  
क्यों नहीं पाया जाता ?

समाधान— एसा नहीं पाया जाता क्योंकि मयमय है । एक विग्रह करके मय  
वासियोंमें उत्पन्न होमबाहक तिर्येच मनुष्योंके उपपादक्षेत्रका आयाम असंख्यात योजनमात्र  
नहीं है क्योंकि एतथाग सांख्य सहस्र योजन पंचवहुलभाग बीरवासी सहस्र  
पात्रम भीर अण्डहुलभाग मस्ती सहस्र पात्रम मोटा है इस सूत्रके साध विरोध  
होगा ।

सप्तशतसुमारप्यश्रुतिउपरिमदेवा मन्त्रपद्वि चतुर्हं लागाणमसंस्तुतिदिमाग, अह्ना  
 आदा असंखेजगुणे अच्छति । पत्रि सञ्चरुदना सत्याससत्यास-धेयस-कसाय-नेउभियप  
 पदपरिजदा माणुमस्तचस्त सखेजदिमागे अन्छति । कर्षं ? सञ्चरुद्वे धेयस-कसायमसु  
 ग्मादास तेहिंता समुप्प-जमाणभोषविपुजस पदुष्प सघावंदमादो, कारस कञ्जोषयागदो  
 वा । एत्स देयागमोगाहणाणपणे उन्नतजंतीआ गाहाओ—

पणुवीस अमुराण सेसकुमाएण दम षण्णं होति ।

बेत्तर आत्तिमियाण एत्त मत्त षण्णं मुणयत्ता ॥ १ ॥

साहम्मोसाणसु य देया सहस्रं होति सत्तरणीया ।

उन्नेत्त य रयणीयो सणकुमार य माहिंते ॥ २ ॥

सप्तशतसुमारप्य उपरिम देव सर्व पक्षोंस चार खोकोंके समख्यातयें भागमें भीर  
 मकार हीपसं असंख्यातगुण क्षममें रहते हैं । विशेष इतना है कि सखायसिद्धिभिमान  
 घासी क्षय स्थयामन्यस्थान षडनासमुत्पात कयापसमुत्पात भीर धैर्यविक्रममु  
 त्पात इन पक्षोंस परिशत होकर मानुपक्षके सख्यातयें भागमें रहते हैं क्योंकि  
 सखायसिद्धि यिमानमें धननासमुत्पात भीर कयापसमुत्पातका प्राप्त हवोंके उसस  
 कल्प होनपाके स्ताक विद्यर्षयकी अपेक्षा कर उस प्रकारका उपदेश किया गया है  
 मयया कारणमें कायना उपचार करनेसे धैरा उपदेश किया गया है । यहाँ धयोंकी  
 मयगाहमाक सानमें ये उपयुक्त गायथें हैं—

ससुरकुमारोंक शरीरकी उंचाई पधीस धनुष भीर शय कुमारधयोंकी ददा  
 धनुष हाठी है । अन्तर धयोंकी उंचाई ददा धनुष भीर ज्यानिगी धयोंकी सप्त धनुषप्रमाण  
 जानमा चाहिये ॥ १ ॥

साधम य इशान कश्यमें स्थित द्य सात रति ऊंचे भीर सप्तशतसुमार य माहेत्त्र  
 कश्यमें सह रति ऊंचे हात है ॥ २ ॥

१ अदुगण वरुवस सत्तहण इपति इत्त ददा । एत्त इहाउन्नेत्ता विविधीरिण्टु वन्नेवा ॥  
 ति प १ २०६ व्युत्त ति पसेकक डिणत्तयुत्तिय वेत्तएत्त । उन्नेत्तो नाद्वी इत्तकाद्वयमालेव ॥  
 ति प १ १० वरुवि व आत्तिपाव उन्नेत्तो सत्तहणरिमात्त ॥ ति प १२६

२ शरीर सीधयशावकमेंशानां सत्तापिधममात्त, सप्तशतसुमारोत्तया वरुविसममात्त समसक-  
 मत्तौत्त सत्तहणरिण्टु पंकापिनममात्त सुकवडासुत्त-सत्तापिधयोंगु वनुत्तपिनममात्त आत्तमात्तवोत्तधनुषा  
 रिनममात्त, आत्तासुत्तपात्त-वरुविसममात्त, वरुविसिपंधु अर्द्धगुत्तवत्तपिनममात्त, मत्तपंधवकेत्तपिण्टुवत्तवत्तमात्त,  
 वरुविसमवेत्तवत्त वनुत्तपिधमालेत्त य वत्तवत्तपिनममात्त, वनुत्तपिण्टुवत्तममात्त । ति प ४ २१

ण विकल्पदे, सत्याप्रादिषु तिरियत्नेमस्य सखेन्द्रदिमागुलभादौ । पश्चिरे बोधिसिपसु  
उपक्रमणकाले पतिदोषमस्य असद्यञ्जदिमागो, संखे श्वासाउत्रायमभावाद्दौ ।

सोहम्मीसाणा' सत्याप विहारवदिमत्यान वेपथ-कनाय-वेठभियसमुग्धादगदा  
पहुण्ण लोगाणमसंखे अदिमागे, माणुमपेचादौ अमपेज्जगुणे मच्छति । एत्थ सग-मग  
खेचविष्णामो क्खयन्तो । अप्पणो बोधिकपेत्तमेत्तं द्वा विउत्थति पि ज्ञ वपण तप्प  
पड्ढे, सोगस्स अमपेज्जदिमागमेत्तेठभियत्तेचपहुण्णिप्पमगाद्दौ । मारणतिय उपवाद्दगदा  
तिण्ह लोगाणमसंखे अदिमागे, पर तिरियलगेहिंता अमसुअगुणे अ-ठंठि । एत्थ साण  
उपवाद्दपुत्तविष्णामो कीरदे । त जहा- मणियेत्थ मद्यविगुण्णिदमदिं ठविय पतिदोषमस्य  
अमपे अदिमागेण सोहम्मीमाणुबन्धममकालेण आत्थिद्द उपपज्जमाननीना ह्वेति ।  
पहापत्थव्ह तप्पज्जमाणभीषाणमागमणहूमरगो पतिदोषमस्य असद्यञ्जदिमागो मागहारो  
उपेदम्भो । पुणो प्पदस्स पद्दं गुल्लगुण्णिदसेदीए ससद्यञ्जदिमाग गुणगारेण ठभिदे उपवाद्द  
खत्त हादि । एव चेव मारणतियत्तुत्तपरिकया कायन्ता ।

बिग्रह बही है क्योंकि स्वस्थानादिक पदोंमें तिर्यग्लोकका संख्यातर्था भाग पाया जाता  
है। विशेष इतना है कि श्लोकीय देवोंमें उपक्रमणकाल पश्योपमक असंख्यातर्था भागप्रमाण  
है क्योंकि उनमें संख्यात वर्गकी मायुबाओंका प्रभाव है।

इस्थान विहारवत्स्वस्थान वेदमासगुहपात कयापममुत्पात मीर वैदिक  
ममुत्पातका प्राप्त सौम्य ईशान कल्पवासी रूप चार लोकोंके असंख्यातर्था भागमें  
तथा मानुषक्षेत्रमें असंख्यातगुणे क्षेत्रम रहते है। यहाँ मपता मपता क्षेत्रविस्थास करना  
आहिये। देव मयमें अवधिक्षेत्रप्रमाण वित्रिया करते हैं इस प्रकार जो यह बचन है वह  
पठित मर्हाहाता क्योंकि ऐसा माननेम लोकके असंख्यातर्था भागमात्र वैदिकिक्षेत्रादिक  
प्रसंग आता है। ( देवो पुस्तक ४ पृ ७९-८ )।

मारणात्तिक व उपपात्रको प्राप्त उक्त देव तीन लोकोंके असंख्यातर्था भागमें  
तथा मनुष्यलोक व तिर्यग्लोकस असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहत है। यहाँ उपपात्रक्षेत्रका  
विस्थास करते है। यह इस प्रकार है—मपती विष्कम्मसुधीसं गुणित अगमभीको  
स्थापित कर पश्योपमके असंख्यातर्था भागमात्र सौम्य ईशान कल्पवासी देवोंके उपक्रमण  
कालसे अपवर्तित करनेपर उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण होता है। प्रथम प्रस्तारमें  
उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण आधनके क्षिये एक मल्प पश्योपमका असंख्यातर्था  
भाग मागहार स्थापित करना आहिये। पुनः इसके पदर्यागुलसे गुणित अगमभीके  
संख्यातर्था भागके गुणकार रूपमें स्थापित करनेपर उपपात्रक्षेत्रका प्रमाण होता है।  
इसी प्रकार ही मारणात्तिकक्षेत्रकी परीक्षा करना आहिये।

तद्वाहार क्पलिसमुष्पादा णत्थि । सुद्धुमइदिपसु वउभियससमुष्पादा पि णत्थि । सस सुगमं ।

## सत्रलोके ॥ १९ ॥

एमा लायसदा समलागाण सूचओ, दमामासियत्तादा । तेमेदण सुचिदत्थस्स पम्बणे कस्सामो । मत्थाण वेयण कमाप माग्णत्थिय उबवाद्दपरिणदा एरुदिया तेसि पञ्चा अपञ्चसा य मम्बलागे, आर्णत्थियादा । वेउभियमसमुष्पादगदा एरुदिया वदुहं लागाणमर्मसुञ्जदिमाग । माणुमसुत्त ण विणापद । त नहा — वेउभियसुद्धुवातेता मम्बसुद्धुमइदिपसु णत्थिय, मामात्थियादो । पाग्नेरुदियपञ्चत्तपसु षर अत्थिय । उ पि पत्तिदोवमस्स अमसुञ्जदिमागमत्ता । तत्थ्यक्खजीवागाइणा उस्मइधणगुलस्स असुखेञ्जदि मागा । सस्स का पत्तिमागा ? पत्तिदापमस्स अमसुञ्जदिमागा । अदि वउभियसरासीदा पणगुलमागहाग मसुञ्जगुणा इञ्ज तो वउभियपत्तुत्त माणुसग्गेत्तस्स संसुञ्जदिमागो,

विषय है। तत्रससमुष्पात आहारकसमुष्पात भीर केपलिसमुष्पात एकत्रियोंमें नहीं है। सूक्ष्म एकत्रियोंमें वैज्ञानिकसमुष्पात भी नहीं है। शय स्वभाव सुगम है।

उपयुक्त एकत्रिय जीव उक्त पदोंमें मंत्र लाकमें रहते हैं ॥ १९ ॥

यह भाक शब्द शय साक्षोंका सूचक है क्योंकि वज्ञानशाक है। इस कारण इसक शरा सूचित अथवा प्रकृपणा करत है—स्पष्टमान ब्रह्मासमुष्पात कयाप समुष्पात मारण्वास्तिकसमुष्पात भीग उपवाद् इन पदोंमें परिणत एकत्रिय य उतके पयात एवं अपयात जीव सर्व लाकमें रहत हैं क्योंकि य अतन्त्र है। वैज्ञानिकसमुष्पातका प्राप्त एकत्रिय जीव आर साक्षोंक अर्धत्वातर्धे भागमें रहत हैं। मानुपक्षत्रकी भयेसा कितने सत्रमें रहत हैं यह जाना नहीं जाता। यह इस प्रकार है—वैज्ञानिकसमुष्पातका करनवाले जीव सय सूक्ष्म एकत्रियोंमें नहीं हैं क्योंकि ऐसा स्पष्टमान है। उक्त समुष्पातका करनवाले एकत्रिय जीव आर एकत्रियोंमें ही हात हैं। य भी पस्यापमक अर्धत्वातर्धे भागमात्र है। उनमें एक जीवकी अथवाइना उतमपयनांशुमक अमप्यातर्धे भागप्रमाण है।

शंका—उमका प्रतिभाग क्या है ?

समाधान—पस्यापमका अर्धत्वातर्धे भाग प्रतिभाग है।

यदि वैज्ञानिकराशिसे प्रजांशुमका भागहार सत्पातगुणा है या वैज्ञानिकसत्त मानुपक्षत्रक सत्पातर्धे भागप्रमाण होगा अथवा यदि यह भागहार वैज्ञानिकराशिसे

यम्ह य खान्हे वि य कये लतु ह्येति पञ्च रयणीषो ।  
पत्तारि य रयणीषा सुखञ्च सखत्सत्तत्तयेसु ॥ ३ ॥

आणन्-पाणन्-ये आहुद्वाभा इवति रयणीषा ।  
निष्णेन य रयणीषा तद्वत्तञ्च अण्णुद येय ॥ ४ ॥

हेट्टिमगन्त्रेसु अ अद्द्वत्त-भाओ ह्येति रयणीषो ।  
मस्त्रिमगन्त्रेसु अ रयणीषा ह्येति दो येय ॥ ५ ॥

उत्तरिमगन्त्रेसु अ दिक्कत्त-रयणीषो इति उस्सुहो ।  
अण्णुत्तमिमाणावामीषो रयणी सुगेयन्ता ॥ ६ ॥

सेमं सुगम ।

इदियाणुवादेण एइदिया सुहुमेइदिया पज्जत्ता अपज्जत्ता  
सत्याणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिस्सेत्ते ? ॥ १८ ॥

एत्थ एइदियसु विहारउदिमन्थाय पत्थि, धावरणं विहारमानविराहादा ।

इह व तान्तय कस्यम पांच तथा शुक्र व सहस्यार करपामे चार रत्तिप्रमाण  
करस्य है ॥ ३ ॥

मानत मानत कस्यम छाडे तीव्र रत्ति और मारण व मन्थुत कस्यम एक  
रत्तिप्रमाण शरीरकी उच्चारं जानना चाहिय ॥ ४ ॥

मध्यस्तम प्रियेयकोमे मच्चारं रत्ति और मध्यम प्रियेयकोमे वा रत्तिप्रमाण  
शरीरकी उच्चारं है ॥ ५ ॥

उपरिम प्रियेयकोम इह रत्ति तथा अनुत्तर विमाननासी बर्षोके शरीरकी उच्चार  
एक रत्तिप्रमाण जानना चाहिय ॥ ६ ॥

दाय सूत्राय सुगम है ।

इन्द्रियमार्गानुमार एकन्द्रिय, एकन्द्रिय पयाण, एकन्द्रिय अपयाण, छस्म  
एकन्द्रिय, सुक्ष्म एकन्द्रिय पर्याण आर सुक्ष्म एकन्द्रिय अपयाण बीज हररघान,  
समुद्घात भार उपपादम किन्तु यत्रमे रहते है ॥ १८ ॥

यहां एकत्रियामे विहारयत्स्वस्यात्त महीं हाता बर्षोकि क्यापरीके विहारका

सञ्जाहार कवलिसमुत्पत्तादा पत्थि । सुहुमश्दिपसु वउम्बियसमुत्पत्तादा वि पत्थि । सेस सुगम ।

## सञ्जलोगे ॥ १९ ॥

एमा स्यायसदा सेसलोगाण सुत्तमो, दसामामियत्तादा । तेपेदण सुत्तिदत्तस्स परूषण कस्सामो । मत्थान-वेयण क्कामय मारणत्थिय उववात्तपरिणदा एश्विमा तेसि पञ्चत्ता अपञ्चत्ता य मत्तलोगे, आणत्थियादो । वेउम्बियसमुत्पत्तादादा एश्विदिपा चतुण्ह लोगाणमर्मसुत्तदिभागे । माणुमसुत्तं य विष्णापद । ए अहा — वेउम्बियसुत्तावेत्ता मत्तसुहुमश्दिपसु पत्थि, सामावियादा । पादरेश्विदियपञ्चत्तएसु पेय अत्थि । ते वि पत्तिदावमस्स अमसुत्तदिभागमत्ता । तन्यक्करीवागाहणा उस्सेहवणगुलस्स असत्तेन्त्रदि मागा । तस्म क्क पत्तिमागा ? पत्तिदावमस्स अमत्तेन्त्रदिभागो । अदि वेउम्बियरासीदो वणगुलमागहारा मरुत्तगुणा इत्तं तो वउम्बियसुत्तं माणुसत्तस्स संत्तेन्त्रदिभागो,

विषय है। तैजससमुत्पात आहारकसमुत्पात और केवलिसमुत्पात एकत्रियों नहीं है। सुहम एकत्रियोंमें वैकल्पिकसमुत्पात भी नहीं है। दोय सञ्चार्य सुगम है।

उपर्युक्त एकेन्द्रिय जीव उक्त पदोंमें सब लोकमें रहते हैं ॥ १९ ॥

यह शोक शब्द दोय साकाका सूत्रक है क्योंकि वहामर्शक है। इस कारण इसक द्वारा सुचित अर्थकी प्ररूपणा करत हैं—स्वस्थान वेदनासमुत्पात कपाय समुत्पात मारणात्तिकसमुत्पात और उपपाद् इन पदोंस परिणत एकेन्द्रिय व वनके पयास पत्र अपर्णात जीव सर्व लोकमें रहते हैं क्योंकि वे अन्नन्त हैं। वैकल्पिकसमुत्पातका प्राप्त एकेन्द्रिय जीव बार वारकोंक असंख्यातवें भागमें रहते हैं। मानुपक्षेत्रकी अपेक्षा कितने क्षत्रमें रहते हैं यह ज्ञाना नहीं जाता। यह इस प्रकार है—वैकल्पिकसमुत्पातको करनवाले जीव सर्व सुहम एकेन्द्रियोंमें नहीं है क्योंकि ऐसा स्वभाव है। उक्त समुत्पातका करनवाले एकत्रिय जीव बार एकेन्द्रियोंमें ही होते हैं। वे भी पर्योपत्रके असंख्यातवें भागमें है। उनमें एक जीवकी अणगाहना उत्तेज्यवर्णागुलक असंख्यातवें भागमें है।

श्रुंका—उसका प्रतिभाग क्या है ?

समाधान—पस्थापमका असंख्यातवें भाग प्रतिभाग है।

यदि वैकल्पिकराशिस चर्त्तागुमक्य भागहार सख्यातगुणा है तो वैकल्पिकसुत्र मानुपक्षेत्रक सत्पातवें भागमें होगा जयथा यदि यह भागहार वैकल्पिकराशिस



अह असंख्येन्द्रगुणा' ता असंख्येन्द्रदिभागो, अह सरिता माणुसखचम्म सख्येन्द्रदिभागो, अह भागहारादा वेठम्भियरामी सख्येन्द्रगुणा हादूण वेठम्भियखच माणुमखेचपमाण हान्म सो दो वि सरिसाभि, अह असंख्येन्द्रगुणा' होग्ज ता माणुमखेचादा असंख्येन्द्रगुण वेठम्भियखेच । न च षट्थ एदं षड हादि पि णिच्छजा अवि । तेण माणुमखेचं न विष्णापद ।

वादरेइंदिया पज्जत्ता अपज्जत्ता सत्याणेण क्वडिस्सेत्ते ? ॥२०॥

सुगममेद ।

लोगस्म संख्येन्द्रदिभागे ॥ २१ ॥

एद देसामामियसुत्त, तणदण सुइइत्यस्म परुत्तण कस्सामा । स जहा— तिण्ण सागारं सख्येन्द्रदिभाग, पर तिरियलोपेहिता असंख्येन्द्रगुणे अण्ठति पि वत्तन्न । किं करण ! अण मंदरमूलादो उतरि जाव मदर-सहस्मारकप्पा पि पंपरग्जुउस्मेहेण

असंख्यातगुणा है ता वैद्वियिकक्षेत्र मानुसखचम्म असंख्यातके भागप्रमाण हागा अथवा यदि यह भागहार वैद्वियिकक्षेत्राधिक सख्या है तो वैद्वियिकक्षेत्र मानुसखचका संख्यातका भाग होगा । अथवा यदि यह भागहारमे वैद्वियिकक्षेत्राधिक संख्यातगुणी होकर वैद्वियिक क्षेत्र मानुसखचप्रमाण है तो दोनों ही सख्या होंगे अथवा यदि असंख्यातगुणा है तो वैद्वियिकक्षेत्र मानुसखचस असंख्यातगुणा होगा । परन्तु यहाँपर उक्त भागहार इतना ही है ऐसा निश्चय नहीं है अतः मानुसखचके विषयमें ज्ञान नहीं है ।

बादर एकन्द्रिय, बादर एकन्द्रिय पर्याप्त और बादर एकन्द्रिय अपर्याप्त स्वस्थानमे कितन क्षत्रमें रहते हैं ? ॥ २० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त बादर एकन्द्रिय जीव सोरुके असंख्यातके भागमें रहत हैं ॥ २१ ॥

यह इच्छामर्शक सूत्र है इसलिये इसक द्वारा सुचित अर्थकी प्रकृषणा करते हैं । यह इस प्रकार है— अर्थात् बादर एकन्द्रिय जीव तीन जातोंके संख्यातके भागमें तथा मणुखसोके व तिर्यग्जावसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहत हैं ऐसा कहना चाहिये ।

शंका— उक्त क्षेत्रप्रमाणका कारण क्या है ?

समाधान— क्योंकि मन्दर पर्वतके मूक भागसे ऊपर शतार-सहस्रार रूप



एदे तिन्नि वि वादरइंदिया मारमंनिय उपवाद्पइहि चव मण्णसाए होंति ।  
 बेयण-कमायसमुग्घादेहि तिण्ह लागण सखे-वदिभाग, पर-तिरियसायेहिदो  
 असंखेन्जगुणे । वउभियपदेण वादरइंदियअपन्त्रचवदिरिचवादरइंदिया चदुण्ह सोगागम  
 संखे-जदिभाग होंति । तयो मसुग्घादेण मम्बलाग इदि वयण ण पइद् । ण एम दामा,  
 दामामासियचादे ।

वेइदिय तेडंदिय चउरिंदिय तस्मेव पज्जत्त अपज्जत्ता सत्याणेण  
 समुग्घादेण उववादेण केवडिस्सेते ? ॥ २४ ॥

सुगमम् ।

लागस्म अमस्सेज्जदिभाग ॥ २५ ॥

एदेण देमामामियसुत्तण धइदत्ता मुच्छद् । तं जहा- मग्घायमग्घाय विहारवदि  
 सरवाण-बेयण-कमाय-समुग्घादमद् । एदे बीइदियादि छप्पि जगा तिण्ह लागणममस्सेज्जदि  
 भागे, तिरियसागस्म मंख-जदिभाग, अट्टाइज्जादा अमस्से-जगुणे अच्छति, प-वचसत्तम्म

श्लोक— ये तीनों ही वादर एकेन्द्रिय जीव मारणात्मिकममुत्पात और अपपाद  
 पदोंस ही सर्व लोकमें हैं । वेदनासमुत्पात व कयापसमुत्पातसे तीन लोकोंके संख्यातमें  
 भागमें तथा मनुष्यलोक व तिर्यग्लोकके संख्यातगुणे क्षत्रमें रहते हैं । ईन्द्रियवपदस  
 वादर एकेन्द्रिय अपपर्याप्तोंका छोड़ शेष दो वादर एकेन्द्रिय चार लोकोंके असंख्यातमें  
 भागमें रहते हैं । इन कारण ममुत्पातसं सर्व लोकमें रहते हैं यह कथन घटित  
 नहीं होता ?

समाधान— यह कार्य शेष नहीं है क्योंकि यह सूत्र वशामर्शक है ।

ईन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और इन तीनोंके पर्याप्त व अपपात जीव  
 स्वस्वान, समुत्पात और उपपाद पदम कितने क्षत्रमें रहते हैं ? ॥ २४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त ईन्द्रियादिक जीव उक्त पदोंसे लोकके असंख्यातमें भागमें रहते  
 हैं ॥ २५ ॥

इस वेशामर्शक सूत्रसं सूचित अर्थ कहा जाता है । वह इस प्रकार है— स्वस्वान  
 स्वस्वान विहारवत्स्वस्वान वेदनासमुत्पात और कयापसमुत्पातका प्राप्त ये ईन्द्रिया  
 दिक उहाँ वर्ग तीन लोकोंके असंख्यातमें भागमें तिर्यग्लोकके संख्यातमें भागमें और  
 अकार्य जीवसे असंख्यातगुणे क्षत्रमें रहते हैं क्योंकि यहाँ पर्याप्तक्षेत्रकी प्रधानता है ।

पावश्रिययादो । एदमिं चैव तिष्मि अपञ्चता चतुर्दश लोगाणमसखेञ्जदिमागे अह्वाइन्नादो  
 अमखञ्जगुण, पलिदोवमम्म अमखेञ्जदिमागेण खंठिदुस्मेहपणगुत्तमेचोगाहणत्तादो ।  
 मारणतिय उववाद्गदा णव चि बग्गा तिण्ह लोगाणमसखेञ्जदिमाग णर तिरियलोगाईतो  
 अमखेञ्जगुण अच्छति । एत्य ताव मारणतियसुत्तविष्णासो बुच्चद— बीइदिय-तीइदिय  
 चउरिदिया तेसि पञ्चच अपञ्चदव्व ठियि आवलियाए असखञ्जदिमागमचेण मगसगु  
 वक्कमणकालेण मगसगदव्वमि मागे दिदे सगसगरामिहि मरतञ्जीवमाणमागच्छदि ।  
 तस्म अमखञ्जदिमागो मारणतियेण विणा मग्दि चि एदस्म अमखञ्ज मागे पञ्च  
 मारणतिय उवक्कमणकालेण आवलियाए असखेञ्जदिमागण गुणिदे सगमगमारणतियवक्क  
 होदि । रज्जुमत्तायामण मुक्कमारणतियदव्वमिच्छिय अन्नागा पलिदोवमस्स असखेञ्जदि  
 मागो मागहाग ठवेद्वना । पुणा अप्पणो विकम्मवग्गगुणिदरज्जुण गुणिदे  
 पीदियादीण पवण्य मारणतियखेत हादि । एत्व ओवट्ठमं आणिय क्खयमं ।

उववाद्दखेचविष्णासो बुच्चदे । त अहा— पुच्चदव्वनाणि ठियि सगमगुवक्क  
 मणकठण माग हिदं एगममण्य मरतञ्जीवण पमार्णं होदि । एदस्स अमखञ्जमागा

इन्दीके तीन अर्थांत जीव चार छोकोंके असरपातवें मागमें भीर अह्वाइं ज्ञापने  
 असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहत है क्योंकि वे पस्योपमका असख्यातवें भागसे भाजित  
 उत्सेधप्रमाणुप्रमाण अवगाहनास मुक्त होते हैं । मारणास्तिकसमुच्चात व उपपादको  
 प्राप्त नही ही जीवराशिवां तीन छोकोंके असंख्यातवें भागम तथा मनुष्यका व  
 तिर्यक्कोसे असरपातगुणे क्षेत्रमें रहने हैं । यहां मारणास्तिकक्षेत्रका विन्यास कहा  
 जाता है— त्रीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय भीर इनके पर्याप्त व अर्थांत द्रव्यको  
 स्थापित कर भावनीके असख्यातवें भागमात्र अपने अपने उपक्रमकाछसे अपने अपने  
 द्रव्यके भाजित करनेपर अपनी अपनी राशिमेंसे मरणथासे जीवोंका प्रमाण भाता है ।  
 इसका असख्यातवें भागप्रमाण जीव मारणास्तिकसमुच्चातके विना मरण करते हैं  
 इसलिये इसके असरपात बहुमागोंको प्रहणकर मारणास्तिक उपक्रमकाकारूप भावनीके  
 असंख्यातवें भागसे गुणित करनेपर अपना अपना मारणास्तिक द्रव्य होता है । एक  
 राजमात्र भायामसे मुक्तमारणास्तिक द्रव्यकी इच्छा कर एक मय्य पस्योपमका असख्या  
 तथा भाग मागहार स्थापित करना चाहिये । पुनः अपने अपने चिरकर्मके बर्गसे  
 गुणित द्रव्यसे उसे गुणित करनेपर त्रीन्द्रियाधिक नही जीवराशिषोंका मारणास्तिक  
 क्षेत्र होता है । यहां अर्थांत जानकर करना चाहिये ।

उपपादक्षेत्रका विन्यास कहने हैं । यह इस प्रकार है— पूर्वांक द्रव्योंको  
 स्थापित कर अपने अपने उपक्रमकाछसे भाजित करनेपर एक समयमें मरणथाके  
 जीवोंका प्रमाण होता है । इसके असंख्यातवें भागमात्र ही उक्त जीवराशि चतुर्गतिसे

अथ उज्ज्वलीय उष्ण-प्रदि, अमरुज्ज्वला भागा पुन विगहगदीय वि कङ्क एदस्स  
अमरुज्ज्वले भागे घत्तुण पुणो तेमि पत्तिदोवमस्स असखेज्जदिभागमेधे मागहारो ठविदे  
पठमदडग अत्ररज्जुमथ रज्जए संखे-ज्जदिभाग वा विसप्पिय द्विदमीवपमाण होदि ।  
पुणो तग्धि पत्तिदोरमस्स अमरुज्ज्वदिभागेण भागे हिदे उष्णपठमसमए पठमदडसुव  
सहरिय विदियद्वेण सडीए सखे-ज्जदिभाग उष्णप्रोगममरु-ज्जदिभाग वा विसप्पिय  
द्विदमीवपमाण इदि । पुणो तमप्पपुणो निक्खमरगण गुण्णिदमगायामेण गुण्णिदे  
उपपादमसं इदि । विगलिदिण्णु वेठग्गियपद ज्जिथि, सामानियादा ।

पचिन्दिय-पचिन्दियपज्जत्ता सत्थाणेण केवहिस्सेत्ते ? ॥ २६ ॥

पथ मत्थाणविहमा दाह मत्थाज्जं गाहमा, दम्भद्वियवयानलवणादो ।  
मम सुगम ।

लोगस्स अमस्सेज्जदिभागे ॥ २७ ॥

पद देमामासियसुत्त, तण्णेषु सद्धत्तो पुप्फदे- मत्थाणसत्थाण विहारवि  
मत्थाणपज्जाण्ण परिणदा विहं लोगाणमरु-ज्जदिभागे, विरियत्तागस्स सरु-ज्जदिभाग,

उत्पन्न हानो ई भीर असम्प्यात् बहुभागप्रमाण विमहगतिस्त एसा आमकर इसक  
असम्प्यात् बहुभागाका प्रहणकर पुनः उनके पम्पोपमके असम्प्यात्तें भागमात्र भाग  
हारका स्थापित करनेपर प्रथम दृष्टस अर्ध रात्रुमात्र अथवा रात्रुके संरपाततें भाग  
प्रमाण फैसकर स्थित आषोंका प्रमाण होता है । पुनः उसमें पम्पापमके असम्प्यात्तें  
भागका भाग होनेपर उत्पन्न हानक प्रथम समयमें प्रथम दृष्टका उपसंहार कर द्वितीय  
दृष्टसे जगधनीके अरपाततें भाग अथवा तत्रापाय्य असम्प्यात्तें भागप्रमाण फैसकर  
स्थित आषोंका प्रमाण जाता है । पुनः उस अथवा अथवा विष्कम्भके अगस्त गुणित अपने  
अपन आयामसे गुणित करनेपर उपपादसंज्ञका प्रमाण जाता है । विष्कम्भके अगस्त  
वैकिकिक पद नहीं है क्याकि एसा उनका स्वभाव है ।

पचन्त्रिय आर पंचत्रिय पर्याप्त भीर स्वस्थानम म्मिन धम्मं रहते ईं ? ॥ २६ ॥

यहां सूत्रमें दरथापपत्ता निर्देण हानो स्वस्थानोंका प्राहक है क्योंकि यहां  
दृष्ट्यायिक अथवा अथसम्भ है । राय सूत्राय सुगम है ।

पंचत्रिय व पंचत्रिय पर्याप्त भीर स्वस्थानम साकक असम्प्यात्तें भागमें  
रहत ईं ॥ २७ ॥

यह दशमस्कन्ध सूत्र है इस कारण इसका द्वाय सूत्रत अर्थका कहते हैं—  
स्वस्थानस्वस्थान भीर विहारयस्वस्थानरूप पयावस पारिगत पंचत्रिय व पंचत्रिय  
पयात्त अर्थात् साकक असम्प्यात्तें भागमें निवृत्ताकक सत्थाणप भागमें भीर

अङ्गाङ्जादा असखेज्जगुणे अच्छति, पहाणीकयपन्नचरासिस्त सखेज्जमागचादो सखेज्जदिमागचादो च । उषवाद्गदा तिण्ह लागणमसखेज्जदिमागे, नर तिरियसोगेहिंतो असखेज्जगुणे अच्छति । एदस्स खेत्तम्साणयणं पुञ्च व वत्तम्भं ।

समुग्घादेण केवडिखेत्ते ? ॥ २८ ॥

सुगम ।

लोगस्स असखेज्जदिमागे असखेज्जेसु वा भागेसु सञ्जलोगे

५ ॥ २९ ॥

एदस्स अत्था पुच्चदे— वेयण-कसाय-वटम्बियमसुग्घाटगदा तिण्ह लागणम सखेज्जदिमागे, तिरियलोगस्स सखेज्जदिमागे, अङ्गाङ्जादो अमंखेज्जगुणं अच्छति, पहाणीकयपन्नचरासिस्त सखेज्जदिमागचादो । तेजाहारसमुग्घाटगदा अदुण्ह लोगणम सखेज्जदिमागे, 'माणुसखेत्तस्स सखेज्जदिमाग । दडगदा अदुण्ह लोगणमसंखेज्जदिमाग,

मङ्गारं डीपस असख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं क्योंकि स्वस्थामस्वस्थामपद्गत उक्त जीव प्रधानभूत पर्याप्त राशिक संख्यात बहुभाग और विहारवस्वस्थामगत च ही जीव उक्त राशिके संख्यातये भागप्रमाण है ।

उपपातको प्राप्त पंचेन्द्रिय व पश्चन्द्रिय पपात्त तीन भागोंके असंख्यातयें भागमें तथा मनुष्यलोक व तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुण क्षेत्रमें रहते हैं । इस क्षेत्रके निकालनेका विधान पूर्वके समान कहना चाहिये ।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समुद्घातकी अपेक्षा कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? ॥ २८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समुद्घातकी अपेक्षा ताकक असंख्यातयें भागमें, अबवा असंख्यात बहुभागमें, अपवा सर्व लोकमें रहते हैं ॥ २९ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— वेदमासमुद्घात कपापसमुद्घात और पैक्रिपिक समुद्घातका प्राप्त उक्त जीव तीन भागोंके असंख्यातयें भागमें तिर्यग्लोकके संख्यातयें भागमें और मङ्गारं डीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं क्योंकि वे प्रधानभूत पपात्त राशिके संख्यातयें भाग हैं । तेजाहारसमुद्घात और माहारकमसमुद्घातको प्राप्त उक्त जीव चार भागोंके असंख्यातयें भागमें और माणुपक्षके संख्यातयें भागमें रहते हैं । उक्त समुद्घातको प्राप्त उक्त जीव चार भागोंके असंख्यातयें भागमें और माणुपक्षके असंख्यात

माधुमस्य चादा असस्य मगुणे । कृषाङ्गदा तिर्णं सोगाणमसस्य ऋदिभागे, तिरियलोगस्य संस्लेञ्जदिभाग, अङ्गाङ्गदादो असस्लेञ्जगुणे । मारभंतिपसङ्गभादगदा तिष्ण सोगाणम संस्लेञ्जदिभागे, नर-तिरियलोगद्विषो असस्लेञ्जगुणे । पदसि स्लेचविष्णासो क्वापया । स्लेपस्य असस्लेञ्जदिभागा पि विदेसेष घृष्टत्वा पदे । अथवा सोगस्य असस्लेञ्ज भागा, बादबलयं मोचूष पदरसङ्गभादे सेष्मामेसलोगमेचागासपदेसे विसप्पिय द्विदजीवपदेसुवत्तमादो । सम्भलागे वा, लोमपूरणे सम्भलोगागासं विसप्पिय द्विदजीव पदेमाणसुवत्तमादा ।

पर्चिंदियअपज्जत्ता सत्याणेण समुग्घादेण उववादेण केवडि खेत्ते ? ॥ ३० ॥

एत्थ विहारवदिमत्थार्यं वेउम्भियसमुग्घादा च गत्थि । सेम सुगमं ।

लोगस्य असंस्लेञ्जदिभागे ॥ ३१ ॥

एदं देसामासियसुत्थं, तेपेदेण घृष्टत्पो बुष्पदे । तं वहा — सत्थान-वप-

गुणे क्षेत्रमें रहते हैं । कृषाङ्गसमुद्घातको प्राप्त के ही जीव तीन सोकोंके असक्वातमें भागमें तिर्यग्लोकके संक्वातमें भागमें और अङ्गाङ्ग द्वीपसे असक्वातगुण क्षेत्रमें रहते हैं । मारभान्तिकसमुद्घातको प्राप्त उक्त जीव तीन सोकोंके असक्वातमें भागमें तथा मज्जुप्पलोक व तिर्यग्लोकसे असक्वातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं । इनका क्षेत्रविम्बास जानकर करना चाहिये । लोकके असक्वातमें भागमें रहते हैं इस निर्देशसे धृष्टिग नर्प य है । अथवा उक्त जीवोंका क्षेत्र लोकके असक्वात बहुमापप्रमाण है क्योंकि प्रतर समुद्घातमें वातपञ्चको छोड़कर शेष समस्त लोकमात्र भाकाशामंदरामें फैलकर स्थित जीवमवेदा पावे आते हैं । अथवा सर्व लोकमें रहते हैं क्योंकि लोकापूरणसमुद्घातम सर्व लोकाकाशमें फैलकर स्थित जीवमवेदा पाय आते हैं ।

पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव स्वस्थान, समुद्घात और उपपादमे किउने क्षेत्रमें रहते हैं ? ॥ ३० ॥

पंचन्द्रिय अपर्याप्तोम विहारवत्स्वस्थान और वैकिथिकसमुद्घात नही है । शप सुत्थार्य सुगम है ।

पंचन्द्रिय अपर्याप्त जीव उक्त पदोंसे लोकके अमम्प्यातमें भागमें रहते हैं ॥ ३१ ॥

ः शारा धृष्टिग नर्पको कहते हैं । नर

कसायसमुग्धादगदा पञ्चदियअपज्जत्ता चहुण्ह लोगाणमसत्तेज्जदिमागे, अङ्गाइज्जादो  
असत्तेज्जगुणे । इदो ? तस्सेहधणगुलस्स असत्तेज्जदिमागमेसोगाहयत्तादो । सम्भत्य  
अपज्जत्तोगाहणहं मागहारो पल्लिदोबमस्स असत्तेज्जदिमागो । मारणतिय-उपवाटगदा  
तिण्हं लोगाणमसत्तेज्जदिमाग, णर तिरियलोगेहिदो अमत्तज्जगुणे । एत्थ छेत्तविन्धासो  
वाणिय कायम्भो ।

कायाणुवादेण पुढविकाइय आउकाइय तेउकाइय वाउकाइय  
सुहुमपुढविकाइय सुहुमआउकाइय सुहुमतेउकाइय सुहुमवाउकाइय  
तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता सत्याणेण समुग्धादेण उववादेण केवडि  
खेत्ते ? ॥ ३२ ॥

सुगममद ।

सव्वलोगे ॥ ३३ ॥

सत्थाय-वेयण कसाय-मारणतिय-उपवाटगदा एद पुढविकाइयादिसोलस वि षग्गा

इस प्रकार है— स्वस्थान वेदनासमुत्पात और कयायसमुत्पातको प्राप्त  
पञ्चमिन्द्रिय अपर्याप्त और शोकोंके असंख्यातवें भागमें और अकार हीपसे असंख्यातगुणे  
क्षेत्रमें रहते हैं क्योंकि वे उत्सर्धपतागुच्छक असंख्यातवें भागमात्र अक्काहनाबाधे हैं ।  
सर्वत्र अपर्याप्तोंकी अक्काहनाके छिय मागहार पस्सोपमका असंख्यातवें भाग है । मारणा  
तिक और उपपादको प्राप्त पञ्चमिन्द्रिय अपर्याप्त जीव तीन शोकोंके असंख्यातवें भागमें  
तथा मनुष्यशोक व तिर्यग्शोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं । यहाँ क्षेत्रविन्धास जान  
कर करना चाहिये ।

कायभागणोके अनुसार पृथिवीकायिक, बलकायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक  
सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म बलकायिक, सूक्ष्म तेजस्कायिक, सूक्ष्म वायुकायिक और  
इनके पर्याप्त और अपर्याप्त जीव स्वस्थान, समुत्पात और उपपादसे कितन क्षेत्रमें  
रहते हैं ? ॥ ३२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपयुक्त पृथिवीकायिकादि जीव उक्त पदोंसे सब साक्षमें रहते हैं ॥ ३३ ॥

स्वस्थान वेदनासमुत्पात कयायसमुत्पात मारणातिकसमुत्पात और  
उपपादको प्राप्त ये पृथिवीकायिकादि शोकक जीवराशियाँ सर्व शोकमें रहती हैं क्योंकि



सम्बन्धो । कुदो ? असखेन्जलोगपरिमाणदादो । वेतकाइएसु कठखियसमुग्घादगदा  
पपन्ध लोगाप्यमसंखेन्जदिमाणे, अगुत्सस असखेन्जदिमाणमचोगाइपादो । वातकाइएसु  
वेतखियसमुग्घादगदा पदुन्ध लोमाणमसंखेन्जदिमाणे । माजुसखत्तं न पपन्धे ।

बादरपुठविकाइय—बादरआउकाइय—बादरतेउकाइय—बादरवण  
फ्फदिकाइयपत्तेयसरीरा तस्सेव अपज्जत्ता सत्थाणेण केवदिस्वेत्ते ?  
॥ ३४ ॥

सुगममत् ।

लोगस्स असखेज्जदिमाणे ॥ ३५ ॥

एव देसामासियसुत्त, तेयदेव मामासियत्पण अपामासियत्थो बुन्धे । त  
अहा— बादरपुठविआदिअट्टवग्गा सत्थाणगदा तिन्ध लोगाप्यमसंखेन्जदिमाणे, तिरिम  
लोगादो सखेन्जगुणं, अट्टपन्जगदो असखेन्जगुणे अण्णति । कुदो ? सापन्जचारं पुठवि  
कप्याप्य पुठवीजो येवसिन्धुव अण्णगदो । एदेहि क्खलेत्तजाणावणहुमहुपुठवीजो

वे असंख्यात लोकप्रमाण हैं । तेजस्कायिकोंमें वैदिकयिकसमुख्यातको प्राप्त हुए जीव  
पाँचों लोकोंके असंख्यातवें भागमें रहते हैं क्योंकि वे अगुत्सक असंख्यातवें भागप्रमाण  
अवगाहनावाले हैं । वायुकायिकोंमें वैदिकयिकसमुख्यातको प्राप्त हुए जीव चार लोकोंके  
असंख्यातवें भागमें रहते हैं । मानुषकोशकी अपेक्षा कितने क्षेत्रमें रहते हैं यह बात  
बर्ही है ।

बादर पृथिवीकायिक, बादर अरुकायिक, बादर तेजस्कायिक और बादर  
वनस्पतिकायिक प्रत्येकद्वारा वे वनके अपर्याप्त जीव स्वस्वानसे कितने क्षेत्रमें रहते  
हैं ? ॥ ३४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपर्युक्त बादर पृथिवीकायिकादिक जीव स्वस्वानसे लोकके असंख्यातवें भागमें  
रहते हैं ॥ ३५ ॥

यह देशामात्रक सूत्र है इस कारण इसके द्वारा भासुए अर्थात् पृथ्वीत अर्धसे  
अन्य अर्थात् अपृथ्वीत अर्धको कहते हैं । यह इस प्रकार है— बादर पृथिवी भावि  
त जीवराशियाँ स्वस्वानको प्राप्त होकर तीन लोकोंके असंख्यातवें भागमें तिरिगलोकसे  
अन्य लोक और अवाह हीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं क्योंकि अपर्याप्तसे  
पृथिवीकायिक जीवोंका अर्ध पृथिवीका ही भागप्य करके है । इन जीवोंसे

अगपदरपमाणेण कस्सामो—

तस्य पट्टमपुडवी एयरन्हुविक्खमा सत्तरन्हुदीहा वीससहस्रणभोजोयणलक्ख  
 बाहल्ला; एसा अप्पणो बाहल्लस्म सत्तममागबाहल्ल अगपदरं होदि । विदियपुडवी  
 सत्तममागुभेरन्हुविक्खमा सत्तरन्हुआयदा बचीसजोयणसहस्सपाहस्सा सोलससहस्स-  
 ससहियचउह् लक्ख्खाणभेगूणवचासमागबाहल्ल अगपदरं होदि । उदियपुडवी वेसत्त  
 मागूणतिप्पिरन्हुविक्खमा सत्तरन्हुआयदा अट्टावीसजोयणसहस्सपाहल्ला; इम अगपदर  
 पमाणेण कीरमाणे बचीससहस्साहियपत्तलक्खजोयणणभेगूणवचासमागबाहल्ल अगपदरं  
 होदि । चत्तमपुडवी तिप्पिसत्तमागूणचत्तारिरन्हुविक्खमा सत्तरन्हुआयदा चठवीस-  
 भोजोयणसहस्सपाहल्ला; इम अगपदरपमाणेण कीरमाणे छन्जोयणलक्खणभेगूणवचासमाग  
 बाहल्लं अगपदरं होदि । पचमपुडवी चत्तारिसत्तमागूणपंचरन्हुविक्खमा सत्तरन्हुआयदा  
 वीसजोयणसहस्सपाहल्ला; इम अगपदरपमाणेण कीरमाणे वीससहस्साहियछप्प लक्ख्खाण  
 एगुणवचासमागबाहल्लं अगपदरं होदि । छट्टपुडवी पचसत्तमागूणछरन्हुविक्खमा सत्त  
 रन्हुआयदा सोलसजोयणसहस्सपाहल्ला धान्ठदिसहस्साहियपक्कं लक्ख्खाणभेगूणवचास

अर क्षेत्रके ज्ञापनार्थं साठ पृथिवियोंको अगप्रतर प्रमाणसे करते हैं—

उत्तमं प्रथम पृथिवी एक राष्ट्र विस्तृत साठ राष्ट्र क्षीम और वीस सहस्र कम  
 दो छाप योजनप्रमाण बाहस्यसे सहित है। यह पतफळकी अपेक्षा अपने बाहस्यके  
 सातवें भाग बाहस्यरूप अगप्रतरप्रमाण है। द्वितीय पृथिवी एक बड़े सात भाग कम दो राष्ट्र  
 विस्तृत सात राष्ट्र भाषत और बचीस सहस्र योजनप्रमाण बाहस्यसे संयुक्त है। यह  
 प्रमफळकी अपेक्षा चार छान्ठ सोसह सहस्र योजनोंके उन्धवासवें भाग बाहस्यरूप  
 अगप्रतरप्रमाण है। तृतीय पृथिवी दो बड़े सात भाग कम तीन राष्ट्र विस्तृत सात राष्ट्र  
 भाषत और अट्टाईस सहस्र योजनप्रमाण बाहस्यसे युक्त है। इसे अगप्रतरप्रमाणसे  
 करनेपर पांच छान्ठ बचीस सहस्र योजनोंके उन्धवासवें भाग बाहस्यरूप अगप्रतरप्रमाण  
 होती है। चतुर्थ पृथिवी तीन बड़े सात भाग कम चार राष्ट्र विस्तृत सात राष्ट्र भाषत  
 और बीबीस सहस्र योजनप्रमाण बाहस्यसे संयुक्त है। इसे अगप्रतरप्रमाणसे करनेपर  
 यह छह छान्ठ योजनोंके उन्धवासवें भाग बाहस्यरूप अगप्रतरप्रमाण होती है। पंचम  
 पृथिवी चार बट सात भाग कम पांच राष्ट्र विस्तृत सात राष्ट्र भाषत और बीस सहस्र  
 योजनप्रमाण बाहस्यसे संयुक्त है। इसे अगप्रतरप्रमाणसे करनेपर छह छान्ठ वीस सहस्र  
 योजनोंके उन्धवासवें भाग बाहस्यरूप अगप्रतरप्रमाण होती है। छठी पृथिवी पांच बट सात  
 भाग कम छह राष्ट्र विस्तृत सात राष्ट्र भाषत और सोसह सहस्र योजनप्रमाण बाहस्यसे  
 संयुक्त है। यह पतफळकी अपेक्षा पांच छान्ठ वान्ठ सहस्र योजनोंके उन्धवासवें भाग

भागवाहन्ल जगपदर हादि । सचमपुडवी छमचमागूपसचरन्नुबिक्खंमा सचरन्नु  
 आयदा अहुजोपणसहम्सवाहन्ला चउदात्महस्मादियठिम्म लक्खणागमेगुणवचासभाग  
 वाहन्ल जगपदर होदि । अहुमपुडवी सचरन्नुआयदा एगरन्नुहंदा अहुजोपणवाहन्ला  
 सचममागादियएगजोपणवाहन्ल जगपदर होदि । एदाणि सम्भलेचाणि एगहे कदे  
 तिरियसोगवाहन्लप्रदो संखे अगुणवाहन्ल जगपदर हादि ।

मरु-ससेल-देविंदप-सडीबद्ध पण्णपविमापत्तण च एत्थेव दहुम्म, सम्भत्त  
 तत्थ पुडविकाइयाणं समनदो । वादरपुडविकाइया वादरजाउकाइया वादरतेउकाइया  
 वादरपणप्फदिक्काइया पचयसरीरा एदेसिं चअ अपग्गचा य भवणविमाणहुपुडवीसु  
 विधिपक्कमेण विवमति । तउ-आउ रुन्हाण कर्धं तत्थ समदो । ए, इदिएदिं  
 अगेन्नाम सुहुसन्धानं पुडविजागियाणमन्धिचस्स विरोहामावादो ।

बाहस्वरूप जगप्रतरप्रमाण है । सप्तम पृथिवी छह बने सान माग कम साठ राहु बिस्तृत  
 सान राहु भायत भीर माठ सहस्र योजनप्रमाण बाहस्वरूपे संयुक्त है । यह पतफळकी  
 अपेक्षा तीन छात्र कपाठीस सहस्र पात्रमात्र उनवासर्बे भाग बाहस्वरूप जगप्रतरप्रमाण  
 है । अष्टम पृथिवी साठ राहु भायत एक राहु बिस्तृत भीर माठ योजनप्रमाण बाहस्वरूपे  
 संयुक्त है । यह पतफळकी अपेक्षा एक बट साठ माग अधिक एक योजन बाहस्वरूप  
 जगप्रतरप्रमाण है । इस सब क्षेत्रोंका एकत्रित करनेपर तिर्यग्भोकके बाहस्वरूपे सप्यात  
 गुण बाहस्वरूप जगप्रतर जाता है । ( देखो पुस्तक ४ पृ ८८ भाषि ) ।

मेघ कुम्भपर्वत तथा बृहोके इन्द्रक धर्मीबद्ध भीर प्रकीर्णक विमानोंका क्षेत्र भी  
 यहींपर दखना चाहिये क्योंकि वहाँ सब जगह पृथिवीकायिक जीवोंकी सम्भावना  
 है । वादर पृथिवीकायिक वादर जलकायिक वादर तजस्वकायिक भीर वादर पक्ष्यति-  
 कायिक प्रायकशरीर तथा इनके ही अपर्णांत जीव भी भयनवासियोंके विमानोंमें ब  
 भाठ पृथिवियोंमें निवसितकमस निवास करते हैं ।

शुद्ध—तेजस्वकायिक जलकायिक भीर पक्ष्यतिकायिक जीवोंकी वहाँ किस  
 सम्भावना है ?

समाधान—महाँ क्याकि इन्द्रियात्म समाप्त य प्रतिघाय स्वप्न पृथिवीसम्बद्ध  
 उन जीवोंका मस्तिस्कका कोई विराय नहीं है ।

समुग्घादेण उववादेण केवडिसेत्ते ? ॥ ३६ ॥

सुगममर्द ।

सञ्जलोगे ॥ ३७ ॥

देसामासियसुत्तमेद, तमेवेण सुद्धत्था पुञ्चदे — वेपण-कसामपरिणदा एदे तिण्ह  
सागाणमसखेज्जदिमागे, तिरियत्तेगादो संखेज्जगुणे, माणुसखेत्तादो असखेज्जगुणे  
अच्छति, एदेसिं पुडवीसु वेप अनट्टाणादो । बादरत्तेउक्काइया भेउभिय गदा पचण्ह  
ओयाणमसखेज्जदिमागे । मारणंतिय-उपवाद्गदा सम्बलागे । कुदो ? असखेज्जलोग  
परिमाणादो । एव बादरणिगोदपदिक्खिदाप्यं तेसिमफ्ज्जघाम च पचम्ब । सुत्त बादरणिगोद  
पदिक्खिदा किण्ण परुविदा ! ए, बादरबणफ्फदिपत्तपसरीरेसु तेमिमत्तम्भाबादो । कुदा ?  
पत्तपसरीरत्तमेण त्तेदो एदेसिं भेदाभाबादो ।

उक्त बादर पृथिवीकायिकादि जीव समुद्रपात य उपपादसे कितने क्षेत्रमें  
रहते हैं ? ॥ ३६ ॥

यह सब सुगम है ।

उक्त बादर पृथिवीकायिकादि जीव समुद्रपात य उपपादसे सर्व लोकमें  
रहत हैं ॥ ३७ ॥

यह सब देशामर्शक है इस कारण इसका द्वारा सूचित अर्थ कहल है— देवमा  
य कयाय समुद्रपातको प्रान्त ये जीव तीन लोकोंके असंख्यातमें मायमें तियरलोकसे  
संख्यातगुणे और मानुषक्षेत्रसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहत हैं क्योंकि इनका पृथिवियोंमें  
ही अल्पमान है । बादर तज्जस्यधिक वैश्वियिकसमुद्रपातको प्रान्त हाकर पाँचों लोकोंके  
असंख्यातमें भागमें रहते हैं । मारणास्तिकसमुद्रपात य उपपादको प्रान्त य ही जीव  
सर्व लोकमें रहते हैं क्योंकि वे असंख्यात लोकप्रमाण हैं । इसी प्रकार बादर निगोद  
प्रतिष्ठित और उनके अल्पमान जीवोंका भी क्षेत्र कहना चाहिये ।

संज्ञ—सबमें बादर निगोदप्रतिष्ठित जीवोंकी संख्या क्यो नहीं की गए ?

समाधान—मही क्योंकि, इनका बादर पनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंमें  
अन्तर्भाव है, क्योंकि प्रत्येकशरीरपमही अवेक्षा उनसे इनका कोई भेद नहीं है ।

## लोगस्स सखेज्जदिभागे ॥ ४१ ॥

एद दसामामियसुच, वेजेदस्स अत्यो बुच्छदे । त अहा— तिण्ह लोगण  
संखेज्जदिभाग, णर तिरियसोगेहिंत्तो असखेज्जगुण अच्छति । इदा ? समचउरस्स-  
सोगणसिं पंचरज्जुआयदमावुरिय वेसिं सम्भकालमवहागादो ।

## समुग्घाणेण उववादेण केवडिस्सेत्ते, सब्वलोगे ? ॥ ४२ ॥

बेपय-कस्सायसमुग्घादे तिण्ह लोगणं संपुज्जदिभाग, णर-तिरियसोगेहिंत्ता  
अमेत्ते ज्जगुण । वेठम्भियसमुग्घादेण चहुण्ह लोगणमसंखेज्जदिभागे । माणुमस्येत्तादो ण  
णम्भदे । मारणतिय उववादेहिं सम्भलोगे, असखेज्जलागपरिमाणत्तादा ।

धादरवाउपज्जत्ता सत्थाणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिस्सेत्ते ?  
॥ ४३ ॥

सुगममदं ।

धादर वायुकायिक और उनक अपपाप्त जीव स्वस्थानसे लाकके सख्यातमें  
भागमें रहते हैं ॥ ४१ ॥

यह सूत्र देशामर्याक है इसमिय इसका मय कहते हैं । यह इस प्रकार है—  
उक्त जीव स्वस्थानस तीन मोक्षोंक संख्यातमें भागब तथा अनुप्यस्योक् व तिर्यग्योक्से  
असंख्यातगुण क्षत्रमें रहत हैं कर्षोक्, समबहुष्णोक् पांच राजु मापत जोकबाडीको  
प्यात करक उनका सर्व काळमें अपस्थान है ।

उक्त जीव समुद्घात व उपपादस कितन धत्रमें रहते हैं ? सर्व साक्षमें  
रहत हैं ॥ ४२ ॥

ब्रह्मासमुद्घात और कयापसमुद्घातकी अपेक्षा उक्त जीव तीन साक्षोंकि  
संख्यातक भागमें तथा अनुप्यमाक व तिर्यग्याकस असंख्यातगुण क्षत्रमें रहत हैं ।  
धिक्षिविकसमुद्घातकी अपेक्षा उक्त जीव चार काक्षोंक असंख्यातमें भागमें रहत हैं ।  
मानुषक्षत्रकी अपेक्षा कितन क्षेत्रमें रहत हैं यह बात नहीं है । मारणातिकसमुद्घात व  
उपपाद पदस सप साक्षमें रहते हैं कर्षाकि व असंख्यात साक्षप्रमाण है ।

धादर वायुनायिक पर्याप्त जीव स्वस्थान, समुद्घात और उपपादम कितन धत्रमें  
रहत हैं ? ॥ ४३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

## लोगस्म सखेज्जदिभागे' ॥ ४४ ॥

एवस्म अत्यो पुनर्वदे-सखाण-अपव-कसायपदेहि तिण्हं लोगाण संखेज्जदिभागे, पर तिरियलोगेहिंते अमखेज्जगुणे अस्सति । इदो ? एदेसि पचरज्जुआपद-एगरज्जु समसुद्धोवाइल्लसमअउरमलोगमासीप अबहुणादो । वेउअिययपदेण अउण्हं लोगाणम सखेज्जदिभाग । माणुमत्तत्तादो प पचवे । मारणत्थि उववादेहि तिण्हं लोगाण सखेज्जदिभागे, गर-तिरियलोगेहिंता असखेज्जगुणे । सखलोगो किण्ण लम्भदे ? म, अण्णेहिंते आगतुम एत्थुप्य-अमाणजीवाणं एदेहिंते अणत्थुप्यज्जण्हं मारणत्थिप करेमाणजीवाण प बहुताभावादो, वादरवाउक्काइयपज्जत्ताणं पापम पचरज्जुखेचम्मरेरे चव मारणत्थि उववादाणमुबलमादो ।

वणप्फदिकाइय णिगोदजीवा सुहुमवणप्फदिकाइय-सुहुमणिगोद जीवा तस्सेव पज्जत्त-अपज्जत्ता सत्याणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिस्सेत्ते ? ॥ ४५ ॥

वादर वायुकायिक पर्याप्त जीव स्वस्थान, समुत्पात प उपपादसे लोकके संस्थातबे मागमें रहते हैं ॥ ४४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— स्वस्थान वेदनासमुत्पात और कृपापसमुत्पात पक्षोंसे वादर वायुकायिक पर्याप्त जीव तीन लोकोंके संस्थातबे मागमें तथा मनुष्यलोक व तिरियलोकसे असंस्थातगुण क्षेत्रमें रहते हैं क्योंकि इनका पांच राजु आयत और चारो मोरसे एक राजु मोदी समबनुष्कोण लोकमासीमें बसस्थान है । वैकिकियिक पक्षसे चार लोकोंके असंस्थातबे मागमें रहते हैं । मानुषक्षेत्रकी अपेक्षा कितने क्षेत्रमें रहते हैं यह ज्ञात नहीं है । मारणास्तिकसमुत्पात और उपपादकी अपेक्षा तीन लोकोंके संस्थातबे मागमें तथा मनुष्यलोक व तिरियलोकसे असंस्थातगुण क्षेत्रमें रहते हैं ।

श्लोक—मारणास्तिकसमुत्पात प उपपादकी अपेक्षा सब लोक क्यों नहीं प्राप्त होता ?

समाधान—नहीं क्योंकि अन्य जीवोंमेंसे आकर इनमें उत्पन्न होनेवाले जीव तथा इनमेंसे अन्यत्र उत्पन्न होनेके लिये मारणास्तिकसमुत्पातको करेबासे जीव बहुत नहीं हैं तथा वायुकायिक पर्याप्त जीवोंके प्राप्ता करके पांच राजुप्रमाण क्षेत्रके भीतर ही मारणास्तिकसमुत्पात और उपपाद पद पाये जाते हैं ।

वनस्पतिकायिक, वनस्पत्यतिकायिक पर्याप्त, वनस्पतिकायिक अपर्याप्त, निगादबीव, निगोदबीव पर्याप्त, निगोदबीव अपर्याप्त, छस्म वनस्पतिकायिक,

## लोगस्स सखेज्जदिभागे ॥ ४१ ॥

एदं देसामासियमुच, तेणदस्स अरयो बुष्पदे । तं अहा— तिण्ह लोमान्  
सखेज्जदिभागे, पर-तिरियलोमेहिंत्तो असखेज्जगुणे अर्य्हंति । इदो ? समचउरस्स  
लामजाठि पंचरन्तुभापदमाचुरिय देसिं सम्भकालमनङ्गागादो ।

## समुग्घादेण उववादेण केवडिस्सेत्ते, सव्वलोगे ? ॥ ४२ ॥

येयन्-कसायसमुग्घादे तिण्हं लोमान् संखेज्जदिभागे, पर-तिरियलोगेहिंत्तो  
असखेज्जगुणे । वेठच्चियसमुग्घादेण चमुण्हं लोमान् असखेज्जदिभागे । माज्जुमखेचादो व  
पण्वदे । मारमैठिय उववादेहिं सम्भलोगे, असखेज्जलोगपरिमाणचादा ।

बादरवातपज्जत्ता सत्याणेण समुग्घादेण उववादेण केवडिस्सेत्ते ?  
॥ ४३ ॥

सुगममेदं ।

बादर वायुऋषिक और उनके अपर्याप्त बीब स्वस्थानसे लोकके सस्यातर्षे  
भागमें रहते हैं ॥ ४१ ॥

यह सूत्र दशमार्शक है इसलिये इसका अर्थ करते हैं । यह इस प्रकार है—  
उक्त बीब स्वस्थानसे तीन लोकके सस्यातर्षे भागमें तथा मनुष्यलोक व तिर्यग्लोकसे  
असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं क्योंकि, समचउरपणोच पांच राजु भाषत लोकतालीको  
प्यास करके उक्तका सर्व काष्ठमें भवस्थान है ।

उक्त बीब समुद्घात व उपपादस कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? सर्व लोकमें  
रहत हैं ॥ ४२ ॥

बेदभासमुद्घात और कपायसमुद्घातकी अपेक्षा उक्त बीब तीन लोकके  
संख्यातर्षे भागमें तथा मनुष्यलोक व तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं ।  
वैश्विक्कसमुद्घातकी अपेक्षा उक्त बीब चार लोकके असंख्यातर्षे भागमें रहते हैं ।  
माज्जुसककी अपेक्षा कितने क्षेत्रमें रहते हैं यह बात नहीं है । मारजाणिकसमुद्घात व  
उपपाद पदस सर्व लोकमें रहते हैं क्योंकि ये असंख्यात लोकप्रमाथ हैं ।

बादर वायुऋषिक पर्याप्त बीब स्वस्थान, समुद्घात और उपपादसे कितने क्षेत्रमें  
रहत हैं ? ॥ ४३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

गर-तिरियसोगादो संखेन्द्रगुणे । कुदो ? पुढवीमो खेवस्सिदूण पादरायमनङ्गमादो ।  
माणुसखेत्तादो असखेन्द्रगुणे ।

समुग्घादेण उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ४९ ॥

सुगम ।

सव्वलोए ॥ ५० ॥

एदस्सत्तां सुक्खद— वेयण-कसायसमुग्घादेहि तिण्हं लोगाणमसंखेन्द्रदिमागे,  
तिरियसोगादो संखेन्द्रगुणे, माणुसखेत्तादो असखेन्द्रगुणे । कारण पुत्र व वत्तम् ।  
मारणतिय-उववादेहि सव्वलगे । कुदो ? आणतियादो ।

तसकाइय-तसकाइयपज्जत्त अपज्जत्ता पच्चिदिय-पज्जत्त-अपज्ज  
त्ताण भगो ॥ ५१ ॥

जेण दोण्हं सत्थामसत्थान-विहारवदिसत्थान-वेयण-कसाय-वेठम्भियपदेहिं तिण्हं  
सोगात्तं असखेन्द्रदिमागत्तण, तिरियसोगस्स सखेन्द्रदिमागत्तणेण, माणुसखेत्तादो

एवस्थामसे तीन लोकोंके असत्थातवें मागमें तथा मनुष्यलोक व तिरिग्लोकसे सत्थात  
गुणे सेनमें रहते हैं क्योंकि, पृथिवियोंका भाग्य कटके ही बाद जीवोंका अवस्थाम  
है । मानुषलोककी अपेक्षा असत्थातगुणे सेनमें रहते हैं ।

उक्त जीव समुत्थात व उपपादकी अपेक्षा कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? ॥ ४९ ॥

एह सख सुगम है ।

उक्त जीव समुत्थात व उपपादकी अपेक्षा सर्व लोकमें रहते हैं ॥ ५० ॥

इस सखका अर्थ कहते हैं— वेदनासमुत्थात और कयापसमुत्थातसे तीन  
लोकोंके असत्थातवें मागमें तिरिग्लोकसे असत्थातगुणे और मानुषलोकसे असत्थातगुणे  
सेनमें रहते हैं । कारण पूर्वक ही समान कहना चाहिये । मारणात्तिकसमुत्थात व  
उपपाद पदोंसे सर्व लोकमें रहते हैं क्योंकि, वे समस्त हैं ।

असत्थापिक, असत्थापिक पर्याप्त और असत्थापिक अपर्याप्त जीवोंके क्षेत्रका  
निरूपण पचन्द्रिय, पंचेन्द्रिय पर्याप्त और पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके समान है ॥५१॥

क्योंकि दोनों (असत्थापिक पंचेन्द्रिय) जीवोंके एवस्थामएवस्थाम विहारएवस्थ  
एवस्थाम वेदनासमुत्थात कयापसमुत्थात और वैश्वियिकसमुत्थात पदोंकी अपेक्षा तीन  
लोकोंके असत्थातवें मागत्तसे, तिरिग्लोकसे असत्थातवें मागत्तसे व मानुषलोककी अपेक्षा



सुगममर्द ।

सव्वलोए ॥ ४६ ॥

इहा ! सम्पत्तोगं विरंतेण वाक्विप अनङ्गावाशे । वादराण्य व' सुडुमाण सोग  
स्मेगदसे अनङ्गाण किण्य होग्घ ! व, 'सुडुमा सणरत्थ अल-वस्रगानेसु होंति' ति  
वयणेण मह विराहादो ।

वादरवणप्फदिकाइया वादरणिगोदजीवा तस्सेव पज्जत्ता अप  
ज्जत्ता सत्याणेण केवडिस्सेत्ते ? ॥ ४७ ॥

सुगम ।

लोगस्स असस्सेज्जदिभागे ॥ ४८ ॥

दत्तामासिपस्मेदस्म अत्या दुग्घे । त अहा— तिण्हं सोगाणमसल्ल-त्रदिभागे,

सूक्ष्म बनस्पतिक्रमिक पर्याप्त, सूक्ष्म बनस्पतिक्रमिक अपर्याप्त, सूक्ष्म निगादबीज,  
सूक्ष्म निगादबीज पर्याप्त और सूक्ष्म निगादबीज अपर्याप्त, ये स्वस्थान, समुद्रपात व  
उपपादकी अपथा कितने धेत्रमें रहते हैं ? ॥ ४५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपर्युक्त बीज उक्त प्रदेशों में सर्व सोकमें रहते हैं ॥ ४६ ॥

क्योंकि, निरन्तररूपसे सम साकका व्यापन कर इनका अपस्थान है ।

प्रश्न—वादर जीवोंके समान सूक्ष्म जीवोंका सोकक एक देशमें अपस्थान  
क्यों नहीं होता ?

समाधान—नहीं क्योंकि ऐसा हामपट सूक्ष्म जीव उस धन व आकाशमें  
राज्य हात हैं इस समयमें विराय हाणा ।

वादर बनस्पतिक्रमिक, वादर बनस्पतिक्रमिक पर्याप्त, वादर बनस्पतिक्रमिक  
अपर्याप्त, वादर निगादबीज, वादर निगादबीज पर्याप्त आर वादर निगादबीज  
अपर्याप्त स्वस्थानमें कितने धेत्रमें रहते हैं ? ॥ ४७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त बीज स्वस्थानही अपथा साकक अमंग्यातरो भागमें रहत हैं ॥ ४८ ॥

इस दृश्यामर्दक सूत्रका अर्थ कहत हैं । यह इस प्रकार है— उक्त जीव

धैर्यवियसमुग्धादगदा एद दस वि तिण्ड लोगाणमसखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अह्वाइज्जादो असखेज्जगुणे; तेवाहारसमुग्धादगदा चहुण्डं लोगाणमसखेज्जदिभागे, अह्वाइज्जस्स सखेज्जदिभागे; मारणवियसमुग्धादगदा तिण्डं लोगाणमसखेज्जदिभागे, णर तिरियलोगेहिंते असखेज्जगुणे भच्छति । उववादं णत्थि, मणमोगपच्चिन्नागारं विवफत्तादो ।

कायजोगी-ओरालियमिस्सकायजोगी सत्याणेण समुग्धादेण उववादेण केवडिस्सेत्ते ? ॥ ५४ ॥

सुगममेद ।

सव्वलोए ॥ ५५ ॥

एदस्स सुचस्स अत्थो पुच्चदे । त अहा— सत्माण-वयण-कमाय-मारणविय उववादेहि मम्मसाग । हुदा ? आणवियादो । बिहारवदिसत्याण-नेउभियपदेहि कयमागिणो तिण्ड लोगाणमसखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स सखेज्जदिभागे, अह्वाइज्जादा असखेज्जगुणे ।

परस्परधाम वेव्जासमुग्धात कयायसमुग्धात भाट धैकियिकसमुग्धातको प्राप्त पे द्वा ही जीव तीन सोकोक असख्यातयें भागमें तिपम्मोक्क सख्यातयें भागमें और अहार उपासे असख्यातगुण क्षत्रमें रहते हैं । तीजससमुग्धात य आहारकसमुग्धातको प्राप्त उक्त जीव भाट सोकोके असख्यातयें भागमें और अहार उपासे संख्यातयें भागमें रहते हैं । मारणास्तिकसमुग्धातका प्राप्त उक्त जीव तीन सोकोके असख्यातयें भागमें तथा मनुष्य य तिपम्मोक्की अपेक्षा असख्यातगुण क्षत्रमें रहते हैं । उपवाद पद नहीं है क्योंकि मनायोग व कथमयोगकी यहाँ विपत्ता है ।

काययोगी मार आदारिकमिभ्रहापयागी जीव स्वस्थान, महद्घात व उपवाद पदम क्लितने ध्रममें रहत हैं ? ॥ ५४ ॥

यह सूत्र मगम है ।

काययोगी और आदारिकमिभ्रहापयागी जीव उक्त पदोंमें सर्व ठाकमें रहते हैं ॥ ५५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । पर हम प्रकार है— स्वस्थान वेव्जासमुग्धात, कयायसमुग्धात मारणास्तिकसमुग्धात और उपवाद पदोंम काययोगी व भीशरिक मिभ्रहापयागी सब सोकमें रहत हैं क्योंकि व भयनग हैं । बिहारवदिसत्याण और धैकियिकसमुग्धात पदोंम काययोगी जीव तीन सोकोक असख्यातयें भागमें तिपम्मोक्क संख्यातयें भागमें और अहार उपासे असख्यातगुण क्षत्रमें रहते हैं क्योंकि, जगप्रवृत्त

असंखेन्मगुणचमेण; उबवाद् मारणतिपिह' तिष्ण स्त्रेगापमसखजदिमागचमेण, पर-तिरिय  
सोमेहिो असंखेन्मगुणचमेण; केवलिस्त्रमुग्धादेण तेजाहारपदेहि य अपन्मचत्रोगपदेहि  
य मेरो मत्वि । तेण र्षिदियानं मंगा पि न विकम्भे ।

जोगाणुवादेण पचमणजोगी पचवचिजोगी सत्थाणेण समुग्धादेण  
केवहिस्त्रे १ ॥ ५२ ॥

एतत् सत्त्वाने दो वि सत्त्वान्यामि अत्वि, समुग्धादे वेयन्-कन्नाप-वेडभिय  
तेजाहार-मारणंतिमसमुग्धादा अत्वि, उद्वादिदत्तरसुरिराण मारणंतिपियदार्ण पि मन्-वधि  
जोगसंभवस्स विरोहाभावसो । उबवादा अत्वि, एतत् अयजोगं मोक्षन्मजोगामावादा ।

लोगस्स असंखेज्जदिमागे ॥ ५३ ॥

एदस्सत्तो बुष्पदे । त अहा— सत्त्वानसत्त्वान विहारवदिसत्त्वान-वयण-कन्नाप

असंख्यातगुणत्वसे कोई भेद नहीं है उपपाद् व मारणात्मिकसमुद्घातकी अपेक्षा तीव्र  
छाकीके असंख्यातवै मागत्वसे एवं मनुष्य व तिर्यक्काकी अपेक्षा असंख्यातगुणत्वसे  
कोई भेद नहीं है। तथा केवलिसमुद्घात तैजससमुद्घात व माहारकसमुद्घात पदोंसे  
एवं अपर्याप्त योग पदोंसे भी कोई भेद नहीं है । अत एव उक्त अस्त जीवोंका क्षेत्र  
एवैन्द्रिय जीवोंके समान है ऐसा कहना विकृत नहीं है ।

योगमार्गानुसार पांच मनोयोमी और पांच बचनयोगी जीव स्वस्थान व  
समुद्घातकी अपेक्षा किन्तुने क्षेत्रमें रहते हैं ॥ ५२ ॥

यहाँ स्वस्थानमें दोहो स्थस्थान और समुद्घातमें वेदनासमुद्घात कपाय  
समुद्घात वैश्विकसमुद्घात, तैजससमुद्घात माहारसमुद्घात एवं मारणात्मिक-  
समुद्घात हैं क्योंकि उत्तर शरीरको उत्पन्न करनेवाके मारणात्मिकसमुद्घातको प्राप्त  
जीवोंके भी मनोयोग व बचनयोगके द्वारामें कोई विशेष नहीं है । मनोयोगी व बचन  
योगी जीवोंमें उपपाद् पद नहीं है क्योंकि उनमें कामयोगको छोड़कर अन्य योगोंका  
अभाव है ।

पाँचों मनायागी व पाँचों बचनयागी जीव उक्त पदोंमें साकके असंख्यातवै  
मागमें रहते हैं ॥ ५३ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यह इस प्रकार है— स्वस्थानस्वस्थान, विहार

बठभियमसुग्घादगदा एदे इस बि तिण्ड लोगाणमसंखेज्जदिभाग, तिरियलोगस्स सखेज्जदिभागे, अट्टाद्भादो अससखेज्जगुणे; सप्राहारसमुग्घादगदा चटुण्ड लोगाणम-सखेज्जदिभागे, अट्टाद्भवस्स संखेज्जदिभागे; मारभंतियसमुग्घादगदा तिण्ड लोगाणमसखेज्जदिभाग, मार तिरियतागद्धितो अमसखेज्जगुणे अच्छति । उपवाद् णत्थिय, मज्जोग भविजागाण विवक्खादा ।

कायजोगी-ओगलियमिस्सकायजोगी मत्याणेण समुग्घादेण उववादेण केव्वडिस्सेत्ते ? ॥ ५४ ॥

सुगममेदं ।

सव्वलोए ॥ ५५ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो मुत्तपदे । तं जहा— सत्याण बेयण-कमाय-मारणत्थिय उववाद्दि सम्पलाग । इदा ? आर्यत्थियादा । बिहारबदिमत्याण-भेउभियपपदेदि कायजागिणो तिण्ड लोगाणमसखेज्जदिभाग, तिरियलोगस्स सखेज्जदिभागे, अट्टाद्भादो असखेज्जगुणे ।

परस्वरूपान् वदनासमुद्घातं क्वायसमुद्घातं भीर वैभिविकसमुद्घातको प्राप्त ये ह्ये एी जीव तीत साकोक भसख्यातये मागमे तियग्ग्याकक सख्यातये मागमे भीर मद्दाइ दीपस भसख्यातगुण क्षत्रमे रहत है । तजससमुद्घात य आहारकसमुद्घातको प्राप्त उक्त जीव चार भोकोके भसख्यातये मागमे भीर मद्दाई दीपक संख्यातये मागमे रहते है । मारणात्मिकसमुद्घातका प्राप्त उक्त जीव तीत साकोक भसख्यातये मागमे तथा मनुष्य य तियग्ग्याककी अपेक्षा भसख्यातगुण क्षत्रमे रहत है । उपवाद् पर महीं है कयोकि, मनायोग य पञ्चनपागकी यही विवक्खा है ।

कायपागी और औदारिकमिभक्षायपागी जीव स्वरूपान्, समुद्घात य उपवाद् पदम कितन धयमे रहत है ? ॥ ५४ ॥

यह मूत्र सुगम है ।

कायपागी और औदारिकमिभक्षायपागी जीव उक्त पदमे सखेज्जगुणे रहत है ॥ ५५ ॥

इस मूत्रका मर्थ कहन है । यह इस प्रकार है— स्वस्यान वदनासमुद्घातं क्वायसमुद्घातं मारणात्मिकसमुद्घातं भीर उपवाद् पदम कायपागी य औदारिक मिभक्षायपागी सखे मागमे रहत है कयोकि य भसख है । बिहारपरस्वरूपान् मार वैभिविकसमुद्घात पदम कायपागी जीव तीत साकोक भसख्यातये मागमे तियग्ग्याकक संख्यातये मागमे भीर मद्दाइ दीपस भसख्यातगुण क्षत्रमे रहते है, कयोकि, मज्जोगके

कुत्रो ? अथपदरस्त अससन्नदिभागमघतसरासिस्म गहवादा । तत्राहारपेदेहि अथप्रागिणा  
 चतुर्धुं लोमाभमसंखेन्द्रदिभागे, अहुद्वन्त्रस्म संसन्नदिभाग । इह-कवाठ-पदर-लोग-  
 पूरनेहि अथप्रागिणो भोधभंगो ।

ओरालियकायजोगी मत्याणेण समुग्धादेण केवडिस्तेत्ते ? ॥५६॥  
 सुगमं ।

सव्वलेए ॥ ५७ ॥

एवस्सत्थो पुच्छदे— सत्थाण-अयम-कमाय-भारणविपहि सम्पत्तायं । कुत्रो ?  
 सम्पत्थाण-अयम-अससन्नदिभागमघतसरासिस्म गहवादा । विहारपदरप तिर्ध  
 लोमाभमसंखेन्द्रदिभाग, तिरियलोगस्स संसन्नदिभागे, अहुद्वन्त्रादा अससन्नदिभाग ।  
 कुत्रो ? तसप्रासिं भापुण्णत्थ विहारमावादा । अउत्थिय-सेवा-इहमसुग्धादागदा चतुर्धु  
 लोमाभमसंखेन्द्रदिभागे, अहुद्वन्त्रादा अससन्नदिभागे । अउत्थिय-सेवा-इहमसुग्धादागदा मापुण-

असंख्यातबे मायमान असराशिका यहां प्रहय है । तैजससमुत्पात और जाहारक  
 समुत्पात पदसे काययोगी जीव चार ओकोंके असंख्यातबे भागमें और अकार्हीपके  
 संख्यातबे भागमें रहते हैं । इह कवाठ प्रतर और छोकरण समुत्पातकी मयसा  
 काययोगीके क्षेत्रका बिरूपण ओपके समान है ।

औदारिकअययोगी जीव स्वस्थान व समुत्पातकी अपेक्षा कियने क्षेत्रमें रहते  
 हैं ? ॥ ५६ ॥

एह सूच सुयम है ।

औदारिकअययोगी जीव स्वस्थान व समुत्पातकी अपेक्षा सर्व ओक्रमें रहते हैं  
 ॥ ५७ ॥

एह सूचका अर्थ करते हैं— स्वस्थान वेत्थानसमुत्पात कायसमुत्पात और  
 मारणात्मिकसमुत्पातकी अपेक्षा एक जीव सर्व ओक्रमें रहते हैं क्योंकि सर्वत्र अथस्थानके  
 अविरोधी औदारिकअययोगी जीवके मारणात्मिकसमुत्पात होता है । विहारपदकी  
 अपेक्षा तीव्र ओकोंके असंख्यातबे भागमें तिर्यग्योक्के संख्यातबे भागमें और अकार्  
 हीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं क्योंकि असंख्यातके छोकर एक जीवका अल्पत्र  
 विहार नहीं है । वैकिकिकसमुत्पात तैजससमुत्पात और इहसमुत्पातकी प्राप्त एक  
 जीव चार ओकोंके असंख्यातबे भागमें और अकार्हीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं ।  
 विशेष इतना है कि तैजससमुत्पातकी प्राप्त एक जीव मातृपेक्षके संख्यातबे भागमें

लेखस्स सखेज्जदिभागे । क्कवाठ-पदर-त्तोमवूरणाहारपदाणि णत्थि, आरात्थियक्कयभोगण  
तेसि विरोहादा ।

उववाद णत्थि ॥ ५८ ॥

भोरालियक्कयभोगेण सह एदस्स विरोहादो ।

वेउव्वियकायजोगी सत्याणेण समुग्घादेण केवढिस्सेते ? ॥५९॥

सुगम ।

लोगस्स अमस्सेज्जदिभागे ॥ ६० ॥

एदस्सत्थो दुब्बदे— सत्थाणमस्याण विहारवदिमस्याण-वयण-कसाय-वउव्विय  
पदेहि वेउव्वियक्कयजोगिणा तिण्ह लोगणमसखेज्जदिभागे, तिरियत्तोमस्स सखेज्जदि  
भागे, अह्हाइज्जादो अमत्त-त्रगुणे । कुदो ? पहाणीकयभोइत्थियरात्थिचादो । मारणत्थिय  
समुग्घादेण तिण्ह लोगणमसखेज्जदिभागे, णर तिरियलागेहिंत्तो अमत्तज्जगुणे । एत्थ  
भोवह्मं जाणिय कयपम्भं ।

उववादो णत्थि ॥ ६१ ॥

रहते हैं । क्कपाटसमुग्घात एतरसमुग्घात क्ककपूर्णसमुग्घात और आहारकसमुग्घात  
पर नहीं है क्योंकि भौतिककायभागके साथ इनका विरोध है ।

भौतिककायजोगी भीषोंके उपपाद पद नहीं होता ॥ ५८ ॥

क्योंकि, भौतिककायभागके साथ इसका विरोध है ।

बैक्रियिककायजोगी स्वस्थान और समुद्घातस क्कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? ॥५९॥  
यह सूत्र सुगम है ।

बैक्रियिककायजोगी भीष स्वस्थान व समुद्घातस लोकके असंख्यातमें भागमें  
रहते हैं ॥ ६० ॥

इस सूत्रका अर्थ कहत हैं— स्वस्थानस्वस्थान विहारपरस्वस्थान वेरवा  
समुग्घात क्कपासमुग्घात और बैक्रियिकसमुग्घात परोंसे बैक्रियिककायजोगी भीष  
तीन क्ककोंके असंख्यातमें भागमें तियम्भाके सप्यातमें भागमें और अहाइ इीपस  
असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं क्योंकि यहाँ ज्योतिषी राशिकी प्रधानता है । मारणत्थिक-  
समुग्घातकी अपेक्षा तीन क्ककोंके असंख्यातमें भागमें तथा मनुष्यका व तिरियलोकाकी  
अपेक्षा असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं । यहाँ अपवर्तन जानकर करना चाहिये ।

बैक्रियिककायजोगियोंके उपपाद पद नहीं होता ॥ ६१ ॥

वउभियमिस्सकायजोगी उवपादस्स विराहादा ।

वेठव्वियमिस्सकायजोगी सत्याणेण केव्वडिन्नेत्ते ? ॥ ६२ ॥

सुगम ।

लोगस्स असस्वेज्जदिभागे ॥ ६३ ॥

एदस्स अत्था— तिण्ह सागाणममखेग्गदिभाग, अडुद्ध-मादो अमंखेग्गगुणे, विरियसागस्स सखे-त्रदिभागे । कुत्ता ! दवरामिस्स सखे-त्रदिभागनेचवेठव्वियमिस्स कायसागिदम्भुत्तमादो ।

समुग्घाद-उववादा णत्थि ॥ ६४ ॥

वउभियमिस्सेण मह एदेमि विराहादा । हेतु मारणत्थिय उववादि मह विरोहा, व वपण-कमापमसुग्घादि । तम्हा वेठव्वियमिस्समिं समुग्घादो णत्थि थि व घड्ढे ? एत्थ परिहारो कु-चद— सत्याणखेचादा वापयडुवारण लोगस्स असंखज्जदिमामण

क्योंकि वैद्वियमिस्सकायजागक साथ उपपाद पदका विराय है ।

वैद्वियमिस्सकायजागी एत्थानकी अपघा कित्तन वत्तमे रहत ई ? ॥ ६२ ॥

एह सुत्र सुगम है ।

वैद्वियमिस्सकायजागी तीव एत्थानकी अपेक्षा साकक अमं-पातरे भागमे रहत ई ॥ ६३ ॥

इम सुत्रका अर्थ कहत ई— वैद्वियमिस्सकायजागी तीव एत्थानस तीव साकके अमं-पातरे भागमे अडुई हीयत असं-पातगुणे और निपच्छा-के सख्यातव भागमे रहते ई क्योंकि वेचत्ताशिक संख्यातरे भागमात्र वैद्वियमिस्सकायजागी प्रप्य पाया जाता है ।

समुद्घात व उवपाद पद नहीं हैं ॥ ६४ ॥

क्योंकि वैद्वियमिस्सकायजागक साथ इनका विराय है ।

द्वारा— वैद्वियमिस्सकायजागका मारणात्थित्तमुद्घात और उवपाद परकी साथ अत ही विराय हो किन्तु वत्तासमुद्घात और वत्तासमुद्घातक साथ वाद विराय नहीं है । अत एव वैद्वियमिस्सकायजागमे समुद्घात नहीं है एह पक्षन घटित नहीं जाता ।

समाधान— उक्त शब्दाका एही परिहार कहा जाता है— एत्थानस अत्रस

बेयण-कसाय-वेठम्बिय विहारवदिसत्याण-तेजाहारखेचाणि अपुषभूदचादो तन्धेव ठीनाणि चि एदाणि एत्थ सुहाबंभे ण परिग्गीहदाणि । तदा मारणवियमेकं खेव केवलिसमुग्घादेण सहिद एत्थ समुग्घादभिदेसेण धेप्पदि । सो च समुग्घादो एत्थ गत्थि, तेमेसो ण दोसो चि । अथवा बेयण-कसाय-वेठम्बिय-तेजाहाराण पि एत्थ सुहाबंभे अत्थि समुग्घाद वयएसो, किंतु ण ते पहाण, मारणवियखेचादो तेसिमहियखेचामावादो । तदो पहाण मारणवियपदं अत्थ अत्थि, तत्थ समुग्घादो चि अत्थि । अत्थ त गत्थि, ण तन्धेव समुग्घादो चि बुच्चदि । तदो दोहि पयारेहि 'समुग्घादो एत्थि' चि ण विरुद्धे ।

### आहारकायजोगी वेत्तव्वियकायजोगिभगो ॥ ६५ ॥

एसो दम्भट्टियणिदेसा । पञ्चवक्खियणय पइत्थ मण्णमाले अत्थि तदो विसेसो ।

त अहा- सत्थाण-विहारवदिसत्थाणपरिणदा चतुण्ह ओगाणमसखेज्जदिमागे, माणुस खेचसस सखेज्जदिमागे । मारणवियसमुग्घादगदा चतुण्ह ओगाणमसखेज्जदिमागे,

कथनकी अपेक्षा छोक्के संस्कारावर्गे मागसे बेदनासमुद्घात कयापसमुद्घात वैक्रियिकसमुद्घात विहारवत्स्वस्थान तैजससमुद्घात और आहारकसमुद्घातके क्षेत्र अभिन्न होनेसे जसीमें सीन है अतएव ये यहां सुद्रकबन्ध में नहीं प्रवृत्त किये गये हैं । इसी कारण केवलिसमुद्घात सहित एक मारणास्तिकसमुद्घात ही यहां समुद्घात निर्देशसे प्रवृत्त किया जाता है । और वह समुद्घात यहां है नहीं इसलिये यह कोई दोष नहीं है । अथवा बेदनासमुद्घात कयापसमुद्घात, वैक्रियिकसमुद्घात तैजस समुद्घात और आहारकसमुद्घातको भी यहां सुद्रकबन्ध में समुद्घातसंज्ञा प्राप्त है किन्तु वे प्रधान नहीं हैं क्योंकि मारणास्तिक क्षेत्रकी अपेक्षा उनके अधिक क्षेत्रका प्रमाण है । अतएव जहां प्रधान मारणास्तिक पद है वहां समुद्घात भी है किन्तु जहां वह नहीं है वहां समुद्घात भी नहीं है ऐसा कहा जाता है । इस कारण दोनों प्रकारोंसे समुद्घात नहीं है यह बन्धन विरोधको प्राप्त नहीं होता ।

आहारककाययोगियोंके क्षेत्रका निरूपण वैक्रियिककाययोगियोंके क्षेत्रके समान है ॥ ६५ ॥

यह द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा निर्देश है । पयापार्थिक नयकी अपेक्षा निरूपण करनेपर वैक्रियिककाययोगियोंके क्षेत्रसे यहां विद्ययता है । वह इस प्रकार है— स्वस्थान और विहारवत्स्वस्थान क्षेत्रसे परिणत आहारककाययोगी जीव चार ओकोंके अर्धव्याप्तये प्रायमें और माणुपक्षेत्रके संख्यातये प्रायमें रहते हैं । मारणास्तिकसमुद्घातको प्राप्त वक्त



अङ्गाङ्गदो असंख्येन्द्रगुणे च ।

आहारमिस्सकायजोगी वेत्तव्वियमिस्सभगो ॥ ६६ ॥

एसो थि दम्भट्टियणिएसो, छोगस्स असंख्येन्द्रदिमागचयेम होण्ह खचार्ण समाजच पेत्थिखय पबुचीसो । पन्वबट्टियणयं पट्टन्व मेसो अत्थि । उ अहा— आहारमिस्सकायजोगी चट्टण्ह छोगापमसखेन्द्रदिमागे, मानुसखेचस्स सखेन्द्रदिमागे चि ।

कम्मइयकायजोगी केवडिस्सेत्ते ? ॥ ६७ ॥

सुगम ।

सव्वलोगे ॥ ६८ ॥

एदं देसामासियसुच म होदि, बुत्तत्थं मोत्तमदेव अट्टहरवामावादो । कप कम्मइयकायजोगिरासी सम्भसोए ? म, तस्स अपत्तस्स सम्भवीवरासिस्स असंख्येन्द्रदिमागचयेम त्दविरोहादो ।

जीव चार छोकोंके असंख्यातवें भागमें बीर अङ्गारं द्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं ।

आहारकमिभकाययोगियोंका क्षेत्र वैक्रियिकमिभकाययोगियोंके समान है

॥ ६६ ॥

बह मी द्रव्यार्थिक मयकी अपेक्षा बिहोरा है क्योंकि जोकोके असंख्यातवें भागत्वसे दोनों क्षेत्रोंकी समावताकी अपेक्षा कर इसकी प्रकृति हुरं है । पर्यावार्थिक मयकी अपेक्षा मेव है । बह इस प्रकार है— आहारकमिभकाययोगी जीव चार छोकोंके असंख्यातवें भागमें बीर मानुसक्षेत्रके संख्यातवें भागमें रहते हैं ।

कार्मणकाययोगी जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? ॥ ६७ ॥

यह सव्व सुगम है ।

कार्मणकाययोगी जीव सर्व सोकमें रहते हैं ॥ ६८ ॥

यह देशामद्यक सव्व नहीं है, क्योंकि बह अर्थको छोड़कर इसके द्वाय सुचित अर्थका अभाव है ।

छंझा—कार्मणकाययोगी जीवराशि सर्व छोकमें कैसे रहती है ?

समाधान—नहीं क्योंकि कामणकाययोगियोंके अन्त सर्व जीवराशिके असंख्यातवें भाग होनेस उच्चमें कोई बिदाय नहीं है ।

वेदानुवादेण इत्यिवेदा पुरिसवेदा सत्याणेण समुग्वादेण उव  
वादेण केवडिसेत्ते ? ॥ ६९ ॥

सुगम ।

लोगस्स असखेज्जदिमागे ॥ ७० ॥

एवेण देसामासियसुत्तेण सुद्धत्थो बुच्चदे । त वहा— सत्याण-विहारवदि  
सत्याण-वेयण-कसाय-वेउच्चियसमुत्पादगदा इत्यिवेदजीवा तिण्ह लोगणमसखन्वदिमागे,  
तिरिपलोगस्स संखे-ज्जदिमागे, अग्गाइज्जादो असखेज्जगुणे । इदो ? पहाणीकपदेविरिष  
धदरासिचादो । मारणविय-उववाद्गदा तिण्ह लोगणमसखेज्जदिमागे, पर-तिरिपलोगेहिंतो  
असखेज्जगुणे । एत्थ मारणविय-उववाद्गदेवविण्णासो आनिदूण कयम्भो । एवं पुरिस  
वदस्स नि वचम्भं । पवरि एत्थ वेजाहारपदाणि अत्थि । तेसु वहुंता चहुंण्ण लोगणम  
सखेज्जदिमागे, माणुसखेचस्स संखेज्जदिमाग चि वचम्भ ।

वेदमार्गणाके अनुसार स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी जीव स्वस्थान, समुत्पात और  
उपपादसे कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? ॥ ६९ ॥

यह सच सुगम है ।

स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी जीव उक्त पदोंसे ठाकके असंख्यातवें भागमें रहते  
हैं ॥ ७० ॥

इस देशामर्शक सूत्रसे स्थिति अर्थका कहते हैं । यह इस प्रकार है— स्वस्थान  
विहारपत्स्वरूपाम वेदमासमुत्पात कपायसमुत्पात और वैकल्पिकसमुत्पातको प्राप्त  
स्त्रीवेदी जीव तीन छोटीके असंख्यातवें भागमें तिर्यग्भोकके संख्यातवें भागमें और  
अकार्ही हीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं क्योंकि, यहाँ वेद स्त्रीवेद वादि प्रधान है ।  
भारणाम्भिकेसमुत्पात और उपपादको प्राप्त स्त्रीवेदी जीव तीन छोटीके असंख्यातवें  
भागमें और अनुप्यभोक व तिर्यग्भोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं । यहाँ मारणाम्भिक  
और उपपाद सभोंका विन्यास आमकर करना चाहिये । इसी प्रकार पुरुषवेदियोंका  
क्षेत्र भी कहना चाहिये । विशेष इतना है कि पुरुषवेदियोंमें तीजससमुत्पात और  
माहारकसमुत्पात पद भी हैं । धम पदोंमें वर्तमान पुरुषवेदी जीव चार छोटीके  
असंख्यातवें भागमें और माणुसक्षेत्रके संख्यातवें भागमें रहते हैं, ऐसा कहना चाहिये ।

णवुंसयवेदा सत्याणेण समुग्धादेण उववादेण केवढिस्वेत्ते ?

॥ ७१ ॥

सुगममेद ।

सन्वलोए ॥ ७२ ॥

एदस्तत्था बुन्धे । त अहा— सत्वाण-भेषज-कसाय मारुषंतिय उववाद्महा सम्बलोए । इदो ? आर्णतियादो । विहारवदिसत्पाम वेउभियससमुग्धादगदा तिर्यं लोगाणमसखेज्जदिमागे, तिरियसोगस्स संखेज्जदिमागे, अहुण्णद्वादो असंखेज्जगुणे । पवरी वेउभियससमुग्धादगदा तिरियसोमस्य असंखेज्जदिमागे । इदा ? तस रासिग्गाहपादो ।

अवगदवेदा सत्याणेण केवढिस्वेत्ते ? ॥ ७३ ॥

सुगम ।

लोगस्स असखेज्जदिमागे ॥ ७४ ॥

एदस्स अरथो बुन्धे— बहुण्ण लोगाणमसखेज्जदिमागे, माणुसखेचस्स

नणुमकवेदी जीव स्वस्थान, समुत्पात और उपपादमे क्लिने क्षेत्रमें रहत हैं ?

॥ ७१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

नणुमकवेदी जीव उक्त पदोंसे सर्व लोकमें रहत हैं ॥ ७२ ॥

इसका अर्थ कहते हैं । यह इस प्रकार है— स्वस्थान केदनासमुत्पात कपाय समुत्पात मारुणाग्निकसमुत्पात और उपपातको प्राप्त नपुंसकवेदी जीव सर्व लोकमें रहते हैं क्योंकि वे अनन्त हैं । विहारवत्स्वस्थान और वैदिकपिकसमुत्पातको प्राप्त उक्त जीव तीन लोकोंके असम्प्रातय भागमें तिर्यग्लोकके सप्त्यातयें भागमें और अर्द्धा जीपसे अर्धम्प्रातयगुणे क्षत्रमें रहते हैं । चिदाय इतना है कि वैदिकपिकसमुत्पातको प्राप्त जीव तिर्यग्लोकके अर्धम्प्रातयें भागमें रहते हैं क्योंकि यहाँ बसराशिका प्रथम है ।

अपगतवेदी जीव स्वस्थानसे क्लिने क्षेत्रमें रहते हैं ? ॥ ७३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अपगतवेदी जीव लोकक अमम्प्रातयें भागमें रहते हैं ॥ ७४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— अपगतवेदी जीव चार लोकोंके अर्धम्प्रातयें भागमें

सखेन्द्रदिमागे । इन्द्रा ? सखेन्द्रुवसामग-खरगश्रीवगगहपादो ।

समुग्घादेण केवडिखेत्ते ? ॥ ७५ ॥

सुगम ।

लोगस्स असखेज्जदिमागे अमखेज्जेसु वा मागेसु सव्वलोगे  
वा ॥ ७६ ॥

मारणतियसमुग्घादगदा उवसामगा चदुण्हं लोगाणमसखेज्जदिमागे, अहुइजाद्दा  
अमखेज्जगुणे । एव दंढगदा वि । कुराडगदा वि एव चेव । गवरि तिरियछागस्स  
सखेन्द्रदिमागे चि वत्तम्भ । पदरगदा लोगस्स असखेज्जेसु मागेसु । इन्द्रा ? वादवलएसु  
श्रीवपदेसामावादो । लोगपूरगे सम्भलोगे, श्रीवपदेमेहि अपोहुइल्लोगपदेसामावादा ।

उवचाद णत्थि ॥ ७७ ॥

तत्थुप्यन्त्रमाणश्रीवामावादो ।

श्रीर मानुपक्षेत्रक सख्यातवें मागमें रहते हैं क्योंकि यहां सत्यान उपशामक श्रीर  
हपक श्रीबोंका प्रहण है ।

अपगतवेदी श्रीव समुत्पातकी अपेक्षा कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? ॥ ७५ ॥

एव एव सुगम है ।

अपगतवेदी श्रीव समुत्पातकी अपेक्षा छोकके असख्यातवें मागमें, अथवा  
असख्यात बहुमागमें, अथवा सर्व छोरुमें रहते हैं ॥ ७६ ॥

मारणातिकसमुत्पातको प्राप्त उपशामक श्रीव चार छोकोंक असख्यातवें  
मागमें श्रीर अहारी श्रीपसे असख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं । इसी प्रकार दण्डसमुत्पातको  
प्राप्त श्रीव भी चार छोकोंक असख्यातवें मागमें श्रीर अहारी श्रीपसे असख्यातगुणे क्षेत्रमें  
रहते हैं । कपाटसमुत्पातको प्राप्त श्रीबोंका क्षेत्र भी इसी प्रकार ही है । विशेष इतना है  
कि तिर्यग्योक्तके संख्यातवें मागमें रहते हैं ऐसा कहना चाहिये । प्रतरसमुत्पातको प्राप्त  
वे ही श्रीव छोकके असख्यात बहुमागमें रहते हैं, क्योंकि इस व्यवस्थामें बातबस्योमें  
श्रीवप्रदशोंका अभाव रहता है । छोकपूरणसमुत्पातका प्राप्त श्रीव सर्वे छोकमें रहते हैं  
क्योंकि श्रीवप्रदशोंसे अभावग्रह्य छोकप्रदशोंका इस व्यवस्थामें अभाव रहता है ।

अपगतवेदी श्रीबोंमें तपपाद एव नहीं होता ॥ ७७ ॥

क्योंकि अपगतवेदियामें उत्पन्न शमिबाळ श्रीबोंका अभाव है ।

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई  
गर्वुसयवेदमंगो ॥ ७८ ॥

इहा ! सत्यान-वेयण-कमाय-मारणतिय-उबबादेहि सक्कसोगत्तुवाणज; बठम्भिया  
हारपदेहि तिण्ह छायाप्यमसंखेज्जदिमागचयेण, तिरियसोगस्स संखेज्जदिगचयेण,  
अहुत्तज्जादो असंखे-ज्जगुणचयेण दाण्ह भेदाभावादो । एवरि बठम्भियस्स तिरियलागस्स  
सखे-ज्जदिमागचयेण भेदो अरिय, समत्थ ए पहारां । एवरि एत्थ वेमाहारपहाणि  
अरिय, गणुत्तए एरिय अप्पसरत्थचयेण ।

अकसाई अवगदवेदमंगो ॥ ७९ ॥

सुममर्द ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणी सुदअण्णाणी णनुसयवेदमंगो  
॥ ८० ॥

एवरि वेठम्भियस्स तिरियसोगस्स सखेज्जदिमागचयेण भेदो अरिय, समत्थ

कपायमागजानुमार क्रोधरूपायी, मानरूपायी, मायारूपायी और लोभरूपायी  
जीर्षोका क्षेत्र नर्पुंसकवेदियोंके समान है ॥ ७८ ॥

क्योंकि स्वस्यान केरबासमुदात्त कपायसमुदात्त मारणाग्निकसमुदात्त और  
उपपाद पर्योकी अपेक्षा सर्व काकर्म बहल्यानसे तथा वैदिकियक और आहारक समुदात्तकी  
अपेक्षा तीव्र छोटोके असंख्यातमें व तिर्यग्भोक्के संख्यातमें मागतसे एवं अहार्  
हीपकी अपेक्षा संख्यातगुणत्वसे उक्त कृतों कपायवाके जीर्षो व नर्पुंसकवेदियोंके कोई  
भेद नहीं है । विशेष इतना है कि वैदिकियकसमुदात्तकी अपेक्षा तिर्यग्भोक्के संख्यातमें  
मागतसे भेद है किन्तु वह यहाँ मघात्र नहीं है । वृत्तरी विशेषता यह है कि यहाँ  
तीव्रससमुदात्त और आहारकसमुदात्त पर हैं किन्तु मगशस्त होनेसे नर्पुंसकवेदियोंमें ये  
नहीं होते हैं ।

अक्रपायी जीर्षोका क्षेत्र अपगतवेदियोंके समान है ॥ ७९ ॥

एह एव सुममर्द ।

ज्ञानमार्ग्यानुसार मदिमज्जानी और सुदमज्जानियोंका क्षेत्र नर्पुंसकवेदियोंके  
समान है ॥ ८० ॥

विशेष इतना है कि वैदिकियकसमुदात्तकी अपेक्षा तिर्यग्भोक्के संख्यातमें

अपहाण ।

विभगणाणि मणपञ्जवणाणी सत्याणेण समुग्घादेण केवडि  
खेत्ते ? ८१ ॥

सुगम ।

लोगस्स असखेज्जदिभागे ॥ ८२ ॥

एत्थ ताव निर्मगणाणीत्थ पुञ्चदे— सत्याणसत्याण विहारवादिमत्याण-भेदण  
कमाप-भेदाभियपसमुग्घादगदा तिण्हं सोगाणमसखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स सखज्जदि  
भागे, अट्टाइज्जवादे असखेज्जगमे । कुदो ? पहाणीकत्रदेवपञ्चरासिचादे । मारणविय  
समुग्घादगदा पर्वं ख । गवरि तिरियलागादो असखेज्जगुणे चि वत्तम्भं ।

मणपञ्चवणाणीत्थ पुञ्चदे— सत्याणसत्याण-विहारवादिमत्याण-भेदण कमाप  
समुग्घादगदा चट्टण्हं सोगाणमसखेज्जदिभागे, अट्टाइज्जस्स संखज्जदिभागे । मारणविय  
समुग्घादगदा चट्टण्हं सोगाणमसखेज्जदिभागे, अट्टाइज्जवादा असखज्जगुण । सेसं सुगमं ।

माणत्स दानोंमें भेद है परन्तु वह यहाँ व्यधान है ।

विभगणानी और मन-पर्ययजानी जीव स्वस्थान व समुदातस कितने ध्यममें  
रहते हैं ? ॥ ८१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

विभगणानी और मन-पर्ययजानी जीव उक्त पदोंसे साकक असख्यातर्षे भागमें  
रहते हैं ॥ ८२ ॥

यहाँ पहले विभगणानियोंका क्षेत्र कहत हैं— स्वस्थानस्वस्थान विहार  
वत्सस्थान यदनासमुदात कयापसमुदात और वैकियिकसमुदातके प्राप्त विभग  
जानी जीव तीन साकोंके असख्यातय भागमें तियसोकेके संप्यातयें भागमें और  
अद्वारं द्वीपस असख्यातगुण क्षेत्रमें रहत हैं क्योंकि यहाँ इय पयात्त राति प्रधात है ।  
मारणात्तिकसमुदातके प्राप्त विभगजानियोंके क्षेत्रका प्रकूपम भी इसी प्रकार है ।  
विद्यय इतना है कि ये तियसोकेके असख्यातगुण क्षेत्रमें रहत हैं वेसा कहना चाहिय ।

मन-पर्ययजानियोंका क्षेत्र कहते हैं— स्वस्थानस्वस्थान विहारवत्सस्थान  
यदनासमुदात और कयापसमुदातका प्राप्त मन-पर्ययजानी जीव चार साकोंके  
असख्यातयें भागमें और अद्वारं द्वीपके असख्यातयें भागमें रहत हैं । मारणात्तिक  
समुदात प्राप्त व ही जीव चार साकोंके असख्यातयें भागमें और अद्वारं द्वीपस  
असख्यातगुणे क्षेत्रमें रहत हैं । यह सूत्राथ सुगम है ।

उवाद् णत्थि ॥ ८३ ॥

येसि दोर्णं वाणाणमपत्रचञ्जल समवामावादा ।

आमिणिवोहिय-सुद-ओधिणाणी सत्थाणेण समुग्घादेण उवादेण  
केवडिस्सेत्ते ? ॥ ८४ ॥

सुगम ।

लोगस्स असंखेज्जदिमागे ॥ ८५ ॥

एदस्म अत्थो बुद्धे । त अदा-सत्वाणसत्थाण विहारवदिसत्थान-वेयण कप्पाय-  
वेठणिय मारणत्थिय उववादादा एदे चदुद्ध लोगाणमसंखेज्जदिमागे, अहुत्तज्जादा  
असंखेज्जगुणे । एव तेजाहारपदेसु वि । अवरि माणुमयेत्तस सखज्जदिमागे ।

केवलणाणी सत्थाणेण केवडिस्सेत्ते ? ॥ ८६ ॥

सुमम ।

विमंगहानी और मनापपपहानी जीवोंके उपपाद् पद नहीं होता ॥ ८३ ॥

क्योंकि अपर्याप्तकारणमें इन दोनों ज्ञानोंकी संभावना नहीं है ।

आमिनिबोधिकज्ञानी, सुतज्ञानी और अविज्ञानी जीव स्वस्थान, समुद्रपात  
और उपपादसे कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? ॥ ८४ ॥

एह सूत्र सुगम है ।

उपर्युक्त जीव उक्त पदोंसे लोकके असंख्यातमें मागमें रहते हैं ॥ ८५ ॥

एह सूत्रका अर्थ कहने हैं । वह इस प्रकार है— स्वस्थानस्वस्थान विहार  
वास्वस्थान भेदनासमुदाय कपावसमुदाय वैकल्पिकसमुदाय मारणाण्णिकसमुदाय  
और उपपादको प्राप्त ये उपर्युक्त जीव चार लोकोंके असंख्यातमें मागमें और अज्ञान जीवसे  
असंख्यातगुणे भेदमें रहते हैं । इसी प्रकार सैजससमुद्रपात और आहारकसमुद्रपात  
पदोंमें आनना चाहिये । विशेष इतना है कि इन पदोंकी अपेक्षा अनुप्यसवके संख्यातमें  
मागमें रहते हैं ।

केवलज्ञानी जीव स्वस्थानकी अपेक्षा कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? ॥ ८६ ॥

एह सूत्र सुगम है ।

लोगस्त असंखेज्जदिभागे ॥ ८७ ॥

सत्पाण-बिहारबदिमत्पाणेदि चदुण्ह सोगाणमसखेज्जदिभाग माणुसखेचस्त  
सखेज्जदिभाग च मानुणुवरि पुसणस्साभावादो ।

समुग्घादेण केवडिस्सेत्ते ? ॥ ८८ ॥

सुगमं ।

लोगस्त असंखेज्जदिभागे असंखेज्जेसु वा भागेषु सव्वलोगे  
वा ॥ ८९ ॥

दंबगदा चदुण्ह लागणमसखेज्जदिभागे, अणुधन्धाने असखेज्जगुमे । क्वाह  
गदा तिण्ह सोगाणमसंखेज्जदिभागे, विरियसोगस्त संखेज्जदिभागे, अणुधन्धानो  
असंखेज्जगुमे । पवरगदा सोगस्त असंखेज्जेसु भागेषु । सोगपुरणे सम्बलोगे ।

उववादिं णत्थि ॥ ९० ॥

अपज्जसकाले केवल्लणामाभावादो ।

केवल्लणानी जीव स्वस्थानसे लोकक असंख्यातयें मागमें रहते हैं ॥ ८७ ॥

स्वस्थान भीर बिहारप्रत्वस्थानकी अपेक्षा चार लोकोंके असंख्यातयें माग  
भीर मानुषक्षेत्रके संख्यातयें मागको छोड़कर ऊपर पर्यंतका भ्रमाव है ।

समुद्रपातकी अपेक्षा केवल्लणानी जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? ॥ ८८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

समुद्रपातकी अपेक्षा केवल्लणानी जीव लोकक असंख्यातयें मागमें, अथवा  
असंख्यात बहुभागोंमें, अथवा सब लोकमें रहते हैं ? ॥ ८९ ॥

इन्द्रसमुद्रपात कथमदानी चार लोकोंके असंख्यातयें मागमें भीर अकारक्षीपसे  
असंख्यातगुण क्षेत्रमें रहत हैं । क्वाटमसमुद्रपातगत केवल्लणानी तीन लोकोंके असंख्यातयें  
भागमें तिर्यग्माकक संख्यातयें मागमें भीर अकारक्षीपस असंख्यातगुण क्षेत्रमें रहते हैं ।  
मत्तरमसमुद्रपातगत केवल्लणानी लोकके असंख्यात बहुभागोंमें रहत हैं । लोकपुरव  
समुद्रपातकी अपेक्षा सब लोकमें रहत हैं ।

केवल्लणानियोंके उपवाद पद नहीं हावा ॥ ९० ॥

क्योंकि अपर्यान्तकालमें केवल्लणामका भ्रमाव है ।



संजमाणुवादेण सजदा जहाक्खादविहारसुद्धिसजदा अकसाई  
भंगो ॥ ९१ ॥

एसो दम्बद्वियणिरसो । पन्डबद्वियणए अवसंविज्जमाने विसेसो अतिव चं  
वचइस्सामो । तं बहा— सत्थाण विहारवदिसत्थाण-वेषण-कमाय-वेठम्भिय-तेजाहार  
समुग्घादगदा सजदा चदुद्ध लोगाणमसंखेज्जदिमाणे माणुसखेचस्स सखे-ज्जदिमाणे ।  
मारयंठियसमुग्घादगदा चदुद्ध लोगाणमसंखेज्जदिमाणे, माणुसखेचदो असंखेज्जगुण ।  
केवलिसमुग्घादगदा (सागस्स अमंखेज्जदिमाणे) अमखेज्जेसु वा मागेसु सव्वसागे वा ।  
एवं जहाक्खादसुद्धिसजदत्तां वचम् । अरिरे तेजाहारपदाणि पतिय ।

सामाहयच्छेदोवट्टावणसुद्धिसजदा परिहारसुद्धिसजदा सुहुम  
सांपराहयसुद्धिसजदा सजदासजदा मणपज्जवणाणिभंगो ॥ ९२ ॥

एसो दम्बद्वियणिरसो । पन्डबद्वियणए अवसंविज्जमाने पुण अतिय विसेसो ।  
त बहा— सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेषण-कमाय-वेठम्भिय-तेजाहारपदेहि सामाहय

संपममार्गानुसार संपत और यथाक्यातविहारसुद्धिसंपत बीबोंका क्षेत्र अकपायी  
बीबोंके समान है ? ॥ ९१ ॥

यह कथन द्रव्यार्थिक नपकी अपेक्षासे है । पर्यायार्थिक नपका अर्थजन्य  
करणपर जो विशेषता है उसे कहते हैं । यह इस प्रकार है— स्वस्थान विहारवत्स्वस्थान  
वेदमासमुद्घात कपायसमुद्घात वैद्विबिकसमुद्घात तैजससमुद्घात और आहारक  
समुद्घातको प्राप्त सबत जीव चार लोकोंके अर्थक्यातवे मागमें और मानुष  
क्षेत्रके अर्थक्यातवे मागमें रहते हैं । आरणातिकसमुद्घातको प्राप्त एक जीव चार  
लोकोंके अर्थक्यातवे मागमें और मानुषक्षेत्रके अर्थक्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं । केवलिक  
समुद्घातको प्राप्त वे ही सबत जीव (लोकके अर्थक्यातवे मागमें) नपका अर्थक्यात  
बहुमागमें नपका सर्व लोकमें रहते हैं । इसी प्रकार यथाक्यातसुद्धिसंबत बीबोंका  
क्षेत्र भी कहना चाहिये । विशेष इतना है कि इनके तैजस और आहार पद नहीं होते ।

समायिक-छेदोपस्थापनासुद्धिसंपत, परिहारसुद्धिसंपत, सुहमसाम्परायिकसुद्धिसंपत  
और संपतासंपत बीबोंका क्षेत्र मनापयमज्ञानियोंके समान है ॥ ९२ ॥

यह कथन द्रव्यार्थिक नपकी अपेक्षासे है । पर्यायार्थिक नपका अर्थजन्य  
करण पर विशेषता है । यह इस प्रकार है— स्वस्थानस्वस्थान विहारवत्स्वस्थान वेदमा  
समुद्घात कपायसमुद्घात वैद्विबिकसमुद्घात तैजससमुद्घात और आहारकसमुद्घात



एवमिव विवरणं कस्मान्मो । तं ब्रह्म— सत्याज-विहारवदिसत्याज-वेद्य-कसाव  
 वेदभियपदेहि अक्षुब्धसणी तिर्णं सोगाजमसंख्य-अदिभागे, तिरियसोगसम सखेज्जदिभागे  
 अक्षुब्धसणी असंख्येज्जगुणे । वेदाहारपदेहि अक्षुब्धं लोगाजमसखेज्जदिभागे, मासुसखेज्ज  
 सखेज्जदिभागे । मारर्णतियपदेहि तिर्णं सोगाजमसंख्येज्जदिभागे, पर-तिरियसोगेहिदो  
 असंख्येज्जगुणे अन्तंति चि सवधो क्वापयो ।

उवाच सिया अत्यि, सिया णत्यि । लदिं पडुच्च अत्यि,  
 णिव्वत्तिं पडुच्च णत्यि । जदि लदिं पडुच्च अत्यि, केवडिस्से ?  
 ॥ ९६ ॥

सुगमं ।

लोगास असखेज्जदिभागे ॥ ९७ ॥

एवमिव अत्यो बुद्धे । तिर्णं सोगाजमसखेज्जदिभागे, पर-तिरियसोगेहिदो  
 असंख्येज्जगुणे ।

अक्षुब्धसणी असंख्येज्जदिभागे ॥ ९८ ॥

इस सूत्रके अर्थका विवरण करत हैं । यह इस प्रकार है— स्वस्यान विहार  
 कस्वस्यान वेदानासमुद्घात और वैदिकिकसमुद्घात पर्योकी अपेक्षा अक्षुब्धसणी जीव  
 तीन लोकोंके असंख्यातके भागमें तिर्यग्भोक्त संख्यातके भागमें और अहार्णोपसे  
 असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं । तत्रससमुद्घात और आहारकसमुद्घात पर्योकी अपेक्षा  
 चार लोकोंके असंख्यातके भागमें और मासुसखेज्जके संख्यातके भागमें रहत हैं ।  
 मारणातिकसमुद्घातकी अपेक्षा तीन लोकोंके असंख्यातके भागमें तथा मनुष्यलोक  
 व तिर्यग्भोक्तके असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं इस प्रकार समझना चाहिये ।

अक्षुब्धसणी जीवोंके उपपाद पद कर्मणित् होता है, और कर्मणित् नहीं मी होता  
 है । उभिककी अपेक्षा उपपाद पद होता है, किन्तु निष्कर्मिकी अपेक्षा नहीं होता । यदि  
 सन्धिकी अपेक्षा उपपाद पद होता है तो उसकी अपेक्षा के कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? ॥९६॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपपादकी अपेक्षा अक्षुब्धसणी जीव लोकके असंख्यातके भागमें रहते हैं ॥९७॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— उपपादकी अपेक्षा अक्षुब्धसणी जीव तीन लोकोंके  
 असंख्यातके भागमें और मनुष्यलोक व तिर्यग्भोक्तके असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं ।

अक्षुब्धसणीनियोंका क्षेत्र अस्यत जीवोंके समान है ॥ ९८ ॥

ओधिदसणी ओधिणाणिभगो ॥ ९९ ॥

केवलदसणी केवलणाणिभगो ॥ १०० ॥

एवमि तिग्नि वि सुत्तानि सुगमाणि ।

लेसाणुवादेण किण्हलेस्सिया णीललेस्सिया क्खालेस्सिया

असजदमंगो ॥ १०१ ॥

कुदा ? सत्याणसत्याण-बदन कसाय-मारणंतिय-उववादेहि सम्बलोग अरुहानेण;  
बिहारबदिसत्याण-वेठम्बियपदहि तिण्हं लेसाणमसखेन्नदिमागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदि  
माये, अरुहवज्जदो असखेन्नगुणे अरुहानेण च साधम्मियादो । अरि वेठम्बिय  
तिरियसागस्स असखेन्नदिमागे । तमेत्थ अप्यहार्यं ।

तेउलेस्सिय पम्मलेस्सिया सत्याणेण समुग्घादेण उववादेण

केवडिस्सेत्ते ? ॥ १०२ ॥

सुगमं ।

अधिवर्धनियोक्य क्षेत्र अधिज्ञानियोक्ये समान है ॥ ९९ ॥

केवलवर्धनियोक्य क्षेत्र केवलज्ञानियोक्ये समान है ॥ १०० ॥

ये तीनों ही सूत्र सुगम हैं ।

लेसामार्गानुसार कृष्णलेस्यावाले, नीललेस्यावाले और क्खालेस्यावाले  
जीवोंका क्षेत्र असपत्तोक्ये समान है ॥ १०१ ॥

क्योंकि स्वस्थानस्वस्थान वेदनाममुद्रात कपायसमुद्रात मारणास्तिकसमुद्रात  
और उपपाद, इन पक्षोंकी अपेक्षा सब लोकमें अस्वस्थानसे, तथा बिहारबदस्वस्थान और  
वैकिपिकसमुद्रातकी अपेक्षा तीन लोकोंके असंख्यातमें मागमें तिर्यग्लोकके संख्यातमें  
मागमें एवं अज्ञाई द्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें अस्वस्थानसे उपर्युक्त लेस्यावाले जीवोंकी  
असंयत जीवोंसे नमावता है । विशेष इतना है कि वैकिपिकसमुद्रातकी अपेक्षा उक्त जीव  
तिर्यग्लोकके असंख्यातमें मागमें रहते हैं । किन्तु वह परा अस्थान है ।

लेसालेस्यावाले और पक्षलेस्यावाले जीव स्वस्थान, समुद्रात और उपपादसे  
कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? ॥ १०२ ॥

एव एव सुगम है ।

## लोगस्स असस्सेज्जदिभागे ॥ १०३ ॥

एइस्स देसामासियमुत्तस्स अत्थो बुच्चदे । त अहा— सत्थाणसत्थाण-विहार  
 वदिसत्थाण-वेयथ-कामाय-वेउभियपदेहि तेउत्तेस्सिया तिण्हं सागाणमसस्से-अदिभागे,  
 तिरियलोगस्स सग्गेअदिभागे, अहाइ-जादो अमत्तेज्जग्गुणे । इदा ? पहाणीकयदेव  
 रासिजादो । माएणतियपदेण वि एवै वेव । पवरि तिरियलोगादो असस्सेज्जग्गुणे वि  
 वत्तम् । एव वेउ उववादेण वि । एत्थ ओवहुमे ठविअमाणे सोधम्मरासिं ठविय  
 अप्पणो उवक्कमणकालेय पलिहावमस्स अमत्तेज्जदिभागेय माग हिदे एगममएव  
 तत्तुप्प-अमायजीउपमाय होदि । पुणो पमापत्तवे उप्पन्नमायजीवानं पमाणागमयहुम  
 बरेगो पलिदोवमस्स असस्सेज्जदिभागा मागहारो उवेदव्वा । एव ठविदे दिवहुवन्हुत्रायामेव  
 उववाइगद्वीवपमार्थं हादि । पुणो संखज्जपदग्गुत्तमेत्तरन्हुदि गुण्णिदे उववादत्तं  
 होदि । एत्थ ओवहुमं जायिय कायम् ।

सत्थाणमत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वयण-कामायपदेहि पम्मसस्मिया तिण्हं सोगाय

उक्त दो छेम्मावासे जीव उक्त पदोंसे अंकके असम्पातके भागमें रहते हैं  
 ॥ १०३ ॥

इस देवामहीक सूचका मर्थ करते हैं । यह इस प्रकार है— स्वरस्थानस्वरस्थान  
 विहारवदिसत्थाण वचनासमुद्घात कपायसमुद्घात और वैत्रियिकसमुद्घात पदोंसे  
 तत्राकेस्यावासे जीव तीन काकोंके असंख्यातके भागमें तिसंबंधोके संख्यातके भागमें  
 और अहाइ जीपसे असंख्यातगुणे शेषमें रहते हैं क्योंकि वहां इवत्ताशिकी प्रभावता  
 है । मारणान्तिकसमुद्घात पक्षी अपेक्षा भी इसी प्रकार ही शेष है । विद्येय इतना है कि  
 तिसंबंधोके असंख्यातगुणे शेषमें रहते हैं एसा कहना चाहिये । इसी प्रकार उपपाद पक्षी  
 अपेक्षा भी शेषका निकपय जानना चाहिये । यहां अपवर्तनके स्थापित करते समय  
 सौघर्मदाशिकी स्थापित कर अपने उपक्रमकाकारूप पस्यापनके असंख्यातके भागसे  
 भाग देनेपर एक समयमें वहां उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण होता है । पुनः प्रमा  
 पदके उत्पन्न होनेवाले जीवोंके प्रमाणसे परिज्ञानार्थ एक मन्त्र पक्ष्योपनके असंख्यातके  
 भागको मायहाररूपसे स्थापित करना चाहिये । इस प्रकार एक मागहारके स्थापित  
 करनेपर डेढ़ राजुप्रमाण भावामसे उपपादको प्राप्त जीवोंका प्रमाण होता है । पुनः उसे  
 संख्यात प्रतर्गुहमात्र राजुमोंसे गुणित करनेपर उपपादशेषका प्रमाण होता है । यहां  
 अपवर्तना जानकर करना चाहिये ।

स्वरथावस्वरस्थान विहारवदिसत्थाण वचनासमुद्घात और कपायसमुद्घात

असस्त्रेन्द्रदिभागे, तिरियलोगस्त सस्त्रेन्द्रदिभागे, अङ्गाङ्गदो असस्त्रेन्द्रगुणे । कुदो ?  
 महाणीकदतिरिस्त्ररासीदो । येतन्त्रिय मारणविय उववादेहि बहुन्हा लोगाणमसस्त्रेन्द्रदि  
 भागे अङ्गाङ्गदो असस्त्रेन्द्रगुणे । कुदो ? सनक्कुमार माहिंदसीपानं पाहणियपादो ।

सुक्कलेस्सिया सत्याणेण उववादेण केवडिस्सेत्ते ? ॥ १०४ ॥

सुगम ।

लोगस्त असस्त्रेन्द्रदिभागे ॥ १०५ ॥

एदस्स अरथा पुच्चदे— सत्याणसत्थाम विहारत्रदिमत्थान उववादेहि बहुन्हा  
 लोगाणमसस्त्रेन्द्रदिभागे, अङ्गाङ्गदो असस्त्रेन्द्रगुणे । एत्थ उववादेसीवा संस्त्रेन्द्रा  
 पेव । कुदो ? मणुस्सेहिदो पेव आगमपादा ।

समुग्घादेण लोगस्त असस्त्रेन्द्रदिभागे असस्त्रेज्जेसु वा भागेसु  
 सन्वलोगे वा ॥ १०६ ॥

पहोस पद्यअपावासे जीव तीन ओकोके असंस्पातवें भागमें तिर्यंगकोके  
 संस्पातवें भागमें और अङ्गार द्वीपसे असंस्पातगुणे क्षत्रमें रहते हैं क्योंकि यहाँ  
 तिर्यंगपाशि प्रथम है । वैदिकविक्रसमुद्घात मारणास्तिकसमुद्घात और उपपाद्  
 पहोकी अपेक्षा चार ओकोके असंस्पातवें भागमें और अङ्गार द्वीपसे असंस्पातगुणे  
 क्षत्रमें रहते हैं क्योंकि, यहाँ सनक्कुमार माहेन्द्र कश्यके जीवोंकी प्रथमता है ।

सुक्कलेत्रपावासे जीव स्वस्थान और उपपाद् पहोसे कितने क्षेत्रमें रहते हैं ?  
 ॥ १०४ ॥

एह मूत्र सुगम है ।

सुक्कलेत्रपावासे जीव उक्त पदोंसे साकके असंस्पातवें भागमें रहते हैं ॥ १०५ ॥

इसका अर्थ कहते हैं— स्वस्थानस्वरूपान विहारवत्स्वस्थान और उपपाद्  
 पहोसे सुक्कलेत्रपावासे जीव चार ओकोके असंस्पातवें भागमें और अङ्गार द्वीपसे  
 असंस्पातगुणे क्षत्रमें रहते हैं । यहाँ उपपाद्पद्गत जीव संस्पात ही हैं क्योंकि  
 मनुष्यामेंसे ही यहाँ आपमन है ।

सुक्कलेत्रपावासे जीव समुद्घातकी अपेक्षा सोकके असंस्पातवें भागमें, अथवा  
 असंस्पात बहुभागमें अथवा सर्व सोकमें रहते हैं ॥ १०६ ॥

## लोगस्त असखेज्जदिभागे ॥ १०३ ॥

एदस्स देसामासियसुत्तस्स अत्था बुच्चदे । तं जहा— सत्थाणसत्थाण-विहार  
 वदिसत्थाण-वेपथ-कम्माप-वेठम्भियपदेहि तेठ्ठेस्सिया तिर्णं लोगाणमसखेज्जदिभागे,  
 तिरियलोगस्स सखेज्जदिभागे, अट्टाहज्जादो असखेज्जगुणे । इदो ? पहाणीकपदेव  
 रासिचादो । मत्तुर्णतिपपदेण वि एवं च । वधरि तिरियलोगादो असखेज्जगुणे वि  
 वत्तम्भं । एवं वेव उववादेव वि । एत्थ ओवहुणे ठविज्जमाण सोधम्मरासिं ठविय  
 अप्पणो उववकम्मणकम्मण पत्तिदावमस्स असखेज्जदिभागेण भागे हिदे एगममएव  
 तत्तुप्पज्जमाणजीवपमान होदि । पुणो पमापरवडे उप्पज्जमाणजीवानं पमाणागमवाहुम  
 वेरगो पत्तिदावमस्स असखेज्जदिभागो मागहारो उवेदव्वो । एव ठविदे दिवहुवरज्जुआयामेव  
 उववादगदग्गीवपमानं होदि । पुणो संखेज्जपदंगुसमत्तरज्जुहि गुणिदे उववादखेत्तं  
 होदि । एत्थ ओवहुण वाभिय अप्पम्भं ।

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वपथ-कम्मापपदेहि पम्मत्तेस्सिया तिर्णं लोगाणं

उक्त वा सेवपावाले जीव उक्त पदोंमें लोकोके असम्पातर्षे भागमें रहते हैं  
 ॥ १०३ ॥

इस देशामर्शक सूत्रका अर्थ कहते हैं । यह इस प्रकार है— स्वस्थानस्वस्थान  
 विहारवत्स्वस्थान वेदनासमुत्पात कपायसमुत्पात और वैदियिकसमुत्पात पदोंसे  
 तेजोबेधनाके जीव तीन लोकोंके असंख्यातर्षे भागमें तिर्यग्लोकके संख्यातर्षे भागमें  
 और मर्दाई द्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं क्योंकि यहाँ दक्षपश्चिमी प्रभावता  
 है । मारुतास्तिकसमुत्पात पदकी अपेक्षा मी इसी प्रकार ही क्षेत्र है । विशेष इतना है कि  
 तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं ऐसा कहना चाहिये । इसी प्रकार उपपाद पदकी  
 अपेक्षा मी क्षेत्रका निरूपण जानना चाहिये । यहाँ अपकर्तनके स्थापित करते समय  
 सौधर्मपश्चिमी स्थापित कर समय उपकमणकाछरूप पदोपमके असंख्यातर्षे भागसे  
 भाग क्षेत्रपर एक समयमें यहाँ उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण होता है । पुनः प्रमा  
 पदकमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंके प्रमाणके परिहानार्थ एक समय पदोपमके असंख्यातर्षे  
 भागको भाषाहाररूपसे स्थापित करना चाहिये । इस प्रकार उक्त भागहारके स्थापित  
 करनेपर वेद वाहुप्रमाण भाषामसे उपपादको प्राप्त जीवोंका प्रमाण होता है । पुनः उसे  
 संख्यात प्रवर्तगुणमात्र वाहुमोंसे गुणित करनेपर उपपादक्षेत्रका प्रमाण होता है । यहाँ  
 अपकर्तना जानकर करना चाहिये ।

स्वस्थानस्वस्थान विहारवत्स्वस्थान वेदनासमुत्पात और कपायसमुत्पात

तस्यकारणसु अमपसिद्धिषा पल्लिद्रोवमस्म अस्युज्जदिभागमथा । कषमेद णम्पदे ?  
पल्लिद्रोवमस्त अस्युज्जदिभागमचतमथादियबंधगहिता तमधुनर्षभगाणमस्येज्जगुण  
हीणचप्पहाणुवपत्तीना । मवसिद्धियाणमोषमगा ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठी सइयमम्मादिट्ठी सत्याणेण उववादेण  
केवडिस्सेत्ते ? ॥ १०९ ॥

सुगम ।

लोगस्त अमस्सेज्जदिभागे ॥ ११० ॥

एदस्स अग्या पुत्थदे । त जहा— सत्याणसंधान विहारवदिसत्थान उपवादेण  
चट्ठं सागालमस्येज्जदिभाग, अट्ठारज्जादो अमस्येज्जगुणे । कुदो ? पल्लिद्रोवमस्त  
अस्येज्जदिभागमेत्तरासिच्चादा ।

बहुत्पानिवोग्गहारके सुत्तस ज्ञाना ज्ञाता हे ।

अस्यकथिकोमे अमपसिद्धिक जीप पत्त्यापमक असंख्यातपे भागमात्र हे ।

धुक्क— यह कैसे जाना जाता है कि अस्यकथिकोमे अमपसिद्धिक जीप पत्त्यो  
पमके असंख्यातपे भागमात्र ही है ?

समाधान— क्योंकि यदि ऐसा न माना जाय ता पत्त्योपमके असंख्यातपे  
भागमात्र अस्य कथिकोमे अपेक्षा अस्य धुपवत्थट्ठोक असंख्यातगुणहीनता बन नहीं  
सकती ।

अपसिद्धिक भाषोका क्षेत्र भाषक समान है ।

सम्यक्त्वमागणाके अनुसार सम्यग्घटि और धायिकसम्यग्घटि स्वस्मान और  
उपपादकी अपेक्षा कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? ॥ १०९ ॥

यह छह सुगम है ।

सम्यग्घटि और धायिकसम्यग्घटि जीप उक्त पदोंस लोकके असंख्यातपे  
भागमें रहते हैं ॥ ११० ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यह इस प्रकार है— इसस्यामस्यस्थान विहार  
पत्त्यस्थान भीर उपपाद् पत्त्य उक्त जीप पत्त्य लोकके असंख्यातपे भागमें भीर अकार  
हीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं क्योंकि उक्त जीपपत्ति पत्त्योपमके असंख्यातपे  
भागमात्र है ।



एदस्सत्तो बुष्पदे । तं सहा— वेयण-कसाय-वठभिय-वुंड-मारणंतिपपदेहि  
 चदुर्णं सोयावमसंखेज्जदिभागे, अद्वाण्जादो असखेज्जगुणे । एवं तेसाहारपदाय पि ।  
 वरिणि मानुसखेत्तस संखेज्जदिभागे पि वत्तर्म्म । सेसकेवल्लिपवाणि सुगमायि ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिया अभवसिद्धिया सत्याणेण समुग्घादेण  
 उववादेण केवडिखेत्ते ? ॥ १०७ ॥

सुगमं ।

सञ्चलोगे ॥ १०८ ॥

एदस्स अरथो बुष्पदे— सत्याणसत्याण-वेयण-कसाय मारणतिय उववादेहि  
 भवसिद्धिया सञ्चलोगे । कुदो ? आणंतिपायो । विहारणदिमत्याण-वेठभियस्सेहि चदुर्णं  
 सोयावमसंखे ज्जदिभाग, अद्वाण्जादो असखेज्जगुणे । कुदो ? 'सम्पत्तोवा पुववभगो,  
 सादियबंधगा असंखेज्जगुणा, अजादियबंधगा असखेज्जगुणा, अद्वावववया भिससादिया  
 पुवबंधगेणूवसादियबंधगेमेपि ' तसरासिमस्सिद्व्य बुत्तबंधप्पावद्दुगसुत्तादो वण्णदे ।

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यह इस प्रकार है— वेचनासमुद्घात कपायसमुद्घात  
 वैश्विदिकसमुद्घात दृष्टसमुद्घात और मारणात्मिक पर्वोकी अपेक्षा चार  
 ङाकोके असंख्यातमें मागमें और अकार्ण द्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं । इसी  
 प्रकार वैश्वसमुद्घात व आहारकसमुद्घात पर्वोके भी क्षेत्रका निरूपण करना चाहिये ।  
 बिनाय इतना है कि इस पर्वोकी अपेक्षा बल जीव मानुसक्षेत्रके संख्यातमें मागमें रहते  
 हैं ऐसा कहना चाहिये । शेष वैश्विदिकसमुद्घातपद सुगम है ।

मध्यमार्जजाके अनुसार मध्यसिद्धिक और अमध्यसिद्धिक जीव स्वस्थान,  
 सद्घुत्पात और उपपादकी अपेक्षा कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? ॥ १०७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मध्यसिद्धिक व अमध्यसिद्धिक जीव उक्त पर्वोसे सर्व लोकमें रहते हैं ॥ १ ८ ॥

इसका अर्थ कहते हैं— स्वस्थानस्वस्थान वेचनासमुद्घात कपायसमुद्घात  
 मारणात्मिकसमुद्घात और उपपाद पर्वोकी अपेक्षा अमध्यसिद्धिक जीव सर्व लोकमें  
 रहते हैं क्योंकि, वे अमग्न है । विहारवत्स्वस्थान और वैश्विदिकसमुद्घात पर्वोसे चार  
 ङाकोके असंख्यातमें मागमें और अकार्ण द्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं ।

शुद्ध— यह कहाँसे जाना जाता है ?

समाधान— बुद्धवन्धक सचसे श्लोक है सादिवन्धक असंख्यातगुणे है अत्रादि  
 बन्धक असंख्यातगुणे है और अद्वावन्धक बुद्धवन्धकसि रहित सादिवन्धकोके प्रमाणसे  
 विशेष अधिक है इस प्रकार मत्तपशिका आशय कर करे गये बन्धवन्धकी वक्ष्य

## सम्मामिच्छाद्विष्टी मत्याणेण केवढिन्वेत्ते ? ॥ ११४ ॥

सम्मामिच्छाद्विष्टिस्स वेयण-कसाय त्रेठम्बियपदेस्स संतेसु वि समुग्घादस्स अरिषत्त ममभिय सत्थाणपदस्स एकस्स च वेव परूवणादो नज्जदि अथा वेयण-कसाय-त्रेठम्बिय पदानि समुग्घात्पदमिद्दि य गहिदाणि चि । अदि एदमिद्दि गंथे न गहिदाणि तो वि किमिद्दि एत्थ परूवणा कीरदे ? वेसिमेरिसो अहिप्पाओ ण ते तेहि परूवेंति । वेसिं पुण समुग्घात्पदस्सतो वेदणादिपदानि अत्थि ते तेहि परूवण करेंति । अदि एव तो सम्मा मिच्छाद्विष्टिम्हि समुग्घात्पदेण होदम्ब ? य एस दोसा, अत्थ मारणतिपमत्ति चत्थेव तसिमरिषत्तस्स अम्भुवगमादो । किमिद्दमेवविहअग्घवगमो कीरदे ? य, मारणतिपप बिणा वेदणादिखत्थाय पहाणत्ताभाषपदुप्पायणद्द सहाम्भुवगमकरणे दोसामावादो । सेस सुगम ।

सम्पत्तिमध्याद्यदि जीव स्वस्वानकी अपेक्षा कितन क्षेत्रमें रहते हैं ? ॥ ११४ ॥

सम्पत्तिमध्याद्यदिके देवनासमुत्पात कपापसमुत्पात और वैकल्पिकसमुत्पात पक्षोंके होनेपर भी समुत्पातके अस्तित्वको न कहकर केवल एक स्वस्थानपक्ष ही निरूपणसे जाना जाता है कि देवनासमुत्पात कपापसमुत्पात और वैकल्पिकसमुत्पात पक्ष समुत्पातपक्षमें गृहीत नहीं है ।

श्रुका— यदि इस ग्रन्थमें ये गृहीत नहीं हैं तो किस किये यहाँ इनकी प्ररूपणा की जाती है ?

समाधान—इस प्रकार जिसका अभिप्राय है ये उनका अपेक्षा क्षेत्रका निरूपण नहीं करते हैं । किन्तु जिनके अभिप्रायसे देवनासमुत्पातादि पक्ष समुत्पात पक्षके मीतर है ये इनकी अपेक्षा क्षेत्रका निरूपण करते हैं ।

श्रुका— यदि ऐसा है तो सम्पत्तिमध्याद्यदि गुणस्थानमें समुत्पात पक्ष होना चाहिये ?

समाधान—यह कोई शेष नहीं है क्योंकि जहाँ मारणात्मिकसमुत्पात पक्ष है वहाँ ही उनका अस्तित्व स्वीकार किया गया है ।

श्रुका—ऐसा किस किये स्वीकार किया गया है ?

समाधान—यहाँ क्योंकि मारणात्मिकसमुत्पातके बिना देवनासमुत्पात क्षेत्रकी प्रथावताके अभावको पतञ्जलके किये ऐसा स्वीकार करनेमें कोई शेष नहीं है । शेष शून्य सुगम है ।

समुग्धादेण लोकास्स असखेज्जदिभागे असखेज्जेसु वा भागेसु  
सव्वलोगे वा ॥ १११ ॥

एइस्स अत्थो वुत्थदे— वचन-कसाय-वेठभिय-मारणतिपहि सम्मादिही  
असखेज्जदेण लोकायमसखेज्जदिभागे माणुसखेचसो असखेज्जगुणे । एवं  
केवसिद्धंउत्थे पि । एवं तेवाहरफदाण । ववरि माणुसखेचस्स सखेज्जदिभागे पि  
वचनं । सेसतिपि वि केवलिपदाणि सुगमाणि ।

वेदगसम्माइट्ठि-उवसमसम्माइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि सत्याणेण समु  
ग्धादेण उववादेण केवडिस्सेत्ते ? ॥ ११२ ॥

सुगममेइ ।

लोकास्स असखेज्जदिभागे ॥ ११३ ॥

एइस्स सुवस्स अत्थो आणिय वचनो । ववरि उवसमसम्माइट्ठिसु मारणतिप  
उववादेणउववादेण सखेज्जा चेव ।

सम्पगृष्टि व क्षापिकसम्पगृष्टि जीव समुत्पातकी अपेक्षा लोकके असंख्यातके  
भागमें, अथवा असंख्यात बहुभागमें, अथवा सब लोकमें रहते हैं ॥ १११ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं—वेदभासमुत्पात कयायसमुत्पात वैदिकपिक  
समुत्पात और मारणातिकसमुत्पात पक्षोंकी अपेक्षा सम्पगृष्टि और क्षापिकसम्प-  
गृष्टि जीव वार लोकोंके असंख्यातके भागमें व मानुसखेचकी अपेक्षा असंख्यातगुणे  
क्षेत्रमें रहते हैं । इसी प्रकार केवसिद्धसमुत्पातकी अपेक्षा भी क्षत्रका विकल्प करना  
चाहिये । इसी प्रकार वैदिकसमुत्पात और आहारकसमुत्पात पक्षोंकी अपेक्षा भी  
क्षत्रका प्रमाण जानना चाहिये । पिदाय इतना है कि उक्त दोनों समुत्पातगत जीव  
जीव मानुसखेचके सख्यातके भागमें रहते हैं ऐसा कहना चाहिये । शेष तीनों ही  
कवलिपद सुगम हैं ।

वेदकसम्पगृष्टि, उपग्रहसम्पगृष्टि और सासादनसम्पगृष्टि जीव स्वस्थान,  
समुत्पात और उपपादकी अपेक्षा कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? ॥ ११२ ॥

एव सव्व सुगम है ।

उपर्युक्त जीव उक्त पक्षोंकी अपेक्षा लोकके असंख्यातके भागमें रहते हैं ॥ ११३ ॥

इस सूत्रका अर्थ जानकर कहना चाहिये । बिनाय इतना है कि उपग्रहसम्प  
गृष्टियोंमें मारणातिकसमुत्पात और उपपाद पक्षोंमें स्थित जीव संख्यात ही हैं ।

## सम्मामिच्छाद्विष्टी सत्याणेण केवडिस्वेत्ते ? ॥ ११४ ॥

सम्मामिच्छादिविष्टिस्स वयण-कसाय वेठभियपदेस्स संत्तिसु वि समुग्घादस्स अतिवत्त ममभिय सत्याणपदस्स एककस्स चेव परवणादो णज्जदि त्था वेपण-कसाय-वेठभिय पदाणि समुग्घादपदम्हि ण गहिदानि चि । अदि एदम्हि गंधे ण गहिदाभि तो वि किमद्द एत्थ पम्बणा कीरद ? अस्सिमेरिसो अहिप्पाभो ण ते वेहि परूबेत्ति । अस्सि पुण समुग्घादपदस्सतो वेदणादिपदाणि अत्थि ते तदि परूवण करेत्ति । अदि एवं तो सम्मा मिच्छादिविष्टिम्हि समुग्घादपदेण होदध्व ? ण एत्थ दोसो, अत्थ मारणतियमत्थि सत्थेव तस्सिमत्थिचस्स मम्मसुवगमादा । किमद्दुमेवविहज्जम्भुवगमो कीरद ? ण, मारणत्थिएण विणा वेदणादिग्गेषाण पहालत्थाभावपदुप्पायणद्द त्हाम्मसुवगमकरणे दासामानादा । सेम सुगम ।

मग्गिमिच्छाद्विष्टि जीव स्वम्मानकी अपेक्षा कितने धैर्यमें रहते हैं ? ॥ ११४ ॥

सम्मामिच्छादाधिके पदनामसमुत्थात कयायसमुत्थात और वैभियिकसमुत्थात पदोंके होनेपर भी समुत्थातक अस्तिग्यका न कहकर कसल एक स्वस्थामपदके ही निरूपणसे जाना जाता है कि पदनामसमुत्थात, कयायसमुत्थात और वैभियिकसमुत्थात पद समुत्थातपदमें गृहीत नहीं है ।

प्रश्न— यदि इस मग्गमें व गृहीत नहीं है तो किस क्रिये वहाँ उनकी प्रकल्पना की जाती है ?

समाधान— इस प्रकार जिनका अभिप्राय है व उनकी भयाना क्षत्रका निरूपण नहीं करत है । किन्तु जिनका अभिप्राय व पदनामसमुत्थातादि पद समुत्थात पदके भीतर है वे उनकी भयाना क्षत्रका निरूपण करत है ।

प्रश्न— यदि एत्ता है तो मग्गिमिच्छाद्विष्टि गुणस्थानमें समुत्थात पद दाना थादिव ?

समाधान— यह कह वाच नहीं है क्योंकि जहाँ मारणाग्गिमसमुत्थात पद है वहाँ ही उसका अस्तिग्य स्वीकार किया गया है ।

प्रश्न— एत्ता किम तिचे स्वीकार किया गया है ?

समाधान— नहीं क्योंकि मारणाग्गिमसमुत्थातक पिना वेदनादिसमुत्थात शेषोंकी प्रथामत्ताक समावह। पत्तसामेक टिप वेत्ता स्वीकार करनेमें वहाँ दोष नहीं है । येव सुत्थाय सुगम है ।

लोगस्त असखेज्जदिभागे ॥ ११५ ॥

सत्याणसत्त्वाण विहारवदिसत्त्वाण-नेयण क्कमाय-नेठभियपदेहि सम्मामिच्छादिह्ठी  
पदुग्ध लोकाणमसखेज्जदिभागे, अद्वाइज्जादो भसखेज्जगुणे चि एतो सुत्तस्सत्थो ।

मिच्छाइह्ठी असजदमगो ॥ ११६ ॥

सुगममेद ।

सणियाणुवादेण सण्णी सत्याणेण समुग्घादेण चववादेण केव

हिस्सेत्ते ? ॥ ११७ ॥

सुगममेद ।

लोगस्त असखेज्जदिभागे ॥ ११८ ॥

एदेण सुधिदत्थो पुग्घदे । तं ब्रह्मा— सत्याणमत्त्वाण विहारवदिसत्त्वाण-नेयण  
क्कमाय-नेठभियपदेहि सण्णी तिग्घं लोकाणमसखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्त सखेज्जदि  
भागे, अद्वाइज्जादो असखेज्जगुणे । एव मारणतिय उपपादेसु चि पत्तमं । जवरि

सम्यग्गिप्पाददि जीव स्वस्थानसे लोकोके असम्पातने मागमे रहते हैं ॥ ११५ ॥

स्वस्थानस्वस्थाव विहारवत्स्वस्थान वदनासमुत्पात क्कपायसमुत्पात और  
वैश्विपिक्कसमुत्पात पदोंसे सम्यग्गिप्पाददि जीव चार लोकोंके असम्पातने मागमे और  
भकार्ही जीपसे असम्पातगुणे क्षेत्रमे रहत हैं यह इस सूत्रका अर्थ है ।

गिप्पाददि जीवोंका क्षेत्र अमपत्त जीवोंके समान है ॥ ११६ ॥

यह सूत्र समम है ।

सक्षिमागणानुसार सक्षी जीव स्वस्थान, समुत्पात व उपपाद पदसे कितने  
क्षेत्रमे रहते हैं ? ॥ ११७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सक्षी जीव उक्त पदोंमे लोकके असम्पातने मागमे रहते हैं ॥ ११८ ॥

इस सूत्रके द्वारा सूचित अर्थ यहते हैं । यह इस प्रकार है— स्वस्थानस्वस्थान  
विहारवत्स्वस्थाव वदनासमुत्पात क्कपायसमुत्पात और वैश्विपिक्कसमुत्पात पदोंसे  
संज्ञी जीव तीन लोकोंके असम्पातने मागमे तिरियलोकके स्वस्थानव मागमे चार भकार्ही  
जीपसे असम्पातगुण क्षेत्रमे रहत हैं । इसी प्रकार मारणात्मिकसमुत्पात व क्कपाय  
पदोंके विषयमे भी कहना चाहिये । विशेष एतना है कि तिरियलोकसे असम्पातगुणे

तिरियलागादा अममन्त्रगुण त्ति वचपं ।

असुष्णी मत्याणेण समुग्धादेण उववादेण केवडिस्वेत्ते ? ॥ ११९ ॥

गुणम ।

सव्वलोगे ॥ १२० ॥

पद्मस्त्या— मन्धानमत्याण-वयण-ममाय मारणतिप-उववादि असुष्णी मन्त्र  
लागे । विहारवदिमत्याण-वउधियपददि तिण्ह लागाणममंगमन्त्रदिमाग, तिरियलागस्म  
सग-वदिमागे, अहुवा-मादा अममन्त्रगुण । पत्थरि वउधिय तिरियलागस्म अम  
मन्त्रदिमागे ।

आहाराणुवादेण आहारा मत्याणेण समुग्धाणेण उववादेण  
केवडिस्वेत्ते ? ॥ १२१ ॥

गुणममद ।

सव्वलोगे ॥ १२२ ॥

शक्ये रहत हे पणा कहना यादिय ।

अमयी त्रीर स्वस्थान, ममुत्पात व उपवाद् पदमे वित्तन धम्ममे रहत हे ?  
॥ ११९ ॥

पद गूच गुणम हे ।

अमयी त्रीर उक्त पदेगे मर साकमे रहते हे ॥ १२० ॥

इत गूचका मय कहत हे— स्वस्थानमवस्थान वरुमागमुत्पात ववाय  
ममुत्पात मारणागिजगमुत्पात मौर उरगाद् पदमे धर्मवी औप मये साकमे रहत  
हे । विहायवापयणम धार वैदिविजगमुत्पात पदमे मीम साकमे मरुक्कान्ते यावमे  
निवण्णाक वरुपानवे मागमे भात अहारे हीयमे अवेक्कान्तुण शक्ये रहत हे । विहाय  
रहता हे कि वैदिविज वरुवा मरुता निवण्णाकचे मरुक्कान्तुण मागमे रहत हे ।

आहारमोपपानुमार आहारक त्रीर मन्धान, ममुत्पात आर उपवाद् वरु वित्तन  
धम्ममे रहत हे ? ॥ १२१ ॥

पद गूच गुणम हे ।

आहारक त्रीर उक्त पदेगे मर साकमे रहत हे ॥ १२२ ॥

एदस्सग्धा- सु-याणम-याण-वयण-कमाप-मारणत्तिय उववादेहि सम्बलोए, आप-  
त्तिपादा । विहारवदिस्स चाप-वेउच्चियपददि तिण्ह सोमागममसु-अदिमागे, तिरिय  
छागस्स मसु-अदिमाग, अहुए-आदा असंयुज्जगुण ।

अणाहारा केवडिसेत्ते ? ॥ १२३ ॥

सुगम ।

सबलोए ॥ १२४ ॥

कुदो ? आपत्तिपादो । एत्थ मरस्स पदमसमए अरुडिहाण उववाद् होदि,  
विदियाविदोसु समणसु ड्ढिदारं सत्थाण होदि । एव दोसु पदसु लम्भमाणेषु किमई  
तापि हो पदाणि व बुचापि ? व, तथ सुत्तमेइणुवर्त्तभादो ।

एव वेत्ताणामो ति समत्तमणिओगरार ।

इस सूत्रका अर्थ कहत हैं— स्वस्थानस्वस्थान केवनासमुद्घात कयापसमुद्घात  
मारणान्तिक्कसमुद्घात और उपपाद् पदोसे भाहारक जीव सर्व लोकमें रहते हैं क्योंकि  
व भवन्त हैं । विहारणस्वस्थाम और वैक्किपिक्कसमुद्घात पदोसे तीव लोकोंके संख्यातके  
मागमें तिरियल्लोकके संख्यातके मागमें और अहारे हीपसे मसक्काठगुणे क्षेत्रमें रहते हैं ।

अनाहारक जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? ॥ १२३ ॥

एव सुव सुगम है ।

अनाहारक जीव सर्व लोकमें रहते हैं ॥ १२४ ॥

क्योंकि वे भवन्त हैं ।

शब्द—यहाँ मक्के मध्यम समयमें अवस्थित जीवोंके उपपाद् होता है और  
द्वितीयपरिक हो समयमें स्थित जीवोंके स्वस्थाम पद होता है । इस प्रकार दो पदोंकी  
प्राप्ति होनेपर किसलिये उक्त दो पदोंको यहाँ नहीं कहा ?

समाधान—यहाँ क्योंकि उनमें क्षेत्रमेइ नहीं पाया जाता ।

इस प्रकार क्षेत्रानुगम अनुबोधकार समाप्त हुआ ।

## फोसणाणुगमो

फोसणाणुगमेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइएहि' सत्या  
णेहि केवडिखेत्त फोसिद ? ॥ १ ॥

एत्थ णिरयगदीए षि चेवकरो अज्झाहारेयम्भो । तेण किं लब्धं ? णिरयगदीए  
चेव णेरइया, न अण्णय क्तव षि षि पडिसेहो उभलब्धो । ठेहि णेरइएहि सत्यानत्पेहि  
केवडियं खेत्त फोसिद- किं सम्भोगो, किं लोगस्स असंखेज्जा भागा, किं लोगस्स  
संखेज्जदिमागो, किमसंखेज्जदिमागो षि एदमाहरियासकिद । वा' सुरेण विवा कपमा-  
सकावगम्भे ? ण, अवुत्तम षि पपरणवसेण क्तव षि अबगम्भलमादो । ससं सुगम ।  
एत्थ भोषाणुगमो किण्ण परुविदा ? ण, सोइसमग्गणीविदिहुसीवान फोसणावगमेण

स्पर्शनानुगमस गतिमार्गानुमार नरकगतिमें नारकी जीव स्वस्थान पदोंसे  
कितना दूर स्पर्श करते हैं ? ॥ १ ॥

यहाँ धूममें नरकगतिमें ही देखा एबकारका भ्रम्याहार करना चाहिये ।

श्रीका—एबकारका भ्रम्याहार करनेसे क्या काम है ?

समाधान—नरकगतिमें ही नाटकी जीव हैं अन्ध्र कहींपर नहीं हैं इस प्रकार  
एबकारसे उनका अन्ध्र प्रतिपद्य उपलब्ध होता है । उन नाटकियोंके ज्ञाप स्वस्थान  
पदोंसे कितना क्षेत्र स्पष्ट है— क्या सध लोक स्पष्ट है क्या काकका असक्यात बहुभाग  
स्पष्ट है क्या लोकका सख्यातवा भाग स्पष्ट है कि वा लोकका असक्यातवा भाग स्पष्ट  
है ? यह आचार्य ज्ञाप आशका की गए हैं ।

शुभ्र—वा शम्भके पिना कैसे आशकाका परिचय होता है ?

समाधान—मनुष्यका भी प्रकल्पन कहींपर अज्ञान पाया जाता है । शब्द  
सुत्राथ सुगम है ।

श्रीका—यहाँ भोषानुगमका प्रकल्प क्यों नहीं किया ?

समाधान—नहीं क्योंकि बौद्ध मार्गजामोंसे भिक्षिण जीवोंके स्थानका ज्ञान



तस्म वि अवगमादो ।

## लोगस्स असस्वेज्जदिभागो ॥ २ ॥

होदु नाम बहमापकाले' भेरुएहि सत्पाणहि छुवं खेवं चदुण्ह सागायमसए  
अदिभागो, माजुससेवादो अससे' अगुण । किंतु वादीदकाले परं होदि, तस्य तिर्णं लोगाणं  
सस्वेज्जदिभागमचछुपयेचुरत्तमादो । त क्व ? भेरुएया लोगाणसिं समअउरसरज्जुमेचा  
यामविकुंम-अरज्जुमापदं सअमदीदकालं सहाणहििया कुंसति पि ! ज, संखज्ज  
ओपणवाहज्जसचपुटवीओ माणुण वेसिमदीदकाले अअरस्य अअहाणावावादो । अदि वि एरं  
तो वि तीदकाले तिरियसोगादो सस्वेज्जगुणय होदुण्हं, सस्वेज्जअभिअंगुसवाइत्त  
तिरियपदरमेचखेचुवसंमादो ! ज, पुटवीणमसस्वेज्जदिभागो चेव भेरुएया होति पि  
गुरुवदेसादो, अत्थापेहि तिरियलोगस्स अससेअदिभागो चेव पोसिदो पि वक्खत्थादो वा ।

होमसे अस्का भी डान हो जाता है ।

नारदियों द्वारा स्वप्नान पदसि साकका असंख्यातवां माग स्पृष्ट है ॥ २ ॥

शंका—वर्तमान कालमें नारदियोंसे स्पृष्ट क्षेत्र चार ओकोंके असंख्यातवें माग  
प्रमाण व माजुससेवसे असंख्यातगुणा भळे ही हो किन्तु वह भतीतकालमें नहीं बनता  
क्योंकि, भतीतकालमें तीन ओकोंके संख्यातवें मागमात्र स्पृष्ट क्षेत्र पाया जाता है ?

प्रशिक्षण— वह कैसे ?

प्रतिशंकाका समाधान— नारदी जीव स्वस्यात्ममें स्थित होते हुए भतीतकालमें  
समचतुष्काय एक राहुप्रमाण मायाम व विष्णुमसे युक्त तथा अहं चतु अंभी सब  
ओकनाडीका होते है ।

शंकाका समाधान— नहीं क्योंकि संख्यात योजन बाह्यस्वरूप सात पृथिवि-  
योंको ओकचर उन नारदियोंका भतीतकालमें अन्यत्र अवस्थान नहीं है ।

शंका—अथपि वेसा है तो जी भतीतकालमें तिर्यग्भोजके संख्यातगुणा राज  
होना चाहिये क्योंकि, संख्यात सूर्यगुण बाह्यस्वरूप व तिर्यग् प्रतरमात्र क्षेत्र पाया  
जाता है ?

समाधान— नहीं क्योंकि पृथिवियोंके असंख्यातवें मागमें ही नारदी जीव  
होते है वेसा गुरुपदेश है अथवा स्वस्यात्मकी अपेक्षा तिर्यग्भोजका असंख्यातवां माग  
ही स्पृष्ट है वेसा व्याख्यात पाया जाता है ।

समुग्घाद-उववादेहि केवडिय खेत फोसिद ? ॥ ३ ॥

सुगममद ।

लोगस्त असखेज्जदिभागो ॥ ४ ॥

एद सुर्षं वडुमाणकालमस्सिदूण उववडु । ण च एत्थ पुणरुत्तदोसो, मदुद्धीण पुणरुत्तपुम्भुत्तवममालणेण फटोबलमादो । अहवा वेयण-कसाय-वेउम्भियपदात्त-मतीदकालफोसण पडुच्च एद पुत्त । तत्थ चडुच्च लोगणमसंखेज्जदिभागस्त माणुस खेपादो असमेज्जगुणस्म फोसिदसधस्सुवत्तमादा ।

छच्चोदसभागा वा देसूणा ॥ ५ ॥

एद मारणतिय-उववादपदायमदीदकालमस्सिदूण पुत्त । मारणतियस्त छवाइम भागा सखेज्जवोयणसइस्सेण ऊणा । अथवा एत्थ ऊणपमाणमधियमिदि ण णच्चदे, पामेसु मच्चसु एत्थिय उचमूममिदि त्रिमिहुनएसामावादो । उववादपदे वि ऊणपमाण

नारकियोके द्वारा समुद्घात व उपपाद पदोंस कितना क्षेत्र स्पष्ट है ? ॥ ३ ॥

यह क्षेत्र सुगम है ।

नारकियो द्वारा उक्त पदोंमे साकका असंख्यातवां भाग स्पष्ट है ॥ ४ ॥

यह क्षेत्र वर्तमान कालका आशय कर उपदिष्ट है । यहाँ पुनरुत्तक रूप भी नहीं है क्योंकि सम्बुद्धि शीघ्रोंका पुनरुत्त पूर्वोक्त अथवा स्मरण करनेसे पत्रकी उपलब्धि है । अथवा पवनासमुद्घात करायसमुद्घात आर वैत्रियिकसमुद्घात पदोंके वर्तमान कालमध्यर्था स्थापनाकी अपेक्षा कर यह क्षेत्र कहा गया है क्योंकि उनमें बार साकका असंख्यातवां भाग और मानुपसत्त असंख्यातगुणा स्पष्ट क्षेत्र पाया जाता है ।

अथवा, उक्त नारकियोके द्वारा कुछ कम छह बट बीघा भागप्रमाण क्षेत्र स्पष्ट है ॥ ५ ॥

यह क्षेत्र मारणात्मिक भी उपपाद पदोंके वर्तमान कालका आशय कर कहा गया है । मारणात्मिकसमुद्घातकी अपेक्षा संख्यात याज्जसइत्थम हीन छह बट बीघा भाग प्रमाण क्षेत्र स्पष्ट है । (इला पुम्भक ४ पृ १७४ आदि) । अथवा यहाँ हीमताका प्रमाण इतना है यह जाना नहीं जाता क्योंकि स्थानक मध्यमें इतना क्षेत्र कम है इस प्रकार विधि उपदिष्ट अभाव है । उपपाद पदोंमें भी हीमताका प्रमाण पूर्वोक्त

पुन्यं न आगिदृग वचनम् । क्व चोद्भवमागा मारणं कुत्रदे ? य, तिरिक्ख-वेरइयाण  
सम्भदिसाहिंत्तो आगमण-गमणसंमरादा ।

पढमाए पुढवीए णेरइया सत्याण-समुग्घाद-उववादपदेहि केव  
डिय खेत्त फोसिद ? ॥ ६ ॥

एतत्त चवकारो न अन्धाहारेयम्भो, अबहारणामावादो । वे पढमाए पुढवीए  
वेरइया तहि सत्याण-समुग्घाद उववादपदेहि केवडिय खत्तं फासिदमिदि एतत्त सर्वभो  
कायम्भो । सेसं सुगम ।

लोगस्स असस्सेज्जदिभागो ॥ ७ ॥

एदेण देसामासियसुचणं सुद्धत्थो पुग्घे । त अहा— सत्याणमत्याण विहास्-  
वदिसत्याण-वेयण-क्याण-वेठिणिय मारणंठिय-उववादपदेहि बहुमाणकाठमस्सिदृण परु

समाज ज्ञानकर कइवा चाहिये ।

श्लोक—मारणान्तिकसमुद्घातकी अपेक्षा उह बडे बौद्ध मागप्रमाण स्पर्शन  
केसे योग्य है ?

समाधान—यहाँ क्योंकि, तिरियेच न नारकी जीवोंका सब दिशाओंसे आगमन  
और पमन सम्भव है ।

प्रथम पृथिवीमें नारकी जीवोंके द्वारा स्वस्थान, समुद्घात और उपपाद् पक्षोंकी  
अपेक्षा कितना क्षेत्र सृष्ट है ? ॥ ६ ॥

यहाँ एवकारका अन्वयाहार यहाँ करना चाहिये क्योंकि अवधारण अर्थात्  
विश्लेषका अभाव है । जो प्रथम पृथिवीमें नारकी जीव है उसके द्वारा स्वस्थान समुद्घात  
और उपपाद् पक्षोंसे कितना क्षेत्र सृष्ट है इस प्रकार यहाँ सम्बन्ध करना चाहिये ।  
शेष सूचार्य सुगम है ।

प्रथम पृथिवीके नारकीयों द्वारा श्लोकज्ञ असरुपातर्वा भाग सृष्ट है ॥ ७ ॥

इस वर्णामर्शक एतके द्वारा सुचित अर्थ करते हैं । वह इस प्रकार है—  
स्वस्थानस्वस्थान विहारवत्स्वस्थान वेयनासमुद्घात क्यासमुद्घात वैकल्पिक  
समुद्घात मारणान्तिकसमुद्घात तथा उपपाद् पक्षोंकी अपेक्षा वर्तमान कायका  
आश्रय कर स्पर्शनकी मरुपणा क्षेत्ररूपभाके समाज है । स्वस्थानस्वस्थान विहार

वनाय खेचभगो । सत्याणसत्याष-विहारवदिसत्याण-वेयण-कसाय-वेउन्वियपदपरिणदेहि'  
 पैरएहि वीदे काले चदण्ड लोगणमसखेज्जदिमागो, अङ्गाइज्जादो असखेज्जगुणो  
 फोसिदो । इदो ! असखेज्जजोपणविकसुभणिरयानासखेचफलं ठविय पैरयाणगुस्सेहेण  
 गुणिय उद्ध तप्पाओग्गसउज्जपिलसलागाहि गुणिये तिरियलोगस्स असखेज्जदिगागमेच  
 खेचुबलमादो । अदीदकाले मारणतिय-उपवाद्परिणदेहि पढमपुडविणेरएहि तिष्णं  
 लोगणमसउज्जदिमागो, तिरियलोगस्स सखेज्जदिमागो, अङ्गाइज्जादो असखेज्जगुणो  
 फोसिदो । कष तिरियलोगस्स सखेज्जदिमागच ? अदीदिसइस्साहियजायणलकसुपढम  
 पुडविवाहल्लम्मि हेद्धिमज्जोयणमइस्स मेरएहि मन्नकाल प छुप्पदि चि काल्ण एरय  
 ज्ञोयणसइस्समवणिय सेमज्जोयणमइस्सवाहल्ल रञ्जुपदर ठविय उस्सेहेण एरणवचास  
 मचसुवाणि काल्ण पदरागारेण उद्धे तिरियलोगस्स सखेज्जदिमागो हेदि । इदो !  
 एकइरञ्जुद्धा ससर सुआयदो ज्ञोयणलकसुवाहल्लो तिरियलोगा चि गुरूवएसादो ।  
 ज्ञे पुण ज्ञोयणलकसुवाहल्ल रञ्जुविकसुम इल्लरीसमार्यं तिरियलोग मणति वरिं

वास्यस्यात् वेदमासमुदात्त कपापसमुदात्त मीर धीक्रियिकसमुदात्त पदोको प्राप्त नारदिके  
 पौके द्वारा अतीत कालमें पार भोकोका भसक्यातर्था भाग भार अर्द्धां द्वीपस भसक्यात्  
 गुणा क्षत्र सूर्य है क्योंकि असंख्यात् योजन विष्कम्भरूप नारकावासेके क्षत्रपत्यको  
 स्थापित कर व उस नारदिकेपौके उरसेपस गुणित कर प्राप्त राधिको तत्प्राथाग्य संख्यात्  
 विमशलाकामोसे गुणित करमपर तियम्माकका भसक्यातर्था भागमात्र क्षेत्र उपमन्थ होता  
 है । अतीत कालकी अपेक्षा मारणाग्निकसमुदात्त व उपपाद् पदको प्राप्त प्रथम पृथिवीके  
 नारदिके द्वारा तीन साकोका भसक्यातर्था भाग तियम्माकोका संख्यातर्था भाग मीर  
 अर्द्धां द्वीपस असंख्यातगुणा क्षत्र सूर्य है ।

सङ्का—तियम्माकका संख्यातर्था भाग शर्मन क्षत्र कैसे प्राप्त होता है ?

समाधान—एक सात अस्सी सहस्र याजनप्रमाण प्रथम पृथिवीके बाह्यत्वमें  
 उपमन्थ एक सहस्र योजन क्षेत्र सब काल नारदिकेपौके अर्द्धां पुमा जाना ऐसा समसुकर  
 इसमेंसे एक सहस्र याजनको कम कर तैव (एक सात उपार्सा) सहस्र याजन बाह्यत्व  
 रूप क्षत्रपत्यको स्थापित कर उरसेपस उरधाम मात्र एण्ड करक प्रतराकारस स्थापित  
 करनेपर तियम्माकका संख्यातर्था भाग हाता है क्योंकि एक रात्रु पिन्तृत सात रात्रु  
 भापत मीर एक सात योजन बाह्यत्वयामा तियम्माक है एसा गुदका उपदेरा है । किन्तु  
 जा भावार्थ एक सात याजन बाह्यत्वम युक्त व एक रात्रु पिन्तृत सामरक समान तिरे

। क-क-कौ। परेहि वीदे वेण्टरी ' वासी परेहि वीदे वेत्तर वी वः।

मारयंतिय उबवाइलेषामि तिरियस्रगात्रो सादिरियाणि ह्येति । य चेदं पददे, एवमिह  
 उबवेसे वेप्यमाणे स्त्रोगाम्नि तिविंसद्वत्तेदात्मैतभपरन्धुमपुष्पशीवो । य च एवात्रो  
 पपरन्धु असिदात्रो, रन्धु सचगुमिहा अगमेदी, सा वरिगदा अगपदरं, सवीए गुमिद  
 अगपदर पणसोमा होदि पि सयलाइरियसम्मदपरियम्मसिद्धत्तादो । य च सव्यवा  
 हेडिम-मन्त्रिम-उवरिममायेदि वेचासण-स्रस्त्री-स्रगसमापे स्त्रोगे पप्यमाण सेदी-पदर  
 पणसोमा अगसमुद्दिदा ह्येति, तथा समवामावादा । य च एदेसिमअगसमुद्दिदत्तम  
 अगसगंतुं शुचं, कदन्नुम्मेदि पंचिदियतिरिक्त्त-यन्जत्त-ओपिपि ओदिसिय-बेंतरदेवअवहार  
 कोलीहि सुचसिद्धिहि अकदन्नुमजमपदरे भागे हिदे सन्छदस्स जीवरासिस्म आगमन  
 प्यसमादो । य च पदं, जीवरां छद्दामावादा, दव्याणिवोगादारवकसाणाम्नि शुचइडिम  
 उवरिमवियप्यात्ममात्रप्यमगादो च । तिविंसद्वत्तेदात्मभपरन्धुपमाणो उबवासोमा,  
 एदम्हावी अण्यो पंचदव्याहारो सोगो पि के वि आइरिया मयति । स पि य पददे,  
 उबमेप्य विवा उपमाए अप्परव चर्नगुत्त-पछिदावम-सागरोरमादिनु अशुबलमादा ।  
 तम्हा- एव वि उबमेप्य सोपेय पमाणदो उबवासोमाशुसारिया पंचदव्याहारोप

श्लोकके वतघात ई बनके मतानुसार मारयान्तिक व उपपाव क्षेत्र तिर्यग्धाकसे साधिक  
 होते हैं। (देखो पुस्तक ४ पृ १८१ और १८२ के विशेषार्थ) । परन्तु यह घटित  
 नहीं होता क्योंकि इस उपवेशके ग्रहण करनेपर धाकमें तीनसी तटाडीस  
 मात्र पहरानुप्रयोगी उत्पत्ति नहीं बनती। तथा ये घनराजु मसिद्ध भी नहीं है  
 क्योंकि, राजुको सातसे गुणित करकेपर अगधेपी उस अगधेपीका वही अगधतर  
 और अगधेपीसे गुणित अगधतरप्रमाण बनकोऊ हाता है इस प्रकार समस्त  
 मात्वार्यो द्वारा भागे गये परिक्र्मसूत्रसे वे सिद्ध हैं। दूसरी बात यह है कि सब आरसे  
 अघस्ताव मन्त्रम व उपरिम भागसि कर्महा वेचासय वाछर व सूच्यक समाव लोकके  
 ग्रहण करनेपर अगधेपी अगधतर और घनकोऊ वहीसे उत्पन्न नहीं होंगे, क्योंकि, उक्त  
 मान्यतामें बैसा संभव ही नहीं है। और इनकी बिना वगके उत्पत्ति स्वीकार करना  
 बहित भी नहीं है क्योंकि पंचेन्द्रिय तिर्यक् पंचेन्द्रिय पर्यंत तिर्यक् पंचिमती तिर्यक्  
 ज्योतिषी और जानप्यन्तर वेबोके लक्षसिद्ध अतनुमराशिकर मवहारकाओका अकृतपुग्म  
 अगधतरमें माग वेनेपर सत्त्व जीवराशिकी प्रासिका प्रसंय होगा। परन्तु ऐसा है नहीं  
 क्योंकि जीवोके छेरीका समाव है। तथा प्रप्यानुयोगकारके ध्याक्याहमें कहे गये  
 अघस्ताव व उपरिम विक्ल्पयोके समावका भी प्रसंय होगा। (देखो पुस्तक ३ पृ २१५,  
 २४० व पुस्तक ७ पृ २५३)।

तीनसी तटाडीस घनराजुप्रमाण उपमाश्लोक है इससे वांच प्रप्योका माघारन्त  
 श्लोक मन्त्र है एसा किये ही मात्वार्य करते हैं। परन्तु यह भी पकित नहीं होता  
 क्योंकि उपवेशके विवा उपमाका मन्त्रव धर्तागुत्त पस्यापम व सापरोपमाविकीमें  
 अनुपपन्नम है। वत यह यहां भी समावके उपमानोका अनुसरण करनेवाका

मण्डल दोद्वयमण्डला षट्सु उक्तमालोक्याण्युक्तयोः । सेम मुगुम ।

विन्याए जाव मतमाए पुढवीए णेरइया सत्याणेहि केवडिय  
सेत्त फोमिद ? ॥ ८ ॥

मुगुम ।

लोगस्स अमन्वेज्जदिभागो ॥ ९ ॥

उक्तमत्या- मत्यामत्याण विहागदिमत्याणपदपरिणदादि अदीद-बद्धमाणफलमु  
णरइहि पदुण्ड सोगाणममग्ज्जदिमागो, अट्टाद्विजादा अमन्वेज्जगुणा फामिदा । इदा ?  
एण्य पुढवीण सागपानीण रुद्धगत्तस्स अमग्ज्जदिभाग एव णरइयारामाणमुक्तमादा ।

समुग्घाद उववादेहि य केवडिय सेत्त फोसिद ? ॥ १० ॥

मुगुम ।

य पांच द्वयोश्च भाषारमृत उपमय साक मय्य इतान् यादिय कयोकि एसके विमा  
इसके उपमासाकय वन मदी मज्जा ( एता पुस्तक ४ पृ १०-१२) । एत सुखाथ मुगुम हे ।

निधीपम स्फुर ममम पृथिवी तद्वत् नागदियो द्वारा स्वस्थान पदोमे चिन्ता  
ध्व एष्ट हे ? ॥ ८ ॥

एद एव मुगुम हे ।

उपपुन्ठ नागदियो द्वारा स्वस्थान पदोमे नोद्वय अमग्ज्जगुणा माग एष्ट हे  
॥ १० ॥

इस गृहका ध्व- उपपुन्ठगुणा भाग विदाएवगुणा पदोमे चिन्ता  
नागदियो द्वारा ध्वान य ध्वमान कायोम पाग एवोश्च अमग्ज्जगुणा माग और  
महाद हीम अमग्ज्जगुणा एव एष्ट हे कयोकि एत पृथिवीकोक साकपानीण रुद्ध  
अमग्ज्जगुणा मागमे ही नागकायाण पाप इतान् हे ।

उक्त नागदियो द्वारा समुग्घात ए उपवाद् पदोमे चिन्ता ध्व एष्ट हे ?  
॥ १० ॥

एद एव मुगुम हे ।

लोगस्य असंखेज्जदिभागो एग-वे-तिण्णि-चत्तारि-पंच-छ-चौदस  
भागो वा देसूणा ॥ ११ ॥

बेयम-कसाय-भेठभियपदपरिषदेहि तीदे काले लोगस्य असंखेज्जदिभागो फासिदो ।  
बहुमापकाले पुन छपुइदिपरिषदि बेयम-कसाय-भेठभिय मारवांतिप-उववात्परिषदेहि  
बहुपुंहे लोगानमसखेज्जदिभागा, बहुपुंहेभादो अमंखेज्जगुणो फासिदो । तीदे काले  
मारवांतिप-उववादेहि विदियादिछपुइदिपरिषदि महाकमण देसूणएग-वे-तिण्णि-चत्तारि  
पंचचौदसभागा । इदो ? तिरिक्खाल गेय्याप तीदे काले सम्भदिसहि आयमन-  
गमणसंभवादो ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा सत्याण-समुग्घाद-उववादेहि केवडियं  
खेत्त फोसिद ? ॥ १२ ॥

सुगममेई ।

सव्वलोगो ॥ १३ ॥

उक्त मारकियो द्वारा लोकक असंख्यातर्था माग अथवा कुछ कम चौदह  
भागोंमेंसे क्रमशः एक, दो, तीन, चार, पांच और छह भाग स्पष्ट हैं ॥ ११ ॥

वेदशास्त्रमुद्रात् कयापसमुद्रात् और वैदिकपिकसमुद्रात् पदोंसं परिजत उक्त  
मारकियो द्वारा भरीत काळकी अपेक्षा आकाला असंख्यातर्था माग स्पष्ट है । किन्तु  
वर्तमान काळकी अपेक्षा छह पृथिवियाक मारकियो द्वारा वेदशास्त्रमुद्रात् कयापसमुद्रात्  
वैदिकपिकसमुद्रात् मारवांतिपकसमुद्रात् और उपपाद् पदोंसं परिजत होकर चार लोकोंका  
असंख्यातर्था माग और बहुपुंहे हीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पष्ट है । भरीत काळकी  
अपेक्षा मारवांतिपकसमुद्रात् व उपपाद् पदोंसे द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मारकियो  
द्वारा पयाकमसे कुछ कम चौदह भागोंमेंसे एक दो तीन चार पांच और छह भाग  
स्पष्ट हैं क्योंकि तिर्यच व मारकियोका भरीत काळमें सब दिशामोंसे आयमन और  
पमव सम्मत् है ।

तिर्यचप्रतिमें तिर्यच बीच अस्वान, समुद्रात् और उपपाद् पदोंसे किटना  
क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ॥ १२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

तिर्यच बीच उक्त पदोंसे सर्व लोक स्पर्श करते हैं ॥ १३ ॥

एदस्स अत्थो बुब्बदे । त जहा- एतय बहुमाणपरुवणाए खेचमंगो । सत्थाण सत्थाण-वेयण-कसाय मारणात्थिय ठववादेहि तीदे कासे सम्बलोगो फोसिदो । कुदो ? बहुमाणे ष सम्बलोगे भववुत्ताणुवसभादो । विहारेण तीदे फल तिण्ह सागाणमसखेज्जदिमागो, तिरियसागस्स सखेज्जदिमागो, माणुसखेचादो असखेज्जगुणो फोसिदो । असखेज्जेसु समुहसु वसजीवविरिहियसु सत्तेसु कथं विहरताण तिरिक्खाण तत्थ समजो ? न, तत्थ पुब्बवइरियदेवाण पओएण विहारे निरोहामावादा । तीदे काले विहरतविरिक्खेहि पुइ खेचाणयणविहाण बुब्बदे । त जहा- लक्खमोयणपाइस्स रन्हुपदर ठविय उहुमेगूण वंचासण्डाणि करिय पदरागारण उद तिरियलोगस्स सखेज्जदिमागमेच खेच होदि । अदि वि मोयणलक्खमाइस्सेण विणा सखेज्जजायणपाइस्स तिरियपदर लम्मदि, तो वि तिरियलोगस्स सखेज्जदिमागो षव होदि । वठवियसमुग्घादगदान वहुमाणे खुचं, तीदे काल तिण्ह सागाण सखेज्जदिमागो, दाहि लोमहिंसो असखेज्जगुणो फोसिदो । कुदो ? वाउफइयमीवाणं पलिदोवमस्स असखेज्जदिमागमेचाण विउच्चणसुमाण पंच

इस सूत्रका अर्थ करते हैं । यह इस प्रकार है— यहाँ वर्णनामकात्मरूपणा क्षेत्र प्ररूपणाके समान है । स्वस्थानस्वस्थान ब्रह्मासमुद्रात् कषायसमुद्रात् मारणात्मिक समुद्रात् भीर उपपाद पक्षसे भर्तीत कालमें तिरिक्ख जीवोंद्वारा सध साक स्पृह है क्योंकि, यतमान कालके समान भर्तीत कालमें भी तिरिक्ख जीवोंका सध लोकमें अवस्थान पाया जाता है । विहारकी अपेक्षा भर्तीत कालमें तीन सौकोंका असंख्यातप्रांभाग, तिरिक्खोका संख्यातप्रांभाग भीर मानुषक्षेत्रस असंख्यातगुणा क्षत्र स्पृह है ।

प्रश्न— असंख्यात समुद्रोंक भस् जीवोंसे रहित होनेपर वहाँ विहार करनेपासे व्रस जीवोंकी सम्भापना कैसे हो सकती है ?

समाधान— वही क्योंकि, वहाँ पूर्ण पीरी देवोंक प्रयोगसे विहार क्षानमें कार विराय नहीं है ।

भर्तीत कालमें विहार करनेकासे तिरिक्खोंसे स्पृह क्षत्रक निकालनका विधान करते हैं । यह इस प्रकार है— एक क्षाल पात्रन बाह्यरूप राजुमतरका स्थापित कर ऊपरस उभयास पण्ड करके प्रतराकारस स्थापित करनेपर तिरिक्खोका संख्यातप्रांभागमात्र क्षेत्र होता है । यद्यपि एक सात्र योजन बाह्यरूप विना संख्यात पात्रन बाह्यरूप तिरिक्खमत्त प्राप्त होता है तथापि नियन्त्राका संख्यातप्रांभाग ही होता है । सिद्धिपिच्छसमुद्रात्तको प्राप्त तिरिक्ख जीवोंकी घनप्रामाणिक स्वरासप्ररूपणा क्षत्ररूपणाक समान है । किन्तु भर्तीत कालकी अपेक्षा तीन सौकोंका संख्यातप्रांभाग भीर वृ साक्षोंसे असंख्यातगुणा क्षत्र स्पृह है क्योंकि सिद्धिपा करनेमें समध पस्थापमक असंख्यातप्रांभागप्रमाण वायु



रञ्जुवाहस्त्ररञ्जुपदरमचफोसञ्जुबलमादो ।

पचिंदियतिरिक्ख—पचिंदियतिरिक्खपज्जत्त—पचिंदियतिरिक्ख—  
जोणिणि-पचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता सत्थाणेण केवडिय स्वेत्त फोसिद ?  
॥ १४ ॥

सुमममेदं ।

ल्लोगस्स असस्सेज्जदिभागो ॥ १५ ॥

एदस्स अत्थो पुञ्चदे । स गहा — एदसिं षड्मास्य खच । आदिस्तेहि तिदि  
वि तिरिक्खेहि सत्थाप्य तिण्ह ल्लोगाचममंखज्जदिभागो, तिरिक्खल्लोगस्स सखञ्जदि  
भागो, अङ्गुल्लोमादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एदम्हि खेत्ते आग्निज्जमाने मोमभूमि  
पडिभागदीवापमंठरेसु द्विदअमंखे-त्रसु समुहसु सत्थापपईद्विदतिरिक्खा पत्ति पि  
पईं खेचमाधिय रञ्जुपदरमि अथपिय सेस संयेज्जअधिअंगुलेहि गुणिदे तिरिप  
ल्लोगस्स संखेज्जदिभागमेच पंचिंदियतिरिक्खतिगस्स सत्थापखच इदि । विहारवदि  
सत्थाप-वेयव-कसाय-वेत्तमिपचठकेय परिचदतिविहपंचिंदियतिरिक्खेहि तिपईं सोमाचम

कायिक शीर्षोका पांच राजु बाह्मरूप राजुमतरमात्र स्पर्शमेव पापा जाता है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यच, पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त, पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती और  
पंचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्त शीर्षो द्वारा कितना क्षेत्र स्पष्ट है ? ॥ १४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपर्युक्त चार प्रकारके तिर्यचों द्वारा लोकका असंख्यातर्था भाग स्पष्ट है ॥१५॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यह इस प्रकार है— इनकी वर्तमानकायिक स्पर्श  
प्रकृपणा क्षेत्रप्रकृपणाके समाह है । अतीत कायकी अपेक्षा प्रथम तीन प्रकारके तिर्यचों  
द्वारा स्वस्थान परसे तीन शीर्षोका असंख्यातर्था भाग तिर्यचोक्तका संख्यातर्था भाग  
और अर्द्धाई हीपरसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पष्ट है । इस क्षेत्रके निष्कासते समय मोमभूमि  
प्रतिभागरूप शीर्षोके अन्तराधर्म स्थित असंख्यात समुद्रोंमें स्वस्थान परमें स्थित तिर्यच  
नहीं हैं अतः इस क्षेत्रको आकर व राजुमतरमेंसे कम कर क्षेत्रको संख्यात सूर्यगुणोंसे  
गुणित करनेपर तिर्यचोक्तका संख्यातर्था भागमात्र उक्त तीन पंचेन्द्रिय तिर्यचोंका स्वस्थान  
क्षेत्र होता है । विहारवत्स्वस्थान वेदनासमुद्रघात कषायसमुद्रघात और वैश्विधिक  
समुद्रघात इय चार परसे परिचत तीव्र प्रकारके पंचेन्द्रिय तिर्यचों द्वारा तीन शीर्षोका

सखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स सखेज्जदिभागो, अङ्गुल्लज्जादो असखेज्जगुणो फोसिदो ।  
 कुदो ? मिचामिच्छदेवाण बसेण परेसिं सम्बदीव-समुदसेसु सघरणं पडि विरोहामागादो ।  
 तेणस्य सखेज्जगुल्लबाहस्सुतिरियपदरसुङ्गुमेगुणवंवाससुखंवाणि करिय पदरागारेण उददे  
 र्पिदिदियतिरिक्खतिगस्स विहारादिचठक्कस्स च तिरियलोगस्स सखेज्जदिभागमेव होदि ।  
 एसो बासहेम सुदुदो । विहारवदिसत्तमानखेचपरुवणाए चव वेयण-कसाप-वेठम्भिय  
 पदाण पि परुवणा कदा गमलाववकरणं ।

समुग्घाद-उववादेहि केवडिय खेत्त फोसिद ? ॥ १६ ॥

सुगममेद ।

लोगस्स असखेज्जदिभागो सज्वलोगो वा ॥ १७ ॥

एदस्स सुत्तस्स बहुमाणपरुवणाए खेत्तमंगो । वेयण-कसाप-वेठम्भियपदाण पि  
 तीदकालपरुवणा पुष्पमव परुविदा । मारणविय-उववादपरिणयर्पिदिदियतिरिक्खतिपदि

असंख्यातर्वा माग तियम्भोक्का संख्यातर्वा माग मार अङ्गारं द्वीपसे असंख्यातगुणा  
 क्षेत्र स्पष्ट है क्योंकि मित्र व शत्रुरूप दोनोंके अन्तसे इनके सर्व द्वीपसमुद्रोंमें संभार  
 करनेका कोई विरोध नहीं है । इसीलिये यहाँ सख्यात अगुम बाह्यरूप तिर्यक् प्रतरके  
 रूपसे अनंशास प्रकृत प्रतराकारसे स्थापित करनेपर उक्त तीन पंचन्द्रिय तिर्यक्कोका  
 विहारादि चार पदसम्बन्धी क्षेत्र तियम्भोक्क सख्यातसे भागमान होता है । यह वा  
 शब्दस स्थिति अर्थ है । प्रथमसाधक लिये विहारवत्स्वस्थान क्षेत्रकी प्रकल्पनासे  
 वेदनासमुद्घात कपायसमुद्घात और वैकल्पिकसमुद्घात पदोंकी मी प्रकल्पना कर  
 ही गई है ।

उक्त तीन प्रकार पंचन्द्रिय तिर्यक्को द्वारा समुद्रात व उपपाद पदोंकी अपेक्षा  
 कितना क्षेत्र स्पष्ट है ? ॥ १६ ॥

यह क्षेत्र सुगम है ।

उपयुक्त तिर्यक्कोके द्वारा उक्त पदोंसे लोक्का असंख्यातर्वा माग अथवा सर्व  
 लोका स्पष्ट है ॥ १७ ॥

इस क्षेत्रकी वर्तमानप्रकल्पना क्षेत्रके समान है । वेदनासमुद्घात कपायसमुद्घात  
 व वैकल्पिकसमुद्घात पदोंकी अतीतकालप्रकल्पना मी पूर्वमें ही की जा चुकी है ।  
 मारणात्मिकसमुद्घात व उपपाद पदोंसे परिणत उक्त तीन पंचन्द्रिय तिर्यक्को द्वारा

सीदकाले सम्बन्धो गो फासिदो । ओगमासीए भाई तसुअइयालं सम्बन्धसंसंमवामावादा  
 सम्बन्धो गो चि वयन व पुन्वदे । व एस दोसो, मारणीतिय-उबवादपरियपतसुवीव  
 मोनूय सेसतसाव बाहिरियत्तपडिसेहादो । पंथिदियतिरिक्त्तअपन्नचार्णं वहुमान  
 परूवणाए खेत्तमंगो । सपदि सीदकालपरूवण कस्तामो । तं नहा— सत्थापसत्थाव-  
 वेयण-कसापपपरिणएहि पंथिदियतिरिक्त्तअपन्नचएहि तिक्त्त ओगाममसखेअदिमागो,  
 तिरियओगसस संखेअदिमागो, अहुइअदीव-समुरेसु व अदीदकाले तरव सम्भत्त  
 संमवादो । तेन वेहि फोसिदखेत्तं तिरियओगसस संखेअदिमागो । तस्सापपगदिहाणं  
 बुएएदे—सपपइपव्वदम्मंतरखेत्तं अगपदरसस संखेअदिमागो । तं रउपुपदरम्मि अवाधिदे  
 सेसं अगपदरसस संखेअदिमागो । तं संखेअद्यथिअगुसेहि गुणिदे तिरियओगसस  
 संखेअदिमागो होदि । अपन्नचार्णमंगुठस्सासखेअदिमागोगाइयाण क्वं संखेअ-

अतीत काळमें सर्व डोक रूप है ।

सुंका—डोकनालीके बाहिर सर्वथा काळमें वसकायिक जीवोंकी सर्वथा  
 सम्भावना व होनेसे सर्व डोक रूप है यह कहना योग्य नहीं है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि मारजातिकसमुद्रपात व उपवास  
 वदोंसे परिणत वस जीवोंको छोड़कर शेष वस जीवोंके अस्तित्वका डोकनालीके बाहिर  
 प्रतियेक है ।

पंचमिथ्य तिरेक अपर्णात्त जीवोंकी वर्तमानव्यवस्था क्षेत्रके समाप्त है । इस समय  
 अतीत काळकी अपेक्षा प्रवृत्तना करते हैं । वह इस प्रकार है— स्वस्थानवस्वस्थान  
 वेदनासमुद्रपात और कषाघसमुद्रपात पदोंसे परिणत पंचमिथ्य तिरेक अपर्णात्तों  
 द्वारा तीन डोकोंका अर्धव्यातर्वा माग तिरेकडोकका संख्यातर्वा माग और अडुई  
 हीपसे अर्धव्यातर्गुणा क्षेत्र रूप है, क्योंकि कर्मभूमिप्रतिभागरूप स्वयंमय पर्वतके पर  
 मागमें और अडुई हीप-समुद्रोंमें अतीत काळकी अपेक्षा वहां वसकी सर्वथा सम्भावना है ।  
 इसीप्रकार वनके द्वारा रूप क्षेत्र तिरेकडोकके संख्यातर्वा मागप्रमाण होता है । इसके  
 निष्काटनेके विभावको कहते हैं— स्वयंमय पर्वतका सम्भन्धर क्षेत्र अद्यप्रतरके संख्यातर्वा  
 मागप्रमाण है । इसे राजपुपदरमेंसे कम करकेपर शेष अद्यप्रतरके संख्यातर्वा मागप्रमाण रहता  
 है । इसे संख्यातर्वा स्वयंगुणोंसे गुणित करकेपर तिरेकडोकका संख्यातर्वा नाम होता है ।

सुंका—अंगुठके अर्धव्यातर्वा भागमात्र अवगाहनावाले अपर्णात्त जीवोंका

शुद्धस्तेहो लम्बे ? ॥ १८ ॥, शुद्धपंचिदियादितसकाप्रयाण कठेवरेसु अंगुलस्त संश्लेञ्जदिमाग  
 मादिं काठम जाय संश्लेञ्जद्वीयणा चि' कमवह्वीय द्विदेसु उप्यञ्जमाभायमपञ्चचाय  
 संश्लेञ्जगुलस्तेहुवलमादो । अथवा सम्येसु दीव-समुद्रेसु पंचिदियतिरिक्त्वापञ्चचा  
 होति । कुदो ? पुम्बवदिरियदेवसंबन्धिष कम्भमूमिपदिमागुप्यञ्चपंचिदियतिरिक्त्वाय  
 एगबंधयवदुञ्जद्वीयचिकाओगादओरालिपदेहाण सम्भदीव-समुद्रेसु अवह्वापदसमादो ।  
 मारणतिय-उववादेहि पुष्य सम्भलोगो फोसिदो । कुदो ? मारणतिय-उववादायं सम्भलोगे  
 पदिसेहामाभादो ।

मणुसगदीए मणुसा मणुसपज्जत्ता मणुसिणीओ सत्थाणेहि  
 केवडिय खेत्त फोसिदं ? ॥ १८ ॥

सुगम ।

लोगस्स असत्थेज्जदिमागो ॥ १९ ॥

सख्यात मंगुलप्रमाण वत्सेष कैसे पाया जाता है ?

समाधान—मर्ही क्योंकि, मंगुलके सख्यातमें मागको जादि छेकर सख्यात  
 योजना तक कमचुदिसे स्थित मूठ पंचेन्द्रियादि प्रसक्त्यायिक जीवोंके शरीरोंमें उत्पन्न  
 होमेवाके मपयामोंका संख्यात मंगुलप्रमाण वत्सेष पाया जाता है । अथवा सभी द्वीप  
 समुद्रोंमें पंचेन्द्रिय तिर्येच मपर्याप्त जीव होते है क्योंकि पूर्वके वीरी देवोंके सम्बन्धसे  
 एक बन्धनमें बद्ध छह जीवनिर्माणोंसे प्यात औषादिक शरीरको धारण करनेवाकं कर्म-  
 मूमि प्रतिमागमें उत्पन्न हुए पंचेन्द्रिय तिर्येचोंका सर्व समुद्रोंमें व्यवस्थान देखा जाता  
 है । मारणास्तिकसमुद्रमात व उपपाद् पक्षोंकी अपेक्षा सर्व छोक्त स्पृष्ट है, क्योंकि,  
 मारणास्तिकसमुद्रमात व उपपाद् पक्षोंसे परिणत उक्त जीवोंका सब छोक्तमें प्रतिबेष  
 नहीं है ।

मनुष्यगतिमें मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त व मनुष्यनियों द्वारा स्वस्था परसे  
 कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ १८ ॥

यह मूल सुगम है ।

उक्त तीन प्रकारके मनुष्यों द्वारा स्वस्थानमे लोक्तका अक्षयपातनां माग स्पृष्ट  
 है ॥ १९ ॥

एदस्सत्त्वो बुष्पदे— सत्त्वापसत्त्वाय विहारवदिमत्त्वाणहि चतुष्टु लोगायम  
संखेज्जदिमागो फासिदो, तीदे काल पुब्बवइरियदवमवेषेण वि माणुसुत्तमत्तदो परदो  
मत्तुसाग गममामावादो । माणुसुत्तसस्स पुण संखेज्जदिमागो फामिदो, उव्वरिगमवा-  
मावादो । अपवा विहारेण माणुसुत्तो गो देवसो फामिदा ति च्छं मगति, पुम्बवइरियदेव  
संबंधेण उव्व देवज्जोपयत्तस्सुप्पायवर्ममवादो ।

समुग्घादेण केवडिय खेत फोसिद ? ॥ २० ॥

सुगम ।

लोगस्स असखेज्जदिमागो अमखेज्जा वा भागा सव्वलोगो  
वा ॥ २१ ॥

वेदण-कसाय-वउम्भियपदाय विहारवदिमत्त्वाणमगा । तेजाहारपदाय मत्त्वाय  
सत्त्वायमगो । मत्त्वायपदाय सव्वलोगो फामिदो, तीदे काले मत्त्वायि लोगखेत्त माणुमार्य

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— इत्थान्मत्त्वाय वा विहारवत्त्वायमसे वाट  
कोकोका असंख्यातवा भाग स्पष्ट है क्योंकि मतीत काममे पूर्वके वैरी देवोंके सम्बन्धसे  
भी माणुपोत्तर परतके माय मनुष्याका गमन नहीं है । परन्तु माणुपसत्त्वाय संख्यातवा  
भाग स्पष्ट है, क्योंकि माणुपसत्त्वाके ऊपर उक्त मनुष्योंका गमन नहीं है । अपवा  
विहारकी अपेक्षा कुछ कम माणुपसत्त्वा स्पष्ट है ऐसा चेहरे जाचार्य करते हैं क्योंकि  
पूर्ववैरी देवोंके सम्बन्धसे ऊपर कुछ कम एक ठाक पोवनके उत्पन्नकी सम्भावना है ।

उपर्युक्त मनुष्योंके द्वारा समुत्पातकी अपेक्षा किना क्षेत्र स्पष्ट है ? ॥ २० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपर्युक्त मनुष्योंके द्वारा समुत्पातकी अपेक्षा सावका जनसंख्यातवा भाग,  
असंख्यात बहुभाग, अपवा मर्ष लोक स्पष्ट है ॥ २१ ॥

अनासमुत्पात कपायसमुत्पात और वैदिकविद्वंसमुत्पात पर्यकी अपेक्षा  
सावका निरूपण विहारवत्त्वायमके समान है । तत्रसमुत्पात और सावका  
समुत्पात पर्यकी अपेक्षा स्पर्धामयकपाय संस्थावत्त्वाय पर्यके समान है ।  
मात्वायिकसमुत्पातकी अपेक्षा उक्त मनुष्योंके द्वारा सर्व लोक स्पष्ट है क्योंकि,  
जनीत कावकी अपेक्षा सब लोकसोभमे मात्वायिकसमुत्पातसे मनुष्योंका गमन पाया

मरणतिपण गमपुत्रलमादा । दृढ-कदाह सोगपूरणपरूपणा सुगमेचि (म) परुबिज्जदे ।

उववादेहि केवडिय खेत फोसिद ? ॥ २२ ॥

सुगम ।

लोगस्स असखेज्जदिभागो सब्वलोगो वा ॥ २३ ॥

लोगस्सासखे ज्जदिभागो चि निरमा बहुमाणकालावेकखो । एदेण जाणिज्जदे पडुमाणातीदकाससत्रविस्सुत्ताणि दो वि फामणे परुबिज्जति चि । अदीदि धनसम्भसोगो फोसिदो, सुहुमेहि सब्वलोगावडिण्हि आगतून मज्जुस्सेसु उप्पज्जमाभेहि आङ्गिरज्ज माणलोगदमणादा । क्व पचचालीसजोमणलकखबाहल्लतिरियपदरमेचागासपदेसडिद मज्जुस्सहि सम्भसोगा आङ्गिरज्जदि ? न, मज्जुमगद्वपाभोग्गापुत्रिविवागजोग्गागास, पदेसेहि सम्भसोगपेरेतेसु मज्जे च समयाविराहेण अवडिण्हि गिगत्तून संखेज्जसखेज्ज जोयणायामेण मज्जुमगद्वसुवगएहि सम्भतीदकालमि सम्भलोगानूरुप पडि विगहामाणादो ।

जाता है । दृष्ट कपार मतर न छोकरूप ससुवधातपदकी प्रकृषणा सुगम है इसलिय वनकी प्रकृषणा यहाँ नहीं की जाती है ।

उपर्युक्त मनुष्योंके द्वारा उत्पादपदकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पष्ट है ? ॥ २२ ॥

यह सब सुगम है ।

उपवाद पदकी अपेक्षा उक्त मनुष्यों द्वारा साकफ़ अर्मम्प्यातर्वा भाग अपेक्षा सब लेक स्पष्ट है ॥ २३ ॥

साकफ़ा अर्मम्प्यातर्वा भाग यह निर्दिष्ट वर्तमान कालकी अपेक्षा है । इससे जाता जाता है कि वर्तमान न अतीत कालसम्बन्धी शेष बातों ही स्वयंभवे प्रकृत हैं । अतीत कालकी अपेक्षा सर्व प्रत्यक्ष स्पष्ट है क्योंकि मनुष्योंमें जाकर उत्पन्न होनेवाले सब लोकमें स्थित सूक्ष्म जीवोंसे परिपूर्ण लोक देख जाता है ।

शुद्ध—वैतासीस भाग योजन बाहस्पवासे तिचम्पनरमान माकाशमदेशोंमें स्थित मनुष्योंके द्वारा सब लोक कैसे पूरे किया जाता है ?

समाधान—नहीं क्योंकि साकफ़ पर्यन्तभागोंमें न मध्यमें भी समयविरोधसे स्थित वेस मनुष्यगतिप्रामाण्यानुपूर्विके विपाकयोग्य माकाशमदेशोंसे निकसकर संख्यात एव अर्मम्प्यात योजन आयामरूपसे मनुष्यगतिको प्राप्त हुए मनुष्यों द्वारा सर्व अतीत कालमें सर्व लोकके पूर्ण करणमें कोर विरोध नहीं है ।

मनुसअपज्जत्ताण पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्ताणं भंगो ॥२४॥

बहुमात्र खेचं । सत्याससत्यास-वेदज-कसायसमुग्धादेहि ऋद्धं सोगायमसखे  
जदिभागो, मापुसखेचस्त सखेजदिभागो सीदे फाळे फोसिदो । मारणसिय-उपवादेहि  
सम्बन्धेगो । तेण पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्ताणं भंगो ण होदि चि ? न, दप्पाट्टियणए  
अबल्लेविग्गमणे दोसाभाषादो ।

देवगदीए देवा सत्याणेहि केवडियं खेत फोसिद ? ॥ २५ ॥

सुगमं ।

लोगस्त असखेज्जदिभागो अट्टचोइस भागा वा देसूणा  
॥ २६ ॥

एदस्त अत्थो दुग्घदे- बहुमात्रपरुवणाए खेचभंगो । सत्यामेव देवेहि तिण्ह

मनुष्य अपर्याप्तोक्के स्पर्शनका निरूपण पचन्त्रिय तिर्येच अपर्याप्तोक्के समान  
हे ॥ १४ ॥

मनुष्य अपर्याप्तोक्के वर्तमानकाधिक स्पर्शनका निरूपण क्षेत्रमरूपणाके समान  
हे । स्वस्थानस्वस्थान क्षेत्रमासमुद्घात और कयायसमुद्घात पदोकी अपेक्षा चार  
छोकोका असंख्यातवां माग व मापुपसंभका संख्यातवां माग अतीत कासमें स्पष्ट है ।  
मारणास्तिकसमुद्घात व उपपादपदोसे सर्व लोक स्पष्ट है ।

प्रश्न—इसी कारण मनुष्य अपर्याप्तोक्के स्पर्शनको पंचेन्द्रिय तिर्येच अपर्याप्तोक्के  
समान कहा जा सक नहीं है ?

समाधान—नहीं क्योंकि द्रव्यार्थिक लयका व्यवहारम करनेपर बीसा करनेमें  
कोई दोष नहीं है ।

देवगतिमें देव स्वस्थान पदोसे कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ॥ २५ ॥

एह एव सुगम है ।

देव स्वस्थान पदोसे लोकाका असंख्यातवां माग अथवा कुछ कम जाठ बटे चौदह  
भाग स्पर्श करते हैं ॥ २६ ॥

इस प्रश्नका नर्थ कहते हैं—वर्तमानकाधिक स्पर्शनकी प्रकृता क्षेत्रमरूपणाके  
समान है । देवों द्वारा स्वस्थानकी अपेक्षा तीन छोकोका असंख्यातवां माग,

सोगणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अट्टाद्वज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । क्व तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो ? ण एम दोसो, चदाद्वज्ज-बुह मेसइ कोप्प-सुक्कगार-बक्खच्च-तारागण मट्टविहवेंतरपिमाणेहि य इद्वखेचाम तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेचाममुवलमादो । मिहारेण अट्टाद्वज्जमागा देघणा फासिदा । मरु-मूलादो उवीर छरज्जुमघो हेइा दोरज्जुमेघो देवाण विहारो, तेण अट्टाद्वज्जमागो पि बुघो । केण ते ऊणा ? तदियपुढवीण हेट्ठिमबोयणसहरसेण ।

समुग्घादेण केवडिय खेत फोसिद ? ॥ २७ ॥

सुगम ।

लोगस्स असखेज्जदिभागो अट्ट-णवचोदसमागा वा देसूणा ॥ २८ ॥

लोगस्स असंखेज्जदिभागो पि पिरेसो पट्टमाणक्खेचपरूपणामो, तेण

वियग्खोक्का संप्यातवां माग और बडारं द्वीपसे असत्प्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है ।

श्लोक—वियग्खोक्का संप्यातवां माग केसे चरित हाता हैं ?

समाधान—यह कोई द्वीप नहीं है क्योंकि वन्द भारित्य बुध बुहस्पति, धनि शुक्र, मंगारक ( मंगल ) सप्तम तारागण और आठ प्रकारके व्यन्तर विमानोंसे यह क्षेत्र वियग्खोक्का संप्यातवां भागप्रमाण पाय जाते हैं । विहारकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे औरह माग स्पृष्ट हैं । मरुमुखसे ऊपर छह राजुमान और नीचे दो राजुमान क्षेत्रमें देवोंका विहार है इसलिये आठ बटे औरह माग देखा कहा है ।

श्लोक—वे आठ बटे औरह माग किससे कम हैं ?

समाधान—पृथीप पृथिवीके नीचे एक छहस योजनसे कम हैं ।

दशों द्वारा समुद्रपातकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ २७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

समुद्रपातकी अपेक्षा लोक्का असत्प्यातवां माग अथवा कुछ कम आठ बटे औरह वा नौ बटे औरह माग स्पृष्ट हैं ॥ २८ ॥

लोक्का असत्प्यातवां माग यह निर्देश वर्तमानक्षेत्रप्रकरणकी अपेक्षासे है



एष्य श्रेष्ठाभिभोगदारपरुषणा आ श्रेष्ठा सा सप्या परुषेदन्वा । संपदि तीद  
 काष्ठलेचपरुषणा कीरदे- वेयम-कषाय-वडभिगएहि अङ्घोदसभागा फोसिदा । कुशो ?  
 विहरमाणा देवार्थं समविहारोत्तस्संतरे वेयम-कषाय-विउम्बनाममुबलमादो । मारणं  
 त्पिष्य बवचोदसभागा फोसिदा, मेरुम्बलो उवति सच हेहा दोरम्बुमेचउचर्मते  
 तीद काष्ठ सप्यस्य कयमारणंतिपदेवाममुबलमादो ।

उववादेहि केवडिय खेत्तं फोसिद ? ॥ २९ ॥

सुगर्म ।

लोगस्स असखेज्जदिभागो छचोदसभागा वा देसूणा ॥३०॥

सोमस्स असखे-अदिभागो चि बहुमामखेर्षं पङ्कच भिरेसो कश । तेपेस्य  
 श्रेष्ठापरुषणा सप्या कयन्वा । तीदकाष्ठलेचपरुषणं कस्माभो- छचोदसभागा देसूणा ।  
 कुशो ? मारणप्पुदकप्पा चि तिरिफल्ल मनुसअसंअदसम्मादिद्वीण संअशसअदण च उववाडु  
 बलमादो ।

इसलिये यहाँ आ क्षेत्रानुशांगशास्त्ररूपका धार्य हो उस सबकी प्रकल्पना करना चाहिये ।  
 यह अतीत काष्ठसम्बन्धी क्षेत्रप्रकल्पना की जाती है— वेदमासमुत्पात अथवासमुत्पात  
 और वैश्विदिकसमुत्पात पक्षोंकी अपेक्षा अष्ट बडे चौदह भाग स्पृष्ट हैं क्योंकि विहार  
 करनेवाले पक्षोंके अपने विहारक्षेत्रके भीतर अथवासमुत्पात अथवासमुत्पात और  
 वैश्विदिकसमुत्पात पर पाये जाते हैं । मारणास्तिकसमुत्पातकी अपेक्षा भी बडे चौदह  
 भाग स्पृष्ट हैं, क्योंकि, मेरुम्बले ऊपर जात और नीचे हो राजसुमात्र क्षेत्रके भीतर  
 सर्वत्र अतीत काष्ठके मारणास्तिकसमुत्पातकी प्राप्ति देख पाये जाते हैं ।

उपपादकी अपेक्षा देवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ २९ ॥

यह एक सुगम है ।

उपपादकी अपेक्षा देवों द्वारा साकका जमल्यातनां भाग अथवा कुछ कम छह  
 वत् चौदह भाग स्पृष्ट हैं ॥ २ ॥

लोकाका भेद्यत्पातनां भाग यह निर्देश वर्तमान क्षेत्रकी अपेक्षासं किंचा गया  
 है । इस कारण यहाँ सब क्षेत्रप्रकल्पना करना चाहिये । अतीत काष्ठकी अपेक्षा क्षेत्रकी  
 प्रकल्पना करते हैं— उपपादकी अपेक्षा अतीत काष्ठके कुछ कम छह बडे चौदह भाग स्पृष्ट  
 हैं, क्योंकि मारण-मन्वृत कस्य तक तिर्यच व मनुष्य अक्षयत सम्बन्धदियों और  
 श्रेष्ठासंपत्तिका उपपाद पाया जाता है ।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियदेवा सत्याणेहि केवडिय खेत्त  
फोसिदं ? ॥ ३१ ॥

सुगर्भ ।

लोगस्स असखेज्जदिभागो अद्दुट्ठा वा अट्टचोइस भागा वा  
देसूणा ॥ ३२ ॥

लोगस्स असखेज्जदिभागो चि णिहेमां वहुमाण पडुच्च वुत्तो । तेण एत्थ खेत्तपरु  
पया कयम्भा । हीदस्सल पडुच्च परुषण कस्सामो— सत्याणेण वाणवेंतर-जोइसियदेवेहि  
सिद्ध लोगाणमसखेज्जदिभागो, तिरियलगस्स सखेज्जदिभागो, अट्टाइजादो असखेज्जगुणो  
फोसिदो । कुदो ? बहुमाणकाले च तिरियलोगस्स सखेज्जदिभागोइहिय अबट्टाणादो ।  
भवणवासियदेवेहि सत्याणेण चटुण्ण लोगाणमसखेज्जदिभागो, अट्टाइजादो असखेज्जगुणो  
फोसिदो । विहारवदिसत्याणेण आहुक्कचारसमागा । कुदो ? भवणवासिय-वाणवेंतर  
जोइसियदेवान् मेरूम्लादो अचो दोष्णि, उवरि नाव सोइम्मविमाणसिद्धरभयईदो  
चि दिवहुवरन्नुमेचउगणिमित्तविहारस्सुपलंभादो । परपन्चएण पुण अट्टचोइस भागा

भवनवासी, भानभ्यन्तर और ज्योतिषी देव स्वस्वान पदोंसे कितना क्षेत्र  
स्पर्श करते हैं ? ॥ ३१ ॥

यह क्षेत्र सुगम है ।

उपर्युक्त देव स्वस्वान पदोंसे लोकका असंख्यातर्षा भाग, सादे तीन राष्ट्र अथवा  
हुठ कम आठ घंटे चौदह भाग स्पर्श करते हैं ॥ ३२ ॥

‘लोकका असंख्यातर्षा भाग’ यह निर्दिष्ट पतमान काष्ठकी अपेक्षा कहा गया है। इस  
कारण यहाँ क्षेत्रप्रकरण करना चाहिये। मतीत काष्ठकी अपेक्षा प्रकरण करते हैं— स्वस्वान  
पदसे भानभ्यन्तर और ज्योतिषी देवों द्वारा तीन लोकका असंख्यातर्षा भाग तिर्यग्लोकका  
संख्यातर्षा भाग और अट्टाई द्वीपसे असंख्यातर्षा भाग क्षेत्र स्पृष्ट है क्योंकि, वर्तमान काष्ठके  
समान मतीत काष्ठमें भी तिर्यग्लोकक संख्यातर्षा भागका व्याप्तकर उतका अवस्थान है।  
भवनवासी देवों द्वारा स्वस्वानकी अपेक्षा चार लोकका असंख्यातर्षा भाग और अट्टाई  
द्वीपसे असंख्यातर्षा भाग क्षेत्र स्पृष्ट है। विहारवदस्वस्वानकी अपेक्षा चौदह भागोंमेंसे साढ़े  
तीन भाग स्पृष्ट है क्योंकि भवनवासी भानभ्यन्तर और ज्योतिषी देवोंका वचनमित्तक  
विहार मेरूमूलसे अग्नि दो राष्ट्र और ऊपर सीधमें विमानक विहारपर स्थित च्चमाइण्ड तक  
देह राष्ट्रमात्र पाया जाता है। परन्तु परनिमित्तक विहारकी अपेक्षा चण्ड देवों द्वारा हुठ

देसणा । कुरो ? उवरिमदेवेहि दिखमाणा प अट्टपचमरञ्जुओ सगपन्वएण अट्टु  
रञ्जुओ गच्छंति चि देवाणमट्टचोइसमागकासम होदि ।

समुग्घादेण केवडिय खेत फोसिद ? ॥ ३३ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असखेज्जदिभागो अट्टुट्ठा वा अट्टुणवचोदस भागा  
वा देसूणा ॥ ३४ ॥

एदस्स अरयो बुष्पदे—सोगस्स असखज्जदिभागो चि वयमं बहुमागलप  
परुवणहुं भविदं । तेम एरव खेतपरुवणा सन्ना कायन्ना । संपधि उवरिखेहि सुचा-  
वयवेहि अदीइकासखेचपरुवणा कीरदे— वयण-कमाय-वेठम्भिएहि आहुट्ठाइसमागा  
अट्टुचारसमागा वा फोसिदा । कुरो ? सग परपप्पएहि हिडताण मयण  
वापिय-वामपैत-ओदिसियदेवाण वेदण कसाय-वेठम्भिएहि सह परिणयाणमेत्थियवुच  
एउवुवर्त्तमादो । मारएतिएण पवचोइसमागा देसूणा फोसिदा । कुरो ? मेरुमूलादो देह्वो

कम भाठ बटे बीरह माग स्पृष्ट है क्योंकि, उपरिम देवास से जाये गये थे वेच साङ्गे चार  
पट्ट और स्वभिमित्तसे साङ्गे तीन वानुप्रमाण गमन करते हैं। इसलिये देवोंका स्पर्श  
भाठ बटे बीरह मागप्रमाण होता है ।

सङ्खुपातकी अपेक्षा उपर्युक्त देवों द्वारा कितना धन्न सृष्ट है ? ॥ ३३ ॥

वह सब सुगम है ।

सङ्खुपातकी अपेक्षा उपर्युक्त देवों द्वारा सोरुका असंख्यातर्थां भाग, अथवा  
चौदह मार्गोंमें कुछ कम साङ्गे तीन भाग, अथवा भाठ व नौ भाग सृष्ट हैं ॥ ३४ ॥

इस सूचना मर्यं कहते हैं — काकका असंख्यातर्थां भाग वह पचम वर्तमान  
क्षेत्रके प्रकल्पार्थे कहा गया है । इस कारण यहाँ सब क्षेत्रप्रकल्पना करना चाहिये ।  
इस समय सूत्रके उपरिम अक्षरोंसे अतीतकाससम्बन्धी क्षेत्रकी प्रकल्पना की जाती  
है— वेदनासमुत्पात कयावसमुत्पात और वैकियिकसमुत्पात पक्षोंकी अपेक्षा बीरह  
मार्गोंमें साङ्गे तीन अथवा भाठ भाग स्पृष्ट हैं क्योंकि स्वभिमित्त या परभिमित्तसे बिहाट  
करनेवाले मयववासी धारण्यन्तर और उपातिवी देवोंका वेदनासमुत्पात कयावसमुत्  
पात एवं वैकियिकसमुत्पात पक्षोंके साथ परिणत होकेएत इतना ही बल क्षेत्र पाया जाता  
है । मारएतिकासमुत्पातकी अपेक्षा कुछ कम नौ बट बीरह माग स्पृष्ट है क्योंकि मय

दोरज्जुमेत्तमहाण गंत्यं हिंदमवणादिदेवानं षणोदहिहिंदमाठकाएयवीवेसु सुक्कमारणं-  
तिपारं नवचोएसमागमेचफोसणुबलमादो ।

उववादेहि केवडिय खेत फोसिद ? ॥ ३५ ॥

सुगममेदं ।

लोगस्स असखेज्जदिभागो ॥ ३६ ॥

एदस्स अत्तो घुच्छेदे— एत्थ पक्कमाणपरूबणाए खेतमंगो । संपभि तीदकाल-  
खेत्तपरूबणं कस्सामो । तं जहा— उववादपरिणदेहि मवणवासिय-वाणवेंतर-ओदिसिएहि  
तिह्म लोगायमसखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स सखेज्जदिभागो, अङ्गाइन्नादो असंखेज्ज  
गुणो फोसिदो । ओइसियाव नवजोयणसदवाइल्ल तिरियपदरं ठविय उज्जुमेगुणवचासखडामि  
करिय पदरागारेणं ठइदे तिरियलोगस्स सखेज्जदिभागमेचं उववादखेत्तं होदि । वान  
वेंतराणं ओयणलक्खवाइल्ल तिरियपदरं ठविय उज्जुमेगुणवचासखडामि करिय पदरागारेण  
ठइदे तिरियलोगस्स सखेज्जदिभागमेचमुववादखेत्तं होदि । मवणवासियारं पि ओयव

मूखसे नीचे दो राजुमात्र मार्ग जाकर स्थित मवणवासी भादि देवोंका प्रभोवधि  
बातवखणमें स्थित अन्धकारिक जीवोंमें मारणास्तिकसमुद्घात करते समय नौ बटे चौदह  
भागमात्र स्पर्शत पाया जाता है ।

उपपाद पदकी अपेक्षा उक्त देवों द्वारा कितना क्षेत्र सृष्ट है ? ॥ ३५ ॥

यह एक सुगम है ।

उपपाद पदकी अपेक्षा लोकका असंख्यातवां भाग सृष्ट है ॥ ३६ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— यहाँ वर्तमान प्रकृष्टा क्षेत्रप्रकृष्टाके समान है ।  
इस समय अतीतकालिक क्षेत्रप्रकृष्टा करते हैं । यह इस प्रकार है— उपपादपरिभूत  
मवणवासी वानध्यन्तर और ज्योतिषी देवों द्वारा तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग,  
तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग व अङ्गाईपीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र सृष्ट है । ज्योतिषी  
देवोंके नौ सौ योजन बाह्यस्वरूप तिर्यक्प्रतलको स्थापित कर व ऊपरसे उर्ध्ववास कण्ड  
करके प्रतराकारसे स्थापित करनेपर तिर्यग्लोकका संख्यातवां भागमात्र उपपादक्षेत्र  
होता है । वानध्यन्तर देवोंके एक लाख योजन बाह्यस्वरूप तिर्यक्प्रतलको स्थापित कर व  
ऊपरसे उर्ध्ववास कण्ड करके प्रतराकारसे स्थापित करनेपर तिर्यग्लोकका संख्यातवां  
भागमात्र उपपादक्षेत्र होता है । मवणवासियोंके भी एक लाख योजन बाह्यस्वरूप राजु

सम्बन्धवाहक संज्ञापदं ठविय पुनं न खंडिय पदरागारेण अदे तिरियसोगस्त संसेज्जदि मागमेचद्वबादसेच होदि ।

सोहम्मीसाणकप्यवासियदेवा सत्याण-समुग्घाद देवगदिभगो ॥ ३७ ॥

एतव बहुमाजपरूवणाए ऐचमंगो । अदीदकालमस्सिदूण परूवणाए वि इय द्वियनयावठवणेण देवगदिभगो होदि, न पञ्चद्वियनयावठवणम्मि । इदा ! सत्त्वानेण सोचम्मीसाणदेवेहि चदुण्हं लोगाणममसेज्जदिभागो, अङ्गाइज्जादो असंसेज्जगुणो फोसिदो, विहार-वेयण-कमाय-वेठविय-मारणतियपरिणएहि अङ्ग-नवणोरसमागा देवना फोसिदा चि चिदिदुत्तादो ।

उधवादेहि केवडिय खेत्त फोसिद ? लोगस्त असंसेज्जदिभागो दिवइचोइसभागा वा देसूणा ॥ ३८ ॥

बहुमाजकालं पइएण सोगस्त अससज्जदिभागो, अदीदकालं पइएण दिवइ

प्रथमको स्थापित कर न पूर्वके समाज ही खंड करके प्रथमकारसे स्थापित करनेपर तिरियखोकरका संख्यातयां भागमात्र उपपादसेच होता है ।

सौधर्म-ईशान करुणासी देवोंके स्पर्शनका निरूपण स्वम्भान और समुद्घातकी अपेक्षा देवगतिके समान है ॥ ३७ ॥

यहां वर्तमानप्रकरणका क्षेत्रप्रकरणके समान है । मतीत काळका भाष्य करके स्पर्शनकी प्रकरण भी प्रत्यार्थिक मयके मयकंजतसे देवगतिके समान है किण्टु वर्णार्थिक मयके वह देवगतिके समान नहीं है । इसका कारण यह है कि स्वस्थावसे सौधर्म ईशान करुणासी देवों द्वारा बार खोकोका असंख्यातयां भाग और मकार्ण द्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है तथा विहार देवनासमुद्घात कयापसमुद्घात वैकियिक-समुद्घात और मारणासिदसमुद्घात पदोंसे परिणत उक्त देवों द्वारा कुछ कम भाठ बडे बीदह और भी बडे बीदह भाग स्पृष्ट हैं यसा निर्दिष्ट किया गया है ।

उपपाद पदकी अपेक्षा उक्त देवों द्वारा कितना धन स्पृष्ट है ? उपपाद पदकी अपेक्षा उक्त देवों द्वारा साकस असंख्यातयां भाग मयवा पौदह भागोंमे कुछ कम देव भागप्रमाण धन स्पृष्ट है ॥ ३८ ॥

वर्तमान काळकी अपेक्षा खोकरका संख्यातयां भाग और मतीत काळकी

चोदसमागा देसणा । कुदो ? तिरिक्ख-मणुस्सामं तीदे फाळे पहापत्थडे उप्पन्नताण दिवङ्गुरन्नुपाहल्लरन्नुपदरमेत्तफोसशुबसंमादो ।

सणक्कुमार जाव सदर-सहस्सारकप्पवासियदेवा सत्याण-समु ग्घादेहि केवडिय खेत्त फोमिद ? ॥ ३९ ॥

सुगम ।

लोगस्स असखेज्जदिभागो अट्टचोदसमागा वा देसूणा ॥४०॥

वङ्गुमाणफाल पङ्गुण्ण लोगस्स असखेज्जदिमागा पि भिरिङ्गु । तेनेत्थ खेत्त पङ्गुणा सन्ना फायन्वा । तीदफाळे सत्त्वाभेण सोगस्स असखेज्जदिभागो फोसिदा । कुदो ? विमानकूदखेत्तस्स चटुण्हं खेगणमसंखेज्जदिभागमेत्तपमाणचादो । विहार-वेयण कसाय-वेत्तन्निप मारणतिपपदपरियएहि अङ्गुचोदसमागा द्दण्णा फोसिदा । कुदो ? तसन्नीवे मोघ्णण्णत्तय एदेसिण्णप्पचीए ज्जमावादो ।

उववादेहि केवडिय खेत्त फोसिद ? ॥ ४१ ॥

अपेक्षा कुछ कम चौदह भागोंमें डेढ़ भागप्रमाण क्षेत्र स्पृष्ट है क्योंकि मतीत काष्ठकी अपेक्षा प्रमा पट्टममें उत्पन्न होनेवाले तिरिक्ख प मणुप्पोका डेढ़ रात्रु बाहस्पथे युक्त राजुमतत्तमात्र स्पर्शन पाया जाता है ।

सनक्कुमारसे लेकर द्धतार-सहस्रार कल्प तकके देव स्वस्वान और समुद्घातकी अपेक्षा किण्णा क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ॥ ३९ ॥

यह खूब सुगम है ।

उपर्युक्त देव स्वस्वान व समुद्घातकी अपेक्षा लोकाका असंख्यातर्थां भाग मधवा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श करते हैं ॥ ४० ॥

वर्तमान काष्ठकी अपेक्षा लोकाका संख्यातर्थां भाग एसा निर्देश किया है । इस कारण यहां छत्र क्षत्ररूपणा करना चाहिये । मतीत काष्ठमें स्वस्थामकी अपेक्षा लोकाका असंख्यातर्थां भाग स्पृष्ट है क्योंकि विमानकूद क्षेत्रक्षत्र प्रमाण चार छाकीके असंख्यातर्थां भागप्रमाण है । विहार वेदनासमुद्घात कपायममुद्घात वैकिपिकसमुद्घात और मारणात्तिकसमुद्घात यहाँसे परिजत उक्त दशों द्वारा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं क्योंकि अस लोकोको छोड़ मन्थर जनकी उपपत्तिका अभाव है ।

उक्त दशों द्वारा उपपादकी अपेक्षा किण्णा क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ ४१ ॥

सुगम ।

लोगस्त असंख्येज्जदिमागो तिण्णि-अद्दुट्टु-चत्तारि अद्दवचम  
पचचोदसभागा वा देसूणा ॥ ४२ ॥

एदस्त अत्थो- बहुमामक्यत्तं पट्टप्प लोगस्त असंख्येज्जदिमागो षि भिदेसो ।  
तेप्पेत्थ खेत्तपक्कमा सयस्य कयय्या । अदीदिथ तिण्णि-आद्दुट्टु-चत्तारि अद्दवचम-पच  
भोदसभागा अद्दकमेव फोसिदा । इदो ? मेरूमूलादो तिण्णि-अद्दुट्टु-चत्तारि अद्दवचम-पच  
सगक्कमार माहिदक्कप्पायं परिसमची, तदो उवरिमद्दरन्हु गंत्य बग्ग-बग्गुत्तरक्कप्पाय  
परिसमची, तदो तथो उवरिमद्दरन्हु गंत्य उत्तम-काविट्टक्कप्पाय परिसमची, तदो अद्द  
रन्हु गंत्य सुक्क-महासुक्कक्कप्पायमवसायं, तथो अद्दरन्हु गंत्य सदर-सद्दरस्यारक्कप्पाय  
परिसमची होदि षि ।

आणद जाव अच्चुदकप्पवासियदेवा सत्याण-समुग्घादेहि केव  
डिय खेत्त फोसिदं ? ॥ ४३ ॥

सुगम ।

यह एक सुगम है ।

एक देवों द्वारा उपवाद पदकी अपेक्षा साकका असंख्यपातर्वा माग अथवा चौदह  
मार्गोंमें कुछ कम तीन, साढ़े तीन, चार, साढ़े चार और पांच माग स्पष्ट हैं ॥ ४२ ॥

इस सूत्रका अर्थ - बर्तमान काकडी अपेक्षा साकका असंख्यपातर्वा माग  
देसा भिदेस किया गया है । इस कारण यहाँ सत्र सेनरूपका करना चाहिये । भतीत  
कासकी अपेक्षा यथाक्रमसे चारह मार्गोंमें तीन साढ़े तीन चार साढ़े चार और पांच  
माग स्पष्ट हैं क्योंकि मरूमूलसे तीन राहु ऊपर बद्दकर सनत्कुमार माहेन्द्र कर्णोंकी  
समाप्ति है इससे ऊपर अर्ध राहु आकर अद्द ब्रह्मात्तर कर्णोंकी समाप्ति है तत्पश्चात्  
उससे ऊपर अर्ध राहु आकर कावित्त-कापिट्ट कर्णोंकी समाप्ति है उससे ऊपर अर्ध  
राहु आकर सुक्क महासुक्क कर्णोंका अन्त है तथा उससे अर्ध राहु ऊपर आकर दत्तार  
सद्दरस्यार कर्णोंकी समाप्ति होती है ।

आनतमे सेकर अप्युत्त कत्थ पक्क देवों द्वारा स्वस्थान व समुत्पात पदोंकी  
अपेक्षा कितना धन स्पष्ट है ? ॥ ४३ ॥

यह एक सुगम है ।

लोगस्त असंखेज्जदिभागो छचोइसभागा वा देसूणा ॥ ४४ ॥

बहुमाण खेचर्मगो । अदीदेण सत्याणपरिणदेहि लोगस्त असंखेज्जदिभागा फोसिदो । बिहारमदिसत्याण-वपण-कसाय-वेठभिय मारणतियपरिणएहि छचोइसभागा फोसिदा । कुदो ? मरुमूलदो अचो तसिं गमणामावण वेठभियादीणमभाषादो ।

उववादेहि केवडिय खेत्त फोसिद ? ॥ ४५ ॥

सुगम ।

लोगस्त असंखेज्जदिभागो अद्वछट्ट-छचोइसभागा' वा देसूणा ॥ ४६ ॥

पैरय बहुमाणवरुवणाए सुचर्मगो । अदीदेण आणद-पाणदकप्पे अद्वछट्ट चारसभागा, आरणञ्जुदकप्पे छचारसभागा । खेस सुगुम ।

उपर्युक्त देवों द्वारा स्वम्भान व समुद्रघात पदोंकी अपेक्षा लोकका असत्यातर्षा भाग अथवा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पष्ट है ॥ ४४ ॥

यहाँ वर्तमानमरुपजा क्षेत्रमरुपजाके समान है । अतीत कालकी अपेक्षा स्वम्भान पक्षसे परिणत उक्त द्षों द्वारा लोकका अर्धभ्यातर्षा भाग स्पष्ट है । बिहारपरत्यम्भान, पश्चिमात्ममुद्रघात कपायसमुद्रघात धीम्रियिकसमुद्रघात और मारणान्तिकसमुद्रघात पक्षोंसे परिणत उक्त द्षों द्वारा छह बट चौदह भाग स्पष्ट है क्योंकि, मरुमूलस मीण उमका गमन न होकर यहाँ धीम्रियिकसमुद्रघातादिकोंका अभाव है ।

उपपादकी अपेक्षा उपर्युक्त देवों द्वारा किना धर स्पष्ट है ? ॥ ४५ ॥

यह सब सुगम है ।

उपपादकी अपेक्षा उक्त देवों द्वारा साकका अमभ्यातर्षा भाग अथवा चौदह भागोंमें कुछ कम साढ़े पाँच या छह भाग स्पष्ट हैं ॥ ४६ ॥

यहाँ वर्तमानमरुपजा क्षेत्रमरुपजाके समान है । अतीत कालकी अपेक्षा अमत् प्राप्त करके चौदह भागोंमेंसे साढ़े पाँच भाग और आरण अच्युत कसमें छह भाग अभाव दर्शाने हैं । दोय सुवार्थ सुगम है ।



णवगेवञ्च जाव सवट्टसिद्धिविमाणवासियदेवा सत्याण-समुग्घाद  
उववादेहि केवडिय खेत्त फोसिद ? ॥ ४७ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असम्भेज्जदिभागो ॥ ४८ ॥

सुरबाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण वेपथ-कमाय-वउभिय-मारणतिय-उववादेहि  
अदीद-बहुमायेण चट्टण्ण सोगाणमसंखेज्जदिभागो, महुण्णवादा असंखे-अगुणो फेमिदो ।  
अवरि सम्भट्टसिद्धिमिह मारणतिय उववाविरहिदसेसपदेहि माणुमखेचसस संखे-अदिभागो  
पि वचमं ।

इदियाणुवादेण एइदिया सुहुमेइदिया पज्जत्ता अप्पज्जत्ता  
सत्याण-समुग्घाद उववादेहि केवडिय खेत्त फोमिद ? ॥ ४९ ॥

सुगमं ।

सन्वलोगो ॥ ५० ॥

नौ प्रवेयकोसं लकर मर्षार्थमिद्धिमिमानं तत्कक देव स्वस्थान, समुत्पात और  
उपपाद पदोंमें कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ॥ ४७ ॥

यह एक सुगम है ।

उपर्युक्त दश उक्त पदोंमें लोकका असंख्यातर्षां भाग स्पर्श करते हैं ॥ ४८ ॥

स्वस्थानस्वस्थान विहारवत्स्वस्थान वेदवासमुत्पात कपायसमुत्पात वैश्विपिक  
समुत्पात मारणातिकसमुत्पात और उपपाद पदोंकी अपेक्षा मतीत व वर्तमान कालमें  
कार काकोका संख्यातर्षां भाग और अज्ञानहीनसे मत्तकपायसमुत्पात क्षेत्र स्पृष्ट है ।  
विशेष इतना है कि सर्षार्थसिद्धिमें मारणातिक व उपपाद पदोंको छोड़ शेष पदोंकी  
अपेक्षा माणुमखेचका संख्यातर्षां भाग स्पृष्ट है ऐसा कहना चाहिये ।

इन्द्रियमार्गानुसार एकन्द्रिय, एकन्द्रिय पर्याप्त, एकन्द्रिय अपर्याप्त, छत्स  
एकन्द्रिय, छत्स एकन्द्रिय पर्याप्त और छत्स एकन्द्रिय अपर्याप्त तीन स्वस्थान,  
समुत्पात व उपपाद पदोंकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ॥ ४९ ॥

यह एक सुगम है ।

उपर्युक्त तीन उक्त पदोंमें सर्व लोक स्पर्श करते हैं ॥ ५० ॥

एत्थ बहुमाणपरूणणए खुत्तमगो । तीदण सत्याण-भयण-कसाय-मारणठिय उवषादेहि सम्बलोगो फोसिदो । वेठभियपदेण लोगस्स सखेज्जदिभागो फेसिदो । णवरि सुहुमाण वेठभिय पत्थि ।

वादरेइदिया पज्जत्ता अपज्जत्ता मत्याणेहि केवडिय खेत फोसिद ? ॥ ५१ ॥

सुगम ।

लोगस्स सखेज्जदिभागो ॥ ५२ ॥

हुदो ? पचरज्जुवाइल्लं रज्जुपदरं वाउक्कण्णयमीवाण्णरिद वादरएइदियमीवाण्णरिद सत्तपुड्ढवीआ च, तासिं पुड्ढवीण देह्वा द्विदवीसवीसज्जोयण्णसइस्सवाइल्ल तिण्णि तिण्णि वादवलयखवाभि लोगतद्विदवाउक्कण्णयखेत्त च एगहु क्खे तिण्ण लोगाण सखेज्जदिमागा णर तिरियलोगेहिदो असखेज्जगुणो खेत्तविससो उप्पन्नदि । सेण लागस्स सखेज्जदि मागो अदीद-बहुमाणेसु कालेसु उक्कदि ।

यहां वर्तमानप्रकृष्ट क्षेत्रमठपजाक समान है । मतीत काठकी अपेक्षा स्वस्थान वैदमासमुदात्त कपायसमुदात्त मारणास्तिकसमुदात्त और उपपाद् पदोंसे सर्व लोक स्पृष्ट है । वैदिकिकसमुदात्त पदसे लोकका संख्यातर्था भाग स्पृष्ट है । विशेष इतना है कि सूक्ष्म जीवोंके वैदिकिकसमुदात्त नहीं होता ।

वाटर एकेन्द्रिय, वादर एकन्द्रिय पर्याप्त और वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव स्वस्थान पदोंकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ॥ ५१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपर्युक्त जीव स्वस्थान पदोंकी अपक्षा लोकका संग्रह्यतर्था भाग स्पर्श करते हैं ॥ ५२ ॥

कर्मोक्त वायुकायिक जीवास परिपूर्ण पांच राज्ज वाइस्वरूप पदुमतर वादर एकेन्द्रिय जीवोंस परिपूर्ण सात धूमिधियो उन धूमिधियोंके नीच स्थित बीस बीस सइस योजन वाइस्वरूप तीन तीम वातवलयसत्तों तथा लोकान्तमे स्थित वायु कायिकक्षेत्रको पकथित करतेपर तीन लोकोंका संख्यातर्था भाग और मनुष्यलोक व तिपागाकसे असेख्यातगुणा क्षेत्रविशेष उच्यथ होता है । इससिध मतीत व पतमान कासोमे लोकका संख्यातर्था भाग प्राप्त होता है ।

समुद्रघाद-उववादेहि केवढिय खेत्त फोसिद ? ॥ ५३ ॥

सुगमं ।

सव्वल्लेगो ॥ ५४ ॥

एत्थ बहुमानपरूषणाए खेत्तमंगा । वदण-कमाएहि तीदे क्खस सिण्हं सोगारं  
सखेज्जदिमागो, पर तिरियल्लगेहिंतो असखेज्जगुणो फोसिदो । एवं वठम्मिएम वि,  
एवमज्जुभायदतिरियपइरम्मि सअरत्थ विठअमाणवाठक्कइयाणं तीदे क्खे उवल्लमादा ।  
मारपेतिय-उववादेहि सअरल्लेगो फोसिदो ।

वीइदिय-तीइदिय-चत्तरिंदिय-यज्जत्तापज्जत्ताणं सत्थाणेहि केव  
ढियं खेत्त फोसिद ? ॥ ५५ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिमागो ॥ ५६ ॥

समुद्रघात व उपपादकी अपेक्षा उक्त बीजों द्वारा कितना क्षेत्र सृष्ट है ? ॥ ५३ ॥  
यह सूत्र सुगम है ।

उक्त बीजों द्वारा समुद्रघात व उपपादकी अपेक्षा सब लोक सृष्ट है ॥ ५४ ॥

यहां वर्तमानप्रकरण का क्षेत्रप्रकरणवाक समान है । जेवमासमुद्रघात और कपाप  
समुद्रघात पर्वसे अतीत काळमें तीव्र झोकोंका संख्यातर्वा माग तथा मनुष्यलोक व  
तिर्यग्भोक्से असंख्यातगुणा क्षेत्र सृष्ट है । इसी प्रकार वैदिकिकसमुद्रघात पर्वकी अपेक्षा  
यही तीव्र झोकोंका संख्यातर्वा भाग और मनुष्यलोक व तिर्यग्भोक्से असंख्यातगुणा  
क्षेत्र सृष्ट है क्योंकि अतीत काळकी अपेक्षा पांच राज्ञु भायत तिर्यक्पतरमें सर्वत्र  
विहिता कट्टेबाळ वायुकाविक बीज पाये जाते हैं । मात्पास्तिकसमुद्रघात व उपपाद  
पर्वसे सर्व लोक सृष्ट है ।

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय पर्याप्त, द्वीन्द्रिय अपर्याप्त, त्रीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय पर्याप्त,  
द्वीन्द्रिय अपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय पर्याप्त और चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त  
बीजों द्वारा स्वस्वान पर्वसे कितना क्षेत्र सृष्ट है ? ॥ ५५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अपर्युक्त बीजों द्वारा लोकका असंख्यातर्वा माग सृष्ट है ॥ ५६ ॥

एतय बहूमाणपरूयभाए खेचभंगो । सत्याणसत्याण-विहारवदिसत्याणेहि तीदे  
 तिण्ह लोमाणमसखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अट्टाइन्ज्जदो असखेज्ज  
 गुणो फोसिदो । एतय सत्तानणेषे आणिज्जमाणे सर्यपइपच्चदादो परमागट्टियखेच  
 माणिय सखेज्जसुखीभंगुलेहि गुणिय तिरियलोगस्स सखेज्जदिभागमेच सत्याणखर्चं होदि ।  
 विहारवदिसत्याणखेचे आणिज्जमाण तिरियपदरं ठविय सखेज्जजोयणाणि बाहत्तं होंति  
 चि सखेज्जजोयणेहि गुणिय पुना एद बाहत्तमेगुणवचासखंजाणि करिय पदरामारेण  
 ट्ठदे तिरियलोगस्स सखेज्जदिभागो होदि । अपज्जचाय विहारवदिसत्याण णत्थिय ।

समुग्घाद उववादेहि केवडियं खेच फोसिद ? ॥ ५७ ॥

सुगम ।

लोगस्स असखेज्जदिभागो सञ्जलोगो वा ॥ ५८ ॥

लोगस्स असखेज्जदिभागो चि बहूमाणकालावेत्तो गिरेतो । तेयेत्थ खेच  
 परूयणा कायन्दा । वेयण-कमापपदेहि तीदे काले तिण्ह लोमाणमसखेज्जदिभागो, तिरिय

पदां धर्तमानप्रकरणे क्षेत्रप्रकरणके समान है । स्वस्थानस्वस्थान और बिहार  
 परस्वस्थान पदोंसे अतीत कालमें हीम सोझोंका असंख्यातर्था भाग तिर्यग्भोक्का  
 संख्यातर्था भाग और अकार्हीयम असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पष्ट है । पदां स्वस्थानक्षेत्रके  
 निकामत समय वधयप्रभ पवतके पर भागमें स्थित क्षेत्रका लाकर संख्यात  
 सूर्यगुणोंसे गुणित करनेपर तिर्यग्भोक्का संख्यातर्था भागमात्र स्वस्थानक्षेत्र होता है ।  
 बिहारपरस्वस्थानक्षेत्रके निकामतमें तिर्यग्भोक्को स्थापित कर संख्यात योजन  
 बाहस्य है अत संख्यात योजनोंसे गुणित कर पुनः इस बाहस्यके उर्नभास करण  
 करके प्रतराहारसे स्थापित करनेपर तिर्यग्भोक्का संख्यातर्था भाग होता है । अर्थात्  
 आर्षिक बिहारपरस्वस्थान नहीं होता ।

समुत्पात व उपपादकी अपेक्षा उक्त शीषों द्वारा कितना क्षेत्र स्पष्ट है ? ॥५७॥

पह बूझ सुगम है ।

समुत्पात व उपपादकी अपेक्षा उक्त शीषों द्वारा लाकका असंख्यातर्था भाग  
 अपवा सुर्षे लोक स्पष्ट है ॥ ५८ ॥

भोक्का असंख्यातर्था भाग वह निर्देता बतमान कासकी अपेक्षा है इसलिये  
 पदां सत्रप्रकरण करना चाहिये । यद्भासमुदात और कयायममुदात पदोंकी अपेक्षा  
 अतीत कालमें हीम आर्षिक असंख्यातर्था भाग, तिर्यग्भोक्का संख्यातर्था भाग, और

सगस्म मयेन्द्रदिभाग, अङ्गुलान्त्रादो असस्येजगुणो फोमिदो । इदो ? पुत्रवेरियसबभेज  
तिगियपदरं मन्त्र द्विदिभागविगलिदियाण सभरत्य तीद् कषाय-वेयषायसुयलंभादो । एतो  
वासइत्तो । मारणविय उववादेहि सभरहोगो फोमिदा, सभरत्य गमयागमयविरोहा  
भावावो । विगलिदियअपञ्चत्वाय वेयण-कमाययेवान सन्धाणर्मगो, तत्य निहारवदि  
मत्पाणम्म अमावादो ।

पर्चिदिय-पर्चिदियपज्जत्ता सत्याणेहि केवडिय खेत फोसिद ?  
॥ ५९ ॥

सुगम ।

लोगस्स अमखेज्जदिभागो अट्टुचोइसभागा वा देसूणा ॥६०॥

लोगस्स अमखेज्जदिभागो चि गिदेमो अङ्गुमायावेत्ता । तयेत्य खत्तपस्सया  
कयन्ना । संपधि वासइत्तो ताव उन्धे— सन्धाणेहि तिद्द लोगायमसखेज्जदिभागो,  
तिरियलोगस्स मयेन्द्रदिभागो, अङ्गुलान्त्रादो असस्येजगुणो फोसिदा । एदम्मि खेचे

अङ्गारिणीपत्त असक्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है क्योंकि पूर्वपैरिबोंके समन्वये सर्व तिर्यक्  
मतरमे धूमनेबाध विच्छेदित्रिय जीबोंके सर्वत्र मतीत काङ्ककी अपेक्षा कषापसमुद्घात  
व वेवनासमुद्घात पर पाये जाते हैं । यह वा शब्दसे सूचित मर्थ है । मारणात्मिक  
समुद्घात व उपपाद पदोंसे सर्व कोक स्पृष्ट है क्योंकि सर्वत्र इत्य जीबोंके गमना  
गमनमें कोई विरोध नहीं है । विच्छेदित्रिय अपर्याप्त जीबोंके वेवनासमुद्घात मीट  
कषापसमुद्घात पदोंकी अपेक्षा क्षेत्रका निकषय स्वरूपान पदके समाज है क्योंकि  
विहार वत्स्वस्थानपदका उभयमें अभाव है ।

पंचेन्द्रिय और पंचन्द्रिय पर्याप्त जीव स्वस्थानपदोंसे किन्ने क्षेत्रत्र स्पर्थ  
करते हैं ? ॥ ५९ ॥

यह सच सुगम है ।

उपयुक्त जीव स्वस्थानपदोंमें लोकाका असक्यातर्वा भाग, अथवा कुछ कम आठ  
वन् चौदह भाग स्पर्श करते हैं ॥ ६० ॥

लोकाका असक्यातर्वा भाग यह निर्वैश वर्तमान काङ्ककी अपेक्षासे है । इस  
शिवे यहाँ क्षेत्ररूपणा करना चाहिये । अब यहाँ वा शब्दसे सूचित मर्थ करते हैं—  
स्वरूपानपदोंसे तीन काङ्कका असक्यातर्वा भाग तिर्यक्कोकका संक्यातर्वा भाग और  
अङ्गारिणीपत्त असक्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । इस क्षेत्रक निकषनेमें राज्यमतरको स्थापित

आपिन्धमाय रन्नुपदं ठविय सखेअगुलेदि गुभिय ससवीववग्निप्रयममुदेदि ओहूह  
 खेचमवणिय पदरागारेण छदे तिरियसोमम्म सखेअदिभागो होदि । पंचिदियतिरिक्क  
 अपन्धचानं विगळिदियअपन्धचानं च सत्याणखेच पुण सपपहपम्बयस्स परदो चैव  
 होदि, मोगभूमिपडिभागम्मि तेसिमुप्पचीण अभावाद्दो । अपचा पुग्गवेरियदेवपत्रोगेण  
 मोगभूमिपडिभागदीव-समुदे पडिदतिरिक्ककन्वरेसु तसअपन्धचानमुप्पची अतिय चि  
 मणताणमहिप्पाण्ण खेत्ते आपिन्धमाये सखेअगुलवाहल्ल रन्नुपदं ठविय एगुण  
 वचासखुवाभि करिय पदरागारेण छदे अपन्धचसत्याणखेच तिरियलोगस्स सखेअदि  
 मागा हादि । एते विहारसत्याणेषु वि, मिचामिचदेवपत्रोएण सम्बदीव-समुदेसु विहारस्स  
 विरोहाभावाद्दो । गवरि देवाण विहारमस्सिदूण अहूचोहममागा देवला होंति ।

समुग्घादेहि केवडिय स्वत्त फोसिद ? ॥ ६१ ॥

सुगम ।

लोगस्स अमस्सेज्जदिभागो अट्टुचोद्वसभागा वा देसूणा अस  
 खेज्जा वा भागा सव्वलोगो वा ॥ ६२ ॥

कर व सख्यात भगुमोसे गुणित कर मौर उसमोसे वस जीव रहित समुद्रोंसे व्याप्त क्षेत्रको  
 कम कर प्रतराकारसे स्थापित करनेपर तिरिक्कोकका संख्यातयां भाग होता है । किन्तु  
 पंचगिदिय तिरिक्क अपयाप्त मौर तिरिक्कगिदिय मगवीप्त जीवोंका स्वस्थानसेव स्वयंमम  
 पंचत्तक पर भागमें ही है क्योंकि भोगभूमिप्रतिभागमें उनकी उत्पत्तिका भागाव है ।  
 अथवा पूर्ववैरी इकोंके प्रयोगसे भोगभूमिप्रतिभागरूप द्वीप समुद्रोंमें पड़े हुए तिरिक्क  
 दारीयोंमें वस अपयाप्तोंकी उत्पत्ति जाती है एसा कहनपासे भावापोंक ममिप्रापसे उक्त  
 सचकं विहासत समय संख्यात भगुम बाह्यरूप रात्रुमतको स्थापित कर व उनचास  
 लच्छ करके प्रतराकारसे स्थापित करनेपर अपयाप्त जीवोंका स्वस्थानसेव तिरिक्कोकके  
 संख्यातयें भागप्रमाण होता है । इसी प्रकार विहारपत्तस्वस्थानपदकी अपेक्षा भी स्थान  
 प्ररूपणा करना चाहिये क्योंकि मित्र व छद्म स्वरूप वयोंके प्रयोगसे सब द्वीप समुद्रोंमें  
 विहारका कोई विरोध नहीं है । विशेष इतना है कि देवोंके विहारका भाषय कर कुछ  
 कम मात्र बड़े भीहद भाग होते हैं ।

समुद्रपातोंकी अपेक्षा उक्त जीवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ ६१ ॥

पद गृह सुगम है ।

समुद्रपातोंकी अपेक्षा उक्त जीवों द्वारा उक्तका असंख्यातयां भाग, कुछ कम  
 मात्र बट चौदह भाग, अपयाप्त बहूमाय, अपचा मर्ष उक्त स्पृष्ट है ॥ ६२ ॥

लोगस्व असखेज्जदिमागो पि विहेतो बहुमागावेकसा । त्वेग्य खेत्तव्वपपा  
 कायव्वा । वयम-कमाय-वेठिण्णिहि अहुत्ताइसमागा फोसिदा, विहरंतइवाण सम्भत्य  
 पेयण-कसाय-विठम्भणाण विरोहामानादो । तेशाहारपदेहि चट्टण्ह लोगाणमसखेज्जदि  
 मागो, माणुसपुचस्स ससेज्जदिमागो । दइगदेहि चट्टण्ह मागाणमर्मखेज्जदिमागो,  
 माणुसपेत्तादो अमखेज्जगुमो । एव क्वाइगदेहि पि । पवरि ठिरियल्लोगादो इल्लेज्ज  
 गुमो । एत्तो वामइत्या । पइरगदेहि असपुत्तमा भागा, वादवत्तर मौत्थ्य सम्भत्याइत्तादो ।  
 मारमंतिय-लोगपुत्तेहि सम्भलोगो फोसिदो ।

उववादेहि केवडिय खेत्त फोसिद ? ॥ ६३ ॥

सुगमं ।

लोगस्व असखेज्जदिमागो सब्वलोगो वा ॥ ६४ ॥

लोगस्व अमखेज्जदिमागो पि विहेतो बहुमागावेकसा । त्वेग्य खेत्तव्वपपा

लोकका असंख्यातर्था माग यह निर्दिष्ट वर्तमान काळकी अपेक्षा है । इस  
 कारण यहाँ क्षेत्रमरूपका करना चाहिये । वेदवाचसमुद्घात कयापसमुद्घात और वैदिक  
 समुद्घात पक्षोंमें आठ बड़े लोक माग स्पष्ट हैं क्योंकि, विहार करनेवाले लोकोंके  
 सर्वत्र वेदवाचसमुद्घात कयापसमुद्घात और वैदिकसमुद्घात पक्षोंके विरोधका अभाव  
 है । वेदवाचसमुद्घात व आहारकसमुद्घात पक्षोंसे चार लोकोंका असंख्यातर्था माग  
 और मानुसपुत्रका संख्यातर्था माग स्पष्ट है । वृत्तसमुद्घातका मात जीवों द्वारा चार  
 लोकोंका असंख्यातर्था माग और मानुसपुत्रसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पष्ट है । इसी प्रकार  
 कयापसमुद्घातपक्ष जीवों द्वारा भी स्पष्ट है । विशेष इतना है कि उक्त द्वारा तिर्यग्लोकसे  
 संख्यातगुणा क्षेत्र स्पष्ट है । यह वा शब्दसे सूचित अर्थ है । मत्तरसमुद्घातपक्ष जीवों द्वारा  
 लोकका असंख्यात बहुमागप्रमाण क्षेत्र स्पष्ट है क्योंकि इस अपेक्षामें लोक वातव्यपक्षोंके  
 छोड़कर सर्वत्र जीवप्रदेशोंके पूर्व होता है । मारत्याणिकसमुद्घात व आकरूप-  
 समुद्घात पक्षोंसे सर्व लोक स्पष्ट है ।

उपयुक्त जीवों द्वारा उपपादकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पष्ट है ? ॥ ६३ ॥

यह पुन सुगम है ।

उपयुक्त जीवों द्वारा उपपादकी अपेक्षा लोकका असंख्यातर्था माग, अबवा सर्व  
 साक स्पष्ट है ॥ ६४ ॥

लोकका असंख्यातर्था माग यह निर्दिष्ट वर्तमान काळकी अपेक्षासे है । इस

कायम्बा । सम्बलोगद्विदसुदुमद्विण्हितो पन्चिदिण्णु आगतुण उप्पण्णपट्टममयजीवाण  
सम्बलोमे वात्रिचदमणादा उववादेण सम्बलागो फोसिदो । सत्थाण-समुग्घाद्-उववादेसु  
एयवियप्पसु क्ख सम्बन्ध यद्दुवयवप्पिदमा ? ण, तसु सगद्धानेपनियप्पममवादे ।

पन्चिदियअपज्जत्ता मत्थाणेण केवडिय खेत्त फोमिद ? ॥६५॥  
सुगम ।

लोगस्म अमखेज्जदिभागो ॥ ६६ ॥

एदस्स अय मण्णमाप्पे वडुमाण येण । अदीदण तिण्ह लोगावमसये अदिमागा,  
तिरियसागस्म एयेउअदिमागा, अद्धारज्जत्ता असख्खअणुणो फोसिदा । एदस्म कारणं  
पुण्णमत्र पन्चिद ।

समुग्घादेहि उववादेहि केवडिय खेत्त फोसिद ? ॥ ६७ ॥  
सुगम ।

कारण पदां हेतुप्रकरणा करना चाहिये । सब छाकमें स्थित सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंमेंस  
एकेन्द्रिय जीवोंमें भाकर उत्पन्न हानके प्रथमसमयवर्गी जीवोंके सर्पे छाकमें प्यात वरत  
जानने उपवादीकी अपेक्षा सब भाव शृष्ट दे ।

प्रश्न—स्वस्थान समुद्घात और उपपाद् पदोंके एक विश्वस्वरूप होनेपर सबत्र  
यद्दुवयनका निर्देश कैम किया ?

समाधान—महाँ क्योंकि उनमें स्पगत जनक विश्वस्वोंकी सम्मायना दे ।

पंचन्द्रिय अपर्याप्त जीव स्वस्थानकी अपवा किन्ना धत्र स्पष्ट करते हैं ? ॥६५॥

एद सूत्र सुगम है ।

पंचन्द्रिय अपर्याप्त जीव स्वस्थानकी अपवा छाकके अमम्यातणें मागप्रमाण  
धत्र स्पष्ट करत हैं ॥ ६६ ॥

रूम सूत्रका मय कहत समय यनमाम कायकी अपवा एवहातका निरूपण शत्र  
प्ररूपणाक समान करना चाहिये । अर्थात् कायकी अपवा तीन माकोंका मसव्यातणों  
माग निर्णयमाकका सत्वातणों माग और अद्धारणीयम समव्यातणुणा शत्र शृष्ट दे ।  
एगका कायक पूर्वमें ही बदा जा चुका है ।

पचन्द्रिय अपर्याप्त जीवों का समुद्घात और उपपाद् पदोंकी अपेक्षा  
किन्ना धत्र शृष्ट है ? ॥ ६७ ॥

एद सूत्र सुगम है ।



लोगस्स असस्वेज्जदिभागो ॥ ६८ ॥

एत्थ सेत्तपक्खर्षं कायम् ।

सब्बलोगो वा ॥ ६९ ॥

वपथ-कम्पायपदीहि तिण्हं सगामममंत्त-अदिभागा, तिरियलागस्स संत्तज्जदिभागा, अहुत्तग्गवादा अस्सत्तज्जगुणा फासिदा । एमो भासइत्थो । मारवत्थिय-उत्तवादेहि सम्भ-सोगो फासिदो ।

कायाणुवादेण पुढविकाइय वाउकाइय सुहुमतेज्जाइय सुहुम वाउकाइय तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता सत्याण-समुग्घाद-उववादेहि केवडिय खेत्त फोसिदं ? ॥ ७० ॥

सुमम ।

सब्बलोगो ॥ ७१ ॥

पंचेन्द्रिय अपर्याप्त बीजों द्वारा उक्त पदोंकी अपेक्षा लोककक्ष असम्प्राप्ततां भाग स्पष्ट है ॥ ६८ ॥

यहां वर्तमान काष्ठकी अपेक्षा क्षेत्रकक्षपणा करना चाहिये ।

अथवा पंचेन्द्रिय अपर्याप्त बीजों द्वारा उक्त पदोंमें सर्व लोक स्पष्ट है ॥ ६९ ॥

पंचेन्द्रिय अपर्याप्तों द्वारा क्षेत्रकक्षसमुद्घात भीर कषायसमुद्घात पदोंसे तीन लोकोंका असम्प्राप्ततां भाग तिरियलागका सम्प्राप्ततां भाग भीर अङ्गईदीपसे असम्प्राप्तगुणा क्षेत्र स्पष्ट है । यह वा शब्दसे सूचित अर्थ है । मारवत्थियकक्षसमुद्घात भीर उपपादकी अपेक्षा सर्व लोक स्पष्ट है ।

काममार्मगानुसार पृथिवीकायिक, वायुकायिक, सूक्ष्म तेजस्कायिक, सूक्ष्म वायु कायिक और उन्नीकिये प्राप्त व अपर्याप्त बीज स्वस्वान, समुद्घात व उपपाद पदोंकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ॥ ७ ॥

यह सूत्र सुमम है ।

उपर्युक्त बीज उक्त पदोंकी अपेक्षा सर्व लोक स्पर्श करते हैं ॥ ७१ ॥

एतत्तु बह्विधाणपरुषणाए खेचमगो । अदीदिण सन्धाण-वयण-कमाय-मारणतिय उववादीहि मन्त्रलोगो फोसिदो । तेउक्काइएहि वेउम्भियपदेण तिण्ह लोणाणमसंखेन्जदि मागो, तिरियलोगस्स संखेन्जदिमागो, अह्वाइन्नादो अमखुज्जगुणो फोसिदो । कम्म भूमिपट्टिमागसयंभूरमणदीबद्ध चव किर तउक्काइया हौति, म अण्णत्थेचि के वि आइरिया मणति । सेमिमहिप्पाएण तिरियलोगस्स संखेन्जदिमागो । अण्णे के वि आइरिया सन्धेसु बीध समुद्रेसु तेउक्काइयावाइरपन्जत्ता समरंति चि मणति । इदा ? सयभूरमणदीव समुद्रुप्पण्णाण वाइरतेउपन्जत्ताण वाएण हिरिज्जमाणाण कीडणासीलदेव परतताण वा सन्धदीव-समुद्रेसु सविउपन्णाण<sup>१</sup> गमणममसादा । फेइमारिया तिरियलोगादो संखेन्जगुणो फमिदा चि मणति । इदो ? सन्धपुट्टवीसु वाइरतेउपन्जत्ताण समवादो । तिसु वि उववेमेसु को एत्थ गेन्धो ? सन्धा चेत्तया, लुचीए अणुग्गदिदत्तादो । ण च सुत्तं तिण्हमेक्कस्स वि सुक्कस्सं होत्थम परुषयमत्थि । पहिस्सओ उवएसो वक्खामेहि वक्खणाणइरियेहि य समदा चि एत्थ सा वेत्त भिदिद्वो । वाठक्काइएहि वेउम्भियपदेण

यहां वर्तमानप्रकृपणा क्षेत्रके समान है । महीं कासकी अपेक्षा स्वस्थान क्षेत्रमासमुद्रपात कयापसमुद्रपात मारणास्तिकसमुद्रपात और उपवात्र पर्वोसे उक्त जीव सर्ष सोरु स्थर्ष करत है । तेजस्कायिक जीवोंके द्वारा वैभियिकपदकी अपेक्षा तीन सोकोका असत्पातर्षा भाग तिर्यग्कोरुका संत्पातर्षा भाग और अर्द्धादीपस असत्पातगुणा क्षेत्र स्वरूप है । कमभूमिप्रतिभागएव सर्ष स्वयम्भूरमण द्वीपमें ही तेजस्कायिक जीव होते हैं अल्पत्र नहीं ऐसा कितने ही भाषाय कहते हैं । उनके भूमि प्रायसे उक्त स्वर्धनक्षेत्र तिर्यग्कोरुका संत्पातर्षा भाग होता है । अन्य कितने ही भाषाय सव द्वीप-समुद्रोंमें तेजस्कायिक वाइर पर्याप्त जीव संभव हैं ऐसा कहते हैं क्योंकि स्वयम्भूरमण द्वीप व समुद्रमें उत्पन्न वाइर तेजस्कायिक पर्याप्त जीवोंका वायुमें क्षेत्राय जानके कारण मधवा श्रीकनरीक देबोंक परतव हानसे सर्व द्वीप-समुद्रोंमें विक्रिया युक्त होकर गमम सम्भव है । कितने भाषायोंका कहना है कि उक्त जीवोंके द्वारा वैभियिकसमुद्रपातकी अपेक्षा तिर्यग्कोरुका संत्पातगुणा क्षेत्र स्वरूप है क्योंकि सर्व पृथिवियोंमें वाइर तेजस्कायिक पयात जीवोंकी सम्भावना है ।

प्रश्न— उपर्युक्त तीनों उपदेशोंमें बीमसा उपदेश यहाँ प्रार है ?

समाधान— तीसरा उपदेश यहाँ ग्रहण करने योग्य है क्योंकि वह युक्तिसे अनु एहीत है । दूसरी बात यह है कि सूर इन तीन उपदेशोंमें एकका भी मुक्तकण्ठ होकर प्रकृपक नहीं है । पहिला उपदेश व्याख्यानों और व्याख्याताचार्योंसे सम्मत है इसलिये यहाँ उसीका निर्देश किया गया है । वायुकायिक, जीवोंके द्वारा वैभियिकपदसे तीन साकोका

तिष्ठ सोमायं सखेन्द्रदिभागो, नर तिरियसोमायं अखेन्द्रगुणो फोसिदो । इदो ?  
पंचरन्ध्रबाह्वल्ल तिरियपद्ममाहूरिय तीदे काले अवह्वाणादो ।

घादरपुढविकाहय-चादरआउकाहय-चादरतेउकाहय-घादरवण-  
फदिकाहयपत्तयसरीरा तस्सेव अपन्जत्ता सत्याणेहि केवडिय खेत्त  
फोसिद ? ॥ ७२ ॥

सुगमं ।

लोगस्त असंखेज्जदिभागो ॥ ७३ ॥

एदस्त बहुमात्रपरुवनाए खेत्तमंगो । तीदे काले एदहि तिण्हं सोगामम-  
सखेन्द्रदिभागो, तिरियसोमादो संखेन्द्रगुणो, अन्नुपन्नादो असंखेन्द्रगुणो फोसिदो ।  
इदो ? सम्बकालमहुपुढवीओ मन्वविमाणाणि च अस्सिदुम अवह्वाणादो ।

समुग्घाद-उववादेहि केवडिय खेत्त फोसिद ? ॥ ७४ ॥

सुमम ।

संख्यातवां भाग और मनुष्यको ब तिर्यगकोफसे संख्यातगुणा क्षेत्र स्पष्ट है  
क्योंकि एक जीवोंका अतीत काखकी अपेक्षा पांच राजु तिर्यकपत्रको पूर्व कर  
जबस्वान है ।

बादर प्रविषीकापिक, बादर अप्पयिक, बादर तेबस्कापिक, बादर बनस्पति-  
कापिक प्रत्येकधरीर और उनमें प्रत्येकके अपर्माप्त जीव स्वस्वान पदोंसे कितना क्षेत्र  
स्पर्ध करते हैं ? ॥ ७२ ॥

एह एव सुगम है ।

उपर्युक्त जीव स्वस्वान पदोंसे लोकक्य असंख्यातवां भाग स्पर्ध करते हैं ॥७३॥

एह सुवकी अर्धमात्ररूपमा क्षेत्रमरूपनाके समान है । अतीत काखकी अपेक्षा  
इन्हीं जीवों द्वारा तीन कोकोका संख्यातवां भाग तिर्यगकोफसे संख्यातगुणा और  
अर्द्धांशपसे संख्यातगुणा क्षेत्र स्पष्ट है क्योंकि सर्व काखमें मात्र प्रविषियों और  
मन्वविमाणांका साम्रय करके एक जीवोंका जबस्वान है ।

समुग्घाव और उपपाव पदोंसे एक जीवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पष्ट है ? ॥७४॥

एह एव सुमम है ।

लोगस्त असखेज्जदिभागो ॥ ७५ ॥

एहस्त अत्थो बुच्चदे— तिण्ण सोगाजमसखेज्जदिभागो, तिरियलोगादो सखेज्जगुणो, अङ्गुल्लज्जादो असखेज्जगुणो बङ्गुमाणे फोसिदो । सेसं खेचमगो ।

सव्वलोगो वा ॥ ७६ ॥

एत्थ वासइत्था बुच्चदे— वेयण-कसायपदपरिणदेहि वेठभियपदपरिणदेहि य तिण्ह सोगाजमसखेज्जदिभागो, तिरियलोगादो संखेज्जगुणो, अङ्गुल्लज्जादो असखेज्जगुणो फोसिदो । एत्थ वठभियपदस्त पुण्व व तिबिहं वक्खाण कायध्मं । मारणविय-उववादेहि सम्भलागो फोसिदो, बङ्गुमाणातीदकाल्लदसणादो ।

चादरपुढवि—चादरआउ—चादरतेउ—चादरवणफदिकाइयपत्तेय—  
सरीरपज्जत्ता सत्याणेहि केवडिय खेचं फोसिद १ ॥७७ ॥

सुगम ।

समुद्घात व उपाय पदोंसे उक्त जीवों द्वारा लोकका असख्यातवां भाग स्पष्ट है ॥ ७५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहत हैं— वर्तमान कालमें उक्त पदोंकी अपेक्षा तीन लोकोंका असख्यातवां भाग तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा और महाईंद्रीपसे असख्यातगुणा क्षेत्र स्पष्ट है । होय कथन क्षेत्ररूपणाके समान है ।

अथवा उक्त पदोंकी अपेक्षा सर्व लोक स्पष्ट है ॥ ७६ ॥

यहां वा घण्टसे स्थित अर्थ कहत हैं— वेदनासमुद्घात और कपायसमुद्घात पदोंसे परिणत तथा वैकियिक पदसे परिणत बह आर्थोंके द्वारा तीन लोकोंका असख्यातवां भाग तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा और महाईंद्रीपसे असख्यातगुणा क्षेत्र स्पष्ट है । यहां वैकियिक पदकी अपेक्षा पूर्वके समान तीन प्रकार व्याख्यान करना चाहिये । मारणात्मिकसमुद्घात और उपाय पदोंसे सर्व लोक स्पष्ट है क्योंकि इन पदोंमें वर्तमान व भतीत काल देखे जाते हैं ।

बादर पृथिवीकायिक, बादर मष्कायिक, बादर तेजस्कायिक और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीव स्वप्नान पदोंकी अपेक्षा कितना धन स्वर्ग करते हैं ? ॥ ७७ ॥

एह सूत्र सुगम है ।

## लोगस्स असस्वेज्जदिभागो ॥ ७८ ॥

एत्थं एतत्तन्वप्यर्थं कल्पन्, बहुमाप्यप्यनादो । तदि तिण्हं उगायमसंखं ब्रदि  
 मागो, तिरियल्लोगाद्दो संस्वेज्जगुणो, अद्दाइ-आदो असंखे-अगुणो फ़ासिदो । इद्दा !  
 अय-अत्ताय व पन्अत्ताय पि सम्पपुहवीसु अवह्वाणविरोहामानाद्दा । य व अहुसु पुहवीसु  
 पुहवि आठ-सेठ-वाठवाद्दराण वाद्दरवणफ़दिक्कइयपत्तयमरीराणं व अपन्अत्ता चेव होंति  
 पि सुयी अत्ति । अप्पाद्दरियवक्खत्ताय पुय एव व इदि । त कर्षं ! वाद्दरआठपन्अत्त  
 वाद्दरवणफ़दिक्कइयपत्तयसरीरपन्अत्तचपदि सम्पाय-अपण कमायपरिणएहि तिण्हं उगायम  
 संस्वे-अदिभागो, तिरियल्लोगस्स संस्व-अदिभागा फ़ामिदो, पिचाए ठारिममाग माहूव  
 वाद्दरआठप-अत्त-वाद्दरवणफ़दिक्कइयपत्तयसरीरप-अत्तायमप्यत्थ अवह्वाणामानाद्दो । एव  
 वाद्दरविगोदपदिक्कइयपन्अत्ताय पि वत्तन्, पत्तयमरीरत्तं पदि भद्दामानाद्दा । एव वाद्दर  
 सेठक्कइयप-अत्ताय पि । इद्दा ! सपपहप्यस्स परमागे च पद्दसिमवह्वाणो । एव

उपर्युक्त जीव स्वस्वान पदोंकी अपेक्षा लोकका असम्पातर्थां माग स्पष्ट करते हैं  
 ॥ ७८ ॥

यहाँ क्षेत्रप्रकृष्ट्या करजा बाहिये न्यायिक वर्तमान काळकी विवक्षा है । अर्थात्  
 काळकी अपेक्षा तीन लोकोंका असम्पातर्थां माग तिर्यग्लोकसं सम्पातगुणा भीर मद्दार्  
 द्वीपसे अस्तस्पातगुणा क्षेत्र स्पष्ट है क्योंकि अपर्याप्तोंके समान पर्याप्त जीवोंका मी  
 सर्वे पृथिवियोंमें अवस्थान इतना कोई विरोध नहीं है । आठ पृथिवियोंमें पृथिवीकायिक,  
 जन्मायिक तद्वत्कायिक व वायुकायिक वाद्दर जीवों तथा वाद्दर वनस्पतिकायिक  
 प्रत्येकशरीर जीवोंके अपर्याप्त जीव ही होते हैं ऐसी कोई पुक्ति मी नहीं है । परन्तु  
 अन्य मात्तावीका व्याप्यन ऐसा नहीं है ।

संक्ष—यह कैसे ?

समाधान— वाद्दर जन्मायिक पर्याप्त भीर वाद्दर वनस्पतिकायिक प्रत्येक  
 शरीर पर्याप्त जीवों द्वारा स्वस्थान वेदनासमुद्घात व कयापसमुद्घात पदोंसे परिप्लत  
 होकर तीन लोकोंका असम्पातर्थां माग और तिर्यग्लोकका सम्पातर्थां माग स्पष्ट है  
 क्योंकि बिना पृथिवीके उपरिम मागको छाड़कर जन्मायिक पर्याप्त भीर वाद्दर वन  
 स्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंका अल्प अवस्थान नहीं है । इसी प्रकार  
 वाद्दर विगोद-प्रतिष्ठित पर्याप्तोंका मी कथन करना बाहिये क्योंकि प्रत्येकशरीरके  
 प्रति दोषोंमें कोई भेद नहीं है । इसी प्रकार वाद्दर तद्वत्कायिक पर्याप्त जीवोंका मी  
 समझना बाहिये क्योंकि वनपत्रम पर्वतके पर मागमें ही इतका अवस्थान है । यह

च अष्णाइरियवक्त्राण चर्षिस्तदियपमानबलपयङ्क । पुढविक्रइया सम्पपुढवीसु होंति पि  
एद पि चर्षिस्तदियबलपयङ्क चव । ण च पुढविक्रइयादओ अंगुलस्म असखेज्जदिमाग  
मचसरीरा इदियगेज्जा, खेण इदियबलेण विहि पडिसेहा होज्ज । तम्हा' सम्प  
पुढवीओ अस्मिइम एदेसिं पादरअपज्जचार्यं व पज्जचाण पि अबहाणेण होइम्व,  
विरोहामावादो । तस्य अलता निरयपुढवीसु अगिगमो षहंटीओ णईओ च णत्थि पि  
अदि अमावो पुच्चदे, स पि ण पचदे,

पष्ठ सत्तमयो शीत शीतोष्ण पचमे स्पृतम् ।

चतुर्थ्युष्णमुद्विष्टस्तासामेव महीगुणा ॥ १ ॥

इदि तस्य पि आउ ठळ्ळ समबादो । कष पुढवीण हेइहा पचपसरीराण समबो ?  
ण, सीएण वि सम्मुच्छिज्जमाणपगण-कुडुगादीनसुवलमादा । कषसुण्हमिह ममबो ? ण,  
अञ्जुण्हे वि सम्मुप्पज्जमाणव्वासापईणसुवलमादो ।

अस्य भाषायोक्ता व्याख्यान अस्तु इन्द्रियरूप प्रमाणके बलसे प्रवृत्त है । पृथिवीकायिक  
जीव सर्वे पृथिवियोंमें होते हैं ' यह भी व्याख्यान अस्तु इन्द्रियके बलसे ही प्रवृत्त है ।  
भीर अंगुलके असप्यातके मागप्रमाण शरीरवास पृथिवीकायिकादि जीव इन्द्रियोंसे  
प्राप्त हैं नहीं जिससे इन्द्रियबलसे उनका विषाम व प्रतिषेध हो सके । अतएव इनके  
बादर अर्थात् जीवोंके समान पर्याप्त जीवोंका भी अस्तित्व सर्वे पृथिवियोंका भाग्य  
करके हाना चाहिये क्योंकि तसमें कोई विरोध नहीं है । वहाँ मरकपृथिवियोंमें  
जखती हुई अमिया भीर पडती हुई मरिपा नहीं है, इस कारण यदि उनका समाव  
कहते हा तो यह भी पठित नहीं होता क्योंकि—

छठी भीर सातवीं पृथिवीमें घीत तथा पांचवींमें शीत व उष्ण दोनों माने गये  
हैं । दोय बार पृथिवियोंमें अत्यन्त उष्णता है । ये उनका ही पृथिवीगुण हैं ॥ १ ॥

इस प्रकार ठम मरक पृथिवियोंमें अग्नायिक व तज्जस्कायिक जीवोंकी  
सम्पापना है ।

प्रश्न—पृथिवियोंके नीचे अत्येकशरीर जीवोंकी समापना कैसे है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि शीतसे भी उत्पन्न होनेवाले पगण भीर कुडुम  
भादि अमरुतिविशेष पाये जाते हैं ।

प्रश्न—उष्णतामें अत्येकशरीर जीवोंका उत्पन्न होना कैसे सम्भव है ?

समाधान—नहीं क्योंकि अत्यन्त उष्णतामें भी उत्पन्न होनेवाले ज्वालाप  
भादि अमरुतिविशेष पाये जाते हैं ।

समुग्धाद उववादेहि केवडिय खेत फोसिद ? ॥ ७९ ॥

मुमम ।

लोगस असखेज्जदिमागो ॥ ८० ॥

एत्थ खेतवण्णं फायडं, बहूमाणप्पणादो ।

सव्वलोगो वा ॥ ८१ ॥

एत्थ ताव वासइत्थो उप्पदे । सं यहा- बयण-कनाय-वेठभियपदेहि तिप्प  
सोगामसखेज्जदिमागो, तिरियसोमादो संखेज्जगुणो, अह्माण्णज्जतो असखेज्जगुणो  
फोसिदो । मारणात्थि-उववादेहि सव्वलोगो फोसिदो, एदेहि सव्वत्थ यमणागमम पडि  
विरोहाभाषादो ।

वादरवात्तन्काइया तस्सेव अपज्जत्ता सत्याणेहि केवडिय खेत  
फोसिदं ? ॥ ८२ ॥

समुद्घात व उपपाद पदोकी अपेक्षा उक्त बीजों द्वारा कितना धन्न स्पष्ट है ?  
॥ ७९ ॥

यह पूछ मुमम है ।

समुद्घात व उपपादकी अपेक्षा उक्त बीजों द्वारा लौकिक असम्पत्तियों का  
स्पष्ट है ॥ ८० ॥

यहां क्षेत्ररूपता करना चाहिये क्योंकि वर्तमान काकली विचक्षा है ।

अपना, समुद्घात व उपपादकी अपेक्षा उक्त बीजों द्वारा सर्व लोक स्पष्ट है  
॥ ८१ ॥

यहां पहले वा शब्दसे सूचित मर्य कहते हैं । यह इस प्रकार है—वेदना  
समुद्घात कपापसमुद्घात और वैकल्पिकसमुद्घात पदोकी अपेक्षा तीन क्षेत्रों का  
असम्पत्तियों का भाग तिरियसोमादसे अक्षयतगुणा और अह्माण्णज्जतो असम्पत्तियों का भाग  
स्पष्ट है । मारणात्थि-उववादेहि सव्वलोगो वा अपेक्षा उक्त बीजों द्वारा सर्व लोक स्पष्ट है क्योंकि हम बीजोंके  
सर्वत्र समतायमनक प्रति कोई विचार नहीं है ।

वादर वायुमयिक और उसके ही अपर्याप्त जीव स्वस्थान पदोमे कितना  
धन्न स्पष्ट करते हैं ? ॥ ८२ ॥

सुगम ।

लोगस्त सखेज्जदिभागो ॥ ८३ ॥

इदो ! पंचरन्धुबाहुरन्धुपदरमात्रिय अबद्धाभादा । लोगते मङ्कपुडवीणि हेम्हा  
वि अबद्धागमन्धि किन्तु तमेदस्त असखेज्जदिभागो ।

समुग्धाद-उचवादेहि केवडिय खेत फोसिद ? ॥ ८४ ॥

सुगम ।

( लोगस्त सखेज्जदिभागो ॥ ८५ ॥

सुगम । )

सव्वलोगो वा ॥ ८६ ॥

एत्थ बासहत्यो पुन्धवे— वेयण-कसाय-वेठम्भिण्हि तिण्हं उोगाण सखेज्जदि

एह एत्थ सुगम हे ।

उपयुक्त जीव स्वस्थान पदोंसे लक्षका सख्यातर्वा भाग स्पर्श करते हैं  
॥ ८३ ॥

क्योंकि पांच राशु बाह्यस्वरूप राशुमठको पूर्ण कर उक्त जीवोंका अयस्थान  
हे । इनका अयस्थान सोपान्तमे तथा माठ पृथिवियोंके नीचे भी है, किन्तु यह इसक  
अधेप्यातर्वा भागमान है ।

उपयुक्त जीव समुद्रपात व उपपाद पदोंसे कितना धन स्पर्श करते हैं ?  
॥ ८४ ॥

एह एत्थ सुगम हे ।

( उपयुक्त जीव उक्त पदोंसे लक्षका सख्यातर्वा भाग स्पर्श करते हैं  
॥ ८५ ॥

एह एत्थ सुगम हे । )

अथवा, यह लोक स्पष्ट करते हैं ॥ ८६ ॥

यहां या शब्दसंज्ञित अर्थ बहुत है— यद्दाममुद्रपात कयापसमुद्रपात और  
वेदिक्रियकसमुद्रपात पदोंसे तीन सार्थोंका संख्यातर्वा भाग तथा अनुप्यसाक व विप



भागो, भर तिरिपलागेहिता असंतुज्जगुणा फामिदा । एमा नामरया । पवरि पउधियं  
बहुमाणेण लचमगा । मारणतिय उववादेहि मन्त्रसागा फोसिदा ।

वादरवाउपज्जत्ता सत्याणेहि केवडिय खेत फोसिद ? ॥ ८७ ॥

सुगम ।

लोगस्स सखेज्जदिभागो ॥ ८८ ॥

अदीद बहुमाणेहि पचरन्नुवाहन्तरन्नुपदरमाचूरिय भवहाणादो ।

समुग्घाद-उववादेहि केवडिय खेत फोसिद ? ॥ ८९ ॥

सुगम ।

लोगस्स सखेज्जदिभागो ॥ ९० ॥

एवं बहुमाणमस्सिद्धं परुविद । तेण वयण-कमाय-मारणतिय-उववादेहि तिणं

म्होक्खे असप्पातगुणा खेत सृष्ट है । यह वा राज्यसे सूचित अर्थ है । विशेष इतना  
है कि वर्तमान काछकी अपेक्षा वैदिकिकपदका निरूपण क्षत्रप्रकपणाक समान है ।  
मारणाग्निकसमुद्घात व वपपाद् पदोंसे सर्व साक सृष्ट है ।

वादर वायुकापिक पर्याप्त अथ स्वस्थान पदोंमे कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ?  
॥ ८७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपर्युक्त अथ स्वस्थान पदोंसे लोकका संख्यातवां माग स्पर्श करते हैं  
॥ ८८ ॥

क्योंकि अतीत और वर्तमान काछकी अपेक्षा उक्त अर्थोंका पांच राजु बाहक्य  
रूप राजुमतारको पूर्वकर भवस्थान है ।

समुद्घात और उपपाद् पदोंकी अपेक्षा उक्त अर्थों द्वारा कितना क्षेत्र सृष्ट है ?  
॥ ८९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त पदोंकी अपेक्षा लोकका संख्यातवां माग सृष्ट है ॥ ९ ॥

यह वर्तमान काछका आशय कर कथन किया गया है । इसलिये वर्तमान  
समुद्घात कवापसमुद्घात मारणाग्निकसमुद्घात और वपपाद् पदोंसे तीन लोकोंका

लोगायं सखेन्द्रदिमागो, णर तिरियलोगोइतो अमखेन्द्रगुणो फोसिदो । मारणतिय उववादेहि सखलोगो वट्टमाने किण्ण पुत्तिञ्जदि ! ण, पंचरञ्जुवाइत्तरञ्जुपदंरं मोत्तण अण्णत्तय मारणतिय-उववादे करेमाणजीवाण सुद्ध त्यावत्तुवलंमादो । भेठधियपदेण खचमगो ।

सखलोगो वा ॥ ९१ ॥

वयम-कमाप-वठधिइहि तिण्णं लोमाण सखेन्द्रदिमागो, णर-तिरियलोगोइतो अमखेन्द्रगुणो फासिदा । एमो वासइत्तो । मारणतिय उववादेहि सखलोगो फासिदा, सीदकात्तप्पणादो ।

वणण्णदिकाइया णिगोदजीवा सुद्धमवणण्णदिकाइया सुद्धम णिगोदजीवा तस्सेव पज्जता अपज्जत्ता सत्याण-ममुग्घाद उववादेहि केवडिय खेत्त फोसिद ? ॥ ९२ ॥

सुग्गम ।

संप्यातवां माग तथा मनुप्यखोक व तिर्यग्खोकसे असेप्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है ।

सुंक्क—मारणात्तिकसमुद्घात व उपपाद पदोंसे यतमानमें सब लोक स्पर्श क्यों नहीं किया जाता ?

समाधान—नहीं क्योंकि पांच राज्ज वाइस्वरूप राज्जमठरको छोड़कर अन्यत्र मारणात्तिकसमुद्घात और उपपादको करनेवाके जीव बहुत धाके पाय जाते हैं । वैकियिक पदकी अपेक्षा क्षेत्रमरूपणाके समान ज्ञानना चाहिये ।

अथवा, उपर्युक्त सीनों द्वारा समुद्घात व उपपादमें सर्व लोक स्पृष्ट है ॥९१॥

वद्वन्नासमुद्घात कयावसमुद्घात और वैकियिकसमुद्घात पदोंसे ही सब लोकोंका संस्पर्धातवां माग तथा मनुप्यखोक व तिर्यग्खोकसे असेप्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । यह वा शब्दस सुचित अर्थ है । मारणात्तिकसमुद्घात और उपपाद पदोंसे सर्व लोक स्पृष्ट है क्योंकि अतीत कालकी विवसा है ।

वनस्पतिकायिक, निगोदजीव, सूक्ष्म वनस्पतिकायिक और सूक्ष्म निगोदजीव तथा उनके ही पर्याप्त व अपर्याप्त जीव स्वस्थान, समुद्घात व उपपाद पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ॥ ९२ ॥

यह सब सुग्गम है ।



तीदबहुमाणसु मारणविय-उचवादेहि सम्बलोगाब्रणाद्रो ।

तसकाइय-तसकाइयपज्जत्ता अपज्जत्ता पविंदिय-पविंदिय  
पज्जत्त-अपज्जत्तभगो ॥ ९८ ॥

सुगममेदं ।

जोगाणुवादेण पचमणजोगि-पचवचिजोगी सत्थाणेहि केवडिय  
खेत्त फोसिदं ? ॥ ९९ ॥

सुगम ।

लोगस्स असखेज्जदिभागो ॥ १०० ॥

पयो वट्टमानभिरेमो । सनेरय खेत्तरण्णणा कापय्या ।

अट्टचोदमभागा वा देसूणा ॥ १०१ ॥

एरय ताव वासइरया धुषदे- सरथायम अप्पिदभीवेहि तिण्ढ लागानमसयेज्जदि

धर्मोक्ति अतीत य यत्नमान कामोमें मारणाभित्तिरसमुत्पात भौर उपपात्त पर्रोसे  
उत्तरु ठारा तथ भाक पूर्ण किया जाता है ।

प्रसफायिक, प्रसफायिक पर्याप्त और श्रमकायिक अपर्याप्त जीवोंके स्पर्शनका  
निरूपण पंचन्द्रिय, पचेन्द्रिय पर्याप्त और पचन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके समान है ॥९८॥

यद् एव सुगम है ।

यागमार्गवानुमार पांच मनोयोगी आर पांच पचनयागी और स्वरस्थान पदोंसे  
कितना धन स्वप्न करते हैं ? ॥ ९९ ॥

यद् एव सुगम है ।

उपपुक्त और स्वरस्थान पदोंमें लच्छका अमग्न्यात्रयां माग स्वप्न करत हैं ॥१००॥

यद् वचम धर्ममान बाल्ढी भगता इ । भनपय यहाँ शब्दप्रकरणता करना  
पाहिय ।

अपरा, उक्त और स्वरस्थान पदोंमें कुछ कम भाट पट पीदह भाग स्वप्न करत  
हैं ॥ १०१ ॥

यहाँ प्रथम वा शब्दसंघुषित मय करत है— स्वरस्थानकी भंगता प्रहन जीवों

भागो, तिरियलोगस्स सखेज्जदिभागो, अट्टमत्तादा अनंरुज्जगुणो फोसिदो । एसो वासरत्थो ।  
विहारवदिसरत्थेण अट्टचारममाग दसूणा फोसिदा । कुदा ? अट्टरन्तुवाहल्ललोगणात्तीए  
मय-वधिज्जेपीयं विहारवत्तमादो ।

समुग्घादेहि केवडिय सेत्त फोसिद ? ॥ १०२ ॥

सुगममदं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १०३ ॥

एतय सेत्तवग्घया कयम्भा, मट्टमाणप्पणादा ।

अट्टचोदसमागा देसूणा सव्वलोगो वा ॥ १०४ ॥

आहार-वेत्तयपदेहि चतुण्हं लोमाणममंरु-ज्जदिभागो, माणुमसेत्तस्य सखेज्जदि  
भागो फोसिदा । एसो वासरत्थो । वयण-कमाय-वेउग्घिपिदि अट्टचारममागा दसूणा  
फोसिदा, अट्टरन्तुवायदल्ललोगणात्तीए सव्वत्य तीदे काले वयण-कमाय विउम्भणाप-  
सुवत्तमादो । मारणातिएम सव्वलोगा ।

इतरा तीण खोक्कोका असंख्यातवां माग तिरियखोक्कच्च सख्यातवां माग भीर अट्टारंतीपथे  
असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । यह वा शब्दसे सूचित अर्थ है । विहारवत्सव्वस्यामकी  
अपेक्षा कुछ कम भाठ बने चौदह माग स्पृष्ट है क्योंकि मजायागी भीर वचनयागी  
भीषोका विहार भाठ एतु वाहस्पयुक्त खोक्कात्तीमें पाया जाता है ।

उपर्युक्त बीषों द्वारा समुद्घातकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ १०२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपर्युक्त बीषों द्वारा समुद्घातकी अपेक्षा खोक्का असंख्यातवां माग स्पृष्ट है  
॥ १०३ ॥

यहां क्षेत्रमरूपमा करता चाहिये क्योंकि बलमात्र वाचकी प्रधानता है ।

अवश्या, उन्हीं बीषों द्वारा कुछ कम भाठ बने चौदह माग या सर्व खोक्क स्पृष्ट  
है ॥ १०४ ॥

आहारकसमुद्घात और वैजससमुद्घात पक्षोंकी अपेक्षा चार खोक्कोका  
असंख्यातवां माग भीर मानुपखेवका सख्यातवां माग स्पृष्ट है । यह वा शब्दसे सूचित  
अर्थ है । वेत्तवासमुद्घात कपायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घात पक्षोंसे कुछ कम  
भाठ बने चौदह माग स्पृष्ट है क्योंकि भाठ एतु भाषण खोक्कात्तीमें सर्वत्र अतीत  
काचकी अपेक्षा वेत्तवा कपाय और वैक्रियिक समुद्घात पाये जाते हैं । मारणातिक  
समुद्घातकी अपेक्षा सर्व खोक्क स्पृष्ट है ।

उववादो णत्थि ॥ १०५ ॥

सत्य मण-बधिजोगापममावादो ।

कायजोगि ओरालियमिस्सकायजोगी सत्याण-समुग्घाद उव

वादेहि केवडिय खेत्त फोसिद ? ॥ १०६ ॥

सुगम ।

सव्वलोगो ॥ १०७ ॥

एदस्स भत्थो— सत्याण-बेयण-कमाय मारणत्थिय-उववादादि बह्ममाणादीदेसु सव्वलोगो फोसिदो । कुदा ? सव्वस्य गमणागमणाबहुप पडि विरोधाभावादो । विहार वदिमत्त्याण-वेउम्भियपदेदि बह्ममाण खेत्त । अदीदण भहुत्ताएममागा देसणा फोसिदा । पवरि वेउम्भियपदेण तिण्ह सोगाण मंखञ्जदिमागो । तेआहारपदेदि षट्ठण्ह सोगाणम संखेञ्जदिमागो, माणुसखेत्तस्स सखञ्जदिमागो फोसिदो । एत्थ वासरेण त्रिणा क्वममेसो

पाँचों मनोयोगी और पाँचों वचनयोगी जीवोंके उपवाद पद नहीं होता ॥१०५॥

क्योंकि, उपवाद पदमें मनोयोग व वचनयोगका समाव है ।

काययोगी और औदारिकमिभकाययोगी जीव स्वस्थान, समुद्घात और उपवाद पदोंमें कितना धैर्य स्पर्ध करते हैं ? ॥ १०६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपर्युक्त जीव उक्त पदोंमें सर्ब ठाक स्पर्ध करते हैं ॥ १०७ ॥

इसका अर्थ स्थस्थानस्वस्थान वेदनासमुद्घात वयापसमुद्घात मारणात्मिक समुद्घात और उपवाद पदोंमें वर्तमान व भतीग कासोंमें उक्त जीवोंमें स्व साकका स्पर्ध किया है क्योंकि इन जीवोंके सर्वत्र गममागमन और व्यवस्थानमें कोर विरोध नहीं है । विहारवत्त्वस्थान और वैद्विषिकसमुद्घात पदोंमें वर्तमानकासकी अपेक्षा स्वस्थानका मिहपण क्षेत्रप्रकरणके समान है । भतीग कासकी अपेक्षा कुछ कम याद बदे बीरुद मागोंका स्पर्ध किया है । विशेष इतना है कि वैद्विषिक पदकी अपेक्षा ठीक सोकोंके संख्यातमें मागका स्पर्ध किया है । ईज्जनसमुद्घात और माहारकसमुद्घात पदोंमें चार साकोंके संख्यातमें माग व मानुसप्रके संख्यातमें मागका स्वरा किया है ।

पुत्र— प्रसुन सूत्रमें वा शब्दक बिना यहाँ इस अपेक्षा व्याख्यान कैसे किया जाता है ?

अत्या एत्य वक्तव्यमिदं । अ एत दोसा, एदस्म सुचस्म देनामासिपत्तादा । विहार  
वदिसत्त्याण-वेठाभिय-तेब्राहारपदाणि ओरालियमिस्स णरिय ।

ओरालियकायजोगी सत्याण-समुग्घादेहि केवडिय स्वेत्त फोसिदं ?

॥ १०८ ॥

सुममं ।

सव्वलोगो ॥ १०९ ॥

सत्याणसत्याण-वेयण-कमाय'मारणंतिपिहि वडुमाणावदिसे सुचलोगो फोसिदा  
विहारवदिसत्त्याण वडुमाण रोत्त । अदीदण तिण्ह सोगाणमसत्ते-अदिमागो, तिरिय  
संगस्म संत्ते-अदिमागो, अडुप्-आदा मसत्ते-अगुणो फोमिदा । वेठाभियपदण वडुमाण  
खुत्तं । अदीदण तिण्ह सोगाणमसत्ते-अदिमागो, णर-तिरियतागहिदो अर्मत्ति-अगुणो  
फोमिदो । एद सुच देनामासिय कल्लण सचमेदं वक्तव्यं मुत्तास्स कयण्य ।

समाधान— यह कोई बात नहीं है क्योंकि यह सूत्र देशामर्शक है ।

विहारवत्स्वस्थान वैकिपिकसमुत्पात तैजससमुत्पात भीर आहारकसमुत्पात पर औदारिकमिधयोगमें नहीं होते हैं ।

औदारिकअपयोगी भीष स्वस्थान और समुत्पातकी अपेक्षा कितना क्षेत्र  
स्पर्श करते हैं ? ॥ १०८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

औदारिकअपयोगी भीष स्वस्थान व समुत्पातकी अपेक्षा सर्षं ठाक स्पर्श  
करते हैं ॥ १०९ ॥

अस्थानअस्थान वेदनासमुत्पात कपायसमुत्पात भीर मारजातिकसमुत्पात  
पक्षोंसे उक्त अर्थोंमें सर्वं ठाक स्पर्श किया है । विहारवत्स्वस्थानसे वर्तमान  
काष्ठकी अपेक्षा स्पर्शतका निरूपण संश्लेषके समान है । अतीत काष्ठकी अपेक्षा तीव्र  
छोकोका असत्पातका भाग तिर्यग्योकोका संत्पातका भाग और मङ्गारहीपसे असत्पात  
गुणे क्षेत्रका स्पर्श किया है । वैकिपिक पक्षसे वर्तमान काष्ठकी प्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके  
समान है । अतीत काष्ठकी अपेक्षा तीव्र छोकोके असत्पातके भाग तथा मनुष्यकोक व  
तिर्यग्योकोके असत्पातगुणे क्षेत्रका स्पर्श किया है । इस सूत्रको देशामर्शक करके यह  
अर्थ सूत्रविहित व्याख्यान करना चाहिये ।

उववाद णत्थि ॥ ११० ॥

उववादफाले ओरालियकायबोगसस अमावादा ।

वेजव्वियकायजोगी सत्याणेहि केवडिय खेत्त फोसिद ? ॥१११॥

सुगम ।

लोगस्स असखेज्जदिभागो ॥ ११२ ॥

एदस्स अत्था — तिण्ह लोगाणमसखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स सखेज्जदिभागो, अह्माइजादो असखेज्जगुणो फोसिदो । इदो ? वडुमाणप्पनादो ।

अट्टचोदसभागा देसूणा ॥ ११३ ॥

वठभियकयजोगीहि सत्थाणेहि तीदे फाले तिण्ह लोगाणमसखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स सखेज्जदिभागो, अह्माइजादो असखेज्जगुणा फोसिदो । विहारपदि सरथाणेण अह्माइसभागा फसिदा, अहुरज्जुमाइत्तलोगाणीए वेठभियकायजोगेण

भौतिककाययोगमें उपपाद पद नहीं होता ॥ ११० ॥

क्योंकि उपपादकालमें भौतिककाययागका अभाव रहता है ।

वैक्रियिककाययोगी जीव स्वस्थान पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ?

॥ १११ ॥

एह म्म सुगम है ।

वैक्रियिककाययोगी जीव स्वस्थान पदोंसे लोकका असख्यातकां भाग स्पर्श करते

हैं ॥ ११२ ॥

इस सुत्रका अर्थ—उक्त जाबौन स्वस्थानपदोंसे तीन लोकोंके असख्यातके भाग तिर्यग्भौतिक सरथातके भाग और अह्माइ हीपसे असख्यातगुण स्पर्शका स्पष्ट किया है, क्योंकि वतमानकालकी प्रथामता है ।

अतीत कालकी अपेक्षा वैक्रियिककाययोगी जीव कुछ कम आठ बट चौदह भाग स्पर्श करत हैं ॥ ११३ ॥

वैक्रियिककाययोगी जीवोंने स्वस्थान पदोंमें अतीत कालकी अपेक्षा तीन लोकोंके असख्यातके भाग तिर्यग्भौतिक संख्यातके भाग और अह्माइहीपसे असख्यातगुण स्पर्शका स्पष्ट किया है । विहारपस्वस्थानकी अपेक्षा आठ बट चौदह भागोंका स्पष्ट किया है, क्योंकि आठ पद बाह्यस्थानी छाजनासीमें वैक्रियिककाययोगसे क्योंकि



देवाय विहारवसंभारा ।

समुग्धादेण केवडिय खेत फोसिद ? ॥ ११४ ॥

सुगमं ।

लोगस्त असखेज्जदिमागो ॥ ११५ ॥

एत्थ खचवण्णजा कायग्गा, बहूमाणप्पमादो ।

अट्ट-तेरहचोदसमागा देसूणा ॥ ११६ ॥

बषय-कमाय-वउभियपदेहि अट्टपादसमागा फामिदा । मारणतिएण तरह  
चोदसमागा देसूणा फोमिदा । कुदो ? मेरुमूसदो तवरि सच हेड्डा छरब्बुआपामसोग  
वाळिमावूरिय वेउभियकायज्जाणेण ठंदि कपमारणतियजीवाणसुवर्त्तमादो ।

उववादं णत्थिय ॥ ११७ ॥

तत्थ वेउभियकायज्जागामावादो ।

विहार पाया जाता है ।

उक्त जीव समुद्रपातकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ॥ ११४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीव समुद्रपातकी अपेक्षा सोकका असख्यातवां भाग स्पर्श करते हैं  
॥ ११५ ॥

यहां संक्षयकपना करना चाहिये क्योंकि वर्तमान कासकी प्रमाणता है ।

उक्त जीव अतीत कासकी अपेक्षा कुछ कम ज्ञान बने चौदह और तेरह बटे  
चौदह भाग स्पर्श करते हैं ॥ ११६ ॥

अतीत कासकी अपेक्षा वेदनासमुद्रपात कपायसमुद्रपात और वैदिकविषसमुद्रपात  
पक्षोंसे उक्त जीवोंमें साठ बटे चौदह भागोंका स्पर्श किया है । मारणाभितकसमुद्रपातसे  
कुछ कम तरह बटे चौदह भागोंका स्पर्श किया है क्योंकि मरुमूसस ऊपर साठ और  
नीचे छद् पाहु आपामकाडी छोरनाडीको पूर्वतर वैदिकविषकापयोगके साथ अतीत कासमें  
मारणाभितकसमुद्रपातके मात्र जीव पाये जाते हैं ।

वैदिकविषकाययोगी जीवोंमें छपपाद पद नहीं होता ॥ ११७ ॥

क्योंकि, छपपाद परमें वैदिकविषकाययोगका जमाव है ।

वेठब्बियमिस्सकायजोगी सत्थाणेहि केवडिय खेत्त फोसिद ?

॥ ११८ ॥

सुगम ।

लोगस्स असखेज्जदिभागो ॥ ११९ ॥

एत्थ वडुमाण खेत्त । अदीदेण तिण्हं लोगाणमसखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स सखेज्जदिभागो, अड्डाइन्नादो असखेज्जगुणो फोसिदो । विहारवदिसत्थारणं णत्थिय ।

समुग्घाद-उववाद णत्थिय ॥ १२० ॥

होदु नाम मारणतिय-उववादाणमभावो, एदेसिं दोण्ह वेठब्बियमिस्सकायजोगेण सह विरोहादो । वेठब्बियस्स वि तत्थ अभावो होदु पाम, अपज्जचक्रत्ते तदसमवादो । ण पुण धेयण-कसायाणं तत्थ असमवो, मारणसु अपज्जचक्रत्ते वेव ताणमुवत्तमादो ।

बैक्रियिकमिभक्षययोगी जीव स्वस्थान पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ॥ ११८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

बैक्रियिकमिभक्षययोगी जीव स्वस्थान पदोंसे ठोकका असत्प्रातर्वां भाग स्पर्श करते हैं ॥ ११९ ॥

यहां बतमान काठकी अपक्ता स्पर्शमका निरूपण दोषमरूपजाके समान है । अतीत काठकी अपक्ता तीन खोकोंका असत्प्रातर्वां भाग तिरियखोकका संत्प्रातर्वां भाग और अड्डाइ हीपसे असत्प्रातर्गुणा क्षेत्र स्पर्श करत हैं । विहारवत्स्वस्थान उमके होता नहीं है ।

बैक्रियिकमिभक्षययोगी जीवोंके समुद्घात और उपपाद नहीं हावे ॥ १२० ॥

सूत्रा—बैक्रियिकमिभक्षययोगियोंके मारणात्मिकसमुद्घात और उपपाद पदोंका अभाव मळ ही हो क्योंकि इनका बैक्रियिकमिभक्षययोगिक साथ विराध है । इसी प्रकार बैक्रियिकसमुद्घातका भी उमके अभाव रहा भावे क्योंकि अपर्पातकालमें बैक्रियिकसमुद्घातका हाता असमय है । किन्तु येदनासमुद्घात और कयायसमुद्घात पदोंकी उममें असमापता नहीं है क्योंकि मारकियोंक य दानों समुद्घात अपर्पातकालमें ही पाये जात हैं ? (जीवस्थान स्पर्शमानुगमके सूत्र ९४ की टीकामें प्रपत्ताकारण यहां उपपाद पद भी स्वीकार किया है ।)

एतत्परिहारो बुध्पदे । त अहा— होदू नाम तेसिं संमथो, किंतु एतत् सत्याम्पयेचादो अहियं येर्षं च सम्मदि चि तेसिं पठिसेहो कदा । किमिदि च तम्मदे ? अीवपदेसत्त एतत् सरीरतिगुणविष्णुज्जयामाभादो ।

आहारकायजोगी सत्याण-समुग्घादेहि केवडिय खेत फोसिदं ?

॥ १२१ ॥

सुमर्म ।

लोगस्स असखेज्जदिभागो ॥ १२२ ॥

एतत् बहूमानस्य येचमंगो । अदीदेष सत्तापमस्याण-विहारबदिमत्ताय-अपक्कमायपदेहि चतुण्य स्त्रेगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुमयेचस्स संयेज्जदिभागो फमिदा । मारजतिएव चतुर्णां आगाणममयेज्जदिभागा, माणुससत्तादो असंखे-ज्जगुणो ।

समाधान—उक्त शास्त्राका परिहार करते हैं । यह इस प्रकार है— मारकियोंके मर्यादाकाकर्म बेवनासमुत्पात और कपायसमुत्पात पर्योकी सम्मानका छी भावे किंतु उनमें स्वस्थानक्षेत्रसे अधिक क्षेत्र नहीं पाया जाता इसी कारण उनका प्रतिषेध किया है ।

धृक्क—स्वस्थानक्षेत्रसे अधिक क्षेत्र नहीं क्यों नहीं पाया जाता ?

समाधान—क्योंकि उनमें अीवप्रदेशोंके शरीरस तिगुणे विसर्पका अमाय है ।

आहारकक्षययोगी अीव स्वम्मान और समुद्भात पदोंसे कितना धृक् स्वर्ष करते हैं ? ॥ १२१ ॥

यद्द धृक् सुगम है ।

आहारकक्षययोगी अीव उक्त पदोंसे सोकक्ष असुत्पातर्षा माग स्वर्ष करते हैं ? ॥ १२२ ॥

यहां वर्तमान काककी अपेक्षा स्वर्षानका विकल्प क्षेत्रप्रकृपाके समान है । अर्थात् काककी अपेक्षा स्वस्थानस्वस्थान विहारबत्त्वस्थान्य बेवनासमुत्पात और कपायसमुत्पात पर्योसे आहारकक्षययोगी अीवोंने चार छोकोंके असम्पातर्षे माग और मानुपक्षेर्षके संख्यातर्षे मागका स्वर्ष किया है । मारजातिकसमुत्पातसे चार छोकोंके असम्पातर्षे माग और मानुपक्षेर्षसे असम्पातगुणे क्षेत्रका स्वर्ष किया है ।

उवाच णत्थि ॥ १२३ ॥

इहा ? अल्पकामास्य आमागिणादा ।

आदागमिस्मसायजोगी मत्वाणेहि केरडिय स्येत्त पेमिद ?

॥ १२४ ॥

सुगम ।

लोगम्म अमस्वेज्जन्तिभागो ॥ १२५ ॥

एष बहूमागम्म मत्तमना । अदीदण पदुत्ता सगताममग्गदिमागा,  
माहुमममग्ग मग्गदिमागा पेमिदा । सिद्धमदिगन्थात्त एषि ।

समुग्घाद उवाच णत्थि ॥ १२६ ॥

इहा ? अल्पकामास्य आमागिणादा ।

पग्गमयसायनेगीहि केरडिय स्येत्त पेमिद ? ॥ १२७ ॥

अदागमिस्मसायजोगी अदीदण उवाच पद मदी दाता ॥ १२८ ॥

अदीदण उवाच अल्पकामास्य आमागिणादा ।

आदागमिस्मसायजोगी अदीदण उवाच पेमिद स्येत्त पेमिद पेमिद ?  
॥ १२९ ॥

एव एव सुगम ए ।

अदागमिस्मसायजोगी अदीदण उवाच पेमिद स्येत्त पेमिद पेमिद ?  
॥ १३० ॥

सुगमं ।

सञ्जलैगो ॥ १२८ ॥

एव पि सुगम ।

वेदानुवादेण इत्यिवेदपुरिसवेदा सत्याणेहि केवडिय सेत्त  
फोसिद ? ॥ १२९ ॥

सुगम ।

लोगस्स अमस्सेज्जदिभागो ॥ १३० ॥

एव एत्थपरुवणा अयन्ना, बह्मायप्पणादा ।

अट्टवोदसमागा देसूणा ॥ १३१ ॥

एवं देनामाप्तिरसुखं । तत्रादेण सुदत्तपस्स ताव परुवण फस्सामो । त अहा—  
सत्याजेण तिष्ठं सोमाजमर्मस्येज्जदिभागो, तिरियसोगस्स सञ्जलैदिभागो, अट्टाइन्नादो  
असंखेज्जगुमो फोसिदा । एव वागवैतर ओदिसिपाप विमाणेहि रुद्धसेत्तं पेत्थ तिरिय

यह एव सुगम है ।

कार्मणक्ययोगिणो द्वारा सर्व लोक स्पृह है ॥ १२८ ॥

यह एव भी सुगम है ।

पदमार्गानुसार क्षिपिदी और पुरुषवेदी बीच स्वस्थान पदोंकी अपेक्षा कितना  
क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ॥ १२९ ॥

यह एव सुगम है ।

क्षिपिदी और पुरुषवेदी बीच स्वस्थान पदोंसे लोकका असम्पातको माग स्पर्श  
करते हैं ॥ १३१ ॥

यहां शेषमरूपका करना चाहिये क्योंकि वर्तमान काकको प्रमाणता है ।

अतीत कालकी अपेक्षा उक्त जीवोंने स्वस्थान पदोंमें कुछ कम आठ बने चौदह  
मार्गोंका स्पर्श किया है ॥ १३१ ॥

यह वरामर्शक एव है इस कारण इसमें स्थित मर्शकी प्रकृषका करते हैं । यह  
इस प्रकार है— स्वस्थानकी अपेक्षा उक्त जीवोंने तीन लोकोंके असंख्यातके माग  
तिर्यग्कोकके संख्यातके माग और मङ्गारक्षीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रका स्पर्श किया  
है । यहां वागवैतर और ज्योतिषी वेदोंके विमानोंसे रुद्ध क्षेत्रकी प्रकृषकर तिर्यग्कोकका

लोगस्स संखेज्जदिमागो साहेयम्बो । एतो स्रद्धत्थो । विहारवदिसत्त्वाणेहि पुण अट्टचोद्दस  
मागा देख्वा फासिदा, देवीहि सह देवानमट्टचोद्दसमागेसु वीदे काले सनात्थलमादो ।

समुग्घादेहि केवढिय खेत फोसिद ? ॥ १३२ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असखेज्जदिमागो ॥ १३३ ॥

एत्थ सत्तवण्णन कायम्भं, बहुमाप्पण्णमादो ।

अट्टचोद्दसमागा देसूणा सब्वलोगो वा ॥ १३४ ॥

वेयण-कसाय-वठम्बियपदपरिणददि अट्टचोद्दसमागा देख्वा फासिदा । कुदो ?  
देवीहि सह अट्टचोद्दसमाग ममताप्प देवाप्प सम्बत्थ वयण-कसाय विठम्बणाणसुवत्थमादो ।  
तेआहारसमुग्घादा ओघमंगो । णवरि इत्थिवदं तट्टमयं णत्थिय । मारभत्थियसमुग्घादेण

संख्यातयो माग सिद्ध करमा चाहिये । यह सूचित मर्य है । किन्तु विहारयत्स्वस्यामकी  
अपेक्षा उक्त जीवोंने कुछ कम आठ बट बीदह मागोंका स्पर्श किया है क्योंकि  
देवियोंके साथ देवोंका आठ बटे बीदह मागोंमें अतीत कालकी अपेक्षा अमम पाया  
जाता है ।

स्त्रीवेदी व पुठपवेदी जीव समुद्रपातोंकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ?  
॥ १३२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

समुद्रपातकी अपेक्षा उक्त जीव लोकक अस्त्व्यातवां माग स्पर्श करते हैं  
॥ १३३ ॥

यहां क्षेत्रका वर्णन करमा चाहिये क्योंकि धर्ममान कालकी प्रधानता है ।

अतीत कालकी अपेक्षा उक्त जीवोंने कुछ कम आठ बट बीदह मागोंका  
अधना सब लोकका स्पर्श किया है ॥ १३४ ॥

बेदनासमुद्रपात कषायसमुद्रपात और वैकिकियिकसमुद्रपात पक्षोंसे परिजत  
स्त्रीवेदी व पुठपवेदी जीवों द्वारा कुछ कम आठ बट बीदह माग स्पृष्ट हैं क्योंकि  
देवियोंके साथ आठ बट बीदह मागोंमें अमम करनेवाले देवोंके संबंध यद्मा कषाय  
और वैकिकियिक समुद्रपात पाये जाते हैं । तैजससमुद्रपात और आहारकसमुद्रपात पक्षोंकी  
अपेक्षा स्वयंभवा तिरुपय भायके समान है । विशय इतना है कि स्त्रीवेदमें वे दानों

सम्बन्धेभ्यो, तिरिक्त्त-मनुस्सपुरिसिदिपवेदाण सम्बन्धेभ्यो मारणत्तियसंमवाद्दो । वासरो किमहं ? समुच्चयहो । देव-देविण्य मारणत्तियं पेप्पमावे नववाद्दमागा होति पि फोसपविसेससागावण्हु वा वासरो पक्कविदो ।

उववादेहि केवडिय खेत्त फोसिद ? ॥ १३५ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असखेज्जदिभागो ॥ १३६ ॥

एत्थ खेत्तवम्मया कापम्भा, वहुमामप्पवाद्दो ।

सज्जलेगो वा ॥ १३७ ॥

ह्रस्वो ? सम्बन्धिसादो आमत्तण इत्थि-पुरिसवेदसु उप्पज्जमात्ताणमुरत्तमाद्दो । देव देवीभ्यो च अस्सिद्धं मज्जमागे तिप्पु लोगाणामसंखिज्जदिभागो छपोद्दसमागा तिरिय लोगस्स संघे-ज्जदिभागो फोसिदो पि वावापण्हं वामद्दगहय कयं ।

यह नहीं होते । मारणास्तिकसमुद्घातकी अपेक्षा सर्व श्लोक स्पृष्ट है क्योंकि तिरिक्त्त और मनुष्य पुरुष स्त्रीवर्षियोंके सर्व श्लोकमें मारणास्तिकसमुद्घातकी सम्भावना है ।

श्लोक—सूत्रमें वा शब्दका प्रयोग किस स्थितिमें किया गया है ?

समाधान—वा शब्दका प्रयोग समुच्चयके स्थितिमें किया गया है । अथवा देव-देविण्यके मारणास्तिकसमुद्घातको ग्रहण करधरत नी बदे बीद्दह माग होते हैं इस स्थितिमें विशेषक कापमार्य वा शब्दका प्रयोग किया गया है ।

उपपादकी अपेक्षा स्त्रीवेदी व पुरुषवेदी जीवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ १३८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपपादकी अपेक्षा उक्त जीवों द्वारा श्लोकमें असंख्यातर्था माग स्पृष्ट है ॥ १३९ ॥

यहां श्लोकप्रकृति करना चाहिये क्योंकि वर्तमान काव्यकी विवक्षा है ।

अथवा, उपपादकी अपेक्षा अतीत कालमें उक्त जीवों द्वारा सर्व श्लोक स्पृष्ट है ॥ १४० ॥

क्योंकि सर्व विशाखोंसे जाकर स्त्री व पुरुष वर्षियोंमें बलप्राप्त होनेवाले जीव पाये जाते हैं । देव-देविण्यका आश्रय कर स्थानके कहनेपर तीन श्लोकोंका संख्यातर्था माग कह बदे बीद्दह माग और तिरिय्थाकका संख्यातर्था माग स्पृष्ट है इसके कापमार्य सूत्रमें वा शब्दका ग्रहण किया है ।

णवुसयवेदा सत्याण-समुग्घाद-उववादेहि केवडिय खेत फ़ोसिद ?

॥ १३८ ॥

सुगम ।

सव्वलोगो ॥ १३९ ॥

एदस्स भन्वो— सत्थाण-वेयण-फ़साय-मारणतिप-उववादेहि अदीद-वड्डमाणेण सव्वलोगो फ़ोसिदो । बिहारवदिसत्थाण वेठभियसमुग्घादेहि बड्डमाणे खेत । अदीदे तिण्ह उोगाणमसखेज्जदिमागो, तिरियलोगस्स सखेज्जदिमागो, अण्णाइज्जदो असखेज्ज-गुणो फ़सिदा । णपरि वेठभियपदेण तिण्ह उोगाण सखेज्जदिमाणा, मर-तिरिय सोणेहिणो असखेज्जगुणो फ़सिदो । इदो ! षाठक्कइयाण बिउष्यमाणार्ण पंचघोइसु भागमेचफ़ोसणसुपलमावो । तत्राहारसमुग्घादा णरिय ।

अवगदवेदा सत्याणेहि केवडिय खेत फ़ोसिद ? ॥ १४० ॥

सुगम ।

नपुसक्वेदी जीवोने स्वस्थान, समुत्पात आर उपपाद पदोसे कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? ॥ १३८ ॥

यह सच सुगम है ।

नपुसक्वेदी जीवोने उक्त पदोमे सर्व साक स्पर्श किया है ॥ १३९ ॥

इस क्षेत्रका अर्थ— स्वस्थान यद्मासमुत्पात कपायसमुत्पात मारणास्तिक-समुत्पात भीर उपपाद पदोस भतीत य पतमान कासकी अपेक्षा मपुंसकवेदियोने स्वयं साकका स्पश किया है । बिहारपरस्वस्थान भीर वैकियिकसमुत्पात पदोसे वर्तमान कासकी अपेक्षा स्वर्शाकका निरूपण क्षेत्रमकपणाक समान है । भतीत कासकी अपेक्षा तीन साकोक असम्पातयें भाग तियस्योक्के संख्यातयें भाग भीर अकारद्वीपसे असत्पातगुण क्षेत्रका स्वर्श किया है । यिदावता इतमी है कि वैकियिकपदसे तीन सोकोक संख्यातयें भाग तथा मनुत्पसोक भीर तियसाकस असम्पातगुण क्षेत्रका स्वर्श किया है क्योंकि यिकिया करनेवाल पायुकायिक जीवोने पांच बटे बाइह भागमात्र स्वर्श पाया जाता है । तैमस य बाह्यत्वं समुत्पात नपुसकपरियोके हाते नहीं है ।

अपगतवेदी जीव स्वस्थान पदोसे कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ॥ १४० ॥

यह सच सुगम है ।



लोगस्त असस्वेज्जदिभागो ॥ १४१ ॥

सुगमं ।

समुग्घादेहि केवढिय खेत फोसिद ? ॥ १४२ ॥

एद पि सुगम ।

लोगस्त असस्वेज्जदिभागो ॥ १४३ ॥

इह-कपाड मारणतियसमुग्घादगदेहि बहुण्हं लोगापमसस्वेज्जदिभागो, अहुम  
ज्जादो असस्वेज्जगुणा अदीद-बहुमायेण फोमिदा । अवरि कपाडगदहि तिरियलोगस्त  
सस्वेज्जदिभागो सस्वे-ज्जगुणो वा फोसिदो ।

असस्वेज्जा वा भागा ॥ १४४ ॥

एद पदरगदाम फोसम, बादवत्तपसु जीवपदेनार्ण पवेसामावादा ।

सन्वलोगो वा ॥ १४५ ॥

अपगतवेदी जीव स्वस्मान पदोति सोकक्य असस्पातर्वा माग स्पर्श करते हैं  
॥ १४१ ॥

एद ख सुगम है ।

उक्त बीबोने समुद्घातकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ॥ १४२ ॥

एद ख मी सुगम है ।

उक्त बीबोने समुद्घातकी अपेक्षा सोकका असस्पातर्वा माग स्पर्श किया है  
॥ १४३ ॥

इह कपाड व मारणात्तिक समुद्घातको प्राप्त हुए अपगतवेदियों द्वारा वाट  
कोकोका असस्पातर्वा माग और अहार्द्रीपसे असस्पातगुणा क्षेत्र अतीत और वर्तमान  
अपगतकी अपेक्षा स्पष्ट है । विशेष इतना है कि कपाडसमुद्घातगत अपगतवेदियों द्वारा  
तिर्यगकोकका असस्पातर्वा माग अथवा असस्पातगुणा क्षेत्र स्पष्ट है ।

अथवा, उक्त बीबो द्वारा समुद्घातसे सोकका असस्पात बहुमाग स्पष्ट है ॥ १४४ ॥

इह एतत्समुद्घातगत अपगतवेदियोंका स्पर्शक्षेत्र है क्योंकि वहाँ वातवज्रयोंमें  
जीवपदेदोंके प्रवेशका अभाव है ।

अथवा, सर्व क्षेत्र स्पष्ट हैं ॥ १४५ ॥

पदं लोमपूरणफोसण । सेस सुगमं ।

उववाद णत्थि ॥ १४६ ॥

अच्छंताभावेण ओसारिदत्तादो ।

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोमकसाई  
णवुसयवेदमंगो ॥ १४७ ॥

अहा षडुसयवेदस्त अदीद-अडुमानकाले अस्सिदूण परुविदं तथा एत्थ वि  
परुबदम्भ, णत्थि एत्थ विसेसो । णत्थि पदविसेसो आणिय वत्तम्भो । वेठम्भियं अडु  
भावेण तिरियत्तोगस्त संखेज्जदिमागो, अदीदेण अडुचोदसमागा देवणा ।

अकसाई अवगदवेदमंगो ॥ १४८ ॥

सुगमं ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणी सुदअण्णाणी सत्याण-समुग्घाद  
उववादेहि केवडिय खेत्त फोसिद ? ॥ १४९ ॥

यह कोरूपणसमुद्घातको प्राप्त अपगतवेदियोंका स्पर्शन है । शेष सुधार्य  
सुगम है ।

अपगतवेदियोंके उपवाद पद नहीं होता ॥ १४६ ॥

क्योंकि यह अत्यन्ताभावेसे निराकृत है ।

कपायभागणानुमार अत्रेचकपायी, मानकपायी, मायाकपायी और लोमकपायी  
बीशोंकी प्ररूपणा नपुंसकवेदियोंके समान है ॥ १४७ ॥

त्रिस प्रकार नपुंसकवेदकी अपेक्षा अतीत व वर्तमान कासोंका भाग्यकर निरूपण  
किया है उसी प्रकार यहाँ भी निरूपण करवा चाहिये क्योंकि यहाँ वससे कोई  
विशेषता नहीं है । विशेष इतना है कि यहाँकी विशेषता आत्मकर अदम्य चाहिये ।  
वैकल्पिकसमुद्घातकी अपेक्षा वर्तमान काससे त्रिपंगुलोका सख्यातका भाग भीर अतीत  
काससे कुछ कम आठ बट बीसह भागप्रमाण स्पर्शन है ।

अकपायी बीशोंकी प्ररूपणा अपगतवेदियोंके समान है ॥ १४८ ॥

यह सब सुगम है ।

ज्ञानमार्गणानुसार मदिअण्णानी और सुदअण्णानी बीशोंने स्वस्वान, समुद्घात और  
उपवाद पदोंकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? ॥ १४९ ॥

सुगमं ।

सव्वलोगो ॥ १५० ॥

सत्तयाण-वेयण-कस्य-मारजंतिय-उत्तवादेहि अदीद बहुमाणेण सव्वलोगो फोसिदो ।  
 कुदो ? विस्मसादो । बिहारबदिसत्तयाणपदेण अदीद-बहुमाणेण अहाकमेण अहुआदसमागा  
 तिरियलोगस्स संखेज्जदिमागो । वेठभियपदस्स बहुमाणं खेच । अदीदेण अहुआदसमागो  
 फोसिदो ।

विमंगणाणी सत्याणेहि केवडिय खेच फोसिद ? ॥ १५१ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असखेज्जदिमागो ॥ १५२ ॥

एत्थ खेचवण्णया अयण्णा, बहुमाणप्पपादो ।

अट्टचोदसमागा देसूणा ॥ १५३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मतिअज्ञानी और भुतअज्ञानी जीवोंने उक्त पदोंसे सर्व साक स्पर्श किया है  
 ॥ १५० ॥

स्वस्यामलस्याव बदवात्तमुद्घात कपापसमुद्घात मारणात्तिकसमुद्घात और  
 उपपाद् पदोंसे अतीत व वर्तमान काळकी अपेक्षा मतिअज्ञानी जीवोंने सर्व लोक  
 स्पर्श किया है क्योंकि, देहा स्वभावस है । बिहारत्तस्वस्यामपक्षे अतीत व  
 वर्तमान काळकी अपेक्षा यथाक्रमसे माठ बटे चौदह भाग व तिरिपम्बोरुके लक्ष्यातर्षे  
 भागप्रमाण शेषका स्पर्श किया है । वैकल्पिक पदकी अपेक्षा वर्तमान काळकी अरूपका  
 शेषमरूपकाके समान है । अतीत काळकी अपेक्षा माठ बटे चौदह भाग स्पष्ट है ।

विमंगलानी जीवोंने स्वस्मान पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? ॥ १५१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

विमंगलानी जीवोंने स्वस्मान पदोंसे छेकड़ा अमरुपातवां भाग स्पर्श किया है  
 ॥ १५२ ॥

यहां शेषमरूपका कटवा चाहिये क्योंकि वर्तमान काळकी विवक्षा है ।

अतीत काळकी अपेक्षा उक्त जीवों द्वारा कुछ कम माठ बटे चौदह भाग स्पष्ट  
 है ? ॥ १५३ ॥

। देसामासियसुचमद, सेपेदेण छद्दत्वा पुब्बदे— सत्यानेहि तिण्हं सोगत्थम  
सखेज्जदिमागो, तिरियसोगस्स सखेज्जदिमागो, अट्टाएज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो ।  
एसो छद्दत्थो । विहारवदिसत्यानेहि अट्टाएसमागा देसणा फोसिदा ।

समुग्घादेण केवडियं खेत्तं फोसिद ? ॥ १५४ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असखेज्जदिमागो ॥ १५५ ॥

एत्थ खेत्तवण्णया कयम्भा, वट्टमाणेण जहियारादो ।

अट्टोदसभागा देसूणा फोसिदा ॥ १५६ ॥

एदस्स अत्थो— बेयण-कसाय-बेठभियपदेहि अट्टोदसभागा देसणा फोसिदा,  
विहरताणं सम्बत्थ वयण-कसाय-बेठभियाण समवादो ।

सज्वलोगो वा ॥ १५७ ॥

यह सूत्र देसामर्शक है इसलिये इससे सूचित अर्थ करते हैं— स्वस्यामपदोंसे  
विमंगलानी जीवोंने तीन लोकोंके अस्तक्यातवें भाग, तिर्यम्भोकके सक्कातवें भाग और  
जहद्वीपसे अस्तक्यातगुणे क्षेत्रका स्पर्श किया है । यह सूचित अर्थ है । विहार  
वत्स्वस्याम पक्षी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह मार्गोंका स्पर्श किया है ।

समुद्रपातकी अपेक्षा विमंगलानी जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? ॥१५४॥

यह सूत्र सुगम है ।

समुद्रपातकी अपेक्षा विमंगलानी जीवोंने लोकका अस्तक्यातवां भाग स्पर्श  
किया है ॥ १५५ ॥

यहां क्षेत्रप्रकल्पना करना चाहिये क्योंकि वर्तमान लोकका अधिकार है ।

अतीत कालकी अपेक्षा उक्त जीवोंने कुछ कम आठ बटे चौदह मार्ग स्पर्श किये  
हैं ॥ १५६ ॥

इस सूत्रका अर्थ— बेवनासमुद्रपात कथामसमुद्रपात और वैश्विकसमुद्रपात  
पदोंसे कुछ कम आठ बटे चौदह मार्गोंका स्पर्श किया है क्योंकि, विहार करनेवाले  
विमंगलानियोंके सर्वत्र बेवनासमुद्रपात कथापसमुद्रपात और वैश्विकसमुद्रपात  
सम्भव हैं ।

अथवा सर्प लोक स्पर्श किया है ॥ १५७ ॥

एहं मारणंतिपदमस्तिरूपं बुधं । इदो ! विमंगलान्तिरिक्ख-मणुस्मान्  
मारणंतिपस्स तीरे काले सञ्चलोगुवर्तमादा । देव-वेरयाणं मारणंतिपमस्तिरूपं तेरह  
चौरसमागा होति पि आणावण्णं वासरुगिहेसो कदो ।

उववाद णत्थि ॥ १५८ ॥

इदो ! विस्ससादो ।

आभिणिवोदिय-मुंद-ओहिणाणी सत्याण-समुग्घादेहि केवडिय  
खेत्तं फोसिदं ? ॥ १५९ ॥

सुयम ।

लोगस्स असंखेज्जदिमागो ॥ १६० ॥

एय खेत्तवण्णं कायध्व, बहुमाणावत्तवणो ।

अट्टचोदसमागा देसूणा ॥ १६१ ॥

यह मारणाभिरूपरुका आशयकर कहा गया है क्योंकि विमंगलान्तीरिक्ख  
और मणुष्मोके मारणाभिरूपरुकातकी अपेक्षा अतीत कालमें सर्व छोड़ पाया जाता  
है । देव व मारणिकोके मारणाभिरूपरुकातका आशयकर तेरह बने चीरद माग होते  
हैं इसके आपनाथ स्वयं वा शम्भुका निर्देश किया है ।

विमंगलान्तीरिक्खोके उपपाद पद नहीं होता है ॥ १५८ ॥

क्योंकि, वेसा स्वभाव है ।

आभिनिवोपिकमान्ती, भुत्तमान्ती और अवधिज्जान्ती तीर्थोने स्वयं व सद्बुद्धात्  
पदोने कितना क्षेत्र स्पष्ट किया है ? ॥ १५९ ॥

यह क्षेत्र सुगम है ।

उपयुक्त तीर्थोने उक्त पदोम साकळ अयम्पत्तवां भाग स्पर्श किया है  
॥ १६० ॥

यहां क्षत्रप्रकरणका कहना बाहिय क्योंकि वर्तमान कालकी अपेक्षा है ।

अतीत कालकी अपेक्षा उक्त तीर्थोने कुछ कम जाठ बट चीरद भाग स्पर्श  
किये हैं ॥ १६१ ॥

एदं देसामासियसुच, तेनेदेग छद्दरयो ताप उच्छेदे । तं अद्दा— सरयामेहि तिर्णं लोगापमसंखेज्जदिमागा, तिरियलोगस्स सखेज्जदिमागो, अद्दाइन्जादो अंसखेन्जगुणो फासिदो । तेजाहारपदाज खेच । एमो छद्दरयो । बिहारबदिमत्याप-वेयज-कसाय वेठविय-मारणसिपदि अद्दुआदसभागा दसुया फोसिदा ।

उववादेहि केवडिय खेत्त फोसिद ? ॥ १६२ ॥

सुगम ।

लोगस्स असखेज्जदिमागो ॥ १६३ ॥

एदस्स जत्थपरूबणाए येचमगो । कुदो ? अद्दमापप्पणादो ।

छ्चोदसभागा देसूणा ॥ १६४ ॥

एदस्स अत्या पुच्छेदे— तिरिक्खत्तअसअदसम्माइहि-संसदासंसदागमारणादि देवेसुप्पन्त्रमाणायं छपोदसभागा । हेद्दा दारअमुमेचइत्थान गंतुए किंदावत्थाए छिप्पाउमार्णं

यह इशामयक सूत्र है मत एष इससे सूचित अर्थ कहते हैं । यह इस प्रकार है— उपर्युक्त तीन कामवासि जीवोंने स्वस्थानपक्षोंसे तीन क्षेत्रोंके असंख्यातवर्गे भाग तिर्यग्ब्रह्मोक्त संख्यातवर्गे भाग और अद्दाइन्जापक्षे असंख्यातगुण क्षेत्रका स्पर्श किया है । तीजससमुद्घात और आहारकसमुद्घातकी अपेक्षा स्पर्शकका निरूपण क्षेत्रके समान है । यह सूचित अर्थ है । बिहाररक्षस्थान वेदनासमुद्घात कपायसमुद्घात, वैदिकिक समुद्घात और मारणात्मिकसमुद्घात पक्षोंम कुछ कम आठ बट चौदह भागोंका स्पर्श किया है ।

उक्त जीवोंने उपपाद् पदमे किन्ना क्षेत्र स्पर्श किया है ? ॥ १६२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवोंने उपपाद् पदमे ताकका असंख्यातवर्गा भाग स्पर्श किया है ॥ १६३ ॥

इस सूत्रके अर्थका निरूपण क्षेत्ररूपणाके समान है, क्योंकि वर्तमानकाककी विषया है ।

अतीत कालकी अपेक्षा उक्त जीवोंने कुछ कम छह बट चौदह भाग स्पर्श किया है ॥ १६४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— मारणात्मिक इशोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यक् अमंयतसम्पत्ति और संयतासंपन्न जीवोंका अवावसेच छह बट चौदह भागसमाप्त है ।

प्रश्न— नीच वा रातुमात्र भाग जाकर स्थित अवस्थामें आयुके क्षीन होनेपर

मनुस्सेसुप्पञ्चमाणा<sup>१</sup> देवान उवादात्तेषु किम्प वेप्पे ? न, तस्स पढमइहेप्पूप्पस्स छपोइसमागेसु चेव अंतग्मावादो, वेमि मूळसरीरपवेसंमंतरेण तदवत्वाए मरणा-  
मावादो च ।

मणपञ्जवणाणी सत्थाण-समुग्घादेहि केवडियं खेतं फोसिदं ?

॥ १६५ ॥

सुमम ।

ल्लेगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १६६ ॥

एइस्स अत्थे मण्यमाणे बहूमान खच । अदीयेण चहुण्ह लोगायमसंखेज्जदिभागो,  
अह्माइग्घादो असंखेज्जगुणा फोसिदा ।

उवादा णत्थि ॥ १६७ ॥

मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले श्रमोंका उत्पादकोन क्यों नहीं पहल किया ?

समाधान—नहीं क्योंकि प्रथम दृष्टसे कम उत्पन्न उह बडे औरह भागोंमें ही मन्तर्भाव हो जाता है तथा मूलशरीरमें जीवमवेशोंके प्रवेश बिना उह अवस्थामें उनके मरण का अभाव भी है । (?)

मनःपर्ययज्ञानी जीवोंने स्वस्थान और समुद्रपात पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? ॥ १६५ ॥

एह खूब सुगम है ।

मनःपर्ययज्ञानी जीवोंने स्वस्थान और समुद्रपात पदोंसे सोइका अमंम्यातवां  
माय स्पर्श किया है ॥ १६६ ॥

एह खूबका अर्थ कहत समय वर्तमान काइकी अवेक्षा शेषके समाप्त विरूपक  
करना चाहिये । अतीत काइकी अपरा उक्त जीवोंने चार साकोंके अलक्ष्यातवें भाग  
और अहार्द्वीपसे अलक्ष्यातगुण क्षेत्रका स्पर्श किया है ।

मनःपर्ययज्ञानियोंके उपपाद् पद नहीं होता है ॥ १६७ ॥

१ मत्तिउ अह्माइग्घादोअग्घादि इति पाठः ।

२ मत्तिउ अवेत इति पाठः ।

कुदो ? विस्ससादो ।

केवलणाणी अवगदवेदमगो ॥ १६८ ॥

णपरि मारमत्थियपद् जत्थि, केवलणाप्पिम्हि वस्सत्थियत्थिरोहादो ।

सजमाणुवादेण सजदा जहाक्खादविहारसुद्धिसजदा अकसाह  
मगो ॥ १६९ ॥

एसो सुत्थिरेसो दम्भट्ठियणयावलमणो । पञ्जवट्ठियणए पुण अणसविन्जमाने  
सजदा अकसाहत्तुल्ला ण होंति, सबदेसु अकसाहवीथसु अविन्जमात्थनेठम्भिय-तेभाहार-  
पदाणसुमलमादो । सेस सुगमं ।

सामाहयच्छेदोवट्ठावणसुद्धिसजद-सुहुमसापराहयसजदाण मण-  
पञ्जवणाणिमंगो ॥ १७० ॥

एसो दम्भट्ठियणिरसो । पञ्जवट्ठियणए पुण अवलविन्जमाने सामाहयच्छेदो  
वट्ठावणसुद्धिसंभदा पुण मणपञ्जवणाणितुल्ला होंति, मणपञ्जवणाणिसु तेभाहारपदाणम

क्योंकि बेसा स्वभाव है ।

केवलज्ञानी जीबोंकी प्ररूपमा अणगतवेदियोंके समान है ॥ १६८ ॥

विद्येय इतना है कि केवलज्ञानियोंके मारणात्मिक पद नहीं होता क्योंकि  
केवलज्ञानीमें उसके अस्तित्थका विद्येय है ।

सयममार्गपानुसार सयत और यथाकपाठविहारसुद्धिसंयत जीबोंकी प्ररूपमा  
अकपायी जीबोंके समान है ॥ १६९ ॥

इस सूत्रका निर्देश द्रव्यार्थिक मयका आलम्बन करता है । पर्यायार्थिक  
मयका आलम्बन करनेपर संयत जीब यथाकपायी जीबोंके तुल्य नहीं हैं क्योंकि, अकपायी  
जीबोंमें अविद्यमान ऐकियिकसमुद्घात ऐक्यससमुद्घात और आहारकसमुद्घात पर  
संयतोंमें पाये जाते हैं । दोय सूत्राय सुगम है ।

सामायिकच्छेदोपस्थापनसुद्धिसंयत और सूक्ष्ममात्परायिकसयत जीबोंकी प्ररूपमा  
मनःपर्ययज्ञानियोंके समान है ॥ १७० ॥

यह कथन द्रव्यार्थिक मयसे है । पर्यायार्थिक मयका आलम्बन करनेपर  
सामायिकच्छेदोपस्थापनसुद्धिसंयत जीब मनःपर्ययज्ञानियोंके तुल्य होते हैं क्योंकि  
मनःपर्ययज्ञानियोंमें ऐक्यससमुद्घात और आहारकसमुद्घात पर्योका अभाव है । परन्तु



भावादो । सुदुमसांपराह्यसुदिसजदा पुष मयप बवयाभितुष्ठा न । होति, सुदुमसांपराह्य-  
संभवेसु वेठभियपपदामावादो । सेसं सुगम ।

सजदासजदा सत्याणेहि केवढियं खेत्त फोसिदं ? ॥ १७१ ॥

सुगम ।

लोगस्स असखेज्जदिभागो ॥ १७२ ॥

एदस्सत्थो— बहूमाये खेत्तममो । अदीयेय तिन्हं लोगावमसखेज्जदिभागो,  
तिरियसोमस्स संखेज्जदिभागो, अद्वाहन्नादो असखेज्जगुणो फोयिदो । होदु णाम विहात्तदि  
सत्तावस्सेदं, सम्भदीन-समुदेषु अरियदेवसंभवेण तीदि क्खले सजदासजदाण संभवादो । न  
सत्तावस्स, सम्भदीन-समुदेषु सत्तावत्पसंजदासंभवावममावादो ? न एस होसो, अदि  
वि सम्भत्थ परिच तो वि सयवहपम्भयस्स परमाए तिरियसोमस्स संखेज्जदिभागे  
सत्तावत्पियसजदासजदावमुत्तमादो ।

सुखमसाम्पराधिक्युच्छिद्यंत्यत जीव मन्वत्पर्वयज्ञादियाने तस्य बर्हिं इति कर्त्तव्यं  
सुखमसाम्पराधिक्यस्यतोर्मे वैक्रियिक पदका जमाव है । होय सुखार्थं सुगम है ।

संपत्तासंपत्त जीवोनि स्वस्वान पदोति कियता क्षेत्र स्पर्ध किया है ? ॥ १७१ ॥

एव च सुगम है ।

संपत्तासंपत्त जीवोनि स्वस्वान पदोति लोकात्त असख्यात्ता माग स्पर्ध किया  
है ॥ १७२ ॥

इसका अर्थ— वर्तमान काष्ठकी अपेक्षा स्पर्शका विह्वलन क्षेत्रप्रकृत्याके  
समान है । अतीत काष्ठमें तीव्र लोकोके असख्यातमें माय तिर्यग्लोकाके संख्यातमें माय  
भीर अर्द्धांशोपसे असख्यातगुणे क्षेत्रका स्पर्ध किया है ।

शंका— विहात्तस्वस्थान पदार्थ अपेक्षा उपयुक्त स्पर्शका प्रमाण मळे ही  
ठीक हो कर्त्तव्य हैरी देवोंके सम्भवेसे अतीत काष्ठमें सर्व जीव समुद्रोंमें  
संबतासंबत जीवोंकी सम्भावना है । किन्तु स्वस्थानपदार्थी अपेक्षा उक्त स्पर्शक नहीं  
बबता कर्त्तव्य स्वस्थानमें स्थित संपत्तासंपत्त जीवोंका सर्व जीव समुद्रोंमें जमाव है ?

समाधान— यह कोर होय बर्हिं है कर्त्तव्य, यद्यपि सर्वत्र संपत्तासंपत्त जीव बर्हिं  
है, तथापि तिर्यग्लोकाके संख्यातमें मागप्रमाण स्पर्धम पदार्थके पर मागमें स्वस्थानस्थित  
संख्यातमाग मळे मळे है ।

समुग्धादेहि केवढिय खेत्त फोसिद ? ॥ १७३ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असखेज्जदिमागो ॥ १७४ ॥

एत्थ खत्तवण्णणा कायव्वा, बह्ममाणप्पयादो ।

छचोदसमागा वा देसूणा ॥ १७५ ॥

एत्थ ताव वासइत्थो पुग्घदे । सं महा— बेयन-कमाय-वउभियपदेहि तिग्घ

लोगायमसंखेज्जदिमागो, तिरियलोगस्स सख्खदिमागो, अङ्गइज्जआदो असंखेज्जगुणो

फोसिदो । एत्थो वासइत्थो । मारणत्थियेण पुण छचोदसमागा फासिदा, तिरिक्खेहिदो

आव अण्णुदकप्पो थि मारणत्थियं मेत्थमाणमज्जदासंज्जदार्णं तदुत्तमादो ।

उत्तवाद णत्थि ॥ १७६ ॥

सन्नदासन्नदगुणेय उत्तवादस्स विरोहादा ।

समुद्घातोंकी अपेक्षा संयतासयत जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ?

॥ १७३ ॥

यह भूत सुगम है ।

संयतासयत जीवोंने समुद्घातोंकी अपेक्षा लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श

किया है ॥ १७४ ॥

यहां क्षेत्रप्रकृष्या करना चाहिये क्योंकि वर्तमान कालकी विवक्षा है ।

अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम छह बने चौदह मार्गोंका स्पर्श किया है

॥ १७५ ॥

यहां पहिले वा शब्दसे सूचित अर्थ कहते हैं। यह इस प्रकार है—देवमासमुद्घात

कषायसमुद्घात और भौतिकसमुद्घात यहाँसे तैम लोकोंके असंख्यातवें भाग

तिर्यग्भोक्के संख्यातवें भाग और अङ्गईपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रका स्पर्श किया

है। यह वा शब्दसे सूचित अर्थ है। मारणात्थिकसमुद्घातसे ( कुछ कम ) छह बने

चौदह मार्गोंका स्पर्श किया है क्योंकि तिर्यग्भोंसे अण्णुत कस्य तक मारणात्थिक

समुद्घातकी करमेबासे संयतासयत जीवोंके अपर्युक्त स्पर्शन पाया जाता है ।

संयतासयत जीवोंके उपपाद् पद नहीं होता ॥ १७६ ॥

क्योंकि संयतासयतगुणस्यानके साथ उपपाद्का विरोध है ।

असजदाण णवुसयभगो ॥ १७७ ॥

सुगममेदं ।

दंसणाणुवादेण षक्खुदसणी सत्थाणेहि केवडिय खेत्त फोसिदं ?

॥ १७८ ॥

सुगमं ।

लोगस्म असंखेज्जदिमागो ॥ १७९ ॥

एत्थ खेत्तवम्भवा कायणा, वहुमाजपरुववादो ।

अट्टचोदसमागा वा देसूणा ॥ १८० ॥

सत्थाणेण तिप्प लोगाणमसखेज्जदिमागो, तिरियलोमस्त सख्खदिमागो, अट्टचोदसमागो असखेज्जगुणो फोसिदो । एसा वासरत्थो । विहारवदिसत्थाणेण अट्टचोदस-

असंयत्त जीवोंके स्पर्शनका निरूपण नपुसकपेदियोंके समान है ॥ १७७ ॥

यह एक सुगम है ।

दर्शनमार्गोंके अनुसार बहुदर्शनी जीवोंने स्वस्थान पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ॥ १७८ ॥

यह एक सुगम है ।

बहुदर्शनी जीवोंने स्वस्थान पदोंसे लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १७९ ॥

यहां शेषप्रकल्पना करना चाहिये क्योंकि चर्तमात्र काळकी प्रधानता है ।

अतीत काळकी अपेक्षा स्वस्थान पदोंसे बहुदर्शनी जीवोंने कुछ कम आठ बने चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ १८ ॥

बहुदर्शनी जीवोंने स्वस्थानसे तीन लोकोंके असंख्यातवें भाग तिर्यग्लोकके संख्यातवें भाग और अर्द्धाधीपसे असंख्यातगुण क्षेत्रका स्पर्श किया है । यह वा शब्दसे सूचित अर्थ है । विहारवत्स्वस्थानकी अपेक्षा बहुदर्शनी जीवों द्वारा (कुछ कम) माठ बने

मागा चक्षुदसणीदि फासिटा, अहुरन्धुवाहन्तरन्धुपदरुमतरे चक्षुदसणीर्ष विहारस्त  
विरोहामावादे ।

समुग्धादेदि केवडिय खेत फोमिद ? ॥ १८१ ॥

सुगर्म ।

लोगस्त असखेज्जदिभागो ॥ १८२ ॥

एत्थ खेत्तरूपणा कायन्ना, बहुमाणकालेण अहियारादे ।

अट्टचोदसभागा देसूणा ॥ १८३ ॥

कुदो ? वयण-कमाय वेतन्वियसमुग्धादेदि विहरतदेवेसु समुप्पण्णदि अट्टचोदस  
भागसप्तस्य पुमिज्जमाणस्त दमणादे । मारणतियफोमण्णपरूपण्णट्टसुत्तरसुत्थ मणदि-

सन्वलोगो वा ॥ १८४ ॥

पदस्त अत्थो सुत्थदे । त अहा— दस-णेत्थदि<sup>१</sup> मारणतियसमुग्धादेदि  
तेरहचोदसभागा फामिदा, सोगणालीण बाहिमेदेसि उपादामाणेण मारणतियण गमणा

धीवह भाग स्पष्ट है क्योंकि भाठ राहु बाहस्पले युक्त राहुमतरके भीतर चक्षुदसणी  
जीवोंके विहारका कार्य पिलाप नहीं है ।

चक्षुदर्शनी जीवों द्वारा समुद्घात पदोंमें कितना क्षेत्र स्पष्ट है ? ॥ १८१ ॥

यह एक सुगर्म है ।

चक्षुदर्शनी जीवों द्वारा समुद्घात पदोंसे साकल्य अमम्प्यातरां माग स्पष्ट है  
॥ १८२ ॥

यहाँ क्षेत्रप्रकल्पना करना चाहिये क्योंकि वर्तमान कालका अधिकार है ।

मर्तत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बने चौदह भाग स्पष्ट है ॥ १८३ ॥

क्योंकि विहार करनेवाले देवोंमें इत्थण बनना कर्णाय और धीक्रियिक समुद्घातोंसे स्पष्ट किया जमिवात्ता भाठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र बनता जाता है ।  
मारणात्तिकमसमुद्घातकी अपेक्षा स्पष्टानक प्रकल्पनाय उत्तर स्पष्ट कहते हैं—

अथवा, सर्व साक स्पष्ट है ॥ १८४ ॥

इस स्पष्टका अर्थ कहते हैं । यह एक प्रकार है—देव य मारणियों द्वारा  
मारणात्तिकसमुद्घातकी अपेक्षा तेरह बटे चौदह भाग स्पष्ट है क्योंकि लोकवासिके  
बाहिर इनके उपादाना नमाय हानस मारणात्तिकसमुद्घातके द्वारा गमन नहीं होना ।

१ अर्थात् देव मारणात्तिके विरुद्ध ।

मावादा । एते वासहत्यो । तिरिक्ख-मणुस्सेहि पुष सण्णो गो फोसिदो, वेसि  
लोगणाधीए बाहिमम्मंतरे च मारणतिपण गमजुवल्लमादा ।

उववादं सिया अत्थि सिया गत्थि ॥ १८५ ॥

अतिवच-मतिवचान चकसुद्धमपविमयाच एकम्मिह जीवे एककम्मलमिह परोप्पर  
परिहारसकलपविरोह । अ सइअणवट्टाणलकल्लणविरोहामावपदुप्पायणहुं सियासदो ठविदो ।  
कपमविरोहो चि आमावणहुसुचरसुचं मज्झि—

लद्धि पडुच्च अत्थि, णिव्वत्तिं पडुच्च गत्थि ॥ १८६ ॥

सद्दी चर्निस्सुदियावरणलभोवसमा, सा अपन्नत्रसकले चि अतिव, तण विवा  
वर्म्मिदियमिप्पचीए अमावादो । चिच्चची याम चकसुगासियाए विप्पची, सा अपज्ज  
कले गत्थि, अमिप्पचीए विप्पचिबिरोहादो । अण सरूपेण चकसुद्धसयमतिव तेवेव  
सरूपेण अदि तस्स अतिवचं परुविन्मदि तो विरोहा पमज्जद् । न च एव, तग्हा  
सइअणवट्टाणलकल्लणो विरोहो पतिव चि ।

यह वा शाब्दसे सूचित अर्थ है । किन्तु तिवच च मनुष्योंके द्वारा सर्वत्र लोक स्वरूप है  
क्योंकि लोगनाथीके बाहिर और भीतर मारणात्मिकसमुद्घातसे उनका गमन पाया  
जाता है ।

चसुद्धसनी जीवोंके उपपाद पद कदाचिद् होता है और कदाचिद् नहीं भी होता  
है ॥ १८५ ॥

एक जीवमें एक काळमें चसुद्धसनीविषयक अस्तित्व और नास्तित्वके परस्पर  
परिहाररूपेण विरोधके समान सहायवस्थानसमय विरोधका अभाव जनमानके भिन्न  
सूत्रमें स्थाय्य शाब्दिक उपपादान किया है । उक्त अस्तित्व च नास्तित्वमें मविरोध कैसे  
है इस बातके वाग्वार्थ उक्त सूत्र कहत है—

चसुद्धसनी जीवोंके सम्पत्की अपेक्षा उपपाद पद है, किन्तु निवृत्तिकी अपेक्षा  
नहीं है ॥ १८६ ॥

चसुद्धसनीपरकच सपापणमको सम्पत् कहत है । वह अणुगतकाळमें भी है  
कदाचि उक्तच विना वाच्य निवृत्ति नहीं होती । गासकदव चसुद्धी निवृत्तिकच नाम  
निवृत्ति है । वह अणुगतकालमें नहीं है क्योंकि, अमिप्पचित्वा मिप्पचित्से विरोध है ।  
अस कपसे चसुद्धसनी है उसी कपसे यदि उसका नास्तित्व कहा जाय तो विरोधका  
अभाव होगा । किन्तु ऐसा है नहीं, जनपच नहीं सहायवस्थानसमय विरोध नहीं है ।

जदि लडिं पडुच्च अत्पि, केवडियं खेत्त फोसिद ? ॥ १८७ ॥  
सुगमं ।

लोगस्स अमस्सेज्जदिमागो ॥ १८८ ॥

एद सुगमं, बडुमाप्पमादो ।

सच्चलोगो वा ॥ १८९ ॥

एदस्स भत्थो-देव-भेरइएहि सच्चसुत्तिरिक्ख मच्चुस्सहिंठो चच्चसुदमणीसुप्पण्णेहि  
भारइभोइसमागा फोमिदा, लोग्गालीए बाहि चच्चसुदंसणीममावादो, आणदादिठवरिम  
देवाण ठिग्गिस्सेसुप्पाइमावादा च । एसो भासइत्थो । एइदिएहिंठा सच्चसुत्तिरिक्ख  
उप्पण्णेहि पइमसमए सच्चलोगो फोसिदो, आणतिमादो सच्चपदमेहिंठा आगमण  
संमवादो च ।

अचच्चसुदसणी असजदमगो ॥ १९० ॥

एसो दच्चद्वियणिदेवो । पच्चसुत्तिरिक्ख पुण अचच्चसुदसणियो

यदि तस्मिन्की अपेक्षा चक्षुदर्शनी जीवोंके उपपाद पद है वा उनके द्वारा इस  
पदसे कितना धन स्पष्ट है ? ॥ १८७ ॥

यह सच सुगम है ।

चक्षुदर्शनी जीवों द्वारा उपपाद पदस लोकका असंख्यातर्था माग स्पष्ट है  
॥ १८८ ॥

यह सच सुगम है, क्योंकि यहाँ वर्तमान काळकी विषयता है ।

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा सध लोक स्पष्ट है ॥ १८९ ॥

इस सचका अर्थ— चक्षुदर्शनी तिरिक्ख भीर मच्चुप्पोमैले चक्षुदर्शनियोंमें उत्पन्न  
हुए दध व नाटिकियों द्वारा बाएह बडे चौरह माग स्पष्ट है क्योंकि लोकवालीके बाहिर  
चक्षुदर्शनी जीवोंका अभाव है तथा आमतादि उपरिम दधोंका तिरिक्खोंमें उत्पाद भी  
नहीं है । यह वा साम्प्रस सुचित अर्थ है । एकेन्द्रिय जीवोंमेंसे चक्षुदर्शिय सहित जीवोंमें  
उत्पन्न हुए जीवों द्वारा मध्यम समयमें सर्व लोक स्पष्ट है क्योंकि, वे जन्मते हैं तथा सर्व  
मपेक्षासे उनके आगमनकी सम्भावना भी है ।

अचक्षुदर्शनी जीवोंकी प्ररूपमा असयत जीवोंके समान है ॥ १९० ॥

यह दधन प्ररूपार्थिक नयकी मपता है । पर्वार्थार्थिक नयका अचक्षुदर्शन कउपेपर

असंभद्रतुला ग होती, अथर्वसुदमनीसु वेमाहारपदानमृषर्त्तमादो ।

ओहिदसणी ओहिणाणिभगो ॥ १९१ ॥

सुगम ।

केवलदसणी केवलाणाणिभगो ॥ १९२ ॥

एदं पि सुगम ।

लेस्ताणुवादेण किण्हलेस्सियणील्लेस्सियचाउलेस्सियाण असं  
जदमगो ॥ १९३ ॥

सुगममदं ।

तेउलेस्सियाण सत्याणेहि केवडिय खेत फोसिद ? ॥ १९४ ॥

सुगम ।

लोगस्स असस्सेज्जदिमगो ॥ १९५ ॥

एतय वेचवण्णमा अयय्या बहुमाजविक्कहाए ।

अथर्वसुदर्शनी श्रीबौद्धी प्ररूपणा असंपत श्रीबौद्धी तुस्य मर्ही हे क्योकि अथर्वसुदर्शनिपरिमे  
तैत्रस भीर आहारक समुद्रघात पर पाये जाते हैं ।

अथर्वसुदर्शनी श्रीबौद्धी प्ररूपणा अथर्विज्ञानिपरिके समान है ॥ १९१ ॥

एह सूत्र सुगम है ।

केवळसुदर्शनी श्रीबौद्धी प्ररूपणा केवळज्ञानिपरिके समान है ॥ १९२ ॥

एह सूत्र भी सुगम है ।

संभ्यामार्त्तजाके अमुमात कुम्भसेदयावासे, नीलसेभ्यावासे और फापोतसेभ्या-  
वासे श्रीबौद्धी प्ररूपणा असंपत श्रीबौद्धी समान है ॥ १९३ ॥

एह सूत्र सुगम है ।

तेजोसेभ्यावासे श्रीबौद्धी द्वारा स्वस्थान पर्येमे कितना क्षेत्र स्पष्ट है ? ॥ १९४ ॥

एह सूत्र सुगम है ।

तेजोसेभ्यावासे श्रीबौद्धी द्वारा स्वस्थान पर्येमे सोकका असंभ्यात्तर्त्ता मला स्पष्ट  
है ॥ १९५ ॥

एहां क्षेत्रमरूपणा करवा चाहिये क्योंकि, वर्तमान काष्ठकी विषया है ।

अट्टचोदसभागा वा देसूणा ॥ १९६ ॥

सत्प्राणेण तिष्ठं लोगाणमसंखेन्द्रदिभागो, तिरियलोगस्त संखेज्जदिभागो,  
अट्टाज्जादो असंखेन्द्रगुणो फोमिदो । एसो वासइत्वो । विहारवदिसत्प्राणेण अट्टचोदस  
भागा देसूणा फासिदा, वेठलेस्सिपदेषाण विहरमाणामेदस्सुवलंमादो ।

समुग्घादेहि केवढिय खेत्त फोसिद ? ॥ १९७ ॥

सुगम ।

लोगस्त असंखेज्जदिभागो ॥ १९८ ॥

सुगम, बहुमायप्पणादो ।

अट्टचोदसभागा वा देसूणा ॥ १९९ ॥

प्रेयण कसाय-वठम्भिपपरिणदेहि अट्टचोदसभागा फासिदा, विहरताणं देवाण-  
मेदेसि तिण्ढ पदार्णं सम्भत्थुवलमादो । मारणतिण्णं अट्टचोदसभागा फोसिदा, मेरुमूलादो

अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पष्ट हैं ॥ १९६ ॥

स्वस्वामकी भयस्ता तीन काकोका ममकपातवां भाग तियत्ताकका संख्यातवां  
भाग और अट्टार्ह द्वीपसे असंख्यातगुणा अत्र स्पष्ट है । यह वा शम्भुसं सूचित अर्थ है ।  
विहारवत्स्थानकी भयस्ता कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पष्ट हैं क्योंकि विहार  
करते हुए तत्रोच्छेद्याबाह्य देवांके इतना स्वर्गम पाया जाता है ।

समुद्रपातकी अपवा तेषालेख्याबाह्य जीवों द्वारा कितना अत्र स्पष्ट है ?  
॥ १९७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवों द्वारा समुद्रपातकी अपवा लाकका भयंकरपातवां भाग स्पष्ट है  
॥ १९८ ॥

यह सूत्र सुगम है क्योंकि वर्तमान कालकी विवक्षा है ।

अपवा, अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पष्ट हैं  
॥ १९९ ॥

पद्मा कपाय और वैदिकिक पद्मोंसे परिप्लत तमाच्छेद्याबाह्य जीवों द्वारा आठ  
बटे चौदह भाग स्पष्ट हैं क्योंकि विहार करते हुए क्योंकि ये तीनों पद् सर्वत्र पाए  
जाते हैं । मारणातिक्कसमुद्रपातकी भयस्ता नौ बटे चौदह भाग स्पष्ट है क्योंकि



देहिम दोहि रन्धि सह उषरि सचरन्नुफासपुवसमादा ।

उचवादेहि केवडिय खेतं फोसिद ? ॥ २०० ॥

सुगम ।

लोगस्त असखेज्जदिमागो ॥ २०१ ॥

सुगमं, बहुमाजकले पडिबद्धादो ।

दिवङ्गुषोदसभागा वा देसूणा ॥ २०२ ॥

इसो ! मेरूमूखदो पहापत्थवस्त दिवङ्गरन्नुमेचसुवरि षडिदून अबद्दामादा ।

सजकडुमार-माहिबाथ पडमिदपदेषु<sup>१</sup> ठेठलेस्सिएसु उप्पाइन्जमाले सादिरेपदिबङ्गरन्नुखेसं  
किण्व सम्भदे ! न, सोहम्मादो थोव थोव द्वाणसुवरि गीत्थ सजकडुमारदिपत्थवस्त  
अबद्दामादो । कभमेदं जम्भदे ! अण्णहा देसूणचापुववचीदो । मारणतिय-उचवादेहिद  
वासहा पुचसमुक्कपत्था इहम्मा ।

मेरूमूखसं भीषे दो राहुमोंके साथ ऊपर सात राहु स्वर्गव पाया जाता है ।

उपपादकी अपेक्षा तेजोलेभ्यावाले भीषों द्वारा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥२००॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त भीषों द्वारा उपपादकी अपेक्षा लोकस्य अंसस्यातवां माग स्पृष्ट है ॥२०१॥

यह सूत्र सुगम है क्योंकि वर्तमान काकले संबन्ध है ।

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम डेढ़ बटे पौदह माग स्पृष्ट हैं ॥२०२॥

क्योंकि मेरूमूखसं डेढ़ राहुमात्र ऊपर बङ्कर मना पटकका अवस्थान है ।

संज्ञा— सानत्कुमार माहेन्द्र कल्पोंके प्रथम इन्द्रक विमानमें स्थित तेजोलेभ्या  
वासे वेधोंमें उत्पन्न करानेपर डेढ़ राहुसे अधिक क्षेत्र क्यों नहीं पाया जाता ?

समाधान— यहाँ क्योंकि सौषमं कल्पसे थोड़ा ही स्वाम ऊपर जाकर सान  
कुमार कल्पका प्रथम पटक अवस्थित है ।

संज्ञा— यह कैसे जाना जाता ?

समाधान— क्योंकि देसा व माननेपर उपर्युक्त डेढ़ राहु क्षममें जो कुछ  
न्यूनता बरतलाई है वह धन नहीं सकती । मारजातिक और उपपाद् पदोंमें स्थित वा  
शब्द उक्त अर्थके समुच्चयके विषये जानना चाहिये ।

पम्मलेस्सिया सत्थाण-समुग्घादेहि केवडिय खेत्त फोसिद ?

॥ २०३ ॥

सुगम ।

लोगस्म असखेज्जदिभागो ॥ २०४ ॥

सुगम, बहुनामभिरोहादो ।

अट्टचोदसभागा वा देसूणा ॥ २०५ ॥

सत्यानेण विद्द लोणाणममस्सन्नदिभागो, तिरियलोगस्स सखेत्तदिभागो, अट्टादन्नादो असखेत्तगुणा फोसिदो । एमो वासदहत्तदत्थो । विहार-वपण-कसाय वेठम्भिय माग्गत्थियपरिजएहि अट्टपादसभागा देसूणा फोमिदा । कुदो ? पम्मलेस्सिय देवाणमेईदिपसु मारणत्थियामत्तादो ।

उववादेहि केवडियं खेत्त फोसिद ? ॥ २०६ ॥

सुगम ।

पधलेह्यावाले जीवोने स्वम्मान और समुत्पात पदोसे कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? ॥ २०३ ॥

यह सख सुगम है ।

उपर्युक्त जीवोने उक्त पदोसे साकका असुत्पातका माग स्पर्श किया है ॥ २०४ ॥

यह सख सुगम है क्योंकि वर्तमान कालकी विषयस्वरूप निराल है ।

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बने चौदह माग स्पर्श किए हैं ॥ २०५ ॥

सत्यान पदकी मपत्ता तीन लोकोंके असत्प्रातर्द माग तिर्यग्लोकके संख्यातर्द माग और अर्द्धादीपले असत्प्रातर्गुण क्षेत्रका स्पर्श किया है । यह वा वापस सुचित अर्थ है । विहारवास्तवस्थान केवनासमुत्पात कवापसमुत्पात वैदिकिकसमुत्पात और मारणाश्लिकसमुत्पात पदोसे परिणत अर्थात् पूर्वमन्त्रस्यावाले जीवों द्वारा कुछ कम आठ बर चौदह माग स्पृष्ट हैं क्योंकि पधलेह्यावाले देवोंके एकेश्वर्य जीवोने मारणाश्लिकसमुत्पातका अभाव है ।

उक्त जीवों द्वारा उपपादकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ २०६ ॥

यह सख सुगम है ।

लोगस्त असखेज्जदिभागो ॥ २०७ ॥

एवं पि सुगम, बहूमागप्यणादा ।

पचचोदसभागा वा देसूणा ॥ २०८ ॥

इत्था ! मरुमूलादो उवरि पचरन्दुमचद्वाण गत्थ सइस्मारकूपस्स अचद्वाणादा ।

एत्थ वासरा पुत्तसमुत्पपद्दा ।

सुक्कलेस्सिया सत्याण-उववादेहि केवडिय खेत्त फोसिद ?

॥ २०९ ॥

सुगमं ।

लोगस्त असखेज्जदिभागो ॥ २१० ॥

एत्थ सुचवप्पया कयप्पा, बहूमागप्यणादो ।

छचोदसभागा वा देसूणा ॥ २११ ॥

उक्त बीजों द्वारा उपपादकी अपेक्षा सोकका असंख्यातवां माग स्पष्ट है

॥ २०७ ॥

यह सब भी सुगम है क्योंकि वर्तमान काष्ठकी विचरता है ।

अथवा, अतीत काष्ठकी अपेक्षा उक्त बीजों द्वारा कुछ कम पाँच बटे चौदह

माग स्पष्ट हैं ॥ २०८ ॥

क्योंकि मरुमूलासे पाँच राज्ञुमात्र मार्ग आकर सहस्रकारकस्यका जन्मस्थान है ।  
सुगमं वा शब्द पूर्वोक्त अर्थके समुच्चयके किये है ।

सुक्कलेस्सियावात्त बीजोंने स्वस्थान और उपपाद पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्ध

किया है ? ॥ २०९ ॥

यह सब सुगम है ।

उपर्युक्त बीजोंने उक्त पदोंसे साकम्प असंख्यातवां माग स्पर्ध किया है ॥ २१० ॥

यहाँ क्षेत्रप्रकल्पना करना चाहिये क्योंकि वर्तमान काष्ठकी विचरता है ।

अथवा, अतीत काष्ठकी अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह मागोंका स्पर्ध किया

है ॥ २११ ॥

णदस्तरयो— सरत्यामेण सिण्ह लोगाणमसखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स सखेज्जदिभागो, अट्टाण्णमादो असखेज्जगुणो फोमिदो । एमो वासरेण समुच्चिदरयो । विहारवदिसत्थाम-उववादेहि छवाइसभागा फोसिदा, तिरियलोगादो आरण्णुदरूपे समुप्पग्गमाणाण छरन्हुअम्मत्ते विहरंताण ष णचियमेचफोसज्जवलमादो ।

समुग्घादेहि केवडिय खेत्त फोसिद ? ॥ २१२ ॥

सुगम ।

लोगस्स अमखेज्जदिभागो ॥ २१३ ॥

एत्य खत्तपरूवणा कायम्हा ।

छचोहसभागा वा देसूणा ॥ २१४ ॥

आरमन्नुदरेणेषु कयमारणंसियगिरिक्ख मज्जुम्माणसुवलमादो । वेदण-कसाय षडभियसमुग्घादाण विहारवदिसत्थाणमगो ।

असखेज्जा वा भागा ॥ २१५ ॥

इसका मर्थ— अस्थान पदसे तीन बीघोंके असम्प्रातर्षे भाग तिर्यग्भोकके सम्प्रातर्षे भाग और मङ्गारंठीपस असम्प्रातर्षुये क्षेत्रका स्वर्ण किया है । यह वा शब्द द्वारा समुच्चय रूपस स्तुत मर्थ है । विहारवत्स्वस्थान और उपपाठ पदोंसे छह बटे चौदह भागोंका स्वर्ण किया है क्योंकि तिर्यग्भोकस आरण मध्युत कस्यमें उत्पन्न होनेवाले और छह राजक भीतर विहार करनेवाले उक्त बीघोंके इतना मात्र स्वर्ण पाया जाता है ।

उक्त बीघों द्वारा समुद्रपाठ पदोंसे कितना क्षेत्र स्पष्ट है ? ॥ २१२ ॥

यह सुख सुगम है ।

उक्त बीघों द्वारा समुद्रपाठ पदोंसे सोकरुअ असम्प्रातर्षां भाग स्पष्ट है ? ॥ २१३ ॥

यहां क्षेत्रप्रकरण करना चाहिये ।

अथवा, अतीव कालकी अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पष्ट हैं ॥ २१४ ॥

क्योंकि आरण मध्युत कस्यवाली रेखाओंमें आरणाश्लिषसमुद्रपाठको करतेबाड़े तिर्येच और मज्जु पाये जाते हैं । वेदना कवाय और वैश्विक समुद्रपाठोंकी अपेक्षा स्वर्णका निकषय विहारवत्स्वस्थानके समान है ।

अथवा, असम्प्रात बहुभाग स्पष्ट हैं ॥ २१५ ॥

एवं पदरगदकेष्वस्मिन्सिद्धय मज्जिद, वाद्वस्य मोक्षं तस्य सम्बलोभमदजीव  
 पदेसावद्भवत्समादो । ददगदेहि चद्रुण्ड सोगाजमसखेज्जदिमागो, अद्वाइज्जादो असखेज्ज  
 गुणो फोसिदो । एवं क्वाइज्जदेहि वि । अवरि तिरियजोगसस संरोज्जदिमागो त्तो  
 संखेज्जगुणो वा फोसिदो चि वचय्य । एतो वामइय यउत्तसमुच्चयो । पुच्चसुत्तिय  
 वासदेण वि अउत्तमसुच्चयो पुच्चसुत्ते चन करो, सुक्कसस्मियदेवेहि कयमारणत्थिहि  
 चद्रुण्ड सोगाजमसखे ज्जदिमागो, अद्वाइज्जादो असखेज्जगुणो फोसिदा चि पदसस  
 स्यपत्तादो ।

सब्बलोगो वा ॥ २१६ ॥

एवं सोगपूरुषगदकेवलिं पद्दुच्च समुदिह । एस्य वासदा उत्तसमुच्चयत्था ।

मवियाणुवादेण भवसिद्धिय अमवसिद्धिय सत्थाण-समुग्घाद  
 उववादेहि केवडिय स्वेत फोसिद ? ॥ २१७ ॥

यह अतरसमुत्पातगत केवलीका भाष्य कर कहा गया है क्योंकि अतरसमुत्  
 पातमें वातबलकोंको छोड़कर सर्व लोकमें स्वाप्त जीव प्रदेश पाये जाते हैं। इन्द्रसमुत्पात  
 गत जीवों द्वारा वात लोकोंका असंख्यातर्षा भाग और अर्द्धांशपसे असंख्यातगुणा  
 क्षेत्र सृष्ट है। इसी प्रकार कपाटसमुत्पातगत जीवों द्वारा भी सृष्ट है। विशेष इतना है कि  
 तिर्यग्लोकका संख्यातर्षा भाग अथवा उनसे संख्यातगुणा क्षेत्र सृष्ट है एसा कहा  
 जाहिये। यह सूत्रमें नहीं कहे हुए अर्थका वा शब्दके द्वारा समुच्चय किया गया है। पूर्व  
 सूत्रमें स्थित वा शब्दके द्वारा भी अनुक्त अर्थका समुच्चय पूर्व सूत्रमें ही किया गया है  
 क्योंकि वह वा शब्द मारणाग्निकसमुत्पातको प्राप्त शुक्लकोष्पावाले देवोंके द्वारा  
 वात लोकोंका असंख्यातर्षा भाग और अर्द्धांशपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र सृष्ट है इस  
 अर्थका सूत्रक है।

अथवा, सर्व लोक सृष्ट है ॥ २१६ ॥

यह लोकपूरुषसमुत्पातगत केवलीकी भयंसा कहा गया है। वहाँ वा छत्र  
 पूर्वोक्त अर्थक समुच्चयके किये हैं।

मम्यमार्ग्यामुमार मम्यसिद्धिक और अमम्यासिद्धिक जीवों द्वारा स्वस्वान,  
 समुत्पात एव उपपाद पदोंसे कितना क्षेत्र सृष्ट है ? ॥ २१७ ॥

१ अतिवृ एव इति वाड ।

२ अ-वातसी- अरण्यदृश्यसी एव वापरी अरण्यदृश्यो पुनरुप एव इति वाड । ।

सुगम ।

सब्वलोगो ॥ २१८ ॥

सत्थाण-वेण-कसाय मारुणसिय-उबवादेहि अदीद बहुमाणे सम्बलोगो फोसिदो । विहारवदिसत्थाणण बहुमाणे खेचं; अदीदेण अहुणोइमभागा फोसिदा । वेठम्मियपदेण विण्ह ओगानमसखेज्जदिमागो, पर-तिरियलोगेहिदो अंसखेज्जगुणो फोसिदो । मभ सिद्धियसु सेसपदानमोपसंगो । कचमेदं समुवत्तह ? देसामासियचादो ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठी सत्याणेहि केवडियं खेत्त फोसिद ?

॥ २१९ ॥

सुगम ।

लोगस्स असखेज्जदिमागो ॥ २२० ॥

सुगम, बहुमाणप्यवादो ।

यह सख सुगम है ।

उपर्युक्त जीवों द्वारा उक्त पदोंसे सर्व लोक स्पष्ट है ॥ २१८ ॥

स्वस्थान वेदना, कषाय मारुणात्मिक और उपपाद पदोंसे मर्तीत व वर्तमान काखमें मध्यसिद्धिक एवं अमध्यसिद्धिक जीवों द्वारा सर्व लोक स्पष्ट है । विहारवत्स्वस्थानकी अपेक्षा वर्तमान काखमें खेचके समान प्रकृपणा है, मर्तीत काखमें माठ बडे चौबड भाग स्पष्ट हैं । वैदिकिकसमुत्पातकी अपेक्षा तीन आकोंका अंसकपातवां भाग और मनुष्यलोक व तिर्यग्लोकसे अंसकपातगुणा क्षेत्र स्पष्ट है । मध्यसिद्धिक जीवोंमें शेष पदोंकी अपेक्षा स्वर्गलका निरूपण बोधके समान है ।

शुद्धा—यह कैसे जामा जाता है ?

समाधान—इस सखके वेदनामर्शक होनेसे उपर्युक्त अर्थ उपलब्ध होता है ।

सम्यक्स्वमार्गानुसार सम्यग्दृष्टी जीवोंने स्वस्थान पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? ॥ २१९ ॥

यह सख सुगम है ।

सम्यग्दृष्टि जीवोंने स्वस्थान पदोंसे लोकका अंसकपातवां भाग स्पर्श किया है ॥ २२० ॥

यह सख सुगम है क्योंकि वर्तमान काखकी विषयता है ।

अट्टचोदसभागा वा देसूणा ॥ २२१ ॥

मत्थापेयं तिष्ठं सोगायमसखेन्द्रदिभागा, तिरियल्लोगस्स सखेन्द्रदिभागो,  
अट्टाद्दत्तादो असखेन्द्रगुणा फोसिदो । एसो वासइत्था । विहारवदिमत्थापेण अट्टचोदस-  
भागा दसूणा फोसिदा, सम्माइत्तीण मरुमुत्तादो हेत्ता वारज्जुमेत्तद्वाणगमणस्स इत्थावा ।

समुग्घादेहि केवढिय खेत फोसिद ? ॥ २२२ ॥

सुगम ।

लोगस्स असखेज्जदिभागो ॥ २२३ ॥

एत्थ खत्तवप्यणं कायघ्नं, बहुमाणवेयण-कमाय-वेउभिय-तेवाहार-केवति  
समुग्घाद मारणतिपखेत्तप्पजादा ।

अट्टचोदसभागा वा देसूणा ॥ २२४ ॥

वेयण-कमाय वेउभिय मारणतियपदेहि अट्टचोदसभागा इत्था फोसिदा ।

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बट चौदह भाग स्पर्श किये हैं  
॥ २२१ ॥

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बट चौदह भाग स्पर्श किये हैं  
॥ २२१ ॥

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बट चौदह भाग स्पर्श किये हैं  
॥ २२१ ॥

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बट चौदह भाग स्पर्श किये हैं  
॥ २२१ ॥

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बट चौदह भाग स्पर्श किये हैं  
॥ २२१ ॥

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बट चौदह भाग स्पर्श किये हैं  
॥ २२१ ॥

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बट चौदह भाग स्पर्श किये हैं  
॥ २२१ ॥

एद देवसम्माइष्टिगो अस्सिदूण उच्च । वासदा किमहुं पुषो ? तिरिक्ख-अणुससम्मा  
 ष्टिखेत्तसमुच्चयहुं । ए अदा— बेयण-कमाय-बेठव्विपदि तिण्ह लोगाणमसंखेज्जदि  
 मागो, तिरियसोगस्स संखेज्जदिमागो, अङ्गाइज्जादो असखज्जगुणो; तेजाहारपदेहि  
 चदुण्ह लोगाणमसंखेज्जदिमागो, अङ्गाइज्जस्स संखेज्जदिमागो; मारत्तिण्ण छवोएस्स  
 मागा फासिदा । एसो वासदसमुच्चिदत्थो ।

असखेज्जा वा भागा वा ॥ २२५ ॥

एद पदरगदकेवलमस्सिदूण उच्च । दडगदेहि चदुण्ह लोगाणमसंखेज्जदिमागो,  
 अङ्गाइज्जादो अमंखेज्जगुणो फासिदा । एमा पढमवासरण समुच्चिदत्था । क्वाडगदेहि  
 तिण्ह लोगाणमसंखेज्जदिमागो, तिरियसोगस्स संखेज्जदिमागो तथो संखज्जगुणो वा,  
 अङ्गाइज्जादो असंखेज्जगुणो फामिदो । एसो विदियवासदसमुच्चिदत्थो । एवं सुअस्य  
 पदरगदकवत्तिमुत्तुत्तियदोण्ण वामहाणमत्थो परूवेदत्थो ।

सव्वलोगो वा ॥ २२६ ॥

घाट कुछ कम भाठ बट बीवह माग सृष्ट है । यह स्वर्गन क्षेत्र रूप सम्पत्संगणिका  
 भाग्यकर कहा गया है ।

श्लोक—स्वर्गं वा शत्रुका प्रहण किल सिधे किया है ?

समाधान—तिर्यक् भीर मनुष्य सम्पत्संगणिकोंके क्षेत्रका समुच्चय करके लिये  
 स्वर्गं वा शत्रुका प्रहण किया है । यह इस प्रकार है—तिर्यक् व मनुष्य सम्पत्संगणिकोंके  
 घाट बेवना क्वाय भीर विविध पक्षोंसे तीन खोखोंका असंख्यातर्था भाग तिर्यक्काका  
 संख्यातर्था भाग भीर अङ्गाइजीपसे असंख्यातगुणा, तीअस भीर आहारक पक्षोंसे चार  
 भागोंका असंख्यातर्था भाग भीर अङ्गाइजीपका संख्यातर्था भाग तथा मारत्तिण्ण  
 समुच्चयतस छह बडे बीवह माग सृष्ट है । यह वा शत्रुसे सपूहीत भय है ।

अथवा, असंख्यात बहुभागप्रमाण क्षेत्र सृष्ट है ॥ २२५ ॥

यह कथन प्रतरसमुच्चयतगत केवलीका भाग्यकर किया है । अङ्कसमुच्चयतगत  
 क्वायियों घाट चार भागोंका असंख्यातर्था भाग भीर अङ्गाइजीपसे असंख्यातगुणा  
 क्षेत्र सृष्ट है । यह प्रथम वा शत्रुस सपूहीत भय है । क्वाटसमुच्चयतगत क्वायियोंके  
 घाट तीन भागोंका असंख्यातर्था भाग तिर्यक्काका संख्यातर्था भाग वा उसस  
 संख्यातगुणा तथा अङ्गाइजीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र सृष्ट है । यह द्वितीय वा शत्रुस  
 सपूहीत भय है । इसी प्रकार सर्वत्र प्रतरसमुच्चयतगत क्वायियोंके अक्षयका निरूपण  
 करतवास स्वर्गं सिधत वा वा शत्रुका भय करना चाहिय ।

अथवा, सर्व साक सृष्ट है ॥ २२६ ॥



एदं सोमपूरणमस्मिद्बन् मभिर्द । वासदो उचसमुप्ययत्नो ।

उववादेहि केवडिर्यं स्वत्तं फोसिर्द ? ॥ २२७ ॥

सुगमं ।

लोगस्त असखेज्जदिमागो ॥ २२८ ॥

सुगमं, बहुमात्प्रपवावो ।

छचोदसमाग वा देसूणा ॥ २२९ ॥

देव-भेदप्रपदि मनुस्तेसुप्यग्बमागेहि अनुर्धं लोगानमसंखेज्जदिमागो, अनुर्धं  
क्यादो असंखे-अगुणो फोसिदो, एककारहरन्तुरीह-पयदासीसत्रोयपसकसंखेचस  
उवसंमावो । न च एचिपमेच चेषेचि विपमो अरिय, अण्यस्म वि तिरियसोगस्त  
संखेज्जदिमागमेचस उवसंमावा । एतो वासदत्यो । तिरिय-मनुस्महिदो देवेसुप्यग्बदि  
छचोदसमागो फोसिदा ।

यह सूत्र श्लोकपूरणसमुप्ययत्नका भाष्य कर कहा गया है । वा शब्द पूर्वोक्त  
अर्थके समुच्चयके द्विये है ।

उक्त सम्पगृष्टि जीवों द्वारा उपपादकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पष्ट है ॥ २२७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सम्पगृष्टि जीवों द्वारा उपपादकी अपेक्षा लोकका अमरुयातर्वा भाग स्पष्ट है  
॥ २२८ ॥

यह सूत्र सुगम है क्योंकि वर्तमान कालकी विषयता है ।

अपवा, अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम उह बने चौदह भाग स्पष्ट हैं  
॥ २२९ ॥

मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाके द्बन् मारुकिवोंके द्वारा चार जाकोंका मसंख्यातर्वा  
प्राय और अकार्द्वीपसे अस्तंख्यातगुणा क्षेत्र स्पष्ट है क्योंकि यहाँ मारुद एतु दीर्घ  
और पैतामीस मात्र वात्रम विस्तीर्ण क्षेत्र पाया जाता है । और इतना मात्र ही  
क्षेत्र है जेसा मिथम भी नहीं है क्योंकि अन्य भी तिर्यक्काकक्ष संख्यातर्वा प्राय  
पाया जाता है । यह वा शब्दसे स्थिति अर्थ है । तिर्यक् और मनुष्योंमेंसे देवोंमें उत्पन्न  
हुए सम्पगृष्टि जीवोंके द्वारा उह बने चौदह भाग स्पष्ट हैं ।

स्वइयसम्माड्टी सत्याणेहि केवडिय स्वेत्त फोमिद ? ॥ २३० ॥

सुगम ।

लोगस्म असस्वेज्जदिभागो ॥ २३१ ॥

सुगम, बद्धमाणप्पणादो ।

अट्टचोदमभागा वा देसूणा ॥ २३२ ॥

सत्याणस्थि तिर्ण्णं लोकाणमसखज्जदिभागो, निरियलागस्स सखेज्जदिभागो, अट्टचोदमभागादो असस्वेज्जगुणो फासिदो । एमो वासइत्थो । विहारवदिमत्ताणण अट्टचोदस भागा देसूणा फोसिदा ।

समुग्घादेहि केवडिय स्वेत्त फोसिद ? ॥ २३३ ॥

सुगम ।

लोगस्स असस्वेज्जदिभागो ॥ २३४ ॥

धायिकसम्यग्घटि नीवोने स्वस्थान पदोत्तरे कितना क्षेत्र स्पष्ट किया है ? ॥ २३० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

धायिकसम्यग्घटि नीवोने स्वस्थान पदोत्तरे साकका असंख्यातवां भाग स्पष्ट किया है ॥ २३१ ॥

यह सूत्र सुगम है क्योंकि वर्तमान कालकी विवक्षा है ।

अथवा, उक्त शीर्षों द्वारा अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे बीरद भाग स्पष्ट हैं ॥ २३२ ॥

स्वस्थानमें स्थित धायिकसम्यग्घटियों द्वारा तीन छोटीको असंख्यातवां भाग विरगकोकका संख्यातवां भाग और अट्टचोदमभागा असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पष्ट है । यह वा दाम्पसं सुचित मय है । विहारवत्स्वस्थानसे कुछ कम आठ बटे बीरद भाग स्पष्ट हैं ।

समुद्घात पदोत्तरे धायिकसम्यग्घटियों द्वारा कितना क्षेत्र स्पष्ट है ? ॥ २३३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

समुद्घात पदोत्तरे धायिकसम्यग्घटियों द्वारा लोकरका असंख्यातवां भाग स्पष्ट है ॥ २३४ ॥

सुगमं, बहुमाजप्यगादो ।

अट्टचोदसभागा वा देसूणा ॥ २३५ ॥

तेजाहारपदेहि चटुण् लोगाणमसंखेज्जदिमागो, अट्टाण्वादो सखेज्जदिमागो फोसिदो । तिरिक्ख-मणुस्मेहि वेयण-कसाय-वेठब्बिय मारणत्तियसमुग्गभादेहि तिण् लोगाणमसंखे ज्जदिमागो, तिरियत्तोगस्म सखे ज्जदिमागा, अट्टाण्वादो अमंखेज्जगुणो फोसिदो । एमो वामदत्तो । देवेहि पुण वेयण-कसाय-वेठब्बिय-मारणत्तियसमुग्गभादेहि अट्टचोदसभागा देसूणा फासिदा ।

असंखेज्जा वा भागा वा ॥ २३६ ॥

एदं पदरगदकेवसिल्लेत्तं पट्टण् मणिदं, तत्तं वादबलय मात्तुण सेसासेसठाग-गद्वीवपदसाजसुबलभादा । दडगदेहि चटुण् लोगाणमसंखेज्जदिमागो, अट्टाण्वादा असंखेज्जगुणो फासिदो । एमो पदमभासदेण सुदत्तो । क्वाठगदेहि तिण् लोगाणम

यह सूत्र सुगम है क्योंकि वर्तमान काण्वकी विवक्षा है ।

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम माठ वत् चौदह भाग स्पृष्ट हैं ॥ २३५ ॥

ठिक्खस भोर आहारक पदोंसे क्षापिकसम्पत्ति शीघ्रों द्वारा चार सोफोंका अर्धक्यातर्था भाग भीर अट्टाण्वादिपका सख्यातर्था भाग स्पृष्ट है । तिण्ण व मत्तुण् क्षापिक सम्पत्तिधियों द्वारा वेदना कषाय वैद्विषिक भीर मारणाभित्तकसमुद्घात पदोंसे तीन माफोंका अर्धक्यातर्था भाग तिरियम्मोक्का सख्यातर्था भाग भीर अट्टाण्वादिपसे अर्ध कषायगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । यह वा शब्दसे सूचित अर्थ है । परन्तु इव क्षापिकसम्पत्तिधियों द्वारा वेदना कषाय वैद्विषिक भीर मारणाभित्तकसमुद्घात पदोंसे कुछ कम माठ वत् चौदह भाग स्पृष्ट हैं ।

अथवा, अर्धक्यात बहुभाग स्पृष्ट हैं ॥ २३६ ॥

यह सूत्र अन्तरसमुद्घातगत कर्म्मकी सखकी अपेक्षा कहा गया है क्योंकि अन्तर समुद्घातमें वातवमबका छाङ्खर उप समस्त मात्तमें व्याप्त जीवमवशा पाये जात हैं । इत्तसमुद्घातगत केवसियोंके द्वारा चार माफोंका अर्धक्यातर्था भाग भीर अट्टाण्वादिपसे अर्धक्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । यह अथवा वा शब्दसे सूचित अर्थ है । क्वाठसमुद्घातगत

सखेञ्जदिमागो, तिरियलोगस्स सखेञ्जदिमागो तत्तो सखेञ्जगुणो वा, अङ्गाङ्ग्रादो  
असखेञ्जगुणो फोसिदो । एसो विदियवासइसमुच्चिदत्तो ।

सव्वलोगो वा ॥ २३७ ॥

एदं लोमपूरणगदकेवलि पइच्च पत्तविद । एत्थ वामसो उच्चसमुच्चपत्तो ।

उववादेहि केवडिय खेत्त फोसिद ? ॥ २३८ ॥

सुगम ।

लोगस्स असखेञ्जदिमागो ॥ २३९ ॥

एत्थ पइमाणपत्तवणाए खत्तमगो । अदीदे तिण्हं लोमामसखेञ्जदिमागो,  
तिरियलोगस्स सखेत्तदिमागो, अङ्गाङ्ग्रादो असखेञ्जगुणो फोसिदो ।

वेदगसम्मादिट्ठी सत्याण-समुग्घादेहि केवडिय खेत्त फोसिद ?

॥ २४० ॥

केवडियोंके द्वारा तीन लोकोंका असत्प्रातर्त्वा भाग तिर्यग्लोकका सत्प्रातर्त्वा भाग या  
उभयसंत्प्रातर्गुणा और अङ्गारंभीपसे असत्प्रातर्गुणा क्षेत्र स्पष्ट है । यह द्वितीय वा  
शब्दसे समुचित अर्थ है ।

अथवा, सर्व लोक स्पष्ट है ॥ २३७ ॥

यह सूत्र लोकपूरणसमुद्भातगत केवलीकी अपेक्षासे कहा गया है । यहाँ वा  
शब्द पूर्वोक्त अर्थके समुच्चयके छिये है ।

उपपादकी अपेक्षा क्षायिकसम्पगदृष्टि जीवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पष्ट है ?  
॥ २३८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपपादकी अपेक्षा क्षायिकसम्पगदृष्टि जीवों द्वारा लोकत्रय असत्प्रातर्त्वा भाग स्पष्ट  
है ॥ २३९ ॥

यहाँ वर्तमानप्रकृपणा क्षेत्रप्रकृपणाके समान है । अतीत काळमें तीन लोकोंका  
असत्प्रातर्त्वा भाग तिर्यग्लोकका संत्प्रातर्त्वा भाग और अङ्गारंभीपसे असत्प्रातर्गुणा  
क्षेत्र स्पष्ट है ।

वेदकसम्पगदृष्टि जीव भव्यान और समुद्भात पक्षोंमें कितना क्षेत्र स्पर्श करते  
है ? ॥ २४० ॥

सुगमं, बहुभाग्यप्राप्तौ ।

अट्टचोदसभागा वा देसूणा ॥ २३५ ॥

तेज्राहारपदेहि षट्पद सोगाणममपेन्द्रदिभागा, अट्टाद् प्रादा मरुद्दिभागा फोसिदो । तिरिक्क-मपुस्तेहि वेयण-कमाय-वेउच्चिय-मारणंतियममुग्गादिहि तिहं सोगाणमसपेन्द्रदिभागा, तिरियसोगस्त संपुग्गादिभागा, अट्टाद् प्रादा अमरुद्दिभागा फोसिदो । एसो वामरुत्था । देवेहि पुन वेयण-कमाय-वेउच्चिय-मारणंतियममुग्गादिहि अट्टचोदसभागा देसूणा फामिदा ।

असस्वेज्जा वा भागा वा ॥ २३६ ॥

एदं पदरगदकेवल्लिख पट्टच्च भविद, तरय वादवल्लय मोत्तुण सेमामसस्सेग मरुद्दिभागापदेसायसुवतमादो । इहगदेहि षट्पदं लागाणमसस्सेन्द्रदिभागा, अट्टाद् प्रादा असस्वेज्जगुणो फोसिदो । एसो पदमवासद्वय छन्दस्यो । क्वाडगदेहि तिहं सोगाणम

बह स्य सुगम ई क्योंकि वर्तमान कालकी विषयता इ ।

अपवा, अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बने चौदह भाग स्पष्ट हैं ॥ २३५ ॥

तीस और बाह्यरूप पक्षोंसे क्षाधिकसम्पत्ति जीवों द्वारा चार ओकोंका असंख्यातवा भाग और अकार्यजीपका संख्यातवा भाग स्पष्ट है । तिरिक्क व मनुष्य क्षाधिक सम्पत्तिपक्षों द्वारा वेदना कपाय वैकल्पिक और मारणाभित्तिरसमुद्घात पक्षोंसे तीन ओकोंका असंख्यातवा भाग तिरिक्कोका संख्यातवा भाग और अकार्यजीपसे असे ख्यातगुणा क्षेत्र स्पष्ट है । बह वा शब्दसे सूचित अर्थ है । परन्तु वेच क्षाधिकसम्पत्तिपक्षों द्वारा वेदना कपाय वैकल्पिक और मारणाभित्तिरसमुद्घात पक्षोंसे कुछ कम आठ बने चौदह भाग स्पष्ट हैं ।

अपवा, असंख्यात बहुभाग स्पष्ट हैं ॥ २३६ ॥

बह स्य मरुत्समुद्घातगत केवलीके शब्दकी अपेक्षा कहा गया है क्योंकि मरुत् समुद्घातमें बाठकल्पको छोड़कर शेष समस्त छाकमें ध्वान्त जीवप्रवेश पाये जाते हैं । इन्द्रसमुद्घातगत केवलीके द्वारा चार ओकोंका असंख्यातवा भाग और अकार्यजीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पष्ट है । यह मध्यम वा शब्दसे सूचित अर्थ है । कपायसमुद्घातगत

छचोदसमागा वा देसूणा ॥ २४५ ॥

देव णेररूपरहितो आगत्य वेदगमम्मादिष्टिमशुस्तेसुप्पप्पेहि षट्ठण्ड लागाणम सखेज्जदिमागो, अङ्गाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । णवरि देवेहि तिरियत्तेगस्स सखेज्जदिमागो फामिदो । एसो वासइससुच्चिदत्थो । तिरिक्ख मशुस्तेरहितो देवेसुप्पज्ज माणवेदगसम्माइहीहि छचोदसमागा फोसिदा ।

उवसमसम्माइही सत्याणेहि केवडिय खेत फोसिद ? ॥ २४६ ॥

सुगम ।

लोगस्म असखेज्जदिमागो ॥ २४७ ॥

सुगम, वट्टमाणप्पणादो ।

अट्टचोदसमागा वा देसूणा ॥ २४८ ॥

सत्वाणहि तिण्ड लागाणमसखेज्जदिमागो, तिरियलोगस्स सखेज्जदिमागो,

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह माग स्पष्ट हैं ॥ २४५ ॥

देव वारकिणोमैसे वाकर मनुष्योंमें उत्पन्न हुए देवकसम्यग्दृष्टियों द्वारा वार खोत्रोका असंख्यातर्वा माग और वाइरिणीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पष्ट है । बिचोप इतना है कि वनों द्वारा तिर्यग्बोकाका संख्यातर्वा माग स्पष्ट है । यह वा वापसे संगृहीत कार्य है । तिर्येच और मनुष्योंमेंसे देवामें उत्पन्न होनेवाले देवकसम्यग्दृष्टियों द्वारा छह बटे चौदह माग स्पष्ट हैं ।

उपश्रमसम्यग्दृष्टि बीबों द्वारा स्वस्थान पदोंसे कितना क्षेत्र स्पष्ट है ? ॥ २४६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपश्रमसम्यग्दृष्टि बीबों द्वारा स्वस्थान पदोंसे सोकर असंख्यातर्वा माग स्पष्ट है ॥ २४७ ॥

यह सूत्र सुगम है क्योंकि वतमान कालकी विवक्षा है ।

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह माग स्पष्ट हैं ? ॥ २४८ ॥

स्वस्थान पदसे एक बीबों द्वारा तीन भोकोका असंख्यातर्वा माग तिर्यग्बोकाका

सुगम ।

लोगस्त असखेज्जदिभागो ॥ २४१ ॥

सुगम, बहमाजप्यमादा ।

अट्टचोदसभागा वा देसूणा ॥ २४२ ॥

मत्वाणदि तिष्ठ सागापममगुन्वदिभागा, तिरियतामस्म सद्यत्तदिभागो, अट्टचोदसा अमंरुन्वगुणो फोमिदा । एमा वासएय सगुण्णित्वा । विहारमदिमत्पाव-  
वयण-कमाय-वडाभिय मारणंतिएहि अट्टचोदसभागा दसूणा पामिदा ।

उववादेहि केवडिय खेत्त फोसिद ? ॥ २४३ ॥

सुगम ।

लोगस्त अमखेज्जदिभागो ॥ २४४ ॥

सुगमं, बहमाजप्यमादा ।

यह सूत्र सुगम है ।

वेदकमम्यगृष्टि जीव स्वस्थान और समुद्रपात पदमे लोकका असंख्यातता  
माग स्पष्ट करत है ॥ २४१ ॥

यह सूत्र सुगम है क्योंकि वर्तमान काळकी विवक्षा है ।

मभरा, अतीत कालकी अपेक्षा वेदकमम्यगृष्टि जीवों द्वारा कुछ कम भाठ बट  
बौद्ध माग स्पष्ट है ॥ २४२ ॥

स्वस्थान पदसे तीन साक्षोंका असंख्यातता माग तिर्यग्बोहका सख्यातता  
माग और मङ्गलद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पष्ट है । यह वा दार्ष्टसे स्पष्टहीत बर्त  
है । विहारवत्स्वस्थान पदना क्वाय वैकिकपिक और मारणास्तिक पक्षोंस कुछ कम भाठ  
बट बौद्ध माग स्पष्ट है ।

उक्त वेदकमम्यगृष्टियों द्वारा उपपाद पदसे कितना क्षत्र स्पष्ट है ? ॥२४३॥

यह सूत्र सुगम है ।

वेदकमम्यगृष्टियों द्वारा उपपाद पदमे लोकका असंख्यातता माग स्पष्ट है  
॥ २४४ ॥

यह सूत्र सुगम है क्योंकि वर्तमान काळकी विवक्षा है ।

सासणसम्पाद्वृत्ति सत्याणेहि केवडिय खेत्त फोमिद ? ॥२५१॥

सुगम ।

लोगस्त असखेज्जदिभागो ॥ २५२ ॥

सुगम, बहूमानप्पणादा ।

अट्टचोदसभागा वा देसूणा ॥ २५३ ॥

सत्याणेण तिण्हं टागाणमसपेज्जदिभागो, तिरियलागस्स मखज्जदिभागो, अट्टाज्जजादो अमखज्जगुणा फामिदा । एमा वामरममुत्थिदरयो । विहाग्घदिसत्थाप परिजएहि अट्टचोदसभागा फामिदा ।

समुग्घादेहि केवडिय खेत्त फोमिद ? ॥ २५४ ॥

सुगम ।

लोगस्त असखेज्जदिभागो ॥ २५५ ॥

सासादनसम्पग्घट्टि जीवोने सरस्यान पदोमि कित्ता धम्म स्पर्श कित्ता हे ? ॥ २५१ ॥

यह सज सुगम हे ।

सासादनसम्पग्घट्टि जीवोने स्वस्यान पदोमि लोक्का असप्पाततां माग स्पर्श कित्ता हे ॥ २५२ ॥

यह सज सुगम हे क्यकि यतमात काळकी दिक्खता हे ।

अथवा, अतीत फलकी अपघा उक्त जीवोने हुळ कम आठ वट चौदह माग स्पर्श किये हे ॥ २५३ ॥

स्वस्यामकी अपेक्षा तीन काळोका असप्पाततां माग तिर्यग्घोक्का सप्पाततां माग और भङ्गारोपसे असप्पातगुणा क्षम स्पृष्ट हे । यह वा शाश्वत सप्पाततां माग हे । विहाग्घत्तस्वस्यान पदोमि प्रणिपत्त सासादनसम्पग्घट्टियो जारा माठ बटे चौदह माग स्पृष्ट हे ।

उक्त जीवो द्वारा समुत्थपात पदोमि कित्ता धम्म स्पृष्ट हे ? ॥ २५४ ॥

यह सज सुगम हे ।

उक्त जीवो द्वारा समुत्थपात पदोमि लोक्का असप्पाततां माग स्पृष्ट हे ॥ २५५ ॥



अङ्गाद्भादो अमरुद्गुणा फामिदो । एमा पामरुमृच्छिदरमा । विहारवदिसत्पाणव  
अङ्गाद्भादममागा फामिदा, उवसमसम्माङ्गीर्णं देशाणमङ्गाद्भादममागतर विहारं पदि  
विराहाभावाद् ।

समुग्धादेहि उववादेहि केवडिय स्वेत्त फामिद ? ॥ २४९ ॥

सुगम ।

लोगस्स अमस्वेज्जदिभागो ॥ २५० ॥

एत्थ अदीद मङ्गाणकाससु माणवतिय उववादपरिणपदि चतुस्र तापाणम  
सपुञ्जदिभागो, अङ्गाद्भादो अमरुद्गुणा फामिदो, मानुमगुत्तम्मि चच मरुत्तर्ण  
उवसमसम्माङ्गीर्णममुबलभादा । वेयण रमाय-वउत्थियममुग्धादावमुवसमसम्माङ्गीर्णं  
देशाणमङ्गाद्भादममागा क्खिणा परुविदा ? च, एव परुविन्दममाणे मामवस्स मारवतिय-  
समुग्धादस्स वि अङ्गाद्भादममागा होति ति सदेहा मा होहदि चि तण्णिराअरवणं च  
परुविदा ।

सम्पातर्णं भाग भीर मङ्गादीदीपसे भसम्पातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । यह या शब्दसे  
समुग्धीन अर्थ है । विहारवत्स्वस्थानकी अपेक्षा भाठ बट भीरुह भाग स्पृष्ट है क्योंकि,  
उपशमसम्पगृह्यिद्दुर्बोके भाठ बटे भीरुह भागोके भीतर विहारमें कार्य विरोध नहीं है ।

उक्त उपशमसम्पगृह्यियों द्वारा समुद्घात व उपपाद् पदोंमें कितना क्षेत्र  
स्पृष्ट है ? ॥ २४९ ॥

यह सब सुगम है ।

उपशमसम्पगृह्यियों द्वारा उक्त पदोंमें लक्ष्य असम्पातर्णं भाग स्पृष्ट है  
॥ २५० ॥

यहां धर्तित व वर्तमान काळोंमें मारणात्मिकसमुद्घात व उपपाद् पदोंसे  
परिणत उपशमसम्पगृह्यियों द्वारा चार काळोंका असम्पातर्णं भाग भीर मङ्गादीदीपसे  
भसम्पातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है क्योंकि, मानुषेक्षमें ही मरभको प्राप्त होनेवाले उपशम  
सम्पगृह्यि पाये जाते हैं ।

द्वंद्व—वेचना कपाय भीर वैश्वियिक समुद्घातकी अपेक्षा उपशमसम्पगृह्यि  
दुर्बोके भाठ बटे भीरुह भाग वहां क्यों नहीं को ?

समाधान—नहीं क्योंकि ऐसा निरूपण करनेपर साक्षात्सम्पगृह्यिके  
मारणात्मिकसमुद्घातकी अपेक्षा भी भाठ बट भीरुह भाग होते हैं' ऐसा संदेह यही उच  
मकार उसके निराकरणके लिये उक्त भाठ बटे भीरुह भागोंका निरूपण नहीं किया ।

मागा लम्बति, एदेसि समासो एककारहपोदसमागा सासभोववादफोमणखेच होदि सि ।  
उपरि सच बोदसमागा किण्व लब्धा ? ण, सासमाषमेइदिण्मु उववादाभावादो ।  
मारमतिपमेइदिपसु गदसासणा तत्थ किण्व उप्पच्चति ? ण, मिच्छत्तमात्तुण सासम्-  
गुणेण उप्पत्तिविरोहादो ।

सम्मामिच्छाद्विद्वि सत्याणेहि केवडिय खेत्त फोसिद ? ॥२६०॥

सुगमं ।

लोगस्स असखेज्जदिभागो ॥ २६१ ॥

सुगम, बहुमाणप्पणादो ।

अट्टोदसभागा वा देसूणा ॥ २६२ ॥

तिपेचोमें उत्पन्न होमेवाछे जीवोंके छह बडे भावह भाग प्राप्त होते हैं इन दोमोंके  
ओकरूप ग्यारह बडे बीवह भागप्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका उपपादकी अपेक्षा  
स्पर्धानक्षत्र होता है ।

श्लोक—ऊपर सात बडे भावह भाग क्यों नहीं प्राप्त होते ?

समाधान—नहीं क्योंकि सासादनसम्यग्दृष्टियोंकी एकत्रियामें उत्पत्ति  
नहीं है ।

श्लोक—एकत्रियोंमें मारजास्तिकसमुद्घातका प्राप्त हुए सासादनसम्यग्दृष्टि  
जीव उतमें उत्पन्न क्यों नहीं होते ?

समाधान—नहीं क्योंकि आयुक्त मष्ट होनेपर उक्त जीव मिथ्यात्व गुणस्थानमें  
भा जात हैं अत मिथ्यात्वमें जाकर सासादनगुणस्थानक साथ उत्पत्तिका विरोध है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों द्वारा स्वस्थान पदोंमे कितना क्षेत्र स्पष्ट है ? ॥२६०॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवों द्वारा स्वस्थान पदोंमे लोकका अमख्यातवा भाग स्पष्ट है  
॥ २६१ ॥

यह सूत्र सुगम है क्योंकि वर्तमान कासकी विपत्ता है ।

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा उक्त जीवों द्वारा हुए कम जाठ यत् बीवह  
भाग स्पष्ट है ॥ २६२ ॥

सुगम, बहुमात्राप्यवादा ।

अट्ट-चारद्वौदसमागा वा देसूणा ॥ २५६ ॥

षण्ण-क्रमाय वेउभियसमुग्यादहि अट्ट-चारदसमागा फामिदा । मारणत्तियमगु  
ग्गादेहि चारदवोदसमागा फासिदा, मरुमूसादा इड्डोरि पञ्च-सत्तरन्तुआपामण मारणं  
त्तियस्सुवत्तयादा ।

उववादेहि केवडिय म्वेत्त फोसिद ? ॥ २५७ ॥

सुगम ।

लोगस्म असंस्वेज्जदिभागो ॥ २५८ ॥

सुगम, बहुमात्राप्यवादा ।

एकारद्वौदसमागा देसूणा ॥ २५९ ॥

इडा ! छट्ठिपुवभियत्तयाण सासणगुणेण पंचिदियत्तिरिक्कत्तु उत्पन्नमात्राय  
पंच-चारदसमाग उववादेव सम्मति, देवेहिंते पंचिदियत्तिरिक्कत्तुत्प-त्रमात्रायं छपोम

यह एक सुगम है क्योंकि वर्तमान कासही विषया है ।

अथवा, अतीत कासही अपेक्षा कुछ कम आठ और बारह बटे चौदह मास स्पष्ट हैं ॥ २५६ ॥

वेचना कषाय और वैदिकिक समुदायोंसे बाह बटे चौदह माग स्पष्ट हैं ।  
मारणात्तिकसमुत्पातस बारह बटे चौदह माग स्पष्ट हैं क्योंकि, मेरुमुच्छसे नीचे पाँच  
और ऊपर सात पञ्च आयामसे मारणात्तिकसमुत्पात पाया जाता है ।

उक्त सासादनसम्पत्ति श्रीर्षो द्वारा उपपादकी अपेक्षा किना क्षेत्र स्पष्ट है !  
॥ २५७ ॥

यह एक सुगम है ।

उक्त श्रीर्षो द्वारा उपपाद पहले सरुक्क असंस्पयतर्षो माग स्पष्ट है ॥२५८॥

यह एक सुगम है क्योंकि वर्तमान कासही विषया है ।

अतीत कासही अपेक्षा कुछ कम ग्यारह बटे चौदह मास स्पष्ट हैं  
॥ २५९ ॥

क्योंकि सासादनगुणस्थानके साथ पञ्चन्द्रिय तिर्यचोमे वत्पत्र इमेवाके छट्टी  
पृथिवीके चारविषोके पाँच बटे चौदह माग उपपादसे प्राप्त होते हैं तथा वेधोसे

सुगम, बद्धमाणविकरणादा ।

अट्टचोद्दसभागा वा देसूणा फोसिदा ॥ २६७ ॥

सत्यायेण तिष्ठ लोमाणममज्जदिभागा, तिरियलोगस्स मलेज्जदिभागो,  
अट्टाद्दभादो असग्गेज्जगुणो फोसिदो । एमा वामइत्था । विहारवदिमत्थाणण अट्टचोद्दम  
भागा फोसिदा ।

समुग्घात्तेहि केवडिय खेत्त फोमिद ? ॥ २६८ ॥

सुगम ।

लोगस्स अमखेज्जदिभागो ॥ २६९ ॥

सुगम, बद्धमाणप्पणादा ।

अट्टचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २७० ॥

अयण क्कमाय-वेठारिअियसमुग्घाद्दि अट्टचारमभागा फोमिदा, दमाण विहरताण  
तिष्ठमदमिमुक्कलभागे ।

यह सप्त सुगम है क्योंकि वर्तमान कालकी विद्यता है ।

अथवा, अतीत कालकी अपथा कुछ कम आठ वत् यादह भाग स्पर्श क्रिये  
है ॥ २६७ ॥

स्वरूपान पद्म मन्त्री जीयान तीज म्माज्जे अमव्यातये भाग तियग्गलक्क  
सव्यातये भाग और गद्दारादीपम मल्लव्यातणुय क्षत्रका एण विषा है । यह वा  
गद्दम सूचित मथ है । विहारवत्तरधानम आठ वत् यादह भागोका म्माज्ज क्रिया है ।

समुत्पत्तात्तोही अपथा मन्त्री जीवो डाग क्कित्ता धम म्पूण है ? ॥ २६८ ॥

यह सप्त सुगम है ।

मन्त्री जीवो डाग समुत्पत्तान पद्मे लक्कल अमव्यातयां भाग म्पूण है ॥ २६९ ॥

यह सप्त सुगम है क्योंकि वर्तमान कालकी विद्यता है ।

अथवा, अतीत कालकी अपथा कुछ कम आठ वत् यादह भाग स्पर्श है  
॥ २७० ॥

यहना क्कमाय भार धमिअिक समुत्पत्तात्तोका म्माज्जा आठ वत् यादह भाग  
म्पूण है क्योंकि विहार करत हुए रूपोके व मन्त्री समुत्पत्तान पाय ज्ञान है ।

मत्स्यभेद्ये तिस्र लोकात्मसत्त्वत्रिभिर्भागो, तिरियलोगस्त सत्त्वत्रिभिर्भागो,  
अह्नादत्रादो असत्त्वत्रिभिर्भागो फोमिदो । एमो वासस्तयो । विहारस्तिस्रभेद्ये अह्नादत्राद-  
भागा वा फोमिदा । सेस सुगम ।

समुद्घाद-उचवाद णत्थि ॥ २६३ ॥

इदो ! मम्मामिच्छत्तुणेण मरुणामावादो । बेयन्न-कमाय-वेत्ताभियसहुग्घावाण-  
मत्थ पत्तुचर्णं किण्ण क्कदं ! ज, तंमिं पहाणत्तामात्रादो ।

मिच्छाद्वृत्ती असजदभगो ॥ २६४ ॥

सुगमभेद ।

मणियाणुवादेण मण्णी सत्थाणेहि केवढिय खेत्त फोसिदं ?

॥ २६५ ॥

सुगम ।

लोगस्त असत्त्वैज्जदिभागो ॥ २६६ ॥

स्वरूपान पञ्च तान् लोकोका असत्त्वात्तर्वा भाग तिर्यग्लोकाका संत्पात्तर्वा  
भाग और अह्नादत्रादो असत्त्वात्तुणा अत्र स्पष्ट है । यह वा शब्दसे सूचित अर्थ है ।  
तथा विहारपत्त्यरूपानसं वाठ बडे औपह माग स्पष्ट है । दोष सुचार्य सुगम है ।

सम्पत्तिमिच्छाद्वृत्ति त्रीणोक्क समुद्घात और उपपाद पद नहीं हाते हैं ॥ २६३ ॥

क्याकि सम्पत्तिमिच्छात्त्य सुखरूपानक साथ मरुणका अभाव है ।

दुका — यवना कयाप और वैक्रियिक समुद्घातोकी यहाँ प्रकृपणा कर्वा नहीं  
की गई है ?

समाधान—नहीं क्याकि उनकी प्रथमतः नहीं है ।

मिच्छाद्वृत्ति त्रीणोक्के स्पर्शनरूप निरूपण अवस्यत त्रीणोक्क समान है ॥ २६४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सत्तिमागवानुमार सत्ती त्रीणोक्के स्वम्पान पदोमे किन्तना अत्र स्पर्श क्रिया है ?

॥ २६५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सत्ती त्रीणोक्के स्वम्पान पदोमे छारुका अमस्यत्तर्वा भाग स्पर्श क्रिया है

॥ २६६ ॥

सुगम, बहूमात्रविषयज्ञादो ।

अट्टचोदसभागा वा देसूणा फोसिदा ॥ २६७ ॥

सत्याशेष तिष्ठ लोकात्ममयन्त्रदिभागा, विरियलोगस्य सखेज्जदिभागो, अट्टाहन्त्रादो असखेज्जगुणो फोसिदो । एवो धामइत्था । विहारवदिमत्याणेभ अट्टाहम मागा फोसिदा ।

समुग्घादेहि केवडिय खेत्त फोसिद ? ॥ २६८ ॥

सुगम ।

लोगस्म असखेज्जदिभागो ॥ २६९ ॥

सुगम, बहूमात्रप्यज्ञादो ।

अट्टचोदसभागा वा देसूणा ॥ २७० ॥

अपण-कमाय-वेठणियसमुग्घादेहि अट्टाहममागा फोसिदा, देवाण विहरताम तिष्ठमेदमिमुज्जमादा ।

यह सूत्र सुगम है क्योंकि परममान काळकी विषया है ।

अथवा, अतीत कालकी अपथा कुछ कम आठ वने बादह माग स्पष्ट किये हैं ॥ २६७ ॥

स्वस्थान पदम मग्गी जीषान तीम म्हाकॉर अमप्यातमं माग तिपग्गोक्के सख्यातमं माग धीर अट्टाहन्त्रापण असात्पातगुण खरका स्वशा किया है । यह पादात्म्य संचित मध है । विहारवत्पस्थानम माठ वने बादह भागोंका स्पष्ट किया है ।

समुग्घातोंकी अपथा मग्गी जीषो डारा कितना घत्र स्पष्ट है ? ॥ २६८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मग्गी जीषो डारा समुद्पात पदमिं सारुका अमप्यातमं माग स्पष्ट है ॥ २६९ ॥

यह सूत्र सुगम है क्योंकि परममान काळकी विषया है ।

अथवा, अतीत कालकी अपथा कुछ कम आठ वने बादह माग स्पष्ट हैं ॥ २७० ॥

यहना कथाय धीर त्रिक्रियिक समुद्पातोंकी अपथा आठ वने बादह माग स्पष्ट हैं क्योंकि विहार करत हुए कथाके य मीनों समुद्पात पाप आत हैं ।

सम्बलोगो वा ॥ २७१ ॥

माग्नतियसमुद्भाद् पङ्क्त एना विरसा । तमकाइएसु सञ्चीसु सुनकमारगतिय  
सञ्ची बीवे पङ्क्त बारहपोरमभागा देखना फेमिदा । एमो वामहत्थो ।

उववादेहि केवडिय खेत्त फोसिद ? ॥ २७२ ॥

सुगम ।

लोगस्स असखेज्जदिभागो ॥ २७३ ॥

सुगमं, बहमापप्यवादो ।

सम्बलोगो वा ॥ २७४ ॥

सञ्चीसुप्यप्यामसञ्चीण सुम्बलोगावलमादा । मञ्चीण मञ्चीसुप्यप्यमवाणां  
बारहपोरमभागा होंति । सम्माइहीय छपोरसभागा । एसो वामहत्था । एवमणत्थ वि  
अठचङ्गाणे वासदाणमत्था वचन्धो ।

अथवा, सर्व लोक स्पष्ट है ॥ २७१ ॥

यह कथन ( मसंजी जीबोंमें किये गये ) मारणास्तिकसमुद्भातकी अपेक्षासे है ।  
वसकापिक संजी जीबोंमें मारणास्तिक समुद्भातका करमेबाके सञ्ची जीबोंकी अपेक्षा  
कुछ कम बारह बटे बीरह भाग स्पष्ट है । यह वा शम्भसे सुचित अर्थ है ।

उपपादकी अपेक्षा संजी जीबों द्वारा कितना धर्म स्पष्ट है ? ॥ २७२ ॥

यह स्पष्ट सुगम है ।

उपपादकी अपेक्षा सञ्ची जीबों द्वारा समकका असस्पष्टता भाग स्पष्ट है  
॥ २७३ ॥

यह स्पष्ट सुगम है क्योंकि वर्तमान कालकी विवक्षा है ।

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा सर्व समक स्पष्ट है ॥ २७४ ॥

क्याकि सञ्चीपोंम उत्पन्न हुए मसंजी जीबोंके सर्व लोक क्षेत्र पाया जाता है ।  
किन्तु मसंजीपोंम उत्पन्न होनेबाके सञ्ची जीबोंका स्थानक्षेत्र बारह बटे बीरह भाग है ।  
मसंजीपोंम सञ्चीपोंका उपपादक्षेत्र उह बटे बीरह भागप्रमाण है । यह वा शम्भसे  
सुचित अर्थ है । इसी प्रकार भगवत् मी अत्रुक्त स्थानमें वा शम्भोंका अर्थ बहमा  
बाहिरे ।

असण्णी मिच्छाडट्टिमगो ॥ २७५ ॥

सुगम ।

आहाराणुवादेण आहारा सत्याण समुग्घाद-उववादेहि केवडिय  
स्वेत्त फोसिद ? ॥ २७६ ॥

सुगम ।

सव्वलोगो ॥ २७७ ॥

एदं देसामासियसुत्त । सेव विहारवदिसरभाणेण अट्टचोदसमागा फोसिदा ।  
अउच्चिएण तिण्ह सागामं मयउदिसमागो फोसिदो । सेस सुगमं ।

अणाहारा केवडिय स्वेत्त फोमिद ? ॥ २७८ ॥

सुगम ।

सव्वलोगो वा ॥ २७९ ॥

एदं पि सुगम ।

एव पेउसमाणुगमे चि समत्तमणिओमाहार ।

असंखी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र मिथ्यादृष्टियोंके समान है ॥ २७५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहारमार्गानुसार आहारक जीवोंने स्वस्वान, सङ्घुष्णत और उपपाद पदोंमें  
कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? ॥ २७६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहारक जीवोंने उक्त पदोंमें सर्व लोक स्पर्श किया है ॥ २७७ ॥

यह वैज्ञानिक सूत्र है । अत एव ( इसके द्वारा सूचित कार्य— ) विहार  
परस्वरूपानकी अपेक्षा माहारक जीवोंने जाइ बटे औषद मामोंका स्पष्ट किया है ।  
वैश्विकसमुद्घातसे तीन छाकोंके संख्यातर्ष मागका स्पष्ट किया है । दोय सूत्रार्थ  
सुगम है ।

अनाहारक जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? ॥ २७८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अनाहारक जीवोंने सर्व लोक स्पर्श किया है ॥ २७९ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

इस प्रकार स्पर्शानुगम अनुपागकार समाप्त हुआ ।



## णाणाजीवेण कालानुगमे

णाणाजीवेण कालानुगमेण गदियानुवादेण णिरयगदीए णेर  
इया केवचिर कालादो होति ? ॥ १ ॥

णाणाजीवगहजमेगजीवपडिसेहइ । कालानुगमगहज ससाविप्रोगहारपडि  
सेहइ । गदियगहज सेसमगग्यापडिसेहइ । णिरयगहजिहेमो सेसमपडिसेहइ ।  
वेरयपडिसेहो तत्पडिपुदनिक्कइयादिपडिसेहइ । केरभिरं कालादो होति चि  
एदस्सरथो— णिरयगदीए वेरइया किमयादि अपग्गवसिदा, किमयादि-सपग्गवसिदा, किं  
सादि अपग्गवसिदा, किं सादि-सपग्गवसिदा चि सिस्सस्स आसकुदीवणमेदेव फप ।  
अपवा पासकियसुचमिदं, किंतु पुच्छसुचमिदि वचमं । एतो अथो सअसंकासुचेसु  
ओबेपयो ।

सव्वद्धा ॥ २ ॥

अणादि-अपग्गवसिदा होति, सेमत्तिसु वियप्पेसु गरिव । इदो ! सहारदो

नाना जीवोंकी अपघा कालानुगमसे गतिमार्गवाके अनुमार नरकगतिमें  
नारकी जीव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ १ ॥

एक जीवके प्रतिपेधार्थं एवमं नामा जीव वा प्रहज किया है । कालानु  
गम का प्रहज शेष अनुयोगहारोंके निपेधार्थं है । गति प्रहजका एक शेष  
मार्गजाभाका प्रतिपेध करना है । नरकगति का निर्देश शेष गतिपोंका प्रतिपेध है ।

नारकी एक निर्देशका एवमं नरकमें स्थित पृथिवीवायिकादि जीवोंका प्रतिपेध  
करना है । चित्तन काल तक रहत हं इसका अर्थ इस प्रकार है— नरकगतिमें  
नारकी जीव क्या अनादि अपघवसित है क्या अनादि सपर्यवसित है क्या सादि  
अपघवसित है और क्या सादि-सपघवसित है इस प्रकार हम सब द्वारा शिष्यकी  
भारतीका उद्दीपन किया है । अथवा यह मार्गका नृज नहीं है किन्तु पृच्छासुच है  
एसा कहना चाहिये । यह अर्थ सर्वे शक्यात्मै जाइना चाहिये ।

नाना जीवोंकी अपघा नरकगतिमें नारकी जीव नरक काल रहत हं ॥ २ ॥

नारकी जीव अनादि अपघवसित है शेष तीन विचर्यामें नहीं है, क्योंकि

वेद्य । ण च सम्भं सहेठअ वेवेचि नियमा अत्थि, पयत्तादप्पसंगादा । तम्हा ' म  
अप्पाहापाइणो विणा ' इदि एदं सइहेयम्य ।

एव मत्तसु पुढवीसु णेरइया ॥ ३ ॥

महा णेरइयाण सामप्पेण अणादिओ अपज्जवसिदो संताणकाओ बुचो तथा  
सत्तसु पुढवीसु णेरइयाण पि । पादेक्क सताणस्स बोच्छेदो ण होदि चि बुच होदि ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा पच्चिदियतिरिक्खा पच्चिदियतिरिक्ख  
पज्जत्ता पच्चिदियतिरिक्खजोणिणी पच्चिदियतिरिक्खअपज्जत्ता  
मणुमगदीए मणुमा मणुसपज्जत्ता मणुमिणी केवचिर कालादो  
होति ? ॥ ४ ॥

एदे सुचम्मि बुचवीवा सताण पट्टप्प किमप्पादि-अपज्जवसिदा, किमप्पादि  
सपज्जवसिदा, किं सादि अपज्जवसिदा, किं सादि-सपज्जवसिदा; सादि सपज्जवसिदा वि  
सता मत्थ किमेगसमयावहाइणो किं दुसमया किं विममया, एवमाबलिय-खप्प-सप सुहुत्त

देसा स्वभावसे ही है । और सब संज्ञेयक ही हो एसा कोई नियम नहीं है क्योंकि देसा  
मात्रमें एकान्तवाहक प्रसंग जाता है । इस कारण जितने स्वभाववाच्य नहीं है  
इस प्रकार इसका भ्रमण करना चाहिये ।

इसी प्रकार सातों पृथिवियोंमें नारकी जीव नाना क्षीबोंकी अपेक्षा सब काल  
रहते हैं ॥ ३ ॥

जिस प्रकार नारकीका सामान्यसे भवादि अपयवसित सन्तानकाल कहा  
है उसी प्रकार सातों पृथिवियोंमें ही नारकीका सन्तानकाल भवादि अपयवसित है ।  
प्रत्येक सन्तानका श्युच्छद नहीं होता एसा इस सूत्रका अभिप्राय है ।

तिर्यग्गतिमें तिर्यग्, पचन्त्रिय तिर्यग्, पंचेन्द्रिय तिर्यग् पर्याप्त, पचन्त्रिय  
तिर्यग् योनिमती ष पचन्त्रिय तिर्यग् अपर्याप्त; तथा मनुष्यगतिमें मनुष्य, मनुष्य  
पर्याप्त और मनुष्यनी कितन काल तक रहते हैं ? ॥ ४ ॥

य सूत्रमें कहे हुए जीव सन्तानकी अपेक्षा क्या भवादि अपयवसित हैं क्या  
भवादि सपयवसित हैं क्या सादि अपयवसित हैं क्या सादि सपयवसित हैं और क्या  
सादि सपयवसित भी होकर कसमें क्या एक समय भवस्थायी हैं क्या दो समय  
भवस्थायी हैं क्या तीन समय भवस्थायी हैं— इस प्रकार भावकी क्षण क्षण मुहूर्त

द्विषस-पक्ष-मास-उद्गु अयस-संबन्ध-गुण्य-पञ्च-पल्ल-सागरस्तपिभि-कम्पादिका-  
बहाइनां चि आसंक्रिय तस्त उत्तरमुचं मन्दि—

सुव्वद्वा ॥ ५ ॥

सम्भा मद्वा क्यतो वेतिं ते सम्बद्वा, सतानं पतिं तस्य सम्बन्धसम्बद्वायो चि  
पुत्र होदि ।

मणुसम्पपञ्जता केवचिर कालादो ह्येति ? ॥ ६ ॥

सुगम ।

जहण्णेण सुद्धाभवग्गहण ॥ ७ ॥

ह्यो ! अजपिहगदीदो आमत्थ मणुसम्पपञ्जसेसुप्पन्निग्रय अंतरं विजासिं  
सुद्धाभवग्गहणमच्छियं' धिस्सेसमगधिदग्दि गदां सुद्धाभवग्गहणमेचमहण्णकाल  
बलंमारो ।

उक्कस्सेण पल्लिदोवमस्स असंसेज्जदिमागो ॥ ८ ॥

द्विषस पक्ष मास ऋतु अयस संवत्सर पूर्व वर्ष पक्ष सागर वस्तुपिंजी एवं  
कम्पादि काल तक सम्बन्धी हैं' इस प्रकार आशंका करते उसका उत्तरसूत्र करते हैं—

उपयुक्त जीव सन्तानकी अपेक्षा सर्व काल रहते हैं ॥ ५ ॥

सर्व है मन्दा मर्यात् काक जिनका इस बहुमूर्ति समासके अनुसार अर्थात्  
पक्ष अर्थ सर्व काल रहनेवाले होता है मर्यात् संतामकी अपेक्षा वही उपयुक्त  
जीव सर्व काल स्थित रहनेवाले हैं यह सूत्रका अभिप्राय है ।

मनुष्य अपर्याप्त जीव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मनुष्य अपर्याप्त अल्पवयस सुदृमवग्रहण काल तक रहते हैं ॥ ७ ॥

क्योंकि अविश्रित गतिसे भाकर मनुष्य अपर्याप्तोंमें उत्पन्न होकर व अन्तरकी  
गति कर सुदृमवग्रहणकाल तक रहकर निशेष रूपसे अविश्रित गतिमें गय हुए उक्त  
जीवोंका सुदृमवग्रहणमात्र अल्प काल पाया जाता है ।

वे ही मनुष्य अपर्याप्त जीव उत्कर्षसे पक्षोपमक अमम्यातवे मायमात्र काल-  
तक रहते हैं ॥ ८ ॥

त अहा— मणुमअपन्नचणसु अतरिय ङ्खिदेसु अणप्पिदगदीदो चोभा खीवा मणुसअपन्नचणसु आगसूण उप्पण्णा । णहूमतर । तमि जीवाण खीविददुचरिमसमओ चि पुणो वि उप्पत्तिं पइच्च अतर करिय पुणो अण उप्पाएयन्ना । तत्थ वि उप्पत्तिं पइच्च अप्पिदजीवाण जीविददुचरिमसमयो चि अतर करिय पुणो अण उप्पाएयन्वा । तत्थ वि उप्पत्तिं पइच्च अप्पिदजीवाण जीविददुचरिमसमओ चि अतर करिय अणो उप्पाएयन्वा । अणेण पथारेण पलिदावमस्म असख्खज्जदिभागमेत्तबारिसु गदेसु तदा णियमा अतर होदि । एदग्घि काल आणिलमाण णक्किस्से वारमहागाए अदि मख्खेज्जावहिय मेत्ता फालो सक्खमदि, ता पसिदोवमस्स अमख्खज्जदिभागमेत्तसहागासु किं लभामो चि फलेण इच्छं गुणिय पमाणोवङ्खिदे मणुमअपज्जत्ताण सत्ताणस्स फालो पलिदोवमस्म असख्खेज्जदिभागमेत्तो जादा । केइमगमाठङ्खिदि ठविय आवलियाए अमख्खेज्जदिभागमत्त पिरंतकुककमकालेण गुणिय पमाणोवङ्खिदि । तेमिमेसो फाला णागच्छदि ।

देवगदीए देवा केवचिरं कालादो ह्यंति ? ॥ ९ ॥

सुगम ।

इसीका स्पष्ट करते हैं— मनुष्य भयर्षाप्तक जीवोंके अन्तर्गत होकर स्थित होने पर अविचक्षित गतियोंसे स्तोक जीव मनुष्य भयर्षाप्तोंमें आकर उत्पन्न हुए । इस प्रकार अन्तर करक हुआ । उन जीवोंके जीवितके द्विचरम समय तक फिर भी उत्पत्तिकी अपेक्षा अन्तर करक पुनः अन्य जीवोंको मनुष्य भयर्षाप्तोंमें उत्पन्न कराना चाहिये । उनमें भी उत्पत्तिकी अपेक्षा विचक्षित जीवोंके जीवितके द्विचरम समय तक अन्तर करक पुनः अन्य जीवोंको उत्पन्न कराना चाहिये । उनमें भी उत्पत्तिकी अपेक्षा विचक्षित जीवोंके जीवितके द्विचरम समय तक अन्तर करके अन्य जीवोंको उत्पन्न कराना चाहिये । इस प्रकारसे पर्यापमके असंख्यातयें मागमात्र बारोंके भीत जानेपर उत्पन्नात् नियमसे अन्तर होता है । इस कालके निकालते समय यदि एक बार-शखाकामें संख्यात भाषणीमात्र काळ छम्प जाता है तो पर्यापमके असंख्यातयें मागमात्र बार-शखाकामें कितना काळ छम्प होगा ? इस प्रकार फलराशिसे इच्छाराशिको गुणित कर प्रमाणराशिसे अपवर्तित करनेपर मनुष्य भयर्षाप्तोंकी अन्तानका काळ पर्यापमके असंख्यातयें मागमात्र होता है । कितने ही भाषाय एक आयुस्थितिका स्थापित कर भाषणीके असंख्यातयें मागमात्र अन्तर उपरुमणकाळसे गुणित करके प्रमाणसे अपवर्तित करते हैं । उनके उपर्युक्त विधानसे यह काळ नहीं आता ।

दंशगतिमे दंश क्लित्तं कालं तत्र रहते हैं ? ॥ ९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सव्वद्धा ॥ १० ॥

एदं पि सुगम ।

एव भवणवासियण्णहुडि जाव सव्वट्टसिद्धिविमाणवासियदेवा  
॥ ११ ॥

सुगम ।

इदियाणुवादेण एइदिया वादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता  
वीइदिया तीइदिया चरिंदिया पचिंदिया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता  
केवचिरं कालादो होंति ? ॥ १२ ॥

गतिष एतथ किं पि वत्तव्वं, सुगमत्तां ।

सव्वद्धा ॥ १३ ॥

एदं पि सुगम ।

द्वगतिमें देव सर्व काल रहते हैं ॥ १० ॥

यह सब भी सुगम है ।

इसी प्रकार मवनवासी देवोंसु नक्षत्र मर्वाधिंसिद्धि विमानवासी देवों तक सब  
देव सब काल रहते हैं ॥ ११ ॥

यह सब सुगम है ।

इन्द्रियमार्गबाके अनुमार एकेन्द्रिय, एकन्द्रिय पर्याप्त, एकेन्द्रिय अपर्याप्त;  
बादर एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त, बादर एकन्द्रिय अपर्याप्त; स्रस्म एकेन्द्रिय,  
स्रस्म एकेन्द्रिय पर्याप्त, स्रस्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त; इन्द्रिय, श्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और  
पचेन्द्रिय तथा उनके पर्याप्त और अपर्याप्त बीच कितने काल तक रहते हैं ? ॥ १२ ॥

यहां कुछ भी कहतेके छिप नहीं है क्योंकि एतच्छा नर्च सुगम है ।

उपर्युक्त बीच सर्व काल रहते हैं ॥ १३ ॥

यह सब भी सुगम है ।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया  
 वणप्फदिकाइया णिगोदजीवा वादग्ग सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता  
 वादरवणप्फदिकाइयपत्तेयमरीरपज्जत्तापज्जत्ता तसकाइयपज्जत्ता  
 अपज्जत्ता केवचिर कालादो होंति ? ॥ १४ ॥

एत्थ वि पत्थि नत्तम्, सुगमत्तादो ।

सब्बद्धा ॥ १५ ॥

कायमार्गणाके अनुमार पृथिवीकायिक, पृथिवीकायिक पर्याप्त, पृथिवीकायिक  
 अपर्याप्त; वादर पृथिवीकायिक, वादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, वादर पृथिवीकायिक  
 अपर्याप्त; सूक्ष्म पृथिवीकायिक, मूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त, मूक्ष्म पृथिवीकायिक  
 अपर्याप्त; अष्कायिक, अष्कायिक पर्याप्त, अष्कायिक अपर्याप्त; वादर अष्कायिक, वादर  
 अष्कायिक पर्याप्त, वादर अष्कायिक अपर्याप्त; सूक्ष्म अष्कायिक, सूक्ष्म अष्कायिक पर्याप्त  
 सूक्ष्म अष्कायिक अपर्याप्त; तेजस्कायिक, तेजस्कायिक पर्याप्त, तेजस्कायिक अपर्याप्त;  
 वादर तेजस्कायिक, वादर तेजस्कायिक पर्याप्त, वादर तेजस्कायिक अपर्याप्त; सूक्ष्म  
 तेजस्कायिक, सूक्ष्म तेजस्कायिक पर्याप्त, सूक्ष्म तेजस्कायिक अपर्याप्त; वायुकायिक,  
 वायुकायिक पर्याप्त वायुकायिक अपर्याप्त; वादर वायुकायिक, वादर वायुकायिक  
 पर्याप्त, वादर वायुकायिक अपर्याप्त; सूक्ष्म वायुकायिक, सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त,  
 सूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्त; वनस्पतिकायिक, वनस्पतिकायिक पर्याप्त, वनस्पति  
 कायिक अपर्याप्त; वादर वनस्पतिकायिक, वादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त, वादर  
 वनस्पतिकायिक अपर्याप्त; निगाद जीव, निगाद जीव पर्याप्त, निगाद जीव अपर्याप्त;  
 वादर निगाद जीव, वादर निगाद जीव पर्याप्त, वादर निगाद जीव अपर्याप्त; सूक्ष्म  
 निगाद जीव, सूक्ष्म निगाद जीव पर्याप्त, मूक्ष्म निगाद जीव अपर्याप्त; वादर  
 वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर, वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त, वादर  
 वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त; भ्रमकायिक, भ्रमकायिक पर्याप्त और भ्रम  
 कायिक अपर्याप्त जीव क्लिने काले एत एत ॥ १४ ॥

पदां मी कुत्त बद्धन पाम्ब महीं हे पर्याप्ति एह एव सुगम हे ।

उपयुक्त जीव मत्र काल रहते हैं ॥ १५ ॥

सुगम ।

जोगाणुवादेण पचमणजोगी पचवचिजोगी कायजोगी ओरा  
लियकायजोगी ओरालियमिस्सकायजोगी वेउव्वियकायजोगी कम्म  
इयकायजोगी केवचिर कालादो होंति ? ॥ १६ ॥

सुगम ।

सव्वदा ॥ १७ ॥

मणञ्जागि-वचिञ्जागीणमद्दा सहण्णज एगसममा, उक्कमेण अतासुहुत्त । मणुस  
अपञ्चत्ताण पुस उहण्णआ उक्कम्सआ वि अतासुहुत्तगत्ता पच । वदि एवविहमणुस  
अपञ्चत्ताण सत्तामा सत्तरा हान्ज वो मण-वचिञ्जागीण सत्तामा सत्तिरो किण्ण इवे,  
विसेत्तामावादा । म इयपमाणकआ विसेत्तो, देवाण संखेज्जमागमेचइम्भुवसत्तिय  
वेउव्वियमिस्सकायजोगिसत्ताणस्स वि सुक्कट्ठप्पसगादो । एत्थ परिहारा पुप्पद । तं  
अदा— ज इम्भवहुत्त सत्ताणारिच्छइस्य कारण, संखेज्जमणुसपञ्चत्ताण सत्ताणस्स वि

यह सूत्र सुगम है ।

योगमार्गशास्त्रे अनुसार पांच मनायागी, पांच बचनयात्री, काययागी, भौदा  
रिक्काययोगी, औदारिकमिधकाययागी, बैकियिककाययागी और कार्मणकाययोगी  
सीध कितन काल तक रहते हैं ? ॥ १६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपयुक्त सीध सर्व फल रहते हैं ॥ १७ ॥

दुष्का—मनायोगी भीर बचनयोगियोंका काळ अचम्पसे एक समय भीर उत्कर्षले  
अन्तर्मुहुर्तप्रमाण है । परन्तु मनुष्य अपर्याप्तोका अचम्प भीर उत्कर्ष काळ भी अन्तर्मुहुर्त  
मात्र ही है । यदि इस प्रकारके मनुष्य अपर्याप्तोकी सन्तान सान्तर है तो मनोयोगी  
भीर बचनयोगियोंकी सन्तान सान्तर क्यों नहीं होगी क्योंकि उनमें कोई विशेषता  
नहीं है । यदि अल्पप्रमाणकृत विशेषता मात्री जाय तो वह भी नहीं बनती क्योंकि  
इसके संवसारतरे मागमात्र अचम्पसे उपयुक्त बैकियिकमिधकाययागी जीवोंकी सन्तानके  
भी सर्व काम रहसका प्रसंग होगा ?

समाधान—यहां उपयुक्त शब्दका परिहार कहत ह । वह इस प्रकार है—  
अचम्पकी अधिकता सन्तानक अधिकतेका कारण नहीं है क्योंकि ऐसा होनेपर

बोच्छेदप्यमगादो । य मगद्वाबोचत्त सताणबोच्छेदस्स कारण, यउच्चियमिस्सद्वादा सखेत्त  
 गुणहीनदुबलक्खियमेषजागिसताणस्स वि मांतरत्तप्यमगादो । किंतु वस्स गुणद्वाभस्स  
 मगगाद्वाप्यस्स वा एगद्दीनाबद्वाणकालादो पवमतरकालो बहुमो होदि तस्सण्णय  
 वाच्छेदो । अस्स पुण कयापि ण बहुमा तस्स न मताथस्स वोच्छेदो चि वेत्तम्भ ।  
 मय्यजोगि-बच्चिजोगीण पुण एगममयो सुद्धु परिवत्ता ति पत्त्य अहण्णकालत्तणेण ण  
 गहिदो ।

वेउच्चियमिस्सकायजोगी केवच्चिर कालादो होंति ? ॥ १८ ॥

सुगम ।

जहण्णेण अतोमुहुत्त ॥ १९ ॥

हुदा । आरालियकायजोगिद्विदितिरिक्ख-मणुस्मान य विगगह करदूप दबसुप्यजिय  
 सुवरअहण्णेण कालेण पञ्जपीआ समाभिय अतोमुहुत्तमत्तअहण्णकालुत्तलमादो ।

सक्यात्त मनुप्य पर्याप्त जीवोंको सम्मानके भी व्युच्छेदका प्रसंग होगा । मयने कायकी  
 भस्यता भी सम्मानव्युच्छेदका कारण नहीं है क्योंकि ऐसा मामलपर वैकियिक्ख  
 मिक्खकायस सक्यात्तगुणे हीन कासस उपलक्षित मनायोगिमन्तामक भी मान्तरताका  
 प्रसंग भावना । किन्तु जिस गुणस्थान भयवा मागपास्थानक एक जीवके भयस्थान  
 कासस प्रवेशान्तरकाल बहुत होता है उसकी सम्मानका व्युच्छेद हाता है । जिसका  
 वह कास कदापि बहुत नहीं है उसकी सम्मानका व्युच्छेद नहीं हाता ऐसा ग्रहण  
 करना चाहिये । परन्तु ममोयोगी व मयमयोगियोंका एक समय बहुत ही कम पाया जाता  
 है इस कारण यहां अधम्य कासरूपसे वह नहीं ग्रहण किया गया ।

वैकियिक्खमिभक्खययोगी जीव कितने काल तप रहते हैं ? ॥ १८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

वैकियिक्खमिभक्कापयागियोंका काल अपन्यमे अन्तमुहुत्त है ॥ १९ ॥

क्योंकि औदारिककापयागमें स्थित तिर्येच भीर मनुष्योंका वा विग्रह करके  
 वयोंमें उत्पन्न हाकर भीर सर्व अधम्य कासस पर्याप्तियोंको पूज कर बहुत ही कम पाया  
 जाता अन्तमुहुत्तमात्र अधम्य कास पाया जाता है ।

१ अर्थात् त्रिपुत्रलक्षण वा अयमर्थी - त्रिपुत्रलक्षण इति वाक्य ।

२ अर्थात् स्वयमेवास्तु परिवत्ता इति वाक्य ।



उक्कस्तेण पलिदोवमस्म असस्तेज्जदिभागो ॥ २० ॥

मज्जुसज्जपञ्चप्रधान अथा पलिदोवमस्म असस्तेज्जदिभागमेवा सत्ताणस्रता  
पक्खिदो तथा एत्थ वि परूवेदम्भा ।

आहारकायजोगी केवचिर कालादो ह्येति ? ॥ २१ ॥

सुगम ।

जहण्णेण एगममय ॥ २२ ॥

इदो ! मज्जुसज्ज-वचिजोमेहिदो आहारकायजोग मत्तु विदियसमए काले  
करिय बोमंठरं गयस्म एगसमयकज्जुवसमादो ।

उक्कस्तेण अंतोमुहुत्त ॥ २३ ॥

एत्थ आहारकायजोगीणं दुष्परिमममा साव आहारकायजोगप्पवेमस्म अंतं  
करिय पुषा उष्परिमसमए अण्णे अन्ति पवेसियम्भा । एव संखेज्जमारसलागासु उप्पन्नासु तदो  
विपमा अंतरं होदि । एवं संखेज्जंतोसुहुत्तममासो वि अतोसुहुत्तमेत्तो वेव ।

वही काल उत्कर्षम पश्योपमके अससपातर्षे भागप्रमाण है ॥ २० ॥

त्रिभ प्रकार मज्जुप्प मपर्याप्तके पस्वापमके अर्मन्वपातर्षे भागमात्र सन्ताव  
कासका निरूपण विषया आ बुद्धा है उसी प्रकार पहापर भी निरूपण करना चाहिये ।

आहारकमिधकाययोगी जीव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ २१ ॥

बहु सुव सुगम है ।

आहारकमिधकाययोगी जीव अनन्यमे एक समय तक रहते हैं ॥ २२ ॥

क्योंकि मनोयोग और ब्रह्मबागस आहारककाययोगका प्राप्त होकर व  
द्वितीय समयमें मरण कर योगान्तरका प्राप्त होनेपर एक समय काल पाया जाता है ।

आहारककाययोगी जीव उत्कर्षमे अन्तर्मुहुत्त तक रहते हैं ॥ २३ ॥

यहां आहारक काययोगियोंके अन्तरम समय तक आहारककाययोगमें प्रवेशका  
अन्तर करके पुनः अपरिम समयमें अन्ध जीवोंका प्रवेश कराना चाहिये । इस प्रकार संख्यात  
वार-शाकाकारोंके उत्पद्य होनेपर तत्पश्चात् विषयसे अन्तर होता है । इस प्रकार संख्यात  
अन्तर्मुहुत्तका जोड़ भी अन्तर्मुहुत्तमात्र ही होता है ।

कच गन्वद् ? उक्कस्मकाला अतामुहुचमेत्ता चि सुचवयणादा ।

आहारमिस्सकायजोगी केवचिर कालादो होंति ? ॥ २४ ॥  
सुगम ।

जहण्णेण अतोमुहुत्त ॥ २५ ॥

कुदो ? आहारमिस्सकायजोगपरस्स आहारमिस्सकप्रजाग गत्तुण सुहु अहण्णेण  
कालण पच्चचीओ समाणिदस्स जहण्णकालुवलमादो ।

उक्कस्सेण अतोमुहुत्त ॥ २६ ॥

एत्थ वि पुच्च व सखेज्जंतोमुहुत्ताय सकलया कापम्भा ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदा पुरिसवेदा णवुमयवेदा अवगदवेदा केव  
चिर कालादो होंति ? ॥ २७ ॥

सुगम ।

श्रुका—यह कैसे जाना जाता है कि उन सत्यात अन्तर्मुहूर्तोंका आक भी  
अन्तर्मुहूर्तमात्र ही होता है ?

समाधान— इत्येव काळ अन्तर्मुहूर्तमात्र है इत्थं सूत्रचक्षणसे जाना जाता है ।

आहारकमिभकप्रयोगी जीव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ २४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहारकमिभकप्रयोगी जीव अक्षयसे अन्तर्मुहूर्त तक रहते हैं ॥ २५ ॥

क्योंकि आहारकमिभकप्रयोगमें जानेवाले जीवके आहारकमिभकप्रयोगका  
प्राप्त होकर अतिशय अक्षय कामसे पर्याप्तियोंका पूर्ण करनेपर ( सूत्रोक्त ) अक्षय  
काल पाया जाता है ।

आहारकमिभकप्रयोगी जीव उत्कर्षमें अन्तर्मुहूर्त तक रहते हैं ॥ २६ ॥

यहांपर भी पूर्वके समान संख्यात अन्तर्मुहूर्तोंका संकलन करना चाहिये ।

वेदमार्गवाके अनुसार स्त्रीवदी, पुरुषवदी, नपुंसकवदी और अपगतवदी जीव  
कितने काल तक रहते हैं ? ॥ २७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सव्वद्धा ॥ २८ ॥

एदं पि सुगम ।

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई  
अकसाई केवचिर कालादो होंति ? ॥ २९ ॥

सुगम ।

सव्वद्धा ॥ ३० ॥

एदं पि सुगमं ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणी सुदअण्णाणी विभगणाणी  
आभिणिचोहिय-सुद-ओहिणाणी मणपज्जवणाणी केवलणाणी केवचिर  
कालादो हांति ? ॥ ३१ ॥

सुगम ।

सव्वद्धा ॥ ३२ ॥

उपयुक्त जीव सर्व काल रहते हैं ॥ २८ ॥

यह सब भी सुगम है ।

कषायमार्गजाक अनुमार कामरूपायी, मानरूपायी, मायाकषायी, लोभरूपायी  
और अकषायी जीव कितने काल तक रहते हैं ? ॥ २९ ॥

यह सब सुगम है ।

उपयुक्त जीव सर्व काल रहते हैं ॥ ३० ॥

यह सब भी सुगम है ।

ज्ञानमार्गजाक अनुमार मतिप्रज्ञानी, भुवप्रज्ञानी, विमगज्ञानी, आभिनिचोधिक  
ज्ञानी, भुवज्ञानी, अविज्ञानी, मनःवर्षयज्ञानी और क्वचज्ञानी जीव कितने काल तक  
रहते हैं ? ॥ ३१ ॥

यह सब सुगम है ।

उपयुक्त जीव सब काल रहते हैं ॥ ३२ ॥

नमि एत्य पचम्न, सुगमचादो ।

सजमाणुवादेण सजदा सामाहयच्छेदोवद्वावणसुदिसजदा परि  
हारसुदिसजदा जहास्वादविहारसुदिसजदा संजदासजदा असजदा  
केवचिर कालादो ह्येति ? ॥ ३३ ॥

सुगम ।

सव्वद्धा ॥ ३४ ॥

एदं पि सुगम ।

सुहुमसापराइयसुदिसंजदा केवचिर कालादो ह्येति ? ॥ ३५ ॥

सुगम ।

जहण्णेण एगसमय ॥ ३६ ॥

इदो ? उवसतकसायस्स भवियद्विवाद्दसापराइयपविट्टस्स वा सुहुमसाप  
राइयगुणङ्गाणे पडिवप्पविदियसमय कालं करिय देवेसुववण्णस्स एगममपस्सुबलमादो ।

यहां कुछ व्याख्यानक योग्य महीं हैं क्योंकि यह सूत्र सुगम है ।

संयममार्गशाके अनुसार समय, सामायिकच्छेदोपस्थापनशुद्धिसंयत, परिहार  
शुद्धिसंयत, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत, संयतासंयत और असंयत भी कितने काल  
तक रहते हैं ? ॥ ३३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपर्युक्त तीन सर्व काल रहते हैं ॥ ३४ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयत भी कितने काल तक रहत हैं ? ॥ ३५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयत भी अद्यत्त एक समय रहत हैं ॥ ३६ ॥

क्योंकि उपस्थापनकाल वा भवियद्विवाद्दसाम्परायिकसंयत भी कितने सूक्ष्म  
साम्परायिक शुद्धिसंयतको प्राप्त होनेके द्वितीय समयमें मरण कर देघोंमें उत्पन्न होनेपर  
एक समय अद्यत्त काल पाया जाता है ।

उक्कस्सेण अतोमुहुत्त ॥ ३७ ॥

एत्थ सउक्कंतीसुहुत्तसमापसमुत्तूदो अतोमुहुत्तस्सो पस्वदग्धा ।

दसणाणुवादेण चक्खुदसणी अचक्खुदसणी ओहिदंसणी केवल-  
दसणी केवचिर कालादो होंति ? ॥ ३८ ॥

सुगम ।

सब्बद्दा ॥ ३९ ॥

एदं पि सुगम ।

लेस्ताणुवादेण किण्हलेस्सिय-णील्लेस्सिय-काउलेस्सिय-त्तेठ  
लेस्सिय-पम्मलेस्सिय-सुक्कलेस्सिया केवचिर कालादो होंति ? ॥४०॥

सुगम ।

सब्बद्दा ॥ ४१ ॥

एदं पि सुगम ।

एतन्मत्स्यरायिकशुद्धिसंघत बीब उत्कर्षमे अन्तर्मुहूर्ते तक रहते हैं ॥ ३७ ॥

यहां संख्यात मत्स्यशुद्धीके सक्कमस उत्पन्न हुए अन्तर्मुहूर्त कासही प्रकथना  
करना चाहिये ।

दर्शनमार्गशाक अनुसार बहुदर्शनी, अचक्षुदर्शनी, अविदसनी और कवल-  
दर्शनी बीब कितने काल तक रहते हैं ? ॥ ३८ ॥

यह सब सुगम है ।

उपर्युक्त बीब सर्व काल रहते हैं ॥ ३९ ॥

यह सब भी सुगम है ।

सप्त्यमार्गशाक अनुसार कुण्डलाश्याबासे, नीलेश्याबासे, कपातलश्याबासे,  
तेजालश्याबासे, पद्मेश्याबासे और शुक्लेश्याबासे बीब कितने काल तक रहते हैं ? ॥४०॥

यह सब सुगम है ।

उपर्युक्त बीब सब काल रहते हैं ॥ ४१ ॥

यह सब भी सुगम है ।

भविष्याणुवादेण भवसिद्धिया अभवसिद्धिया केवचिरं कालादो  
ह्येति ? ॥ ४२ ॥

सुगमं ।

सव्वदा ॥ ४३ ॥

एद वि सुगमं ।

सम्पत्ताणुवादेण सम्माइट्ठी स्वहयसम्माइट्ठी वेदगसम्माइट्ठी  
मिच्छाइट्ठी केवचिर कालादो ह्येति ? ॥ ४४ ॥

सुगमं ।

सव्वदा ॥ ४५ ॥

एद वि सुगमं ।

उवसमसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी केवचिर कालादो ह्येति ?  
॥ ४६ ॥

सुगमं ।

मध्यमार्गणाके अनुमार मध्यमिद्धिक और अमध्यमिद्धिक जीव कितने फल  
तक रहते हैं ? ॥ ४२ ॥

एह सव्व सुगमं हे ।

मध्यमिद्धिक और अमध्यमिद्धिक जीव सर्व फल रहते हैं ॥ ४३ ॥

एह सव्व भी सुगमं हे ।

सम्यक्प्रमाणणाके अनुमार सम्पगघटि, धापिकसम्पगघटि, वेदकसम्पगघटि और  
मिष्पाघटि जीव कितने फल तक रहते हैं ? ॥ ४४ ॥

एह सव्व सुगमं हे ।

उपर्युक्त जीव सर्व फल रहते हैं ? ॥ ४५ ॥

एह सव्व भी सुगमं हे ।

उपद्रमसम्पगघटि और सम्पगिमिष्पाघटि जीव कितने फल तक रहते हैं ? ॥ ४६ ॥

एह सव्व सुगमं हे ।

जहण्णेण अतोमुहुत्त ॥ ४७ ॥

हुदा ? दिव्यमन्त्रात् सम्मामिच्छतुवसमसम्मचाणि पडिबन्धित्य सन्धजहण्ण-  
कासं ठेसु अन्धित्य गुणंतरगदाथ सुदु अहर्णतोसुदुचमेचकात्तुवसंमादो ।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ४८ ॥

एत्थ एवमिदं काले जाविन्नामये अप्पिदगुणह्वाणकासमचमिदं एगपरेसणकास-  
सत्तागे करिय परिसासु पलिदोवमस्स असत्तज्जदिभागमेचसत्तागासुप्पन्नासु तदा  
धियमा अंतर हादि । एत्थ सन्धकासलागाहि गुणकास गुणिद उक्कस्सकासो  
होदि ।

सासणसम्माइट्ठी केवचिर कालादो होदि ? ॥ ४९ ॥

सुगम ।

जहण्णेण एगसमय ॥ ५० ॥

हुदो ? उवमसम्मचद्वाए एगममयावमेसाए मासण गत्तु एगसमयमन्धित्य

उपशमसम्पग्घटि और सम्पग्मिध्याघटि भीव अपन्यसे अन्तर्गृह्यत कास तक  
रहते हैं ॥ ४७ ॥

क्योंकि, दृष्टमार्थी जीवोंके सम्पग्मिध्यात्व और उपशमसम्पक्त्वको प्राप्त कर  
तथा सर्व अपन्य कास तक इन गुणस्थानोंमें रहकर अन्य गुणस्थानको प्राप्त होनेपर  
मतिघाय अपन्य अन्तर्गृह्यतमात्र कास पाया जाता है ।

उपर्युक्त भीव उक्कपमे पत्तोपमके असत्त्वात्तवे भागमात्र कास तक रहते  
हैं ॥ ४८ ॥

यहां इस कासक निष्कासने समय विचक्षित गुणस्थानके कासप्रमाण एक  
प्रवेद्याकासको शब्दाका करके पुनः देही पत्तोपमके मत्तत्त्वात्तवे भागमात्र शब्दाका  
कोके उत्पन्न होनेपर उत्पन्नात् धियमसे अन्तर होता है । यहाँ सब कासप्रमाणात्मकोसे  
गुणस्थानकासको शुभित करनेपर उत्कृष्ट कास होता है ।

सासादनसम्पग्घटि भीव किन्ते कास तक रहत हैं ? ॥ ४९ ॥

यह सुब सुगम है ।

सासादनसम्पग्घटि भीव अपन्यस एक समय रहते हैं ॥ ५० ॥

क्योंकि उपशमसम्पक्त्ववाक्यमें एक समय केव रहनेपर सासादनगुणस्थानको

विदियममप मिच्छत गदस्य एगममपदमनात् ।

उक्कस्मेण पलितोवमम्म असस्वेज्जत्तिभागो ॥ ५१ ॥

गुणमम, मम्मामिच्छत रात्तममामिहात्तन प्दस्य वानस्य ममुप्पतीदा ।

मणियाणुवात्तण मणी अमणी केवचिर कालाने हाति ?

॥ ५२ ॥

गुणम ।

मवद्धा ॥ ५३ ॥

गुणम ।

आहार अणाहार कवचिर कालाने हाति ? ॥ ५४ ॥

गुणम ।

मवद्धा ॥ ५५ ॥

गुणम ।

एव नारद उवाच ॥

प्राज्ञ हावत धीर एव समस इहवत् त्रिणीय समसमे विद्यापववा प्राज्ञ हावता एव  
समस प्रपणव वात्त वत्ता प्राज्ञा दे ।

मामादनमग्गहटि तीर उक्कवव पत्तपावमद अगत्तपात्तरे मागमाय वान  
मद रदन दे ॥ ५१ ॥

एद गृव गुणम द कपोत्त मग्गविद्यापववात्तव वीवत्तवा दे । विद्याप वहा  
आ गृवा दे उगीम दग वान्ती मी उल्लि हाती द ।

मत्तिमाग्गहटि अनुमा मग्गी आ अग्गी तीर सिन्न वात्त मद रदन  
दे ॥ ५२ ॥

एद गृव गुणम दे ।

मग्गी आ अग्गी आ मग् वान् रदन दे ॥ ५३ ॥

एद गृव गुणम दे ।



## णाणाजीवेण अतराणुगमो

णाणाजीवेहि अतराणुगमेण गदियाणुवादेण गिरयगदीए षेर  
इयाणमतर केवचिर कालादो होदि ? ॥ १ ॥

णाणाजीवेणमा एगजीवपडिसेहफलो । अंतरविदेमा ससाणिभामहारपडि  
सहफला । षेरइयविदेसा तत्पट्टियपुढनिकाइयादिपडिसेहफला । केवचिर विदेमो ममया  
बलिय-उण-उब घुडुचादिफला । अबसम सुगम ।

णत्थि अतर ॥ २ ॥

कहा ! सुगदासु भवहुणादो । णाणाजीवेहि कालविरुवपाण चेर पदसिमता  
मत्थि पदमि च अत्थि चि कण्ठे । तदा अतरपरुवणा थ कादक्य चि । एत्थ परिहारो  
पुरुषे । न ब्रहा— कासागिप्रोगहार अमिमतरमत्थि चि अबगई तमिमतराणं पमास-  
परुवणाहुमिदमणिजोगहारमागई । यदि एई ता सातराभीणमव परुवणा कीरठ संतर

नाना जीवोंकी अवस्था अन्तगनुगमम गतिमार्गवाके अनुमाग नरकमतिमें  
नारकी जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ १ ॥

नाना जीवोंकी अवस्था यह निर्देश एक जीवकी अवस्थाके प्रतिषेधक शिष्य है ।  
अन्तर निर्देशक फल दोष अनुयोगद्वाराका प्रतिषेध है । 'नारकी जीवों' का निर्देश वहाँ  
पर स्थित पृथिवीकाविकादि जीवाका प्रतिषेधक है । कितन काल यह निर्देश समय  
मावर्ती सब सब व मुहतादि रूप नारकीदोषोंका सूचक है । दोष स्वार्थ सुगम है ।

नारकी जीवोंका अन्तर नहीं जाता ॥ २ ॥

क्योंकि उनका सब कामोंम भयस्थान है ।

टीका—नाना जीवोंकी अवस्था की गई काममरुपजासे ही इनका अन्तर है  
भीत इनका नहीं है यह बात ज्ञानी जानी है । मन एव निर अन्तत्परुपमा नहीं करना  
चाहिये !

समाधान—यहाँ परिहार कहत हैं । यह इस प्रकार है— कासापुयोगद्वारमें  
अिन जीवोंका अन्तर है ऐसा बात हुआ है उनके अन्तरोंके प्रमाणप्रकपजाथ यह अनु  
यागद्वार जाता है ।

शुद्धा—परि देसा है ता अन्तरविधिह सागरराशिपोंकी ही प्रकपला करना

विशिष्टांगं, ण सम्बद्धरासीमिति ? तो क्त्वि एव घेचञ्च दम्बद्वियनपसिस्माशुग्गहङ्ग  
कालाणिओगदरं मणिय सपदि पञ्चद्वियसिस्माशुग्गहङ्गमतराभिओगदरपरुवणा  
आगदा सि ।

गिरतर ॥ ३ ॥

निर्गतमतरमस्मात्प्रविरिति गिरतर । त जण सिद्धं तण एसो पञ्चुवासपडिसहो,  
पसा रामी अंतरादो पुणभूदो वदिरिचो चि बुच होदि । अदि एव तो पुणरुचदोसो  
पाबदे, पुणसुचत्पमिद्धत्परुवणादो । न एम दोसो, पुञ्चिन्त्सुच सेण अभावपहानं  
तण पसन्त्रपडिमेहपडिबद्धं । तदो तण अमार्थं पच बिहीए परुवणहमेदस्स अवपारादो ।

एव मत्तसु पढवीसु णेरइया ॥ ४ ॥

आहिये सब कास रहनेवाली राशियोंकी नहीं ?

समाधान—तो फिर इस प्रकार ग्रहण करना चाहिये कि द्रव्यार्थिक नयका  
अवसम्बन्धन करनवाले शिष्योंके अनुग्रहाय काळानुयागद्वारको कहकर इस समय  
पयावार्थिक नयका अवसम्बन्धन करनवाले शिष्योंके अनुग्रहाय अन्तरानुयागद्वारप्ररूपणा  
मान्य होती है ।

नारकी जीव निरन्तर हैं ॥ ३ ॥

इस राशिका अन्तर नहीं है इसलिये यह निरन्तर है । (यह निरन्तर शब्दका  
बिधकल्प है) । शूक्ति यह राशि सिद्ध है इसीलिये यह पयुदासप्रतिपत्त है । यह  
नारकराणि अन्तरस पृथग्भूत वा प्यतिरिक्त है यह अपयुक्त कथनका अभिप्राय है ।

शुद्धा—यदि ऐसा है तो पुनरुक्तद्वय प्राप्त होता है क्योंकि इस सूत्र द्वारा  
पूज सूत्रसे प्रसिद्ध भयका प्रतिपादन किया गया है ?

समाधान—यह कोर वाप नहीं क्योंकि पूज सूत्र अभावप्रधान है इसलिये वह  
प्रसज्यप्रतिपत्त सम्बन्ध है । इन कारण उससे अभावको प्राप्त राशिकी विधिक तिरु  
पचार्य इस सूत्रका अन्तर हुआ है ।

विश्वपार्य—अभाव दो प्रकारका होता है, पर्युदास और प्रसज्य । पयुदासक  
द्वारा एक वस्तुके अभावमें दूसरी वस्तुका सत्ताय ग्रहण किया जाता है । और प्रसज्यक  
द्वारा कथक अभावमात्र समझा जाता है । शूक्ति प्रस्तुत प्रसंगमें अन्तरक अभावमें नारक  
राशिका अस्तित्व विवक्षित है इसलिये यहाँ पर्युदास पक्ष ग्रहण करना चाहिये ।

इसी प्रकार सातों पृथिवियोंमें नारकी जीव अन्तरमे रहित या निरन्तर  
हैं ॥ ४ ॥



कदा ? अतगमाव पठि विसेसाभावादा ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा पचिंदियतिरिक्ख-पचिंदियतिरिक्ख-  
पज्जत्ता पचिंदियतिरिक्खजोणिणी पचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता, मणुस  
गदीए मणुसा मणुसपज्जत्ता मणुमिणीणमतर केवचिर काल्मदा  
हाति ? ॥ ५ ॥

दाग्ग गाएमगवाणेन विरेमा किमह्म कम्मो ? देव पराप्याण व एरुसि बुभ-  
खचावामा वरिध पि ज्ञाणावणह्म । सस सुगम ।

णत्थि अतर ॥ ६ ॥

एसो पसज्जपडिसेहो, विहीए पहाणचामावादो ।

णिरतरं ॥ ७ ॥

एसो पम्भुवामपडिसेहो, पडिमेहस्स पहाणचामावादो ।

क्याकि भगवत्पदावक प्रति छातों वृषिषियोंक वारकियोंमें कोई विशेषता नहीं है ।

तिर्य्यचमतिमें तिर्य्यच, पंचेन्द्रिय तिर्य्यच, पंचेन्द्रिय तिर्य्यच पर्याप्त, पंचन्द्रिय तिर्य्यच  
यानिमती और पंचेन्द्रिय तिर्य्यच अपर्याप्त तथा मनुष्यगतिमें मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त व  
मनुष्यनियोंक अन्तर कितन काल तक होता है ? ॥ ५ ॥

उत्तर—दोनों गतिबोका बिजैरा एक वार किसलिये किया ?

समाधान—एक और वारकियोंके समान इनका वृष्य क्षेत्रमें निवास नहीं है,  
इस बातके वापनार्थ दोनों गतियोंक एक वार बिजैरा किया है । दोन सूत्रार्थ सुगम है ।

उपर्युक्त बीबोंका अन्तर नहीं होता ॥ ६ ॥

एह प्रसंग्यप्रतिषेध है क्योंकि यहाँ विधिही प्रधानताका समाव है ।

व बीब निरन्तर है ॥ ७ ॥

एह पर्युदास प्रतिषेध है क्योंकि यहाँ प्रतिषेधही प्रधानता नहीं है ।

मणुसअपज्जत्ताणमंतर केवचिर कालादो होदि ? ॥ ८ ॥

सुगम ।

जहण्णेण एगसमओ ॥ ९ ॥

सेढीए असखेज्जदिभागमेसेसु मणुसअपज्जत्तएसु काल काळम अण्णगरं गएसु एगसमयमतर होऊण विदियसमए अण्णेसु तएयुप्पण्णेसु उट्टमेगसमयमंतर ।

उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागो ॥ १० ॥

कुसो ? मणुसअपज्जत्तएसु काल काळम अण्णगरं गएसु पलिदोवमस्स अस खेज्जदिभागमेत्तकाले अइक्कठे पुणो विपमेण मणुसअपज्जत्तएसु उट्टमज्जमाणवीवाण सुबलभादो ।

देवगदीए देवाणमतर केवचिर कालादो होदि ? ॥ ११ ॥

सुगम ।

मनुष्य अपर्याप्तौका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मनुष्य अपर्याप्तौका अन्तर अनन्तसे एक समय है ॥ ९ ॥

अगधर्षिके असंख्यातये भागमात्र मनुष्य अपर्याप्तौके मरकर भव्य गतिको प्राप्त होनेपर एक समय अन्तर होकर द्वितीय समयमें भव्य गतिको मनुष्य अपर्याप्तौमें उत्पन्न होनेपर एक समय अन्तर प्राप्त होता है ।

मनुष्य अपर्याप्तौका अन्तर उत्कर्षमें पर्याप्तमक असंख्यातये भागमात्र काल होता है ॥ १० ॥

क्योंकि मनुष्य अपर्याप्तौक मरकर भव्य गतिको प्राप्त हुआक पश्चात् पर्याप्तमक असंख्यातये भागमात्र कालक बीत जानेपर पुनः नियमसे मनुष्य अपर्याप्तौमें उत्पन्न होनेवाले क्षीय पाये जात हैं ।

देवगतिमें देवोंका अन्तर कितन काल तक हाता है ? ॥ ११ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

१ इत्यत्र सुहृदाहोरे वदन्निवमिस्व-गर-अपञ्चते । अत्रान्तरमे विरम उतारदा अथवा अह ॥ तत्र विना कथञ्चन वाच्युत्तरं च अत्राह्युता । पञ्चार्थेण निरु वाच्यते सुहृदो ५ ३ गो जी १२२-२२२

२ अत्रि सुहृदुत्तरंकेज्जदिभागमेसेसु इति पाठः ।

णत्पि अन्तर ॥ १२ ॥

एवं पि सुगमं ।

णिरन्तर ॥ १३ ॥

सुगमं ।

भवणवासियप्पहुडि जाव सव्वट्टसिद्धिविमाणवासियदेवा देव  
गदिमंगो ॥ १४ ॥

सुगमं ।

इदियाणुवादेण एहंदि-यादर-सुहुम-यज्जत्त-अपज्जत्त-चीइदिय  
सीइदिय-चत्तरिंदिय-पंचिंदिय-यज्जत्त-अपज्जत्ताणमत्तरं केवधिरं कालादो  
होदि ? ॥ १५ ॥

सुगमं ।

देवोक्त अन्तर नहीं होता है ॥ १२ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

देव निरन्तर हैं ॥ १३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

भजनवासियोंसे उक्त सर्वांसिद्धिमानवासी देवों तक अन्तरका निरूपण  
देवमतिके समान है ॥ १४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

इन्द्रियमार्याणाके अनुसार एकेन्द्रिय, एकेन्द्रिय पर्याप्त, एकेन्द्रिय अपर्याप्त; वावर  
एकेन्द्रिय, वावर एकेन्द्रिय पर्याप्त, वावर एकेन्द्रिय अपर्याप्त; ब्रह्म एकेन्द्रिय, ब्रह्म  
एकेन्द्रिय पर्याप्त, ब्रह्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त; द्वीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय पर्याप्त, द्वीन्द्रिय  
अपर्याप्त; त्रीन्द्रिय त्रीन्द्रिय पर्याप्त, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त; चतुरिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय  
पर्याप्त, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त; पंचेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय पर्याप्त और पंचेन्द्रिय अपर्याप्त  
कीबोका अन्तर किनासे कस तक होता है ? ॥ १५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

णत्थि अंतर ॥ १६ ॥

एदं पञ्चबद्धियसिस्ताणुगहह पुरुविदं ।

णिरतर ॥ १७ ॥

एदं सुच इच्चबद्धियसिस्ताणुगहह पुरुविदं ।

कायाणुवादेण पुढविकाइय आउकाइय-तेउकाइय-चाउकाइय-चण  
फ्फदिकाइय णिगोदजीव-चादर-सुहुम-पज्जत्ता अपज्जत्ता चादरवण  
फ्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्ता अपज्जत्ता तसकाइय-पज्जत्त-अप  
ज्जत्ताणमतर केवचिर कालादो होदि ? ॥ १८ ॥

सुगम ।

णत्थि अतरं ॥ १९ ॥

उपर्युक्त जीवोंका अन्तर नहीं होता है ॥ १६ ॥

यह सूत्र पर्यायार्थिक नयका अर्थसम्बन्धन करनेवाले शिष्योंके अनुग्रहार्थ कहा गया है ।

उक्त जीव निरन्तर हैं ॥ १७ ॥

यह सूत्र द्रव्यार्थिक नयका अर्थसम्बन्धन करनेवाले शिष्योंके अनुग्रहार्थ कहा गया है ।

कायमार्ग्याके अनुसार पृथिवीकायिक, पृथिवीकायिक पर्याप्त, पृथिवीकायिक अपर्याप्त; वादर पृथिवीकायिक, वादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, वादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त; सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त और सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त, ये नौ पृथिवीकायिक जीव, इमी प्रकार नौ अप्कयिक, नौ तेजस्कायिक, नौ वायुकायिक, नौ मनस्पतिकयिक व नौ निगोद जीव, तथा वादर मनस्पतिकयिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त व अपर्याप्त और त्रसकायिक पर्याप्त व अपर्याप्त जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ १८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपर्युक्त जीवोंका अन्तर नहीं होता है ॥ १९ ॥

सुगम ।

गिरन्तर ॥ २० ॥

सुगम । दुग्गयापुग्गहृद्द परुविद-दासुचाणि जाणत्तेति सुत्तकचारस्स वीपरावर्षं वीषदयावर्षं च ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पञ्चवच्चिजोगि-कायजोगि-ओरा  
लियकायजोगि ओरालियमिस्सकायजोगि-वेउव्वियकायजोगि-क्म्मइय  
कायजोगीणमतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ २१ ॥

सुगम ।

णत्थि अतर ॥ २२ ॥

सुगम ।

गिरन्तर ॥ २३ ॥

सुगम ।

बह सूत्र सुगम है ।

च सब बीषराक्षियां निरन्तर हैं ॥ २० ॥

बह सूत्र सुगम है । दोनों बर्षोंका व्यवहसन करनेबाध शिष्योंक अनुपहार्य  
पदे गने उपर्युक्त हों सूत्र सूत्रकर्ताकी पीतरागता और जीवदयापरताको सूचित करते हैं ।

योगमार्गशाके असुमार पाँच मनोयोगी, पाँच ब्रह्मनयागी, काययोगी, औदा-  
रिककाययोगी, औदारिकमिभकाययोगी, वैक्रियिककाययोगी और कर्मकाययोगी  
बीषोंक अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ २१ ॥

पह सूत्र सुगम है ।

उपर्युक्त बीषोंक अन्तर मही होता है ॥ २२ ॥

बह सूत्र सुगम है ।

वे बीषराक्षियां निरन्तर हैं ॥ २३ ॥

पह सूत्र सुगम है ।

वेउन्वियमिस्मकायजोगीणमतर केवचिर कालादो होदि ?

॥ २४ ॥

सुमम ।

जहण्णेण एगसमय ॥ २५ ॥

बुद्धा ! अउन्वियमिस्मकायजोगीसु सन्धेसु पज्जतीमा समाजिदसु एगसमय मतग्गिदूप विदियसमय दवसु गरुणसु उप्पन्नसु अउरियमिस्मकायजोगीणमतर एग समयं हाति ।

उत्कस्मेण वारसमुहत्त ॥ २६ ॥

देवसु गरुणसु वा अनुप्यज्जमाणा जीवा अदि सुहु बहुस कालमस्सति नो वारस सुहुत्ताणि वेव । कथमेदं सन्धेदे ? तियवयणाविमिग्गवयय्यादे ।

आहारकायजोगि आहारमिस्मकायजोगीणमतर केवचिर कालादो होदि ? ॥ २७ ॥

बैक्रियिकमिभकाययोगियोंका अन्तर कितन काल तक हाता है ? ॥ २४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

बैक्रियिकमिभकाययोगियोंका अन्तर अल्पन्यसे एक समय हाता है ॥ २५ ॥

क्योंकि सब बैक्रियिकमिभकाययोगियोंके पर्याप्तियोंका पूर्ण करछेनेपर एक समयका अन्तर हाकर द्वितीय समयमें वेधों व आरक्तियोंके उत्पन्न होमपर बैक्रियिकमिभकाययोगियोंका अन्तर एक समय होता है ।

बैक्रियिकमिभकाययोगियोंका अन्तर उत्कर्षमें बारह मुहूर्त होता है ॥ २६ ॥

हेव धयवा माराक्तियोंमें न वापस हातेवाले जीव यदि बहुत अपिक काल तक रहत हैं तो बारह मुहूर्त तक ही रहते हैं ।

प्रश्न— यह कैसे ज्ञाता जाता है ?

समाधान— यह जिनगणवाणके मुखसे निकले हुए वचनोंसे ज्ञाता जाता है ।

आहारकफाययोगी और आहारकमिभकाययोगी जीवोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ २७ ॥



सुगम ।

जहण्णेण एगसमय ॥ २८ ॥

इदो ? आहार आहारमिस्सओगेदि विणा विहुवप्पजीवाणभेगसमयसुवर्त्तमादो ।

उक्कस्सेण वासपुधत्त ॥ २९ ॥

इदा ? दादि वि ओगेदि विणा सक्कपमत्तमभ्रदाण वात्तपुपत्तावट्ठावर्त्तमादो ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदा पुरिसवेदा णवुंसयवेदा अवगदवेदाण  
मतरं केवचिर काल्मदो होंदि ? ॥ ३० ॥

सुगम ।

णत्थि अतर ॥ ३१ ॥

सुगम ।

णिरत्तर ॥ ३२ ॥

यह एक सुगम है ।

उपर्युक्त बीबोंका अन्तर अपन्यसे एक समय होता है ॥ २८ ॥

क्योंकि आहारक और आहारकमिभ्र कायपायिषोंके बिना तीनों लोकोंके जीव एक समय पाये जाते हैं ।

उपर्युक्त बीबोंका अन्तर उत्कर्षसे बर्षपूषकरबप्रमाण होता है ॥ २९ ॥

क्योंकि एक दोषोंही योगोंके बिना समस्त ममत्तसंपत्तोंका बर्षपूषकत्व काक तक मकरपान देखा जाता है ।

वेदमार्गनाके अनुमार श्रीबिही, पुरुषवेदी, नपुंसकवेदी और अपगतवेदी  
बीबोंका अन्तर कितने कारक तक होता है ? ॥ ३० ॥

यह एक सुगम है ।

उपर्युक्त बीबोंका अन्तर नहीं होता है ॥ ३१ ॥

यह एक सुगम है ।

वे बीबराशिर्षा निरन्तर हैं ॥ ३२ ॥

सुगमं ।

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई लोभकसाई  
( अकसाई ) णमतर केवचिर कालादो होदि ? ॥ ३३ ॥

सुगमं ।

णत्थि अतर ॥ ३४ ॥

सुगम ।

णिरतर ॥ ३५ ॥

सुगम ।

पाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणि विभगणाणि-आभिणि  
घोहिय-सुद-ओहिणाणि मणपज्जवणाणि-केवलणाणीणमंतरं केवचिर  
कालादो होदि ? ॥ ३६ ॥

सुगमं ।

यह स्र्ण सुगम है ।

कपायमार्गणाके अनुसार क्रेषकपायी, मानकपायी, मायाकपायी, लोभकपायी  
और ( अकपायी ) बीबोंका अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ३३ ॥

यह स्र्ण सुगम है ।

उपर्युक्त बीबोंका अन्तर नहीं होता ॥ ३४ ॥

यह स्र्ण सुगम है ।

वे बीबराशियां निरन्तर हैं ॥ ३५ ॥

यह स्र्ण सुगम है ।

ज्ञानमार्गणाके अनुसार मदिअण्णानी, सुदअण्णानी, विभगणानी, आभिनिबोधि  
कानी, सुदअण्णानी, अविज्जानी, मनःपर्ययणानी और केवलणानी बीबोंका अन्तर  
कितन काल तक होता है ? ॥ ३६ ॥

यह स्र्ण सुगम है ।

णत्पि अंतर ॥ ३७ ॥

सुगम ।

णिरतर ॥ ३८ ॥

सुगम ।

सजमाणुवादेण संजदा सामाह्यछेदोषद्ववणसुदिसजदा परि  
हरसुदिसजदा जहास्वादिहारसुदिसजदा सजदासजदा असंजदाण  
मंतरं केवचिरं कालादो होदि ? ॥ ३९ ॥

सुगम ।

णत्पि अतर ॥ ४० ॥

सुगम ।

णिरंतर ॥ ४१ ॥

सुगम ।

सुहुमसांपराह्यसुदिसजदाण अतर केवचिर कालादो होदि ?  
॥ ४२ ॥

उपर्युक्त श्रीबौद्ध अन्तर नहीं होता है ॥ ३७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

ये श्रीबराक्षिपां निरन्तर हैं ॥ ३८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

संयममार्गशास्त्रे उमुमाह संपद्य सामापिकछेदोपस्थापनासुदिसयत्, परिहार  
सुदिसयत्, यथास्थात्तुविहारसुदिसयत्, मयतामयत् और असंयत् श्रीबौद्ध अन्तर  
कितने काल तक होता है ? ॥ ३९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपर्युक्त श्रीबौद्ध अन्तर नहीं होता है ॥ ४० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

ये श्रीबराक्षिपां निरन्तर हैं ॥ ४१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सुहुमसांपराह्य श्रीबौद्ध अन्तर कितने काल तक होता है ? ॥ ४२ ॥

सुगम ।

जहण्णेण एगसमय ॥ ४३ ॥

इदो ? सुद्धमसांपराइयसज्जेहि बिणा एगसमयदमणादा ।

उक्कस्सेण छम्मासाणि ॥ ४४ ॥

इदो ? खवगसेहीसमारोहणस्स छम्मासाणसुपरिमुक्कस्संतरस्स अणुवलभादो ।

दसणाणुवादेण चक्खुदसणि-अक्खुदसणि ओद्धिदसणि-केवल-

दसणीणमतरं केवचिर कालादो होदि ? ॥ ४५ ॥

सुगम ।

णत्थि अतरं ॥ ४६ ॥

सुगम ।

णिरंतरं ॥ ४७ ॥

सुगम ।

—

पह सूत्र सुगम है ।

सुद्धमसाम्परायिक बीर्षोक्का अन्तर अपन्यसे एक समय होता है ॥ ४३ ॥

क्योंकि सुद्धमसाम्परायिक समयोंके बिना एक समय देखा जाता है ।

उक्त बीर्षोक्का अन्तर उत्कर्षसे छह मास होता है ॥ ४४ ॥

क्योंकि सपरकमेजी आरोहणका छह मासोंके ऊपर बरठध अन्तर नहीं पाया जाता ।

इर्धनमार्गणानुसार चसुदधेनी, अचसुदधेनी, अवधिदधेनी और केवलदधेनी बीर्षोक्का अन्तर कितन काल तक होता है ? ॥ ४५ ॥

पह सूत्र सुगम है ।

उपयुक्त बीर्षोक्का अन्तर नहीं हाता है ॥ ४६ ॥

पह सूत्र सुगम है ।

ये बीर्षराशियां निरन्तर हैं ॥ ४७ ॥

पह सूत्र सुगम है ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णील्लेस्सिय-काउलेस्सिय-तेउ  
लेस्सिय-पम्मलेस्सिय-सुक्कलेस्सियाणमतर केवचिरं कालादो होदि ?  
॥ ४८ ॥

सुगम ।

णत्थि अंतर ॥ ४९ ॥

सुगमं ।

णिरत्तरं ॥ ५० ॥

सुगम ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिय-अभवसिद्धियाणमतर केवचिर  
कालादो होदि ? ॥ ५१ ॥

सुगमं ।

णत्थि अंतर ॥ ५२ ॥

लेदयामार्गणाक अनुसार कृष्णलेस्यावाले, नील्लेस्यावाले, कापोतलेस्यावाले,  
तेजोलेस्यावाले, पद्मलेस्यावाले और शुद्धलेस्यावाले बीजोंका अन्तर कितने काल तक  
होता है ? ॥ ४८ ॥

एह एव सुगम है ।

उपयुक्त बीजोंका अन्तर नहीं होता है ॥ ४९ ॥

एह एव सुगम है ।

ब बीरराशिर्पा निरन्तर है ॥ ५० ॥

एह एव सुगम है ।

मध्यमाणवाक अनुसार मध्यसिद्धिक और अमध्यसिद्धिक बीजोंका अन्तर  
कितने काल तक होता है ? ॥ ५१ ॥

एह एव सुगम है ।

मध्यसिद्धिक और अमध्यसिद्धिक बीजोंका अन्तर नहीं होता है ॥ ५२ ॥

शुभम् ।

णिरत्तर ॥ ५३ ॥

शुभम् ।

सम्पत्ताणुवातेण सम्माइट्टि-अडयमम्माइट्टि-वेदगसम्माइट्टि-मिच्छा  
इट्टीणमत्तर केवचिर कालानो होत्ति ? ॥ ५४ ॥

शुभम् ।

णत्वि अत्तर ॥ ५५ ॥

शुभम् ।

णिरत्तर ॥ ५६ ॥

शुभम् ।

उत्तममम्माइट्टीणमत्तर केवचिर कालानो होत्ति ? ॥ ५७ ॥

शुभम् ।

एह गृह शुभम् हे ।

मप्यमिदिह श्री अमप्यमिदिह श्री निगन्तु हे ॥ ५३ ॥

एह गृह शुभम् हे ।

गणितान्तरेणान्तरे अनुसार गणितान्तरे, धाविकमप्यमिदिह, एदमप्यमिदिह श्री  
मिप्यमिदिह श्रीश्रीश्री अन्तरे अन्तरे अन्तरे अन्तरे अन्तरे हे ॥ ५४ ॥

एह गृह शुभम् हे ।

उत्तममम्माइट्टीणमत्तर केवचिर कालानो होत्ति हे ॥ ५५ ॥

एह गृह शुभम् हे ।

ए अन्तरेणान्तरे निगन्तु हे ॥ ५६ ॥

एह गृह शुभम् हे ।

उत्तममप्यमिदिह श्रीश्रीश्री अन्तरे अन्तरे अन्तरे अन्तरे अन्तरे हे ॥ ५७ ॥

एह गृह शुभम् हे ।

जहण्णेण एगसमय ॥ ५८ ॥

इदा ? तिसु वि लाएसु उवमममम्मादिङ्गीणमेक्कमिह ममए अमावदसणादो ।

उक्कस्सेण सत्तरादिंदियाणि ॥ ५९ ॥

रादिंदियमिदि दिवमस्म सण्णा, अहोरचहि मिलिणहि दिवसववहारदंसणादो ।

उवममसम्मचस्म सचदिवसमेचमंतरं होदि चि बुत्तं होदि । एत्थ उवसहारगाहा—

सम्मच सच दिवा विरदाविरदीए चोरस इत्थमि ।

मिदीए अ पणारस्ता मिदिद्विक्कणे सुणेपणे ॥ १ ॥

सासणसम्माडडि-सम्मामिच्छाडडिणमतर केवचिर कालादो  
होदि ? ॥ ६० ॥

सुगमं ।

उपशमसम्पन्नसुखावधौ अन्तर अपन्यसे एक समय है ॥ ५८ ॥

क्याकि तीमो ही सोकोमो कथमसम्पन्नसुखावधौ एक समयमे अमार वेला जाता है ।

उपशमसम्पन्नसुखावधौ अन्तर उत्कर्षमे मात रात दिन है ॥ ५९ ॥

रात्रिदिब यह दिवसका नाम है क्याकि सम्मिक्षित दिन व रात्रिस दिवस वा व्यवहार वेला जाता है । उपशमसम्पन्नसुखावधौ साग दिवसमात्र हाता है यह उक्त कथनका निष्पन्न है । यही उपसंहारगाथा—

उपशमसम्पन्नसुखावधौ मात दिन ( उपशमसम्पन्नसुखावधौ सहित ) विरताविरति अघोत्  
इधमत्तमे बीइह दिन मीर विरति अघात् महावत्तमे पन्नेह दिन ममाय विरतावधौ  
आमना वाहाएव ॥ १ ॥

सामादनसम्पन्नसुखावधौ औग सम्पन्नसुखावधौ अन्तर कितन कास तक  
होता है ? ॥ ६० ॥

यह सुख सुगम है ।

जहण्णेण एगममय ॥ ६१ ॥

कदा ? मामन्वयम्मत मग्माविच्छत्तगुमान् वदन्तन एगममय अतर पदि  
विगदाभारादा ।

उक्कस्मेण पलित्तेवमस्म अमस्सेज्जत्तिभागो ॥ ६२ ॥

सुगम ।

मण्णिगयाणुवात्तिण मण्णि अमण्णीणमतर केव्विण कालादो  
दोत्ति ? ॥ ६३ ॥

सुगम ।

णत्थि अतर ॥ ६४ ॥

सुगम ।

णिरंत्तर ॥ ६५ ॥

सुगम ।

मामादनमप्यारटि भार मय्यग्मिप्यारटि त्रीरोहा अन्तर उपपयम एक  
ममप ६ ॥ ६१ ॥

बसोदि वामादनमप्यारटि भार मय्यग्मिप्यारटि सुयम्यातोके उपपयम एक  
ममप अन्तरक मणि वार विगद्य मदी हे ।

उक्क त्रीरोहा अन्तर उपपयम पप्यारमक अमप्यारतवे भागममान हे ॥ ६२ ॥

एद एव सुगम हे ।

मण्णिगयाणुवात्तिण मण्णि अमण्णीणमतर केव्विण कालादो  
दोत्ति हे ? ॥ ६३ ॥

एद एव सुगम हे ।

मण्णि अतर ॥ ६४ ॥

एद एव सुगम हे ।

मण्णि अतर ॥ ६५ ॥

एद एव सुगम हे ।



आहारशुवादेण आहार अणाहाराणमतर केवचिर कालादे  
होदि ? ॥ ६६ ॥

सुमम ।

णत्थि अतर ॥ ६७ ॥

सुममं ।

णिरंतर ॥ ६८ ॥

सुगम ।

एव जाजानीजेण अंभत्थुगमो प्ति समत्थमपिभोगहार ।

---

आहारमार्गभाके अनुसार आहारक व अनाहारक अर्थात् अन्तर कितने कास-  
रक होता है ? ॥ ६६ ॥

यह एक सुगम है ।

आहारक और अनाहारक अर्थात् अन्तर नहीं होता है ॥ ६७ ॥

यह एक सुमम है ।

वे निरन्तर हैं ॥ ६८ ॥

यह एक सुगम है ।

इस प्रकार ज्ञाना अर्थात् अर्थात् अमृतानुगम धनुषागद्वार समाप्त हुआ ।

---

## भागामागाणुगमो

भागामागाणुगमेण गदियाणुवादेण गिरयगदीए णेरइया सब्ब  
जीवाण केवडिओ भागो ? ॥ १ ॥

एदस्स अत्थो बुच्चद— अणतभाग असंखेज्जदिभाग-सखेज्जदिभागान  
भागसण्णा, अणताभागा असखजाभागा सखेजाभागा एदेमिमभागसण्णा । भागो च  
अभागो च भागाभागा, तमिमणुगमो भागामागाणुगमो, तेज भागामागाणुगमेण एत्थ  
अदियारो चि भण्दि हादि । भागामागण्णिसो सेमाणियोगहारपाठिसेहफलो । भेरुपण्णिसो  
सत्थतणपुडविक्रइयादिपडिसहफला । सम्भजीवाण कइत्थआ गिरयगदीए भिरवर वसदि चि  
पुच्छा कदा होदि । किमण्णतिमभागो किमणता भागा किमसखजा भागा किमसखेज्जदि  
भागो किं सखेजा भागा होति चि भण्दि तण्णिययहुसुचरसुचं भण्दि—

अणतभागो ॥ २ ॥

भागामागानुगमम गतिमार्गणाके अनुसार नरकगतिमें नारकी जीव सर्व  
जीवोंकी अपघा कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ १ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— भ्रमन्तयां भाग असंख्यातयां भाग भीर संख्यातयां  
भाग इतकी भाग संघा है, तथा भ्रमन्त बहुभाग असंख्यात बहुभाग भीर संख्यात  
बहुभाग इतकी अभाग संघा है । भाग भीर अभाग इस प्रकार इन्व समाप्त  
हाकर भागामाग पद निष्पन्न हुआ है । उन भागामागोंका जो अनुगम अर्थात् ज्ञान  
है इसी का नाम भागामागानुगम है । इस भागामागानुगमका यहाँ अभिचार है यह  
उपर्युक्त कथनका अभिप्राय है । भागामाग निर्देशका फल शेष अनुपागद्वाराका  
प्रतिषेध है । नारकी जीवों का निर्देश यहाँकं पृथिवीकायकादि जीवोंकं प्रतिषेधके  
द्विप है । सूत्रमें सब जीवोंका कितनेवां भाग नरकगतिमें निरन्तर रहता है यह प्रश्न  
चिन्ता गया है । क्या भ्रमन्तयें भाग क्या भ्रमन्त बहुभाग क्या असंख्यात बहुभाग  
क्या असंख्यातयें भाग भीर क्या संख्यात बहुभाग प्रमाण हैं वसा पूछनेपर उसक  
निर्णयार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

नरकगतिमें नारकी जीव सब जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ २ ॥

त कर्षं ? गेरइएहि धर्षगुलविदियवगमूलमेतसेडिपमाभहि सम्बजीवरासिभि  
 माग हिद अजसाभि सम्बजीवरासिपडमवगमूलभि आमच्छति । तइ विरसिय सम्ब  
 जीवरासिं समखंडं क्कळ्ळ रूप पडि दिण्णे तत्व एगरूबपरिदं बेरयपमाय होदि ।  
 तेय गेरइया सम्बजीवरासिपडमागो सि पुंषं होदि ।

एव सत्तसु पुढवीसु गेरइया ॥३॥

सत्तसु पुढवीसु गेरइएहि पुष पुष सम्बजीवरासिभि मागं बेसुज तइ विरसिय  
 पुषो सम्बजीवरासिं सत्तसुं विरळ्ळाण समखंडं करिय दिण्णे तत्व एगरूबपरिदं  
 अहाकगेण पडमासीण सत्तसुं पुढवीसुं दसुं जेण होदि तेय गेरइयासो सत्तसु पुढवीसुं  
 सुखदे ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा सव्वजीवाणं केवडिओ मागो ? ॥४॥

एहसु अत्तो— तिरिक्खा सम्बजीवाणं किमणत्तिमागो किमर्षता मागो  
 किमसंखेज्जदिमागो किमसंखेजा माया किं संखेज्जा भागा होति सि पुच्छा करा ।  
 तए उमु विपप्येसु एक्कस्सेव गहणहुत्तमुत्तमुत्तं भवदि—

बह केसे ? धर्षगुलक द्वितीय वर्गमूलसु गुणित अगधणीममाय नारकियोका सर्व  
 जीवरासिमें माग बेनेपर भनत्त सर्व जीवरासि-अधमवर्गमूल मात है । सम्परासिकाविल्लम  
 करके सर्व जीवरासिको समखण्ड कर रूपके प्रति बेनेपर उसमें एक रूप धरित राशि-  
 नारकियोका प्रमाण जाती है । इस कारण नारकी जीव सर्व जीवरासिके अनन्तव  
 मागप्रमाण है एसा कहा है ।

इमी प्रकार सात पृथिवियोंमें नारकियोंके मागमागका क्रम है ॥ ३ ॥

सात पृथिवियोंके नारकियोंका पृथक् पृथक् सर्व जीवरासिमें माग बहर जो  
 रूप हो उसका विरलन कर पुनः सर्व जीवरासिका सात विरलनराशियोंके समखण्ड  
 करके बेनेपर उसमें एक रूप धरित राशि बूकि क्रमशः प्रथमादिक सात पृथिवियोंका  
 प्रत्येक हाता है इसलिये सात पृथिवियोंके मागमागको नारकियोंके समान कहना सुख है ।

तिर्य्यगतिमें तिर्य्यग जीव सर्व जीवोंके क्लित्तनें मागप्रमाण है ? ॥ ४ ॥

इसका अर्थ— तिर्य्यग जीव सर्व जीवोंके क्या अनन्तवें माग है क्या अनन्त  
 बहुमाग है क्या असेवपातवें माग है क्या असेवपात बहुमाग है और क्या सेवपात  
 बहुमाग है इस प्रकार कहा पुच्छा बी गइ है । उन छह विषयोंमेंसे एकक ही प्रथमार्थ  
 बहर एव बहते हैं—

## अणता भागा ॥ ५ ॥

त बहा—मिद्-तिगदिशीवदि सम्बजीवरासिमावृष्टिप रुद्र विरल्लिप सम्बजीव  
गतिं समस्तुष्ट करिय रुव पाडि दिष्ण एगम्बधरिद् मिद् तिगदिजीवपमाण होदि । तन्व  
एगम्बधरिद् मात्तुण सेमबहुभागा अण तिरिक्खाण पमाण होदि तेण तिरिक्खा सम्ब  
जीवाणमणताभागो ति मुत्त उच्च ।

पचिंदियतिरिक्खा पचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता पचिंदियतिरिक्ख  
जोणिणी पचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता, मणुसगदीए मणुसा मणुसपज्जत्ता  
मणुसिणी मणुमअपज्जत्ता सब्वजीवाण केवडिओ भागो ? ॥६॥

सुगममद, पुन्न परुविदत्तादा ।

## अणतभागो ॥ ७ ॥

पुब्बुत्तल्लभियप्पसु ष्ट् बीरा अणतभागविद्यप्प पेव अत्थि, अण्णत्थ पत्थि  
पि एदण मुत्तण पन्विद् । एय पुब्बुत्तअट्टविद्यप्पजीवपमाणण दम्भाणिओगइारादो

तिपच्च जीव मच्च बीवोके अनन्त बहुभागप्रमाण ई ॥ ५ ॥

यद् इत्त प्रकार द— सिद्ध भार तीन गतिवोके जीवोम सय जीवराशिखा  
अपयत्तित कर आ सप्प हा उमका पिरमन कर सय जीवराशिखा समस्तुष्ट करके रूपक  
प्रति दनेएर एक रूप धरित मिस्स और तीन गतिवोके जीवोका प्रमाण हाता है ।  
उसमें एक रूप धरित रागिओ छाड़कर दाय बहुभाग पूंकि तिवोका प्रमाण हाता  
है अतएव तियच्च मच्च जीवोके अनन्त बहुभागप्रमाण ई एसा सूत्रमें कहा है ।

पंचेन्द्रिय नियच्च, पंचेन्द्रिय नियच्च पयात्त, पंचेन्द्रिय नियच्च यानिमती और  
पंचेन्द्रिय नियच्च अपयात्त जीव; तथा मनुष्यगण्णिमे मनुष्य, मनुष्य पयात्त, मनुष्यनी  
और मनुष्य अपयात्त आर मर जीवोके चित्तरे भागप्रमाण इ ? ॥ ६ ॥

यद् मच्च सुगम ई पयोकि पूयमें प्ररूपण किया जा चुका है ।

उपयुक्त शीर मर जीवोके अनन्तरे भागप्रमाण इ ॥ ७ ॥

पूवोक्त एद् पिक्कणोमता पे अनन्तभाग विक्कणमें हा है अन्वत्त बर्हा है  
वेसा इम सूत्र द्वारा प्रकथित है । यदा द्रव्यानुपागद्वारणे जान गये पूवोक्त आठ प्रकार

अवगण्य पुत्र पुत्र सम्प्रदीव अवहारिय त्स्वसलागमचलुडापि सम्प्रदीवरामि करिय  
 तस्य एगमागपमाद्यमप्यप्या वीरपमाग होदि चि अवहारिय एदे अङ्ग वीरमेदा सम्प्र  
 वीवाणमगतिममागा हादि चि विच्छजो कायम्बो ।

तेवगदीए देवा सव्वजीवाण केवडिओ भागो ? ॥ ८ ॥

दवगदीए पुढविकाप्रयादिया अम्बो चि वीवा अरिय, देवा चि पयणप वेसि  
 पटिमहो क्का । मम सुगमं ।

अणत्तभागो ॥ ९ ॥

सुगममद्, अणप्पिदपचमग भामारिय अप्पिदकर्मगम्मि उप्पादिदपिच्छपादा  
 गहिदगदिदगणिएण पुण्णमेव अबिदप्यससकारादा ।

एव भवणवासियप्पहुडि जाव सव्वट्टिसिद्धिविमाणवासियदेवा  
 ॥ १० ॥

गररि अण्णपणा वीराण पमाणमवहारिय तेण सव्वजीवरसिमावहिय त्स्वेण

जीवाक प्रमाणन पूयक् पूयक् सय वीपरसिक्का मपहृत करके सम्भ छायाकाप्रमाण  
 एणहकप सय वीवाणसिक्का करके उच्चमे एक भागप्रमाण अपना अपना जीवप्रमाण होता  
 है एसा निश्चय कर प मात्र जीवमद् सय वीरोंके अनन्तमे भागप्रमाण है इस प्रकार  
 निश्चय करना चाहिये ।

दवगतिमे दव सय वीरोंके कितने भागप्रमाण हैं ? ॥ ८ ॥

दवगतिम भवान् ब्रह्ममाणे पूयिपीक्कापिक्काविक सम्भ मी जीव ह उनका  
 प्रतिपद्य वव इस वचनम किया है । शय एवाप सुगम है ।

देव मय वीरोंके अनन्तमे भागप्रमाण ह ॥ ९ ॥

यह सूत्र सुगम है पराचि यह अविश्रित पाँच भगोंका हटा कर विश्रित एक  
 भगमे निश्चयका उत्पद्य बनना है तथा पृथीत पृथीत गणितस ( ब्रह्मा पु ३ ) पूर्वमे ही  
 नामसंस्कार उत्पद्य हो जानेमे भी उक्त सूत्र सुगम है ।

इमी प्रश्नर भरनराभियोन मकर मत्रोपमिद्धिभिमानरामी देवों सरु भाग्य-  
 मागद्य क्रम ह ॥ १ ॥

बिनाय इतना है कि अपने अपने जीवाक प्रमाणका निश्चय कर उसस सर्व

सम्बन्धीवरासिस्त्र अणतभागत्तमदसिं माइयच्च ।

इन्द्रियाणुवादेण एइन्द्रिया सव्वजीवाण केवडिओ भागो ? ॥ ११ ॥  
सुगम ।

अणत्ता भागा ॥ १२ ॥

त वदा — सिद्ध-तमजीवेहि मध्यजीवरामिवहारिय सुद्धसलागमेत्तर्गढाणि मध्यजीवरामिं काट्ठत्थ एगमाग मोत्तण मेमबहुभागोसु गहिदसु अण एइन्द्रियपमाण होदि तेण सम्बन्धीवागमणताभागा एइन्द्रिया हेतिं ति सुत्ते उत्त ।

वादेरेइन्द्रिया तस्मेव पज्जत्ता अपज्जत्ता सव्वजीवाण केव  
डिओ भागो ? ॥ १३ ॥

सुगम ।

अमस्सेज्जत्तिभागो ॥ १४ ॥

जीवराणिका भयपरिते कर सन्ध राणिमे मय जीपरराशिक्का मनन्तरां भागव्य इतका सिठ करत्ता चाहिय ।

इन्द्रियमार्गणारु अनुमार एकन्द्रिय जीव मत्र जीवोक्क कित्तनें भागप्रमाण ह ?  
॥ ११ ॥

यह मत्र सुगम है ।

एकन्द्रिय जीव मर्ष जीवोक्क मनन्त बहुभागप्रमाण हैं ॥ १० ॥

यह हम प्रकार ह—गिय जीव जमजीवोमे मत्र जीपरराशिको भयदत्त कर मध्य शालाकाप्रमाण मर्ष जीपरराशिका गणित्त कर उनमें एक भागका छाट्ठकर मत्र बहुभागोक्क प्रहय करमपर श्रुति एवइन्द्रिय जीवोक्का प्रमाण हाता है इत्यसिय मय जीवोक्के मनन्त बहुभागप्रमाण एकन्द्रिय जीव हात है एग्या मत्रमें वदा ह ।

पादर एकन्द्रिय जीव और उनरु ही पयात्त य अपयात्त जीव मर्ष जीवोक्क कित्तनें भागप्रमाण हैं ? ॥ १३ ॥

यह मत्र सुगम है ।

उपपुक्क जीव मत्र जीवोक्के प्रमन्त्यात्तनें भागप्रमाण ह ॥ १४ ॥

तं महा— अपिदबादरपरिदियदि सञ्चञ्चनरासिमोत्रदिदे असखेज्जा सोग्रा  
आगच्छति । ते विरलिय सञ्चञ्चनरासिं रूपं पदि समखंड करिय दिग्गे इच्छियबादे-  
इदियपमाण होदि । तन्दि तिग्गि वि बादेरदिया सञ्चञ्चनरासिमसखेज्जदिमाणमेत्ता  
पि परुविदा ।

सुहुमेइदिया सञ्चजीवाण केवडिओ भागो ? ॥ १५ ॥

सुगमं ।

असंखेज्जदिभागो ॥ १६ ॥

हुदो ? सुहुमेइदियबादिरिचातसञ्चञ्चनरासिदि सञ्चञ्चनरासिदि भागे दिदे असंखेज्जा  
सोग्रा आगच्छति । त विरलिय सञ्चञ्चनरासिं समखंड करिय दिग्गे उत्त एगरूपपरिद  
मोत्तुण बहुभागोसु सुहुमेइदियप्यहुदितत्तपमाणुबलमादो ।

सुहुमेइदियपज्जत्ता मञ्चजीवाण केवडिओ भागो ? ॥ १७ ॥

सुगमं ।

इसीको स्पष्ट करते हैं— विवक्षित बाहर एकेन्द्रियोंसे सब जीवराशिको अपवर्तित  
करनेपर असंख्यात लोक भाते हैं । उमका विरल्यम कर सर्व जीवराशिको रूपके प्रति  
समखण्ड करके समपर इच्छित बाहर एकेन्द्रियोंका प्रमाण होता है । उसमें तीनों ही  
बाहर एकेन्द्रिय जीव सर्व जीवोंके असंख्यातमें मागमाण हैं ऐसा कहा गया है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव सर्व जीवोंके कितनेमें मागप्रमाण हैं ? ॥ १५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव सर्व जीवोंके असंख्यातमें मागप्रमाण हैं ? ॥ १६ ॥

क्योंकि सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंको छोड़कर समस्त जीवोंका सर्व जीवराशिकमें  
भाग देनेपर असंख्यात लोक भाते हैं । उमका विरल्यम कर सर्व जीवराशिको समखण्ड  
करके देनेपर उसम एक रूप धरित राशिको छोड़कर सोच बहुभागोंमें सूक्ष्म एकेन्द्रिय  
भादि उक्त जीवोंका प्रमाण पाया जाता है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सर्व जीवोंके कितनेमें मागप्रमाण हैं ? ॥ १७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सखेज्जा भागा ॥ १८ ॥

इदो ? सुहुमेइदियपञ्जत्तपरिचिञ्जीवेहि सम्बजीवरासिमावष्टिय तत्पुबलद  
सखेज्जरूपाणि विरलिय सम्बजीवरासि एव पटि समरुंई करिय दिण्णे तरथ एगरूव  
परिद मात्तण मेमबहुभाग सुहुमेइदियपञ्जत्तपमाणुवत्तमादो ।

सुहुमेइदियअपज्जत्ता सम्बजीवाण केवडिओ भागो ? ॥ १९ ॥

सुगम ।

सखेज्जदिभागो ॥ २० ॥

इदो ? सुहुमेइदियअपज्जत्तपरिचि सम्बजीवरासिमि भाग इदे उज्जसखेज्ज  
रूपाणि विरलिय सम्बजीवरासि ममरुंई करिय दिण्ण तरथ एगरूवस्सुवरि सुहुमेइदिय  
अपज्जत्तपमाणत्तदमणादो ।

वीइदिय तीडदिय-चउरिंदिय-पचिंदिया तस्सेव पज्जत्ता अप  
ज्जत्ता सम्बजीवाण केवडिओ भागो ? ॥ २१ ॥

सुगम ।

सुह्म एक्कन्ट्रिय पर्याप्त जीव मव जीवोके संख्यात बहुभागप्रमाण ई ॥ १८ ॥

पर्याप्तिके सुह्म एक्कन्ट्रिय पर्याप्तकोका एउदु मव्य जीवोमे सय जीवरासिका  
अपयत्तन करके उममे प्राण संख्यात रूपोका विरमन कर सय जीवरासिका समत्तर  
करके रूपक प्रति इनेपर उममे एक रूप धरित राणिको एउदु दोय बहुभागमे सुह्म  
एक्केन्ट्रिय पर्याप्त जीवोका प्रमाण पाया जाता ई ।

सुह्म एक्केन्ट्रिय अपप्याप्त जीव मव जीवोके क्कित्तने भागप्रमाण ई ॥ १९ ॥

यह एव सुगम ई ।

सुह्म एक्कन्ट्रिय अपप्याप्त जीव मव जीवोके मव्याप्तने भागप्रमाण ई ॥ २० ॥

पर्याप्तिके सुह्म एक्कन्ट्रिय अपप्याप्त जीवोका सय जीवरासिके भाग इनेपर प्राण  
द्वय संख्यात रूपोका विरमन कर सय जीवरासिका समगण्ट करके इनेपर उममे एक  
रूपके ऊपर सुह्म एक्केन्ट्रिय अपप्याप्त जीवोका प्रमाण इला जाता ई ।

ट्रीन्ट्रिय, वीन्ट्रिय, चतुगिन्ट्रिय, पंचन्ट्रिय और उनके ही पर्याप्त व अपप्याप्त  
जीव मव जीवोके क्कित्तने भागप्रमाण ई ॥ २१ ॥

यह एव सुगम ई ।



अणता भागा ॥ २२ ॥

हुदो ? पदरस्त असंखेन्वदिभागमपञ्जीवेदि सम्बजीवरासिन्दि भागे हिदे  
रूपुबलद्वस्त अणतिपचादो ।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वादरा  
सुहुमा पञ्जत्ता अपञ्जत्ता वादरवणफ्फदिकाइयपत्तेयसरीरा पञ्जत्ता  
अपञ्जत्ता तसकाइया तसकाइयपञ्जत्ता अपञ्जत्ता सच्चजीवाण  
केवडिओ भागो ? ॥ २३ ॥

सुगम ।

अणतभागो ॥ २४ ॥

हुदा ? एदेदि असंखेन्वाभोगमेत्तपमाणेदि पदरस्त असंखेन्वदिभागदि य सम्ब  
जीवरासिन्दि भागे हिदे अणतरूवाणसुबसंमादो ।

वणफ्फदिकाइया णिगोदजीवा सच्चजीवाण केवडिओ भागो ?  
॥ २५ ॥

उपर्युक्त इन्द्रियादि जीव सर्व जीवोंके अनन्त बहुभागप्रमाण हैं ॥ २२ ॥

क्योंकि जगत्तरके असंख्यातवें भागमात्र जीवोंका सब जीवराशिमें भाग  
देनेपर वहाँ उपलब्ध पति मन्त होती है ।

अपमार्गवाके अनुमात्र पृथिवीकायिक, पृथिवीकायिक पर्याप्त, पृथिवीकायिक  
अपर्याप्त; वादर पृथिवीकायिक, वादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, वादर पृथिवीकायिक  
अपर्याप्त; सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त, सूक्ष्म पृथिवीकायिक  
अपर्याप्त; इसी प्रकार नौ अपकायिक, नौ वजस्कयायिक, वादर वनस्पतिकयायिक प्रत्यङ्ग  
धरीर पर्याप्त व अपर्याप्त, तथा व्रसकायिक, व्रमकायिक पर्याप्त और व्रसकायिक  
अपर्याप्त जीव सब जीवोंके कितनवें भागप्रमाण हैं ? ॥ २३ ॥

यह एक सुगम है ।

उपर्युक्त जीव सर्व जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ २४ ॥

क्योंकि जगत्तरके असंख्यातवें भागकात्र असंख्यात भोज्यमात्रवाले रूप  
जीवोंका सब जीवराशिमें भाग देनेपर मन्त रूप लब्ध होते हैं ।

वनस्पतिकयायिक व निगाद जीव सब जीवोंके कितनवें भागप्रमाण हैं ? ॥ २५ ॥

सुगम ।

अणता भागा ॥ २६ ॥

कुदो ? अप्पिददम्बवदिरिचसम्बदम्बेहि सम्बजीवरासिमवहारिय लद्धसलागाआ मषताआ निरलिय सम्बजीवरासिं समखंडं करिय रूव पडि दिण्ण उत्त एगरूवपरिद मोत्तु बहुभागोसु समुदिदेशु अप्पिदम्बीवपमाणदसणादा ।

वादरवणप्फदिकाइया वादरणिगोदजीवा पज्जत्ता अपज्जत्ता सव्वजीवाण केवडिओ भागो ? ॥ २७ ॥

सुगम ।

असस्वेज्जदिभागो ॥ २८ ॥

कुदो ? एदेहि सम्बजीवरासिम्हि भाग हिद असंखेज्जलागपमाणुबलंमादो ।

सुहुमवणप्फदिकाइया सुहुमणिगोदजीवा सव्वजीवाण केवडिओ भागो ? ॥ २९ ॥

एह सच्च सुगम हे ।

वनस्पतिकायिक व निगोद जीव सर्व जीवोंके अनन्त बहुभागप्रमाण हैं ॥२६॥

क्योंकि विवक्षित द्रव्यसे विद्य सर्व द्रव्यों द्वारा सर्व जीवराशिको विरहित कर मध्य हुई अनन्त शब्दाकार्योका विरलम कर सर्व जीवराशिको समखण्ड कर प्रत्येक रूपके प्रति वनेपर उसमें एक रूप परित राशिको छोड़ समुचित बहुभागोंमें विवक्षित जीवोंका प्रमाण देखा जाता है ।

बादर वनस्पतिकायिक, बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त, बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त, बादर निगोद जीव, बादर निगोद जीव पर्याप्त व अपर्याप्त सर्व जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ २७ ॥

एह सच्च सुगम हे ।

उपसुक्त जीव सब जीवोंके असख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥ २८ ॥

क्योंकि इनका सब जीवराशिमें भाग वनेपर असख्यात छोड़प्रमाण छण्ड होता है ।

सूक्ष्म वनस्पतिकायिक व सूक्ष्म निगोद जीव सब जीवोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं ? ॥ २९ ॥

सुगम ।

असस्त्रेज्जा भागा ॥ ३० ॥

इदो ! अपिदद्व्यवदिरिचदव्यदि सम्बन्धीवरासिम्हि मागे हिद वर्युवसद्व  
असस्त्रेज्जासागमेतसतायाभा विरलिय सम्बन्धीवरासि समष्टं करिय दिष्ण तत्वेगत्तं  
मोष्ण बहुत्तंसेमु समुदिदेसु अपिदद्व्यवमाणुषलमादो ।

सुहुमवणफ्फदिकाइय-सुहुमणिगोदजीवपञ्जता सव्वजीवाण  
केवदिओ भागो ? ॥ ३१ ॥

सुगम ।

सस्त्रेज्जा भागा ॥ ३२ ॥

इदा ! अपिदद्व्यवदिरिचदव्येदि सम्बन्धीवरासिमवहारिय मद्दसस्त्रेज्जाइयापि  
विरलिय सम्बन्धीवरासि समष्टं करिय दिष्ण तत्वेगरूपपरिद माणुष सेसबहुमागोसु  
समुदिदेसु अपिदद्व्यवमाणुषलमादो । सुहुमवणफ्फदिकाइय मणिष्ण पुणो सुहुम  
विगोदजीवे वि पुष मणदि, एदेण वण्णदि अथा सव्वे सुहुमवणफ्फदिकाइया वण

एह सत्त सुगम हे ।

उक्त जीव सर्व जीवोंके असंख्यात बहुभागप्रमाण हैं ॥ ३० ॥

क्योंकि विवक्षित द्रव्यसे मिष्ट द्रव्योंका सब जीवराशिमै भाग दसपर बहो  
उपद्रव्य हूर असंख्यात अंशमान शक्ताकामोक्ष विरलम कर ए सर्व जीवराशिको सम  
अव्य करके देनेपर उसमें एक एकको छोड़कर समुचित बहुद्रव्यमै विवक्षित द्रव्याका  
प्रमाण पाया जाता है ।

एतन्म वनस्पतिव्यपिक्क व एतन्म निगमजीव पयाप्त सर्व जीवोंके किानेने  
भागप्रमाण हैं । ॥ ३१ ॥

उपर्युक्त जीव सर्व जीवोंके संख्यात बहुभागप्रमाण ह ॥ ३२ ॥

क्योंकि विवक्षित द्रव्यसे मिष्ट द्रव्यों द्वारा सब जीवराशिको अपहृत कर एतन्म  
हृत् संख्यात रूपोंका विरलम कर ए सर्व जीवराशिका समष्टं करके देनेपर उनमें  
एक एक धरित राशिका छोड़कर शेष लभ्युचित बहुभागामै विवक्षित द्रव्योंका प्रमाण पाया  
जाता है । एतन्म वनस्पतिकाविकोको कहकर पुनः एतन्म विगद् जीवोंको भी पूर्यद् कहने

सुहुमनिगाद्वीणा ग ह्येति चि । जदि एषं तो सुभे सुहुमनपफदिक्काइया निगादा चेवेपि पदेण वयणेण विरुज्जादि चि मभिदे ष विरुज्जे, सुहुमनिगोदा सुहुमवपफदिक्काइया चेवेपि अबटारनामावादी । के पुण ते अण्य सुहुमपिगोदा सुहुमवपफदिक्काइय मोसूण ? ग, सुहुमनिगादेसु व तदाधारसु वणपफदिक्काइयसु वि सुहुमनिगोदवीणचसमवादी । तदे सुहुमवपफदिक्काइया चेव सुहुमनिगोदवीणा ग ह्येति चि सिद्धं । सुहुमकम्मोदएण अहा वीवाण वणपफदिक्काइयादीण सुहुमच होदि तहा निगोदनामकम्मोदएण निगोदच होदि । ण च पिगादभामकम्मोदआ पादरवपफदिपत्तेयसरीराणमत्थि अण वेसि निगोदमणा होदि चि मणिदे— म, वेसि पि आहार भाहेओवयारेण निगोदचा-

हैं इससे जाना जाता है कि सब सूत्रम धनस्पतिकायिक ही सूत्रम निगोद जीव नहीं होते ।

शुद्धा—यदि ऐसा है तो सब सूत्रम धनस्पतिकायिक निगोद ही हैं इस ध्वनिके साथ पितोष होगा ?

समाधान—उक्त ध्वनिके साथ पितोष नहीं होगा क्योंकि सूत्रम निगोद जीव सूत्रम धनस्पतिकायिक ही हैं यथा यहाँ मयधारण नहीं है ।

शुद्धा—तो फिर सूत्रम धनस्पतिकायिकोंका छाड़कर अन्य सूत्रम निगोद जीव कौनसे हैं ?

समाधान—नहीं क्योंकि सूत्रम निगोद जीवोंके समान उनके आधारभूत ( वादर ) धनस्पतिकायिकोंमें भी सूत्रम निगोद जीवत्वकी सम्भावना है । इस कारण सूत्रम धनस्पतिकायिक ही सूत्रम निगोद जीव नहीं होते यह बात सिद्ध होती है ।

शुद्धा—सूत्रम नामकर्मके उद्भवसे तिस प्रकार धनस्पतिकायिकादिक जीवोंके सूत्रमपना होता है उसी प्रकार निगोद नामकर्मके उद्भवसे निगोदत्व होता है । किन्तु वादर धनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंके निगोद नामकर्मका उद्भव नहीं है जिससे कि उनकी निगोद संज्ञा हो सके ?

समाधान—नहीं क्योंकि वादर धनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंके भी आधारमें माधेयना उपचार करमसे नियोजनके कारण विरोध नहीं है ।

विरोधादो । कथमेद जम्भेदे ? विगोदपदिद्विदान वादरणिगोदजीवा चि विदेसादा, वादरवणपफदिकाइयाणसुपरि 'विगोदा विसेमाहिया' चि मधिइवमनादो च जम्भेदे ।

सुहुमवणपफदिकाइय-सुहुमणिगोदजीवअपज्जत्ता सब्वजीवाण केवडिओ भागो ? ॥ ३३ ॥

सुमम ।

संभ्वेज्जदिभागो ॥ ३४ ॥

कुदा ? एदेहि सम्भजीवरासिन्धि मागे हिद सखेज्जरूवाणसुवसमादा । एत्थ चि सुहुमवणपफदिकाइयअप-अचेहिता पुत्तं सुहुमणिगोदअपज्जत्तानं मेदो वत्तणो । विगोदेसु जीवति विगोदमावेण वा जीवति चि विगोदजीवा एव ततो मेदो वत्तणो । विगोदा सम्भे वणपफदिकाइया चच व अण्ण, एदण अहिप्पाएण अणि चि मामामाम-सुत्ताचि द्विदाचि । कुदो ? सुहुमवणपफदिकाइयमागामामस्म तिसु चि सुत्तेसु विगोदजीव

छंका— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— निगादप्रतिष्ठित जीवोंके बाहर निगाद जीव इस प्रकार निर्देशसे तथा बाहर वनस्पतिकारिकोंके मागे निगोद जीव विशेष अर्थिक हैं इस प्रकार कहे गये सुखवचनसे भी वह जाना जाता है ।

सूक्ष्म वनस्पतिकारिक व सूक्ष्म निगोद जीव अपर्याप्त सर्व जीवोंके कितने भागप्रमाण हैं ? ॥ ३३ ॥

यह एक सुगम है ।

उक्त जीव सब जीवोंके सम्पातये भागप्रमाण हैं ॥ ३४ ॥

क्योंकि इनका सर्व जीवराशिमें भाग हमेपर सम्पात रूप प्राप्त होते हैं । यहाँ भी पहले सूक्ष्म वनस्पतिकारिक अवस्थापत्तोंसे सूक्ष्म निगोद अपर्याप्तता मेह कहना चाहिये । निगोदोंमें जो जीव हैं अथवा निगोदभावसे जो जीव हैं वे निगादजीव हैं इस प्रकार उमस मेह कहना चाहिये ।

छंका— निगोद जीव सब वनस्पतिकारिक ही हैं भाव नहीं हैं इस अभिप्रायसे कुछ मागामामसूत्र स्थित हैं क्योंकि सूक्ष्म वनस्पतिकारिक मागामामके तावों ही सूत्रोंमें निगोदजीवोंके निर्देशका अभाव है । इस छिपे वन सूत्रोंसे इन सूत्रोंके

गिरेसामावादो । तदो तेहि सुचेहि पर्येसिं सुचाण बिराहो होदि चि भगिदे अदि एव  
तो उचदेस उचण इद सुच इदं वासुचमिदि भागमणिउणा मणंतु । अ च अन्हे एत्थ  
बोणु समत्था, अत्तदोचदेसत्तादो ।

जोगाणुवादेण पचमणजोगि पचवचिजोगि-वेठव्वियकायजोगि  
वेठव्वियमिस्सकायजोगि—आहारकायजोगि—आहारमिस्सकायजोगी  
सव्वजीवाण केवडिओ भागो ? ॥ ३५ ॥

सुगमं ।

अणतो भागो ॥ ३६ ॥

कूदो ? प्देहि सच्चजीवरासिमिदि भागे हिदे अणतरूवोत्तमादो ।

कायजोगी सच्चजीवाण केवडिओ भागो ? ॥ ३७ ॥

सुगम ।

अणता भागो ॥ ३८ ॥

भिरोप होगा ?

समाधान—यदि ऐसा है तो उपदेशका प्राप्त कर यह सूत्र है और यह सूत्र  
मार्ग है' ऐसा भागमनिपुण जन कह सकते हैं । किन्तु हम यहाँ कहनेके लिये समय नहीं  
है क्योंकि हमें ऐसा उपदेश प्राप्त नहीं है ।

योगमागणाक अनुमार पांच मनायागी, पांच बचनयोगी, वैक्रियिककाययोगी,  
वैक्रियिकमिधकाययोगी, आहारककाययोगी और आहारकमिधकाययोगी जीव सब  
जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ३५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपर्युक्त जीव सब जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ ३६ ॥

क्योंकि इनका सब जीवराशिमें भाग देनेपर समान रूप प्राप्त होते हैं ।

काययोगी जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ३७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

काययोगी जीव सब जीवोंके अनन्त बहुभागप्रमाण हैं ॥ ३८ ॥

कुतो ? अपिदम्बवदिरित्तसम्बदम्बेहि सम्बजीवरासिमबहिरिन्जमाण लर्भ  
अथतसत्प्रगाभो विरलिय सम्बजीवरासि समखड करिय दिण्णे तत्तयगरूपपरिद मोत्त  
सेमबहुमागेसु समुदिदेसु कायबोगिदम्बपमाणुबलमादो ।

ओरालियकायजोगी सन्वजीवाण केवडिओ भागो ? ॥ ३९ ॥

सुगम ।

सखेज्जा भागा ॥ ४० ॥

कुतो ? अणपिदसम्बदम्बेण मन्वजीवरासिग्घि मागे हिद सखे-त्ररूपाण  
सुबलमादो ।

ओरालियमिस्सकायजोगी सन्वजीवाण केवडिओ भागो ?

॥ ४१ ॥

सुगम ।

सखेज्जदिभागो ॥ ४२ ॥

क्योंकि विवक्षित द्रव्यसे मिथ्य सब द्रव्यों द्वारा सर्व जीवराशिको अपहत  
करनेपर प्राप्त हुई अनन्त शक्त्याभावात् विरलिय कर य सर्व जीवराशिका समबन्ध  
करके होनेपर उसमें एक रूप परितको छोड़कर शेष समुचित बहुभागोंमें काययोगी  
द्रव्यका प्रमात्र पाया जाता है ।

औदारिककाययोगी बीच सर्व जीवोंके कितनेमें भागप्रमाण हैं ? ॥ ३९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

औदारिककाययोगी बीच सब जीवोंके सरुयात् बहुभागप्रमाण हैं ॥ ४० ॥

क्योंकि अविवक्षित सब द्रव्यका सब जीवराशिकोंमें भाग होनेपर सम्बन्ध रूप  
उपसम्पन्न होते हैं ।

औदारिकमिभ्रययोगी बीच सब जीवोंके कितनेमें भागप्रमाण हैं ? ॥ ४१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

औदारिकमिभ्रययोगी बीच सब जीवोंके संगुपात्तमें भागप्रमाण हैं ॥ ४२ ॥

कुदा ? अपिदद्वेण मन्वरागिमिदि भाग हिद संखेज्जस्वाणमुपलमादो ।

कम्मइयकायजोगी सव्वजीवाण केवडिओ भागो ? ॥ ४३ ॥

सुगम ।

अमग्जेज्जदिभागो ॥ ४४ ॥

कुदा ? अपिदद्वेण मन्वजीवगमिदि भाग हिद अमग्ज्जस्वोपलमादा ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेत्ता पुरिमवेत्ता अवगत्त्वेदा सव्वजीवाण

केवडिओ भागो ? ॥ ४५ ॥

सुगम ।

अणत्तो भागो ॥ ४६ ॥

कुदा ? अपिदद्वेदि मन्वजीवगमिदि भाग हिद अणत्तोपलमादा ।

णत्तुमयवेत्ता सव्वजीवाण केवडिओ भागो ? ॥ ४७ ॥

पर्योकि विचक्षित प्रप्यका मप जीवराशिमे भाग इमेपर संख्यात रूप उपसम्प  
हेतु है ।

फारमणकयपयागा जीव मप जीवोके फित्तने भागप्रमाण है ? ॥ ४३ ॥

एद मूत्र सुगम है ।

कामणकयपयोगी जीव मप जीवोके असम्प्यातने भागप्रमाण है ॥ ४४ ॥

पर्योकि विचक्षित प्रप्यका मप जीवराशिमे भाग इमेपर असम्प्यात रूप उपसम्प  
हात है ।

बदमार्माणान् अनुमाग स्त्रीवदी, पुरुषवेदी और अपगतवदी जीव मर्ष जीवोके  
फित्तने भागप्रमाण है ? ॥ ४५ ॥

एद मूत्र सुगम है ।

तपपुक्त जीव सर्व जीवोके अनन्तने भागप्रमाण है ॥ ४६ ॥

पर्योकि विचक्षित प्रप्योका मप जीवराशिमे भाग इमेपर अनन्त रूप उपसम्प  
हात है ।

नपुमरुवदी जीव सर्व जीवोके फित्तने भागप्रमाण है ? ॥ ४७ ॥



सुगमं ।

अणता भागा ॥ ४८ ॥

कुत्रो ? अणत्पिहसम्बन्धेण सम्बन्धीयरासिम्हि माम हिदे अणत्कूबोबलमादो ।

कसायाणुवादेण कोधकसाई माणकसाई मायकसाई सब्ब

जीवाण केवडिओ भागो ? ॥ ४९ ॥

सुगम ।

चदुब्भागो देसूणा ॥ ५० ॥

कुत्रो ? एदहि सम्बन्धीयरासिम्हि भागे हिदे मादिरेयषचारिकूबोबलमादो ।

लोमकसाई मब्बजीवाण केवडिओ भागो ? ॥ ५१ ॥

सुगम ।

चदुब्भागो सादिरेगो ॥ ५२ ॥

यह सृष्ट सुगम है ।

नपुंसकप्रेदी बीब सब बीबोंके अनन्त बहुभागप्रमाण हैं ॥ ४८ ॥

क्योंकि भविष्यकाल सर्व द्रव्यका सर्व बीबराशिमें भाग देनेपर अनन्त रूप उपलब्ध होते हैं ।

कषापमार्गणाक अनुमार श्रमकषापपी, मानकषापपी और मापाकषापपी बीब सब बीबोंके क्लृप्तनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ४९ ॥

यह सृष्ट सुगम है ।

उपर्युक्त बीब सब बीबोंके कुछ कम एक चतुर्थ भागप्रमाण हैं ॥ ५० ॥

क्योंकि, इनका सर्व बीबराशिमें भाग देनेपर साधिक बार रूप उपलब्ध होते हैं ।

लोमकषापपी बीब सब बीबोंके क्लृप्तनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ५१ ॥

यह सृष्ट सुगम है ।

लोमकषापपी बीब सब बीबोंके साधिक चतुर्थ भागप्रमाण हैं ॥ ५२ ॥

कुदो ? सामकमाइद्व्वज सव्वजीवरामिइि भाग इिद किंणुणचचारिरूपो  
बलमादो ।

अकसाई मव्वजीवाण केवडिओ भागो ? ॥ ५३ ॥

सुगम ।

अणतो भागो ॥ ५४ ॥

इइा ? अणमइद्व्वज सव्वजीवरामिइि भागे इिद अणतम्बोबलमादो ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि सुदअण्णाणी सव्वजीवाण केव  
डिओ भागो ? ॥ ५५ ॥

सुगम ।

अणता भागा ॥ ५६ ॥

इइा ? अणपिदण्णाणि सव्वजीवरामिइि भाग इिद अणतम्बोबलमादो ।

क्योंकि सामकपायी द्रव्यका सव्व जीवतानिमें भागहनपर कुछ कम बार रूप  
प्राप्त होते हैं ।

अकपायी जीव सव्व जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण ह ? ॥ ५३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अकपायी जीव सव्व जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण ह ॥ ५४ ॥

क्योंकि अकपायी द्रव्यका सव्व जीवतानिमें भाग हनपर अनन्त रूप प्राप्त  
होते हैं ।

ज्ञानभाग्यारु अनुमार मतिअज्ञानी और भुतअज्ञानी जीव सव्व जीवोंके कितनेवें  
भागप्रमाण ह ? ॥ ५५ ॥

यह सूत्र सुगम ह ।

मतिअज्ञानी और भुतअज्ञानी जीव सव्व जीवोंके अनन्त षट्भागप्रमाण हैं  
॥ ५६ ॥

क्योंकि, अविपरिहित ज्ञानवाले जीवोंका सव्व जीवतानिमें भाग हनेपर अनन्त  
रूप उपसम्पन्न होते हैं ।

विभगणाणी आभिणिघोदियणाणी सुदणाणी ओहिणाणी मण  
पज्जवणाणी केवलणाणी सब्जजीवाण केवडिओ भागो ? ॥ ५७ ॥

सुगम ।

अणत्तभागो ॥ ५८ ॥

इदो ! अप्पिद्वेषेण सम्भवीवरासिम्हि भागे हिदे अर्पत्तरोबलमादो ।

सजमाणुवादेण सजदा सामाइयछेदोवट्टावणसुद्धिसंजदा परि  
हारसुद्धिमजदा सुहुमसांपराइयसुद्धिसजदा जहाक्खादविहारसुद्धि  
सजदा संजदासजदा सब्जजीवाण केवडिओ भागो ? ॥ ५९ ॥

सुगम ।

अणत्तभागो ॥ ६० ॥

इदो ! एवेहि सम्भवीवरासिम्हि भागे हिदे अणत्तरोबलमादो ।

असजदा सब्जजीवाण केवडिओ भागो ? ॥ ६१ ॥

विभंगजानी, आमिनिबोधिकजानी, भुत्तजानी, अवाचिजानी, मनापर्ययजानी  
और केवलजानी बीच सब बीबोंके कित्तनेवें भागप्रमाण है ? ॥ ५७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपर्युक्त बीच सब बीबोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ ५८ ॥

क्योंकि बिजसित प्रथमका सब बीयटाशिमै भाग देनेपर अनन्त रूप उपलब्ध  
होता है ।

सयममार्गशाके अनुसार सयत्त, सामायिकछेदापस्थापनाशुद्धिसयत्त, परिहार  
शुद्धिसयत्त, सुत्तमसाम्परायिकशुद्धिसयत्त, यथाक्यातविहारशुद्धिसयत्त और सयत्तासंमत  
बीच सब बीबोंके कित्तनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ५९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपर्युक्त बीच सब बीबोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ ६० ॥

क्योंकि इसका सर्व बीयटाशिमै भाग देनेपर अनन्त रूप प्राप्त होता है ।

असंमत बीच सब बीबोंके कित्तनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ६१ ॥

सुगम ।

अणता भागा ॥ ६२ ॥

इदो ! अणप्पिदसुवममदेदि सम्बजीवरासिम्हि माग हिदे अणतरूवोबलमादा ।

दसगणुवादेण चक्खुदसणी ओहिदसणी केवलदसणी सब्ब

जीवाण केवडिओ भागो ? ॥ ६३ ॥

सुगम ।

अणतभागो ॥ ६४ ॥

इदो ! एदेहि सम्बजीवरासिमवहिरद अणतभागाबलमादो ।

अचक्खुदसणी सब्बजीवाण केवडिओ भागो ? ॥ ६५ ॥

सुगम ।

अणता भागा ॥ ६६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयत जीव सब जीवोंके अनन्त बहुभागप्रमाण हैं ॥ ६२ ॥

क्योंकि, अविश्रित सर्व संयतोंका सब जीपटाणिमै भाग होनेपर अगस्त रूप प्राप्त होता है ।

दशममार्गानुसार अक्षुदर्शनी, अविदशनी और अक्षुदर्शनी जीव सब जीवोंके कितनेवै भागप्रमाण हैं ? ॥ ६३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपयुक्त जीव सर्व जीवोंके अनन्तवै भागप्रमाण हैं ॥ ६४ ॥

क्योंकि इनके द्वारा सब जीपटाणिका सपहस करनपर अगस्तका भाग उप प्राप्त होता है ।

अक्षुदर्शनी जीव सब जीवोंके कितनेवै भागप्रमाण हैं ? ॥ ६५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अक्षुदर्शनी जीव सब जीवोंके अनन्त बहुभागप्रमाण हैं ॥ ६६ ॥

इन्द्रो ! अथरुसुवमयीहि सम्भरासिम्हि भागे हिदे एगरुबस्म अन्तिममागमिद  
एगरुवावसमादो ।

लेस्मानुवादेण किण्हलेस्सिया सब्वजीवाण केवडिओ भागो ?  
॥ ६७ ॥

सुगमं ।

तिभागो सादिरेगो ॥ ६८ ॥

इन्द्रो ! किण्हलेस्सिएहि सम्भजीवरासिम्मि भागे हिदे किण्हवतिम्पिरुव  
वसमादो ।

णीललेस्सिया काउलेस्सिया सब्वजीवाण केवडिओ भागो ?  
॥ ६९ ॥

सुगमं ।

तिभागो देसूणो ॥ ७० ॥

क्योंकि सबसुवमयीके सब जीवराशिमें भाग देनेपर एक रूपक अन्तमें  
भागसे साहित एक रूप उपलभ्य होता है ।

सेष्पामार्गिकाके अनुसार कृष्णसेष्पाबाल जीव सब जीवोंके कितनेमें भागप्रमाण  
है ? ॥ ६७ ॥

यह सब सुगम है ।

कृष्णसेष्पाबाल जीव सब जीवोंके साधिक एक त्रिभागप्रमाण है ? ॥ ६८ ॥

क्योंकि, कृष्णसेष्पाबालके जीवोंका सब जीवराशिमें भाग देनेपर कुछ कम  
तीन रूप उपलभ्य होते हैं ।

नीलसेष्पाबाले और कापातसेष्पाबाल जीव सब जीवोंके कितनेमें भागप्रमाण  
है ? ॥ ६९ ॥

यह सब सुगम है ।

नील और कापोतसेष्पाबाले जीव सब जीवोंके कुछ कम एक त्रिभागप्रमाण  
है ? ॥ ७० ॥

कृदो ! एदेहि सव्यभीषरासिम्हि मागे हिदे साक्षिरयतिष्णिस्बोबलमादो ।

तेउलेस्सिया पम्मलेस्सिया सुक्कलेस्सिया सव्वजीवाण केवडिओ  
भागो ? ॥ ७१ ॥

सुगम ।

अणत्तभागो ॥ ७२ ॥

कृदा ! एदेहि सव्यभीषरासिम्हि माग हिद अणत्तरूबाबलंमादा ।

भवियाणुवादेण भवमिद्विया सव्वजीवाण केवडिओ भागो ?

॥ ७३ ॥

सुगम ।

अणत्ता भागा ॥ ७४ ॥

कृदो ! भवमिद्विएहि सव्यभीषरासिम्हि माग हिद एगस्सस्म अणत्तभागमहिद  
एगरूबाबलंमादो ।

क्योंकि इन जीवोंका सब जीवराशिमें माग इनपर साधिक तीस रूप उपलब्ध  
है ।

सज्जानेप्याराम, पघलेप्यावाने और शुद्धनेप्यावाल जीव सब जीवोंके कितने  
भागप्रमाण हैं ? ॥ ७१ ॥

यह सब सुगम है ।

उपयुक्त जीव सब जीवोंके अनन्तमें मागप्रमाण है ॥ ७२ ॥

क्योंकि इन जीवोंका सब जीवराशिमें माग इनपर अनन्त रूप मात्र है ।

भय्यमार्गणाक अनुसार भय्यमिद्विर जीव सब जीवोंके कितने  
भागप्रमाण हैं ? ॥ ७३ ॥

यह सब सुगम है ।

भय्यमिद्विर जीव सब जीवोंके अनन्त बहुतभागप्रमाण हैं ॥ ७४ ॥

क्योंकि भय्यमिद्विर जीवोंका सब जीवराशिमें माग इनपर एक रूपके  
अनन्तमें माग सहित एक रूप उपलब्ध होता है ।

अभवसिद्धिया सव्वजीवाणं केवडिओ' भागो ? ॥ ७५ ॥

सुगम ।

अणत्तभागो ॥ ७६ ॥

कुओ ? पदेहि सम्बन्धीवरासिम्हि मागे हिदे अणत्तरोवत्तमादा ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठी स्वइयसम्माइट्ठी वेदगसम्माइट्ठी उव

समसम्माइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी सव्वजीवाण केवडिओ भागो ? ॥ ७७ ॥

सुगम ।

अणत्तो भागो ॥ ७८ ॥

( कुओ ? पदेहि सम्बन्धीवरासिम्हि मागे हिदे अणत्तरोवत्तमादा ।

मिच्छाइट्ठी सव्वजीवाण केवडिओ भागो ? ॥ ७९ ॥

अमप्यसिद्धिक्क जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ७५ ॥

यह सब सुगम है ।

अमप्यसिद्धिक्क जीव सब जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ ७६ ॥

क्योंकि इतना सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर अनन्त रूप उपलब्ध होते हैं ।

सम्पत्त्वमार्गणाके अनुसार सम्यग्दृष्टि, स्थायिकसम्यग्दृष्टि, बेदकसम्यग्दृष्टि,

उपसमसम्यग्दृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्निध्याइष्टि जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ७७ ॥

यह सब सुगम है ।

उपर्युक्त जीव सर्व जीवोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ ७८ ॥

( क्योंकि इतना सर्व जीवराशिमें भाग देनेपर अनन्त रूप उपलब्ध होते हैं ।

निध्याइष्टि जीव सब जीवोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ७९ ॥

सुगम ।

अणत्ता भागा ॥ ८० ॥ )

कुदो ? मिच्छाद्विदि फलगुण्णिसम्भजीवरासिम्हि भागे हिदे एगरूबस्स जर्जत  
भागसहिदएगरूबोषसमादो ।

सण्णियाणुवादेण सण्णी सब्वजीवाण केवडिओ भागो ? ॥ ८१ ॥

सुगम ।

अणत्तभागो ॥ ८२ ॥

कुदो ? एदेहि फलगुण्णिसम्भजीवरासिम्हि भागे हिदे अणत्तरूबोषसमादो ।

असण्णी सब्वजीवाण केवडिओ भागो ? ॥ ८३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि बीज सब बीबोंके अनन्त बहुभागप्रमाण हैं ॥ ८० ॥ )

क्योंकि मिथ्यादृष्टियोंका फलगुण्णित सर्व बीबराशिमें भाग देनेपर एक रूपके  
अनन्त भागसे सहित एक रूप उपलब्ध होता है ।

विशेषार्थ—यहाँ जो सर्व बीबराशिके फलसे गुणित करनेके मिथ्यादृष्टि राशिसे  
भाजित करनेको कहा गया है उससे टीकाकारका अभिप्राय उक्त प्रक्रियाके वैराशिक  
रीतिसे व्यक्त करनेका रहा जान पड़ता है । यदि मिथ्यादृष्टि राशि एक दाबाका प्रमाण  
है तो सर्व बीबराशि कितने दाबाका प्रमाण होगी ? इस वैराशिकके अनुसार सर्व  
बीब राशिमें फल राशि रूप एकका गुण्य और प्रमाण राशि रूप मिथ्यादृष्टि राशिसे  
भाग देनेपर उक्त मज्जनफल प्राप्त होगा ।

सद्धिमार्गानुसार सही बीब सब बीबोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ८१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सही बीब सब बीबोंके अनन्तवें भागप्रमाण हैं ॥ ८२ ॥

क्योंकि इनका फलगुण्णित सर्व बीबराशिमें भाग देनेपर अनन्त रूप उपलब्ध  
होते हैं ।

असही बीब सब बीबोंके कितनेवें भागप्रमाण हैं ? ॥ ८३ ॥



सुगम ।

अणता भागा ॥ ८४ ॥

कुरो ? असखीहि फल्लगुण्णिसम्भवीचरासिन्धि भागे हिदे सगमपंतमागसहिद  
एयससाणोवसंमादो ।

आहाराणुवादेण आहारा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ?  
॥ ८५ ॥

सुगम ।

असखेज्जा भागा ॥ ८६ ॥

कुरो ? एदेहि फल्लगुण्णिसम्भवीचरासिन्धि भागे हिदे सगमपंतमागसहिद  
एयससाणोवसंमादो ।

अणाहारा सव्वजीवाणं केवडिओ भागो ? ॥ ८७ ॥

यह एक सुगम है ।

असखी जीव सब जीवोंके अनन्त बहुभागप्रमाण हैं ॥ ८४ ॥

क्योंकि, असखी जीवोंका फल्लगुण्णित सब जीवराशिमें भाग देनेपर अपने भ्रमण  
भाग सहित एक घण्टाका उपलब्ध होती है ।

आहारमार्गणके अनुसार आहारक जीव सब जीवोंके कितनेके भागप्रमाण हैं ?  
॥ ८५ ॥

यह एक सुगम है ।

आहारक जीव सब जीवोंके असंख्यात बहुभागप्रमाण हैं ॥ ८६ ॥

क्योंकि इनका फल्लगुण्णित सब जीवराशिमें भाग देनेपर अपने असंख्यातके  
भाग सहित एक घण्टाका उपलब्ध होती है ।

अनाहारक जीव सब जीवोंके कितनेके भागप्रमाण हैं ? ॥ ८७ ॥

सुगम ।

असंखेज्जदिभागो ॥ ८८ ॥

इदो ! एदेहि सम्बखीबरासिग्गि भागे दिद असंखेज्जससागोबलमादो ।

एव भागामागानुगमो सि समस्तमणिभोगदार ।

यह छत्र सुगम है ।

अनाहारक खीब सब खीबोंके असंख्यातबे भागप्रमाण हैं ॥ ८८ ॥

क्योंकि इसका सबे खीबराशिमें भाग देनेपर असंख्यात घासाकारे उपलक्षण होती हैं ।

इस प्रकार भागामागानुगम धनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

## अप्यावहुगाणुगमो

अप्यावहुगाणुगमेण गदियाणुवादेण पचगदीओ समासेण ॥१॥

अप्यावहुगण्विरेसो सेसापिओगहारपडिसेहफलो । गदिगिरेसो सेसमग्गण्डुावपडि  
सेहफलो । मई सामम्भेण एमविहा । सा चेव सिद्धगई (असिद्धगई) चेदि दुविहा । अहवा  
इवगई अदेवगई सिद्धगई चेदि तिबिहा । अहवा गिरपयई तिरिक्खगई मणुसगई देवगई  
चेदि चठम्बिहा । अहवा सिद्धगईए सह पंचविहा । एव गइममासो अणेयमेयमिम्भो ।  
एएय समासेण पंचगदीओ आओ एएय अप्यावहुगं मजामि पि मणिइ होदि ।

सव्वत्योवा मणुसा ॥ २ ॥

सव्वसहो अप्पिइपंचगइजीवावेक्खो । तेसु पचगइजीवेसु मणुस्ता चेव बावा पि  
ममिइ होदि । इदो ? एविअंगुसपइमवग्गमूलेण तस्सेव एदिमवग्गमूसग्गमत्थेण  
पिक्खिअग्गसेदिभेएप्यमाजपादो ।

णेरइया असस्सेज्जगुणा ॥ ३ ॥

अएववहुत्वाणुगमस गतिमाणंणाकं अनुसारं ससपसं ओ पांच गतियां ई उअंमे  
अएववहुत्वाको कहते ई ॥ १ ॥

अएववहुत्वा विवेकाका एअं शेष अनुयोगद्वारोंका प्रतिपत्त करणा है । गति  
विवेका शेष मांशंणाओंके प्रतिपत्तके छिये है । गति सामान्यरूपसे एक प्रकार है वही  
गति सिद्धगति और ( असिद्धगति ) इअ तरह हो प्रकार है । अथवा देवगति अरु-  
वति और सिद्धगति इस तरह तीन प्रकार है । अथवा मरुगति तिर्यग्गति मनुज  
गति और देवगति इस तरह चार प्रकार है । अथवा सिद्धगतिके साथ पांच प्रकार है ।  
इअ प्रकार गतिसमास अनेक मंदोंसे विअ है । उअमें संक्षेपसे आ पांच गतियां ई उअंमे  
अएववहुत्वाको कहते ई यह एक कथनका ममिमाय है ।

मनुप्यं सव्वं स्तोकं ई ॥ २ ॥

एएयं एअं विअसित पांच गतियोंकं जीवोंको मपेक्षा करता है । उन पांच गति  
योंकं जीवोंमें मनुप्य ही स्तोका ई यह कृअका फलितार्थ है क्योंकि ये सूर्यगुणके  
तृतीय वर्गमूअसे गुणित उअके ही प्रथम वर्गमूअसे अविअत अगधेजीममाज ई ।

नारथी जीअ मनुप्योसि अंसंस्पाठगुणे ई ॥ ३ ॥

गुणगारा असखन्त्राणि सूचित्रं गुणाणि पदरगुलस्स अमंस्वज्जदिभागमत्ताणि ।  
 कुदो ? मशुमप्रवहारकालगुणिदभेरइयविकर्षंमसूचिपमाणत्तादो । कचमेदस्स आगमो ?  
 पमाणरासिणोवह्निदफलगुणिदिच्छादा ।

देवा असस्वेज्जगुणा ॥ ४ ॥

एत्य गुणगारा असंखे-त्राणि सद्धिपदमवग्गमूत्ताणि । कुदो ? येरइयविकर्षंम  
 सूचिगुणिदभेअवहारकालेण मज्जिदवगसद्धिपमाणत्तादो ।

मिद्धा अणत्तगुणा ॥ ५ ॥

कुदा ? देवोवह्निदसिद्धेसु अणत्तसलागाबलंमादा ।

तिरिक्खा अणत्तगुणा ॥ ६ ॥

कुदा ? सिद्धिदि आबद्धिदतिरिक्खसु मीववग्गमूत्तादा सिद्धिहिता च अणत्तगुण  
 सत्तगावत्तादा । एदाओ पुण उदगुणगारमलागाआ भवसिद्धिपाणमणत्तमागा । कुदो ?  
 तिरिक्खेसु पदरस्म अमंस्वज्जदिभागमेचमीवपकखे केद भवमिद्धियरासिपमाणुप्पत्तीदो ।

यहां गुणकार प्रतरंगुलके असख्यातयें मगमात्र असत्पात सुख्यगुल हैं,  
 क्योंकि ये मनुष्योंके अवहारकालसे गुणित नारकियोंकी विष्कम्भसूची प्रमाण हैं ।

शुद्ध—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि एतदराशिसे गुणित इच्छाराशिको प्रमाणराशिस अपवर्तित  
 करनेपर उक्त प्रमाण पाया जाता है ।

नारकियोंमें द्ब असत्पातगुण हैं ॥ ४ ॥

यहां गुणकार असंख्यात भेणी प्रथम वगमूत्त ह क्योंकि ये नारकियोंकी  
 विष्कम्भसूचीस गुणित इपमवहारकालस प्राकृत जगभेणीप्रमाण हैं ।

द्वौस मिद्ध अनन्तगुण हैं ॥ ५ ॥

क्योंकि इधौसे सिद्धराशिच अपवर्तित करनेपर अनन्त दासाकार्यें उपलब्ध  
 होती हैं ।

सिद्धोंमें त्रिषुच असत्पातगुण हैं ॥ ६ ॥

क्योंकि सिद्धोंमें त्रिषुचोंके अपवर्तित करनेपर मीवगणिक वगमूत्त और सिद्धोंमें  
 भी अमन्तगुणी दासाकार्यें उपलब्ध होती हैं । किन्तु ये सख्य गुणकारणमाकार्यें मध्य  
 सिद्धिकोंके अनन्तयें प्रायमात्र होती हैं । क्योंकि त्रिषुचोंमें जगप्रतरक अमंस्वपातयें प्राग  
 मात्र मीवोका प्रत्य करनपर मध्यसिद्धिकराशिका प्रमाण उत्पन्न होता है ।

अट्ट गदीओ समासेण ॥ ७ ॥

ताओ खेव गदीओ मणुस्मिणीओ मणुस्मा गेरहया तिरिक्खा पंचिदियतिरिक्ख  
बोभिणीओ देवा देवीओ सिद्धा चि अट्ट इवति । तासिमप्पात्तुग मज्जामि चि बुच होदि ।

सञ्चत्योवा मणुस्मिणीओ ॥ ८ ॥

अट्टइ मइपं मन्हे मणुस्मिणीओ बोवाओ । कुदो ? सखेज्जपमामत्ताओ ।

मणुस्सा असंखेज्जगुणा ॥ ९ ॥

एत्थ गुणगतो सेवीए असंखेज्जदिमागो असंखेज्जामि सेद्धिपट्टमपमामूत्तमि ।  
कुदो ? मणुस्सअवहारकालगुणितमणुस्मिणीहि आवद्धिदग्गमेद्धिपमामत्ताओ ।

गेरहया असंखेज्जगुणा ॥ १० ॥

एत्थ गुणमारपमाथ पुष्पं पन्निदमिदि ( ७ ) पुष्पो बुच्छदे ।

पंचिदियतिरिक्खजोणिणीओ असंखेज्जगुणाओ ॥ ११ ॥

सखेपसे गतिपां जाठ हैं ॥ ७ ॥

व ही गतिपां मनुष्यनी मनुष्य नारक तिर्यक पंचन्द्रिय तिर्यक बोनिमती  
देव देविपां और सिद्ध इस प्रकार जाठ होती हैं । उनके असंखेज्जगुणा कहते हैं यह  
सुखका अभिप्राय है ।

मनुष्यनी सबसे स्ताक हैं ॥ ८ ॥

जाठ गतिपांके मध्यमें मनुष्यनी स्तोका हैं क्योंकि, व सुख्यात प्रमाचबाओ हैं ।

मनुष्यनिपांसे मनुष्य असंख्यातगुणे हैं ॥ ९ ॥

यहां गुणकार अपभेदीके असंख्यातके भागमात्र असंख्यात अगभेदीप्रथमवर्गमूख  
हैं क्योंकि वे मनुष्यअवहारकालसे गुणित मनुष्यनिपांसे अपवर्तित अगभेदीप्रमाण हैं ।

मनुष्योसे नारकी असंख्यातगुणे हैं ॥ १ ॥

यहां गुणकारका प्रमाण पूर्वमें कहा जा चुका है इसलिये यहाँ उसे फिरसे  
( नहीं ) कहते ।

नारकीपांसे पंचेन्द्रिय बोनिमती तिर्यक असंख्यातगुणे हैं ॥ ११ ॥



द्विदियाणुवादेण सञ्चत्थोवा पचिंदिया ॥ १६ ॥

सुदो ! पञ्चहर्मिदियाण सुबोवसमोवसलीए सुहु दुल्लमचादा ।

चउरिंदिया विसेसाहिया ॥ १७ ॥

सुदो ! पञ्चहर्मिदियाण सामग्गीदा चउरिंदियाण सामग्गीए अइसुलमचादो ।

एएथ विसेसो पदरस्म असखेज्जदिमागो । तस्म का पडिमागो ! पदरगुल्लस्म असखेज्जदिमागो पडिमागो । पचिंदियरासिमावसियाए असखेज्जदिमागेष माग विदे विसेसो आगच्छदि । त पचिंदियसु पचिख चउरिंदिया होति । एचित्रो चेष विमत्ता होदि चि कप गण्णद ! आहरियपरपरागदुवदेमादा ।

तीहदिया विसेसाहिया ॥ १८ ॥

सुदो ! चउरिंदियाण सामग्गीदा तिण्हर्मिदियाण सामग्गीए अइसुलमचादो ।

एएथ विमत्ता चउरिंदियाण अमंखेज्जदिमागो । का पडिमागो ! आवसियाए

इन्द्रियमार्गणाक अनुमार पंचन्द्रिय बीज सबमें स्ताक ई ॥ १६ ॥

क्योंकि पाँचों इन्द्रियाके क्षयोपशमकी उपलक्षि मतिहाय कुर्त्तम है ।

पंचेन्द्रियोंसे चतुरिन्द्रिय बीज विशेष अधिक हैं ॥ १७ ॥

क्योंकि पाँच इन्द्रियोंकी सामग्रीस चार इन्द्रियोंकी सामग्री मति सुलभ है ।

यहाँ विशेषका प्रमाण उपप्रतरका मसंख्यातर्वा माग है ।

संज्ञा—उसका प्रतिभाग क्या है ?

समाधान—प्रतरांगुल्लका मसंख्यातर्वा माग प्रतिभाग है ।

पंचेन्द्रियरासिको भावलीक मसंख्यातर्वा मागस माशित करकेपर विशेषका प्रमाण जाता है । उसे पंचन्द्रियोंमें मित्राणपर चतुरिन्द्रिय बीजोंका प्रमाण होता है ।

संज्ञा—इतना ही विशेष है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यह जाचार्यपरम्परागत उपदेशसे जाना जाता है ।

चतुरिन्द्रियोंसे त्रीन्द्रिय बीज विद्यत अधिक हैं ॥ १८ ॥

क्योंकि, चार इन्द्रियोंकी सामग्रीसे तीन इन्द्रियोंकी सामग्री मति सुलभ है ।

यहाँ विशेष चतुरिन्द्रिय बीजोंके मसंख्यातर्वा मागप्रमाण है ।

संज्ञा—उसका प्रतिभाग क्या है ?

असंखेज्जदिमामो ।

### श्रीद्विदिया विसेसाहिया ॥ १९ ॥

कुदो ? तिण्हमिदियाण सामग्गीदो दाण्हमिदियाण सामग्गीए पाएणुबलमादो । एत्थ विसेसपमान तीद्विदियाणमसंखेज्जदिमामो । तेसि को पदिमामो ? आबसियाए असंखेज्जदिमामो ।

### अणिदिया अणतगुणा ॥ २० ॥

कुदो ? अणतादीदकालसाचिदा होदून वपमदिरिचचादो । एत्थ गुणगारो अमवसिद्विएहि अणतगुणो । कुदो ? पद्विदियदम्भोवट्टिदज्जमिदियपमाणचादो ।

### एहदिया अणतगुणा ॥ २१ ॥

कुदो ? एद्विदियतबलद्विकारपान बहणुबलमादो । एत्थ गुणगारो अमवसिद्विएहितो सिद्वेहितो सम्भवीवरासिपदमवमामूल्लदो वि अणतगुणो । कुदो ? अमिदिओवट्टिदअणतमागहीनमम्भवीवरासिपमाणचादो । अण्णेण वि पयारेण

समाधान—आबलीका असंख्यातर्वा माग प्रतिमाग है ।

श्रीनिद्रयोसे शीनिद्रय जीव विज्ञेय अधिक हैं ॥ १९ ॥

क्योंकि तीन इन्द्रियोंकी सामग्रीस वा इन्द्रियोंकी सामग्री प्रायः शुद्ध है । यहाँ विशेषका प्रमाण श्रीनिद्रय जीवोंका असंख्यातर्वा माग है ।

अज्ञ—उसका प्रतिमाग क्या है ?

समाधान—आबलीका असंख्यातर्वा माग प्रतिमाग है ।

श्रीनिद्रयोसे अनिन्द्रिय जीव अनन्तगुणे हैं ॥ २० ॥

क्योंकि अनिन्द्रिय जीव अनन्त मतीत कालोंमें संश्लिष्ट होकर व्यवसे रहित हैं । यहाँ गुणकार अमम्भसिद्विक जीवोंसे अनन्तगुणा है क्योंकि, वह श्रीनिद्रय द्रव्यसे माजित अनिन्द्रिय राशिमाण है ।

एकेन्द्रिय जीव अनन्तगुणे हैं ॥ २१ ॥

क्योंकि एक इन्द्रियकी वरुणभित्ते कारण बहुत पाये जाते हैं । यहाँ गुणकार अमम्भसिद्विक सिद्ध और सर्व जीवराशिके प्रथम वगमूल्लसे श्री अनन्तगुणा है क्योंकि वह अनिन्द्रिय जीवोंसे मयवर्तित अनन्त माग हीन ( मर्याद् वगमराशिसे हीन ) सर्व



अप्याहङ्गपस्वजहृसुचरसुचं मयदि—

सञ्चत्योवा चउरिंदियपज्जता ॥ २२ ॥

हुदो ! विस्ससादो ।

पचिंदियपज्जता विसेसाहिया ॥ २३ ॥

कारणं पुम्बमपिदं । एत्थ विममो चउरिंदियाणं असंखिन्जदिमागो । अ  
पदिमागो ! आबठियाए असंखिन्जदिमागा ।

वीहंदिपज्जता विसेसाहिया ॥ २४ ॥

कारणं पुम्बमेव परुचिदं । एत्थ विसेसपमानं पचिंदियप-अचानमसखेज्जदि-  
मागो । तेसिं ह्ये पदिमामो ! आबठियाए असंखिन्जदिमागो ।

तीहंदिपज्जता विसेसाहिया ॥ २५ ॥

जीवराशिप्रमाण है । मय्य प्रकारसे भी अष्टावङ्गुलके निरूपण करनेके लिये उत्तर सूत्र  
कहते हैं—

चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीव सबमें स्तोत्र हैं ॥ २२ ॥

क्योंकि देसा स्वभावस है ।

चतुरिन्द्रिय पर्याप्तोमे पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ २३ ॥

स्वभावरूप कारण पूर्वमें ही कहा जा चुका है । यहाँ विशेषका प्रमाण चतुरिन्द्रिय  
जीवोंका असंख्यातता माग है ।

संज्ञा—इसका प्रतिभाग क्या है ?

समाधान—भाषाहीका असंख्यातता माग प्रतिभाग है ।

पंचेन्द्रिय पर्याप्तोसिं त्रीन्द्रिय पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ २४ ॥

इसका कारण पूर्वमें ही कहा जा चुका है । यहाँ विशेषका प्रमाण पंचेन्द्रिय  
पर्याप्त जीवोंका असंख्यातता माग है ?

संज्ञा—इसका प्रतिभाग क्या है ?

समाधान—भाषाहीका असंख्यातता माग इसका प्रतिभाग है ।

त्रीन्द्रिय पर्याप्तोमे त्रीन्द्रिय पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ २५ ॥

हुदो ? विस्वसादो । एतथ विमसपमाण वीरिदियपञ्जचाणमसखेन्त्रदिमागो ।  
को पडिमागा ? आबलियाए अमखेन्त्रदिमागो ।

पंचिदियअपञ्जत्ता असखेन्त्रगुणा ॥ २६ ॥

हुदा ? पात्राहियाय मीनामं बहूण समवादा । एतथ गुणगारो आबलियाए  
असखेन्त्रदिमागा । कथ पञ्चद ? आइरियपरंपरागदअविरुद्धुपदेसादो । पदरंगुलस्स  
सखेन्त्रदिमागेण अगपदरे मागे हिदे वीरिदियपञ्चपमाण होदि । तमाबलियाए  
असखेन्त्रदिमागेण गुणिदे पदरंगुलस्स असखेन्त्रदिमागपोरद्विदअगपदरपमाण  
पंचिदियअपञ्जत्तदम्न हादि ।

चत्तुरिदियअपञ्जत्ता विसेसाहिया ॥ २७ ॥

हुदा ? पात्रेण विमदुमोइदियाण बहूण समवादो । एतथ विसेसपमाण

क्योंकि येसा स्वभावस है । यहाँ चित्तपका प्रमाण हीन्द्रिय पर्याप्त जीबोंका  
असंख्यातता भाग है ।

संज्ञा—उनका प्रतिभाग क्या है ?

समाधान—भावकीका असंख्यातता भाग उनका प्रतिभाग है ।

श्रीन्द्रिय पर्याप्तोस पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीब असंख्यातगुण हैं ॥ २६ ॥

क्योंकि पापप्रभुर जीबोंकी सम्भावना बहुत है । यहाँ गुणकार भावकीका  
असंख्यातता भाग है ।

संज्ञा—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यह भावार्थपरम्परागत अविरुद्ध तपवेद्यसे जाना जाता है ।

प्रतरंगुलके संख्यातता भागसे अगप्रतरक मात्रित करनेपर हीन्द्रिय पर्याप्त  
जीबोंका प्रमाण होता है । उसे भावकीके असंख्यातता भागसे गुणित करनेपर प्रतरां  
गुलके असंख्यातता भागसे अपवर्तित अगप्रतरप्रमाण पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीबोंका द्रष्टव्य  
होता है ।

पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोस चत्तुरिन्द्रिय अपर्याप्त जीब विलेप अधिक हैं ॥ २७ ॥

क्योंकि पापसे नष्ट है श्रोत्र इन्द्रिय विमकी येसे जीब बहुत सम्भव हैं । यहाँ

पश्चिदियत्रपञ्चचापमसखेन्द्रदिमागो । को पडिमागो ? आबठियाए असंखेन्द्रदिमागो ।

तीईदियअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ २८ ॥

कुरा ! पावभरेण बहुभारं चर्चित्तदियामावाहो । एत्थ विसेसपमाण चठरिदिय  
अपञ्चचापमसखेन्द्रदिमागो । को पडिमागो ? आबठियाए असंखेन्द्रदिमागो ।

वीईदियअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ २९ ॥

कारसं ! पावेण जहुपाश्चिदियाण बहुमाण संभवाहो । एत्थ विसेसपमाण  
तीईदियअपज्जत्तापमसखेन्द्रदिमागो । को पडिमागो ? आबठियाए असंखेन्द्रदिमागो ।

अणिदिया अणतगुणा ॥ ३० ॥

कुरा ! अणतकालसंभवा होइए वपविरहिदवादा । एत्थ गुणगारा पुण  
पइविदो ।

विशेषका प्रमाण पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका असंख्याततां भाग है ।

श्लोक—उक्तका प्रतिभाग क्या है ?

समाधान—माबछीका असंख्याततां भाग प्रतिभाग है ।

चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तोसि त्रीन्द्रिय अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ २८ ॥

क्योंकि पापके मारसे बहुत जीवोंके चतु रन्द्रियका अभाव है । यहाँ विशेषका  
प्रमाण चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका असंख्याततां भाग है ।

श्लोक—उक्तका प्रतिभाग क्या है ?

समाधान—व्यवहारीका असंख्याततां भाग प्रतिभाग है ।

त्रीन्द्रिय अपर्याप्तोसि द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ २९ ॥

क्योंकि पापके शिकारी प्राण रन्द्रिय लघु है ऐसे जीव बहुत सम्भव हैं । यहाँ  
विशेषका प्रमाण त्रीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका असंख्याततां भाग है ।

श्लोक—उक्तका प्रतिभाग क्या है ?

समाधान—माबछीका असंख्याततां भाग प्रतिभाग है ।

द्वीन्द्रिय अपर्याप्तोसि अनिन्द्रिय जीव अनन्तगुण हैं ॥ ३० ॥

क्योंकि वे अनन्त कालमें संवित होकर व्यपसे रहित हैं । यहाँ गुणकार  
पूर्वप्रकृत है ।

वादरेहृदियपञ्जत्ता अणत्तगुणा ॥ ३१ ॥

इदा ! सम्भजीवाणमसंखेज्जदिमागत्तादो ।

वादरेहृदियअपञ्जत्ता असखेज्जगुणा ॥ ३२ ॥

कुदो ! अपञ्जत्तुप्पत्तिपाभागमसुहपरिणामाण बहुत्तादो । एत्थ गुणगतो असंखेज्जा लोगा । क्खमेव क्खरेदे ! माहरियपरपरागदअभिरुद्धीवदेत्तादो ।

वादरेहृदिया विसेसाहिया ॥ ३३ ॥

केत्थियो विसेसो ? वादरेहृदियपञ्जत्तमत्तो ।

सुहुमेहृदियअपञ्जत्ता असखेज्जगुणा ॥ ३४ ॥

कुदो ! सुहुमेहृदियसु उत्पत्तिनिमित्तपरिणामबाहुत्तियादो । एत्थ गुणगतो असंखेज्जा लोगा । कुदो एदमवगम्मदे ? गुरूवदेत्तादो ।

अनिन्द्रियोसं वादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव अनन्तगुणे हैं ॥ ३१ ॥

क्योंकि, वे सब जीवोंके असंख्यातमें माग हैं ।

वादर एकेन्द्रिय पर्याप्तोंसे वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव असख्यातगुणे हैं ॥ ३२ ॥

क्योंकि अपर्याप्तोंमें उत्पत्तिके योग्य बहुत परिणामवाले जीव बहुत हैं । यहाँ गुणकार असख्यात लोकप्रमाण है ।

प्रश्न—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यह आचार्यपरम्परागत भविकर्य उपदेशसे जाना जाता है ।

वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंसे वादर एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं ॥ ३३ ॥

प्रश्न—यहाँ विशेषका प्रमाण कितना है ?

समाधान—वादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके बराबर यहाँ विशेषका प्रमाण है ।

वादर एकेन्द्रियोसं सुहम् एकन्द्रिय अपर्याप्त जीव असख्यातगुणे हैं ॥ ३४ ॥

क्योंकि सुहम् एकेन्द्रिय जीवोंमें उत्पन्न होनेके निमित्तमूल परिणामोंकी प्रचुरता है । यहाँ गुणकार असख्यात लोक हैं ।

प्रश्न—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यह श्रुतिके उपदेशसे जाना जाता है ।

सुहृमेहृदियपञ्जचा सस्वेज्जगुणा ॥ ३५ ॥

कुत्रो ! मज्झिमपरिणामेसु बहूण जीवाणं संमबादो । किमहुं सस्वेज्जगुण !  
विस्ससादो ।

सुहृमेहृदिया विसेसाहिया ॥ ३६ ॥

केचियमेचा विसेसो ! सुहृमहृदियप्रपञ्जचमेचो ।

एहदिया विसेसाहिया ॥ ३७ ॥

केचियमेचो विसेसा ! पादरहृदियमेचा ।

कायाणुवादेण सव्वत्योवा तसकाहया ॥ ३८ ॥

कुदा ! तसेसुप्पविपाओग्गपरिणामेसु जीवाणं अदिव तजुत्तादो' । य च सुहृपरि-

सुहृम एकन्द्रिय अपर्णाप्पोसे सुहृम एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव संख्यातगुणे हैं  
॥ ३५ ॥

क्योंकि मध्यम परिणामोंमें बहुतसे जीवोंकी समाख्या है ।

संख्या— संख्यातगुणे किस किस है ?

समाधान— स्वभावसे संख्यातगुण है ।

सुहृम एकन्द्रिय पर्याप्तोसे सुहृम एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं ॥ ३६ ॥

संख्या— विशेषका प्रमाण कितना है ?

समाधान— विशेषका प्रमाण सुहृम एकन्द्रिय अपर्णाप्त जीवोंके बराबर है ।

सुहृम एकेन्द्रियोंमें एकन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं ॥ ३७ ॥

संख्या— विशेषका प्रमाण कितना है ?

समाधान— विशेषका प्रमाण बाहर एकन्द्रिय जीवोंके बराबर है ।

अपमाराणणाक अनुसार प्रमत्तपिक जीव सबमें स्तोत्र हैं ॥ ३८ ॥

क्योंकि असौमें उत्पन्न होनेके योग्य परिणामोंमें जीव अत्यन्त छोड़े पाये जाय

पामेसु बहुधा जीवा समवृत्ति, सुहपरिणामाण पाप्य असमवादा ।

तेतकाइया असखेज्जगुणा ॥ ३९ ॥

एत्थ गुणगारो असखेज्जा लोगा । कुट्टो ? तसवीवेहि पदरस्स असखेज्जदि  
माममचेहि भौवद्धितेउक्काइयपमाणघादो ।

पुढविकाइया विसेसाहिया ॥ ४० ॥

एत्थ विसेसपमानमसखेज्जा हागा तेउक्काइयाणमसखेज्जदिमागो । को  
पडिमागो ? असखेज्जा हागा ।

आउक्काइया विसेसाहिया ॥ ४१ ॥

केचियमेत्तो विसेसो ? असखेज्जा लोगा पुढविकाइयाणमसखेज्जदिमागो ।  
तेसि को पडिमागो ? असखेज्जा लोगा ।

वाउक्काइया विसेसाहिया ॥ ४२ ॥

केचिओ विसेसो ? असखेज्जा लोगा वाउक्काइयाणमसखेज्जदिमागो । तेसि  
को पडिमागो ? असखेज्जा लोगा ।

है । और शुभ परिणामोंमें बहुत जीव सम्मिल नहीं हैं क्योंकि शुभ परिणाम प्रायः  
करके असंभव हैं ।

ब्रह्मकायिकोंसे तेजस्कायिक जीव असंख्यातगुणे ॥ ३९ ॥

यहां गुणकार असंख्यात शोक है क्योंकि यह अगमतरक असंख्यातमें माग  
मात्र ब्रह्मकायिक जीवों द्वारा भववर्तित तेजस्कायिक जीव राशिप्रमाण होता है ।

तेजस्कायिकोंसे पृथिवीकायिक जीव विशेष अधिक हैं ॥ ४० ॥

यहां विशेषका प्रमाण तेजस्कायिक जीवोंके असंख्यातमें मागमात्र असंख्यात  
शोक है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात शोक प्रतिभाग है ।

पृथिवीकायिकोंसे अप्कायिक जीव विशेष अधिक हैं ॥ ४१ ॥

यहां विशेष कितना है ? पृथिवीकायिक जीवोंके असंख्यातमें मागमात्र असं  
ख्यात शोकप्रमाण विशेष है । उनका प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात शोक प्रतिभाग है ।

अप्कायिकोंमें वायुकायिक जीव विशेष अधिक हैं ॥ ४२ ॥

विशेष कितना है ? अप्कायिक जीवोंके असंख्यातमें मागमात्र असंख्यात शोक  
प्रमाण विशेष है । उनका प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात शोक प्रतिभाग है ।

अकाइया अणतगुणा ॥ ४३ ॥

एत्थ गुणमारो अमवसिद्धिएहि अणतगुणा । इदो ? अमलेन्द्रतोगमेचवाउ  
अकाइयमसिद्धमकइयप्यमाणचादो ।

वणफ्फदिकाइया अणतगुणा ॥ ४४ ॥

एत्थ गुणमारो अमवसिद्धिएहि सिद्धेहितो सम्पञ्जीवण पढमवग्गमूत्तदो मि  
अणतगुणो । इदो ? अकाइयहि मभिवसगज्जंतमागहीणमपञ्जीवरासिपमायादो ।  
अण्येण पपारेण छन्द स्त्रयाणमप्यापहुगपरूवणहुमुत्तरसुत्त मणदि—

सव्वत्थोवा तसकाइयपज्जत्ता ॥ ४५ ॥

इदो ? पदरगुत्तस्स असंखेन्द्रदिमागजोवद्धिवजगपदरपमाणचादो ।

तसकाइयअपज्जत्ता असखेज्जगुणा ॥ ४६ ॥

एत्थ गुणमारो भावलिपाए असंखेन्द्रदिमागो । इदो ? पदरगुत्तस्स असंखेज्जदि  
मागजोवद्धिवजगपदरमेचा तसकाइयअपज्जत्ता सि दग्गाणिजोगादरे परूविद्धचादो ।

वायुकायिकोसे अकायिक जीव अनन्तगुण हैं ॥ ४३ ॥

यहां गुणकार ममप्यसिद्धिक जीवोंसे अनन्तगुणा है क्योंकि वह असेंख्यात  
लोकात्म वायुकायिकोंसे माजित अकायिक जीवोंसे बराबर है ।

अकायिकोंसे वनस्पतिकयिक जीव अनन्तगुण हैं ॥ ४४ ॥

यहां गुणकार ममप्यसिद्धिक सिद्ध भीर सर्व जीवोंके प्रथम वर्गमूलसे भी  
अनन्तगुणा है क्योंकि वह अकायिक जीवोंसे माजित अपने अनन्त मागसे हीन सर्व  
जीवराशिमाय है । अन्य प्रकारसे छह काय जीवोंके अक्षरवृत्तके निरूपणार्थ उत्तर  
सूत्र कहत हैं—

त्रमकायिक पर्याप्त जीव सबमें स्तोक हैं ॥ ४५ ॥

क्योंकि ये प्रतरांगुलक असेंख्यातमें मागसे अपवर्तित जगप्रतरप्रमाण हैं ।

त्रमकायिक पर्याप्तोंमें त्रमकायिक अपप्राप्त जीव असेंख्यातगुणें हैं ॥ ४६ ॥

यहां गुणकार भावधीन असेंख्यातवां माग है क्योंकि प्रतरांगुलके अस  
ख्यातप मागसे अपवर्तित जगप्रतरप्रमाण असकायिक अपप्राप्त जीव हैं ऐसा इच्छात्रु  
योग्यतामें प्रकृतिक किया है ।

तेउक्काइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ४७ ॥

एस्य गुणगतो असंखेज्जा लोका, तसुक्काइयअपज्जत्तएहि तेउक्काइयअपज्जत्त रासिन्दि भागे हिइ असंखेज्जलोगुवसमादो ।

पुढविकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ४८ ॥

विसेसपमाणमसखेज्जा लोका तेउक्काइयअपज्जत्तानमसंखेज्जदिमागो । को पढिमागो ? अमसंखेज्जा लोका ।

आउक्काइयअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ४९ ॥

केपिमो विसेसो ? अमसंखेज्जा लोका पुढविकाइयपमाणमसखेज्जदिमागो । को पढिमागो ? असंखेज्जा लोका ।

वाउक्काइयअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ५० ॥

विसेसपमाणमसंखेज्जा लोका आउक्काइयानमसंखेज्जदिमागो । को पढिमागो ? असंखेज्जा लोका ।

असंखेज्जक अपर्याप्तोसि तेजस्कायिक अपर्याप्त जीव असत्त्वात्तगुणे हैं ॥४७॥

एहां गुणकार असंख्यात लोक है क्योंकि असंखेज्जक अपर्याप्त जीवोंका तेजस्कायिक अपर्याप्त राशिमें माग बनेपर असंख्यात लोक उपलब्ध होते हैं ।

तेजस्कायिक अपर्याप्तोमे पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव विद्येय अधिक हैं ॥ ४८ ॥

विशेषका प्रमाण तेजस्कायिक जीवोंके असत्त्वात्तमें मागभाव असंख्यात लोक है । प्रतिमाग क्या है ? असत्त्वात्त लोक प्रतिमाग है ।

पृथिवीकायिक अपर्याप्तोसि अस्कायिक अपर्याप्त जीव विद्येय अधिक हैं ॥४९॥

विद्येय कितना है ? पृथिवीकायिक जीवोंके असंख्यातमें माग असंख्यात लोक प्रमाण विशेष है । प्रतिमाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिमाग है ।

अस्कायिक अपर्याप्तोसि वायुकायिक अपर्याप्त जीव विद्येय अधिक हैं ॥ ५० ॥

विद्येयका प्रमाण अस्कायिक जीवोंके असंख्यातमें माग असंख्यात लोक है । प्रतिमाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिमाग है ।



तेजकाइयपञ्जता संखेज्जगुणा ॥ ५१ ॥

इदो ! विस्मयतो । एत्थ तप्पाजोग्गमखेन्द्ररूपाणि गुणमारो ।

पुढविकाइयपञ्जता विसेसाहिया ॥ ५२ ॥

विसेसपमाणमसखेज्ज्जा सोगा तेजकाइयपञ्जताणमसखेन्द्रदिमागा । को पढि  
मागो ! असखेन्द्रा सोगा ।

आउकाइयपञ्जता विसेसाहिया ॥ ५३ ॥

विसेसपमाणमसखेन्द्रा सागा पुढविकाइयपञ्जताणमसखेन्द्रदिमागो । को  
पढिमागा ! असखेन्द्रा सोगा ।

वाउकाइयपञ्जता विसेसाहिया ॥ ५४ ॥

विसेसपमाणमसखेन्द्रा सागा आउकाइयपञ्जताणमसखेन्द्रदिमागो । को पढि  
मागा ! असखेन्द्रा सोगा ।

अकाइया अणतगुणा ॥ ५५ ॥

वायुकायिक पर्याप्तोसि तेजस्कायिक पर्याप्त नीव संख्यातगुण हैं ॥ ५१ ॥

क्योंकि येसा इतमात्रसे है । यहाँ तत्प्रायाग्य संख्यात रूप गुणकार है ।

तेजस्कायिक पर्याप्तोसि पृथिवीकायिक पर्याप्त नीव विद्वेष अधिक हैं ॥ ५२ ॥

विशेषता प्रमाण तेजस्कायिक पर्याप्त नीवोंके असख्यातमें भाग संख्यात  
छोक है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात छोक प्रतिभाग है ।

पृथिवीकायिक पर्याप्तोसि अकायिक पर्याप्त नीव विद्वेष अधिक हैं ॥ ५३ ॥

विशेषता प्रमाण पृथिवीकायिक पर्याप्त नीवोंके असंख्यातमें भाग संख्यात  
छोक है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात छोक प्रतिभाग है ।

अकायिक पर्याप्तोम वायुकायिक पर्याप्त नीव विद्वेष अधिक हैं ॥ ५४ ॥

विशेषता प्रमाण अकायिक नीवोंके असंख्यातमें भाग संख्यात छोक है ।  
प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात छोक प्रतिभाग है ।

वायुकायिक पर्याप्तोम अकायिक नीव अनन्तगुणे हैं ॥ ५५ ॥

कुदा ? असस्त्रज्ञसागमघनाउकाइयपन्नचएहि अकाइयसु ओषद्धिदेसु अणंत-  
रवावलभादो ।

वणफ्फदिकाइयअपज्जत्ता अणतगुणा ॥ ५६ ॥

गुणगारा अमममिद्धिदहिंता मिद्धिंहितो मच्चजीवाण पत्तमग्गमूलादा वि  
मणतगुणो । कुदा ? अकाइयएहि आवद्धिदकिं.पूणसच्चजीवराधिसत्तज्जदिमागपमाणघादो ।

वणफ्फदिकाइयपज्जत्ता सस्त्रेज्जगुणा ॥ ५७ ॥

एत्थ गुणगारो अप्याओग्गमस्त्रज्जममया ।

वणफ्फदिकाइया विसेसाहिया ॥ ५८ ॥

कसियमत्तो विसेसा ? वणफ्फदिकाइयअपज्जत्तमेसा ।

णिगोदा विसेसाहिया ॥ ५९ ॥

केसियमत्ता विसेसो ? वादरवणफ्फदिपत्तपमरीरिवादारामिगादपदिद्धिदमेसा ।

अप्यवेक्कणे पपारेण अप्यावदुगपत्तवणह्मुत्तारसुत्त मणदि—

क्योंकि समस्यात माकमात्र वायुकायिक पयात्त जीवों द्वारा अकायिक  
जीवोंके अणपरिहित करमपर अमल रूप उपलब्ध हात हैं ।

अकायिकोंमें वनस्पतिकायिक अर्थात्त जीव अनन्तगुणे हैं ॥ ५६ ॥

यहां गुणकार अमप्यमिद्धिहो भिन्नो और सय जीवोंके प्रथम वणमूलम मी  
मनन्तगुणा ह क्योंकि उक्त गुणकार अकायिक जीवोंके अणपरिहित हुए वम सय जीव  
वाशिक संख्यातयें मागप्रमात्त हैं ।

वनस्पतिकायिक अर्थात्तोंमें वनस्पतिकायिक पयात्त जीव मुग्घ्यात्तगुण हैं  
॥ ५७ ॥

यहां गुणकार तत्रायागय संख्यात समवप्रमात्त हैं ।

वनस्पतिकायिक अर्थात्तोंमें वनस्पतिकायिक जीव विन्नप अर्थात्त हैं ॥ ५८ ॥

विनाय वित्ता हे ? वनस्पतिकायिक अणपयात्त जीवोंके प्रमात्त है ।

वनस्पतिकायिकोंमें निगोदजीव विन्नप अर्थात्त हैं ॥ ५९ ॥

विनाय वित्ता हे ? वादर वनस्पतिकायिक अणपयात्त वादर निगाद अर्थात्त  
जीवोंके अणपर है । अप्य एत्त प्रकारेण अणवदुगपत्ते विकरमायें उक्त एत्त वदन हैं ।

सर्वतोवा तसकाइया ॥ ६० ॥

कुशो ! पदरस्त असंख्येन्द्रदिमागपमापचादा ।

घादरतेउकाइया असस्त्रेज्जगुणा ॥ ६१ ॥

कुशो ! तसकाइएहि वादरतेउकाइएसु मापद्विदसु असंख्येन्द्रदिमागपमापचादा ।

वादरवणफ्रदिकाइयपत्तेयसरीरा असस्त्रेज्जगुणा ॥ ६२ ॥

एतत्त गुणगारो असंख्येन्द्रा स्त्रेगा । गुणगारद्वन्द्वसत्तगाभो पत्तिदोषमस्म  
असंख्येन्द्रदिमागो । एद कुशो बगम्मदे ! गुरुवदमादा ।

घादरणिगोदजीवा णिगोदपदिद्विदा असस्त्रेज्जगुणा ॥ ६३ ॥

गुणगारपमागमसंख्येन्द्रा स्त्रेगा । तस्मद्वन्द्वसत्तगाभो पत्तिदोषमस्म  
असंख्येन्द्रदिमागो ।

असंख्येन्द्रदिमागो जीव सप्तमे स्तोत्रे ॥ ६० ॥

क्योंकि ये अमप्रतरके असंख्यातके मागप्रमाण हैं ।

असंख्येन्द्रदिमागो वादर तेजस्त्रयिक जीव असंख्यातगुणे ॥ ६१ ॥

क्योंकि असंख्येन्द्रदिमागो जीवों द्वारा वादर तेजस्त्रयिक जीवोंके अपवर्तित करने  
पर असंख्यात शोक उपसम्पन्न होते हैं ।

वादर तेजस्त्रयिकदिमागो वादर वनस्पतित्रयिक प्रत्येकशरीर जीव असंख्यातगुणे  
हैं ॥ ६२ ॥

यहाँ गुणगार असंख्यात शोक है । गुणगारकी अर्थच्छेदशक्त्याकार्ये वन्योपमक  
असंख्यातके मागप्रमाण हैं ।

श्रुंका — यह कहाँसे जाना जाता है ?

समाधान— यह श्रुंके उपदेशसे जाना जाता है ।

वादर वनस्पतित्रयिक प्रत्येकशरीर जीवोंसे वादर निगोदजीव निगोदप्रतिष्ठित  
असंख्यातगुणे हैं ॥ ६३ ॥

गुणगारका प्रमाण असंख्यात शोक है । अर्थच्छेदशक्त्याकार्ये वन्योपमके  
असंख्यातके मागप्रमाण हैं ।

वादरपुढविकाइया असंखेज्जगुणा ॥ ६४ ॥

गुणगारपमाअमसखेज्जा लोगा । तस्मिअद्वेदणपसलागाओ पतिदोअमस्त असंखे  
अत्रदिमागो ।

वादरआउकाइया असखेज्जगुणा ॥ ६५ ॥

एत्थ गुणगारो असंखेज्जा लोगा । तस्सद्वेदणपसलागाआ पतिदावमस्त  
असंखेअत्रदिमागो ।

वादरवाउकाइया अमंखेज्जगुणा ॥ ६६ ॥

एत्थ गुणगारो असंखेज्जा लोगा । गुणगारद्वेदणपमलागाआ पतिदावमस्त  
अमंखेअत्रदिमागो । वादरवाउकाइयाण पुण अद्वेदणपसलागा सपुण्य सागरोअम ।

सुहुमतेउकाइया असखेज्जगुणा ॥ ६७ ॥

एत्थ गुणगारो असंखेज्जा लोगा । गुणगारद्वेदणपसलागाआ पि असंखेज्जा  
लोगा ।

वादर निगोद जीव निगादप्रतिष्ठितोमे वादर पृथिवीकायिक जीव अमम्यातगुण  
ई ॥ ६४ ॥

गुणकारका प्रमाण अमम्यात साक ई । उमकी अद्वेदणपसलागाए पस्यापमके  
असंख्यातए भागप्रमाण ई ।

वादर पृथिवीकायिकोमे वादर अप्कायिक जीव असम्यातगुण ई ॥ ६५ ॥

यहां गुणकार असख्यात साकप्रमाण ह । उमकी अद्वेदणपसलागाए पस्या  
पमके अमम्यातए भाग ई ।

वादर अप्कायिकोमे वादर वाउकायिक जीव अमम्यातगुण ई ॥ ६६ ॥

यहां गुणकार असख्यात साक ई । गुणकारकी अद्वेदणपसलागाए प-पोपमके  
असख्यातए भागप्रमाण ई । परणु वादर वायुकायिक जीवोकी अद्वेदणपसलागाए  
सपुण्य सागरापमप्रमाण ई ।

वादर वायुकायिकोमे सुहम तमस्कायिक जीव अमम्यातगुण ई ॥ ६७ ॥

यहां गुणकार अमम्यात साक ई । गुणकारकी अद्वेदणपसलागाए भी असख्यात  
सोकप्रमाण ई ।

सुद्धमपुढविकाइया विसेमाहिया ॥ ६८ ॥

एत्थ विसत्तपमार्ज असंखेत्ता लोगा सुद्धमतेउकाइयाणमसत्तअदिभागो ।  
को पडिभागो ? असंखेत्ता लोगा ।

सुद्धमआउकाइया विसेमाहिया ॥ ६९ ॥

विसेमपमाणमसत्तेत्ता लोगा सुद्धमपुढविकाइयाणमसत्तअदिभागो । को पडि  
भागो ? असंखेत्ता लोगा ।

सुद्धमवाउकाइया विसेमाहिया ॥ ७० ॥

को विसेमो ? असत्तग्गा लोगा सुद्धमआउकाइयाणमसत्तअदिभागो । को  
पडिभागो ? असंखेत्ता लोगा ।

अकाइया अणत्तगुणा ॥ ७१ ॥

एत्थ गुणगतो अमवसिद्धिएहि अणत्तगुणो ।

वादरवणप्फदिकाइया अणत्तगुणा ॥ ७२ ॥

सूक्ष्म तत्रस्फटिकोमे सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव विज्ञप अधिक हैं ॥ ६८ ॥

यहां विज्ञपका प्रमाण सूक्ष्म तत्रस्फटिक जीवोंके असंख्यातमें भागप्रमाण  
असंख्यात साक है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात साक प्रतिभाग है ।

सूक्ष्म पृथिवीकायिकोमे सूक्ष्म अप्फायिक जीव विज्ञप अधिक हैं ॥ ६९ ॥

यहां विज्ञपका प्रमाण सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके असंख्यातमें भागप्रमाण  
असंख्यात साक है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात साक प्रतिभाग है ।

सूक्ष्म अप्फायिकोमे सूक्ष्म वायुकायिक जीव विज्ञप अधिक हैं ॥ ७० ॥

विज्ञप कितना है ? सूक्ष्म अण्वायिक जीवोंके असंख्यातमें भाग असंख्यात  
साकप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात साक प्रतिभाग है ।

सूक्ष्म वायुकायिकोमे अकायिक जीव अनन्तगुण हैं ॥ ७१ ॥

यहां गुणकार अमर्यादिकायिक जीवास अनन्तगुणा है ।

अकायिक जीवोंमें वादर वनस्पतिकायिक जीव अनन्तगुण हैं ॥ ७२ ॥

एष्य गुणगारो अमरसिद्धिर्द्विर्दितो सिद्धिर्दितो सम्बन्धीवाण पदमवगमूलादो वि  
अणतगुणो । इदो ? गुणगारस्स सम्बन्धीवरासिअसुखज्जदिमागचादो । ण स अकाइया  
सम्बन्धीवाण पदमवगमूलमेत्ता अत्थि, तस्म पदमवगमूलस्स अणतमागचादो ।

सुहुमवणप्फदिकाइया असस्सेज्जगुणा ॥ ७३ ॥

को गुणगारो ? अमस्सेज्जा लोणा । सेम सुगम ।

वणप्फदिकाइया विमेसाहिया ॥ ७४ ॥

कथियमत्ता भिसेसो ? पाद्वणप्फदिकाइयमेत्ता ।

अप्पेसु सुत्तेसु सञ्जाइरियममदेसु' ण'येव अप्पावद्गुणममत्ती हादि, पुणो उवरिम  
अप्पावद्गुणपारस्म प्रारमो । ण'य पुण सुत्तेसु अप्पावद्गुणममत्ती ण हादि ।

णिगोदजीवा विमेसाहिया ॥ ७५ ॥

एष्य चादगो मगदि— भिष्कलमेद सुत्त, वणप्फदिकाइर्दितो पुचभूद'

यहाँ गुणकार अमरसिद्धिर्द्वौ भिष्कौ भीर मय जीवोंके प्रथम वर्णमूलस ही  
अमरगुणा है क्योंकि गुणकार सब जीवरासिक अमरगुणके भागप्रमाण है । भीर  
अकारिक जीव सब जीवोंके प्रथम वर्णमूलप्रमाण है महीं क्योंकि यह प्रथम वर्णमूल  
मकारिक जीवोंके अमरगुणके भाग प्रमाण है ।

चादर वनस्पतिकारिकोम सुहम वनस्पतिकारिक जीव अमरगुणगुण है ॥७३॥

गुणकार कितना है ? अमरगुण श्लोकप्रमाण है । चाद मत्ता सुगम है ।

सुहम वनस्पतिकारिकोम वनस्पतिकारिक जीव विग्रह अधिक है ॥ ७४ ॥

विशय कितना है ? चादर वनस्पतिकारिक जीवोंके बराबर है ।

सर्व भाषाओंमें सम्मन मय सुत्रोंमें यहाँ ही अद्वयवृत्तयही समाप्ति हाती है  
पुनः भागके अद्वयवृत्तयकारका प्रारम्भ हाता है । एतन्नु एन सुत्रामें अद्वयवृत्तयही यहाँ  
समाप्ति महीं होती ।

वनस्पतिकारिकोम निगोद भीर विग्रह अधिक है ॥ ७५ ॥

श्लोक—यहाँ दोषाकार कहना है कि यह सुत्र भिष्कल है क्योंकि वनस्पति

विगोदात्ममनुबलमादो । य च वण्णदिक्रयणदितो पुषमूदा पुढविकाइयादिसु विगोदा  
 अरिथि चि आइरियाणमनुबदसा अणेदस्म वयणस्स सुचच पमज्जवेइ इदि ? एरय परिहारो  
 बुबद- होदु नाम तुम्मेहि वुत्तस्म मच्च, महुण्णसु सुचसु वण्णदिक्रीयं उवरि विगोदपदस्स  
 अणुबलमादो विगोदाणमनुवरि वण्णदिक्रयणायं पदयस्सुबलमादा बहुण्हि आइरियदि  
 समदधादा च । किं तु पद सुचमेव च होदि चि आरहारण कउ सुत्तं । सो एवं  
 मणदि वा आइमपुग्गपरां केवलणानी वा । य च बहूमाणकाले ते अग्धि, य च तेसिं  
 पास माग्गागदा चि संपदि उवल्लमंति । तरो वण्ण काले च चि सुचाभि सुचासायण  
 मीरुहि अइरियदि वक्खलापेयग्गाभि चि । विगादाणमनुवरि वण्णदिक्रयणा विमसाहिया  
 होति वाइरवण्णदिक्रयणपत्तेपमरीरमत्तेय, वण्णदिक्रयणायं उवरि विगोदा पुष केव  
 विमसाहिया होति चि मधिदे वुत्तदे । त जहा— वण्णदिक्रयणा चि बुत्ते  
 पाइग्गिगाइपदिद्विदापदिद्विदानी वा च वेत्तया । कुदा ? आधवादा आचारस्स मेदईममादो ।

कायिक जीवोंस पृथग्भूत विगाद जीव पाये नहीं जाते । तथा वनस्पतिकायिक जीवोंस  
 पृथग्भूत पृथिवीकायिकायिकोंसे विगाद जीव हैं ऐसा भाषायोंका उपदेश भी नहीं  
 है किमसे इस पक्षतको स्तम्भका प्रसंग हो सके ?

समाधान—यहां उपर्युक्त शंकाका परिहार कहते हैं— तुम्हारे द्वारा कहे हुए  
 बचनमें धमे ही सत्यता हो क्योंकि बहुतसे सूत्रों वनस्पतिकायिक जीवोंके भागे  
 विगाद पद नहीं पाया जाता विगाद जीवोंके भाग वनस्पतिकायिकोंका पाठ  
 पाया जाता है और ऐसा बहुतसे भाषायोंसे सम्मत भी है । किन्तु यह सूत्र  
 ही नहीं है ऐसा विचार करना उचित नहीं है । इस प्रकार ता यह कह  
 सक्या है वा कि वाइह सूत्रोंका धारक हो मयवा केवलजानी हो । परन्तु वर्तमान  
 कासम न ता व दावा है और न उनके पाममें सुनकर जाये हुए मय्य महापुरुष भी इस  
 समय उपसम्प हान है । मत एक सूत्रकी आशातना ( उद्देश या निरूपण ) से भयभीत  
 रहनबाह्य भाषायोंवा व्याख्य समग्र कर शानों ही सूत्रोंका व्याख्यान करना चाहिये ।

द्वितीय—विगाद जीवोंके ऊपर वनस्पतिकायिक जीव वाइर वनस्पतिकायिक  
 प्रत्येकगरीर मात्रसे विद्यायाधिक हात हैं परन्तु वनस्पतिकायिक जीवोंके भाग विगाद  
 जीव विमम विद्यायाधिक हान है ?

समाधान—उपर्युक्त शंकावा उत्तर इस प्रकार हने हैं— वनस्पतिकायिक  
 जीव ऐसा कहमपर वाइर विगादोंसे प्रतिष्ठित मप्रतिष्ठित जीवोंका प्रहण नहीं करना  
 चाहिये क्योंकि भाषयस आचारका मद् देखा जाता है ।

बण्फदिशामकम्मोद्दइल्लत्तणेण सम्भेमिमेगत्तमरियं सि मग्गिदे होदु तन्न एगत्तं, किंतु उमेत्थं अविक्खिस्सयं, आहारं अणाहारत्तं चेव विक्खिस्सयं । तेण बण्फदिकाइएसु वादरभिगोदपदिद्धिदापदिद्धिदा न गहिदा । बण्फदिकाइयाणमुत्तरि ' भिगोदा भियेमाहिया ' सि मग्गिदे वादरबण्फदिकाइयपत्तेपत्तरीरेहि वादरभिगोदपदिद्धिदेहि यं भियेसाहिया । वादरभिगोदपदिद्धिदापदिद्धिदाणं कर्त्तव्यं भिगोदवत्तमो ? अ, आहारे आहोभोत्तयारादा तेसिं भिगोदत्तसिद्धीदे । बण्फदिशामकम्मोद्दइल्लत्तं सम्भेसिं बण्फदिमत्ता सुत्ते दिस्सदि । वादरभिगोदपदिद्धिदापदिद्धिदाणमत्तं सुत्ते बण्फदिसत्ता किंयं गिदिद्धा ? गोदमो एत्थं पुत्तेयत्तो । अग्गेहि गोदमो वादरभिगोदपदिद्धिदाणं बण्फदिसत्तां पेत्तदि सि तस्मं अहिप्पाओ क्खिओ ।

संज्ञा—बनस्पति नामकर्मके उद्भवसे समुक्त हातकी अपेक्षा सबीके एकता है ।

समाधान—बनस्पति नामकर्मोद्भवकी अपेक्षा उससे एकता रहे किन्तु उसकी यहाँ विवक्षा नहीं है । यहाँ भाषाएँ और अनाहारवकी ही विषय है । इस कारण बनस्पतिकार्यिक जीवोंमें वादर निगोदोंमें प्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित जीवोंका प्रहण नहीं किया गया ।

बनस्पतिकार्यिक जीवोंके ऊपर निगोदजीव विशेष अधिक हैं ऐसा कहनेपर वादर निगोद जीवोंसे प्रतिष्ठित वादर बनस्पतिकार्यिक प्रत्येकशरीर जीवोंसे विशेष अधिक हैं ( ऐसा समझना चाहिये ) ।

संज्ञा—वादर निगोदजीवोंसे प्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित जीवोंका निगोद संज्ञा कैसे पड़ित होती है ?

समाधान—नहीं क्योंकि, भाषाएँ भाष्यका उपचार करनेमें उनका निगोदत्व भिन्न होता है ।

संज्ञा—बनस्पति नामकर्मक उद्भवसे समुक्त सब जीवोंके बनस्पति संज्ञा सूत्रमें स्वी जाती है । वादर निगोदजीवोंमें प्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित जीवोंके यहाँ सूत्रमें बनस्पति संज्ञा क्यों नहीं निर्दिष्ट की ?

समाधान—इस शब्दाका उत्तर मोक्षमय पूछना चाहिये । हमने ता ' गीतम वादर निगोद जीवोंसे प्रतिष्ठित जीवोंके बनस्पति संज्ञा नहीं स्वीकार करते इस प्रकार उनका अस्मिन्नाय कहा है ।



पुणो अण्येण पयारेण अप्पाहुगवत्तणहुत्तरसुत्त मग्धि—

सव्वत्थोवा धादरतेउकाह्यपज्जत्ता ॥ ७६ ॥

कुरा ! अमत्ते अपदरावत्तिमपमावचादा ।

तसकाह्यपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ७७ ॥

एत्थ गुणगतो अगपदरस्त असंखेज्जदिमागो । कुरा ! अमत्ते अपदरगुणेहि  
मावत्तिद्वसगपदरप्यमावचादा ।

तसकाह्यअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ७८ ॥

गुणगतो आवत्तियाप असंख ज्जदिमागो । कुरा ! तमअपज्जत्तअवहारकासेण  
तमपज्जत्तअवहारकासे माये हिदे आवत्तियाप अमत्तेज्जदिमागावत्तमादो ।

वणप्फदिकाह्यपत्तेयसरीरपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ७९ ॥

गुणगता पत्तिदोवमस्म असंखेज्जदिमागो । कुरा ! वादरवणप्फदिपत्तेयसरीर  
पज्जत्तअवहारकासे तसकाह्यअवहारकासे मागे हिदे पत्तिदोवमस्म अमत्तेज्जदि

फिर वी मत्थ प्रकारसे अस्सज्जत्तके निरूपणार्थ उत्तर सूत्र कहत हैं—

वादर तेजस्कायिक जीव सबमें स्तोत्र हैं ॥ ७६ ॥

क्योंकि, वे असंख्यात प्रतरावत्तीप्रमाण हैं ।

वादर तेजस्कायिकोंमें असंख्यात पर्याप्त जीव असंख्यातगुणों हैं ॥ ७७ ॥

यहां गुणकार अगपदरका असंख्यातवा भाग है क्योंकि वह असंख्यात  
प्रतरागुणोंसे अपवर्तित अगप्रतरप्रमाण है ।

असंख्यात पर्याप्तोंसे असंख्यात अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणों हैं ॥ ७८ ॥

यहां गुणकार आवत्तीका असंख्यातवा भाग है क्योंकि अस अपर्याप्त जीवोंके  
अवहारकासे अस पर्याप्त जीवोंके अवहारकाको माहित करनेपर आवत्तीका  
असंख्यातवा भाग उभय होता है ।

असंख्यात अपर्याप्तोंसे वनस्पतिकायिक प्रत्यक्षरीर पर्याप्त जीव असंख्यात-  
गुणों हैं ॥ ७९ ॥

यहां गुणकार पत्तोपमका असंख्यातवा भाग है क्योंकि वादरवनस्पतिकायिक  
प्रत्यक्षरीर पर्याप्त जीवोंके अवहारकासे असंख्यात जीवोंके अवहारकाको माहित

मागुवलमादो ।

वादरणिगोदजीवा णिगोदपदिट्ठिदा पज्जत्ता असस्सेज्जगुणा  
॥ ८० ॥

वादरणिगादजीवमिहसो किमहु कदो, वादरणिगोदपदिट्ठिदा चि वचम्व ? ण,  
वादरणिगोदपदिट्ठिदाण णिगोदजीवाघाराणं' सय पत्तेयसरीराणमुत्तयारपत्तेण णिगोदजीव  
सण्णा एत्थ होदु चि आभावनहु कदो । गुणगारो भावलिपाए असस्सेज्जदिमागो ।  
कदो ? वादरणिगोदपदिट्ठिदअवहारकालेण वादरवणप्फदिपत्तयसरीरअवहारकाळे मागे  
दिदे अवलिपाए असस्सेज्जदिमागुवलमादो ।

वादरपुढविकाइयपज्जत्ता असस्सेज्जगुणा ॥ ८१ ॥

गुणगारो आवलिपाए असस्सेज्जदिमागो । कारण पुम्वं व वचम्व ।

करनेपर पत्तोपमका असंख्यातर्वा माग उपलब्ध हाता है ।

वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंसे वादर निगोदजीव निगोद प्रतिष्ठित  
पर्याप्त असंख्यातगुणे हैं ॥ ८० ॥

श्लोक— वादर निगोद जीव का निर्देश किस सिधे किया वादर-निगोद  
प्रतिष्ठित इतना ही कहना चाहिये ?

समाधान— यहाँ क्योंकि निगोदजीवोंके आधारभूत व स्वयं प्रत्येकशरीर पदस  
वादर निगोदजीवोंसे प्रतिष्ठित जीवोंको यहाँ उपचारके बलसे 'निगोदजीव' कहा हो इस  
वाक्य आप्तमार्थ वादर निगोदजीव' का निर्देश किया है । गुणकार यहाँ भावलीका  
असंख्यातर्वा माग है क्योंकि वादर-निगोद प्रतिष्ठित जीवोंके अवहारकालसे वादर  
वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंके अवहारकालको भाजित करनेपर भावलीका  
असंख्यातर्वा माग उपलब्ध होता है ।

वादर निगोदजीव निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंसे वादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव  
असंख्यातगुणे हैं ॥ ८१ ॥

गुणकार भावलीका असंख्यातर्वा माग है । कारण पहिलेके समान कहना  
चाहिये ।

बादरवातकाह्यपञ्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८२ ॥

गुणगारो आश्रितियाए असंखेज्जदिमागा । धारणं पुञ्ज इ वत्तर्षं ।

बादरवातकाह्यपञ्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८३ ॥

गुणगारो असंखे-भाभो सेवीभो पदसंगुहस्त असंखेज्जदिमागमेष्वाभा । हेहिम  
राशिणा उधरिमरासिमोबद्धिम सन्वरम गुणमारो उप्पाएदग्गो ।

बादरतेउअपञ्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८४ ॥

गुणगारो असंख-भा सोगा । गुणगारद्वच्छद्वयपमसागाभो सागरावम' पसिदा-  
वमस्त असंखेज्जदिमागेणूवर्ष ।

बादरवणफदिकाह्यपत्तेयसरीरअपञ्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ ८५ ॥

गुणगारपमावमसंखेज्जभा सागा । गुणगारद्वच्छद्वयपससागाभो पसिदावमस्त  
असंखेज्जदिमायो ।

बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोसि बादर अण्कायिक पर्याप्त जीव असंख्यातगुणे  
हैं ॥ ८२ ॥

गुणकार भावसीका असंख्यातवां भाग है । काण्य पहिलेके समान करना  
चाहिये ।

बादर अण्कायिक पर्याप्तोम बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव असंख्यातगुणे  
हैं ॥ ८३ ॥

यहां गुणकार प्रतरांगुहक असंख्यातवें भागमात्र असंख्यात जगभेयी है ।  
नभस्तव राशिसे उपरिम राशिका अपवर्तन कर सर्वत्र गुणकार कल्पन करना चाहिये ।

बादर वायुकायिक पर्याप्तोमे बादर तेजस्कायिक अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे  
हैं ॥ ८४ ॥

यहां गुणकार असंख्यात काक है । गुणकारकी सर्वत्रउद्देशकाकार्ये पर्यायमक  
असंख्यातवें भागका हीन साधरोपमप्रमाण है ।

बादर तेजस्कायिक अपर्याप्तोसि बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकसरीर अपर्याप्त  
जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ८५ ॥

गुणकारका प्रमाण असंख्यात काक है) गुणकारकी सर्वत्रउद्देशकाकार्ये पर्यायमके  
असंख्यातवें भागप्रमाण है ।

वादरणिगोदजीवा णिगोदपदिट्टिदा अपज्जत्ता असखेज्जगुणा  
॥ ८६ ॥

एत्थ गुणमारो असखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणाणि पलिदोवमस्स असखज्जदि  
भागो ।

वादरपुढविकाइया अपज्जत्ता असखेज्जगुणा ॥ ८७ ॥

गुणमारो असखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणाणि पलिदोवमस्स असखेज्जदिभागो ।

वादरआउकाइयअपज्जत्ता असखेज्जगुणा ॥ ८८ ॥

गुणमारो असखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणाणि पलिदोवमस्स अमरखज्जदिभागो ।

वादरवाउअपज्जत्ता असखेज्जगुणा ॥ ८९ ॥

गुणमारपमाणमसखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणाणि पलिदोवमस्स अमखज्जदि  
भागो ।

वादर वनस्पतिक्रायिक प्रत्येकधरीर अपर्याप्तोसिं निगादप्रतिष्ठित वादर निगोद  
जीव अपर्याप्त असख्यातगुणे ई ॥ ८६ ॥

यहां गुणकार असंख्यात लोक है । उनके अक्षरछन्द पस्यापमके असख्यातयें भाग  
प्रमाण हैं ।

निगोदप्रतिष्ठित वादर निगोद जीव अपर्याप्तोसिं वादर पृथिवीक्रायिक अपर्याप्त  
जीव असख्यातगुणे हैं ॥ ८७ ॥

गुणकार असंख्यात लोक है । उनके अक्षरछन्द पस्यापमके असख्यातयें भाग  
प्रमाण हैं ।

वादर पृथिवीक्रायिक अपर्याप्तोसिं वादर अक्रायिक अपर्याप्त जीव अमख्यात  
गुणे हैं ॥ ८८ ॥

गुणकार असंख्यात लोक है । उनके अक्षरछन्द पस्यापमके असंख्यातयें भाग  
प्रमाण हैं ।

वादर अक्रायिक अपर्याप्तोसिं वादर वायुक्रायिक अपर्याप्त जीव असंख्यातगुण  
हैं ॥ ८९ ॥

गुणकारका प्रमाण असंख्यात लोक है । उनके अक्षरछन्द पस्यापमके असंख्यातयें  
भागप्रमाण हैं ।

सुहृमतेउकाइयअपज्जत्ता असखेज्जगुणा ॥ १० ॥

गुणगारपमाअमसंखेज्जा सोमा । तेसिं छेव्वापि वि असंखेज्जा सोगा ।

सुहृमपुढविकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ११ ॥

केपियमेसो विसेसा ? असंखेज्जा सोगा सुहृमतेउकाइयाअमसंखेज्जदिमामो ।

को पढिमामो ? असंखेज्जा सोगा ।

सुहृमआउकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ १२ ॥

केपियो विसेसो ? असंखेज्जा सोगा सुहृमपुढविकाइयाअमसंखेज्जदिमामो ।

को पढिमामो ? असंखेज्जा सोगा ।

सुहृमवाउकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ १३ ॥

विसेसपमाअमसंखेज्जा सोगा सुहृमआउकाइयाअमसंखेज्जदिमामो । तेसिं को

पढिमामो ? असंखेज्जा सोगा ।

बाहर बायुकायिक अपर्याप्तोसे सूक्ष्म तेजस्कायिक अपर्याप्त जीव असंख्यात-  
गुणे हैं ॥ १० ॥

गुणकारका प्रमाण असंख्यात लोक है । उनके अर्धच्छेद भी असंख्यात लोक  
प्रमाण है ।

सूक्ष्म तेजस्कायिक अपर्याप्तोसे सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव विशेष  
अधिक हैं ॥ ११ ॥

विशेष कितना है ? सूक्ष्म तेजस्कायिक जीवोंके असंख्यातमें माग असंख्यात  
लोकप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिभाग है ।

सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोसे सूक्ष्म अणुकायिक अपर्याप्त जीव विशेष  
अधिक हैं ॥ १२ ॥

विशेष कितना है ? सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके असंख्यातमें माग असंख्यात  
लोकप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिभाग है ।

सूक्ष्म अणुकायिक अपर्याप्तोसे सूक्ष्म बायुकायिक अपर्याप्त जीव विशेष अधिक  
हैं ॥ १३ ॥

विशेषका प्रमाण सूक्ष्म अणुकायिक जीवोंके असंख्यातमें माग असंख्यात लोक  
है । उनका प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिभाग-है ।

सुहृमतेतकाइयपञ्जत्ता सखेज्जगुणा ॥ १४ ॥

एत्थ गुणगारो तप्पाभोगसखेज्जसमया ।

सुहृमपुढविकाइयपञ्जत्ता विसेसाहिया ॥ १५ ॥

विसेसपमाणमसंखेज्जा लोगा सुहृमतेतकाइयपञ्जत्ताणमसखेज्जदिमागो । पढि  
मागो असंखेज्जा लोगा ।

सुहृमआतकाइयपञ्जत्ता विसेसाहिया ॥ १६ ॥

विसेसपमाणमसंखेज्जा लोगा सुहृमपुढविकाइयपञ्जत्ताणमसंखेज्जदिमागो । को  
पढिमागो ? असंखेज्जा लोगा ।

सुहृमवातकाइयपञ्जत्ता विसेसाहिया ॥ १७ ॥

विसेसपमाणमसंखेज्जा लोगा सुहृमआतकाइयपञ्जत्ताणमसंखेज्जदिमागो । को  
पढिमागो ? असंखेज्जा लोगा ।

सूक्ष्म वायुकायिक अयत्तोमे सूक्ष्म तेजस्कायिक पर्याप्त जीव संख्यातगुणे  
हैं ॥ १४ ॥

यहां गुणकार तत्प्राधान्य सख्यात सम्य है ।

सूक्ष्म तेजस्कायिक पर्याप्तोमे सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव विद्येय अधिक  
हैं ॥ १५ ॥

विशेषका प्रमाण सूक्ष्म तेजस्कायिक पर्याप्त जीवोंके असंख्यातबे भाग असंख्यात  
शोक है । प्रतिभाग असख्यात शोक है ।

सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोमे सूक्ष्म अण्कायिक पर्याप्त जीव विद्येय अधिक  
हैं ॥ १६ ॥

विशेषका प्रमाण सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंके असंख्यातबे भाग  
असंख्यात शोक है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात शोक प्रतिभाग है ।

सूक्ष्म अण्कायिक पर्याप्तोमे सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त जीव विद्येय अधिक हैं  
॥ १७ ॥

विशेषका प्रमाण सूक्ष्म अण्कायिक पर्याप्त जीवोंके असंख्यातबे भाग असंख्यात  
शोक है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात शोक प्रतिभाग है ।

अकाह्या अणंतगुणा ॥ ९८ ॥

को गुणगारो ? अमरसिद्धिपति अनंतगुणो । इदो ? सुहृमवाउकाह्यपत्रपेहि  
ओषद्विदमकाह्यपत्रमात्रादो ।

वाद्रवणफ्फदिकाह्यपञ्जत्ता अणतगुणा ॥ ९९ ॥

गुणगारा अमरसिद्धिपतिं तो मिद्वेहिंता सञ्जमीबाण पदमवग्गमूठादो वि अणंत-  
गुणो । इदो ? सम्मजीबाण पदमवग्गमूठादो अनंतगुणहीणेहि अकाह्यहि अमरि-  
सोगगुणेहि ओषद्विदसञ्जमीबरासिपमाणत्तादो ।

वाद्रवणफ्फदिकाह्यपञ्जत्ता असंस्वेज्जगुणा ॥ १०० ॥

को गुणगारो ? अमरि-सो सोगा ।

वाद्रवणफ्फदिकाह्या विसेसाहिया ॥ १०१ ॥

केचियमेत्तो विसेमो ? वाद्रवणफ्फदिकाह्यपत्रत्रयमत्ता ।

सुहृम वासुकायिक पर्याप्तोसे अकायिक जीव अनन्तगुण हैं ॥ ९८ ॥

गुणकार कितना है ? अमरसिद्धिक जीवोंसे अनन्तगुणा है क्योंकि वह सुहृम  
वासुकायिक पर्याप्त जीवोंसे अपवर्तित अकायिक जीवोंके बराबर है ।

अकायिक जीवोंमें वाद्र वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव अनन्तगुणो हैं ॥ ९९ ॥

यहां गुणकार अमरसिद्धिक जीवों सिद्धों और सर्व जीवोंके प्रथम वर्गमूळसे  
भी अनन्तगुणा है क्योंकि वह सर्व जीवोंके प्रथम वर्गमूळसे अनन्तगुणे हीन अर्थात्  
क्यात छोकगुणे अकायिक जीवोंसे अपवर्तित सर्व जीवराशिप्रमाण है ।

वाद्र वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंमें वाद्र वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव असंख्यात-  
गुण हैं ॥ १०० ॥

गुणकार कितना है ? असंख्यात साकप्रमाण है ।

वाद्र वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे वाद्र वनस्पतिकायिक जीव विशेष अधिक  
हैं ॥ १०१ ॥

विशेष कितना है ? वाद्र वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीवोंके बराबर है ।

सुहुमवणफ्फदिकाइयअपज्जत्ता असखेज्जगुणा ॥ १०२ ॥

का गुणगारो ? असखेज्जा ठोगा ।

सुहुमवणफ्फदिकाइयपज्जत्ता सखेज्जगुणा ॥ १०३ ॥

को गुणगारो ? सखेज्जा समया ।

सुहुमवणफ्फदिकाइया विसेसाहिया ॥ १०४ ॥

केचियमचो विसेसा ? सुहुमवणफ्फदिकाइयअपज्जत्तमया ।

वणफ्फदिकाइया विसेसाहिया ॥ १०५ ॥

केचियमचो विसेसो ? वादरवणफ्फदिकाइयमेया । वादरवणफ्फदिकाइयसु वादर  
णिगाइपदिहिदापदिहिदा ण अत्थि, तेमि वणफ्फदिकाइयवचपमावादा ।

णिगोदजीवा विसेसाहिया ॥ १०६ ॥

वादर वनस्पतिकायिकोस सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव असंग्पातगुणे  
हैं ॥ १०२ ॥

गुणकार कितना है ? असंग्पात लोकप्रमाण है ।

सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोमे सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव  
संग्पातगुण हैं ॥ १०३ ॥

गुणकार कितना है ? संग्पात समयप्रमाण है ।

सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोमे सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव विशेष अधिक  
हैं ॥ १०४ ॥

विशेष कितना है ? सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवोंके बराबर है ।

सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोस वनस्पतिकायिक जीव विशेष अधिक हैं ॥ १०५ ॥

विशेष कितना है ? वादर वनस्पतिकायिक जीवोंके बराबर है । वादर वनस्पति  
कायिक जीवोंमें वादर निगाइ प्रतिष्ठित अग्रनिष्ठित जीव नहीं हैं क्योंकि उनके  
वनस्पतिकायिक संज्ञाका अभाव है ।

वनस्पतिकायिकोस निगोद जीव विशेष अधिक हैं ॥ १०६ ॥



कचियमेसो विसेसो ? बाह्वरथपुत्रदिपचयसरीरेदि बाह्वरथिगोत्रपदिदिदिदि य  
पञ्चमचा ।

जोगाणुवादेण सञ्चत्योवा मणजोगी ॥ १०७ ॥

कुदा ? दबाण संछे जदिमायप्पमाणचादे ।

वचिजोगी सम्भेज्जगुणा ॥ १०८ ॥

कुदो ? पदरंगुत्तस्स मय्ज्जदिमागय वचिजोगिअवहारकानेण मखेज्जपदरंगुत्तमेसे  
मय्ज्जगिअवहारकाले मागे दिदे सपेज्जकूवावत्तमादे ।

अजोगी अणत्तगुणा ॥ १०९ ॥

खे गुणगारो ? ममवत्तिदिदिदि अणत्तगुणा ।

विशेष कितना है ? बाह्वर वनस्पतिव्यत्येकरापीर तथा बाह्वर-निगोत्र प्रतिष्ठित  
जीवों सहित पर्याप्त शरीर मात्र प्राप्त जीवप्राप्तिप्रमाण वह विशेष है ।

विशेषार्थ—रूपर सूत्र ७५ की टीकामें बतलाया जा चुका है कि प्रकृत सूत्रोंमें  
वनस्पतिव्यतिक जीवोंके भीतर जब पकेन्द्रिय जीवोंका समावेश नहीं किया गया जो  
स्वयं अप्रतिष्ठित पर्याप्त प्रत्येककाय होते हुए भी बाह्वर निगोत्र जीवोंसे प्रतिष्ठित हैं ।  
जीवकाण्ड गाथा १९९ के अनुसार पृथ्वी जल अग्नि और वायुव्यतिक जीवों तथा  
केवली आहारक वक्ष नारदियोंके शरीरोंको छोड़ शय समस्त संसाधे पर्याप्त जीवोंके  
शरीर नियोजिषया जीवोंसे प्रतिष्ठित हैं । अतएव नियोत्र जीवोंके प्रमाण प्रकृतमें  
टीकाकार द्वारा बतलाये गये विशेष ज्ञान ठीक सब राशियोंका ग्रहण किया गया  
प्रतीत होता है ।

योगमार्ग्याके अनुसार मनोयोगी जीव सबमें स्तोत्र हैं ॥ १०७ ॥

क्योंकि वे देवोंके संख्यातमें मायप्रमाण हैं ।

मनोयोगियोंसे वचनयोगी संख्यातगुणें हैं ॥ १०८ ॥

क्योंकि प्रतरंगुत्तके संख्यातमें मायप्रमाण वचनयोगि अवहारकालसे संख्यात  
प्रतरंगुत्तप्रमाण मनोयोगि अवहारकालको प्राप्त करनेपर संख्यात रूप वपकाल  
होते हैं ।

वचनयोगियोंसे अयोगी जीव अनन्तगुणें हैं ॥ १०९ ॥

गुणकार कितना है ? ममवत्तिदिदिदि जीवसे अनन्तगुणा है ।

कायजोगी अणत्तगुणा ॥ ११० ॥

गुणमारो अमत्रसिद्धिर्हितो सिद्धेर्हितो सम्बन्धीवपदमवगमूलादो वि अणत्तगुणो ।

अभ्येन पयारेण योगप्याबहुअपरुवणवहुसुत्तरसुत्त मणदि—

सव्वत्थोवा आहारमिस्सकायजोगी ॥ १११ ॥ -

सुगमं ।

आहारकायजोगी सस्सेज्जगुणा ॥ ११२ ॥

क्रे गुणगारो ! दोष्णि रुवाभि ।

वेउन्वियमिस्सकायजोगी असस्सेज्जगुणा ॥ ११३ ॥

गुणगारा अगपदरस्स असस्सेज्जदिमागो ।

सत्त्वमणजोगी सस्सेज्जगुणा ॥ ११४ ॥

इदो ! विस्ससादो ।

अयोगियोस्से काययोगी अनन्तगुणं हँ ॥ ११० ॥

गुणकार अमव्यसिद्धिको सिद्धो और अर्ध जीवोके प्रथम अगमूत्त मी अनन्त गुणा हे । अन्व प्रकारसे योगमार्गजाकी अयेहा अस्यबहुत्वके निरूपणार्थ उत्तर सूत्र करते हैं—

आहारमिअन्नययोगी सबभे स्तोक हँ ॥ १११ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहारमिअन्नययोगियोस्से आहारकाययोगी संख्यातगुणे हँ ॥ ११२ ॥

गुणकार कितता है ? गुणकार दो रूप है ।

आहारकाययोगियोस्से वैक्रियिकमिअन्नययोगी असंख्यातगुणे हँ ॥ ११३ ॥

गुणकार अगप्रतरका असंख्यातको माग है ।

वैक्रियिकमिअन्नययोगियोस्से सम्पमनायागी संख्यातगुणे हँ ॥ ११४ ॥

क्योंकि, देसा स्वभावसे है ।

मोसमणजोगी सस्त्रेज्जगुणा ॥ ११५ ॥

इदो ! सञ्चमणजोगमद्वादो मोसमणजोगमद्वाप सस्त्रेज्जगुणादा सञ्चमण  
जोगपरिणमणवारेहिदो मोसमणजोगपरिणमणवाराण संस्रज्जगुणादा वा ।

सञ्च मोसमणजोगी सस्त्रेज्जगुणा ॥ ११६ ॥

एत्थ पुणं व दाहि पपारेहि संस्रेज्जगुणावत्स कारण वत्तम् ।

असञ्च मोसमणजोगी सस्त्रेज्जगुणा ॥ ११७ ॥

एत्थ वि पुण्विस्सं दुषिहकारणं वत्तम् ।

मणजोगी विसेसाहिया ॥ ११८ ॥

केषियमेत्तो विसेसो ! सञ्च मास सञ्चमोसमणजोगिमेत्तो विसेसो ।

सञ्चवचिजोगी सस्त्रेज्जगुणा ॥ ११९ ॥

इत्थं ! मणजोगिअद्वादो वचिजोगिअद्वाप सस्त्रेज्जगुणादा मणजोगिअद्वादिदो  
सञ्चवचिजोगवाराण संस्रेज्जगुणादा वा ।

सत्पमनोयोगियोसं मूषामनोयामी संख्यातगुणे ॥ ११५ ॥

क्योंकि सत्पमनायोगके कालका अपेक्षा मूषामनोयोगका काल संख्यातगुणा  
है अथवा सत्पमनायोगके परिणमणवारेकी अपेक्षा मूषामनोयोगके परिणमणवारे  
संख्यातगुण है ।

मूषामनोयोगियोसं सत्प मूषामनोयामी संख्यातगुणे ॥ ११६ ॥

यदा पूर्वंकं समाप्तं होनीं मकारणेसं संख्यातगुणत्वका कारण कहना चाहिये ।

सत्प मूषामनोयोगियोसं अत्थ मूषामनोयामी संख्यातगुणे ॥ ११७ ॥

यदा मी पूर्वंकं दापो मकारण कारण कहना चाहिये ।

अत्थ-मूषामनोयोगियोसं मनोयोगी विशेष अधिक है ॥ ११८ ॥

विद्यपि कितना है ! सत्प मूषा और सत्प मूषा मनायोगियोसं वरावर है ।

मनोयोगियोसं सत्पवचनयोगी संख्यातगुण है ॥ ११९ ॥

क्योंकि, मनोयोगिअद्वास वचनयोगिअद्वास संख्यातगुणा है अथवा मनायोग  
वारेसं सत्पवचनयोगवारे संख्यातगुण है ।

मोसवचिजोगी मस्त्रेञ्जगुणा ॥ १२० ॥

एष चि पुञ्च व द्विविहकारण वचम्न ।

सच्चमोसवचिजोगी सस्त्रेञ्जगुणा ॥ १२१ ॥

एष चि स षष कारण ।

वेत्तन्वियकायजोगी सस्त्रेञ्जगुणा ॥ १२२ ॥

इदो ? मण-वचिजागढाहितो कायजोगद्वार सस्त्रेञ्जगुणत्वादा ।

असच्चमोसवचिजोगी सस्त्रेञ्जगुणा ॥ १२३ ॥

इदो ? भीहृदियपञ्चतमीवाण गहवादे ।

वचिजोगी विसेसाहिया ॥ १२४ ॥

कचियमेक्षण ? सस्त्र मोम-सस्त्रमोसवचिजोगिमेक्षण ।

अजोगी अणतगुणा ॥ १२५ ॥

को गुणगारो ? अमवसिदिष्टिदि अणतगुणो ।

सत्यवचनयागियोसे मृपावचनयोगी सम्प्रातगुणे इ ॥ १२० ॥

यहां मी पूर्वके समान दोनों प्रकारका कारण कहना चाहिये ।

मृपावचनयोगियोसे सत्य मृपावचनयोगी सम्प्रातगुणे हैं ॥ १२१ ॥

यहां मी यही उपयुक्त कारण है ।

सत्य मृपावचनयागियोसे वैक्रियिककाययोगी सम्प्रातगुण इ ॥ १२२ ॥

क्योंकि मन वचनयोगकासोंसे काययोगका सम्प्रातगुणा है ।

वैक्रियिककाययोगियोसे अमत्य-मृपावचनयोगी सम्प्रातगुण इ ॥ १२३ ॥

क्योंकि यहां द्वीन्द्रिय वचन जीयोका ग्रहण किया गया है ।

अमत्य-मृपावचनयोगियोसे वचनयोगी विश्रप अधिक इ ॥ १२४ ॥

कितने मात्र विशेषतः अधिक है ? सत्य मृपा वार सत्यमृपा वचनयागिमात्र

विश्रपत अधिक है ।

वचनयोगियोसे अयोगी अनन्तगुणे हैं ॥ १२५ ॥

गुणकार कितना है ? अमत्यसिद्धिदि जीयोसे अनन्तगुणा है ।

कम्महयकायजोगी अणतगुणा ॥ १२६ ॥

को गुणगारो ? अमवसिद्धिर्हितो सिद्धिर्हितो मन्वजीवान पदमवगमसादो वि  
अपंतगुणो । कुत्रा ? अंतासुदुचगुणिदमभोगिरासिपमानेभोरद्धिसम्बजीवरासिमेवत्तादो ।

ओरालियमिस्सकायजोगी असंखेज्जगुणा ॥ १२७ ॥

का गुणगारो ? अंतासुदुचं ।

ओरालियकायजोगी सखेज्जगुणा ॥ १२८ ॥

सुगम ।

कायजोगी विसेसाहिया ॥ १२९ ॥

केत्थियमेधो विसेसा ? ससक्यवागिमेधो ।

वेदाणुवादेण सब्वत्थोवा पुरिसवेदा ॥ १३० ॥

कुत्रो ? सखेज्जपदरगुलोवद्धिवज्जगपदरप्पमानत्तादो ।

इत्थिवेदा सखेज्जगुणा ॥ १३१ ॥

अयोगियोसि कामककाययोगी अनन्तगुणे हैं ॥ १२६ ॥

गुणकार कित्ता है ? अमन्वसिद्धिर्हितो सिद्धो और सर्व जीवोंके प्रथम वर्गामूलसे  
जी अनन्तगुणा है क्योंकि वह अनन्तमुहूर्तसे गुणित अयोगिपश्चिममात्रसे अपवर्तित  
सर्व जीवपश्चिममात्र है ।

कामककाययोगियोसि औदारिकमिभकाययोगी असंख्यातगुणे हैं ॥ १२७ ॥

गुणकार कित्ता है ? गुणकार अनन्तमुहूर्तप्रमाण है ।

औदारिकमिभकाययोगियोसि औदारिककाययोगी संख्यातगुणे हैं ॥ १२८ ॥

यह एक सुगम है ।

औदारिककाययोगियोसि काययोगी विक्षेप अधिक हैं ॥ १२९ ॥

विक्षेप कित्ता है ? दोष काययागिप्रमाण है ।

वेदमार्गवाके अनुसार पुरुषवेदी सबमें स्तोत्र हैं ॥ १३० ॥

क्योंकि वे संख्यात प्रतरांगुणोंसे अपवर्तित जगप्रतरप्रमाण हैं ।

पुरुषवेदियोसि स्त्रीवेदी संख्यातगुणे हैं ॥ १३१ ॥

को गुणगारो ? सखेज्जा समया ।

अवगदवेदा अणतगुणा ॥ १३२ ॥

को गुणगारो ? अमवसिदिएहि अणतगुणो ।

णवुसयवेदा अणतगुणा ॥ १३३ ॥

को गुणगारो ? अमवसिदिएहिंता सिद्धेहिंतो सम्बन्धीबाण पढमवगमूलादेो  
अणतगुणो ।

वेदमगनाए अण्णेण पयारेण अप्याबहुअपरुवणहुसुचरसुचं भणदि—

पचिंदियतिरिन्स्वजोणिएसु पयद । सव्वत्थोवा सण्णिणवुसयवेद  
गम्भोवक्कतिया ॥ १३४ ॥

पठिदोवमस अण्णस्वेज्जदिभागमेचपदरगुलहि जगपदरम्मि मामे हिदे सण्णि  
णवुसयवेदगम्भोवक्कतिया अेण हंति तेण थोवा ।

सण्णिपुरिसवेदा गम्भोवक्कतिया सखेज्जगुणा ॥ १३५ ॥

गुणकार कितना है ? संख्यात समयप्रमाण है ।

श्रीबदियोंसे अपगतवेदी अनन्तगुणे हैं ॥ १३२ ॥

गुणकार कितना है ? अमवसिदिक श्रीबोंसे मगन्तगुणा है ।

अपगतवेदियोंसे नपुंसकवेदी अनन्तगुणे हैं ॥ १३३ ॥

गुणकार कितना है ? अमवसिदिकों सिद्धों और सर्व श्रीबोंके प्रथम वर्गमूलासे  
मगन्तगुणा है ।

वेदमार्गधामें अण्य प्रकारसे अप्याबहुत्वके निरूपणार्थे उत्तर सूत्र कहते हैं—

यहां पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनि श्रीबोंका अधिकार है । सही नपुंसकवेदी गर्मों  
पक्रान्तिक श्रीब सबमें स्तोत्र हैं ॥ १३४ ॥

शुक्ति पद्योपमके असख्यातमें भागमात्र प्रतरांगुलोंका जगप्रतरमें भाग वेनेपर  
संघी नपुंसकवेदी गर्मोंपक्रान्तिक श्रीबोंका प्रमाण होता है अत एव ये स्तोत्र हैं ।

सही नपुंसक गर्मोंपक्रान्तिकोंसे संघी पुरुषवेदी गर्मोंपक्रान्तिक श्रीब  
संख्यातगुणे हैं ॥ १३५ ॥

हुदा ! मष्ठीसु गम्भजसु शशुसयवेदाय पापय समवामावादा ।

सष्णिहृत्पिबेदा गन्भोवक्कतिया सस्वेज्जगुणा ॥ १३६ ॥

हुदो ! सष्णिगम्भज्रेसु पुरिसवेदपरिंता बहुआमं इत्यिवेदपाणमुवर्त्तमादा ।

सष्णिणवुंसयवेदा सम्मुच्छिमपज्जत्ता सस्वेज्जगुणा ॥ १३७ ॥

हुदो ! सष्णिगम्भज्रेहितो सष्णिगम्भुच्छिमाग सपन्वगुणचादो । सम्मुच्छिमेसु इत्यिव-पुरिसवेदा कतिव । हुदो वगम्भदे ! इत्यिव पुरिमवेदाय मम्मुच्छिमाभियारे अप्पा बहुगपरूवणामावादा ।

सष्णिणवुंसयवेदा सम्मुच्छिमपज्जत्ता असस्वेज्जगुणा ॥ १३८ ॥

को गुणगारा ! आवठियाप असस्वे-ज्जदिमागो । हुदो वगम्भदे ! परमगुरु वदेसादो ।

क्योंकि मष्ठी गर्भजोम नपुसकवधियोंकी प्राय समभावना नहीं है ।

सष्ठी पुरुषवेदी गर्भोपक्रान्तिकोमि मष्ठी स्त्रीवेदी गर्भोपक्रान्तिक जीव सम्भ्यात-गुणे हैं ॥ १३६ ॥

क्योंकि सष्ठी गर्भजोम पुण्यवधियोंसं स्त्रीवेदी जीव बहुत पाये जात हैं ।

संष्ठी स्त्रीवेदी गर्भोपक्रान्तिकोसे मंष्ठी नपुमरुवेदी सम्मुच्छिम पर्याप्त सक्यातगुणे हैं ॥ १३७ ॥

क्योंकि संष्ठी गर्भजोसे संष्ठी सम्मुच्छिम जीव सक्यातगुणे हैं । सम्मुच्छिम जीवोंमें स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी नहीं हैं ।

धृक्—यह कहासे जाना जाता है ?

समाधान—सम्मुच्छिमाधिकारमें स्त्रीवेदी और पुरुषवधियोंके मन्त्रबहुत्वका प्रकपय न करनेसे जाना जाता है ।

संष्ठी नपुंसकवेदी सम्मुच्छिम पर्याप्तोम संष्ठी नपुंसकवेदी सम्मुच्छिम अपर्याप्त जीव असक्यातगुणे हैं ॥ १३८ ॥

गुणकार कितना है ? भावकीके असक्यातमें भागवमाण है ।

धृक्—यह कहासे जाना जाता है ?

समाधान—यह परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है ।

सण्णिहत्थि-पुरिसवेदा गव्भोवक्कतिया असंखेज्जवासाठआ दो  
वि तुल्ला असखेज्जगुणा ॥ १३९ ॥

कच दोण्ह समाणत्तं ? असंखेज्जवामाउएसु इत्थि पुरिससुगलाम चर ससु  
पत्तीदो । पणुसपवडा सम्मुच्छिमा च असण्णिणो च सुविणत्तेरे वि ण उत्तम समवत्ति,  
असंखेज्जवामेव अत्रहत्थिपत्तादो । एत्थ गुणगारो पत्तिदावमस्स असंखेज्जदिमागो ।  
इदा वगम्मदो ? आइरियपरपरागपठवएसादो । एदम्हादो अइक्कतराशीण सखेसिं  
पत्तिदोवमस्स असंखेज्जदिमागमेचपदरगुलानि जगपदरभागहारो होदि । एत्थ पुण  
सखेज्जगुणाणि पदरगुलाणि मागहारो ।

अमण्णिणवुंसयवेदा गव्भोवक्कतिया सखेज्जगुणा ॥ १४० ॥

इदा ? मोइदियावरणसुओवसमस्स पत्तिदिएसु बहुआणममावडा ।

असण्णिपुरिसवेदा गव्भोवक्कतिया सखेज्जगुणा ॥ १४१ ॥

अमी नपुंसकपदी सम्मुच्छिम अपर्याप्तोमि अमी स्त्रीपदी च पुरुषपदी गर्भो-  
पक्रान्तिक अमस्यातवपापुष्क दानो ही सुत्थ अमस्यातगुणे हे ॥ १३९ ॥

प्रश्ना— दानोच समानता केम हे ?

समाधान— क्योंकि अर्धव्यातवर्षायुषोमे स्त्री पुरुष युगयोकी ही उत्पत्ति  
दाती है । नपुंसकपदी सम्मुच्छिम च अर्धवर्षी जीव स्थानमे भी वहाँ सम्मथ नहीं है,  
क्योंकि य अल्पव्यथाभावे निराकृत है । वहाँ गुणकार पश्योपमका अर्धव्यातवर्षी भाग है ।

श्रुत्वा— यह कहाँस ज्ञाना जाता है ?

समाधान— यह भाष्यापरम्परागत उपदेशसे ज्ञाना जाता है ।

इससे सब अतिक्रान्त राशिषोका जगप्रतरभागहार पश्योपमके अर्धव्यातवर्षी  
भागमात्र प्रतरांगुणप्रमाण होता है । किन्तु यहाँ सव्याप्त प्रतरांगुण भागहार है ।

उपर्युक्त श्रौतसे अमती नपुंसकपदी गर्भोपक्रान्तिक अमस्यातगुणे हे ॥ १४० ॥

क्योंकि मोइदियावरणका क्षयागच्छम पंचमिद्वयोमे बहुजोके नहीं होता ।

अमती नपुंसकपदी गर्भोपक्रान्तिकोमे अमती पुरुषपदी गर्भोपक्रान्तिक  
अस्यातगुण हे ॥ १४१ ॥



सुगममेव ।

असृष्टिहृत्पि वेदा गन्मोवक्कतिया सस्त्रेज्जगुणा ॥ १४२ ॥

असंखेज्जगताठअस्ति-पुरिसपेदरासिप्पडुडि आब असृष्टिहृत्पि वेदगन्मोवक्कतिया रासि पि ताव अगपदरमागहारो संखेज्जगणि पदरगुणाणि । सेसं सुगमं ।

असृष्टी णवुंसयवेदा सम्मुच्छिमपवज्जत्ता संखेज्जगुणा ॥ १४३ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जग समया । एत्थ अगपदरमागहारो पदरगुणस्स संखेज्जदिमागो ।

असृष्टिणणवुंसयवेदा सम्मुच्छिमा अपवज्जत्ता असंखेज्जगुणा ॥ १४४ ॥

को गुणगारो ? आबस्सियाए असंखेज्जदिमागो ।

कसायाणुवादेण सव्वत्थोवा अकसाई ॥ १४५ ॥

पह सूत्र सुगम है ।

असंखी पुरुषवेदी गर्भोपकान्तिर्कोसि असंखी श्रीवेदी गर्भोपकान्तिक संख्यात-गुण हैं ॥ १४२ ॥

असंख्यातवर्णोपक क्री पुरुषवेदराशिसे केकर असंखी श्रीवेदी गर्भोपकान्तिक राशि तक अगपदरका मागहार संख्यात पदरगुण है । होए सुवार्थ सुगम है ।

असंखी श्रीवेदी गर्भोपकान्तिर्कोसि असंखी नपुंसकवेदी सम्मुच्छिम पर्णाप्त जीव संख्यातगुणे हैं ॥ १४३ ॥

गुणकार कितना है ? संख्यात समयप्रमाण है । वहां अगपदरभागहार पदरगुणका संख्यातर्था भाग है ।

असंखी नपुंसकवेदी सम्मुच्छिम पर्णाप्तोसि असंखी नपुंसकवेदी सम्मुच्छिम अपर्णाप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ १४४ ॥

गुणकार कितना है ? आबखीके असंख्यातवे मागप्रमाण है ।

कसायमाणोवाके अनुसार अकसापी जीव सबमें स्तोक हैं ॥ १४५ ॥

सुगममद् ।

माणकसाई अणतगुणा ॥ १४६ ॥

गुणगारो सञ्चञ्जीयाण पढमवग्गमूलादो अणंतगुणा । सेस सुगम ।

कोधकसाई विसेसाहिया ॥ १४७ ॥

केषियमेत्तो विसेसो ? अणतो माणकसाईणं असंखेच्चदिमागा । का पढिमागा ?  
भाबळियाए असंखेच्चदिमागो ।

मायकसाई विसेसाहिया ॥ १४८ ॥

एस्य विसेसपमाणं पुञ्ज व वचञ्च ।

लोभकसाई विसेसाहिया ॥ १४९ ॥

सुगम ।

णाणाणुवादेण सञ्चत्थोवा मणपज्जवणाणी ॥ १५० ॥

इदो ? संखच्चदादो ।

पह छत्र सुगम है ।

अकपायी जीवोंसे मानकपायी जीव अनन्तगुण हैं ॥ १४६ ॥

गुणकार सब जीवोंके प्रथम वगमूमसे अनन्तगुणा है । शेष छत्रार्थ सुगम है ।

मानकपायियोंसे क्राधकपायी जीव विशेष अधिक हैं ॥ १४७ ॥

विशेष कितना है ? मानकपायी जीवोंके असंख्यातमें भाग अनन्तप्रमाण है ।  
प्रतिभाग क्या है ? भाबळीका असंख्यातमें भाग प्रतिभाग है ।

क्रोधकपायियोंमें मायाकपायी जीव विशेष अधिक हैं ॥ १४८ ॥

यहां विशेषका प्रमाण पूरे समान कहना चाहिये ।

मायाकपायियोंमें लोभकपायी विशेष अधिक हैं ॥ १४९ ॥

पह छत्र सुगम है ।

ज्ञानमार्गणाके अनुसार मनःपथमज्ञानी जीव सबमें स्थाव्र हैं ॥ १५० ॥

वर्षोंके वे सबयान हैं ।

## ओहिणाणी असस्त्रेज्जगुणा ॥ १५१ ॥

गुणगारा पलिदावमस्म असस्त्रेज्जदिमागा असस्त्रेज्जामि पलिदोवमपदमवग  
मूलाणि । कुदो ? सस्त्रेज्जगुणमिदधावतिपाण असस्त्रेज्जदिमागेणावद्विदपसिदावम  
पमाणत्ता ।

## आभिणिबोहिय-सुदणाणी दो वि तुल्ला विसेसाहिया ॥ १५२ ॥

को विसेसो ? ओहिणाणीन असस्त्रेज्जदिमामा ओहिणाणविरहदितिरिक्क मज्जुम  
सम्माद्विरासी ।

## विमगणाणी असस्त्रेज्जगुणा ॥ १५३ ॥

गुणगारो अगपदरस्त असस्त्रेज्जदिमागा असस्त्रेज्जामो सेवीओ । कुदो ?  
पसिदोवमस्त असस्त्रेज्जदिमागमेवपदंशुसेहि ओवद्विदअगपदरपमाणत्ता ।

## केवलणाणी अणंतगुणा ॥ १५४ ॥

मनःपर्यपहानिपेसे अबधिज्ञानी असस्त्रेज्जगुणे हँ ॥ १५१ ॥

गुणकार पदोपमके असस्त्रेज्जदिमाग असस्त्रेज्जामो सेवीओ । कुदो ?  
पसिदोवमस्त असस्त्रेज्जदिमागमेवपदंशुसेहि ओवद्विदअगपदरपमाणत्ता ।

अबधिज्ञानिपेसे आभिनिबोधिज्ञानी अंत अंतज्ञानी दोनो ही तुल्य विषय  
अधिक हँ ॥ १५२ ॥

विषय क्या हँ ? अबधिज्ञानिपेसे असस्त्रेज्जदिमाग अबधिज्ञानस रहित तिरिक्क  
व मज्जुम सम्पादित्ताधि विषेय हँ ।

मात-अंतज्ञानियाम विमगणाणी असस्त्रेज्जगुणे हँ ॥ १५३ ॥

गुणकार अगपदरस्त असस्त्रेज्जदिमाग असस्त्रेज्जामो सेवीओ । कुदो ?  
पसिदोवमस्त असस्त्रेज्जदिमागमेवपदंशुसेहि ओवद्विदअगपदरपमाणत्ता ।

विमगणाणिपेसे अंतज्ञानी अनन्तगुणे हँ ॥ १५४ ॥

गुणमारो अमत्रसिद्धिर्हि अप्तगुणो सिद्धानमसखेज्जदिमागो ।

मदिअण्णाणी सुदअण्णाणी दो वि तुल्ला अणत्तगुणा ॥ १५५ ॥

गुणमारो अमत्रसिद्धिर्हितो सिद्धेर्हितो सम्पन्नीषपट्टमवग्गमूल्लदो वि अप्तगुणो ।

इदा ? केवलणाणीहि ओवडिदे देवणसम्पजीवरासिपमाणत्तादो ।

सजमाणुवादेण सव्वत्थोवा सजदा ॥ १५६ ॥

इदो ? सखेज्जत्तादो ।

सजदासजदा असखेज्जगुणा ॥ १५७ ॥

गुणमारो पस्सिदोवमस्स असखेज्जदिमागो असखज्जाणि पस्सिदोवमपट्टमवग्ग-

मूलाणि । इदा ? सखेज्जरूपगुणिदअसखेज्जावलिओवडिदपस्सिदोवमपमाणत्तादो ।

णेव सजदा णेव असजदा णेव सजदासजदा अणत्तगुणा

॥ १५८ ॥

गुणकार अमत्रसिद्धिके जीवोंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके असंख्यातके भाग प्रमाण है ।

केवलज्ञानियोंसे मतिअज्ञानी और भ्रुतअज्ञानी दोनों ही मुख्य अनन्तगुणे हैं ॥ १५५ ॥

गुणकार अमत्रसिद्धिकोंसे सिद्धोंसे और सब जीवोंके प्रथम वगमूलसे भी अनन्तगुणा है क्योंकि वह केवलज्ञानियोंसे अपवर्तित कुछ कम सत्य जीवरक्षिप्रमाण है ।

संयममार्गानुसार संयत और सबमें स्थाक हैं ॥ १५६ ॥

क्योंकि वे संख्यात हैं ।

संयतोंसे सयतासयत अमत्रयातगुणे हैं ॥ १५७ ॥

गुणकार पस्योपमके असंख्यातके भाग असंख्यात पस्यापम प्रथम वर्गमूल है क्योंकि वह संख्यात रूपोंसे गुणित असंख्यात भावधियोंसे अपवर्तित पस्योपमप्रमाण है ।

सयतासयत जीवोंसे न सयत न असंयत न सयतासंयत ऐसे सिद्ध जीव अनन्तगुणे हैं ॥ १५८ ॥

गुणगारा अमामिद्विपदि अथतगुणो । कुदा ? असंखेज्जावह्निद्विसिद्धपमायत्तादो ।

असजदा अणत्तगुणा ॥ १५९ ॥

गुणगारा अणत्तानि सम्बन्धीवपत्तमपत्तमूलाणि । कुदा ? सिद्धावह्निद्वेस्य

सम्बन्धीवराभिचादो । अण्पण पयारेण अप्पावहुगापरूवपहुसुत्तरसुत्त मपदि—

सञ्चत्योवा सुद्धमसापराहयसुद्धिसजदा ॥ १६० ॥

सुगम ।

परिहारसुद्धिमजदा संखेज्जगुणा ॥ १६१ ॥

गुणगारा संखे-ब्रह्ममया ।

जहाक्त्वादविहारसुद्धिसजदा संखेज्जगुणा ॥ १६२ ॥

का गुणगारो ? संखे-ब्रह्ममया ।

सामाहय-श्लेदोवद्वावणसुद्धिसजदा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा

॥ १६३ ॥

गुणकार ममध्यसिद्धिक जीयास अनन्तगुणा है क्योंकि यह असंख्यातसे ( संख्यातसेपतास ) अपवर्तित सिद्धराशिप्रमाण है ।

मिद्धोसे अमंयत जीव अनन्तगुणे हैं ॥ १५९ ॥

गुणकार अमन्त सर्व जीव प्रथम वर्गमूला है क्योंकि यह सिद्धोस अपवर्तित कुछ कम सर्व जीव राशिप्रमाण है । मध्य प्रकारसे अमन्तवहुत्पक निकल्पयाय उत्तर एवं कहत है—

सहममाम्बरापिकु शुद्धिमंयत जीव सर्वमे स्तोके हैं ॥ १६० ॥

यह एवं सुगम है ।

सहममाम्बरापिकु संयतोमे परिहारशुद्धिसंयत संख्यातगुण है ॥ १६१ ॥

गुणकार संख्यात समय है ।

परिहारशुद्धिसंयतोमे यथाग्यात्परिहारशुद्धिमयत जीव संख्यातगुणे हैं ॥ १६२ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय है ।

यथाग्यात्परिहारशुद्धिमंयतोमे मामाधिकशुद्धिसंयत और उदाहरणावनाशुद्धिसंयत जानों ही तुल्य संख्यातगुण हैं ॥ १६३ ॥

को गुणगारो ! सखेन्ना समया ।

सजदा विसेसाहिया ॥ १६४ ॥

सुगम ।

सजदासजदा असखेज्जगुणा ॥ १६५ ॥

को गुणगारो ! पत्तिदोचमस्त असखेन्नादिमागो ।

णेव सजदा णेव असजदा णेव सजदासजदा अणतगुणा  
॥ १६६ ॥

को गुणगारो ! पुच्च परुविदो ।

असजदा अणतगुणा ॥ १६७ ॥

सुगम । सखमद्धिर्दंभीबाणमप्याबहु प्र मणिय तिन्त्र-मंद-मन्निममेण्ण ह्दिदसंजमस्त  
अप्याबहुगपरूपणहुसुचरसुर्ष मणदि—

गुणकार क्या है ? सख्यात समय है ।

उक्त दोनों जीवोंसे सयत जीव विशेष अधिक हैं ॥ १६४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सयतोंसे सयतासंयत असख्यातगुणे हैं ॥ १६५ ॥

गुणकार क्या है ? पर्योपमका असख्यातका भाग गुणकार है ।

सयतासयतोंसे न सयत न असयत न सयतामयत ऐमे मिद्ध जीव अनन्तगुणे  
हैं ॥ १६६ ॥

गुणकार क्या है ? पूर्वप्रकथित (असख्यसिद्धिक जीवोंसे अनन्तगुणा) गुणकार है ।

उनसे असंयत जीव अनन्तगुणे हैं ॥ १६७ ॥

यह सूत्र सुगम है । संयममे स्थित जीवोंके अस्यबहुत्वको कहकर तौम मम्  
मप्यम मेदसे स्थित संयमके अस्यबहुत्वके निकरूपार्थ उक्त सूत्र कहते हैं—

सव्वत्थोवा मामाइयच्छेदोवट्टावणसुद्धिसजदस्स जहणिया  
चरित्तलद्धी ॥ १६८ ॥

एवं मन्त्रब्रह्मण सामाह्यच्छेदावट्टावणसुद्धिसजमस्य सद्धिहाण फस्स हादि ।  
मिच्छत्तं पद्धिप-अमाणसजदस्स चरिमममए । एत्तं मन्त्रब्रह्मण पद्धिवात्तहाणमादि क्कम्भ  
उवद्धिक्कमेण असंखे-जलोगमेत्तसु सामाह्यच्छेदावट्टावणसुद्धिहाणसु गदसु तदो परिहार  
सुद्धिसजदस्स पद्धिवात्तहाणसुद्धिहाणमेण समान सामाह्य-छेदावट्टावणसुद्धिसजमसद्धिहाण  
होदि । तदा दोह सजमण ठाणाणि छरद्धीए गिरंतरममसंखेजलोगमत्ताणि सजमसद्धि  
हाणाणि गत्तुण परिहारसुद्धिसजमसद्धिहाणसुक्कस्स होदि । तदो त्तु त्तयेव यक्कसु पुवा  
उपरि गिरंतरउवद्धिक्कमेण असंखेजलोगमेत्ताणि सामाह्यच्छेदावट्टावणसुद्धिसजमसद्धि  
हाणाणि गच्छति । तदो असंखेजलोगमेत्ताणि उट्टाणाणि अतरिद्धं सुद्धिसजपराह्य  
सुद्धिसजमसस्स ब्रह्मण पद्धिवात्तहाण होदि । तदो अनत्तगुणाए बद्धीए सुद्धिसजप  
राह्यसुद्धिसजमसद्धिहाणाणि अतोसुद्धं गत्तुण यक्कति । किमइमेदाणि अतोसुद्धं

सामायिक-छेदोपस्थापनसुद्धिसपत्तकी अपन्य परिग्रहच्छि सव्वमे स्थाक हे  
॥ १६८ ॥

शंका—सामायिक-छेदोपस्थापनासुद्धिसंपमका यह सर्वत्राप्य कश्चिस्थान  
किसके होता है ?

समाधान—यह स्थान मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाले सपत्तके अन्तिम समयमें  
होता है ।

इस सर्वत्राप्य प्रतिपातस्थानको भाङ्गि करते वहसुद्धिसंयमसे मत्संख्यात लोकमात्र  
सामायिक-छेदोपस्थापनाकाश्चिस्थानको ध्यतीत होनेपर पश्चात् परिहारसुद्धिसंयमके  
प्रतिपात अथवा कश्चिस्थानके समान सामायिक-छेदोपस्थापनासुद्धिसंयम कश्चिस्थान  
होता है । तत्पश्चात् दोनों संयमोंके स्थान छह सुद्धिपोंके क्रमसे गिरन्तर मत्संख्यात  
लोकमात्र संयमकश्चिस्थानको विहाकर उत्तर पद्धिहारसुद्धिसंयमकश्चिस्थान होता है ।  
पश्चात् उनके बहीपर विधान्त होनेपर पुनः भागे गिरन्तर छह सुद्धिपोंके क्रमसे  
मत्संख्यात लोकमात्र सामायिक-छेदोपस्थापनासुद्धिसंयमकश्चिस्थाप जाते हैं । तत्पश्चात्  
मत्संख्यातलोकमात्र छह स्थानोंका अन्तर करके सूक्ष्मसाम्प्रदायिकसुद्धिसंयमका अथवा  
प्रतिपात कश्चिस्थान होता है । पश्चात् अनन्तगुणित सुद्धिसे सूक्ष्मसाम्प्रदायिकसुद्धि  
संयमकश्चिस्थान अन्तर्मुहूर्त जाकर एक जाते हैं ।

शंका—ये सूक्ष्मसाम्प्रदायिकसुद्धिसंयमकश्चिस्थान अन्तर्मुहूर्तमात्र किस





प्यचीण । एसा परिहारसुद्विसवमसदी जहणिया कस्स होदि ? सम्पसकिलिहस्स  
सामाहयछेदोवट्टावणामिसुहणरिमममयपरिहारसुद्विमवदस्स' ।

तस्सेव उक्कस्सिया चरित्तलदी अणतगुणा ॥ १७० ॥

कुदा ? अर्मखे-वडागमेचछट्टाणाणि उवरि गत्तुप्यचीण ।

सामाहयछेदोवट्टावणसुद्विसजदस्स उक्कस्सिया चरित्तलदी  
अणंतगुणा ॥ १७१ ॥

कुदो ? तचो उवरि अर्मखे-वडागमेचछट्टाणाणि गत्तु सामाहयछेदोवट्टावण  
सुद्विसवमस्स उक्कस्सलदीण ससुप्यचीण । एसा कस्स होदि ? चरिमममयअभि-  
पहिस्स ।

सुहममांपराहयसुद्विमजमस्स जहणिया चरित्तलदी अणत  
गुणा ॥ १७२ ॥

आकर उत्पन्न हुरं है ।

सुद्धा—यह अधम्य परिहारसुद्विसवमस्य किचके होती है ?

समाधान—उक्त कथि सर्वसंविद्ध ए सामायिक-छेदोपस्थापनासुद्विसवमके  
अभिसुद्ध ह्ये अस्तिमसमपवर्ती परिहारसुद्विसवतके होती है ।

उमी ही परिहारसुद्विसवतकी उत्कृष्ट चरित्रस्यि अनन्तगुणी है ॥ १७० ॥

क्योंकि उसकी उत्पत्ति असेवपात ओकमात्र छह स्थान ऊपर आकर है ।

सामायिक-छेदोपस्थापनासुद्विसवतकी उत्कृष्ट चरित्रस्यि अनन्तगुणी है  
॥ १७१ ॥

क्योंकि वससे ऊपर असेवपात ओकमात्र छह स्थान आकर सामायिक  
छेदोपस्थापनासुद्विसवमकी उत्कृष्ट कथि की उत्पत्ति होती है ।

सुद्धा—यह कथि किचके होती है ?

समाधान—अस्तिमसमपवर्ती अभिसुद्विसवतके होती है ।

सुद्धासाम्प्रायिकसुद्विसवमकी अधम्य चरित्रस्यि अनन्तगुणी है ॥ १७२ ॥

इदो ! अमखेन्द्रलागमेचछद्वाणाणि अतरिदूणपचीदो । एमा कस्त होदि ?  
उवसमसेदीदो भोपरमाणचरिमसमयसुदुमसांपराइयस्म ।

तस्सेव उक्कस्मिया चरित्तलद्धी अणतगुणा ॥ १७३ ॥

इदो ! अणतगुणाण सेदीए बहन्मादो उवरि अतोमुदुत्त गनूणपचीदो । एसा  
कस्त होदि ? चरिमसमयसुदुमसांपराइयखवगस्त ।

जहाक्खादविहारसुद्धिसजदस्त अजहण्णअणुक्कस्सिया चरित्त  
लद्धी अणतगुणा ॥ १७४ ॥

इदो ! अमखेन्द्रलागमेचछद्वाणाणि अंतरिदूण समुप्पचीदो । किमइमेसा लद्धी  
एयपियप्पा ? क्खयायामायेण बद्धि हाणिकारणाभावादो । तेणेव कारणेण अजहण्णा  
अणुक्कस्सा च । एत्थ केण कारणेण सत्रमलद्धिद्वानुप्पापडुमं भविदि ? पुत्तदे—

क्योंकि उसकी उत्पत्ति असंख्यात लोकमात्र छद्द रथानोंका भन्तर करके है ।

प्रश्न—यह किसके होती है ?

समाधान—उपदामधेनीस उत्तरनेपास भक्तिमसमयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकक  
हार्ती है ।

उसी ही सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिमयमकी उत्कृष्ट चरित्रलक्षि अनन्तगुणी  
है ॥ १७३ ॥

क्योंकि अद्ययक रूपर अन्तगुणित भर्णीरूपमे अन्तमुह्यत जाकर उसकी  
उत्पत्ति है ।

प्रश्न—यह किसके हार्ती है ?

समाधान—यह भक्तिमसमयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक क्षयक होनी है ।

यथास्पातविहारशुद्धिमयसकी अक्षयन्यानुत्कृष्ट चरित्रलक्षि अनन्तगुणी है  
॥ १७४ ॥

क्योंकि उसकी उत्पत्ति असंख्यात लोकमात्र छद्द रथानोंका भन्तर करके है ।

प्रश्न—यह लक्षि एक विकल्परूप क्यों है ?

समाधान—क्योंकि कथावक्ता भयाप हा ज्ञानम उसकी बुद्धि-दानिक कारणका  
भयाप हा गया है । इसी कारण वह अक्षयन्यानुत्कृष्ट भी है ।

प्रश्न—यही किस कारणम अक्षयलक्षिशयानोंका अक्षयवृत्त कहा गया है ?

सबदान जीवप्पाबहुगसाहयकृमागद । अस्म सजमस्त लद्धिद्वागानि बहुप्राणि त्व्य  
भीषा वि बहुमा चेष, अस्म घोवाणि त्व्य घोवा चेष ह्येति चि । अदि एर्' (तो) बहा  
कसादपिहारसुद्धिमंसदाण सम्भरवाच पम अदे, विष्णियप्येगसजमलद्धिद्वापचादो । अ  
पम दोषो, अद्मस्मिद्गु ठसि बहुगुपदेसादो ।

दमणाणुवादेण सब्वत्योवा ओहिदसणी ॥ १७५ ॥

हुदो ! पलिदोवमस्म असंखेज्जदिमागचादो ।

चक्खुदसणी असखेज्जगुणा ॥ १७६ ॥

गुणगगरो जगपदरस्स असखेज्जदिमागो असंखेज्जाओ सेदीमो । हुदो !

असखेज्जपदरगुलोवहिदअयपदरप्पमाणचादो ।

केवलदसणी अणतगुणा ॥ १७७ ॥

गुणघातो अमराविद्धिदि अणतगुणो । हुदो ! जगपदरस्स असंखेज्जदिमागो

समाधान—इस शंकाका उत्तर करते हैं। सपत्त जीवोंके अल्पबहुत्वके साधनार्थ  
उक्त लघ्विस्थानोंका अल्पबहुत्व प्राप्त हुआ है। जिस सपत्तके लघ्विस्थान बहुत हैं  
उसमें जीव भी बहुत ही हैं तथा जिस सपत्तके लघ्विस्थान थोड़े हैं उसमें जीव भी  
थोड़े ही हैं।

शंका—यदि ऐसा है तो यथाश्वातविहारण्डिसंपत्तोंके सभमें स्तोत्रपत्रका  
मसंग भावेगा क्योंकि उनके विधिकस्य एक संपत्तलघ्विस्थान है।

समाधान—यह कोई दोष नहीं है क्योंकि वाक्यका भाष्य करके उनके  
बहुत होनेका उपदेष्टा किया गया है।

दर्शनमार्गणाके अनुमार अविधिदर्शनी सभमें स्तोत्र हैं ॥ १७५ ॥

क्योंकि वे पश्योपमके असंख्यातके मागप्रमाण हैं।

पशुदर्शनी असंख्यातगुणे हैं ॥ १७६ ॥

गुणकार जगप्रतरके असंख्यातके माग असंख्यात जगमेविर्था है क्योंकि यह  
असंख्यात मत्तर्तुओंसे अपवर्तित जगप्रतरप्रमाण है।

केवसदर्शनी अनन्तगुणे हैं ॥ १७७ ॥

गुणकार समस्यासिद्धि जीवोंसे अन्तगुणा है क्योंकि यह जगप्रतरके

बहिद्विद्विद्वप्यमापत्तादो ।

अचक्षुदसणी अणतगुणा ॥ १७८ ॥

गुणगारो अमबसिद्धिर्हितो मिद्धेर्हितो मण्वत्रीनाण पढमबग्गमूलादा वि अप्त  
गुणा । कारण सुगम ।

लेस्ताणुवादेण सब्वत्योवा सुक्कलेस्सिया ॥ १७९ ॥

हुदा ? पल्लोवमस्स अमंखेज्जदिभागप्यमाणत्तादो । तं पि कुदो ? सुद्ध सुमलेस्साणं  
समवाएण कत्थ वि केसिं पि ममवाणे ।

पम्मलेस्सिया असखेज्जगुणा ॥ १८० ॥

गुणगारो अणपदरस्म अमंखेज्जदिभागो असखेज्जाभा सेठीभा । हुदा ? पल्लो-  
वमस्स असंखे अदिभागेण गुण्णिदपदरंगुलाबहिद्विद्वअणपदरप्यमापत्तादो ।

तेउलेस्सिया सम्वेज्जगुणा ॥ १८१ ॥

असख्यातये भागस अपबलित सिद्धो क बराबर ह ।

केवलदशनिषोसे अचक्षुदशनी अनन्तगुणे ह ॥ १७८ ॥

गुणकार अमप्यसिद्धिर्हितो मिद्धो तथा सर्व जीयो क प्रथम बगमूलासे भी अतन्त  
गुणा है । कारण सुगम है ।

लेण्यामार्गणारे अनुमार शुक्ललेखायाल सुबमे स्ताक ह ॥ १७९ ॥

क्योंकि व पस्यापमक असख्यातये भागप्रमाण है ।

संज्ञा— बर भी बने ?

ममाधान—क्योंकि अनिशय शुभ सख्याभावा समुदाय कहींपर किम्हींक ही  
सम्भव है ।

शुक्ललेखायालोगे पद्यलखायाल अमप्यातगुण है ॥ १८० ॥

गुणकार अणप्रतरक असख्यातये भाग असख्यात अणधनी है क्योंकि बर  
पस्यापमक असख्यातये भागस शुक्ति प्रतरांगुणस अप्यनिंत अणप्रतरप्रमाण है ।

पद्यलखायालोगे मत्रालेखायाल मप्यातगुण है ॥ १८१ ॥

कुदा ! परिधिदियतिरिक्तसुखाशिनीं सप्तज्वदिभागल पम्मलस्मियदम्बम वेउ  
लेस्सियदम्ब मागे दिद सप्तज्वरुबोबलमादो ।

अलेस्सिया अणतगुणा ॥ १८२ ॥

गुणगारो अमरमिद्धिदि अणतगुणा । कारण सुगम ।

काउलेस्मिया अणतगुणा ॥ १८३ ॥

गुणगारो अमरमिद्धिदिदिता मिद्धेदिता मन्त्रनीवपडमग्गमूलादा वि अणतगुणा ।  
कारण सुगम ।

णील्लेस्सिया विसेसाहिया ॥ १८४ ॥

कप्पिया विमेमा ? अणता काउलेस्मियाणममस्सेज्वदिभागा । का पडिभागा ?  
आवसियाण अमलेज्वदिभागा ।

किण्णलेस्सिया विमेसाहिया ॥ १८५ ॥

कप्पिया विमेमा ? अणता बील्लेस्मियाणममस्सेज्वदिभागा । का पडिभागा ?  
आवसियाण असयुज्वदिभागा ।

क्याकि एवमिद्विषयतिषण पानिमतिपोंक सत्पातण मागप्रमाण पम्मलस्यावालोके  
द्रव्यता तज्जासेइयावालोके द्रव्यमे माग एवपर संख्यात रूप उपलब्ध होते हैं ।

सज्जातइयावालोके सइयारहित अणान् अवागी व मिद्ध जीर अनन्तगुणे हैं ॥ १८२ ॥

गुणकार अमममिद्धोस ममन्तगुणा है । कारण सुगम है ।

अतन्पियेस कापातलइयावाल अनन्तगुण है ॥ १८३ ॥

गुणकार अमममिद्धिदोस मिद्धोमे भीर मर जीवाके प्रथम पणमूमम भी  
ममन्तगुणा है । कारण सुगम है ।

कापातलइयावालोम नील्लइयावाल विद्युप अधिक हैं ॥ १८४ ॥

विशय चित्तता है ? कापातलइयावालोके अमममिद्धोस माग अमन्त है । प्रतिभाग  
कया है ? भावनीता अलंकारणवा माग प्रतिभाग है ।

नील्लइयावालोम कुण्णइयावाल विद्युप अधिक है ॥ १८५ ॥

विशय चित्तता है ? विशय अमन्त है जा नील्लइयावालोके अमममिद्धोस माग  
प्रमाण है । प्रतिभाग कया है ? भावनीता अलंकारणवा माग प्रतिभाग है ।

भवियाणुवादेण सब्वत्योवा अभवसिद्धिया ॥ १८६ ॥

कुदो ? बहण्णनुत्तात्तत्पमानत्तादा ।

णेव भवमिद्धिया णेव अभवसिद्धिया अणत्तगुणा ॥ १८७ ॥

गुणगारो अभवसिद्धिएहि अणत्तगुणो । कारण सुगम ।

भवसिद्धिया अणत्तगुणा ॥ १८८ ॥

सुगम ।

मम्मत्ताणुवादेण सब्वत्योवा सम्मामिच्छाहट्ठी ॥ १८९ ॥

साम्भामम्माहट्ठी सम्भत्थाया चि क्खिण्ण पस्सिद ? न, विवरीयाहिणिवेसेण वेसिं  
ममाणं पइच्च मिच्छाहट्ठीणमत्तम्मात्तादो, भूदपुब्बिय षय पइच्च सम्माहट्ठीणमत्त-  
म्मात्तादो वा । सेम सुगम ।

सम्माहट्ठी असस्वेज्जगुणा ॥ १९० ॥

गुणगारो भावलिपाए अमत्त-उदिमागो । कारण सुगम ।

मध्यमार्गणाके अनुमार अमध्यसिद्धिक जीव मधमे स्तोके हैं ॥ १८६ ॥

क्योंकि वे अमध्य युक्तमत्तप्रमाण हैं ।

अमध्यसिद्धिकोसे न मध्यमिद्धिक न अमध्यमिद्धिक ऐसे सिद्ध जीव अनन्तगुणे  
हैं ॥ १८७ ॥

गुणकार अमध्यसिद्धिकोसे अमत्तगुणा है । कारण सुगम है ।

उक्त जीवोसे मध्यमिद्धिक जीव अनन्तगुणे हैं ॥ १८८ ॥

यह सब सुगम है ।

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुमार सम्यग्मिध्याहटि जीव सधमे स्तोके हैं ॥ १८९ ॥

श्रुति — सासात्तसम्यग्दृष्टि जीव सधमे स्तोके हैं एसा क्यों नहीं कहा ?

समाधान—नहीं क्योंकि विपरीताभिभिषेदास समझी समानताकी अपेक्षा कर  
मिध्याहटियोंमें अमत्तमात्र हो जाता है अथवा भूतपूर्व मपका भाव्यकर सम्यग्दृष्टियोंमें  
अमत्तमात्र हो जाता है । दोष सूत्राथ सुगम है ।

सम्यग्मिध्याहटियोंसे सम्यग्दृष्टि जीव अमत्तमात्र गुणे हैं ॥ १९० ॥

गुणकार भावलीका अमत्तमात्रमात्र भाग है । कारण सुगम है ।

सिद्ध अणतगुणा ॥ १९१ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विष्टी अणतगुणा ॥ १९२ ॥

एव पि सुगम । अध्येष पयारेण सम्मत्प्यावहुगपरूपणद्वयानसुप्तं मन्दि—

सव्वत्थोवा सामणसम्माद्विष्टी ॥ १९३ ॥

सुगम ।

सम्माभिच्छाद्विष्टी सस्वेज्जगुणा ॥ १९४ ॥

एते गुणगारो ! मंसेञ्जा ससया ।

उवममसम्माद्विष्टी असस्वेज्जगुणा ॥ १९५ ॥

एते गुणगारो ! आससियाए असस्वेञ्जदिमागा ।

स्वइयसम्माद्विष्टी असस्वेज्जगुणा ॥ १९६ ॥

गुणगारो आससियाए असस्वेञ्जदिमागो ।

सम्पगदृष्टियोसे सिद्ध जीव अनन्तगुणो ह्ये ॥ १९१ ॥

एह एव सुगम है ।

मिद्धोसे मिध्यादृष्टि अनन्तगुणे ह्ये ॥ १९२ ॥

एह एव ही सुगम है । सम्यक्कारणे सम्यक्त्वमार्गवामे अस्य बुद्धिहेतुः विकल्पव्याप  
उत्तर एव कहते हैं—

सामादनसम्यग्दृष्टि सवमे स्ताफ ह्ये ॥ १९३ ॥

एह एव सुगम है ।

सामादनसम्यग्दृष्टियोमे सम्यग्मिध्यादृष्टि सस्यगतगुणो ह्ये ॥ १९४ ॥

गुणकार क्या है ? सत्यात्त समय गुणकार है ।

सम्यग्मिध्यादृष्टियोमे उपसमसम्यग्दृष्टि असंख्यातगुणो ह्ये ॥ १९५ ॥

गुणकार क्या है । आससीका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

उपसमसम्यग्दृष्टियोमे आससीकासम्यग्दृष्टि असंख्यातगुणे ह्ये ॥ १९६ ॥

गुणकार आससीका असंख्यातवां भाग है ।

वेदगसम्माहट्टी असखेज्जगुणा ॥ १९७ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असखेज्जदिमागो ।

सम्माहट्टी विसेसाहिया ॥ १९८ ॥

केसियमेचो विमेमा ? उबमम खइयसम्माइड्डिमेचो ।

सिद्धा अणतगुणा ॥ १९९ ॥

सुगम ।

सण्णियाणुवादेण सञ्चत्योवा सण्णी ॥ २०० ॥

कुदो ? पदरस असखेज्जदिमागप्पमायचादो ।

णेव सण्णी णेव असण्णी अणतगुणा ॥ २०१ ॥

गुणमारो अमवसिद्धिपिह अणतगुणो । कारण सुगमं ।

असण्णी अणतगुणा ॥ २०२ ॥

सुगम ।

झायिकसम्यग्दट्टियोसे बद्धकसम्यग्दट्टि असस्पातगुणे हैं ॥ १९७ ॥

गुणकार क्या है ? भाषाहीका असंख्यातर्षां माग गुणकार है ।

बेदकसम्यग्दट्टियोसे सम्यग्दट्टि विशेष अधिक हैं ॥ १९८ ॥

विशेष कितना है ? उपशमसम्यग्दट्टि भीरु झायिकसम्यग्दट्टि जीर्णोके बराबर है ।

सम्यग्दट्टियोसे सिद्ध अनन्तगुणे हैं ॥ १९९ ॥

यह स्रज सुगम है ।

सङ्घिमार्गभाके अनुमार सङ्घी जीव सभमें स्तोक हैं ॥ २०० ॥

क्योंकि ये जगत्तरके असंख्यातर्षं मागप्रमाण हैं ।

सङ्घी जीवोंसे न सङ्घी न असङ्घी ऐसे जीव अनन्तगुणे हैं ॥ २०१ ॥

गुणकार बसव्यसिद्धिक जीवोंसे जगत्तगुणा है । कारण सुगम है ।

उक्त जीवोंसे असङ्घी जीव अनन्तगुणे हैं ॥ २०२ ॥

यह स्रज सुगम है ।



आहाराणुवादेण सव्वत्थोवा अणाहारा अवधा ॥ २०३ ॥

कृदो ? मिद्धाजोगीण गहणादो ।

वधा अणंतगुणा ॥ २०४ ॥

गुणगारो अनवापि सच्चञ्जीवायं पहमवगमूसाणि । कुशा ? मच्चञ्जीवावम-  
संत्ते अदिमागस्म अमतमागचादो ।

आहारा असस्सेज्जगुणा ॥ २०५ ॥

गुणगारा अंतोसुद्धुच । कृदो ? वंचगभवाहारदग्गेण आहारदग्गे मान विद  
अंतासुद्धुचुवममादा ।

एवमप्यावहुगति मन्तमभिप्रेगणार ।

आहारमार्गशाके अनुहार अनाहारक प्रथमक जीव मधमे स्तोत्र ई ॥ २०३ ॥

क्योंकि यहाँ सिद्धों और मपोपी जीवोंका प्रहण किया गया है ।

अनाहारक अवन्वच्छेसे अनाहारक वचक जीव अनन्तगुणे हैं ॥ २०४ ॥

गुणकार सर्व जीवोंके अनन्त प्रथम वर्णमूख है क्योंकि सर्व जीवोंके असंख्यातमें  
भागके अनन्तभागत्व है । अतएव अनाहारक वचक जीव सर्व जीव राशिके असंख्यातमें  
भाग हैं और अनाहारक अर्धवचक अनन्तमें भाग हैं । अतएव उन दोनोंके बीच गुणकारका  
प्रमाण अनन्त होगा ही ।

अनाहारक वंचछेमें आहारक जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ २०५ ॥

गुणकार अन्तर्मुहूर्त है क्योंकि वचक अनाहारक द्रव्यका आहारक द्रव्यमें  
भाग अन्तपर अन्तर्मुहूर्त उपलब्ध होता है ।

इस प्रकार मध्यवहुरत्व अनुयोगकार समाप्त हुआ ।

## महादण्डो

एतो सब्वजीवेसु महादण्डो काद वो भवदि ॥ १ ॥

ममचेसु एककारमअणियोगहारसु किमइममो महादण्डो नाणुमाहवभा ?  
 बुचदे— सुदाबंधस्त एककारसअणियोगहारणिबद्धस्त वूलिया काऊल महादण्डो बुचदे ।  
 वूलिया नाम किं ? एककारसअणियोगहारसु स्रदत्थस्त विमेषियुल परूषणा वूलिया ।  
 अदि एष तो वेसा महादण्डो वूलिया, अप्पाबहुगणिओगहारस्रदत्थं मोतूनण्णत्थ  
 बुचत्थानमपरूषणादा चि बुचे बुचदे— ण च एतो गियमो अतिय सम्भानिओगहार  
 स्रदत्थान विसेसपरूषिया च वूलिया चि, किंतु एकमेव दाहि सम्भेहि वा अणि-  
 ओगहारहि स्रदत्थान विसेसपरूषणा वूलिया नाम । तेणेसो महादण्डो वूलिया वेद,

इमसे आगे सर्व जीवोंमें महादण्डक करना योग्य है ॥ १ ॥

श्रद्धा—ग्यारह अनुयोगधारोंके समाप्त होनेपर इस महादण्डकको कहमका  
 प्रारम्भ किसलिये किया जाता है ?

समाधान—उपयुक्त शकाका उत्तर वत है— ग्यारह अनुयोगधारोंमें विचर  
 सुदबन्धकी वूलिका करके महादण्डक करते हैं ।

श्रद्धा—वूलिका किले करते हैं ?

समाधान—ग्यारह अनुयोगधारोंसे सुचित भयोंकी विज्ञापता कर प्ररूपणा  
 करना वूलिका कही जाती है ।

श्रद्धा—यदि ऐसा है तो यह महादण्डक वूलिका मही कहा जा सकता क्योंकि,  
 यह भयबहुत्वानुयोगधारसे सुचित भयोंको छोड़कर अन्य अनुयोगधारोंमें कहे गये  
 भयोंका समरूपक है ?

समाधान—सब अनुयोगधारोंसे सुचित भयोंकी विज्ञाप प्ररूपणा करमबासी  
 ही वूलिका हो यह कोइ नियम नहीं है किंतु एक ही भयया सब अनुयोगधारोंसे  
 सुचित भयोंकी विज्ञाप प्ररूपणा करना वूलिका है । इसलिये यह महादण्डक वूलिका

अप्याबहुगम्हदत्स्यस्य विसेसिद्धग परुवणादा । एव पत्रोत्रगसुच परुविय पयद्वय  
परुवणहुसुचरसुचं मगदि—

सव्वत्योवा मणुमपञ्जत्ता गम्भोवक्कतिया' ॥ २ ॥

गम्भत्रा मणुस्सा पञ्जत्ता उव्वरि बुच्चमागमन्तरामीत्रा पविउळ्ळुम भावा  
होति । कुतो ? विस्ससादा । एद क्वचित्ता गम्भावक्कतिया ? मणुस्समागं चदुच्चमागा ।

मणुसिणीओ सखेज्जगुणाओ ॥ ३ ॥

ओ गुणमारो ? तिग्गि रूवाणि । कुत्ता ? मणुस्सगम्भावक्कतियचदुच्चमागम  
पञ्जत्तदग्गेण तस्सेव तिसु चदुच्चमागसु ओउद्धिदेसु तिग्गिरूवाणत्तमादा ।

मव्वट्टिसिद्धिविमाणवामियदेवा मखेज्जगुणा ॥ ४ ॥

ओ गुणमारो ? सग्गेत्तममया । क वि अत्तरिया मच रूवाणि, क वि पुन

ही है क्योंकि वह मस्यबहुबानुषागश्चारस स्थित अर्थकी विशापताकर प्रकृषया करता  
है । इस प्रकार प्रयोञ्जनसूत्रको कहकर प्रकृत अर्थके निरूपणार्थ उत्तर सूत्र कहत है—

मनुष्य पर्याप्त गर्भोपक्रान्तिक मभमे स्ताक है ॥ २ ॥

गर्भत्र मनुष्य पर्याप्त भागे कही जानपाती सब राशिचौकी अपक्षा स्ताक है  
क्योंकि देखा स्वभावसे है ।

शंका—वे गर्भोपक्रान्तिक कितने है ?

समाधान—मनुष्योंके अतुर्घ मागप्रमाण है ।

पर्याप्त मनुष्योंसे मनुष्यनिर्वा सख्यातगुणी हैं ॥ ३ ॥

गुणकार कितना है ? गुणकार तीन रूप है क्योंकि मनुष्य गर्भोपक्रान्तिकोंके  
अतुर्घ मागप्रमाण पर्याप्त प्रकृषसे उसके ही तीन अतुर्घ भागोंका अपवर्जन करनेपर  
तीन रूप बपक्य होते हैं ।

मनुष्यनिर्घोमे सर्वाथमिद्धिबिमानवामी इव सख्यातगुण हैं ॥ ४ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । कोई आकाय छाल रूप कार

१ बोता मस्यबहुवना तथा एतौन्ते शिष्यनिर्घो । नावच्छेदकताया तन्निमवक्ष्यम पञ्चका ॥

चचारि रूपाणि के वि सामण्येण सखेन्द्राणि रूपाणि गुणगारो वि मर्णति । तेनेत्य  
गुणगारे तिष्णि उवपसा । तिष्णं मन्त्रे एक्को विप बच्चोवपसो, सो वि ण णम्बइ,  
विशिष्टोवपसामावादो । तम्हा तिष्ण पि संगहो कायम्बो ।

वादरतेउकाइयपज्जत्ता असखेज्जगुणा ॥ ५ ॥

गहमग्गमसुस्सविय मग्गणतरगमणादो असंबदमिद् सुत्तं ? ण, अप्पिदमग्गम  
मोच्छं अण्णमग्गणाणमग्गमणियमस्स एक्कारसअभिभोगादारेसु चेव अबहुणादो ।  
एत्य पुन ण सो वियमो अत्थि, सखमग्गणजीवेसु महाद्वयो कायम्बो वि अण्णुव  
ममादो । को गुणगारो ? असखेज्जाओ पदरावलिपाओ । कुदो ? सखहसिद्धिदेवेहिं  
वादरतेउपग्गअरासिम्हि भागे हिदे असखेज्जाण पदरावलिपाणसुवलमादो ।

अणुत्तरविजयत्रैजयत ( जयत ) अवराजितविमाणवासियदेवा  
असखेज्जगुणा ॥ ६ ॥

बार कप और कितने ही भाचार्य सामान्यतः संख्यात रूप गुणकार है ऐसा कहते हैं ।  
इसविषये यहाँ गुणकारके विषयमें तीन उपदेश हैं । तीनोंके मध्यमें एक ही आत्स  
(मेघ) उपदेश है परन्तु वह जाना नहीं जाता, क्योंकि इस विषयमें विशिष्ट उपदेशका  
समाप्त है । इस कारण तीनोंका ही समझ करना चाहिये ।

वादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ५ ॥

श्रुति—गति मार्गणाका उल्लंघन कर मार्गान्तरमें जानेसे यह सूत्र मत्सम्बद्ध है ?

समाधान—यह ठीक नहीं क्योंकि विवक्षित मार्गणाको छोड़कर अन्य मार्ग  
वाच्योंमें न जानेका नियम ग्यारह अनुयोगश्रुतोंमें ही मन्वस्यत है । किन्तु यहाँ यह  
नियम नहीं है क्योंकि सर्व मार्गणाधीनोंमें महाद्वयक करना चाहिये ऐसा माना  
गया है ।

गुणकार क्या है ? असंख्यात प्रतरावलिषां गुणकार है क्योंकि सर्वायसिद्धि-  
विमानवासी देवोंसे वादर तेजस्कायिक पर्याप्त दार्थिके भावित करनेपर असंख्यात  
प्रतरावलिषां उपलब्ध होती है ।

अनुश्रुतोंमें विजय, वैजयन्त, ( जयन्त ) और अपरावित विमानवासी देव  
असंख्यातगुणे हैं ॥ ६ ॥

१ मत्सु तम्हसिद्धिदेवेहिं इति वाठः ।

२ तपो हत्तरेवा तपो बच्चोवम आचरो क्पा । तपो अनसखविवा तपव ष्टी तद्व्यापो ॥

किमह् दैवविमेष ? तन्वत्तणपुत्रविकारपादिपडिसेहर्तुं । गुणगारो पडिदोवमस्त  
असखेवमदिमागो असखेवजापि पडिदोवमपडमवगगमूलापि । इदो ? बादरेतठक्य  
पड्यचदम्बेय गुमिदतवतणप्रवहारक्यमेय ओवडिदपडिदोवमपमायसादो ।

अणुदिसविमाणवामियदेवा सखेज्जगुणा ॥ ७ ॥

को गुणगारो ? मख-जा समया । इदो ? मणुस्सहिता अणुचरेसुप-जमाणजीवे  
पेकिस्तद्वय तहिता च अणुदिसविमाणवामियदवसुप्यज्जमाणार्ण जीवाण संखेज्जगुणा  
इवसंभारो, विस्ससादा वा ।

उवरिमउवरिमगेवज्जविमाणवामियदेवा सखेज्जगुणा ॥ ८ ॥

का गुणगारो ? सखज्जा ममया । कारणं पुण्य व परूरेद्वर्णं ।

उवरिममज्जिमगेवज्जविमाणवामियदेवा सखेज्जगुणा ॥ ९ ॥

को गुणगारो ? सखेज्जसमया । कारणं सुगमं ।

शंका—यहां क्या विशेषण किस स्थिति है ?

समाधान—बहुतेके पृथिवीकायिकारि जीवोंके प्रतिपेघार्ण देव विशेषण दिया  
गया है ।

गुणकार पक्षोपमके मसम्भारतथें भाग असम्भारत पक्षोपम प्रथम वर्गमूळ है  
क्योंकि यह बाहर तेजस्कायिक पर्यंत द्रव्यसे गुणित बहाने अन्वहारकाससे अपघर्तित  
पक्षोपम प्रमाण है ।

अनुदिशविमानवासी देव सख्यातगुणे हैं ॥ ७ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है क्योंकि अनुप्योमसे अनुत्तरोंमें  
उत्पन्न होनेवाले जीवोंकी अपेक्षा उनमेंसे ही अनुदिशविमानवासी देवोंमें उत्पन्न होने  
वाले जीव सख्यातगुण पाये जाते हैं मयथा विज्यादि अनुत्तरविमानवासी देवोंसे  
अनुदिशविमानवासी देव स्वभावसे ही संख्यातगुणे हैं ।

उपरिम-उपरिमप्रेयेयकविमानवासी देव सख्यातगुणे हैं ॥ ८ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । कारण पूर्वके समान कहना  
चाहिये ।

उपरिम-मध्यमप्रेयेयकविमानवासी देव संख्यातगुणे हैं ॥ ९ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । कारण सुगम है ।

उपरिमहेष्टिमगेवज्जविमाणवासियदेवा सस्त्रेञ्जगुणा ॥ १० ॥

को गुणगारो ? सस्त्रेञ्जसमया । कुदा ? अप्यपुष्पाण जीवानं बहुआणं समवादे ।

मज्झिमउपरिमगेवज्जविमाणवासियदेवा सस्त्रेञ्जगुणा ॥ ११ ॥

को गुणगारो ? सस्त्रेञ्जसमया । कुदो ? अप्पाठआण जीवाण बहुआणमुबलमादे ।

मज्झिममज्झिमगेवज्जविमाणवासियदेवा सस्त्रेज्जगुणा ॥ १२ ॥

को गुणगारो ? सस्त्रेञ्जसमया । कुदा ? सप्पत्थ मंदपुष्पजीवाण बहुगुणलमादे ।

मज्झिमहेष्टिमगेवज्जविमाणवासियदेवा सस्त्रेज्जगुणा ॥ १३ ॥

को गुणगारो ? सस्त्रेञ्जसमया । कुदो ? मद्दसवाण बहुआणमुबलमादे ।

हेष्टिमउपरिमगेवज्जविमाणवासियदेवा सस्त्रेज्जगुणा ॥ १४ ॥

को गुणगारो ? सस्त्रेञ्जसमया । कारण सुगम ।

उपरिम अचस्तनप्रैरेयकविमानवासी देव सस्त्रयातगुणे हैं ॥ १० ॥

शुणकार क्या है ? सस्त्रयात समय गुणकार है क्योंकि, मध्य पुष्पवाले जीव बहुत सम्भव हैं ।

मध्यम-उपरिमप्रैरेयकविमानवासी देव सस्त्रयातगुणे हैं ॥ ११ ॥

शुणकार क्या है ? सस्त्रयात समय गुणकार है क्योंकि मध्यायु जीव बहुत पाये जाते हैं ।

मध्यम-मध्यमप्रैरेयकविमानवासी देव सस्त्रयातगुणे हैं ॥ १२ ॥

शुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है क्योंकि सर्वत्र मध्य पुष्पवाले जीवोंकी बहुसता पायी जाती है ।

मध्यम अचस्तनप्रैरेयकविमानवासी देव संख्यातगुण ह ॥ १३ ॥

शुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है क्योंकि मध्य तपयाल जीव बहुत पाये जाते हैं ।

अचस्तन उपरिमप्रैरेयकविमानवासी देव सस्त्रयातगुण हैं ॥ १४ ॥

शुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । कारण सुगम है ।



हेट्टिममज्झिमगेवज्जविमाणवासियदेवा सखेज्जगुणा ॥ १५ ॥

को गुणगारो ? सखेज्जा समय । कारण पुण्य व वचन ।

हेट्टिमहेट्टिमगेवज्जविमाणवासियदेवा सखेज्जगुणा ॥ १६ ॥

को गुणगारो ? सखेज्जा समय ।

आरणञ्चुदकप्पवासियदेवा सखेज्जगुणा ॥ १७ ॥

को गुणगारो ? सखेज्जा समय । कारण सुगम ।

आणद-पाणदकप्पवासियदेवा सखेज्जगुणा ॥ १८ ॥

को गुणगारो ? सखेज्जा समय ।

सत्तमाए पुढवीए णेरइया असखेज्जगुणा ॥ १९ ॥

को गुणगारो ? सेहीए असखेज्जविमाणो असंख-आणि सेहीपइमवग्गमूसाणि ।

इहो ! आणद-पाणदकप्पेण पत्तिशेवमस्य असखेज्जविमाणेण सेट्ठिषिदियवग्गमूलं गुणैरूण  
सेट्ठिमोवहिदे गुणगारुणसदीरो ।

अधस्तन-मध्यमप्रैवेयकषिमानवासी देव संख्यातगुणे ह्ये ॥ १५ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । कारण पूर्णके समाज कहना  
चाहिये ।

अधस्तन अधस्तनप्रैवेयकषिमानवासी देव संख्यातगुणे ह्ये ॥ १६ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।

आरण-अप्पुतकप्पवासी देव संख्यातगुणे ह्ये ॥ १७ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । कारण सुगम है ।

आणद-पाणदकप्पवासी देव संख्यातगुणे ह्ये ॥ १८ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।

सत्तम पृषिणीक नारकी असख्यातगुणे ह्ये ॥ १९ ॥

गुणकार क्या है ? अगधेणीक असंख्यातके भागप्रमाण असंख्यात अगधेणी  
प्रथम वर्गमूल गुणकार है क्योंकि, पस्तेपमक असंख्यातके भागप्रमाण आमत मागत  
कल्पके रूपस अगधेणीके द्वितीय वर्गमूलको गुणितकर अगधेणीको अपवर्तित कजेपर  
उक्त गुणकार उपमध्य होता है ।

छट्टीए पुढवीए णेरइया असखेज्जगुणा ॥ २० ॥

को गुणगारो ? सेडित्तदियवग्गमूल ।

सदार सहस्सारकप्पवासियदेवा असखेज्जगुणा ॥ २१ ॥

का गुणगारा ? सेडिच्चउत्पवग्गमूल ।

सुक्क-महासुक्ककप्पवासियदेवा अमखेज्जगुणा ॥ २२ ॥

को गुणगारो ? सेडिर्पवमवग्गमूल ।

पंचमपुढविणेरइया असखेज्जगुणा ॥ २३ ॥

को गुणगारो ? सेडिच्छडुवग्गमूल ।

लतव-काविट्टकप्पवासियदेवा अमखेज्जगुणा ॥ २४ ॥

को गुणगारो ? सेडिसत्तमवग्गमूल ।

छठी पृथिवीके नारकी असंख्यातगुणे हैं ॥ २० ॥

शुभकार क्या है ? अगभेचीका तृतीय वर्गमूल शुभकार है ।

सदार-सहस्रारकल्पवासी देव असंख्यातगुणे हैं ॥ २१ ॥

शुभकार क्या है ? अगभेचीका चतुर्थ वर्गमूल शुभकार है ।

सुक्क-महासुक्ककल्पवासी देव असंख्यातगुणे हैं ॥ २२ ॥

शुभकार क्या है ? अगभेचीका पंचम वर्गमूल शुभकार है ।

पंचम पृथिवीके नारकी असंख्यातगुणे हैं ॥ २३ ॥

शुभकार क्या है ? अगभेचीका छठा वर्गमूल शुभकार है ।

लतव-काविट्टकल्पवासी देव असंख्यातगुणे हैं ॥ २४ ॥

शुभकार क्या है ? अगभेचीका सातवां वर्गमूल शुभकार है ।

१ छठी पृथिवीके छठव बोधीए वम उप्पार । वारि-नर्गइवते सेत्ताए इत्थिमा बहता ॥  
व ६ २ ६६

२ छठी पृथिवीके- इति नाम्ना ।



चतुर्थीए पुढवीए णेरइया असस्वेज्जगुणा ॥ २५ ॥

ओ गुणगारो ! सेडिअड्डमवग्गमूस ।

वम्ह-चम्हुत्तरकप्पवासियदेवा असस्वेज्जगुणा ॥ २६ ॥

ओ गुणगारो ! सेडिनवमवग्गमूस ।

तदियाए पुढवीए णेरइया अमस्वेज्जगुणा ॥ २७ ॥

ओ गुणगारो ! सेडिदसमवग्गमूस ।

मार्हिंदकप्पवासियदेवा अमस्वेज्जगुणा ॥ २८ ॥

ओ गुणगारो ! सडिएक्कारमवग्गमूसस्स सस्वेज्जदिमागो । सणक्कुमार-मार्हिंद  
इअमेगहं करिय किण्ण पक्कविदं ? अ, महा पुअिन्त्तत्तं दोण्ह दोण्हं कप्पाअमेओ विप  
सामी इदि, तथा एत्थ दोण्ह कप्पाअमेओ केव सामी अ हेदि पि आणावण्हं पुप  
विदेमाओ ।

सणक्कुमारकप्पवासियदेवा संस्वेज्जगुणा ॥ २९ ॥

पतुर्थ पृथिवीके नारकी असस्पातगुणे हैं ॥ २५ ॥

गुणकार क्या है ? अगभेयीका आठवां वर्गमूस गुणकार है ।

अह-अओत्तरकप्पवासी देव असस्पातगुणे हैं ॥ २६ ॥

गुणकार क्या है ? अगभेयीका नौवां वर्गमूस गुणकार है ।

तृतीय पृथिवीके नारकी असस्पातगुणे हैं ॥ २७ ॥

गुणकार क्या है ? अगभेयीका दहावां वर्गमूस गुणकार है ।

मार्हेन्द्रकप्पवासी देव असस्पातगुणे हैं ॥ २८ ॥

गुणकार क्या है ? अगभेयीके ग्यारहवें वर्गमूसका संस्पातवां भाग गुणकार है ।

शंका—सामक्कुमार और मार्हेन्द्र कप्पके इअमेके इक्कुअ कर क्यों नहीं कहा ?

समाधान—नहीं, अिस प्रकार पूर्वोक्त दो दो कर्णोंका एक ही स्वामी होता है  
वस प्रकार यहां दो कर्णोंका एक ही स्वामी नहीं होता इस बातके आप्तार्थ वृत्त  
निर्देश किया है ।

सामक्कुमारकप्पवासी देव सस्पातगुणे हैं ॥ २९ ॥

को गुणगारो ? सखेज्जा समया । हृदो ? उचरदिस मोक्ष्य सेसासु तसि दिसासु  
द्विदसेडीबद्ध पदण्यपसृण्णिदविमाणेसु सन्निदपसु च पिबसंतदेवार्णो गहणार्दो ।

विदियाए पुढवीए णेरइया असखेज्जगुणा ॥ ३० ॥

को गुणगारो ? सेडिबारसबग्गमूल सुबसखेज्जदिमागग्गमहियं ।

मणुसा अपज्जत्ता असखेज्जगुणा ॥ ३१ ॥

को गुणगारो ? सेडिबारसबग्गमूलसस असखेज्जदिमागो । क्व पडिमागो ?  
मणुसमपग्गत्तमवहारकाळो पडिमागो ।

ईसाणकप्पवासियदेवा असखेज्जगुणा ॥ ३२ ॥

को गुणगारो ? छाभिर्मगुलसस सखेज्जदिमागो ।

देवीओ सखेज्जगुणाओ ॥ ३३ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है क्योंकि उचर दिशाको छोड़कर  
शेष तीन दिशाओंमें स्थित भ्रेशीबद्ध और प्रकीर्णक नामके विमाओंमें तथा सब इन्द्रक  
विमाओंमें रहनेवाले देवोंका ग्रहण किया गया है ।

द्वितीय पृथिवीके नारकी ओर असस्यातगुणे हैं ॥ ३० ॥

गुणकार क्या है ? अपने संख्यातमें भागसे अधिक जगभ्रेशीका बारहवां पर्वमूल  
गुणकार है ।

मनुष्य अपर्याप्त असस्यातगुणे हैं ॥ ३१ ॥

गुणकार क्या है ? जगभ्रेशीके बारहवें पर्वमूलका असस्यातर्थां भाग गुणकार है ।  
मतिभाग क्या है ? मनुष्य अपर्याप्तोंका अग्रहारकास प्रतिभाग है ।

ईशानकल्पवासी द्वा असस्यातगुण हैं ॥ ३२ ॥

गुणकार क्या है ? सूर्यगुलका संख्यातर्थां भाग गुणकार है ।

ईशानकल्पवासीनी देवियां सस्यातगुणी हैं ॥ ३३ ॥

१ (इतने कल्प नि वरीशुगुणयो ह्येति वरीया । इत्येव्या वीत्ये तयो वर्णका मरुतवासी ॥

श्रे गुणगारो ! संखेञ्ज समया । के वि आप्रिया बचीस रुवाणि चि मर्षति ।

सोधम्मकप्पवासियदेवा सखेज्जगुणा ॥ ३४ ॥

श्रे गुणगारो ! संखेञ्ज समया ।

देवीओ सखेज्जगुणाओ ॥ ३५ ॥

श्रे गुणगारो ! संखेञ्ज समया बचीस रुवाणि वा ।

पढमाए पुढवीए णेरइया असखेज्जगुणा ॥ ३६ ॥

श्रे गुणगारो ! सगमखेञ्जदिभागग्महियधर्मगुसुतवियधग्ममूठं ।

भवणवासियदेवा असखेज्जगुणा ॥ ३७ ॥

श्रे गुणगारो ! धर्मगुसुतवियधग्ममूलस्स संखेञ्जदिभागो ।

देवीओ संखेज्जगुणाओ ॥ ३८ ॥

श्रे गुणगारो ! संखेञ्जसमया बचीसरुवाणि वा ।

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । कितने ही आचार्य गुणकार बचीस रूप है देखा करते हैं ।

सौधर्मकल्पवासी देव सम्प्रातगुणे हैं ॥ ३४ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।

सौधर्मकल्पवासिनी देवियां संख्यातगुणी हैं ॥ ३५ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय या बचीस रूप गुणकार है ।

प्रथम पृथिवीक मारकी असम्प्रातगुणे हैं ॥ ३६ ॥

गुणकार क्या है ? अपने संख्यातके मागसे अधिक यज्ञोपमका तृतीय वर्गमूल गुणकार है ।

भवनवासी देव असम्प्रातगुणे हैं ॥ ३७ ॥

गुणकार क्या है ? यज्ञोपमक द्वितीय वर्गमूलका संख्यातकी माग गुणकार है ।

भवनवासिनी देवियां सम्प्रातगुणी हैं ॥ ३८ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय या बचीस रूप गुणकार है ।

पंचिन्दियतिरिक्त्वजोगिणीओ असस्वेज्जगुणाओ ॥ ३९ ॥

को गुणगारो ? सेढीए असंखेज्जदिमागो असस्वेज्जभि सेढिपडमवग्गमूलाणि ।

को पडिमागा ? मत्तणवासियविक्खमसूचीए संखेज्जेहि भागेहि गुणिदपंचिन्दियतिरिक्त्व  
ओभिषिअवहारफालो पडिमागो ।

वाणवेत्तरदेवा सस्वेज्जगुणा ॥ ४० ॥

को गुणगारो ? सस्वेज्जसमया । पदम्हादो सुचादो जीवद्वापदम्भवक्खारं ण  
पठदि सि पम्भदे ।

देवीओ सस्वेज्जगुणाओ ॥ ४१ ॥

को गुणगारो ? सस्वेज्जसमया वचीसरूपाणि वा ।

जोदिसियदेवा सस्वेज्जगुणा ॥ ४२ ॥

को गुणगारो ? सस्वेज्जसमया । छदो ? जोदिसियअवहारफालेणं मागे हिदे

संखेज्जरूवोवर्लमादो ।

पंचेन्द्रिय योनिमती तिर्येच असस्पातगुणे हैं ॥ ३९ ॥

गुणकार क्या है ? अगधेढीके असस्पातवें माग असंख्यात अगधेणी प्रथम  
वर्गमूल गुणकार हैं । प्रतिमाग क्या है ? मत्तणवासियोकी विक्खम्मसूचीके संख्यात  
बहुभागोंसे गुणित पंचेन्द्रिय तिर्येच योनिमतिपोंका अवहारकास प्रतिमाग है ।

वानभ्यन्तर देव संख्यातगुणे हैं ॥ ४० ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इस सूत्रसे जीवस्थानका  
द्रव्यप्याख्यात नहीं चरित होता ऐसा जाना जाता है । ( देखो जीवस्थान-द्रव्य  
प्रमाथानुगम सूत्र ३५ की टीका ) ।

वानभ्यन्तर देवियां संख्यातगुणी हैं ॥ ४१ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय या वचीस रूप गुणकार है ।

ज्योतिपी देव संख्यातगुणे हैं ॥ ४२ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है क्योंकि ज्योतिपी देवोंके  
अवहारकाससे ( वानभ्यन्तर देवियोंके अवहारकासको ) मानित करनेपर संख्यात रूप  
व्यपक्ष्य होते हैं ।

देवीओ सखेज्जगुणाओ ॥ ४३ ॥

को गुणगारो ! सखेज्जसमया बचीसरूवाणि वा ।

अउरिंदियपज्जत्ता सखेज्जगुणा ॥ ४४ ॥

को गुणगारो ! सखेज्जसमया । कुदो ! पदरगुणस्त संखेज्जदिमागेण अउरि  
दियपज्जअवहारकालेण ओदिसिपदेवीणमवहारकालमूदसखेज्जपदरंगुणेण ओवडिदेस  
सखेज्जरूवोपत्तमाओ ।

पंचिंदियपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ४५ ॥

केचियो विसेसो ! अउरिंदियपज्जचाणमसखेज्जदिमागो । का पडिमाया !  
आवठियाण असखेज्जदिमागो ।

धेइदियपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ४६ ॥

केचिओ विसेसो ! पंचिंदियपज्जचाणमसखेज्जदिमागो । को पडिमागो !  
आवठियाण अमंखेज्जदिमागो ।

तीइदियपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ४७ ॥

ज्योतिषी देविया संख्यातगुणी हँ ॥ ४३ ॥

गुणकार क्या है ! संख्यात समय या बचीसरूप गुणकार है ।

अतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीव सक्रयातगुणे हँ ॥ ४४ ॥

गुणकार क्या है ! संख्यात समय गुणकार है क्योंकि प्रतरंगुणके संख्यातके  
भागप्रमाण अतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके अवहारकालसे ज्योतिषी देवियोंके अवहारकाल  
भूत संख्यात प्रतरंगुणोंके अपवर्तित करनेपर संख्यात रूप उपलब्ध होता है ।

पचन्द्रिय पर्याप्त मीर विज्ञेय अपिक्क हँ ॥ ४५ ॥

विज्ञेय कितना है ! अतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके असंख्यातके भागप्रमाण है ।  
प्रतिभाग क्या है ! आवडीका असंख्यातका भाग प्रतिभाग है ।

हीन्द्रिय पर्याप्त मीर विज्ञेय अपिक्क हँ ॥ ४६ ॥

विराय कितना है ! पचन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके असंख्यातके भागप्रमाण है । प्रति  
भाग क्या है ! आवडीका असंख्यातका भाग प्रतिभाग है ।

त्रीन्द्रिय पर्याप्त मीर विज्ञेय अपिक्क हँ ॥ ४७ ॥

केचिजो विसेसो ? कीर्दियपन्नञ्चत्तमसखेन्नदिमागो । को पठिमागो ?  
आबलियाए असंखेन्नदिमागो ।

पर्चिदियअपज्जत्ता असखेज्जगुणा ॥ ४८ ॥

को गुणगारो ? आबलियाए असंखेन्नदिमागो । कुदो ? पदरगुलस्स असंखेज्जदि  
मागेण पर्चिदियअपन्नञ्चत्तवहारफालेण पदरगुलस्स संखेन्नदिमागमेत्तत्तदिपन्नञ्च  
वहारफाले मागे दिदे आबलियाए असंखेन्नदिमागुवलमादो ।

चउरिंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ४९ ॥

केचिजो विसेसो ? पर्चिदियअप-न्नत्तागमसंखेन्नदिमागो । तेसिं को पठिमागो ?  
आबलियाए असंखेन्नदिमागो ।

तेहदियअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ५० ॥

केचिजो विसेसो ? चउरिंदियअपज्जत्तअसखेन्नदिमागो । को पठिमागो ?  
आबलियाए असंखेन्नदिमागो ।

वेहदियअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ५१ ॥

विशेष कितना है ? धीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।  
प्रतिभाग क्या है ? आबलीका असंख्यातवां भाग प्रतिभाग है ।

पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ४८ ॥

गुणकार क्या है ? आबलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है क्योंकि प्रतरांगुलके  
असंख्यातवें भागप्रमाण पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके महात्काकसे प्रतरांगुलके संख्यातवें  
भागमात्र त्रीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके महात्काकको माश्रित करनेपर आबलीका  
असंख्यातवां भाग उपलभ्य होता है ।

चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ ४९ ॥

विशेष कितना है ? चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तोंके असंख्यातवें भागप्रमाण है । उनका  
प्रतिभाग क्या है ? आबलीका असंख्यातवां भाग प्रतिभाग है ।

त्रीन्द्रिय अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ ५० ॥

विशेष कितना है ? त्रिन्द्रिय अपर्याप्तोंके असंख्यातवें भागप्रमाण है ।  
प्रतिभाग क्या है ? आबलीका असंख्यातवां भाग प्रतिभाग है ।

धीन्द्रिय अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ ५१ ॥

केचिन्नो विसेसो ? तेर्दियञ्चपञ्चच असंखेज्जदिमामो । को पञ्चिमामो ? वाव  
तिपाए असंखेज्जदिमामो ।

वादरवणप्फादिकाह्यपत्तेयसरिरपञ्जत्ता असस्त्रेज्जगुणा ॥ ५२ ॥

को गुणमारो ? पत्तिदोवमस्स असंखेज्जदिमामो । कुदो ? पत्तिदोवमस्स  
असंखेज्जदिमामोवट्ठिक्कपदरगुत्तेय वादरवणप्फादिकाह्यपत्तेयसरिरपञ्चच अबहारकात्तेय  
वेहदियअपञ्चचअवहारकात्ते मागे हिदे पत्तिदोवमस्स असंखेज्जदिमामोवत्तमादो ।

वादरणिगोदजीवा णिगोदपदिट्ठिदा पञ्जत्ता असस्त्रेज्जगुणा  
॥ ५३ ॥

को गुणमारो ? आवत्तिपाए असंखेज्जदिमामो । कुदो ? हेट्ठिमदम्भस्स अबहार-  
कात्ते उवरिमदम्भस्स अबहारकात्तेय मागे हिदे आवत्तिपाए असंखेज्जदिमामोवत्तमादो ।

वादरपुढविपञ्चत्ता असस्त्रेज्जगुणा ॥ ५४ ॥

दिशेय कित्ता है ? जीमिद्रप अपर्पात्त जीवोंके असंख्यातमें मागप्रमाण है ।  
प्रतिमाय क्या है ? आवळीका असंख्यातका माग प्रतिमाय है ।

वादर वनस्पतिक्रायिक प्रत्येकद्वार पर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ५२ ॥

गुणकार क्या है ? पत्तोपमका असंख्यातका माग गुणकार है क्योंकि,  
पत्तोपमके असंख्यातमें मागसे अपवर्तित प्रतलंगुलप्रमाण वादर वनस्पतिक्रायिक  
प्रत्येकद्वार पर्याप्तोंके अवहारकात्ते जीमिद्रप अपर्पात्तोंके अवहारकात्तेको माहित  
करनेपर पत्तोपमका असंख्यातका माग उपलब्ध होता है ।

वादर निगोदजीव निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त असंख्यातगुणे हैं ॥ ५३ ॥

गुणकार क्या है ? आवळीका असंख्यातका माग गुणकार है क्योंकि अथस्तम  
अर्थात् पूर्वोक्त द्वयके अवहारकात्तेमें अपरिम अर्थात् प्रस्तुत द्वयके अवहारकात्तेका माग  
बनेपर आवळीका असंख्यातका माग प्राप्त होता है ।

वादर पृथिवीक्रायिक पर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ५४ ॥

को गुणगारो ? आश्लियाए असखेन्नदिभागो । सेस सुगम ।

वादरआउपज्जत्ता असखेज्जगुणा ॥ ५५ ॥

को गुणगारो ? आश्लियाए असखेन्नदिभागो । सेस सुगम ।

वादरवाउपज्जत्ता असखेज्जगुणा ॥ ५६ ॥

को गुणगारो ? असखेन्नजाओ सेडीओ पदरंगुलस्स असखेज्जदिभागमेत्ताओ ।

वादरतेउअपज्जत्ता असखेज्जगुणा ॥ ५७ ॥

को गुणगारो ? असखेन्नजा लोगा । तेसिमद्धलेदप्पाणि सागरोवम पस्सिदोषमस्य  
असखेन्नदिभागेष ऊपप ।

वादरवणफ्फदिकाह्यपत्तेयसरीरा अपज्जत्ता असखेज्जगुणा'  
॥ ५८ ॥

गुणकार क्या है ? भावहीका असंख्यातयां भाग गुणकार है । शेष शून्यार्थ  
सुगम है ।

वादर अप्प्रायिक पर्याप्त जीव असंख्यातगुणे ई ॥ ५५ ॥

गुणकार क्या है ? भावहीका असंख्यातयां भाग गुणकार है । शेष शून्यार्थ  
सुगम है ।

वादर बायुक्रायिक पर्याप्त जीव असंख्यातगुणे ई ॥ ५६ ॥

गुणकार क्या है ? प्रतरंगुलसे असंख्यातये मागमात्र असंख्यात जगधनिपां  
गुणकार है ।

वादर तेप्रस्कायिक अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे ई ॥ ५७ ॥

गुणकार क्या है ? असंख्यात साक गुणकार है । उनके अस्पष्ट पस्योपमके  
असंख्यातये भागसे हीन सागरोपमप्रमाण ई ।

वादर वनस्पतिक्रायिक प्रत्येकप्रतीर अपर्याप्त जीव असंख्यातगुण ई ॥ ५८ ॥



को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेमिमद्वेदपाणि पळिदोवमस्स असंखे  
ज्जदिमागो ।

वादरणिगोदजीवा णिगोदपदिट्ठिदा अपज्जत्ता असखेज्जगुणा  
॥ ५९ ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेमिं छेदपाणि पळिदोवमस्स असंखे  
ज्जदिमागो ।

वादरपुठविकाइयअपज्जत्ता असखेज्जगुणा ॥ ६० ॥

का गुणगारा ? असंखेज्जा लोगा । तसिं छेदपाणि पळिदोवमस्स असंखज्जदि  
मागो ।

वादरआउकाइयअपज्जत्ता असखेज्जगुणा ॥ ६१ ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तसिं छेदपाणि पळिदोवमस्स असंखे  
ज्जदिमागो ।

वादरवाउकाइयअपज्जत्ता असखेज्जगुणा ॥ ६२ ॥

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनके अर्द्धच्छेद परस्वोपमके  
असंख्यातके भागप्रमाण हैं ।

वादर निगोदजीव निगोदप्रतिष्ठित अपर्पाप्त असंख्यातगुणे हैं ॥ ५९ ॥

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनके अर्द्धच्छेद परस्वोपमके  
असंख्यातके भागप्रमाण हैं ।

वादर श्रुतिबीजायिक अपर्पाप्त जीव असंख्यातगुण हैं ॥ ६० ॥

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनके अर्द्धच्छेद परस्वोपमके  
असंख्यातके भागप्रमाण हैं ।

वादर अण्नायिक अपर्पाप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ६१ ॥

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनके अर्द्धच्छेद परस्वोपमके  
असंख्यातके भागप्रमाण हैं ।

वादर वायुकायिक अपर्पाप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ६२ ॥

को गुणगारो ? असंख्यज्जा लोगा । तसि छेदनाणि पलिदोवमस्त असखे  
व्यदिमागो ।

सुहुमतेउकाइयअपज्जत्ता असखेज्जगुणा ॥ ६३ ॥

को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेषिमइछेदनाणि असंखेज्जा लोगा । कप  
वन्नेदे ? गुरुवदेसादो ।

सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ६४ ॥

केचिओ विसेसो ? असंखेज्जा लोगा सुहुमतेउकाइयअपज्जत्तामसखेज्जदि  
मागो । को पढिमागो ? असंखेज्जा लोगा ।

सुहुमआउकाइयअपज्जत्ता' विसेसाहिया ॥ ६५ ॥

केचिओ विसेसो ? असंखेज्जा लोगा सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्तामसखेज्जदि  
मागो । को पढिमागो ? असंखेज्जा लोगा ।

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनके अर्थच्छेद पस्योपमके  
असंख्यातके भागप्रमाण है ।

सूक्ष्म तेजस्कायिक अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ६३ ॥

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनके अर्थच्छेद असंख्यात  
लोक प्रमाण है ।

सूक्ष्म—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यह गुणके उपवेशसे जाना जाता है ।

सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ ६४ ॥

विशेष कितना है ? असंख्यात लोक है जो कि सूक्ष्म तेजस्कायिक अपर्याप्तोंके  
असंख्यातके भाग है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यातका लोक प्रतिभाग है ।

सूक्ष्म अस्त्रायिक अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ ६५ ॥

विशेष कितना है ? सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंके असंख्यातके भाग  
असंख्यात लोक विशेष है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोक प्रतिभाग है ।

सुहृमवातकाह्यअपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ६६ ॥

केचियो विसेसा ? असंखेन्ना ठामा सुहृमवातकाह्यअपज्जत्तामसंखेन्नादि  
मायो । को पडिमागो ? असंखेन्ना ठामा ।

सुहृमतेउकाह्यपज्जत्ता सखेज्जगुणा' ॥ ६७ ॥

को गुणमारो ? संखेन्ना समया ।

सुहृमपुढविकाह्यपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ६८ ॥

केचियो विसेसो ? असंखेन्ना ठामा सुहृमतेउकाह्यपज्जत्तामसंखेन्नादिमागो ।  
को पडिमागो ? असंखेन्ना ठामा ।

सुहृमआउकाह्या पज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ६९ ॥

केचिओ विसेसो ? असंखेन्ना ठामा सुहृमपुढविकाह्यपज्जत्तामसंखेन्नादि  
मागो । को पडिमागो ? असंखेन्ना ठामा ।

सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त बीज विशेष अधिक हैं ॥ ६६ ॥

विशेष कितना है ? सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्तोंके असंख्यातमें भाग असंख्यात  
शोक विशेष है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात शोक प्रतिभाग है ।

सूक्ष्म तेजस्कायिक पर्याप्त बीज संख्यातगुणे हैं ॥ ६७ ॥

गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है ।

सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त बीज विशेष अधिक हैं ॥ ६८ ॥

विशेष कितना है ? सूक्ष्म तेजस्कायिक पर्याप्तोंके असंख्यातमें भाग असंख्यात  
शोक विशेष है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात शोक प्रतिभाग है ।

सूक्ष्म अणुकायिक पर्याप्त बीज विशेष अधिक हैं ॥ ६९ ॥

विशेष कितना है ? सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके असंख्यातमें भाग असंख्यात  
शोक विशेष है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात शोक प्रतिभाग है ।

सुहृमवाउकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ७० ॥

केचियो विसेसो ! असखेञ्जा लोगा सुहृमवाउकाइयपज्जत्ताणमसंखेज्जदिमागो ।  
को पडिमागो ! असखेञ्जा लोगा ।

अकाइया अणत्तगुणा ॥ ७१ ॥

को गुणगारो ! अमवसिद्धिएहि अणत्तगुणो । सेस सुगम ।

वादरवणप्फदिकाइयपज्जत्ता अणत्तगुणा ॥ ७२ ॥

को गुणगारो ! अमवसिद्धिएहिता सिद्धेहिंतो सम्भजीवपइमवग्गमूलादो वि  
अमंत्तगुणो । हृदो ! असंखेञ्जलोगगुणिदअकाइएहि ओवड्ठिदसम्भजीवपमाणपादो ।

वादरवणप्फदिकाइयअपज्जत्ता असखेञ्जगुणा ॥ ७३ ॥

को गुणगारो ! असंखेञ्जा लोगा ।

वादर वणप्फदिकाइया विसेसाहिया ॥ ७४ ॥

सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं ॥ ७० ॥

विशेष कितना है ? सूक्ष्म अकायिक पर्याप्तोंके असंख्यातमें भाग असंख्यात  
छोक विशेष है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात छोक प्रतिभाग है ।

अकायिक जीव अनन्तगुणे हैं ॥ ७१ ॥

गुणकार क्या है ? अमव्यसिद्धिकोंसे अणत्तगुणा गुणकार है । शेष सुगम  
सुगम है ।

वादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव अनन्तगुणे हैं ॥ ७२ ॥

गुणकार क्या है ? अमव्यसिद्धिकोंसे सिद्धोंसे भीर सख जीवोंके प्रथम वगमूखसे  
भी अमन्तगुणा गुणकार है क्योंकि यह असंख्यात छोकसे गुणित अकायिक जीवोंसे  
अपवर्तित सब जीवराशिप्रमाण है ।

वादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं ॥ ७३ ॥

गुणकार क्या है ? असंख्यात छोक गुणकार है । ( वज्रो पुस्तक ३ पृ ३९ )

वादर वनस्पतिकायिक विशेष अधिक हैं ॥ ७४ ॥

अक्षयो विसेसो ? बादरवणफ्रदिकाइयपन्नचमेचो ।

सुहुमवणफ्रदिकाइया अपन्नजत्ता असखेज्जगुणा ॥ ७५ ॥

अक्षे गुणगारो ? असखेज्जा लोणा ।

सुहुमवणफ्रदिकाइया पन्नजत्ता सखेज्जगुणा ॥ ७६ ॥

अक्षे गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

सुहुमवणफ्रदिकाइया विसेसाहिया ॥ ७७ ॥

अक्षिजा विसेसो ? सुहुमवणफ्रदिकाइयपन्नचत्तमचो ।

वणफ्रदिकाइया विसेसाहिया ॥ ७८ ॥

अक्षयो विसेसो ? बादरवणफ्रदिकाइयपन्नचो ।

निगोदजीवा विसेसाहिया ॥ ७९ ॥

अक्षिजा विसेसा ? बादरवणफ्रदिकाइयपत्तेयसरीरबादरनिगोदपदिह्दिदमेचो ।  
पन्न सखेज्जगुणा समया ।

एवं सुखाद्यो समया ।

विशेष किन्ना है ? विशय बादर वनस्पतिक्रायिक पर्याप्त जीवोंके बराबर है ।

एवम वनस्पतिक्रायिक अर्याप्त जीव असंखपातगुण हैं ॥ ७५ ॥

गुणकार क्या है ? असंखपात साक गुणकार है ।

एवम वनस्पतिक्रायिक पर्याप्त जीव संखपातगुणे हैं ॥ ७६ ॥

गुणकार क्या है ? संखपात समय गुणकार है ।

एवम वनस्पतिक्रायिक जीव विशेष अधिक हैं ॥ ७७ ॥

विशय किन्ना है ? विशय एवम वनस्पतिक्रायिक अर्याप्त जीवोंके बराबर है ।

वनस्पतिक्रायिक विग्रह अधिक हैं ॥ ७८ ॥

विशय किन्ना है ? बादर वनस्पतिक्रायिक जीवोंके बराबर है ।

निगोदजीव विग्रह अधिक हैं ॥ ७९ ॥

विशय किन्ना है ? बादर निगोदपदिह्दिन बादरवनस्पतिक्रायिक मत्स्यकारीत जीवोंके बराबर है ।

इस प्रकार एव जीवोंमें महाद्वन्द्वक ममात्त हुआ

इस प्रकार सुखाद्यो ममात्त हुआ ।

पारिशिष्ट



## वधग-सतपरूवणा सुत्ताणि ।

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	ते वधगा जाम तेसिमिमो जिहेसा ।		१३	अकारहया भवधा ।	१७
२	गह इंदिय काए जोगे घेवे कसाए जाणे सजमे वसणे छेस्साए मभिय सम्मत्त सग्णि भाहारए वेदि ।	१	१४	जोगाणुवादेण मणज्जागि-मधि जोगि-कायजोगिणो बंधा ।	
३	इदियाणुवादेण गिरयगदीए जेरहया बंधा ।	६	१५	अजोगी मबंधा ।	
४	तिरिदखा बंधा ।	७	१६	धदाणुवादेण इदियेवेदा बंधा पुरिसवेदा बंधा शत्रुंसयवेदा बंधा ।	१८
५	वेदा बंधा ।	८	१७	मवगइयेदा बंधा वि भतिय भवधा पि भतिय ।	"
६	मणुसा बंधा वि भतिय भवधा वि भतिय ।		१८	सिद्धा मबंधा ।	१९
७	सिद्धा मबंधा ।		१९	कसायाणुवादेण कायकसाह मायकसाह मायकसाह सोम कसाह बंधा ।	
८	इदियाणुवादेण परइदिया बंधा वीइदिया बंधा तीइदिया बंधा वपुरिदिया बंधा ।	१५	२०	अकसाह बंधा वि भतिय भवधा वि भतिय ।	"
९	पेइदिया बंधा पि भतिय मबंधा पि भतिय ।		२१	सिद्धा मबंधा ।	
१०	अपिदिया मबंधा ।		२२	प्याणाणुवादेण मद्धिमण्णाणी सुद्धमण्णाणी भाभिमिणोहिमण्णाणी सुद्धणाणी भोधिमण्णाणी मणपज्जमण्णाणी बंधा ।	२०
११	कायाणुवादेण पुइवीकाहया बंधा माउकाहया बंधा तेउ काहया बंधा वाउकाहया बंधा वणफदिहाहया बंधा ।	१६			
१२	उसकाहया बंधा वि भतिय मबंधा वि भतिय ।	१७	२३	केवळणाणी बंधा वि भतिय मबंधा पि भतिय ।	
			२४	सिद्धा मबंधा ।	
			२५	सज्जमाणुवादेण अंसज्जदा बंधा संज्जदासंज्जदा बंधा ।	



सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
२६	संज्ञदा बंधा वि मत्पि भवधा वि मत्पि ।		३४	देव मवसिद्धिया जव भमव सिद्धिया भवंधा ।	"
२७	देव संज्ञदा देव असंज्ञदा देव संज्ञदासंज्ञदा भवंधा ।	२	३५	सम्मत्ताणुवादेण मिच्छादिद्वी बंधा सासजसम्मदिद्वी बंधा सम्मामिच्छादिद्वी बंधा ।	"
२८	इसणाणुवादेण अन्नानुसणी अन्नानुसणी मोघिदसणी बंधा ।	२१	३६	सम्मदिद्वी बंधा वि मत्पि भवंधा वि मत्पि ।	"
२९	देवसंज्ञदा बंधा वि मत्पि भवंधा वि मत्पि ।		३७	सिद्धा भवंधा ।	२३
३	सिद्धा भवंधा ।	"	३८	सग्निपाणुवादेण सग्नी बंधा असग्नी बंधा ।	"
३१	छेदसाणुवादेण किण्हसस्सिया णीछसस्सिया काइछेस्सिया तइछेस्सिया पम्मछेस्सिया सुक्क सस्सिया बंधा ।	"	३९	देव सग्नी देव असग्नी बंधा वि मत्पि भवंधा वि मत्पि ।	"
३२	अछेस्सिया भवंधा ।	२३	४०	सिद्धा भवंधा ।	"
३३	भविषाणुवादेण भमवसिद्धिया बंधा भवसिद्धिया बंधा वि मत्पि भवंधा वि मत्पि ।		४१	माहाराणुवादेण माहारा बंधा ।	२४
			४२	महाहारा बंधा वि मत्पि भवंधा वि मत्पि ।	"
			४३	सिद्धा भवंधा ।	"

### सामिचाणुगमसुत्ताणि ।

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	एवेसिं बधयार्णं परुषणहुदाए तत्प इमाणि परुषकारस्तं अथि योगहाराणि आहृष्याणि मवति ।	२५	१	मायामायाणुगमो अय्याबहु गाणुगमो वेधि ।	२८
२	एगज्जीवेण सामित्तं एपज्जीवेण काळो एगज्जीवेण संतरं आया जीवहि मगविच्चओ इय्यएइ पजाणुगमो ऐत्ताणुगमो कासणाणुपमो आयाजीवहि काळो आयाजीवहि संतरं,		४	विरयगविष्णामाए उद्वएण ।	३
			५	विरयगविष्णामाए उद्वएण ।	३
			६	तिरिक्कमरीए तिरिक्कओ णाम कर्षं मवदि ?	३१
			७	तिरिक्कमरीए तिरिक्कओ णाम कर्षं मवदि ?	"

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
८	मधुसगदीय मधुसो जाम कथ मयदि ?	३१	३२	जोगाणुवादेण मणमोगी बधि जोगी कायजोगी जाम कथ मयदि ?	७४
९	मधुसगदिपामाए उदएण ।	,	३३	खमोबसमियाए छडीए ।	७५
१०	बधगदीय वेधो जाम कथ मयदि ?	३२	३४	मजोगी जाम कथ मयदि ?	७६
११	बधगदिपामाए उदएण ।		३	खरयाए छडीए ।	,
१२	सिद्धिगदीय सिद्धो जाम कथ मयदि ?	३०	३५	बेदाणुपादण इत्थियेदो पुरिस वेदो जणुसपवेदो जाम कथ मयदि ?	"
१३	खरयाए छडीए ।		३७	वरित्तमोहणीयस्स कम्मस्स उदएण इत्थिय-पुरिस-जणुसप वेदा ।	७९
१४	इंदियाणुवादेण एहदिमा वीर दिमो तीहंदिमो खडरिदिमो रंकिदिमो जाम कथ मयदि ?	३१	३८	मयगहवेदो जाम कथ मयदि ?	८
१५	खमोबसमियाए छडीए ।		३९	उबसमियाए खरयाए छडीए ।	८१
१६	मभिदिमो जाम कथ मयदि ?	३८	४	कसापाणुवादेण कोषकसारं मागकसारं मायकसारं छोम कसारं जाम कथ मयदि ?	८२
१७	खरयाए छडीए ।		४१	वरित्तमोहणीयस्स कम्मस्स उदएण ।	८३
१८	कापाणुवादेण पुडबिकाहमो जाम कथ मयदि ?	७०	४२	मकसारं जाम कथ मयदि ?	"
१९	पुडबिकाहयणामाए उदएण ।		४३	उबसमियाए खरयाए छडीए ।	"
२०	भाउकाहमो जाम कथ मयदि ?	७१	४४	जाणाणुवादेण मदिमण्णाणी सुदमण्णाणी विमंगणाणी भाभिणिबोहियणाणी सुदणाणी भोदिणाणी मणपण्डयणाणी जाम कथ मयदि ?	८४
२१	भाउकाहयणामाए उदएण ।		४५	खमोबसमियाए छडीए ।	८५
२२	तेउकाहमो जाम कथ मयदि ?	७१	४६	केपमणाणी जाम कथ मयदि ?	८८
२३	तेउकाहयणामाए उदएण ।		४७	खरयाए छडीए ।	९०
२४	भाउकाहमो जाम कथ मयदि ?	७२	४८	संजमाणुपादण खड्डो सामारह	
२५	भाउकाहयणामाए उदएण ।				
२६	बणप्फहकाहमो जाम कथ मयदि ?	"			
२७	बणप्फहकाहयणामाए उदएण ।				
२८	तसकाहमो जाम कथ मयदि ?	७३			
२९	तसकाहयणामाए उदएण ।				
३०	मकाहमो जाम कथ मयदि ?	७३			
३१	खरयाए छडीए ।	"			



सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
८९	केच सख्णी केच मसण्णी प्याम कथं मयदि ?		८९	भोवइएण भावेण ।	
८७	खरपाए खरीए ।		९०	मणाहारो जाम कथ मयदि ?	११३
८८	माहारणुवावण भाहारो जाम कथं मयदि ?		९१	भोवइएण भावेण पुण खरपाए खरीए ।	

एगजीवेण काळाणुगमसुत्ताणि ।

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	एगजीवेण काळाणुगमेण गदि यानुवावेण विरपयदीए केरइया केचभिरं काळादो होति ?	११४	११	अहण्णेण गुहामवग्गहणं ।	१२१
२	अहण्णेण इसवससइस्साणि ।		१२	उक्कस्सेण भणैतकासमसंखेअ पोगाअपरियहं ।	"
३	उक्कस्सेण तच्छीसं सागरोबमाणि ।	"	१३	पंचिदियतिरिक्क पंचिदियतिरिक्क पग्गअत्त -पंचिदियतिरिक्क ओपिणी केचभिरं काळादो होति ?	१२२
४	पइमाए पुइधीए केरइया केचभिरं काळादा होति ?	११	१४	अहण्णेण गुहामवग्गहणं भंतो सुइत्तं ।	
५	अहण्णेण इसवाससइस्साणि		१५	उक्कस्सेण तिग्गिण पसिइरोवमाणि पुग्गकाडिपुपसेयम्महिपाणि ।	
६	उक्कस्सेण सागरोबम ।		१६	पंचिदियतिरिक्कमपग्गत्ता केचभिरं काळादो होति ?	१२३
७	विदियाए जाव सत्तमाए पुइधीए केरइया केचभिरं काळादा होति ?	११७	१७	अहण्णेण गुहामवग्गहणं ।	
८	अहण्णेण उक्क तिग्गिण सत्त इस सत्तारस बावीस सागरोबमाणि साधियेपाणि ।	११८	१८	उक्कस्सेण भंतोसुइत्तं ।	१२४
९	उक्कस्सेण तिग्गिण सत्त इस सत्तारस बावीस तच्छीसं सागरोबमाणि ।		१९	( मणुसगदीए ) मणुसा मणुस पग्गत्ता मणुसिणी केचभिरं काळादो होति ?	१२५
१०	तिरिक्कगदीए तिरिक्को केचभिरं काळादो होति ?	१२१	२०	अहण्णेण गुहामवग्गहणं भंतो सुइत्तं ।	"

सूत्र सख्या	सूत्र	श्रुत	सूत्र सख्या	सूत्र	श्रुत
११	उपकस्सेज तिमिष पमिदोष मापि पुष्वकोविपुषसेजममि षापि ।	१२५	विमाजवासिपदेवा केवचिर काळादो हौति ?	१३३	
१२	मशुस्वमपग्गत्ता केवचि काळादो हौति ।	१२६	१२ अहणेज मशुरस बीसं वाबीस तेचीसं बडवीसं पशुबीसं छम्बीसं सत्ताबीसं मडुबीसं पशुगतीसं तीसं एककतीसं बचीस सापरो बमापि साहिरेपापि ।	"	
१३	अहणेज तुद्रामवग्गहणं ।	१२७	१३ उपकस्सेज बीसं वाबीसं ठबीस बडवीसं पशुबीसं छम्बीसं सत्ता बीसं मडुबीसं पशुगतीसं तीसं एककतीसं बचीसं तेचीसं साग रोबमापि ।	१३४	
१४	उपकस्सेज मठोमुहुत्तं ।		१४ सम्भुसिधियविमाजवासिपदेवा केवचिरं काळादो हौति ?	१३५	
१५	वेवगदीएदेवा केवचिरं काळादो हौति ?		१५ अहणेज तेचीससागरो पमापि ।		
१६	अहणेज इसवाससहस्सापि ।		१६ ईदियाशुवादेय परंदिवा केव चि काळादो हौति ?		
१७	उपकस्सेज तेचीसं सागरोक- मापि ।		१७ अहणेज तुद्रामवग्गहणं ।	१३६	
१८	मवजवासिप-वापवैतर-ओदि सिपदेवा केवचिरं काळादो हौति ?	१२८	१८ उपकस्सेज मधंतकाळमसंजेज पोगळपरिपई ।	"	
१९	अहणेज इसवाससहस्सापि ( इसवाससहस्सापि ) पकि दोषमस्व मडुममापो ।		१९ वादेरेदिया केवचिरं काळादो हौति ?		
२०	उपकस्सेज सापरोबम साहिरेप पमिदोषमं साहिरेपं पमिदोषमं साहिरेपं ।		२० अहणेज तुद्रामवग्गहणं ।	"	
२१	साहम्मीसावप्यहुदि जाव सहर सहस्सारकणवासिपदेवा कव- चिर काळादो हौति ?	१२९	२१ उपकस्सेज मसंजेजजि मागो मसंजेजजिसंजेजजि मोसथिपि इस्सपिजीमो ।	"	
२२	अहणेज पमिदोषमं वे सस इस बोइस सोळस सागराबमापि साहिरेपापि ।		२२ वादरपरंदिपपत्ता केवचिरं काळादो हौति ?	१३७	
२३	उपकस्सेज व सस इस बोइस सोमस मशुरस सागराबमापि साहिरेपापि ।	१३०	२३ अहणेज मंठोमुहुत्तं ।	"	
२४	वापवप्यहुदि जाव मवराद		२४ उपकस्सेज संकेजापि वाससह स्सापि ।	"	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
४८	बादरेइदियमपञ्चत्ता केबधिरं कासादो हौति ?	१३८	१७	अहण्येय सुदामवग्गहणमतो मुहुत्त ।	१४२
४९	अहण्येय सुदामवग्गहणं ।		१८	उकस्सेय सागरोपमसहस्ताणि पुम्बकोडिपुपत्तेयम्महियाणि सागरोपमसहपुपत्तं ।	
५०	उकस्सेय भंतोमुहुत्त ।		१९	पंभिदियमपञ्चत्ता केबधिरं कासादो हौति ?	१४३
५१	सुहुमेइदिया केबधिरं कासादो हौति ?	"	२०	अहण्येय सुदामवग्गहणं ।	
५२	अहण्येय सुदामवग्गहणं ।		२१	उकस्सेय भंतोमुहुत्तं ।	
५३	उकस्सेय मसलेखा लोगा ।		२२	कायाणुषादेय पुडविकाइया भाउकाइया तेउकाइया बाउ काइया केबधिरं कासादो हौति ?	"
५४	सुहुमेइदिया पञ्चत्ता केबधिरं कासादो हौति ?	१३९	२३	अहण्येय सुदामवग्गहणं ।	१४४
५५	अहण्येय भंतोमुहुत्तं ।	"	२४	उकस्सेय मसलेखा लोगा ।	
५६	उकस्सेय भंतोमुहुत्तं ।	"	२५	बादरपुडवि-बादरभाउ बादरतेउ बादरबाउ बादरवण्यविपत्तेय सरीर केबधिरं कासादो हौति ?	"
५७	सुहुमेइदियमपञ्चत्ता केबधिरं कासादो हौति ?	१४०	२६	अहण्येय सुदामवग्गहणं ।	"
५८	अहण्येय सुदामवग्गहणं ।	"	२७	उकस्सेय कम्महिदी ।	"
५९	उकस्सेय भंतोमुहुत्तं ।	"	२८	बादरपुडविकाइय-बादरभाउ काइय-बादरतेउकाइय-बादर-बाउकाइय-बादरवण्यविकाइय पत्तपसरीरपञ्चत्ता केबधिरं कासादो हौति ?	१४५
६०	वीरदिया तीरदिया बउरिदिया वीरदिय तीरदिय बउरिदिय-पञ्चत्ता केबधिरं कासादो हौति ?	"	२९	अहण्येय भंतोमुहुत्तं ।	१४६
६१	अहण्येय सुदामवग्गहणमता मुहुत्तं ।	१४१	३०	उकस्सेय संकेउजाणि बाससहस्ताणि ।	
६२	उकस्सेय सयउजाणि बास सहस्ताणि ।		३१	बादरपुडवि बादरभाउ-बादरतेउ बादरबाउ-बादरवण्यविपत्तेय सरीरमपञ्चत्ता केबधिरं कासादो हौति ?	"
६३	वीरदिय-तीरदिय-बउरिदिय मपञ्चत्ता केबधिरं कासादो हौति ?		३२	अहण्येय सुदामवग्गहणं ।	"
६४	अहण्येय सुदामवग्गहणं ।		३३	उकस्सेय भंतोमुहुत्तं ।	१४७
६५	उकस्सेय भंतोमुहुत्तं ।	१४२	३४	पंभिदिय-पंभिदियपञ्चत्ता केबधिरं कासादो हौति ?	"
६६	पंभिदिय-पंभिदियपञ्चत्ता केबधिरं कासादो हौति ?		३५	अहण्येय सुदामवग्गहणं ।	"
			३६	उकस्सेय भंतोमुहुत्तं ।	१४८

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
८४	सुदुमपुडबिकारया सुदुममाड कारया सुदुमतेडकारया सुदुम बाडकारया सुदुमबजपफिकारया सुदुमपिगावडीबा परञ्चता भपञ्चता सुदुमईदियपरञ्च भपञ्चतार्ण संगो ।	१४७	१	अहण्वेण भंतामुदुत्त ।	१५२
८५	बजपफिकारया परंदिपाभं संगो ।	१४८	१	उद्धरसेण भयतकासमसंखञ्ज योगसपरियदं ।	"
८६	बिगोवडीबा केबधिरं कासादो होति ?		१	९ भोराधियकायभोगी केबधिरं कासादो होति ?	१५३
८७	अहण्वेण गुरामबग्गइय ।		२	३ अहण्वेण एगसमभो ।	"
८८	उद्धरसेण भाहारउपोगसपरियद ।		१	४ उद्धरसेण बावीसे याससइ स्तापि वेसुजापि ।	"
८९	बादरपिगोवडीबा वादरपुडबि कारयार्ण संगो ।	१४९	१	५ भोराधियमिस्सकायभागी बड धियकायभोगी भाहारकाय भोगी केबधिरं कासादा होति ?	"
९०	तसकारया तसकारयपञ्चता केबधिरं कासादो हाति ?	"	१	६ अहण्वेण एगसमभो ।	"
९१	अहण्वेण गुरामबग्गइयं भंता मुदुत्तं ।	"	१	७ उद्धरसेण भंतामुदुत्त ।	१५४
९२	उद्धरसेण बसागरायमसइ स्तापि पुम्बकोडिपुयसेणभदि यापि बेसागपेभमसइस्तापि ।	१५०	१	८ वेठधियमिस्सकायभोगी भाहा- रमिस्सकायभोगी केबधिरं कासादो होति ?	१५५
९३	तसकारया भपञ्चता केबधिरं कासादो होति ?	"	१	९ अहण्वेण भंतामुदुत्त ।	"
९४	अहण्वेण गुरामबग्गइय ।		१	१० उद्धरसेण भंतामुदुत्त ।	"
९५	उद्धरसेण भंतामुदुत्तं ।		१	११ कम्महायकायभागी केबधिरं कासादो हाति ?	१५६
९६	भोगानुभारेण पंचमजभागी पचपधिभोगी केबधिरं कासादो होति ?	१५१	१	१२ अहण्वेण एगसमभो ।	१५७
९७	अहण्वेण एगसमभो ।		१	१३ उद्धरसेण तिण्णि समया	"
९८	उद्धरसेण भंतामुदुत्तं ।	१५२	१	१४ वेवानुयादम इत्थिबेदा कय धिरं कासादो होति ?	"
९९	कायभागी केबधिरं कासादो हाति ?		१	१५ अहण्वेण एगसमभो ।	"
			१	१६ उद्धरसेण पभिराधमसत्पुपत्त ।	
			१	१७ पुरिसवेदा केबधिरं कासादा होति ?	१५७
			१	१८ अहण्वेण भंतामुदुत्त ।	
			१	१९ उद्धरसेण सागरायमसत्पुपत्त	"
			१	२० जहुंसपयंदा केबधिरं कासादा होति ?	१५८

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१२१	अहण्येण एगसममो ।	१८८	१४१	आमिणियोहिण-सुव मोहिणापी केवधिरं काळावो होवि ?	१६४
१२२	उक्कस्सेण भणत्तकालमसायस पोग्गळपरिपट्टं ।	,	१४२	अहण्येण भतोमुहुत्त ।	
१२३	अवगइवेदा केवधिरं कालावो होति ?	१९	१४३	उक्कस्सेण सावट्टिसागरो वमाणि सादियेयाणि ।	
१२४	उपसमं पडुण्य अहण्येण एग सममो ।		१४४	मयपञ्चवणापी केवसणापी केवधिरं काळावो होति ?	१६१
१२५	उक्कस्सेण भतोमुहुत्त ।		१४५	अहण्येण भतोमुहुत्त ।	१६३
१२६	अवगं पडुण्य अहण्येण भतोमुहुत्तं		१४६	उक्कस्सेण पुण्यकोडी वेसुणा ।	
१२७	उक्कस्सेण पुण्यकोडी वेसुण ।	१६०	१४७	सत्तमाणुषावेण संसदा परि हारसुत्तिससदा संसदासंसदा केवधिरं काळावो होति ?	
१२८	कसायाणुषावेण कोषकसाई मायकसाई मायकसाह खोम कसाई केवधिरं काळावो होवि ?		१४८	अहण्येण भतोमुहुत्त ।	१६७
१२९	अहण्येण एगसममो ।		१४९	उक्कस्सेण पुण्यकोडी वेसुणा ।	"
१३०	उक्कस्सेण भतोमुहुत्त ।	१६१	१५०	सामाइय-उपोवहावणसुत्ति-संसदा केवधिरं काळावो होति ?	१६८
१३१	अकसाई अवगइवेदमगो ।		१५१	अहण्येण एगसममो ।	"
१३२	आणुषावेण मदिअण्यपी सुदअण्यपी केवधिरं काळावो होवि ?	"	१५२	उक्कस्सेण पुण्यकोडी वेसुणा ।	"
१३३	अजादिमो अपग्गवसिदो ।	१६२	१५३	सुत्तमसांपयसुत्तिसंसदा केवधिरं काळावो होति ?	"
१३४	अजादिमो सपग्गवसिदो ।	"	१५४	उपसमं पडुण्य अहण्येण एग सममो ।	१६९
१३५	सादिमो सपग्गवसिदो ।	"	१५५	उक्कस्सेण भतोमुहुत्तं ।	,
१३६	ओ सो सादिमो सपग्गवसिदा तस्स इमो विहेसो-अहण्येण भतोमुहुत्तं ।	"	१५६	अवग पडुण्य अहण्येण भतो-मुहुत्तं ।	,
१३७	उक्कस्सेण अउपोवगळपरिपट्टं वेसुणं ।		१५७	उक्कस्सेण भतोमुहुत्त ।	"
१३८	विमंगवापी केवधिरं काळावो होवि ?	१६३	१८	अहाण्येणविहारसुत्तिसंसदा केवधिरं काळावो होति ?	
१३९	अहण्येण एगसममो ।	"	१५९	उपसमं पडुण्य अहण्येण एग सममो ।	१७०
१४०	उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोव माणि वेसुणाणि ।	"			



सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१६०	उपकृष्टस्तेज्यं भंतोमुहुत् ।	१७०	१८०	सप्तसामरोचमाणि सादिरे पाणि ।	१७०
१६१	अथवा पञ्चम्यं ब्रह्मण्येण भंतो मुहुत् ।	"	१८०	तेजसेस्त्रिय पञ्चमेस्त्रिय- सस्त्रिया क्वचिरं काळादो होति ?	"
१६२	उपकृष्टस्तेज्यं पुण्यकोटीं देस्यु ।	१७१	१८१	ब्रह्मण्येण भंतोमुहुत् ।	"
१६३	असंज्ञया केचिरं काळादो होति ?	"	१८२	उपकृष्टस्तेज्यं च मन्वारस तेजीस सागरोचमाणि सादिरेपाणि ।	१७५
१६४	अथादिना अपरब्रह्मसिद्धो ।	"	१८३	अथियापुपाद्यं मभसिद्धिषा केचिरं काळादो होति ?	१७६
१६५	अथादिमो सपरब्रह्मसिद्धो ।	"	१८४	अथादिमो सपरब्रह्मसिद्धो ।	"
१६६	सादिमो सपरब्रह्मसिद्धो ।	"	१८५	सादिमो सपरब्रह्मसिद्धो ।	१७७
१६७	अथो सादिमो सपरब्रह्मसिद्धो वस्तु इमो विदेसा— ब्रह्मण्येण भंतोमुहुत् ।	१७२	१८६	अमविशसिद्धिषा केचिरं काळादो होति ?	"
१६८	उपकृष्टस्तेज्यं अयपोमासपरिपुष्टं देस्यु ।	"	१८७	अथादिमो अपरब्रह्मसिद्धो ।	१७८
१६९	संज्ञयापुत्रादेण उपकृष्टसर्वा केचिरं काळादो होति ?	"	१८८	सम्भवापुत्रादेण सम्भवादिद्वी केचिरं काळादो होति ?	"
१७०	ब्रह्मण्येण भंतोमुहुत् ।	"	१८९	ब्रह्मण्येण भंतोमुहुत् ।	"
१७१	उपकृष्टस्तेज्यं वे सागरोचमसह रसाणि ।	"	१९०	उपकृष्टस्तेज्यं चाबुधिसायये वमाणि सादिरेपाणि ।	"
१७२	अथकृष्टसर्वाणी केचिरं काळादो होति ?	१७३	१९१	अथसम्भवादिद्वी केचिरं काळादो होति ?	१७९
१७३	अथादिमो अपरब्रह्मसिद्धो ।	"	१९२	ब्रह्मण्येण भंतोमुहुत् ।	"
१७४	अथादिमो सपरब्रह्मसिद्धो ।	"	१९३	उपकृष्टस्तेज्यं तेजीससागरा वमाणि सादिरेपाणि ।	"
१७५	अथिर्वासाणी अथिषाणीमंगो ।	"	१९४	अथसम्भवादिद्वी केचिरं काळादो होति ?	१८०
१७६	अथकृष्टसर्वाणी केचिरं अथिर्वासाणीमंगो ।	१७४	१९५	ब्रह्मण्येण भंतोमुहुत् ।	"
१७७	केसापुत्रादेण किण्वकेस्त्रिय नीलकेस्त्रिय-काळकेस्त्रिया केचिरं काळादो होति ?	"	१९६	उपकृष्टस्तेज्यं चाबुधिसायये वमाणि ।	"
१७८	ब्रह्मण्येण भंतोमुहुत् ।				
१७९	उपकृष्टस्तेज्यं तेजीस सत्तारस				

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१९७	एवसमसम्मादिद्वी सम्मा मिच्छादिद्वी केवचिरं कासादो होति ।	१८१	२०८	अहण्णेण सुदामवग्गहण ।	१८४
१९८	अहण्णेण भंतोमुदुत्त ।	'	२०९	उद्धस्सेण अणंतकासमसखेग्ग पोग्गखपरियई ।	"
१९९	उद्धस्सेण भंतोमुदुत्त ।	१८२	२१०	आहाराणुवादेण आहारा केव चिरं कासादो होति ।	"
२००	सासजसम्मादिद्वी केवचिरं कासादो होति ।	"	२११	अहण्णेण सुदामवग्गहणं ति समयुपं ।	"
२०१	अहण्णेण एवसमसो ।	"	२१२	उद्धस्सेण भंगुसस्स असलेसदि मागो असखग्गजासंखेग्गामो मोसपिणी-उहसपिणीमो ।	१८५
२०२	उद्धस्सेण व्यपक्कियामो ।	'	२१३	अणाहारा केवचिरं कासादो होति ।	"
२०३	मिच्छादिद्वी मरिअण्णाणीमंगो	१८३	२१४	अहण्णेणसमसो ।	'
२०४	सखिययाणुवादेण सण्णी केव चिरं कासादो होति ।	"	२१५	उद्धस्सेण तिग्गिण समया ।	"
२०५	अहण्णेण सुदामवग्गहण ।	'	२१६	भंतोमुदुत्त ।	"
२०६	उद्धस्सेण सागरोबमसदपुपसं ।	'			
२०७	असण्णी केवचिरं कासादो होति ।	१८४			

एगजीवेण अतराणुगमसुत्ताणि ।

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	एगजीवेण अतराणुगमेण गदि पाणुवादन विअग्गदीए वेर इयार्णं अंतर केवचिरं कासादो होदि ।	१८७	१	अहण्णेण सुदामवग्गहणं ।	१८९
२	अहण्णज भंतोमुदुत्तं ।	"	७	उद्धस्सेण सामरापमसदपुपसं ।	
३	उद्धस्सेण अणंतकासमसखेग्ग पोग्गखपरियई ।	१८८	८	पंविदियतिरिक्खा पंविदियतिरिक्खपणग्गत्ता पंविदियतिरिक्खजोविणी पंविदियतिरिक्खअत्ता मणुसग्गदीए मणुमा मणुमपग्गत्ता मणुभिणी मणुमअपग्गत्तावमतरं केवचिरं कासादा होदि ।	
४	एयं मत्तसु पुडवीसु वेरइया ।	"	९	अहण्णज सुदामवग्गहण ।	"
५	तिरिक्खग्गदीए तिरिक्खजायमंतं केवचिरं कासादा इदि ।	'			

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१०	ब्रह्मस्तेषु अर्पतकाष्ठमसंख्येऽत्रा योग्यस्यपरिचयः ।	१९०	२६	उपकस्तेषु अर्पतकाष्ठमसंख्येऽत्र योग्यस्यपरिचयः ।	१९५
११	देवगर्वाय देवानमंतरं केचिद्विदं काकादो होदि ?	"	२७	अथवा देवगर्वाय देवानमंतरं केचिद्विदं काकादो होदि ?	"
१२	अह्नयेषु मंतोमुहूर्तः ।	"	२८	अह्नयेषु वासपुषतः ।	१९६
१३	ब्रह्मस्तेषु अर्पतकाष्ठमसंख्येऽत्रा योग्यस्यपरिचयः ।	"	२९	उपकस्तेषु अर्पतकाष्ठमसंख्येऽत्रा योग्यस्यपरिचयः ।	"
१४	मन्त्रावाप्तिय-वाचबैतर-ओदि- सिय-सोपन्मीसायक्यवाप्तिय देवा देवगर्वायमंगा ।	१९१	३	मनुर्विस-आव मन्त्रावाप्तिय- वाप्तियदेवानमंतरं केचिद्विदं काकादो होदि ?	"
१५	सजककुमार मन्त्रिवाचमंतरं केच चिद्विदं काकादो होदि ?	"	३१	अह्नयेषु वासपुषतः ।	"
१६	अह्नयेषु मुहूर्तपुषतः ।	"	३२	उपकस्तेषु वे सागरोचमाणि साविरेवाणि ।	"
१७	उपकस्तेषु अर्पतकाष्ठमसंख्येऽत्रा योग्यस्यपरिचयः ।	१९२	३३	सर्वकृत्सिद्धिदिविमानवाप्तियदेवा यमंतरं केचिद्विदं काकादो होदि ?	१९७
१८	ब्रह्मस्तेषु अर्पतकाष्ठमसंख्येऽत्रा योग्यस्यपरिचयः ।	"	३४	वात्सिय अंतरं विरतरं ।	"
१९	अह्नयेषु विचसपुषतः ।	"	३५	इदियाद्युवादेव परविषाजमंतरं केचिद्विदं काकादो होदि ?	१९८
२	उपकस्तेषु अर्पतकाष्ठमसंख्येऽत्रा योग्यस्यपरिचयः ।	१९३	३६	अह्नयेषु सुदामवगगाह्यः ।	"
२१	सुकम्भवात्सुक-सवात्सहस्तात् क्यवाप्तियदेवानमंतरं केचिद्विदं काकादो होदि ?	"	३७	उपकस्तेषु वेसागरोचमसह स्ताणि पुषकोदिविपुषतेषुमन्त्रि याणि ।	"
२२	अह्नयेषु पक्षपुषतः ।	"	३८	वात्सिय-वात्सिय-पक्षत मन्त्रावाप्तिय मंतरं केचिद्विदं काकादो होदि ?	१९९
२३	उपकस्तेषु अर्पतकाष्ठमसंख्येऽत्रा योग्यस्यपरिचयः ।	१९४	३९	अह्नयेषु सुदामवगगाह्यः ।	"
२४	वात्सिय-वात्सिय-पक्षत मन्त्रावाप्तिय मन्त्रावाप्तियदेवानमंतरं केचिद्विदं काकादो होदि ?	"	४०	उपकस्तेषु अर्पतकाष्ठमसंख्येऽत्रा योग्यस्यपरिचयः ।	"
२५	अह्नयेषु वासपुषतः ।	"	४१	सुहृदेर्विद्वि-पक्षत-मन्त्रावाप्तिय मन्त्रावाप्तियदेवानमंतरं केचिद्विदं काकादो होदि ?	२००
		"	४२	अह्नयेषु सुदामवगगाह्यः ।	"

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
४३	उक्कस्सेण भगुळस्स भसल्लेज्जदि मापो भसल्लेज्जासंल्लेज्जाभो भोसपिणी उक्कस्सपिणीभो ।	२	५९	योगाशुबाहेण पच्चमणजोगि पच्चवधिजोगीणमतर केवधिरं काळादो होदि ?	२०४
४४	वीरुदिय-तीरुदिय--वठरिदिय पविदियार्णं तस्सेव परज्जत्त भप ज्जत्ताणमंतरं केवधिरं काळादो होदि ?	२०१	६०	उहण्णेण भंतोमुहुत्तं ।	'
४५	उहण्णेण तुहामवग्गहणं ।	"	६१	उक्कस्सेण भणत्तकाळमसल्लेज्ज पोग्गळपरियहं ।	'
४६	उक्कस्सेण भणत्तकाळमसल्लेज्ज पोग्गळपरियहं ।	"	६२	कायजोगीणमंतर केवधिरं काळादो होदि ?	२०३
४७	कायाशुबाहेण पुडविकाइय भाठकाइय-तेउकाइय-भाठकाइय बावुर-सुहुम-परज्जत्त भपज्जत्ताण मतरं केवधिरं काळादो होदि ?	२०२	६३	उहण्णेण एगसमभो ।	'
४८	उहण्णेण तुहामवग्गहणं ।	"	६४	उक्कस्सेण भतोमुहुत्तं ।	'
४९	उक्कस्सेण भणत्तकाळमसल्लेज्ज पोग्गळपरियहं ।	"	६५	भोराळियकायजोगीणमतर केवधिरं मिस्सकायजोगीणमतर केवधिरं काळादो होदि ?	२०७
५०	वज्जविकारिणोवसीव बावुर सुहुम-परज्जत्त भपज्जत्ताणमंतरं केवधिरं काळादो होदि ?	"	६६	उहण्णेण एगसमभो ।	"
५१	उहण्णेण तुहामवग्गहणं ।	२ ३	६७	उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोव मायि साधिरेयाणि ।	"
५२	उक्कस्सेण भसल्लेज्जा भोगा ।	"	६८	वेडवियवकायजोगीणमंतरं केवधिरं काळादो होदि ?	२०८
५३	बावुरवज्जविकारिणोवसेयसरीर पज्जत्ताणमंतरं केवधिरं काळादो होदि ?	"	६९	उहण्णेण एगसमभो ।	२०९
५४	उहण्णेण तुहामवग्गहणं ।	"	७०	उक्कस्सेण भणत्तकाळमसल्लेज्ज पोग्गळपरियहं ।	"
५५	उक्कस्सेण भग्गाइज्जपोग्गळ परियहं ।	२ ४	७१	वेडवियवमिस्सकायजोगीणमंतरं केवधिरं काळादो होदि ?	'
५६	तसकाइय-तसकाइयपज्जत्त-भप ज्जत्ताणमतरं केवधिरं काळादो होदि ?	"	७२	उहण्णेण इत्तवाससहस्साणि साधिरेयाणि ।	"
५७	उहण्णेण तुहामवग्गहणं ।	"	७३	उक्कस्सेण भणत्तकाळमसल्लेज्ज पोग्गळपरियहं ।	२१०
५८	उक्कस्सेण भणत्तकाळमसल्लेज्ज	"	७४	आहारकायजोगि आहारमिस्स कायजोगीणमंतरं केवधिरं काळादो होदि ?	'
			७५	उहण्णेण भंतोमुहुत्तं ।	"
			७६	उक्कस्सेण भणत्तपोग्गळपरियहं वेत्तं ।	२११

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
७७	अम्महयकायजोगीचमंतरं केव चिर काकादो होदि ।	२१२	९४	अहण्येय एगसममो ।	२१६
७८	अहण्येय सुदामवगहण ति समकथं ।	"	९५	उककस्सेय भंतोमुहुत्तं ।	२१७
७९	उककस्सेय भंगुळस्स भसंखे अदिमागो भसंखेआसंखेआमा भोसपिपि-उस्सपिपीमो ।	"	९६	अकसारं भवणववेदाय भंगो ।	"
८०	वेदाणुवादेण इत्थिवेदाणमंतरं केवचिरं काकादो होदि ।	२१३	९७	पाणाणुवादेण मदिमण्णापी सुवमण्णापीणमंतरं केवचिरं काकादो होदि ।	"
८१	अहण्येय सुदामवगहण ।	"	९८	अहण्येय भतोमुहुत्तं ।	"
८२	उककस्सेय भयंतकाळमसंखेअ पोग्गळपरियहं ।	"	९९	उककस्सेण वेद्यावड्ढिसागरोव मापि ।	२१८
८३	पुरिसवेदाणमंतरं केवचिरं काकादो होदि ।	"	१००	विमंयणापीणमंतरं केवचिरं काकादो होदि ।	"
८४	अहण्येय एगसममो ।	"	१०१	अहण्येय भंतोमुहुत्तं ।	२१९
८५	उककस्सेय अणतकाळमसंखेअ पोग्गळपरियहं ।	२१४	१०२	उककस्सेय भयंतकाळमसंखेअ पोग्गळपरियहं ।	"
८६	पडुंसववेदाणमंतरं केवचिरं काकादो होदि ।	"	१०३	आमिपिपोहिय-सुद मोहि-मण परअववार्भाणमंतरं केवचिरं काकादो होदि ।	"
८७	अहण्येय भंतोमुहुत्तं ।	"	१०४	अहण्येय भतोमुहुत्तं ।	"
८८	उककस्सेय सागरोवमसहपुअत्तं ।	"	१०५	उककस्सेण अटपोग्गळपरियहं वेसुत्तं ।	२२०
८९	अवणववेदाणमंतरं केवचिरं काकादो होदि ।	२१५	१०६	केवकपाणीणमंतरं केवचिरं काकादो होदि ।	२२१
९०	उवसमं पडुअ अहण्येय भंतो मुहुत्तं ।	"	१०७	पत्थि अतरं चिरतरं ।	"
९१	उककस्सेय अटपोग्गळपरियहं वेसुत्तं ।	"	१०८	अजमाणुवादेण संअह-आमा हण्णेशोवड्ढावणसुअिसंअह-परि हासुअिसंअह-अंअवाअंअवाण मंतरं केवचिरं काकादो होदि ।	"
९२	अवर्गं पडुअ पत्थि भंतरं चिरंतरं ।	२१६	१०९	अहण्येय भंतोमुहुत्तं ।	२२२
९३	असायाणुवादेण कोकसारं माणकसारं-मायकसारं-ओम- कसारंमंतरं केवचिरं काकादो होदि ।	"	११०	उककस्सेण अटपोग्गळपरियहं वेसुत्तं ।	"

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
१११	सुहृमसांपराहयसुक्षिसज्जद-अहा कजादधिहारसुक्षिसज्जवापमंतरे केबधिरं कासादो होदि ?	२२३	कासादो होदि ?		२२९
११२	इयसर्म पदुष्व अहण्णेज भंतो मुहुत्तं ।	२२४	१२९ अहण्णेज भंतोमुहुत्त ।		
११३	इककस्सेज मज्जापागगळपरियह वेसुत्तं ।	"	१३० उककस्सेज मज्जापागगळमसंजेअ पोग्गळपरियह ।		२३०
११४	अयगं पदुष्व परिय भंतरं पिरतर ।	२२५	१३१ मधियाणुपादेण मज्जासिद्धिय ममपधिसिद्धियापमंतरं केबधिरं कासादो होदि ?		
११५	असज्जापमतर केबधिर कासादो होदि ?		१३२ अरिय भंतरं पिरतर ।		
११६	अहण्णेज भंतोमुहुत्त ।		१३३ सम्मत्ताणुपादेण सम्माइड्ढि वेहपसम्माइड्ढि-उक्कसमसम्मा- इड्ढि-सम्माभिच्छाइड्ढीजमंतरं केबधिर कासादो होदि ?		२३१
११७	इककस्सेज पुम्बकोडी इसुत्त ।	२२६	१३४ अहण्णेजतोमुहुत्तं ।		
११८	इंसमाणुपादेण अपजुत्तंसपी पमतरं केबधिर कासादो होदि ?		१३५ उककस्सेज मज्जापोग्गळपरियहं वेसुत्तं ।		"
११९	अहण्णेज तुहामवगगहम ।	"	१३६ अरियसम्माइड्ढीजमंतरंकेबधिरं कासादो होदि ?		२३२
१२०	इककस्सेज मणंतकाळमसंजेअ पोग्गळपरियहं ।	२२७	१३७ अरिय अतर पिरंतरं ।		
१२१	अअकजुत्तंसपीणमतर केबधिर कासादो होदि ?		१३८ सासजसम्माइड्ढीजमतर केब धिर कासादो होदि ?		
१२२	अरिय अतरं पिरतर ।		१३९ अहण्णेज पसिहायमस्स मसं जेअइदिमागो ।		२३३
१२३	ओधिइसपी ओधियापिमंगो ।		१४० उककस्सेज मज्जापागगळपरियहं वेसुत्तं ।		२३४
१२४	केबधइसपी केयळजागिमंगो ।	२२८	१४१ मिच्छाइड्ढी मदिअण्णापिमंगो ।		
१२५	सेस्ताणुपादेण डिअहेस्सिय पीअहेस्सिय-काअहेस्सियाण मंतर केबधिर कासादो हादि ?	"	१४२ सणियपाणुपादेण सण्णीजमतर केबधिरं कासादो हादि ?		
१२६	अहण्णेज भंतोमुहुत्त ।	"	१४३ अहण्णेज तुहामवगगहय ।		२३५
१२७	उककस्सेज तेत्तीससागरोय मापि साधिरयाणि ।		१४४ उककस्सेज मणंतकाळमसंजेअ पोग्गळपरियह ।		"
१२८	तेअसिअय-पम्महेस्सिय सुअ- सेस्सियापमंतर केबधिर				

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१४९	असृग्पीथमंतरं केचच्चिरं वाक्याहो होदि ?	२३५		मंतरं केचच्चिरं वाक्याहो होदि ?	२३५
१४९	अहृत्केण प्लुतामवगाहर्णं ।	"	१४९	अहृत्केण प्लुतामवगाहर्णं ।	"
१४७	उक्कस्तेन सागटावमसहपुषत् । "	"	१५०	उक्कस्तेन तिग्गिससमय ।	"
१४८	माहाराणुवाहण माहाराण	"	१५१	भवाहारा कम्महयकापजागि- मयो ।	"

### गाणाजीवेहि भगविचयाणुगमसुत्ताणि ।

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	आपासीचहि मपच्चिचयाणुगमेण गदियाणुवाहणं चिरयगहीण वेरहया जियमा भरिय ।	२३७	८	वरुंदिय—ठरुंदिय—अउरुंदिय पंदिय पग्गत्ता अपग्गत्ता जियमा भरिय ।	२३९
२	एव सत्तसु पुडवीसु वेरहया ।	"	९	कापालुवाहणं पुडविजाहया भाउकाहया वेउकाहया पाठ काहया वणप्फदिकाहया जियोव जीवा वादणं सुहुमा पग्गत्ता अपग्गत्ता वादणवण्णदिकाहय पत्तयसरीरा पग्गत्ता अपग्गत्ता तसकाहया तसकाहयपग्गत्ता अपग्गत्ता जियमा भरिय ।	
३	तिरिफ्फगहीणं तिरिफ्फा पच्चि दियतिरिफ्फा पच्चिदियतिरिफ्फ पग्गत्ता पच्चिदियतिरिफ्फ जाचिची पच्चिदियतिरिफ्फप ग्गत्ता मणुस्सगहीणं मणुसा मणुसपग्गत्ता मणुसिचीमो जियमा भरिय ।	२३८	१०	जोगाणुवाहणं पथमज्जोगी पंचच्चिजोगी कायजोगी भोरा सियकापजामी भोराजियमिस्स कायजोगी अउभियकायजोगी कम्महयकायजोगी जियमा भरिय ।	२४०
४	मणुसअपग्गत्ता सिपा भरिय सिपा भरिय ।		११	येउरियमिस्सकायजोगी भाहार कायजोगी भाहारमिस्सकाय जोगी सिपा भरिय सिपा भरिय ।	"
५	इवगहीणं इवा जियमा भरिय ।				
६	एरं मपणयासिबण्णहुदि जाव सण्णहुसिदियिमाज्जासियवेयेसु ।	"			
७	इंदियाणुवाहणं एरुदिया वादरा सुहुमा पग्गत्ता अपग्गत्ता जियमा भरिय ।	२३९			

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१२	वेदानुवादेन इतिपदेदा पुरिस वेदा णसुसयवेदा भवगदवेदा पियमा भरिय ।	२४०	१७	इसणानुवादेण अककहुदसणी अककहुदसणी ओदिदंसणी केबळदंसणी पियमा भरिय ।	२४२
१३	कसापानुवादेण कोधकसाह माधकसाह मायकसाह ओम कसाह अकसाह पियमा भरिय ।	,	१८	मेस्साणुवादेण किण्हकेस्सिया पीसनेस्सिया काउलेस्सिया तेउकेस्सिया पम्मसस्मिया सुक- केस्सिया पियमा भरिय ।	"
१४	आणानुवादेण महिमण्णाणी सुदमण्णाणी विमंगणाणी आभिनिवाहिय-सुद-ओदि मण- पउवणाणी कबलणाणी पियमा भरिय ।	२४१	१९	मधियाणुवादेण मयसिद्धिया अमवसिद्धिया पियमा भरिय ।	,
१५	मंजमाणुवादेण सामारप-छेदो वहायणसुदिसंजदा परिहार सुदिसंजदा महाकसाहविहार सुदिसंजदा संजदासजदा असे जदा पियमा भरिय ।		२०	सम्मणानुवादेण सम्मादिट्ठी येदरासम्मादिट्ठी ( लइयसम्मा- दिट्ठी ) मिच्छादिट्ठी पियमा भरिय ।	२४३
१६	सुद्धमसांपरापसंजदा मिया भरिय मिया णरिय ।	२४२	२१	उबसमसम्मादिट्ठी ( सासण ) सम्मादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी मिया भरिय सिया णरिय ।	,
			२२	सण्णियाणुवादेण सण्णी अमण्णा पियमा भरिय ।	
			२३	माहाराणुवादेण माहारा मणा द्वारा पियमा भरिय ।	"

द्व्यपमानाणुगमसुत्ताणि ।

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	द्व्यपमानाणुगमस्य गदियाणु वादेण मिरयगदीए पररया द्व्यपमानेण कपदिषा ?	२४४	५	पररस्त असत्तद्विमागो ।	२४५
२	असत्तेज्जा ।	"	६	तासि सहीण विक्कंयमूणी अंगुदवागममूमं विदियधगमूम गुण्णिदेण ।	२४६
३	असंकेज्जासत्तेज्जादि ओमण्णियि वहसण्णिवीदि अउदिदंदि कामस ।		७	एवं पदमाए पुदवीए पररया ।	२४७
४	केसेण असत्तेज्जाओ महीओ ।	२४५	८	विदियाए ज्ञाव मलमाए पुदवीए पररया द्व्यपमानेण केवटिया ?	"



सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
९	असंश्लेष्या ।	२४८	२३	अज्ञात्प्रथमभाष्य केवद्विया ।	२५४
१०	असंश्लेष्यासंश्लेष्यादि भोसप्यिधि इत्सप्यिधीहि भवद्विरंति काठेय ।		२४	असंश्लेष्या ।	"
११	श्लेषेण सेडोप असंश्लेष्यादि भाषा ।	२४९	२५	असंश्लेष्यासंश्लेष्यादि भोस प्यिधि इत्सप्यिधीहि भवद्विरंति काठेय ।	२५५
१२	तिस्ते संश्लेष्य भाषामो असं श्लेष्यामो ज्ञापयकोडीयो ।		२६	श्लेषेण सेडोप असंश्लेष्यादि भाषा ।	
१३	पदभाषिपार्यं संश्लेष्यमूलात् संश्लेष्यात्प्रथमोऽप्यप्यासो ।	"	२७	तिस्ते संश्लेष्य भाषामो असं श्लेष्यामो ज्ञापयकोडीयो ।	२५६
१४	तिरिक्त्वपरीप तिरिक्त्वा द्व्य पमायेन केवद्विया ।	२५	२७	मनुस मनुसमपञ्चत्पदि द्व्य द्व्यापक्वित्तपदि सेडो भव- द्विरदि अंगुष्ठवर्गमूलात्तद्विपर्वो मूलागुणितेन ।	२५६
१५	अपता ।	'	२८	मनुसपञ्चत्ता मनुसिपीयो द्व्यपमायेन केवद्विया ।	२५७
१६	असंश्लेष्यादि भोसप्यिधि इत्स प्यिधीहि न भवद्विरंति काठेय ।	२५१	२९	कोडाकोडाकोडीप उच्चरि कोडा कोडाकोडाकोडीप इदुरो कर्तुं वर्गात्तमुच्चरि सत्तर्ह वर्गात् इदुरो ।	
१७	श्लेषेण असंश्लेष्या श्लेष्या ।		३०	देवद्वीप द्वा द्व्यपमायेन केवद्विया ।	२५९
१८	पंचिद्विरतिरिक्त्व पंचिद्विरतिरि क्त्वपञ्चत्-पंचिद्विरतिरिक्त्व- ओमिनी-पंचिद्विरतिरिक्त्वमप ञ्चत्ता द्व्यपमायेन केवद्विया ।	२५२	३१	असंश्लेष्या ।	"
१९	असंश्लेष्या ।	"	३२	असंश्लेष्यासंश्लेष्यादि भोस प्यिधि इत्सप्यिधीहि भवद्विरंति काठेय ।	२६०
२	असंश्लेष्यासंश्लेष्यादि भोस प्यिधी इत्सप्यिधीहि भवद्विरंति काठेय ।		३३	श्लेषेण पद्वस्त बह्वप्यगुण सद्वर्गापदिमाप्य ।	"
२१	श्लेषेण पंचिद्विरतिरिक्त्व पंचि द्विरतिरिक्त्वपञ्चत्-पंचिद्विर- तिरिक्त्वओमिनि-पंचिद्विर- तिरिक्त्वमपञ्चत्पदि पद्वस्त भवद्विरदि देवद्वीपकाठेयो असंश्लेष्यागुणितेन काठेय संश्लेष्यागुणितेन काठेय संश्लेष्यागुणितेन काठेय असंश्लेष्या गुणितेन काठेय ।	२५३	३४	असंश्लेष्यासंश्लेष्यादि भोस प्यिधि इत्सप्यिधीहि भवद्विरंति काठेय ।	२६१
२२	मनुसपरीप मनुस्ता मनुसम		३५	असंश्लेष्या ।	"
			३६	असंश्लेष्यासंश्लेष्यादि भोस	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	पिपि-उस्सपिपीहि भवहिरंति कासेण ।	२६१	३	पडिपोवमस्स भल्लेज्जादिमागो ।	२६६
३७	कत्तेण भसल्लेज्जाभो सेडीभो ।	"	५४	पदेहि पडिपोवमप्रथहिरदि भल्लो मुहुत्तेण ।	"
३८	पद्दस्स भसल्लेज्जादिमागो ।	२६२	५	सम्भट्टुसिद्धिभिमाणवासियदेवा दम्पपमाणेण केपटिया ?	२६७
३९	तासि सेडीणं विक्खमसूची भगुलं भगुलपग्गमूलगुणियेव ।	"	५६	भसल्लेज्जा ।	"
४०	आणवत्तरेवेया दम्पपमाणेण केपटिया ?	"	५७	ईदियाणुवादेण पदंदिया बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता दम्पपमाणेण केपटिया ?	"
४१	भसल्लेज्जा ।	"	५८	अयंता ।	२६८
४२	भसल्लेज्जासंजेज्जाहि भोस पिपि उस्सपिपीहि भवहिरंति कासेण ।	२६३	५९	अयंतानंताहि भोसपिपि-उस्सपिपीहि य भवहिरंति कासेण ।	"
४३	जेत्तेण पद्दस्स सल्लेज्जाभोयण सद्धयमपट्टिमाएण ।	"	६०	येत्तेण अणतानंता मागो ।	"
४४	ओदिसिया देवा देयणदिमंगो ।	"	६१	बीरदिय-तीरदिय-अउरिदिय-पंडिदिया तस्सेय पज्जत्ता अपज्जत्ता दम्पपमाणेण केपटिया ?	२६९
४५	सोदम्मीसाणकण्यवासियदेवा दम्पपमाणेण केपटिया ?	२६४	६२	भसल्लेज्जा ।	"
४६	भसल्लेज्जा ।	"	६३	भसल्लेज्जासंजेज्जाहि भास पिपि-उस्सपिपीहि भवहिरंति कासेण ।	"
४७	भसल्लेज्जासंजेज्जाहि भोस पिपि-उस्सपिपीहि भवहिरंति कासेण ।	"	६४	जेत्तेण बीरदिय तीरदिय-अउरिदिय-पंडिदिय तस्सेय पज्जत्ता अपज्जत्तादि पद्द भवहिरदि अंगुमस्स अयंगज्जादिमाग पग्गपट्टिमाएण अंगुमस्स सय ज्जादिमागवापट्टिमाएण अंगुमस्स अयंगज्जादिमागपग्ग पट्टिमाएण ।	२७०
४८	कत्तेण भसल्लेज्जाभो सेडीभो ।	२६	६५	आयाणुवादेण पुदपिआएय भाउआएय-तउआएय-वाउआएय बाएरपुदपिआएय—बाएरमाउआएय-बाएरमाउआएय—बाएर	
४९	पद्दस्स भसल्लेज्जादिमागो ।	"			
५०	तासि सेडीणं विक्खमसूची भगुमस्स पग्गमूलं विदियं तदियवक्कममूलगुणियेव ।	"			
५१	सणक्कुमार जाय सद्ध-मदस्साएकण्यवासियदेवा भल्लम-पुट्ठीमंगो ।	"			
५२	आणद् जाय भवराहदपिमाण वासियदेवा दम्पपमाणेण केपटिया ?	२६५			

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	बाह्यकार्य-बाह्यव्यवहारिककार्य- परोक्षसरीर सम्बन्ध अपञ्चता सुक्ष्मपुत्रिकार्य-सुक्ष्मकार्य- कार्य-सुक्ष्मोत्तरकार्य-सुक्ष्म- बाह्यकार्य तत्संबन्ध पञ्चता अप- ञ्चता इत्यपमानेन केचद्विधा ?		७८	सोमस्त सभञ्जद्विधाया ।	२७४
३१	असंज्ञेयज्ञा शोभा ।	२७०	७९	व्यवहारिककार्य-विगोहजीवा बाह्य सुक्ष्म पञ्चता अपञ्चता इत्यपमानेन केचद्विधा ?	२७५
३७	बाह्यपुत्रिकार्य-बाह्यमात्र- कार्य-बाह्यव्यवहारिककार्य- परोक्षसरीरपञ्चता इत्यपमा- नेन केचद्विधा ?	२७१	८०	अर्जता ।	"
३८	असंज्ञेयज्ञा ।	"	८१	अर्जताभवादि जोसप्यिभि उत्सप्यिषीदि अचद्विर्दि काद्येन ।	"
३९	असंज्ञेयज्ञासंज्ञेयज्ञादि भोस प्यिभि उत्सप्यिषीदि अचद्विर्दि काद्येन ।	२७२	८२	जेसेन अचताभता शोभा ।	२७६
७	जेसेन बाह्यपुत्रिकार्य-बाह्य मात्रकार्य-बाह्यव्यवहारिककार्य परोक्षसरीरपञ्चतापदि पद्वय बद्विर्दि अर्गुहस्त असंज्ञेयज्ञि यागवगपदिमाप्य ।	"	८३	तत्कार्य-तत्कार्यपञ्चता-अप- ञ्चता पंचिदिय-पंचिदियपञ्चत अपञ्चतापे संशो ।	"
७१	बाह्यतेजपञ्चता इत्यपमानेन केचद्विधा ?	"	८४	शोभाशुभादेन पंचमवशोभी तिक्चिबचिजोपी इत्यपमानेन केचद्विधा ?	"
७२	असंज्ञेयज्ञा ।	२७३	८५	देवाने संज्ञेयज्ञदिमागो ।	२७७
७३	असंज्ञेयज्ञाबसिचवगो व्या- क्तिवचनस्त संतो ।	"	८६	बचिजोगि-असचमोसबचिजोपी इत्यपमानेन केचद्विधा ?	"
७४	बाह्यबाह्यपञ्चता इत्यपमानेन केचद्विधा ?	"	८७	असंज्ञेयज्ञा ।	"
७५	असंज्ञेयज्ञा (	"	८८	असंज्ञेयज्ञासंज्ञेयज्ञादि भोस प्यिभि उत्सप्यिषीदि अचद्विर्दि काद्येन ।	"
७६	असंज्ञेयज्ञासंज्ञेयज्ञादि जोस प्यिभि उत्सप्यिषीदि अचद्विर्दि काद्येन ।	२७४	८९	जेसेन बचिजोगि असचमोस बचिजोपीदि पद्वयबद्विर्दि अर्गुहस्त संज्ञेयज्ञदिमागवग पदिमाप्य ।	२७८
७७	जेसेन असंज्ञेयज्ञाधि पद्वयि ।	"	९०	कार्यजोगि-भोराक्षिबकार्यजोपि- भोराक्षिबमिस्तकापजोपि-कम्प इत्यकावजोगी इत्यपमानेन केच द्विधा ?	"
			९१	अर्जता ।	"

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१२	अणतापंताहि भोसपिपि-उस्त पिपीहि ष अणहिरति कासण । २७७		११२	कसायाणुवाइण कायकसाइ मायकसाइ मायकसाइ मय कसाइ इणपमाण कय डिया ?	२८४
१३	सेसेय अर्थतापता सागा ।		११३	अणता ।	
१४	वेठपियकापजोगी इणपमाणेण केयडिया ?		११४	अर्थतापताहि भामपिणि उस्मपिपीहि ष अणहिरति कासेण ।	
१५	इवाण सलेउज्जदिमाणो ।		११५	असप अणतापता भोगा ।	
१६	अणपियमिस्सकापजोगी इण पमाणेण कयडिया ?	२८०	११६	अकसाइ इणपमाणेण कय डिया ?	२८५
१७	इवाण सलेउज्जदिमाया ।		११७	अणता ।	
१८	आहारकापजोगी इणपमाणेण केयडिया ?		११८	आणाणुवाइण मदिअण्णाणी सुइअण्णार्था णहुंसयभगा ।	
१९	अणुअण ।		११९	विअण्णार्था इणपमाणेण कय डिया ?	२८६
२०	आहारमिस्सकापजोगी इण पमाणेण केयडिया ?		१२०	इवेहि सादिरय ।	
२०१	संलेउजा ।		१२१	आमिपिवाइय-सुइ भोपिणार्था इणपमाणेण कयडिया ?	
२०२	अदाणुपाइण इरियअदा इण पमाणेण कयडिया ?	२८१	१२२	पडिदाअमस्स असणउज्जदि मागा ।	
२०३	इवीहि सादिरये ।		१२३	अइहि पण्डिदाअमअहिरदि अंतोमुट्टण ।	२८७
२०४	पुरिसअदा इणपमाणेण कय डिया ?		१२४	अणउज्जअण्णार्था इणपमाणेण कयडिया ?	
२०५	इयहि सादिरय ।	२८२	१२५	संणउजा ।	
२०६	अणुअणयेदा इणपमाणेण कय डिया ?		१२६	अणमणार्था इणपमाणेण कय डिया ?	
२०७	अणता ।		१२७	अणता ।	
२०८	अणतापंताहि भोसपिपि उस्सपिपीहि ष अणहिरति कासण ।		१२८	संजमाणुवाइण अंअदा सामा इणउठेदोअण्णअणुडिसअदा	
२०९	असप अर्थतापता सागा ।	२८३			
२१	अणउज्जदा इणपमाणेण कय डिया ?				
२११	अणता ।				

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	दम्पपमायेण केवडिया ?	२८८	१४६ कवसकलनी केवसणाविर्मगो ।		२९२
१२०	ओडिपुपत्त ।		१४७ केस्ताणुवादेय किण्डसेरिसप		
१३०	परिहारसुदिसंज्ञदा दम्पपमा-		पीडसेरिसय—काउडेरिसया		
	येण केवडिया ?	"	मसंज्ञदर्मगो ।		
१३१	सहस्तपुपत्त ।	"	१४८ तडसेरिसया दम्पपमायेण केव		
१३२	सुद्धमसांपराहपसुदिसंज्ञदा		डिया ?		"
	दम्पपमायेण केवडिया ?	"	१४९ वादिसियपेदेदि सादिरेण ।		"
१३३	सहपुपत्त ।	"	१५० पम्मसेरिसया दम्पपमायेण		
१३४	अहाकवाविहारसुदिसंज्ञदा		केवडिया ?		२९३
	दम्पपमायेण केवडिया ?	२८९	१५१ सन्धिवंविदियतिरिक्कजोभि		
१३५	सहसहस्तपुपत्त ।	"	पीय संकेउडदिमागो ।		"
१३६	संज्ञदासंज्ञदा दम्पपमायेण		१५२ सुक्कडेरिसवा दम्पपमायेण		
	केवडिया ?	"	केवडिया ?		"
१३७	पडिदोवमस्त मसंकेउडदि		१५३ पडिदोवमस्त मसंकेउडदि		
	मागो ।	"	मागो ।		"
१३८	पदेदि पडिदोवममभदिटदि		१५४ पदेदि पडिदोवममभदिरदि		
	मंतोमुहुत्तेण ।	"	मंतोमुहुत्तेण ।		२९४
१३९	मसंज्ञदा मदिमच्छाविर्मगो ।	२९०	१५५ मविषाणुवादेय मभसिदिप		
१४०	संज्ञाणुवादेय अकसुर्बसपी		दम्पपमायेण केवडिया ?		
	दम्पपमायेण केवडिया ?	"	१५६ मर्जता ।		
१४१	मसंकेउडा ।	"	१५७ मर्जतामंताहि घोसपियि		
१४२	मसंकेउडासंकेउडाहि घोस-		उत्सपिणीहि य मभदिरंति		
	पियि उस्सपिणीहि मभदिरंति		काठेण ।		"
	काठेण ।	"	१५८ लेत्तेण मर्जतामंता छोया ।		२९५
१४३	केत्तम अकसुर्बसपीहि पवर		१५९ मभसिदिपया दम्पपमायेण		
	मभदिरदि मंगुळस्त संके		केवडिया ?		"
	उडदिमापवग्गपडिमापय ।	२९१	१६० मर्जता ।		"
१४४	मभकसुदसपी मसंज्ञदर्मगो ।	"	१६१ सम्मत्ताणुवादेय सम्मादिद्वी		
१४५	ओदिर्बसपी ओदिष्वापियर्मगो ।	"	मद्वसम्माद्वी केवपसम्मा-		
		"	दिद्वी उडसमसम्मादिद्वी सात्तय		

सूत्र सङ्ख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सङ्ख्या	सूत्र	पृष्ठ
	सम्माइह्ठी सम्मामिच्छाइह्ठी इत्थपमायेण केवडिया ?	२९६	१६६	देवदि सारिरय ।	२९७
१९२	पल्लिवोवमस्स भसंखेज्जदि मागे ।		१६७	मसख्णी भसंख्खमगा ।	
१९३	एवेदि पल्लिवोवममवहिरदि भंतोमुत्तेण ।		१६८	आहाराणुवादेण आहारा भणा हारा इत्थपमायेण केवडिया ?	२९८
१९४	मिच्छाइह्ठी मसख्खमगे ।	२९७	१६९	अथता ।	"
१९५	सण्णियाणुवादेण सख्णी इत्थ पमायेण केवडिया ?		१७०	अथतायंतादि भोसण्णियि उत्सण्णियिदि ष भवहिरंति कायेण ।	
			१७१	खेत्तेण भसंतायंता छागा ।	,

### खेत्ताणुगमसुत्ताणि ।



सूत्र सङ्ख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सङ्ख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	खेत्ताणुगमंज गदियाणुवादेण भिरयगहीप जेरइया सत्यायेण समुग्घादेण उच्चवादेण केवडि खेत्त ?	२९९	७	सायस्स भसंखेज्जदिमागे ।	३०१
२	सोगस्स भसंखेज्जदिमाग ।	३ १	८	मणुसगहीप मणुसा मणुम पज्जत्ता मणुसिधी सत्यायेण उच्चवादेण केवडिखेत्त ?	३०८
३	एवं सत्तसु पुड्ढीसु जेरइया ।	३०३	९	सागस्स भसंखेज्जदिमाग ।	
४	तिरिक्खगहीप तिरिक्खला सत्या येण समुग्घादेण उच्चवादेण केवडिखेत्ते ?	३ ४	१०	समुग्घादेण केवडिखेत्त ?	३१०
५	सग्घसाण ।		११	सोगस्स भसंखेज्जदिमाग ।	"
६	पंचिदियतिरिक्ख पंचिदियतिरि क्खपज्जत्ता पंचिदियतिरिक्ख ओधिणी पंचिदियतिरिक्खभय ज्जत्ता सत्यायेण समुग्घादेण उच्चवादेण केवडिखेत्त ।	३०५	१२	भसंखेज्जसु वा मापसु मय्य सोग वा ।	३११
			१३	मणुसभयज्जत्ता सत्याणण समु ग्घादेण उच्चवादेण केवडिखेत्त ?	"
			१४	सोगस्स भसंखेज्जदिमाग ।	"
			१	देवगहीप देया सत्याणण समु ग्घादेण उच्चवादेण केवडिखेत्ते ?	३१३

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१६	छोगस्स मसंजेग्गदिमाणे ।	३१४	३१	कापाजुवादेण पुडविकारव भाठकारव ठेठकारव वाठकारव सुहुमपुडविकारव सुहुमभाठ कारव सुहुमठेठकारव सुहुमवाठ कारव तस्सेव परञ्जत्ता अपञ्जत्ता सत्यामेव समुग्घादेण उबवादेण केवडिजेत्ते ?	३१९
१७	मवववासिपप्यहुडि जाव सम्भु सिद्धिभिमाणवासिपववा वप गदिर्मणे ।	३१५	३२	सम्भोणे ।	,
१८	इंदियाजुवादेण परंदिया सुहुमे इंदिया पञ्जत्ता अपञ्जत्ता सत्या मेव समुग्घादेण उबवादेण केवडिजेत्ते ?	३२०	३३	वाट्टपुडविकारव—वाट्टभाठ— कारव—वाट्टठेठकारव—वाट्टवव प्यदिकारवपत्तेपसरीरा तस्सेव अपञ्जत्ता सत्यामेव केवडि जेत्ते ?	३२०
१९	सम्भोणे ।	३२१	३४	छोगस्स मसंजेग्गदिमाणे ।	"
२०	वाट्टेइंदिया पञ्जत्ता अपञ्जत्ता सत्तामेव केवडिजेत्ते ?	३२२	३५	समुग्घादेण उबवादेण केवडि जेत्ते ?	३२५
२१	छोगस्स संजेग्गदिमाणे ।	"	३६	छोगस्स मसंजेग्गदिमाणे ।	"
२२	समुग्घादेण उबवादेण केवडि जेत्ते ?	३२३	३७	समुग्घादेण उबवादेण केवडि जेत्ते ?	३२६
२३	सम्भोणे ।	"	३८	सम्भोणे ।	"
२४	वेइंदिय तेइदिय वडिइंदिय तस्सेव पञ्जत्ता-अपञ्जत्ता सत्यामेव समुग्घादेण उबवादेण केवडि जेत्ते ?	३२४	३९	वाट्टपुडविकारवा वाट्टभाठ कारवा वाट्टठेठकारवा वाट्ट ववप्यदिकारवपत्तेपसरीरपञ्जत्ता सत्यामेव समुग्घादेण उबवादेण केवडिजेत्ते ?	३२४
२५	छोगस्स मसंजेग्गदिमाणे ।	"	४०	छोगस्स मसंजेग्गदिमाणे ।	"
२६	पंदिइिय पंदिइिवपञ्जत्ता सत्या मेव उबवादेण केवडिजेत्ते ?	३२५	४१	वाट्टवाठकारवा तस्सेव अप ञ्जत्ता सत्यामेव केवडिजेत्ते ?	३२५
२७	छोगस्स मसंजेग्गदिमाणे ।	"	४२	छोगस्स संजेग्गदिमाणे ।	३२६
२८	समुग्घादेण केवडिजेत्ते ?	३२६	४३	समुग्घादेण उबवादेण केवडि जेत्ते ? सम्भोणे ।	"
२९	छोगस्स मसंजेग्गदिमाणे मसं जेग्गेषु वा मागेषु सम्भोणे वा ।	"	४४	वाट्टवाठपञ्जत्ता सत्यामेव समुग्घादेण उबवादेण केवडि जेत्ते ?	३२८
३०	पंदिइियअपञ्जत्ता सत्यामेव समुग्घादेण उबवादेण केवडि जेत्ते ?	३२८	४५	छोगस्स मसंजेग्गदिमाणे ।	"
३१	छोगस्स मसंजेग्गदिमाणे ।	"			

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
४४	सोगस्त असखेग्नदिमागे ।	३३७	३०	सोगस्त असखेग्नदिमाय ।	३४३
४५	बणप्फदिक्कारय—पिगोदजीवा सुडुमवणप्फदिक्कारय—सुडुम— पिगोदजीवा तस्सेव परञ्च अपरञ्चत्ता सत्थाजेण समुग्घादेण उबवादेण केवडिल्लेते ।		३१	उबपादो णरिय ।	"
४६	सम्पन्नोय ।	३३८	३२	वेडधियमिस्सकायजोगी सत्था जेण केवडिल्लेते ?	३४४
४७	बादरवणप्फदिक्कारया बादर पिगोदजीवा तस्सेव परञ्चत्ता अपरञ्चत्ता सत्थाजेण केवडिल्लेते ।	"	३३	सोगस्त असखेग्नदिमागे ।	"
४८	सोगस्त असखेग्नदिमागे ।	"	३४	समुग्घाद-उबवादा णरिय ।	"
४९	समुग्घादेण उबवादेण केवडि ल्लेते ?	३३९	३५	आहारकायजोगी वेडधिय कायजोगिमंगो ।	३४५
५०	सम्पन्नोय ।	"	३६	आहारमिस्सकायजोगी वेडधिय मिस्समंगो ।	३४६
५१	तसक्कारय—तसक्कारयपरञ्चत्त— अपरञ्चत्ता पंदिदिय-परञ्चत्त- अपरञ्चत्ताण मंगो ।	"	३७	कम्मइयकायजोगी केवडिल्लेते ?	"
५२	सोगाणुवादेण पच्चमणजोगी पच्चवच्चिजोगी सत्थाजेण समु ग्घादेण केवडिल्लेते ?	३४०	३८	सम्पन्नोय ।	"
५३	सोगस्त असखेग्नदिमाग ।	"	३९	वेदाणुवादेण इणियेदा पुरिस वेदा सत्थाजेण समुग्घादेण उबवादेण केवडिल्लेते ?	३४७
५४	कायजोगि—भोरालियमिस्स— कायजोगी सत्थाजेण समुग्घा देण उबवादेण केवडिल्लेते ?	३४१	४०	सोगस्त असखेग्नदिमागे ।	"
५५	सम्पन्नोय ।	"	४१	जवुसयवेदा सत्थाजेण समु ग्घादेण उबवादेण केवडिल्लेते ?	३४८
५६	भोरालियकायजोगी सत्थाजेण समुग्घादेण केवडिल्लेते ?	३४२	४२	सम्पन्नोय ।	"
५७	सम्पन्नोय ।	"	४३	अवगइवेदा सत्थाजेण केवडि ल्लेते ?	"
५८	उबवाड णरिय ।	३४३	४४	सोगस्त असखेग्नदिमागे ।	"
५९	वेडधियकायजोगी सत्थाजेण समुग्घादेण केवडिल्लेते ?	"	४५	समुग्घादेण केवडिल्लेते ?	३४९
			४६	सोगस्त असखेग्नदिमागे असं परञ्चत्तु पा मागसु सम्पन्नीगे वा ।	"
			४७	उबवाड णरिय ।	"
			४८	कसापाणुवादेण कायकम्मार् माणकम्मार् मायकम्मार् म्म कसाइ जवुसयवेदमंगो ।	३५०
			४९	अकम्मार् अवगइवेदमंगो ।	"
			५०	जाणाणुवादेण मदिक्कणाणी	



सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
	सुद्वन्द्वजापी जमुंत्तयवेदमंगो ।	३५		विष्वाति पशुद्वय अतिथि । अदि	१
८१	विमंगजापि—मयपरज्वन्वापी सत्यावेथ समुग्घादेण केवडि गत्त ?	३५१		छदि पशुद्वय अतिथि केवडिगत्त ?	३५६
८२	लागस्त भसंखज्जदिमागो ।	"	९७	सायस्त भसंखेज्जदिमाग ।	"
८३	उबवादे अतिथि ।	३५२	९८	अथ अनुदंसपी अथज्जर्मणो ।	"
८४	आमिनिवाहिय-सुद-आधिवापी सत्यावेथ समुग्घादेण उबवादेण क्वडिगत्त ?	"	९९	ओधिदंसपी माधिणाभिमयो ।	३५७
८५	सागस्त भसंखज्जदिमाग ।	"	१००	केवदंसपी केवड्यापिमगा ।	"
८६	केवसवापी सत्यावेथ क्वडि गत्त ?	"	१०१	सस्साणुवाद्यं किण्हजेरिसिया पीसलेरिसिया काडलेरिसिया भसंज्जर्मणा ।	"
८७	लागस्त भसंखज्जदिमाग ।	३५३	१०२	तडजेरिसिय-पम्मजरिसिया सत्या वेथ समुग्घादेण उबवादेण क्वडिगेत्ते ?	"
८८	समुग्घादेण केवडिगत्ते ?	"	१०३	सागस्त भसंखज्जदिमाग ।	३५८
८९	आयस्त भसंखेज्जदिमाग भस तग्गेसु वा भागेसु सम्पभागे वा ।	"	१०४	सुक्कजेरिसिया सत्यापण उब वाद्यं क्वडिगेत्त ?	३५९
९०	उबवादे अतिथि ।	"	१०५	लागस्त भसंखेज्जदिमाग ।	"
९१	नज्जमाणुवाद्यं संज्जदा जहा सत्ताद्विहारसुद्धिसंज्जदा अक साहसंणो ।	३५४	१०६	समुग्घादेण भागस्त भसंख ज्जदिमाग भसंखेज्जसु वा भागसु सम्पभागे वा ।	"
९२	सामाहयण्णवाद्यं उबवाद्यं सुद्धिसंज्जदा परिहारसुद्धिसंज्जदा सुद्धिसंज्जदा सारपसुद्धिसंज्जदा संज्जदासंज्जदा मयपरज्वन्वापिमगा ।	"	१०७	मधियाणुवाद्यं मवसिखिया भमवसिखिया सत्यापण समु ग्घादेण उबवाद्यं क्वडिगत्ते ?	३६०
९३	अमज्जदा जमुंत्तयवेदमंगो ।	३५५	१०८	सायसाग ।	"
९४	द्वन्द्वजापी अथानुदंसपी सत्यापण समुग्घादेण क्वडि गत्त ?	"	१०९	सम्मसाणुवाद्यं सम्मादिद्वी तत्रपसम्मादिद्वी सत्यापण उबवाद्यं क्वडिगत्त ?	३६१
९५	लागस्त भसंखज्जदिमाग ।	"	११०	सायस्त भसंखेज्जदिमाग ।	"
९६	उबवादे मिया अतिथि सिवा अतिथि । मदि पशुद्वय अतिथि	"	१११	समुग्घादेण सागस्त भसंखे ज्जदिमाग भसंखज्जसु वा भागसु सम्पभागे वा ।	३६२

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
११२	वेदगसम्माइडि-उबसमसम्मा इडि-सासगसम्माइडि सत्या येष समुग्घादेण उबबादेण केवडिखेत्ते ?	३६२		केवडिखेत्ते ?	३६४
११३	ओगस्स भसंखेग्गदिमागे ।		११८	ओगस्स भसंखेग्गदिमागे ।	"
११४	सम्माभिच्छाइडि सत्याजेण केवडिखेत्ते ?	३६३	११९	भसण्णी सत्यायेण समुग्घादेण उबबादेण केवडिखेत्ते ?	३६५
११५	ओगस्स भसंखेग्गदिमागे ।	३६४	१२०	सम्बओगे ।	"
११६	मिच्छाइडि भसंखेग्गदिमागे ।	"	१२१	आहाराणुबादेण आहारा सत्या- येण समुग्घादेण उबबादेण केवडिखेत्ते ?	
११७	सण्णियाणुबादेण सग्गी सत्या येण समुग्घादेण उबबादेण		१२२	सम्बओगे ।	
			१२३	अण्णाहाराय केवडिखेत्ते ?	३६६
			१२४	सम्बओगे ।	"

### फोसणाणुगमसुत्ताणि ।

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	फोसणाणुगमेण गदियाणुबादेण पिरपगहीए वेरहया सत्यायेदि केवडिखेत्तं फोसिद्दं ?	३६७		खेत्तं फोसिद्दं ?	३७३
२	ओगस्स भसंखेग्गदिमागे ।	३६८	९	ओगस्स भसंखेग्गदिमागे ।	"
३	समुग्घाद्-उबबादेदि केवडिप खेत्तं फोसिद्दं ?	३६९	१०	समुग्घाद्-उबबादेदि य केवडिप खेत्तं फोसिद्दं ?	"
४	ओगस्स भसंखेग्गदिमागे ।	"	११	ओगस्स भसंखेग्गदिमागे एण वे तिग्गि-अत्तारि-पंच-उच्चोइस भागा वा देसुणा ।	३७४
५	उच्चोइसभागा वा देसुणा ।	"	१२	तिरिक्कगहीए तिरिक्का सत्याण-समुग्घाद्-उबबादेदि केवडिप खेत्तं फोसिद्दं ?	"
६	पट्ठमाए पुड्ढीए वेरहया सत्याण-समुग्घाद्-उबबाद्पदेदि केवडिय खेत्तं फोसिद्दं ?	३७०	१३	सम्बओगे ।	"
७	ओगस्स भसंखेग्गदिमागे ।	"	१४	पंचिदियतिरिक्क पंचिदियतिरि क्कपग्गत्त-पंचिदियतिरिक्क- ओमिपि-पंचिदियतिरिक्कप- पग्गत्त-पंचिदियतिरिक्कप- पग्गत्त-पंचिदियतिरिक्कप- पग्गत्त-पंचिदियतिरिक्कप-	
८	विदिपाए जाव सत्तमाए पुड्ढीए वेरहया सत्यापदि केवडिप				

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	उच्यता सत्यापेक्ष केवद्वियं कसं फोसिर्द ?	३७१	३	ओगस्स असंखेज्जदिमागो उचोइसमागा वा इत्थं ।	३८४
१५	ओगस्स असंखेज्जदिमागो ।	,	३१	अवयवासिप-वावपेत्तर ओरसिप इवा सत्यापेहि केवद्वियं कसं फोसिर्द ?	३८५
१६	समुग्घाए-उववाएहि केवद्विय केसं फासिर्द ?	३७७	३२	ओगस्स असंखेज्जदिमागो अज्जु वा अज्जुआइसमागा वा इत्थं ।	"
१७	ओगस्स असंखेज्जदिमागो सव्व ओगो वा ।	"	३३	समुग्घाएय केवद्विय कसं फासिर्द ?	३८६
१८	मणुसगहीए मणुसा मणुस- पञ्चता मणुसिणीमो सत्यापेहि केवद्वियं वेसं फोसिर्द ?	३७९	३४	ओगस्स असंखेज्जदिमागो अज्जु वा अज्जु पवचोइसमागा वा इत्थं ।	"
१९	ओगस्स असंखेज्जदिमागो ।		३५	उववाएहि केवद्विय कसं फासिर्द ?	३८७
२०	समुग्घाएय केवद्वियं कसं फासिर्द ?	३८	३६	ओगस्स असंखेज्जदिमागा ।	
२१	ओगस्स असंखेज्जदिमागा अस येज्जा वा मागा सव्वओगो वा ।	"	३७	साहमीसायकणवासिपइवा सत्याप-समुग्घाए इवगहिंसो ।	३८८
२२	उववाएहि केवद्वियं कसं फासिर्द ?	३८१	३८	उववाएहि केवद्वियं कसं फोसिर्द ? ओगस्स असंखेज्जदिमागो विज्जुआइसमागा वा इत्थं ।	"
२३	ओगस्स असंखेज्जदिमागो सा- खंया वा ।	"	३९	सव्वकज्जुमाए जाय सहर सह इसाएकणवासिपेइवा सत्याप मणुगवाहीहि केवद्वियं कसं फोसिर्द ?	३८९
२४	मणुसमपज्जत्ताए पबिदिय तिरिक्कमपज्जत्ताए मंगो ।	३८२	४०	ओगस्स असंखेज्जदिमागा अज्जु आइसमागा वा इत्थं ।	"
२५	वेवगहीए इवा सत्यापेहि केव द्वियं कसं फोसिर्द ?		४१	उववाएहि केवद्वियं कसं फासिर्द ?	"
२६	ओगस्स असंखेज्जदिमागा अज्जु आइसमागा वा इत्थं ।	"	४२	ओगस्स असंखेज्जदिमागा अज्जु आइसमागा वा इत्थं ।	"
२७	समुग्घाएय केवद्वियं कसं फासिर्द ?	३८३	४३	उववाएहि केवद्वियं कसं फासिर्द ?	"
२८	ओगस्स असंखेज्जदिमागा अज्जु आइसमागा वा इत्थं ।	"	४४	ओगस्स असंखेज्जदिमागा	
२९	उववाएहि केवद्वियं कसं फासिर्द ?	३८४			

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
	किञ्चि मयदु चत्तारि-मयदबचम पंचचोदसमागा वा देसूणा ।	३९०	६	छोगस्स मसल्लज्जदिमागा ।	३९४
४३	भाजन् माव मयदुवकण्णवासिय दंवा सत्याण-समुग्घादहि केव- डिब लत्त फासिदं ?	"	७	समुग्घाद उववादेहि केवडिय लेत्तं फासिदं ?	३९५
४४	सागस्स मसल्लेज्जदिमागो छ चोदसमागा वा देसूणा ।	३९१	८	छोगस्स मसल्लज्जदिमागो सम्भसोगो वा ।	"
४५	उववादेहि केवडियं लेत्तं फासिदं ?	"	९	पथिदिय-पथिदियपज्जत्ता सत्या णेहि केवडियं लेत्तं फासिदं ?	३९६
४६	सागस्स मसंजेज्जदिमागा मज्ज छदु-छचोदसमागा वा देसूणा ।	"	१०	छोगस्स मसल्लेज्जदिमागा मदु चोदसमागा वा देसूणा ।	"
४७	एतत्तेज्जत्तं माव सम्भदुसिद्धि यिमाजवासियदेवा सत्याण-समु- ग्घाद उववादेहि केवडियं लेत्तं फासिदं ?	३९२	११	समुग्घादेहि केवडियं लेत्तं फासिदं ?	३९७
४८	छोगस्स मसंकेज्जदिमागो ।	"	१२	छोगस्स मसंजेज्जदिमागो मदु चोदसमागा वा देसूणा मस लेज्जत्ता वा भागा सम्भसोगो वा ।	"
४९	ईदियाणुवादेण परदिया सुहुम ईदिया पज्जत्ता मपज्जत्ता सत्याण समुग्घाद उववादेहि केवडियं लेत्तं फासिदं ?	"	१३	उववादेहि केवडियं लेत्तं फासिदं ?	३९८
५०	सम्भसोगो ।	"	१४	सागस्स मसल्लेज्जदिमागो सम्भसोगो वा ।	"
५१	वाहरदिया पज्जत्ता मपज्जत्ता सत्याणेहि केवडियं लेत्तं फासिदं ?	३ ३	१	पथिदियमपज्जत्ता सत्याणम केवडियं लेत्तं फासिदं ?	३९९
५२	छोगस्स सल्लज्जदिमागो ।	"	६	छोगस्स मसल्लेज्जदिमागा ।	"
५३	समुग्घाद उववादेहि केवडियं लेत्तं फासिदं ?	३९४	७	समुग्घादेहि उववादेहि केव- डियं लेत्तं फासिदं ?	"
५४	सम्भसोगो ।	"	८	सागस्स मसल्लेज्जदिमागा	४०
५५	वीरिदिय-वीरिदिय-अडरिदिय- पज्जत्तापज्जत्ताथ सत्याणहि कव- डियं लेत्तं फासिदं ?	"	९	सम्भसोगो वा ।	"
			३०	आपाणुवादेण पुदविकाइय भाउकाइय तउकाइय पाउकाइय सुहुमपुदविकाइय सुहुममाउ- काइय सुहुमतउकाइय सुहुमपाउ- काइय तस्सेव पज्जत्ता मपज्जत्ता सत्याण-समुग्घाद- उववादेहि केवडियं लेत्तं फासिदं ?	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
७१	सम्बन्धो गो ।	४००	८०	समुग्धाद् उचवादेहि केचद्विर्ब भेत्तं फोसिद् ?	४०८
७२	बाद्दरपुद्दविबाद्दय-बाद्दरमाठ- बाद्दय-बाद्दरतेडकाद्दय-बाद्दरवय प्फदिकाद्दयपपेयसरीरा तस्सेव अपग्गत्ता सत्पापेहि केचद्विर्ब भेत्त फोसिद् ?	४०१	९०	सोत्तरस्त संखेज्जदिमागो ।	"
७३	मागस्स अत्तंजेग्गदिमागो ।		९१	सम्बन्धो गो वा ।	४०२
७४	समुग्धाद् उचवादेहि केचद्विर्ब भत्तं फोसिद् ?	"	९२	अपप्फदिकाद्दया भियोद्दजीवा सुद्धमअपप्फदिकाद्दया सुद्धम भियोद्दजीवा तस्सेव पग्गत्ता अपग्गत्ता सत्पाप-समुग्धाद् उचवादेहि केचद्विर्ब भेत्त फोसिद् ?	"
७५	सोत्तरस्त अत्तंजेग्गदिमागो ।	४०३	९३	सम्बन्धो गो ।	४०९
७६	सम्बन्धो गो वा ।		९४	बाद्दरवयप्फदिकाद्दया बाद्दर भियोद्दजीवा तस्सेव पग्गत्ता अपग्गत्ता सत्पापेहि केचद्विर्ब भत्तं फोसिद् ?	"
७७	बाद्दरपुद्दवि बाद्दरमाठ-बाद्दरतेड बाद्दरवयप्फदिकाद्दयपपेयसरीरा पग्गत्ता सत्पापेहि केचद्विर्ब भेत्त फोसिद् ?		९५	सोत्तरस्त अत्तंजेग्गदिमागो ।	"
७८	सोत्तरस्त अत्तंजेग्गदिमागो ।	४०४	९६	समुग्धाद् उचवादेहि केचद्विर्ब भत्तं फोसिद् ?	"
७९	समुग्धाद् उचवादेहि केचद्विर्ब भत्तं फोसिद् ?	४०५	९७	सम्बन्धो गो ।	"
८०	सोत्तरस्त अत्तंजेग्गदिमागो ।	"	९८	तत्तंकाद्दय-तत्तंकाद्दयपग्गत्ता अपग्गत्ता पंभिरिय-पंभिरिय पग्गत्त-अपग्गत्तमंगो ।	४१६
८१	सम्बन्धो गो वा ।		९९	सोत्तरानुवादेव पंभत्तअग्गोपि पंभत्तअग्गोपि सत्पापेहि केच द्विर्ब भेत्तं फोसिद् ?	"
८२	मागस्स अत्तंजेग्गदिमागो ।	४०७	१००	मागस्स अत्तंजेग्गदिमागो ।	"
८३	समुग्धाद् उचवादेहि केचद्विर्ब भेत्तं फोसिद् ?	"	१०१	अद्दुक्काद्दसमाग वा इत्थया ।	"
८४	(सायस्स-संखेज्जदिमागो) ।		१०२	समुग्धाद् उचवादेहि केचद्विर्ब भेत्त फोसिद् ?	४१५
८५	सम्बन्धो गो वा ।	"	१०३	मागस्स अत्तंजेग्गदिमागो ।	"
८६	बाद्दरवाडपग्गत्ता सत्पापेहि केचद्विर्ब भत्तं फोसिद् ?	४०८			
८८	मागस्स संखेज्जदिमागो ।	"			

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
१०४	मद्दुबोहसमागा देसुणा सम्प सापो वा ।	४१२	१२५	ओगस्स असंखेज्जदिमागा ।	४१९
१०५	उबवावो वरिय ।	४१३	१२६	समुग्घाद् उबवाद् पत्थि ।	
१०६	कायजोगि-भोटाखियमिस्सकाय जागी सत्थाण-समुग्घाद्-उब वादेहि केवडियं खेत्त फोसिर्द ?		१२७	कम्मइयकायजोगीहि केवडिय खेत्त फोसिर्द ?	"
१०७	सम्पओगो ।	"	१२८	सम्पओगो ।	४२०
१०८	भोटाखियकायजोगी सत्थाण समुग्घादेहि केवडिय खेत्त फोसिर्द ?	४१४	१२९	वेदानुवादेण इत्थिबेद-पुरिस वेदा सत्थाणहि केवडियं खेत्त फोसिर्द ?	"
१०९	सम्पओगो ।		१३०	ओगस्स असंखेज्जदिमागो ।	"
११०	उबवाद् वरिय ।	४१५	१३१	मद्दु-बोहसमागा देसुणा ।	"
१११	वेठखियकायजोगी सत्थाणेहि केवडियं खेत्त फोसिर्द ?	"	१३२	समुग्घादेहि केवडिय खेत्त फोसिर्द ?	४२१
११२	ओगस्स असंखेज्जदिमागो ।		१३३	ओगस्स असंखेज्जदिमागो ।	"
११३	मद्दुबोहसमागा देसुणा ।		१३४	मद्दु-बोहसमागा देसुणा सम्प सापो वा ।	"
११४	समुग्घादेण केवडिय खेत्त फोसिर्द ?	४१६	१३५	उबवादेहि केवडिय खेत्त फोसिर्द ?	४२२
११५	ओगस्स असंखेज्जदिमागो ।	"	१३६	ओगस्स असंखेज्जदिमागो ।	
११६	मद्दु उरह-बोहसमागा देसुणा ।		१३७	सम्पओगो वा ।	"
११७	उबवादे वरिय ।		१३८	बबुसयवेदा सत्थाण-समुग्घाद् उबवादेहि केवडिय खेत्त फोसिर्द ?	४२३
११८	वेठखियमिस्सकायजोगी सत्था णहि केवडियं खेत्त फोसिर्द ?	४१७	१३९	सम्पओगो ।	"
११९	ओगस्स असंखेज्जदिमागो ।		१४०	अबगद्देदा सत्थाणहि केवडिय खेत्त फोसिर्द ?	"
१२०	समुग्घाद्-उबवाद् पत्थि ।	"	१४१	ओगस्स असंखेज्जदिमागो ।	४२४
१२१	आहारमिस्सकायजोगी सत्थाण-समु ग्घादेहि केवडियं खेत्त फोसिर्द ?	४१८	१४२	समुग्घादेहि केवडियं खेत्त फोसिर्द ?	"
१२२	ओगस्स असंखेज्जदिमागो ।	"	१४३	ओगस्स असंखेज्जदिमागो ।	"
१२३	उबवाद् वरिय ।	४१९	१४४	असंखेज्जा वा भागा ।	"
१२४	आहारमिस्सकायजोगी सत्था णेहि केवडियं खेत्त फोसिर्द ?		१४५	सम्पओगो वा ।	"

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१४६	उबवाद् जल्पि ।	४२५	१६५	मजपञ्चकथायी सत्याय-समु ग्यादेहि केचडियं जेतं फोसिद् ?	४३०
१४७	कसायाजुवादेव कोपकसाई मायकसाई मायकसाई शोम कसाई वजुंसववेर्मगो ।	"	१६६	सोगस्त जसंजेग्गदिमागो ।	"
१४८	मकसाई मजगदवेर्मगो ।	"	१६७	उबवाद् जल्पि ।	"
१४९	आजाजुवादेव मदिमग्वायी सुदमग्वायी सत्याय समु ग्याद्-उबवादेहि केचडियं जेतं फोसिद् ?	"	१६८	केचलजायी मजगदवेर्मगो ।	४३१
१५०	सम्भोगो ।	४२६	१६९	संजमाजुवादेव संजदा जहा- नकादविहारसुजिसंजदा जक साहर्मगो ।	"
१५१	विर्मपयायी सत्यायेहि केच डियं जेतं फोसिद् ?	"	१७०	सामाहपग्गेदोवडावजुहि सजद-सुहुमसापटाहपसंजदावर्न मजपग्गजजाविर्मगो ।	"
१५२	सोगस्त जसंजेग्गदिमागो ।	"	१७१	संजदासंजदा सत्यायेहि केच डियं जेतं फोसिद् ?	४३२
१५३	महु-बोहसमागा देसूजा ।	"	१७२	सोगस्त जसंजेग्गदिमागो ।	"
१५४	समुग्गादेव केचडियं जेतं फोसिद् ?	४२७	१७३	समुग्गादेहि केचडियं जेतं फोसिद् ?	४३३
१५५	सोगस्त जसंजेग्गदिमागो ।	"	१७४	सोगस्त जसंजेग्गदिमागो ।	"
१५६	महु-बोहसमागा देसूजा फोसिदा ।	"	१७५	उबोहसमागा वा देसूजा ।	"
१५७	सम्भोगो वा ।	"	१७६	उबवाद् जल्पि ।	"
१५८	उबवाद् जल्पि ।	४२८	१७७	जसंजदावर्न वजुंसवर्मगो ।	४३४
१५९	धामिदिवादिव-सुद-माहि- यायी सत्याय-समुग्गादेहि केचडियं जेतं फोसिद् ?	"	१७८	संजमाजुवादेव जकसुदसयी सत्यायेहि केचडियं जेतं फोसिद् ?	"
१६०	सोगस्त जसंजेग्गदिमागो ।	"	१७९	सोगस्त जसंजेग्गदिमागो ।	"
१६१	महु-बोहसमागा देसूजा ।	"	१८०	महु-बोहसमागा वा देसूजा ।	"
१६२	उबवादेहि केचडियं जेतं फोसिद् ?	४२९	१८१	समुग्गादेहि केचडियं जेतं फोसिद् ?	४३५
१६३	सोगस्त जसंजेग्गदिमागो ।	"	१८२	सोगस्त जसंजेग्गदिमागो ।	"
१६४	उबोहसमागा देसूजा ।	"	१८३	महु-बोहसमागा वा देसूजा ।	"
१६५	सम्भोगो वा ।	"	१८४	सम्भोगो वा ।	"

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१८	उचवाद् सिया मत्थि सिया गत्थि ।	४३६	२०३	उचवादेहि केवडिय लेत्त फोसिद् ?	४४१
१८६	सयि पडुच्च मत्थि गिच्चसि पडुच्च मत्थि ।		२७	छोगस्स असंखेज्जदिमागो ।	४४२
१८७	अदि सयि पडुच्च मत्थि केवडियं लेत्तं फोसिद् ?	४३७	२०८	पंच चोहसमागो वा देसूणा ।	"
१८८	छोगस्स असंखेज्जदिमागो ।		२०९	सुक्कसेस्सिया सत्थाण-उचवादेहि केवडिय लेत्त फोसिद् ?	"
१८९	सम्पछोगो वा ।		२१०	छोगस्स असंखेज्जदिमागो ।	"
१९०	अचक्खुसणी असंजवमंगा ।		२११	छचोहसमागो वा देसूणा ।	"
१९१	ओहिंसणी ओहिणायिमंगो ।	४३८	२१२	समुग्घादेहि केवडियं लेत्त फोसिद् ?	४४३
१९२	केवडसणी केवडयाणिमंगो ।		२१३	छोगस्स असंखेज्जदिमागो ।	"
१९३	छेस्साणुवादेण किण्हसेस्सिय णीछसेस्सिय—काउसेस्सिपारणं असंजवमंगो ।		२१४	छचोहसमागो वा देसूणा ।	"
१९४	तेउसेस्सियाण सत्थाणेहि केवडिय लेत्त फोसिद् ?	"	२१५	असंखेज्जा वा मागो ।	"
१९५	छोगस्स असंखेज्जदिमागो ।		२१६	सम्पछोगो वा ।	४४४
१९६	अट्टचोहसमागो वा देसूणा ।	४३९	२१७	मथियाणुवादेण भवसिद्धिय ममवसिद्धिय सत्थाण-समुग्घाद्-उचवाद्देहि केवडियं लेत्तं फोसिद् ?	"
१९७	समुग्घादेहि केवडियं लेत्त फोसिद् ?	"	२१८	सम्पछोगो ।	४४५
१९८	छोगस्स असंखेज्जदिमागो ।	"	२१९	सम्मत्ताणुवाद्दम सम्मादिट्ठी सत्थाणेहि केवडियं लेत्तं फोसिद् ?	"
१९९	अट्ट-उचवाद्देहि केवडियं लेत्त फोसिद् ?	४४०	२२०	छोगस्स असंखेज्जदिमागो ।	"
२००	छोगस्स असंखेज्जदिमागो ।	"	२२१	अट्टचोहसमागो वा देसूणा ।	४४६
२०१	छोगस्स असंखेज्जदिमागो ।	"	२२२	समुग्घादेहि केवडियं लेत्त फोसिद् ?	"
२०२	दिक्खुचोहसमागो वा देसूणा ।	"	२२३	छोगस्स असंखेज्जदिमागो ।	"
२०३	पम्मच्छसिया सत्थाण समुग्घादेहि केवडियं लेत्तं फोसिद् ?	४४१	२२४	अट्टचोहसमागो वा देसूणा ।	"
२०४	छोगस्स असंखेज्जदिमागो ।	"	२२५	असंखेज्जा वा मागो वा ।	४४७
२०५	अट्ट चोहसमागो वा देसूणा ।	"	२२६	सम्पछोगो वा ।	"



सूत्र संख्या	सूत्र	शुद्ध	सूत्र संख्या	सूत्र	शुद्ध
२२७	उबवादेहि केवडियं जेतं फोसिर्द ?	४४८	२४९	समुग्गादेहि उबवादेहि क्वडियं जेतं फोसिर्द ?	४५४
२२८	ओमस्स भसंखेज्जदिमागो ।		२५०	ओमस्स भसंखेज्जदिमागो ।	"
२२९	उबोहसमागा वा देसुणा ।	,	२५१	सासजसम्माइही सत्पायेहि केवडियं जेतं फोसिर्द ?	४५५
२३०	उबवादेहि सत्पायेहि केवडियं जेतं फोसिर्द ?	४४९	२५२	ओमस्स भसंखेज्जदिमागो ।	"
२३१	ओमस्स भसंखेज्जदिमागो ।		२५३	उबोहसमागा वा देसुणा ।	"
२३२	उबोहसमागा वा देसुणा ।		२५४	समुग्गादेहि केवडियं जेतं फोसिर्द ?	
२३३	समुग्गादेहि केवडियं जेतं फोसिर्द ?		२५५	ओमस्स भसंखेज्जदिमागो ।	"
२३४	ओमस्स भसंखेज्जदिमागो ।		२५६	उबोहसमागा वा देसुणा ।	४५६
२३५	उबोहसमागा वा देसुणा ।	४५०	२५७	उबवादेहि केवडियं जेतं फोसिर्द ?	"
२३६	भसंखेज्जा वा मागा वा ।	"	२५८	ओमस्स भसंखेज्जदिमागो ।	
२३७	सावभोगो वा ।	४५१	२५९	एककारहोहसमागा देसुणा ।	"
२३८	उबवादेहि केवडियं जेतं फोसिर्द ?		२६०	सम्मामिच्छाइही सत्पायेहि केवडियं जेतं फोसिर्द ?	४५७
२३९	ओमस्स भसंखेज्जदिमागो ।	"	२६१	ओमस्स भसंखेज्जदिमागो ।	"
२४०	वेदगसम्माइही सत्पाय समुग्गादेहि केवडियं जेतं फोसिर्द ?		२६२	उबोहसमागा वा देसुणा ।	
२४१	ओमस्स भसंखेज्जदिमागो ।	४५२	२६३	समुग्गादेहि उबवादेहि परिद ।	४५८
२४२	उबोहसमागा वा देसुणा ।	"	२६४	मिच्छाइही भसंखेज्जदिमागो ।	"
२४३	उबवादेहि केवडियं जेतं फोसिर्द ?	"	२६५	सत्पियानुवादेण सत्थी सत्पायेहि केवडियं जेतं फोसिर्द ?	
२४४	ओमस्स भसंखेज्जदिमागो ।		२६६	ओमस्स भसंखेज्जदिमागो ।	"
२४५	उबोहसमागा वा देसुणा ।	४५३	२६७	उबोहसमागा वा देसुणा परसिद्धा ।	४५९
२४६	उबसमसम्माइही सत्पायेहि केवडियं जेतं फोसिर्द ?	"	२६८	समुग्गादेहि केवडियं जेतं फोसिर्द ?	"
२४७	ओमस्स भसंखेज्जदिमागो ।		२६९	ओमस्स भसंखेज्जदिमागो ।	"
२४८	उबोहसमागा वा देसुणा ।	"			

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
२७	धट्टोहसमागा वा दसुणा ।	४१९	२७९	भाहाराणुभावेण भाहारा	
२७१	सम्बसोगो वा ।	४२०		सत्याज-समुग्धा-उचभावेदि	
२७२	उचभावेदि केवडियं कत्तं फोसिर्दं ।	,		केवडियं खेत्तं फोसिर्दं ?	४२१
२७३	सोमस्त भर्मलज्जदिमागो ।		२७७	सम्बसोगो ।	
२७४	सम्बसोगो वा ।	,	२७८	भणाहारा केवडियं खेत्तं फोसिर्दं ?	"
२७५	भसक्णी मिच्छाद्विमंगो ।	४२१	२७९	सम्बसोगो वा ।	,

### पाणानीवेण कालशुगमसुत्ताणि ।

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	पाषाणीवेण कालशुगमेण गदि याशुभावेण भिरपगवीए केरहया कवडिर्दं कासादो होति ।	४२२	९	दुबगवीए देवा केवडिर्दं कासादो होति ?	४२५
२	सम्बज्जा ।	"	१०	सम्बज्जा ।	४२६
३	एवं सत्तसु पुड्ढीसु प्परहया ।	४२३	११	एवं भवत्तवासियप्यहुडि जाव सम्बहुसिद्धिभिमामवासियवेवा ।	"
४	तिरिक्खगदीए तिरिक्खणा पंथि विपतिरिक्खणा पंथिविपतिरिक्खणा पञ्जत्ता पंथिविपतिरिक्खणा जेथिणी पंथिविपतिरिक्खणा मप-जत्ता मशुसगवीए मशुसा मशुसपजत्ता मशुसिणी केवडिर्दं कासादो होति ?		१२	इंदियाणुभावेण परंदिया वाहरा सुहुमा पजत्ता भपजत्ता वी इंदिया तीइंदिया कडरिंदिया पंथिदिया तस्सेव पजत्ता भप जत्ता केवडिर्दं कासादा होति ?	,
५	सम्बज्जा ।	४२४	१३	सम्बज्जा ।	"
६	मशुसमपजत्ता केवडिर्दं कासादो होति ?	"	१४	कायाशुभावेण पुड्ढिकारया वाड कारया तेडकारया वाडकारया पण प्कटिकारया भिमोदसीवा वाहरा सुहुमा पजत्ता भपजत्ता वाहर वचप्कटिकारयपत्तयसरीएपजत्ता पजत्ता तसकारयपजत्ता भपजत्ता केवडिर्दं कासादो होति ?	४२७
७	अहण्णेण सुदामवगाइयं ।				
८	उक्कस्सेण पसिदोवमएम भत्तं केरज्जदिमागो ।				

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
११ सम्प्रदा ।		४६७		आमिषिवाहिय सुव भोहिजाणी मयपञ्चवाली केवळजाणी केवळि र कासादो होति ?	४७२
१२ जोगाशुवाहय पञ्चमयजागी पञ्च षड्भोगी कायजोगी भोराहिय कायजागी भोराहियमिस्सकाय जोगी अडिक्खियकायजागी कम्म रूपकायजोगी केवळि र कासादो हाति ?		४६८	३१ सम्प्रदा ।		"
१७ सम्प्रदा ।		"	३२ संज्ञमाशुवाहय संज्ञदा सामाहय षड्भोगीकायमसुदिसंज्ञदा परिहारसुदिसंज्ञदा अहाणकाम विहारसुदिसंज्ञदा संज्ञदासंज्ञदा मसंज्ञदा केवळि र कासादा होति ?		४७३
१८ केवळियमिस्सकायजोगी केवळि र कासादो हाति ?		४६९	३४ सम्प्रदा ।		"
१९ अहण्येण भतोमुहुत्तं ।			३ सुदुमसांपरायसुदिसंज्ञदा केवळि र कासादो होति ?		"
२ उक्कस्सेण परिशोबमस्स मस वेज्जविमागो ।		४७०	३१ अहण्येण पगसमय ।		"
२१ आहारकायजोगी केवळि र कासादा होति ?		"	३७ उक्कस्सेण भतोमुहुत्तं ।		४७४
२२ अहण्येण पमसमय ।		"	३८ संज्ञमाशुवाहय अणुसंज्ञी मयणसुदिसंज्ञा भोहिर्संज्ञी केवळसंज्ञी केवळि र कासादो हाति ?		"
२३ उक्कस्सेण भतोमुहुत्तं ।		"	३९ सम्प्रदा ।		"
२४ आहारमिस्सकायजोगी केवळि र कासादा होति ?		४७१	४ संज्ञमाशुवाहय किण्हळरिसय पीळळरिसय-काण्ठेरिसय ठेठ-केरिसय-पम्मळेरिसय-सुवळ-ळरिसया केवळि र कासादा होति ?		"
२ अहण्येण भतोमुहुत्तं ।		"	४१ सम्प्रदा ।		"
२१ उक्कस्सेण भतोमुहुत्तं ।		"	४२ मधिपाशुवाहय मयमिद्धिया मयमिद्धिया केवळि र कासादो होति ?		४७५
२७ वेदाशुवाहय इतियवेदा पुरिस वेदा अणुमयवेदा अणुमयवेदा केवळि र कासादो होति ?		"	४३ सम्प्रदा ।		"
२८ सम्प्रदा ।		४७२	४४ सम्मसाशुवाहय सम्माहट्टी करवमम्माहट्टी वेदगमम्माहट्टी		
२९ कसापाशुवाहय बोधकसारं मायकसारं मायकसारं भोम कसार अणुसारं केवळि र कासादा होति ?		"			
३ सम्प्रदा ।		"			
३१ आमाशुवाहय अदिमकवार्थी सुदुमकवार्थी	अदिमकवार्थी विदुमकवार्थी				

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	मिच्छाद्दुी केचश्चिरं कासादो होति ?	४७५	१०	अहण्णेज एगसमय ।	४७६
४	सम्बद्धा ।	'	५१	उक्कस्सेण पक्खिदोवमस्स भम जेउअदिमागो ।	४७७
४९	उपसमसम्माद्दुी सम्मामिच्छा द्दुी केचश्चिरं कासादा होति ?	'	५२	सण्णियाणुषादेण सण्णी भसण्णी केचश्चिरं कासादो होति ?	'
४७	अहण्णेज भंतोमुहुत्त ।	४७९	३	स वया ।	
४८	उक्कस्सेण पक्खिदोवमस्स भस जेउअदिमागा ।		४	माहारा भण्णहारा केचश्चिरं कासादो होति ?	
४९	मासणसम्माद्दुी केचश्चिरं कासादो होदि ?		५१	सम्बद्धा ।	

पाणाजीवेण अतराणुगमसुत्तानि ।



सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	पाणाजीवेदि अतराणुगमेव गदियाणुषादेण जिरपगदीए वेरइयाजमतरं केचश्चिरं कासादो होदि ?	४७८		कासादो होदि ?	४८१
२	जत्थि भंतरं ।		९	अहण्णेज एगसमयो ।	
३	जिरतरं ।	४७९	१०	उक्कस्सेण पक्खिदोवमस्स असणे अदिमागो ।	"
४	एवं सत्तसु पुडवीसु वेरइया ।	"	११	वेचगदीए इवाजमतरं केचश्चिरं कासादो होदि ?	
५	ठिरिक्कण्णदीए ठिरिक्कणा पंक्ति दियठिरिक्कण्ण पंक्तिदियठिरिक्कण्ण पक्कत्ता पंक्तिदियठिरिक्कण्णोण्णिणी पंक्तिदियठिरिक्कण्णमपक्कत्ता मणुस गदीए मणुसा मणुसपक्कत्ता मणुसिणीजमंतरं केचश्चिरं कासादो होति ?	४८०	१२	जत्थि भतरं ।	४८२
६	जत्थि भंतरं ।	"	१३	जिरंतरं ।	"
७	जिरंतरं	"	१४	मवजवासियप्यहुडि जाव सप्यहु सिद्धिदिमाववासियपेवा देष गदिसंगो ।	
८	मणुसमपक्कत्ताजमंतरं केचश्चिरं		१५	इदियाणुषादेण एरंदिय वाहर सुडुम-पक्कत्त भपक्कत्त बीरंदिय-तारंदिय-अउरिंदिय-पंक्तिदिय-पक्कत्त भपक्कत्ताजमंतरं केचश्चिरं कासादा होदि ?	"

सूत्र संख्या	सूत्र	शृं	सूत्र संख्या	सूत्र	शृं
१६	व्यतिथ्यं भेतर ।	४८३	३१	व्यतिथ्यं भेतर ।	४८६
१७	विरंतरं ।	"	३२	विरंतरं ।	"
१८	कापाशुबादेव पुत्रविकारय भाउकारय-सेउकारय भाउकारय व्यप्यकारय—विगोवर्जाव - कारं-सुहुम पञ्चता मपञ्चता बादरव्यप्यकारयपस्यसरीर पञ्चता मपञ्चता तसकारय पञ्चता मपञ्चतापमंतरं केव विरं कासाहो होदि ?		३३	कसापाशुबादेव कोयकसारं मायकसारं मायकसारं सोम कसारं ( मकसारं ) जमतर कचविरं कासाहो होदि ?	४८७
१९	व्यतिथ्यं भेतरं ।		३४	व्यतिथ्यं भेतरं ।	"
२०	विरंतरं ।		३५	विरंतरं ।	"
२१	जोगाशुबादेव पंचमज्जागि- पञ्चविरंजोगि कायजोगि मोरा छिपकावजोगि मोराछिपमिस्त कायजोगि-वेडमियकायजोगि कम्मरपकायजोगीजमंतरं केव विरं कासाहो होदि ?	४८४	३६	प्रापाशुबादेव मदिमव्याधि सुव्वज्जाधि—पिमंगवाधि— भामिभिबोधि सुव्व भोधिपाधि मप्यज्जाव्याधि केवसणापीव- मतरं कचविरं कासाहो होदि ?	"
२२	व्यतिथ्यं भेतरं ।		३७	व्यतिथ्यं भेतरं ।	४८८
२३	विरंतरं ।		३८	विरंतरं ।	"
२४	वेडमियमिस्तकायजोगीजमंतरं कचविरं कासाहो होदि ?	४८५	३९	संजमाशुबादेव संजवा सामाहय छेरोवहुमवज्जिसंजवा परिहार सुद्धिसंजवा अहावनाद्विहार सुद्धिसंजवा सज्जासंजवा मसं अजाजमंतरं केवविरं कासाहो होदि ?	"
२५	अहण्णेज पगसमयं ।		४०	व्यतिथ्यं भेतरं ।	"
२६	उत्तस्सेज वाउसमुहुत्तं ।	"	४१	विरंतरं ।	"
२७	माहारकायजोगि माहारमिस्त कायजोगीजमंतरं केवविरं कासाहो होदि ?		४२	सुहुमसापपदपसुद्धिसंजवाये मंतरं केवविरं कासाहो होदि ?	"
२८	अहण्णेज पगसमयं ।	४८६	४३	अहण्णेज पगसमयं ।	४८९
२९	उत्तस्सेज वाउसमुहुत्तं ।		४४	उत्तस्सेज उम्मासाधि ।	"
३०	वेदाशुबादेव इतिथ्येवा पुरिक्त वेदा व्युत्सपथेवा जवणद्वेषेवाज मंतरं केवविरं कासाहो होदि ?	"	४५	ईसवाशुबादेव वसुत्तुत्तसधि वसुत्तुत्तसधि—भोद्धिसधि— केववत्तुत्तपीजमंतरं केवविरं कासाहो होदि ?	"

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
४६	वर्तिय भतर ।	४८९	५७	उपसमसम्माइड्डीणमंतरं केव बिरं काळादो होदि ?	४९१
४७	विरंतरं ।	"	८	अहण्णेण एगसमयं ।	४९२
४८	केस्साणुवाद्दण किण्ह्खेस्सिय पीळ्खेस्सिय काठ्ठेस्सिय-सेउ- खेस्सिय पम्मळस्सिय--सुक्क खेस्सियाणमतर केवबिरं काळादो होदि ?	४९०	९	उक्कस्सेण सत्तराविदिप्याणि ।	"
४९	वर्तिय भतरं ।		१०	सासणसम्माइड्डी-सम्माभिच्छा- इड्डीणमंतर केवबिरं काळादो होदि ?	,
५०	विरंतरं	,	११	अहण्णेण एगसमय ।	४९३
५१	मवियाणुवाद्देण भयसिद्धिय- ममवसिद्धियाणमंतरं केवबिरं काळादो हादि ?		१२	उक्कस्सेण पसिद्धोत्तमस्स भसंसे अज्जिमागो ।	"
५२	वर्तिय भतरं ।		१३	सण्णियाणुवाद्देण सण्णिय मसण्णी णमंतरं केवबिरं काळादो होदि ?	"
५३	विरंतरं ।	४९१	१४	वर्तिय भतरं ।	
५४	सम्मत्ताणुवाद्दण सम्माइड्डी खइयसम्माइड्डी-वेइयसम्माइड्डी- मिच्छाइड्डीणमंतरं केवबिरं काळादो होदि ?		१५	विरंतरं ।	
५५	वर्तिय भतरं ।	"	१६	आहारणुवाद्देण आहार मया हाराणमंतरं केवबिरं काळादो होदि ?	४९४
५६	विरंतरं ।	"	१७	वर्तिय भतरं ।	"
		"	१८	विरंतरं ।	

## भागभागानुगमसुत्ताणि ।



सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	भागभागानुगमण गवियाणु वाइय पिरयगदीय परइया सण्णजीवाणं केवडिमा मागो ?	४९५	४	तिरिक्खगदीय तिरिक्खा सण्ण जीवाणं केवडिमा मागो ?	४९६
२	मवतमागो ।	"	५	मपता मागो ।	४९७
३	एवं सत्तसु पुब्बीसु परइया ।	४९६	३	पंविदियतिरिक्खा पंविदिय तिरिक्खपक्खा पंविदियतिरिक्ख	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	जोषिणी पंचविधितिरिक्कभपञ्चता, मनुसमदीप मनुसा मनुसपञ्चता मनुसिन्धी मनुसभपञ्चता सम्भ जीवार्थं केचद्विमो भागो ?	४९७		भाडकारया ठेडकारया (भाडकारया) बादप सुहुमा पञ्चता भपञ्चता बादरवचपफ्रिकारयापसेपसदीप पञ्चता भपञ्चता तसकारया तसकारयपञ्चता भपञ्चता सम्भजीवार्थं केचद्विमो भागो ?	५९
७	अर्पतभागो ।	"	२४	अर्पतभागो ।	"
८	देवगादीप देवा सपञ्चजीवार्थं केचद्विमो भागो ?	४९८	२५	अप्यफ्रिकारया भिगोद्विजीवा सम्भजीवार्थं केचद्विमो भागो ?	"
९	अर्पतभागो ।	"	२६	अर्पता भागा ।	५०३
१०	एवं भपञ्चवासिपप्यहुदि जाव सम्भहुसिदिधिमाववासिपदेवा ।	"	२७	बादरवचपफ्रिकारया बादर भिगोद्विजीवा पञ्चता भपञ्चता सम्भजीवार्थं केचद्विमो भागो ?	"
११	ईदियागुवादेव परीदिया सम्भ जीवार्थं केचद्विमो भागो ?	४९९	२८	मसंखेज्जदिभागो ।	"
१२	अर्पता भागा ।	"	२९	सुहुमवचपफ्रिकारया सुहुम भिगोद्विजीवा सम्भजीवार्थं केच- द्विमो भागो ?	"
१३	बादरेदीदिया तस्सेव पञ्चता भपञ्चता सम्भजीवार्थं केच- द्विमो भागो ?	"	३०	मसंखेज्जा भागा ।	५०४
१४	मसंखेज्जदिभागो ।	"	३१	सुहुमवचपफ्रिकारय—सुहुम— भिगोद्विजीवपञ्चता सम्भजीवार्थं केचद्विमो भागो ?	"
१५	सुहुमेदीदिया सम्भजीवार्थं केच द्विमो भागो ?	"	३२	संखेज्जा भागा ।	"
१६	मसंखेज्जदियामो ।	"	३३	सुहुमवचपफ्रिकारय—सुहुम— भिगोद्विजीवपञ्चता सम्भ- जीवार्थं केचद्विमो भागो ?	५०५
१७	सुहुमेदीदिवपञ्चता सम्भजीवार्थं केचद्विमो भागो ?	"	३४	संखेज्जदिभागो ।	"
१८	संखेज्जा भागा ।	५०६	३५	जोगागुवादेव पंचमपञ्चोमि पंचवधिमोमि वेडधियकवजोमि वेडधियमिस्सकायजोगि माहार कायजोपि माहारमिस्सकायजोगी सम्भजीवार्थं केचद्विमो भागो ?	५०७
१९	सुहुमेदीदियभपञ्चता सम्भजीवार्थं केचद्विमो भागो ?	"			
२०	संखेज्जदियामो ।	"			
२१	वीरदियदीदिय-वडधिय पंचि दिया तस्सेव पञ्चता भपञ्चता सम्भजीवार्थं केचद्विमो भागो ?	"			
२२	अर्पता भागा ।	५०९			
२३	कापागुवादेव पुडविधयवा				

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
३६	मणतो मागो ।	५०७	५८	पाणाणुवादेण भविमण्णापि सुवमण्णाणी सम्बजीवाण केव डिमो मागो ।	५११
३७	कायजोगी सम्बजीवार्य केव डिमो मागो ?	"	५९	मणता मागा ।	"
३८	मणता मागा ।	"	५७	विमंगणाणी भामिपिबोहिमण्णाणी सुवणाणी मोहिजाणी मणपण्णाणी केवसणाणी सम्बजीवार्य केवडिमो मागो ?	५१२
३९	भाराडियकायजोगी सम्ब जीवाण केवडिमो मागो ?	५०८	५८	मणतमागो ।	"
४०	सलेग्ग्रा मागा ।	"	५९	ससमाणुवादेण सज्जा सामाण्य छेदोबभूवणसुदिसज्जा परि हारसुदिसज्जा सुदुमसांपराय्य सुदिसज्जा महाफलाद्विहार सुदिसज्जा सज्जासज्जा सण् जीवार्य केवडिमो मागो ?	"
४१	भोराडियमिस्सकायजोगी सम्ब जीवार्य केवडिमो मागो ?	"	६०	मणतमागो ।	"
४२	सलेग्ग्रादिमागो ।	"	६१	मसंज्जा सम्बजीवाण केवडिमो मागो ?	"
४३	कम्महायकायजोगी सम्बजीवाण केवडिमो मागो ?	५०९	६२	मणता मागा ।	५१३
४४	मसंकेसदिमागो ।	"	६३	इंसणाणुवादेण वसुवसणी मोहिदंसणी केवसवसणी सम्ब जीवाण केवडिमो मागो ?	"
४५	वेदाणुवादेण इत्थिवेदा पुरिस वेदा मणगवेदा सम्बजीवार्य केवडिमो मागो ?	"	६४	मणतमागो ।	"
४६	मणतो मागो ।	"	६५	मणवसुवसणी सम्बजीवार्य केवडिमो मागो ?	"
४७	बभुसयवेदा सम्बजीवाण केव डिमो मागो ?	"	६६	मणता मागा ।	"
४८	मणता मागा ।	५१०	६७	लेस्साणुवादेण किण्हलसिसया सम्बजीवार्य केवडिमो मागो ?	५१४
४९	कसापाणुवादेण कोमकसारि मायकसारि मायकसारि सम्ब जीवाण केवडिमो मागो ?	"	६८	तिमामो सादिरेगो ।	"
५०	बहुम्मागो देवणा ।	"	६९	पीसथेस्सिया काडकेस्सिया सम्बजीवार्य केवडिमो मागो ?	"
५१	ओमकसाह सम्बजीवार्य केव डिमो मागो ?	"			
५२	बहुम्मागो सादिरेगो ।	"			
५३	मकसारि सम्बजीवार्य केवडिमो मागो ?	५११			
५४	मणतो मागो ।	"			



सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
७०	तिमागो वेस्यो ।	५१४	७८	अर्जतो मागो ।	५१६
७१	तउलेस्सिया पम्मसेस्सिया सुद्ध- सेस्सिया सम्भजीबाण केवडिमो मागो ।	५१५	७९	( मिच्छाहट्ठी सम्भजीबाण केव डिमो मागो ।	"
७२	अणतमागो ।	"	८०	अर्जता माया । )	५१७
७३	अभियाणुवादेण अणसिद्धिया सम्भजीबाण केवडिमो मागो ।	"	८१	सणियमाणुवादेण सण्णी सम्भ जीबाण केवडिमो मागो ।	"
७४	अर्जता मागा ।	"	८२	अणतमागो ।	"
७५	अणसिद्धिया सम्भजीबाण केव डिमो मागो ।	५१६	८३	असण्णी सम्भजीबाण केवडिमो मागो ।	"
७६	अर्जतामागो ।	"	८४	अर्जता मागा ।	५१८
७७	सम्मत्ताणुवादेण सम्माहट्ठी कइयसम्माहट्ठी वेदगसम्माहट्ठी बबसमसम्माहट्ठी सासणसम्मा हट्ठी सम्मामिच्छाहट्ठी सम्भ- जीबाण केवडिमो मागो ।	"	८५	आहाराणुवादेण आहाराण सण्य जीबाण केवडिमो मागो ।	"
			८६	असण्णगुणा मागा ।	"
			८७	अणहारा सम्भजीबाण केव डिमो मागो ।	"
			८८	असंखेगइमागा ।	५१९

### अप्यावहुगाणुगमसुत्ताणि ।

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	अप्यावहुगाणुगमेण गहियाणुवादेण पंचगतीनां समासण्य ।	५२०	१०	केरइया असंखेगइगुणा ।	५२२
२	सण्यत्थोवा मणुसा ।	"	११	पंचिद्विपतिरिक्खज्जोपिणीया असंखेगइगुणाभो ।	"
३	केरइया असंखेगइगुणा ।	"	१२	देवा संखेगइगुणा ।	५२३
४	देवा असंखेगइगुणा ।	५२१	१३	देवीभो संखेगइगुणाभो ।	"
५	सिद्धा अर्जतगुणा ।	"	१४	सिद्धा अणतगुणा ।	"
६	तिरिक्खा अणतगुणा ।	"	१५	तिरिक्खा अर्जतगुणा ।	"
७	अट्ट गहीभो समासण्य ।	५२२	१६	इहियाणुवादेण सम्भत्थोवा पंचि- द्विया	५२४
८	सम्भत्थोवा मणुस्सिणीभो ।	"			
९	मणुस्सा असंखेगइगुणा ।	"			

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१७	अठरिंदिया विसेसाहिया ।	५२४	४२	भाउकाहया विसेसाहिया ।	५३१
१८	तीरिंदिया विसेसाहिया ।	"	४३	अकाहया अणतगुणा ।	५३२
१९	बीरिंदिया विसेसाहिया ।	५२५	४४	अणप्फदिकाहया अणतगुणा ।	"
२०	अरिंदिया अणतगुणा ।	"	४५	सप्ययोवा तसकाहयपणञ्जा ।	"
२१	यरिंदिया अणतगुणा ।	"	४६	तसकाहयमपणञ्जा असलेणञ्ज गुणा ।	"
२२	सप्ययोवा अठरिंदियपणञ्जा ।	५२६	४७	तेठकाहयमपणञ्जा असलेणञ्ज गुणा ।	५३३
२३	पंभिरियपणञ्जा विसेसाहिया ।	"	४८	पुडविकाहयमपणञ्जा विसेसा हिया ।	"
२४	बीरिंदियपणञ्जा विसेसाहिया ।	"	४९	भाउकाहयमपणञ्जा विसेसा हिया ।	"
२५	तीरिंदियपणञ्जा विसेसाहिया ।	"	५०	भाउकाहयमपणञ्जा विसेसा हिया ।	"
२६	पंभिरियमपणञ्जा असलेणञ्ज गुणा ।	५२७	५१	तेठकाहयपणञ्जा संलेणञ्जगुणा ।	५३४
२७	अठरिंदियमपणञ्जा विसेसा हिया ।	"	५२	पुडविकाहयपणञ्जा विसेसा हिया ।	"
२८	तीरिंदियमपणञ्जा विसेसाहिया ।	५२८	५३	भाउकाहयपणञ्जा विसेसा हिया ।	"
२९	बीरिंदियमपणञ्जा विसेसाहिया ।	"	५४	भाउकाहयपणञ्जा विसेसाहिया ।	"
३	अरिंदिया अणतगुणा ।	"	५५	अकाहया अणतगुणा ।	"
३१	बाहरेरिंदियपणञ्जा अणतगुणा ।	५२९	५६	अणप्फदिकाहयमपणञ्जा अणत गुणा ।	५३५
३२	बाहरेरिंदियमपणञ्जा असलेणञ्ज गुणा ।	"	५७	अणप्फदिकाहयपणञ्जा संलेणञ्ज गुणा ।	"
३३	बाहरेरिंदिया विसेसाहिया ।	"	५८	अणप्फदिकाहया विसेसाहिया ।	"
३४	सुडुमेरिंदियमपणञ्जा असलेणञ्ज गुणा ।	"	५९	अणप्फदिकाहया विसेसाहिया ।	"
३५	सुडुमेरिंदियपणञ्जा संलेणञ्जगुणा ।	५३०	६०	सप्ययोवा तसकाहया ।	५३६
३६	सुडुमेरिंदिया विसेसाहिया ।	"	६१	बाहरेरिंदिया विसेसाहिया ।	"
३७	यरिंदिया विसेसाहिया ।	"	६२	बाहरेरिंदिया अणतगुणा ।	"
३८	कापाशुबादेण सप्ययोवा तस काहया ।	"	६३	बाहरेरिंदिया अणतगुणा ।	"
३९	तसकाहया असलेणञ्जगुणा ।	५३१			
४०	पुडविकाहया विसेसाहिया ।	"			
४१	भाउकाहया विसेसाहिया ।	"			

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
७०	तिमागो वेस्वो ।	५१४	७८	अपतो भागो ।	५१६
७१	तेऽवेस्विषया पम्भेस्विषया सुक्- केस्विषया सन्धीबाण केवडिमो भागो ।	५१५	७९	( मिच्छाहृद्दि सन्धीबाण केव डिमा भागो ?	"
७२	अर्पतमागो ।	"	८०	अर्पता भाषा । )	५१७
७३	अविवाणुबादेण मभसिदिषया सन्धीबाण केवडिमो भागो ?	"	८१	सन्धीबाणकेवडिमो भागो ?	"
७४	अर्पता भाषा ।	"	८२	अर्पतमागो ।	"
७५	अभयसिदिषया सन्धीबाण केव डिमो भागो ?	५१६	८३	असन्धी सन्धीबाण केवडिमो भागो ?	"
७६	अर्पतमागो ।	"	८४	अर्पता भाषा ।	५१८
७७	सम्माणुबादेण सम्माहृद्दि अहसम्माहृद्दि वेदसम्माहृद्दि अहसम्माहृद्दि सासपसम्मा हृद्दि सम्मामिच्छाहृद्दि सन्धी- बाण केवडिमो भागो ?	"	८५	आहाराणुबादेण आहारा सन्धी बाण केवडिमो भागो ?	"
			८६	असंवेगमा भाषा ?	"
			८७	अवाहारा सन्धीबाण केव डिमो भागो ?	"
			८८	असंवेगदिमागो ।	५१९

### अप्यावहुगाणुगमसुचाणि ।



सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	अप्यावहुगाणुगमस्य गदियाणुबादेण पंचगर्भो समास्य ।	५२०	१०	वेरहया असन्धीगुणा ।	५२२
२	सप्यापोषा मनुसा ।	"	११	पंचिदिवतिरिक्काओमिणीमा असन्धीगुणामो ।	"
३	वेरहया असंवेगगुणा ।	"	१२	देवा सन्धीगुणा ।	५२३
४	अप्यावहुगाणुगमस्य ।	५२१	१३	वेदीमा सन्धीगुणामो ।	"
५	सिद्धा अर्पतगुणा ।	"	१४	सिद्धा अर्पतगुणा ।	"
६	तिरिक्का अर्पतगुणा ।	"	१५	तिरिक्का अर्पतगुणा ।	"
७	अह गदीमा समास्य ।	५२२	१६	अविवाणुबादेण सप्यापोषा पंचि दिया	५२४
८	सप्यापोषा मनुस्मिणीमा ।	"			
९	मनुसा असंवेगगुणा ।	"			

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
१७	अउरिद्विया विसेसाहिया ।	२४	४२	भाउकाहया विसेसाहिया ।	५३१
१८	तीरिद्विया विसेसाहिया ।		४३	भकारया अणतगुणा ।	५३२
१९	बीरिद्विया विसेसाहिया ।	५२५	४४	बण्णदिकारया अणतगुणा ।	,
२०	भणिविया अणतगुणा ।		४५	सण्णयोबा तसकारयपज्जत्ता ।	,
२१	परदिया अणतगुणा ।	"	४६	तसकारयमपज्जत्ता असलेज्ज गुणा ।	,
२२	सण्णयोबा अउरिद्वियपज्जत्ता ।	५३३	४७	तेउकाहयमपज्जत्ता असलेज्ज गुणा ।	५३३
२३	पेविद्वियपज्जत्ता विसेसाहिया ।	,	४८	पुढविकारयमपज्जत्ता विसेसा हिया ।	"
२४	पीरिद्वियपज्जत्ता विसेसाहिया ।	"	४९	भाउकाहयमपज्जत्ता विसेसा- हिया ।	"
२५	तीरिद्वियपज्जत्ता विसेसाहिया ।		५०	भाउकाहयमपज्जत्ता विसेसा हिया ।	"
२६	पेविद्वियमपज्जत्ता असलेज्ज गुणा ।	५३७	५१	तेउकाहयपज्जत्ता अलेज्जगुणा ।	५३४
२७	अउरिद्वियमपज्जत्ता विसेसा हिया ।	"	५२	पुढविकारयपज्जत्ता विसेसा हिया ।	"
२८	तीरिद्वियमपज्जत्ता विसेसाहिया ।	५२८	३	भाउकाहयपज्जत्ता विसेसा हिया ।	"
२९	बीरिद्वियमपज्जत्ता विसेसाहिया ।		५४	भाउकाहयपज्जत्ता विसेसाहिया ।	"
३०	भणिविया अणतगुणा ।		५५	भकारया अणतगुणा ।	"
३१	भाउरेरिद्वियपज्जत्ता अणतगुणा ।	५२९	५६	बण्णदिकारयमपज्जत्ता अणत गुणा ।	५३५
३२	भाउरेरिद्वियमपज्जत्ता असलेज्ज गुणा ।		५७	बण्णदिकारयपज्जत्ता संलेज्ज गुणा ।	"
३३	पाउरेरिद्विया विसेसाहिया ।	"	५८	बण्णदिकारया विसेसाहिया ।	"
३४	सुद्धमेरिद्वियमपज्जत्ता असलेज्ज गुणा ।	"	५९	जिगाहा विमसाहिया ।	"
३५	सुद्धमेरिद्वियपज्जत्ता संलेज्जगुणा ।	५३०	६०	सण्णयोबा तमकारया ।	५३६
३६	सुद्धमेरिद्विया विसेसाहिया ।	"	६१	भाउरेतेउकाहया असलेज्जगुणा ।	"
३७	परदिया विसेसाहिया ।	"	६२	भाउरेणण्णदिकारयपज्जत्तयसरीता असलेज्जगुणा ।	"
३८	कापाणुबादेव सण्णयोबा तस कारया ।	"			
३९	तेउकाहया असलेज्जगुणा ।	५३१			
४०	पुढविकारया विसेसाहिया ।	"			
४१	भाउकाहया विसेसाहिया ।	"			

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
३३	वायुमिगोद्वीवा विगोद्विपदिष्टिवा असंख्यगुणा ।	५३६	८२	वायुमातृकाह्यपञ्चता असंख्यगुणा ।	५४४
३४	वायुपुत्रविकारवा असंख्यगुणा ।	५३७	८३	वायुमातृकाह्यपञ्चता असंख्यगुणा ।	"
३५	वायुमातृकाह्य असंख्यगुणा ।	"	८४	वायुमतेजमपञ्चता असंख्यगुणा ।	"
३६	वायुमातृकाह्य असंख्यगुणा ।	"	८५	वायुमतेजमपञ्चता असंख्यगुणा ।	"
३७	सुहृमतेजकारवा असंख्यगुणा ।	"	८६	वायुमतेजमपञ्चता असंख्यगुणा ।	"
३८	सुहृमपुत्रविकारवा विसेसाहिया ।	५३८	८७	वायुमतेजमपञ्चता असंख्यगुणा ।	"
३९	सुहृममातृकाह्य विसेसाहिया ।	"	८८	वायुमातृकाह्यमपञ्चता असंख्यगुणा ।	"
४०	सुहृममातृकाह्य विसेसाहिया ।	"	८९	वायुमातृकाह्यमपञ्चता असंख्यगुणा ।	"
४१	मकारवा अर्धतगुणा ।	"	९०	सुहृमतेजकारवमपञ्चता असंख्यगुणा ।	५४६
४२	वायुमतेजकारवा अर्धतगुणा ।	"	९१	सुहृमपुत्रविकारवमपञ्चता विसेसाहिया ।	"
४३	सुहृमवयवकारवा असंख्यगुणा ।	५३९	९२	सुहृममातृकाह्यमपञ्चता विसेसाहिया ।	"
४४	वयवकारवा विसेसाहिया ।	"	९३	सुहृममातृकाह्यमपञ्चता विसेसाहिया ।	"
४५	विगोद्वीवा विसेसाहिया ।	"	९४	सुहृमतेजकारवपञ्चता असंख्यगुणा ।	५४७
४६	सम्प्रत्योवा वायुमतेजकारवपञ्चता ।	५४२	९५	सुहृमपुत्रविकारवपञ्चता विसेसाहिया ।	"
४७	तसकारवपञ्चता असंख्यगुणा ।	"	९६	सुहृममातृकाह्यपञ्चता विसेसाहिया ।	"
४८	तसकारवपञ्चता असंख्यगुणा ।	"	९७	सुहृममातृकाह्यपञ्चता विसेसाहिया ।	"
४९	वयवकारवपञ्चता असंख्यगुणा ।	"			
८	विभाषणीवा विगावपदिष्टिवा पञ्चता असंख्यगुणा ।	५४३			
८१	वायुपुत्रविकारवपञ्चता असंख्यगुणा ।	"			



सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
११८	मण्डिप्यवर्तुसपवेदा सम्मुच्छिन्म- मपरज्जता भसंजेरज्जगुणा ।	५५६	१५६	सम्पत्तोबा सुहृमसापत्तरप- सुचिसंजदा ।	५६१
११९	सण्डिप्यहृत्पि पुरिसवेदा गम्भो बककतिपा मसकंजवासाडमा दा वि तुम्भा भसंजेरज्जगुणा ।	५७	१५७	संजदासंजदा भसंजेरज्जगुणा ।	"
१४	मसण्डिप्यवर्तुसपवेदा गम्भो पककतिपा सभरज्जगुणा ।		१५८	वेब संजदा वेब भसंजदा वेब संजदासंजदा भर्षतगुणा ।	"
१४१	मसण्डिप्यपुरिसवेदा गम्भोबक- तिपा संजेरज्जगुणा ।		१५९	भसंजदा भर्षतगुणा ।	५६२
१४२	मसण्डिप्यहृत्पिषदा गम्भोबक- तिपा संजेरज्जगुणा ।	५५८	१६०	सम्पत्तोबा सुहृमसापत्तरप- सुचिसंजदा ।	"
१४३	मसण्डी वर्तुसपवेदा सम्मु- च्छिन्मपरज्जता सभरज्जगुणा ।		१६१	परिहारसुचिसंजदा संजेर- गुणा ।	"
१४४	मसण्डिप्यवर्तुसपवेदा सम्मु- च्छिन्मा मपरज्जता भसंजेरज्जगुणा ।		१६२	जहाकणादाविहारसुचिसंजदा संजेरज्जगुणा ।	"
१४५	कसापाशुबादेव सम्पत्तोबा भकसारं ।	"	१६३	सामाहपच्छेदोबहुबनसुचि- संजदा दो वि तुम्भा कंजेर- गुणा ।	"
१४६	मानकसारं भर्षतगुणा ।	५५९	१६४	संजदा वितेसाहिया ।	५६३
१४७	कोपकसारं वितेसाहिया ।	"	१६५	संजदासंजदा भसंजेरज्जगुणा ।	"
१४८	मापकसारं विससाहिया ।	"	१६६	वेब संजदा वेब भसंजदा वेब संजदासंजदा भर्षतगुणा ।	"
१४९	मोमकसारं विससाहिया ।	"	१६७	भसंजदा भर्षतगुणा ।	"
१५	जाजाशुबादेव सम्पत्तोबा मसपज्जवापी ।		१६८	सम्पत्तोबा सामाहपच्छेदा- बहुबनसुचिसंजदस्स जह- न्धिया अरित्तयडी ।	५६४
१५१	आहियापी भसंजेरज्जगुणा ।	५६	१६९	परिहारसुचिसंजदस्स जह- न्धिया अरित्तयडी भर्षत- गुणा ।	५६५
१५२	आभियिवाहिय सुदवापी दो वि तुम्भा विमसाहिया ।	"	१७०	तस्सेप जकस्सिया अरित्तयडी भर्षतगुणा ।	५६६
१५३	विमगयापी भसंजेरज्जगुणा ।	"	१७१	सामाहपच्छेदोबहुबनसुचि- संजदस्स जकस्सिया अरित्त- यडी भर्षतगुणा ।	"
१५४	वचमयापी भर्षतगुणा ।	"			
१५५	मविज्जवापी सुदमयापी दो वि तुम्भा अपतगुणा ।	५६१			

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१७२	सुबुमसांपराएपसुदिसंज्ञमस्त अहग्निषा अरित्तस्यी अमत्त गुणा ।	५११	१८८	सिद्धिषा अमत्तगुणा ।	५७१
१७३	तस्तेषु तन्कस्तिषा अरित्त- स्यी अर्जतगुणा ।	५१७	१८९	सम्भत्ताणुवादेण सम्भत्तोया सम्भामिच्छादही ।	"
१७४	अहाभखाद्विहात्सुदिसंज्ञ- वस्त अहाहणमपुक्कस्तिषा अरित्तस्यी अमत्तगुणा ।	"	१९०	सम्भ्रादही असंनेजगुणा ।	"
१७५	संसजापुवादेण सम्भत्तोया ओहिसंसजी ।	५१८	१९१	सिद्धा अर्जतगुणा ।	५७२
१७६	अकतुवसणी असलेजगुणा ।	"	१९२	मिच्छादही अमत्तगुणा ।	"
१७७	केयवसणी अर्जतगुणा ।	"	१९३	सम्भत्तोया सासनसम्भ्रादही ।	"
१७८	अपकतुवसणी अर्जतगुणा ।	५१९	१९४	सम्भामिच्छादही सरेजगुणा ।	"
१७९	अस्साणुवादेण सम्भत्तोया सुक्कसेस्तिषा ।	"	१९५	उषसमसम्भ्रादही असंनेज गुणा ।	"
१८०	पम्मसेस्तिषा असलेजगुणा ।	"	१९६	अरयसम्भ्रादही असंनेजगुणा ।	"
१८१	तेजसेस्तिषा संलेजगुणा ।	"	१९७	वेणसम्भ्रादही असलेजगुणा ।	५७३
१८२	असेस्तिषा अर्जतगुणा ।	५७०	१९८	सम्भ्रादही विसेसादिया ।	"
१८३	काडसेस्तिषा अर्जतगुणा ।	"	१९९	सिद्धा अर्जतगुणा ।	"
१८४	पीडसेस्तिषा विसेसादिया ।	"	२००	मिच्छादही अमत्तगुणा ।	"
१८५	किण्णसेस्तिषा विसेसादिया ।	"	२०१	सग्गियाणुवादेण सम्भत्तोया सण्णी ।	"
१८६	अधियाणुवादेण सम्भत्तोया अमपसिद्धिषा ।	५७१	२०२	अेष सण्णी अेष असण्णी अर्जतगुणा ।	"
१८७	अेष अमपसिद्धिषा अेष अमव	"	२०३	असण्णी अर्जतगुणा ।	"
			२०४	आहाराणुवादेण सम्भत्तोया अहाहारा अर्जतगुणा ।	५७४
			२०५	अर्जतगुणा ।	"
			२०६	आहारा अमवजगुणा ।	"



## महादहमसुत्ताणि ।

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	एतौ सप्तश्रीषेसु महार्दंडयो कार्ष्णो मन्दि ।	५७५	१४	हेङ्गिमरुवरिमगेवज्जविमाणवासिप देवा संखेज्जगुणा ।	५७९
२	सप्तत्थोवा मणुसपग्गत्ता गम्भो बसंतिवा ।	५७६	१५	हेङ्गिममत्तिमगेवज्जविमाणवासिप देवा संखेज्जगुणा ।	५८०
३	मणुसिष्ठीयो संखेज्जगुणामो ।	"	१६	हेङ्गिमोहेङ्गिमगेवज्जविमाणवासिप देवा संखेज्जगुणा ।	"
४	सप्तद्विसिद्धिपिमाणवासिपदेवा सत्तग्गुणा ।	"	१७	मारणक्युवक्यवासिपदेवा संखेज्जगुणा ।	"
५	वाहरेवकाइयपग्गत्ता मसं खेज्जगुणा ।	५७७	१८	भाजकपाणक्यवासिपदेवा संखेज्जगुणा ।	"
६	मणुत्तरविजय वरुवर्षत-(अयंत)- अवपत्रितविमाणवासिपदेवा असंखेज्जगुणा ।	"	१९	सत्तमाए पुडवीए भेरहया मसं खेज्जगुणा ।	"
७	मणुदिसविमाणवासिपदेवा सत्तग्गुणा ।	५७८	२०	छट्टीए पुडवीए भेरहया मसंखेज्ज गुणा ।	५८१
८	उपरिमरुवरिमगेवज्जविमाण- वासिपदेवा संखेज्जगुणा ।	"	२१	सदाए-सहस्सारक्यवासिपदेवा असंखेज्जगुणा ।	"
९	उवरिममत्तिमपवज्जविमाण- वासिपदेवा संखेज्जगुणा ।	"	२२	सुक्क महासुक्कक्यवासिपदेवा असंखेज्जगुणा ।	"
१०	उवरिमहेङ्गिमगवज्जविमाण- वासिपदेवा सत्तग्गुणा ।	५७९	२३	पंधमपुडविभेरहया असंखेज्ज गुणा ।	"
११	मत्तिमरुवरिमगवज्जविमाण- वासिपदेवा सत्तग्गुणा ।	"	२४	सतव-कापिट्टक्यवासिपदेवा असंखेज्जगुणा ।	"
१२	मत्तिममत्तिमगवज्जविमाण- वासिपदेवा सत्तग्गुणा ।	"	२५	सत्तपीए पुडवीए भेरहया असंखेज्जगुणा ।	५८२
१३	मत्तिमहेङ्गिमगवज्जविमाण वासिपदेवा संखेज्जगुणा ।	"	२६	वग्ग वग्गुत्तरक्यवासिपदेवा असंखेज्जगुणा ।	"

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
२७	तद्विषयाय पुढबीप जेरहया भसलेखगुणा ।	५८२	४७	पश्चिद्वियमपग्जत्ता भसलेखगुणा ।	५८७
२८	मादिद्वयवासासिपदेवा भसलेखगुणा ।	,	४९	अद्विरिद्वियमपग्जत्ता भिसेसाहिया ।	
२९	सप्यफहुमारकव्यवासियदेवा संदेखगुणा ।	,	५०	तद्विद्वियमपग्जत्ता भिसेसाहिया ।	"
३	त्रिविषयाय पुढबीप जेरहया भसलेखगुणा ।	५८३	५१	वेद्विद्वियमपग्जत्ता भिसेसाहिया ।	"
३१	मगुसा भपग्जत्ता भसलेखगुणा ।	"	५२	वाद्दरबणप्फरिकाहयपत्तेयसरीरपग्जत्ता भसलेखगुणा ।	५८८
३२	इंसानकव्यवासियदेवा भसलेखगुणा ।	,	५३	वाद्दरपिगोद्वीबा पिगोद्वपदिद्विदा भसलेखगुणा ।	"
३३	द्वीमो सलेखगुणामो ।		५४	वाद्दरपुढविपग्जत्ता भसलेखगुणा ।	"
३४	सोपम्मकव्यवासियदेवा सलेखगुणा ।	५८४	५५	वाद्दरमाडपग्जत्ता भसलेखगुणा ।	८९
३५	द्वीमो सलेखगुणामा ।	"	५६	वाद्दरबाडपग्जत्ता भसलेखगुणा ।	"
३६	पदमाय पुढबीप जेरहया भसलेखगुणा ।	"	७	वाद्दरतेडमपग्जत्ता भसलेखगुणा ।	"
३७	मबवासासियदेवा भसलेखगुणा ।	"	५८	वाद्दरबणप्फरिकाहयपत्तेयसरीरमपग्जत्ता भसलेखगुणा ।	,
३८	द्वीमो सलेखगुणामो ।		५९	वाद्दरपिगोद्वीबा पिगोद्वपदिद्विदा मपग्जत्ता भसलेखगुणा ।	५९०
३९	पश्चिद्वियतिरिक्कजोणिबीमा भसलेखगुणामो ।	५८५	६०	वाद्दरपुढपिकारयमपग्जत्ता भसलेखगुणा ।	
४०	बाणबेतरेवा सदेखगुणा ।	"	६१	वाद्दरमाडकारयमपग्जत्ता भसलेखगुणा ।	
४१	द्वीमो भसलेखगुणामो ।		६२	वाद्दरपाडकारयमपग्जत्ता भसलेखगुणा ।	
४२	जोदिमियदेवा सलेखगुणा ।		६३	सुद्धमनककारयमपग्जत्ता भसलेखगुणा ।	५९१
४३	द्वीमो सलेखगुणामो ।	८६	६४	सुद्धमुडपिकारया मपग्जत्ता भिसमाहिया ।	"
४४	अद्विरिद्वियपग्जत्ता सलेखगुणा ।	"			
४५	पश्चिद्वियपग्जत्ता विममाहिया ।	"			
४६	वेद्विद्वियपग्जत्ता भिसेसाहिया ।	"			
४७	तद्विद्वियपग्जत्ता विममाहिया ।	,			

## महादृढसुत्ताणि ।

सूत्र संख्या	सूत्र	शुद्ध	सूत्र सङ्ख्या	सूत्र	शुद्ध
१	एतो सप्तर्षीषेसु महादृढो कार्ष्ण्य मयदि ।	५७५	१४	हेट्टिमउपरिमगेवज्जविमाणवासिप देवा संखेज्जगुणा ।	५७९
२	सत्तरत्थोवा मणुसपग्गत्ता गग्गो वर्द्धतिपा ।	५७६	१५	हेट्टिममग्गिमगेवज्जविमाणवासिप देवा संखेज्जगुणा ।	५८०
३	मणुसिपीभा सत्तज्जगुणामो ।	"	१६	हेट्टिमहेट्टिमगेवज्जविमाणवासिप देवा संपग्गज्जगुणा ।	"
४	सप्तद्विसिद्धिपिमाणवासिपदेवा सत्तेज्जगुणा ।	"	१७	आत्तापुत्तकप्पवासिपदेवा संखेज्जगुणा ।	"
५	वावरत्तउत्तारपग्गत्ता असं पग्गज्जगुणा ।	५७७	१८	आत्तापुत्तकप्पवासिपदेवा संखेज्जगुणा ।	"
६	मणुसत्तरपिज्जप परत्तवत्त (अवत्त )- अत्तत्तत्तित्तिमाणवासिपदेवा असत्तेज्जगुणा ।	"	१९	सत्तमाए पुत्तवीए अत्तत्तया असं खेज्जगुणा ।	"
७	मणुदिसिपिमाणवासिपदेवा सत्तेज्जगुणा ।	५७८	२०	उत्तरीए पुत्तवीए अत्तत्तया असत्तेज्ज गुणा ।	५८१
८	उपरिमउपरिमगेवज्जविमाण- वासिपदेवा सत्तेज्जगुणा ।	"	२१	सत्तार-सत्तारत्तकप्पवासिपदेवा असंखेज्जगुणा ।	"
९	उपरिममग्गिमगेवज्जविमाण- वासिपदेवा सत्तेज्जगुणा ।	"	२२	सुत्तक-महासुत्तकप्पवासिपदेवा असत्तेज्जगुणा ।	"
१०	उपरिमहेट्टिमगेवज्जविमाण- वासिपदेवा सत्तेज्जगुणा ।	५७९	२३	पंचमपुत्तविअत्तत्तया असत्तेज्ज गुणा ।	"
११	मग्गिमउपरिमगेवज्जविमाण- वासिपदेवा सत्तेज्जगुणा ।	"	२४	सत्तय-कापिट्टकप्पवासिपदेवा असत्तेज्जगुणा ।	"
१२	मग्गिममग्गिमगेवज्जविमाण- वासिपदेवा सत्तेज्जगुणा ।	"	२५	वात्तरीए पुत्तवीए अत्तत्तया असत्तेज्जगुणा ।	५८२
१३	मग्गिमहेट्टिमगेवज्जविमाण- वासिपदेवा सत्तेज्जगुणा ।	"	२६	अत्त वात्तत्तकप्पवासिपदेवा असत्तेज्जगुणा ।	"

क्रम सख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहा	क्रम सख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहा
१	धिरयगह संपत्तो	२९		२	भवहारस्स तु वयण	२९	
२	तस्यधीममपुगधिमलं	२५८	गो जी १५८	१८	धिधिचिंयत्प्रतियेष	९९	बृहत्स्वपम्भू स्तोत्र ५२
४	इयगुणपञ्चय जे	१४		११	धिरियोबभोग भोगे	११	
५				१	पठ सतमयोः शीतं	४०५	
९	पठम पपडिपमाण	४५		७	संखा तह परघारो	४५	गो जी ३५
११	पठमकखो मतगभो		गो जी ४०	१३	सटाधिरुण रूप	४६	गो जी ४२
१	पशुबीस असुरार्ण	३१९		१२	सगमाणेण विहत्ते		गो जी ४१
२१	परमाणुभादियार्ण	१००		४	सहण्यस्स तु वयणं	३९	
३	बन्ने य धातवे वि य	३२०		१	सम्मत्ते सत्त विजा	४९२	
१	बारस इस भट्टेव य	२५०		१४	सम्भावरणीय पुण्य	३३	
७	मिच्छत्तकसापासज	१४		८	सव्ये दि पुष्पमगा	४५	गो जी ३६
२	मिच्छत्ताधिरवी वि य	९		२	सोइम्मीसायेसु य	३१९	
१	मुह-भूमीण धिसेसो	११७		५	हेट्टिमगमज्जेसु म	३०२	
५	वयण तु समभिरुह	२९					

### ३ न्यायोक्तिया ।



क्रम सख्या	न्याय	पृष्ठ	क्रम सख्या	न्याय	पृष्ठ
१	अस्स भण्णय धदिरेगेहि धियमेय अरसणय धदिरेगा अयधंमंति तं तस्स कउअमियर थ कारण इदि आयादो			आपाणुसरणट्टमेगजीयेण सामिच्छं	२८
			३	सति धोमिधि धर्माधिअययत्त इति न्यायाद्	२४
२	अहा अदेसो तथा भिदेसो ति		१०	अ सामाण्यघोइमाअ धिरोवेप्यय तिष्ठत इति न्यायान्	७९,८३

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
३५	सुहृमवाठकारापपञ्चता विसे साहिया ।	५११	७२	बादरवणप्फदिकाहयपञ्चता मसंखेउञ्जगुणा ।	१९३
३६	सुहृमवाठकारापपञ्चता विसे साहिया ।	५१२	७३	बादरवणप्फदिकाहयपञ्चता मसंखेउञ्जगुणा ।	
३७	सुहृमवाठकारापपञ्चता सजेउञ्ज गुणा ।	"	७४	बादरवणप्फदिकाहया विसे साहिया ।	"
३८	सुहृमवाठकारापपञ्चता विसे साहिया ।	"	७५	सुहृमवाठकारापपञ्चता मसंखेउञ्जगुणा ।	५१४
३९	सुहृमवाठकारापपञ्चता विसे साहिया ।	"	७६	सुहृमवाठकारापपञ्चता सजेउञ्जगुणा ।	
७०	सुहृमवाठकारापपञ्चता विसे साहिया ।	१९३	७७	सुहृमवाठकारापपञ्चता विसे साहिया ।	
७१	मकारापपञ्चता मसंखेउञ्जगुणा ।	"	७८	वणप्फदिकाहया विसेसाहिया ।	"
			७९	विगोएजीथा विसेसाहिया ।	"

## २ अवतरण गाथा-सूची ।

क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्वय वक्रा	क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्वय वक्रा
१७	मसरीरा जीववधा	९८		९	अगोक्षम-सरीरिविष	१५	
४	माज्ज पाण्डु कप्ये	३९		१०	के पि जरे इहूय प	२८	
२	इगिरीस सत्त वत्तारि	१३१		२	अकम्म अं पवासदि	१०	
१	वत्तुव वय तह	१		१९	अ खामण्णमयर्ह	"	द्रव्यसंमह
३	वत्तुमुहस्स बुधवप्ये	२९		१९	अपमंयकमूषाअं	१५	
६	ववरिमोवञ्जसु म	३९०		६	अस्साहपय जीवी	१४	
१६	एगो मे सरसो मया	९८	मयपण्डु	८		१५	
			५, ७९	१	अ वंघयरा माथा	९	अवधवधाया
२१	एव सुत्तपसिअं	१०३					सुत्तपुता १०
३	ओइया वंघयरा	९	अवधवधाया	१५	गानावरवधुअं	३४	
			सुत्तपुता १	१	विक्खिसु विक्खिमस	४५	गो जी ३८

## ५ पारिभाषिक शब्दसूची ।

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अ		अन्तरकरण	८१
अक्षर्यायी	८३	अन्तर्मुहूर्त	२३७, २८७, २८९
अक्षयिक	७३	अम्बय	१५
अक्षरावर्त	३६	अपगतवेद	८०
अक्षरकानुपशामक	८	अपयतनाघात	२२०
अगति	३	अपूर्वकरणउपशामक	५
अपाति क्रम	३३	अपूर्वकरणकाल	१२
अक्षसुदर्शन	१०१, १०३	अपूर्वकरणक्षपक	५
अक्षसुदर्शनी	९८	अक्षयिक	७१
अक्षिनोक्तमद्रूपबन्धक	४	अप्रमत्त	१२
अतिप्रसंग	३९, ७, ७६	अप्रहास्य तिमस शरीर	३००
अप्राप्तकृत	१२	अबन्धक	८
अधिकार	२	अमध्य	७, ६४२
अनप्यबधाय	८५	अमध्यसमान मध्य	१६२, १७१, १७६
अन्यतानुबन्धिविषययोजन	१४	अमध्यसिद्धिक	१०३
अनबन्ध्या	९९	अभाग	४९५
अनबन्धयान	६०	अयोग	१८
अनागमद्रूपमारक	३०	अयार्गी	८, ७८
अनादि अपययसित बन्ध	५	अर्थापत्ति	८
अनादिबाधरसाभ्यपरायिक	५	असिद्धिक	१०५, १०६
अनादि-सपथमितबन्ध	५	अपधिदानी	८४
अनाहार	७, ११३	अबधिदर्शन	१२
अनिश्चित	६१, ६९	अबधिदर्शनी	०८, १०३
अनिश्चितकरणउपशामक		अपहित	६४७
अनिश्चितकरणक्षपक	५	अधिरति	०
अनुकम्पा	७	अमुक्तमय	११०
अनुभाग	३३	असत्त्वयातवर्षायुष्क	५५७
अनैवागितक	७३	असत्त्वय गुणधेयी	१४
		असत्ही	७, १११
		असंयत	९५

## ४ अन्योल्लेख ।

### १ कसायपाहुड

१ आसायं पि यच्छेत्त इति कसायपाहुडे बुध्निस्तुतईसजादो । २३३

### २ बीवडुग

१ एत्थ सामग्गोएरपायं बुत्तविक्खंमत्तुणी वेव वेरएयानिष्ठाइत्तुणं जीवडुमे पक्कविदा । २४६

### ३ द्रव्यानुयोगशर

१ ए व एवं बीवायं छेदामावाहो वृष्वाभिभोगदारवन्नाजमि बुत्त हेत्तिम उक्खिमवियप्याजममावपरसंगादो व । ३७२

### ४ परिकर्म

१ कम्मट्टिविमावडियाए मसेत्तेउअदिभागेव गुणित्ते वादरट्टिणी हादि ति परियम्मवयण्णहापुववत्तीदो । १४५

२ अग्निह अग्निह मजतायंतर्ब मग्गिउअदि तग्निह तग्निह मअइण्णापुक्कस्स मयंतायंतर्ब वेत्तम्बं इति परियम्मवयणादो । २८

३ एउडू छत्तगुणित्ता अगसेडी सा वग्गिहा अगपत्तं सेडीए गुणित्ता अगपत्तं धनसोगो होदि ति सवसाइरियसम्मवपरियम्मसिद्धादो । ३०२

### ५ वैद्यप्याजुगमुत्त

१ सवग्ग्योवा पुववंधगा × × × मअडुवबंधगा विलेछाहिया पुवबंधगेवुव सादिवबंधगावत्ति तत्तपसिमसिउपुव बुत्तवधणावअडुगमुत्तादो पणव । ३९

### ६ महात्तंष

१ महात्तंषे अइण्णट्टिविबंधगाउत्ते सम्माविट्टीचमाडमस्स वामपुपत्तमत्त ट्टिविपक्कवादो । १९५

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
केवलशानी	८८	अभुक्तिद्वय	६
कवचकर्मि	९८, १०३	अभुक्तिद्वय	६९
केचक्रिसमुद्घात	३००	आरिप्रमाहसपण	१४
कवमी	५	आरिप्रमोहोपशामक	१४
कोपकणाय	८२	चूडिका	५०१
सरक	५		
सप	९ १० ८१, ९२	छद्मरूप	१
सोपशाम	९२		
सायिक	३०		
सायिकसन्धि	३०	जगप्रतर	३७२
सायिकसम्बन्ध	१०७	जगभेदी	३७२
सायिकसम्बन्धदि	१०७	त्रिकन्दिय	६४
सायिकसमिक	३० ६१	जीवस्थान	२ ३
सायिकबाप	५, १४	ज्ञान	७
		ज्ञायकशरीर	४ ३०
खट	२४७		
खट	३	तद्व्यतिरिक्त	४
		तीर्थकर	११
गति	३	गृहीतास	४५
मर्मोदकागितक	१५५, ५५६	तेजस्कायिक	७१
पूर्वति पूर्वतगणित	४०८	तेजोऽनुप्यराणि	२३६
माय	६	तेजोसेरपा	१०४
		तेजसगरीर	३००
प्यत्राक	३०२	त्रसकायिक	२
पानमुद्रमपमहक	१५६, १३६	भ्रीन्दिय	६
पत्रमुद्रमकमहकमात्रकास	१८३		
कानिकर्म	१२	दृष्टगत	५६
कानिन्दिय	१५	दृशान	७ १००
		दृशानमाहसपण	१४
कानिकर्म	१०१	दाग्जसमान	३३
कानिकर्म	९८	दृशपातक	३३
		दृशपाति	३४



शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अस्यपम	८, १३	उपादेश	१९
असाम्यताधिक	५	उपार्थपुद्गलपरिवर्तन	१०१ २११
आ	-	शु	
भागमद्रूप्य मारक	३०	शुद्धसूत्रमप	२९
भागमद्रूप्य बन्धक	४	ए	
भागममाद्य मारक	३०	एकविंशतिप्रवृत्ति इत्यस्यान	३२
भागममाद्य बन्ध	७	एकेन्द्रिय	३२
जान-जानपर्यायि	३४	एकमूत	२९
भाषिनिबोधिकज्ञानी	८४		
भास्तिव्य	७	ओ	
भास्त्र	९	मौखिक	९, ३०
भाहार	७ ११२	मीमांसिक	३
भाहारसमुद्घात	३००	क	
इ		कक्षीघात	१२४
इन्द्रिय	९, ११	कर्मद्रव्य	८२
ई		कर्मकारक	३
ईवापचक्ष्य	५	कर्मनिर्जरा	१४
ईश्वरान्तर	३१५	कर्मबन्धक	४ ५
उ		कर्मक्षिति	१४५
उद्भव	८२	कर्षण	३
उद्भवस्थान	३२	कषाय	७ ८
उद्भवेननकात	२३३	कषायममुद्घात	२९९
उपचार	३७ २८	कापोतक्षेप	१०४
उपचार	३	काय	३
उपशम	० ८१	कायपाग	७८
उपशमधर्षा	८१	कारक	८
उपशमसम्बन्ध	१०७	कारण	२४७
उपशमसम्बन्धहि	१ ८	काष्ठ पात-सप्यक्रमवि	३
उपशमानकषाय	५, १४	कृतरथानादि	७३
उपशामक	५	कृत्तकरीष	१८१
उपशानकारण	१९	कृतपुग्ग	२५९
		कृति वेदनादि	१
		कृत्तक्षेप	१ ४



परिचिह्न

(५८)

संख्या	शब्द	पृष्ठ
शुद्धबोधस्या	सर्वपाठक	१९
शुद्धमप	सर्वपाठिस्यर्द्धक	११ ११०
सुतमहावी	सर्वारण्य	३३
सुतहानी	सहकारिकारण्य	३९
भोत्रेन्द्रिब	सहानवस्थामहस्यविरोध	४३३
	सामान्यमनुष्य	५२
संज्ञी	सामायिकछेदोपस्थापनाशुद्धिसयत	९१
सयत	साम्यरायिकबन्धक	५
संबन्धसंबन्ध	साक्षात्तनसम्पत्ति	१९
संपन्न	सिद्धगति	३
संवर	सिध्यमान मध्य	१७३
संवेप	सूक्ष्मसाम्यरायिक	१
सबिच्योक्तं प्रपञ्चक	सूक्ष्मसाम्यरायिककीदृक्	७
सख	सूक्ष्मसाम्यरायिकशुद्धिसयत	९५
सखुपयाम	खीचेत्	७९
सामयिक	स्थापना	३
सम्बन्ध	स्थापनाकारक	२९
सम्बन्धन	स्थापनाबन्धक	३
साम्यत्ति	स्यर्द्धक	३१
साम्यमिच्छात्ति	स्वस्थानस्वस्थान	३००
सरोपकेसरी		

पारिभाषिक शब्दमूर्ची

( ७७ )

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
न	३४ ३५, ३६	राज्य	३७२
न	४, ७, १० २४२	ल	
नर्कश्रीक	१०३	समन	९९
न	४९५	सन्धि	७५
न	२४७	मोकपूरण	८३
नरकबह	३ ५	सोमकपायी	
नरक	९१		
नपावलि	३४		
		म	
न		बन्धनयोग	७८
न		बनरुपतिकायिक	७२
न		बापुकायिक	७१
न	८४	बिकल्प	२८७
न	६६	विभंगबानी	८४
न	८४	विरहित	२४७
न	७७	विशेषमनुष्य	५२
न	१ २	विशेषविशेषमनुष्य	५२
न	८२	बिहारव्यवस्थापन	३००
न	८३	वेद	७
न	३००	वेदकमन्यकत्व	१०७
न	७	वेदकसम्यग्दधि	१०८
न	८	वेदनासमुद्घात	२९०
न	२	बैदिकिकममुद्घात	२ ९
न	१११	व्यंजनपयाय	१७८
न	९	व्यतिरेक	१५
न	४	व्यनहार	२९
न	३०७ ३१२	व्यवहार	१३ ६७
न	०	व्यवहारप्रय	
न	२४		
न		दत्तवृषकार	१ ७
न		शम्भनय	२
न		शरीरपयापि	३४
न	९४		
न	३, ८, १७ ७५		

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
ब्रह्माग्नि स्पर्शक	४१	परस्परपरिहारकज्ञानविराघ	४३५
वेशसंपन	१४	परिहारशुद्धिसंज्ञम	१६७
ब्रह्मावरण	६३	परिहारशुद्धिसंयत	९४ १९७
द्रव्यकोष	८२	पर्यापार्यिक मय	१३
द्रव्यबन्धक	३	पर्युक्तास प्रतिषेध	४७७ ४८
द्रव्यसंपन	९१	पारिणामिक	९ ३
द्रव्याधिकमय	३ १३	पारिणामिक भाव	१४
द्वितीय दृश्य	३१३ ३१५	पुरुषवेद	७९
द्वितीयास	४५	पृथिवीकायिक	७०
द्वैतद्वय	१४	पृथिवीकायिक सामकर्म	७०
		प्रतरणत	५१
नगर	३	प्रतिपातस्याम	५३४
नपुंसकबद्	७९	प्रत्ययप्रकृत्या	१३
नय	१०	प्रत्यात्पानपूर्व	१६७
नामभारक	२९	प्रथमदृश्य	३१३
नामबन्धक	३	प्रथमास	४५
निक्षेप	३ ३	प्रमाण	२४७
निगोद जीय	७ ३	प्रमाद	११
निदक्षि	२४७	प्रमेय	१६
निकृति	४३६	महाहानादि	७३
नीकसेरपा	१ ४	प्रथम	७
नैगम	२८	प्रशस्त तैजसराशि	४
नोभागममात्र कारक	३०	प्रसन्नप्रतिषेध	८५ ४७९
नोभागमद्रव्यबन्धक	४		
नाभागमभावबन्धक	५	बन्ध	१ ८२
नोद्वैतद्वय	६३	बन्धक	१
नोद्वैतद्रव्य कारक	३	बन्धन	१
नोद्वैतबन्धक	४	बन्धनीय	३
		बन्धकसंवाधिका	२४
		बन्धकारण	०
संबन्धिसंगि	१५	बन्धविघात	३
संक्षेप	६१	बाह्यसांगराधिक	५
पद्मनरपा	१ ४	बाह्यद्वय	३

पारिभाषिक शब्दसूची

शब्द	पृष्ठ	शब्द	र	पृष्ठ
म				३७२
मर	३४ ३५ ३६	राष्ट्र		
मन्त्रसिद्धि	४, ७, ३०	२४२	ल	९३
माप	१०३	संज्ञा		४३६
मात्रिक	४९५	कर्मि		५१
मायकप्रक	२४७	शोकपूरण		८३
मायसयम	३ ५	लोभकपापी		
मायाबालि	९१		ब	
	३४			७८
म		वचनयोग		७२
मतिमहानी		बनरूपतिकायिक		७१
मतिज्ञान	८४	बायुकायिक		२४७
मनःपर्यवधानी	३९	विकल्प		८४
मनायोग	८४	विमंगलानी		२४७
महाकर्ममहृतिमाभूत	७७	विरहित		५२
मानकपायी	१ २	विदोषमनुष्य		५२
मायाकपायी	८२	विदोषविशेषमनुष्य		२००
मायानाभितकममुद्घात	८३	विद्वान्पाठ्यग्राम		७
मागजा	३०	बद		१०७
मिथ्यापथ	७	पदकमापबाध		१ ८
मिथ्यापादिमत्स्य	८	बदकसम्पत्ति		२९०
मिथ्यावृद्धि	२	वेदमासमुद्घात		२००
मिथ	१११	वैकिकिबनमुद्घात		१७८
मिथ्यभोक्तृमुद्घात	*	त्यजनपाप		१५
मुल्लभात्पानि च.	४	लानि च		२९
माहावाक्य	३०३ ३१६	लानात्		१३ १७
माहावाक्य	२४	लानाद्वाक्य		
			ग	
		लानुपकाश		१०७
		लानुप		१
	१ ८, १७ ७	शरीरपानि		२४

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
शुक्लसेस्या	१०४	सर्वापातक	१९
शुद्धनय	१७	सर्वापातिस्पर्शक	१८, १९
सुतमहानी	८४	सबाबत्व	१३
सुतहानी		सहकारिकाएव	१९
शोभमिद्रिय	६१	सहानवस्थाबलसम्बन्धिरोध	४३६
		सामाम्यमनुष्य	५२
संक्षी	७ १११	सामायिकक्षेत्रोपस्थापनाशुद्धिसंपत्	९१
संपत्	९१	साम्प्रदायिकबन्धक	५
संपत्तासंपत्	९४	साक्षात्तसम्बन्धि	१९
संपद	७ १४ ९१	सिद्धगति	१
संवर	९	सिद्धमान मय्य	१७३
संबेग	७	सूक्ष्मसाम्प्रदायिक	५
सच्चित्तनोर्कर्मद्वयबन्धक	४	सूक्ष्मसाम्प्रदायिकतीक्ष्ण	"
सरब	८२	सूक्ष्मसाम्प्रदायिकशुद्धिसंपत्	९४
सखुपशाम	११	शोभेद्	७९
समधिकृष्ट	२९	स्थापना	३
सम्बन्धत्व	७	स्थापनाकारक	२९
सम्बन्धनि	"	स्थापनाबन्धक	३
सम्बन्धि	१०७	स्पर्शक	११
सम्बन्धिमिष्याद्यदि	११०	स्वस्थाबस्वरधान	३००
संबोगक्षेपक्षी	१४		

